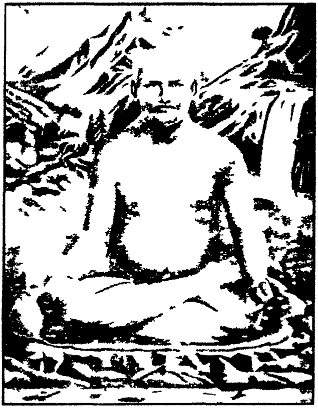
जनवरी १९३२ Reg No L 2121

ऋग्वेद यजुर्वेद

सार्वदेशिक



सम्पादक—प्रो० सुधाकर एम० ए०

स० सम्पादक—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक

वार्षिक मूल्य स्वदेश २) एक प्रति का =) विदेश से ४ शि० वार्षिक

अथर्ववेद सामवेद

लेख-सूची

केन्द्रीय अनाथालय, रावी रोड, लाहौर की आवश्यकताएं

(ले० ला० बोसाराम रिटायर्ड स्टोर कीपर N W R.)

(१) इस समय इस अनाथालय मे १७५ बालक बालिकाएं हैं और शीत ऋतु आरहा है। उनके लिये गरम वस्त्र, रजाई, तुलाई, और दरियों की आवश्यकता है। दानी सज्जन जहां अपने बालकों के लिये वस्त्र बनवाएंगे वहां इन बालकों का भी अवश्य ध्यान रखें।

(२) वस्त्रों के अतिरिक्त भोजन के लिये घृतादि की आवश्यकता है दानी सज्जन घृत भेजें अथवा उसके लिये दान देकर कृतार्थ करें।

(३) अनाथालय का व्यय १३००) मासिक है वह दानी महाशयों की कृपासे पूरा होगा इसलिये प्रत्येक नर नारी दान देकर इस व्यय को पूरा करें।

(४) इस अनाथालय के प्रबन्ध के विषय मे यह लिखना पर्याप्त होगा कि सरकार ने जो भगाए गए बालक पकड़े थे जिनके संबंधियों का पता नहीं लगा वह सब बालक इसी अनाथालय मे रखे हैं।

(५) अनाथालय के बालक कभी बाहर मांगने के लिए नहीं भेजे जाते हैं। उनके पढ़ाने के लिये स्कूल भी है जो सरकार से स्वीकृत है।

(६) इसके अधिकारी इस समय निम्न सज्जन हैं:—

प्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

उप प्रधान पं० विश्वम्भरनाथ जी उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

„ पं० ठाकुरदत्त शास्त्री मुलतानी लाहौर

„ डाक्टर गणेशीलाल जी M B, B S

कोषाध्यक्ष श्री विज्ञानशील जी, बी० ए०

अंत में नम्र निवेदन है प्रत्येक धर्मप्रेमी सज्जन अपनी शक्त्यानुसार कुछ न कुछ दान देकर सभा का हाथ बटावें और पुण्य के भागी बनें।

ॐ

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष ११	पौष १९९४ जनवरी १९३८ ई०	दयानन्दाब्द ११३	अङ्क ११

❀ वेद की शिक्षाएँ ❀

स एष एक वृदेक एव । Ath. 13-4-20

वह ईश्वर एक और सचमुच एक ही है

He is One and only One God

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति । Rig 1-164-46

उस एक सत्ता वाले को विद्वान् लोग अनेक नामों से पुकारते हैं ।

The wise call that One God by various names

सम्पादकीय—

अमरशहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी।

संसार में दो प्रकार के व्यक्ति पाए जाते हैं। एक वे जो नए हालात पैदा करते हैं। दूसरे वे जो मौजूदा हालात के अनुसार अपना साधारण जीवन व्यतीत करते हैं। पहले प्रकार के लोगों को निर्माता, लीडर, नेता या रहबर कहते हैं। दूसरे प्रकार के लोग पीछे चलने वाली जनता या सर्व साधारण लोग कहलाते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द पहले प्रकार के व्यक्ति थे।

स्वामी श्रद्धानन्द साधारण स्थिति मे पैदा हुए परन्तु होश संभालने के पश्चात ही उन्होंने अपने उन हालात का मुकाबला करना शुरू कर दिया, जिन में प्रकृति ने उनको रक्खा था। जिसप्रकार एक संगतराश पत्थरके साथ युद्ध करता हुआ उसमे से एक सुन्दर मूर्ति का निर्माण कर डालता है, ठीक उसी प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने विरोधी हालात की चट्टानो के साथ संघर्ष करते २ संसार को अपने जीवन की एक सुन्दर मूर्ति अथवा उदाहरण दिया जिसका अनुकरण हम लोगों के लिए अनिवार्य्य है।

स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन का सब से बड़ा गुण यह था कि वे खामोशी से बैठना नही जानते थे। उनके लिए निष्क्रिय बैठना मृत्यु के समान था। वह यह नही चाहते थे कि मुर्दा बनकर जीवन व्यतीत किया जाय। हममे से असंख्य व्यक्ति लाशों के समान घसीटे जा रहे हैं। ऐसे जीवन मे क्या आनंद है? स्वामी श्रद्धानन्द जहां भी रहे, जिस परिस्थिति मे रहे, उन्होंने विरोधी अवस्थाओं से लड़ना नहीं छोड़ा। वह कहा करते थे कि जीवन का आनन्द संग्राम में है, परन्तु संग्राम भी वह जो किसी ऊंचे लक्ष्य को सामने रखकर लड़ा जाय। लड़ने की खातिर लड़ना कुत्तों का काम है। मर्द लड़ते हैं तो किसी मुराद के लिए। वह मुराद ऊंची मुराद होनी चाहिए। उसी मुराद के अनुसार हमारी हार जीत का निर्णय होता है।

स्वामी श्रद्धानन्द जब किसी नए काम को हाथ मे लेते थे तो उसकी आम घोषणा करते थे, मानो शेर के समान अपनी गर्जना की गूंज से जंगल मे अपने उपस्थित होने का परिचय देते थे। वह एक विशाल प्रोग्राम बना लेते थे और उसकी पूर्ति के लिए निरन्तर प्रोपैगैन्डा जारी करने के लिए सर्व प्रकार के आवश्यक सामान जुटा लेते थे। वह एक सेनापति के समान युद्ध की बारीकियों का पूरा २ अनुमान कर लेने मे सिद्ध हस्त थे। लड़ाई प्रारंभ करने से पूर्व वह व्यूह रचना की पूरे तौर पर जाच पड़ताल कर लेते थे। भाग्य पर भरोसा करना उन्हे स्वीकार न था। अपने बाजू की शक्ति पर उन्हें सदा अभिमान रहता था।

ईश्वर ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को ऐसी विशाल काया—भव्यमूर्ति—प्रदान की थी कि वह जहा भी खड़े हो जाते थे, हजारों में रहते हुए भी वह अकेले प्रभावशाली व्यक्तित्व को दर्शाते हुए देख पड़ते थे।

सब की आखें उनकी ओर लग जाती थीं।

वे दूसरों को अपनी ओर इस प्रकार खेंचते थे जिस प्रकार चुम्बक लोहे को खींचता है ।

जब वे अपना प्रोग्राम तय कर लेते थे तो अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना शुरू कर देते थे। उस समय वे सर्व साधारण की नुकता चीनी, चूंचरा और रोने धोने की कोई परवाह नहीं करते थे। "शेर सीधा तैरता है वक्ते रफ्तन आ। में" । इस लोकोक्ति के अनुसार वह अपने आप को मझधार मे डाल देते थे और देखते २ इस पार से उस पार पहुच जाते थे। यदि आप उनके जीवन पर दृष्टि पात करें तो आप को चकित करने वाली अनेक घटनाएँ पढ़ने को मिलेंगी ।

स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन में हालात को पलट देने वाली सबसे बड़ी घटना वह थी, जब स्वामी जी ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली को उलट देने का दृढ निश्चय कर लिया था। शहरों के भोग विलास को छोड़ कर उन्हों ने जगल की राह ली थी और ५-७ बच्चों को साथ लेकर वह प्रकृति की गोद में अकेले बैठने और शक्तियों को इकट्ठा करने के लिए हरिद्वार के पास गगा के तट पर जा बैठे थे। बैठे ही नही अपितु घोर युद्ध की तैयारी मे लग गए। जिस प्रकार श्री रामचन्द्र ने अपनी असहायावस्था में निविड बनों को अपने उद्देश्य की पूर्ति का साधन बनाया था, उसी प्रकार स्वामी श्रद्धानंद ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली की चीनी दीवार को तोड़ने के लिये अपनी असहायावस्था की परवाह न करते हुए विचारों की एक ऐसी सेना तैयार करदी कि जिसने थोडे ही समय में देश की काया पलट दी और जनता के हृदयों में प्राचीन शिक्षा प्रणाली का सिक्का बिठा दिया । स्वामी श्रद्धानद की यह एकाकी विजय न थी। इसके पीछे उन्होंने कई युद्ध लड़े । सभी में उन्हें सफलता प्राप्त हुई ।

आओ! हम उनके जीवन की सफलता के रहस्य को पहचानें। उनके जीवन का अनुकरण करें । जिस क्षेत्रमें उन्होंने पाव रक्खा, सफलता ने उनका चरण-चुम्बन किया। वह सदा ऊँचे आदर्शों के पुजारी बने रहे। समाज, धर्म, राजनीति, सभी स्थानों में उन्हें पूरा २ प्रवेश था। वह सर्वदा युद्ध क्षेत्र में सब से आगे की पंक्ति में खड़ा रहना पसन्द करते थे। आगे की पंक्ति में खड़ा रहने की जो जिम्मेदारी होती है, उसको वे सर्वदा उठाने के लिए सहर्ष तैयार होते थे। स्वामी श्रद्धानंद के गुणों को इस समय धारण करने की बडी आवश्यकता है क्यों कि उन गुणों का इस समय आर्य समाज मे सर्वथा अभाव दीखता है। स्वामी जी के गुणों को धारण करने से हम निश्चय पूर्वक समाज को धकेल कर आगे ले जा सकते हैं। खडा रहना, विचारते रहना, उन्नति के मार्ग में रुकावट पैदा करता है। आगे बढ़ना, धावा बोलना और विजय प्राप्त करना, सामाजिक उन्नति के लिए अनिवार्य्य गुण हैं। ये सब गुण स्वामी जी महाराज मे पाए जाते थे। ईश्वर करे ये गुण हम मे भी आ जायें।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त का स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव

—०—

बड़े दिन की छुट्टियों में संयुक्त प्रान्त की आ॰ प्रतिनिधि सभा का स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव मेरठ नगर में बड़े समारोह और सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रायः सभी प्रसिद्ध २ नेता और विद्वान् पधारे थे। आर्य नर नारियों की उपस्थिति भी बड़ी उत्साह वर्द्धक थी। लगभग ७०-८० हज़ार व्यक्ति उत्सव में पधारे थे। वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन, आर्यसम्मेलन, आर्य वीर दल सम्मेलन, कवि सम्मेलन इत्यादि कई सम्मेलन और परिषद हुईं। विविध विषयों पर विद्वानों और पण्डितों के उपदेश और व्याख्यान हुए। एक बैठक में कई २ विषयों के व्याख्यानों के रखने की प्रचलित प्रथा का परित्याग करके एक ही विषय पर दो दो तीन तीन व्याख्यानों की व्यवस्था की गई थी। यह परिवर्तन लाभदायक था। विदित हुआ है इस अवसर पर सभा को ८० हज़ार का दान प्राप्त हुआ है। निस्सन्देह उत्सव आशा से भी अधिक सफल हुआ है इसके लिए संयुक्त प्रान्त के आर्य भाई बधाई के पात्र हैं।

इस उत्सव में जो विशेष बात देखी गई वह संयुक्त प्रान्त से बाहर के आर्य भाइयों की बहु-संख्या में उपस्थिति थी। मध्य प्रदेश, बरार, हैद्राबाद (दक्षिण) सिन्ध, बिहार, बंगाल, राजस्थान और पंजाब भारत के प्रायः सभी प्रान्तों के नर—नारी उत्सव में सम्मिलित हुए थे। ऐसा प्रतीत होता था मानो यह उत्सव युक्त प्रान्त का न होकर भारत भर के आर्य्यों का मेला है। पंजाब के आर्य्य भाई तो बहु-संख्या में उप[illegible] थे और पंजाब की प्रान्तिक सभा के अधिकारी, उपदेशक [illegible] गुरुकुल [illegible] कन्या गुरुकुल इत्यादि संस्थाओं के छात्र छात्रायें तथा संचालक कई दिन स्थिर रूप से उत्सव में रहे थे। मुख्यतया पंजाब के आर्य्य भाइयों तथा साधारणतया युक्त प्रान्त के बाहर के आर्य्य भाइयों का यह सहयोग प्रशंसनीय था। शायद ही प्रान्त विशेष का कोई मेला या उत्सव हो जिसमें सभी प्रान्तों के आर्य्य नर नारियों का ऐसा अपूर्व सम्मेलन रहा हो जैसा इस उत्सव में रहा है। यह बात अत्यन्त स्वागत योग्य और उत्साह वर्द्धक है। सचमुच ऐसे ही अवसरों पर हम अपनी सम्मिलित शक्ति और सहयोग का श्रेष्ठ परिचय दे सकते हैं।

नगर कीर्तन तो देखते ही बनता था। भिन्न २ प्रान्तों के आर्य्य नर नारियों का २॥ ३ मील का लंबा जलूस मेरठ नगर के इतिहास में अभूत पूर्व घटना थी। गली-कूचों और हाट बाज़ारों में प्रत्येक की जिह्वा पर यही शब्द थे कि मेरठ में कांग्रेस इत्यादि संस्थाओं के बड़े २ विशाल जलूस निकले परन्तु ऐसा जलूस नहीं निकला है।

सुप्रबन्ध के लिये स्वागत कारिणी समिति धन्यवाद की पात्र है। श्री० बा० काली चरण जी प्रधान मन्त्री स्वागत समिति की तन्मयता देखते ही बनती थी। उनका पुत्र टाइफ़ाइड से पीड़ित था फिर भी उसकी पर्वाह न करके वे प्रबन्ध के गुरुतर भार में संलग्न थे। यह बात उन्हें हमारी निगाहों में बहुत ऊंचा उठा देती है और ऋषि के उन भक्तों का स्मरण करा देती है जिन्होंने आर्य्य समाज के यज्ञ में सब कुछ न्यौछावर किया है या जो न्यौछावर करने को तय्यार हैं। भाई महेन्द्र प्रताप जी को भी किन शब्दों में धन्यवाद दें। उनका परिश्रम भी स्तुत्य है। मेले की सफ़ाई, दूकानों की सुव्यवस्था जल, भोजन, रोशनी, डेरों, हस्पताल डाक तार सवारी इत्यादि की उत्तम व्यवस्था थी। इस महोत्सव के सुप्रबन्ध को देखकर ऐसा प्रतीत होता था कि यात्रियों के आराम और सुविधा की शायद ही कोई बात प्रबन्धकों की दृष्टि से ओझल हुई होगी। वस्तुतः यात्रियों के आराम और सुविधा का पूरा २ ध्यान रखने का यत्न किया गया था।

आर्यसमाज का संगठन
और
उसके दृढ़ करने की योजना
प्रान्तीय सभाओं तथा आर्य्य समाजों के नाम सरक्यूलर

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनेक उपकारों की जो इस भारतभूमि पर उन्होंने किये हैं एक विशेषता है कि उन्होंने सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्र में हमें संगठन दिया है। यह संगठन आर्य समाज की विशेषता है। जब कि अन्य संस्थायें संगठन रहित थीं तब आर्य समाज सुसंगठित था और दृढ़ था। आपस में आर्य समाज के सदस्यों में विश्वास और प्रेम था और इसलिये सम्मिलित कार्य दक्षता भी उसने दिखाई।

अनेक आर्यसमाजों को एक और नये सूत्र में सुसंगठित करने का ज़माना आया और प्रान्तों के आर्य्य समाज एक प्रतिनिधि सभा के रूप में सुसंगठित हुए यह आर्य्य समाज के संगठन के विकास में दूसरा स्टेज (Stage) है। तीसरा स्टेज वह हुआ जब कि स्व० स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के प्रयत्न से सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना हुई। संगठन के क्रममें सार्वदेशिक सभा शिरोमणि सभा कही जा सकती है और आर्य्य संगठन के विशाल मन्दिर में यदि विविध आर्य्य समाज पुख्ता नींव हैं और प्रतिनिधि सभायें मज़बूत दीवारें हैं तो सार्वदेशिक सभा को सुन्दर और सुदृढ़ कलश का रूप धारण करना चाहिए जहां पर से महर्षि की ओ३म् की पताका फहराती हुई समस्त भूमण्डल को दृष्टि गोचर हो। इसी उद्देश्य को लेकर मैं यह प्रार्थना पत्र आपकी सेवा में भेज रहा हूं। इस अवसर पर जब तक हम अपनी कमज़ोरियों की तरफ़ दृष्टि पात न करेंगे तब तक हम सुदृढ़ और शक्ति शाली होने के वास्तविक उपाय को भी नहीं सोच सकेंगे। प्रायः देखा गया है कि लोकल आर्य्य समाज तो मज़बूत है उनमें आपस की कमज़ोरी का बीज इतना नहीं पाया जाता परन्तु कई स्थानों में अभी तक प्रतिनिधि सभायें मज़बूत नही हो पाई हैं। कई जगह देखा गया है कि आर्य्य समाजें और उनके प्रान्त की प्रतिनिधि सभाओं के बीच में कोई सम्बन्ध नहीं है और कहीं कहीं तो प्रमुख आर्य्य समाज और प्रतिनिधि सभा के बीच विरोध का भाव विद्यमान है। मैं इन विरोधों के उन कारणों पर नहीं जाऊंगा जो व्यक्तित्व से सम्बन्ध रखते हैं। मुझे भली प्रकार मालूम है कि झगड़ों के तह पर व्यक्तिगत द्वेष की मात्रा बहुत काफ़ी रहती है और लीडरी की लालसा और किसी संस्था पर अधिकार की महत्वाकांक्षा ऐसे झगड़ों की बुनियाद है। इस अवसर पर मैं उस ओर विशेष दृष्टि डालूंगा जो कि हमारे संगठन के मौलिक सिद्धान्त से वास्ता रखता है। आर्य्य समाज के संगठन की विशेषता को हमें जानना चाहिए जिससे कि हम उपाय ठीक सोच सकें। आर्य समाज का संगठन इस प्रकार का है कि वह नीचे से ऊपर को बढ़ रहा है। केवल उदाहरण के लिए मैं उसकी तुलना कांग्रेस के संगठन से करूंगा ताकि हमें हमारी खूबी समझ में आ जाय। कांग्रेस जहां ऊपर से नीचे को बढ़ी है, वहाँ आर्यसमाज नीचे से ऊपर को बढ़ रहा है। कांग्रेस का इतिहास अगर आपको याद होगा तो आपको मालूम होगा कि ज़िला कांग्रेस कमेटियों तथा प्रान्तीय कांग्रेस

कमेटियों का जब नामोनिशान भी न था उस समय भी कांग्रेस चल रही थी। कांग्रेस ज्यों ज्यों शक्ति प्राप्त करती गई त्यों त्यों उसकी जड़ें नीचे को पहुंचती गईं। कांग्रेस के शक्तिशाली होने के बाद प्रांतीय कांग्रेस कमेटियों का सगठन सुदृढ़ और नियमित हुआ और उसके बाद ज़िला और ताल्लुका कांग्रेस कमेटियां हुईं। हमारे यहां ठीक इसके उलटा क्रम रहा है। हमारा आर्य समाज पहले हुआ, उसके बाद प्रतिनिधि सभाओं का संगठन हुआ और उसके बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी की दूरदर्शिता से सार्वदेशिक सभा का संगठन हुआ। इन दो विभिन्न परिस्थितियों के कारण सस्थाओं की शक्तियों में भी विभिन्नता है, जहाँ हम यह देखते हैं कि अखिल भारतीय कॉंग्रेस कमेटी शक्तिशाली है और अपनी शक्ति का परिचय प्रांतीय और ज़िला कांग्रेस कमेटियों को दे सकती है वहां प्रान्तीय और जिला कमेटियां उतनी शक्ति शाली नहीं हैं। आर्य समाज में जहां प्रमुख आर्यसमाज शक्तिशाली हैं वहां प्रतिनिधि सभाओं की शक्ति कमजोर है और प्रतिनिधि सभायें भी यदि शक्तिशाली हैं तो सार्वदेशिक सभा कमज़ोर है। इस अवसर पर मैं यह भी कहने का साहस करता हूं कि आर्य समाज की नींव की मजबूती इस बात की गारन्टी है कि आर्य समाज का भविष्य उज्वल और खतरे से बाहर है। जिन सगठनों की मूलाधार संस्थाएं मजबूत हुआ करती हैं वे सस्थाएं इतिहास में चिर-स्थायी रह सकती हैं। इतना कहने के पश्चात मैं यह भी निवेदन करना चाहता हू कि केवल नींव मजबूत हो जाने से हम कोई सार्व भौम काम नहीं कर सकते। नींव की मजबूती से हम अपना अस्तित्व तो चिरकाल तक कायम रख सकते हैं परन्तु जब तक इम विशाल भवन की दीवारें और कलश मज़बूत न हों तब तक हमारा यह दावा कि हम संसार को अपना स्वरूप दिखा सकें अपनी पवित्र पताका भी दिखा सकें, भ्रम मात्र और निर्मूल रहेगा। इसलिए प्रत्येक आर्य समाजी का यह परम कर्तव्य होना चाहिए कि वह प्रतिनिधि सभाओं को और सार्वदेशिक सभा को शक्तिशाली बनाने के लिए अपनी सारी शक्ति और सम्पूर्ण ताकत प्रदान करें। इस भूमिका के पश्चात् मेरी निश्चित राय है कि

(१) कोई भी आर्य समाज ऐसा न हो कि जो प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा के साथ सम्मलित न हो।

(२) यथा सम्भव कोई भी प्रतिनिधि सभा न हो जिसका सम्बन्ध सार्वदेशिक सभा के साथ न हो।

(३) सार्वदेशिक सभा को सुदृढ़ करने के लिए यह आवश्यक है कि उसका अपना स्वयं एक विशाल फ़ण्ड हो जिसके जरिये वह न केवल भारतवर्ष के समाजों का सामान्य नेतृत्व कर सके अपितु समस्त भूमण्डल मे आर्य समाज की छाप लगा सके और सब समाजों और प्रतिनिधि सभाओं को इस प्रकार केन्द्रीभूत कर सके जिसमें सब की शक्तियां सम्मलित होकर विशाल परिणाम ला सकें।

(४) आर्य समाज की सारी सम्पतियाँ प्रतिनिधि सभा के नाम कानूनी तरीके से रजिस्ट्री हों।

अब मैं आपसे प्रार्थना करूंगा कि कृपया आप सार्वदेशिक सभा के दफ्तर को सूचित करें:—

(१) आपके प्रान्त में कौन कौन सी समाजें हैं जो प्रतिनिधि सभा के साथ सम्मलित नहीं हैं।

(२) आर्य समाज की कौन कौन सी सम्पत्तियां हैं जिनकी प्रतिनिधि सभा के नाम रजिस्ट्री नहीं हुई हैं?

आपसे मैं यह भी आग्रह करूंगा कि आप कृपया इस बात की कार्यवाहि शीघ्र प्रारम्भ करदें कि जो आर्य समाज प्रतिनिधि सभा से सम्मलित नहीं हैं वे शीघ्रातिशीघ्र सम्मलित हो जायें।

आर्य समाज की सारी सम्पत्तियों की ब्योरे वार सूची प्रतिनिधि सभा के दफ्तर में रहे और जिनकी रजिस्ट्री अभी तक नहीं हुई उनकी रजिस्ट्री प्रतिनिधि सभा के नाम पर करने के लिए कार्यवाही की जावे। इस दफ्तर को आप कृपया यह भी सूचित करें कि इसमें आपने क्या कार्य शुरू किया है और समय समय पर अपनी रिपोर्ट भेजते रहेंगे।

घनश्यामसिंह गुप्त
प्रधान—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली

धर्म और विज्ञान

[श्री स्वामी शिवानन्द]

—※—

"साइन्स और आस्तिकवादीकी शत्रुता बहुत पुरानी नही है। प्राचीन आस्तिकवादी सृष्टिके नियमों का अवलोकन करके ही ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करते थे। परन्तु कुछ दिनों पश्चात् साइन्स और आस्तिकवाद में झगड़ा हो गया। आस्तिकवादी समझने लगे कि ईश्वर का सृष्टि-रचना से क्या सम्बन्ध, उन्होंने मनमाने गुण ईश्वर मे आरोपित करने शुरू कर दिये। ज्ञान-मार्ग का अन्त हुआ और भक्ति मार्ग चला। भक्ति मार्ग ने अन्धविश्वासको बढ़ाया, इसीके साथ साइन्स-वादका ह्रास हुआ। इसके बाद साइन्स का पुनरुत्थान पश्चिम में हुआ। उस समय वहा आस्तिकवाद तो न था, परन्तु उसीके नामपर अन्धविश्वास अवश्य फैला था प्रचीन भारतवर्षीय तो ज्ञानको ईश्वर प्राप्ति तथा मोक्ष का साधन मानते थे। नवीन कालमे साइन्स या विज्ञानको अनीश्वरताका एक चिन्ह समझने लगे होंगे।

साइन्स और धर्म का झगड़ा यूरोप से आरम्भ हुआ। उस समय योरुप में ईसाई धर्म का प्राबल्य था। ईसाई धर्म का अर्थ ही यह था कि पोप जो कुछ कहदे वही सत्य है मनुष्यको आख, कान खोलकर चलनेकी वहा आज्ञा न थी। परन्तु जब कुछ लोगोंने आख कान खोलकर सृष्टिका अव-लोकन करना आरम्भ कर दिया तो धर्माध्यक्षोंने उनका विरोध किया। इसलिये गैलिलियो आदि स्वतन्त्र बिचार के अन्वेषकों को कड़ी यन्त्रणाएं दी गईं। यह लडाई का आरम्भ था और इस वैमनस्यने जो पहला प्रभाव साइन्स वेत्ताओंके हृदय पर डाला, वह यह था कि हमारे ऊपर अत्याचारोंका कारण आस्तिकवाद है। ज्यों ज्यों आस्तिकवादी अपने कल्पित ईश्वरके निराधार सिंहासनको साइन्सवालोंके पंजे से बचाने का यत्न कर रहे थे, त्यों त्यों साइन्सवालोंको आस्तिक-वादकी निर्मूलता विश्वास होता जाता था। इसमें भूल दोनों ओर से थी, परन्तु अधिक भूल धर्मा-ध्यक्षोंकी ओरसे थी यदि धर्माध्यक्ष समझते कि साइन्सवेत्ता केवल उन नियमों के अन्वेषणमें लगे हुए हैं जिन नियमों की आस्तिकवादी पूजा करते हैं तो साइन्स धर्मसे विरुद्ध न होकर सच्चे आस्तिकवादीकी महत्ता दिखलानेमें संलग्न होती। साइन्सवालोंको यह सोचना चाहिये था कि आस्तिकवाद केवल उन्हीं सिद्धान्तों का नाम नहीं है जो अन्धविश्वासियोने प्रचलित कर रक्खे हैं। परन्तु जब आस्तिकवाद के नामपर साइन्सवालोके प्राण लिए जाने लगे और उनको देखने-सुनने और सोचनेकी आज्ञा न रही तो मरता क्या न करता। उन्होंने खुले मैदान में लड़ना आरम्भ कर दिया। यह युद्ध यहा तक बढ़ा कि साइन्सवालोंको आस्तिकवाद नाम तकसे भी घृणा हो गई और वह घृणा अब तक चली आ रही है। यह बात नहीं है कि साइंसवाले सभी उसी पुराने विचारके हैं। साइंसकी वर्तमान उन्नतिने साइंसवालोंको

भी इस बात का निश्चय करा दिया है कि चाहे विशेष प्रकारका आस्तिकवाद झूठा और निर्मूल हो, तथापि साइंस के नियमोंके लिये किसी न किसी नियन्ताकी आवश्यकता है। किन्तु जिस प्रकार धर्ममें अन्ध विश्वास होते हैं उसी प्रकार साइंसमें भी अन्ध विश्वास हैं। वस्तुत: विचार किया जायतो साइंस और आस्तिकवाद एक दूसरे से विरुद्ध नहीं हैं। साइस क्या है? सृष्टिकी घटनाओंका भली भांति निरीक्षण करना, और यह सिद्ध करना कि यह अनियमित नहीं हैं, फिर उन नियमोंका वर्गीकरण करना। इसी का नाम साइंस है साइन्स की जैसे जैसे उन्नति होती जाती है, वैसे ही संसार के वर्तमान नियमोंका उसे पता लगता जाता है। उन नियमोंका पता लगाकर इसके आगे न बढ़ना और यह मान लेना कि यह नियम स्वयं ही बिना किसी बुद्धि तथा इच्छा या शक्ति के काम करते रहते हैं, साइस के मौलिक नियमों का स्वय खण्डन करना है। जो साइंसवेत्ता अन्वेषण आरम्भ करता है कि साइंस की घटनायें एक दूसरे से असम्बद्ध नहीं हैं, वरं वे नियम रूपी सूत्रों में पिरोई हुई हैं। यदि ऐसी न हो तो साइस वालोंको आगे बढ़ने का साहस भी न होता, साइस एक पग भी उन्नति न कर सकती। जैसे एक साइंस-वेत्ताने एक शीशी भर जलका विश्लेषण करके यह पता लगाया कि शीशी का उतना जल हाइड्रोजन और आक्सिजन से मिलकर बना है। अब उनको यह भी विश्वास है कि जो नियम इस शीशी भर पानी मे काम करता है वही संसार के अन्य जलों में कार्य कर रहा है। इस प्रकार समस्त साइंस का मूलाधार सिद्धान्त यह है कि संसार की सारी घटनायें असम्बद्ध नहीं, किन्तु नियमबद्ध हैं। यह सिद्धान्त उस समय भी था, जब साइस छोटी सी बच्ची थी। अब भी है जब कि साइस इतनी उन्नति कर गई है। आगे भी रहेगा। साइंस केवल इतना ही नहीं मानती कि संसार की घटनायें नियमबद्ध हैं। किन्तु वह इससे आगे चल कर यह मानती है कि यह नियम भी स्वयं एक और सूक्ष्म नियम सूक्ष्मतर नियमों के साथ बधे हुए हैं। जब साइंस ने इतना मान लिया तो फिर उन नियमों के लिये चेतना अर्थात् ज्ञान और इच्छा शक्ति की आवश्यकता न समझना साइसवेत्ताओं को शोभा नही देता। इसी लिये बड़े साइसवेत्ता आगे किसी चेतन शक्ति पर विश्वास करते हैं या केवल यह कह कर सतुष्ट हो जाते हैं कि हमारी गति केवल इन्हीं नियमों तक है। न हम इससे बढ़ना ही चाहते हैं। कुछ कह रहे हैं कि साइस का अधिकार केवल भौतिक नियमों तक है, अभौतिक ससार इसकी सीमा से बाहर है। उनका यह उत्तर भी यह प्रकट करता है कि वे नास्तिक नहीं हैं। केवल आस्तिकवाद के सिद्धान्तों से अनभिज्ञ हैं।

वैदिक सिद्धान्त साइंस (विज्ञान) और धर्म दोनों को स्थान देता है। साइंस भौतिक जगत्का निरीक्षण करता है और धर्म अभौतिक सत्ता का परिज्ञान कराता है।

धर्म और देश प्रेम

[ले०—रघुनाथ प्रसाद पाठक]

(Religion and Patrietism)

प्राय ईसाई आचार-शास्त्री धर्म और देश भक्ति में सगति बिठाते समय बहुत परेशान रहते हैं। धर्म, प्रेम, सत्य न्याय, सहानुभूति, आत्मसमर्पण और प्राणि मात्र से प्रेम और उनके कल्याण को श्रेष्ठ भावनाओं और आचरण की शिक्षा देता है। देश प्रेम जो वस्तुत एक पवित्र गुण है बहुत निकृष्ट अर्थों में व्यवहृत होने लग गया है। साधारणतया लोग देश-प्रेम को घृणा, युद्ध और प्रत्येक प्रकार के अत्याचार और हिंसा का प्रतिपादक समझने लग गये हैं। ऐसी अवस्था में देश प्रम और धर्म में विरोध का दीख पड़ना स्वाभाविक है यही कारण है लोग देश-प्रेम का अर्थ युद्ध मानने लग गये हैं। और युद्ध विरोधी लोग देश-प्रेम विषयक इस प्रकार की परिभाषाओं का समर्थन करने लग गये हैं कि ' देश प्रेम धूर्तों का आश्रय स्थान है"।

Patriotism is the last refuge of a scoundrel परन्तु क्या वस्तुत. देश-प्रेम धर्म-विरोधी है ?

देश-प्रेम विश्व-प्रेम का दूसरा रूप है। इसका वास्तविक रूप मानवता का प्रसार तथा उसका सरक्षण करना, सबके समान रूप से जीने तथा हर प्रकार की लौकिक और पारलौकिक उन्नति कर देना, संसार के प्राणीमात्र का कल्याण सम्पादन करने की सुविधा प्रदान करना तथा समाज में सुख और शान्ति का वातावरण स्थापित करना है। दूसरे शब्दों में इसे ही हम धर्म का स्वरूप कह सकते हैं। देश प्रेमका अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य देश-प्रेम के वशीभूत हो मानवता के नाते उचित और अनुचित का विचार किए बगैर आचरण करे और अपने देश से भिन्न-देशों से घृणा करे तथा पापाचार से समाज की सुख शान्ति और समृद्धि का विनाश करे। देश-प्रेम का जो रूप ऊपर रक्खा गया है वस्तुत' वह धार्मिक ही है और देश-प्रेम और धर्म में कोई विरोध नहीं है। इस का अर्थ यह नहीं है कि देश-प्रेम के इस विशाल दृष्टि-कोण को दृष्टि में रख कर मनुष्य अपने देश को या उसके प्रति अपने कर्त्तव्यों को भूल जाय, या उनकी उपेक्षा करे। मनुष्य को अपने देश की सेवा, जो कुछ बन पडे अवश्य करनी चाहिए परन्तु मानवता के विशाल भाव से उसकी रक्षा करते हुए और इस इच्छा के साथ कि देश अपनी जो सर्व श्रेष्ठ वस्तु मानव समाज को अर्पण कर सकता है, अवश्य करे तथा अपने देश और समाज की सुख शान्ति और अभिवृद्धि मे श्रेष्ठ योग देवे।

श्रीयुत लुइस यल० मैन (Mr Louis L. Man ने पिछले दिनों यूनिटी (unity) नामक सुप्रसिद्ध अंग्रेजी पत्र में इस विषय पर अच्छा विचार किया था। उन्हों ने सिद्ध किया था कि देश-प्रेम धर्म-विरोधी नहीं है वरन धर्म का ही दूसरा रूप है। उनके लेख के कुछ आवश्यक अंश इस प्रकार हैं —

"There is the patriotism that is true and the patriotism that is false the latter embraces the sentiment "My country right or wrong"— Our generation, has been wrongly conditioned upon the subject of Patriotism We are totally blind to its peaceful implications, whenever the word is uttered, it at once calls up the picture of war in our mind As if peace did not have her victories no less renowned than war As if peace did not have need of patriotism as demanding and acting as that of war. As if those great souls who struggle to abolish poverty, to alleviate disease, to reduce crime, to eliminate ignorance, to free schools from the control of politics. who fight against graft and corruption and dishonesty in Government, to say nothing of the microbe hunters' and the ' Death fighters' and the Red Cross and the Salvation Army who struggle to redeem the victims of misfortune from their lordly estate, are not patriotic. Patriotism must not be defined as a love for one's country, in terms of a willingness to die for one's country It must be redefined as a love for one's Country— to live for one's countrymen"

अर्थात देश-प्रेम के २ रूप हैं। एक सच्चा और दूसरा झूठा। सच्चा देश-प्रेम धर्म की अवज्ञा नहीं करता। दूसरा अर्थात झूठा देश-प्रेम सैनिक-वाद, और युद्धवाद को स्वीकार करता है।

जिसका अर्थ—मेरा देश सही हो या गलत—सम्राज्य वाद और राष्ट्रीयता (Nationalism) है।। हमारी वर्तमान सन्तति का देश-भक्ति के गलत रूप पर निर्माण हुआ है। हम देश-भक्ति के शान्त गूढ भावों के प्रति नितान्त अन्धे हैं। देश भक्ति शब्द का नाम लेते ही मस्तिष्क में युद्ध, का चित्र आजाता है, मानो शान्ति संसार से विदा हो गई है। मानो शान्ति का देश-प्रेम पर कोई अधिकार नहीं हैं। सब कुछ अधिकार 'युद्ध' का ही है। मानो संसार के महान् व्यक्ति देश-प्रेमी नहीं है। जो निर्धनता के विनाश, महामारियों के उन्मूलन अपराधों के निराकरण और अज्ञान के निवारण के लिए जद्दोजहद कर रहे हैं। जो राजनीति के पाश से स्कूलों को बेईमानी, धूर्त्तता, मक्कारी, शोषण, दोहन, लूट-खसोट से शासनों को मुक्त करने की चेष्टा कर रहे हैं। दार्शनिकों, धर्म जीवियों और जनोपकारक सस्थाओं की तो गणना ही क्या जो दुःखी और पीड़ित समाज के कष्टों के निवारण के उपाय कर रहे हैं या बतला रहे हैं। देश के लिए मरने की इच्छा के रूप में देश-भक्ति

की परिभाषा नहीं होनी चाहिए। वरन् इसकी परिभाषा देश वासियों के लिए जीने की इच्छा के प्रकाश के रूप में होनी चाहिए जिससे देश-विशेष समस्त मानव समाज के कल्याण सम्पादन में जो योग दे सके देवे। इस प्रकार के देश-प्रेम और धर्म में कोई विरोध न होगा। वरन् वह स्वयं धर्म का ही दूसरा रूप होगा।

इन विचारों से कौन समझदार व्यक्ति होगा जो सहमत न होगा। इसमे संसार भर को कुटुम्ब समझने की वैदिक शिक्षा की स्पष्ट झलक है।

वस्तुत जब तक समाज का इस प्रकार की वैदिक शिक्षाओं पर पुनर्निर्माण नहीं होता तब तक इस प्रकार की गलत फहमिया दूर न होगी और न उसका अभीष्ट कल्याण ही सिद्ध होगा। हर्ष है वह समय तेजी के साथ आ रहा है जब संसार वैदिक शिक्षाओं के चारो ओर घूमेगा और अपना कल्याण सम्पादन करेगा।

"मृत्यु-किरण" या नरघातक आविष्कार।

(ले०—श्रीयुत रामनारायण जी)

जैसे-जैसे हम भावी महायुद्ध के विषय में नयी-नयी बातें सुनने के आदी होते जाते हैं, हमारे सामने अनेकों प्रकार के अस्त्र-शस्त्र तथा युद्ध सम्बन्धी योजनाएं प्रकट होती जाती हैं। कभी हम वायुयानों द्वारा बम और गैस-वर्षा की आशंका सुनते हैं, तो कभी प्रलयंकर शस्त्र प्रहारों द्वारा नर-हत्या के उपाय। कभी कभी ऐसे आविष्कारों के बारे में भी हमें समाचार मिलते हैं, जिन्हें वैज्ञानिक 'मृत्यु-किरण' के नाम से पुकारते हैं। 'मृत्यु किरण' यद्यपि अभी तक किसी ने देखी नहीं है, तथापि उसके बारे में सुना बहुत है।

'मृत्यु-किरण' नामक आविष्कार के सम्बन्ध में कहा जाता है कि यदि इन किरणों का उपयोग शत्रु सेना पर किया जाय तो उनके शरीर का रक्त मवाद में बदल जायगा, शरीर के वस्त्र जलकर भस्म हो जायगें। इन किरणों की शक्ति से उड़ते हुए हवाई जहाज को निश्चेष्ट करके भूशायी किया जा सकेगा तथा चलती हुई मशीनों को बन्द किया जा सकेगा।

बहुत से वैज्ञानिकों ने ऐसी किरणों को खोज निकालने का दावा किया है। समय समय पर इस प्रकार के समाचार सुनने में आते हैं कि अमुक वैज्ञानिक इस प्रकार के आविष्कार में निमग्न है। और उसने सफलता भी प्राप्त कर ली है। कहा जाता है कि आजकल प्रसिद्ध गणितज्ञ प्रो० अयंस्टीन भी इसी प्रकार के नर-घातकी आविष्कार की खोज में लगे हैं, अमेरिका की सरकार उनके आविष्कारों को गुप्त रखती है और उन्होंने बहुत से महत्वपूर्ण अस्त्र-शस्त्र खोज निकाले हैं।

कहा जाता है कि इङ्गलैण्ड के वेल्स प्रान्त में एक सुरक्षित बंगले में एच० ग्रिडेल मैथ्यू नामक वैज्ञानिक अपनी प्रयोगशाला में इस प्रकार के अनुसन्धान मे निमग्न हैं। उनके बंगले के चारों ओर बिजली के करेंटयुक्त तार लगाये गये हैं और दिन रात वहां सगीनों का पहरा रहता है। इस वैज्ञानिक ने, कहा जाता है कि, ऐसी किरण का आविष्कार किया है जिसके द्वारा शत्रुओं के वायुयानों को आकाश मे ही बिलकुल रोक दिया जा सकता है। इसी वैज्ञानिक ने बेतारकेतार द्वारा टारपीडो चलाने और वायुयान संचालन करने वाले यन्त्रों का आविष्कार किया है, जो पांच मील के फासले पर से गोले बरसा सकते हैं।

इङ्गलैण्ड ही के एक दूसरे वैज्ञानिक हैं, डा० चैटफील्ड। इन्होंने बिना किसी कष्ट के ही मनुष्य का प्राणान्त कर देने वाली रश्मियों का आविष्कार किया है। एक डेनिश इञ्जीनियर हैं मि० रेयन। कहा जाता है कि इन्हों ने ऐसी रेडियो तरगों का आविष्कार किया है जिस के द्वारा एक सौ मील के फासले पर से डिनेमाइटको उड़ाया जा सकता है। इसके अलावा, एक फ्रांसीसी वैज्ञानिक ने ऐसी पिस्तौल तैयार की हैं, जिनसे गोली के बदले गैस छोड़ी जाती है, जो मनुष्य

को क्षण भर के लिये अन्धा, परन्तु जन्म भर के लिये अपंग बना देती है। इसी प्रकार अमेरिका के निकोला टेस्ला नामक विद्वान ने ऐसे प्रकाश का आविष्कार किया है जो युद्ध होने पर अपनी सीमा के चारों ओर क्षण भर में ही फैला दिया जा सकता है और वह दस लाख सैनिकों के आक्रमण को विफल करने तथा दस सहस्र आक्रमणकारी वायुयानों को गिराने के लिये पर्याप्त होगा।

इङ्गलैण्ड के मि० पौल हम्फरी मेकर्नल नामक सुप्रसिद्ध परा-लाल-किरण (Infra-Red Ray) के अनुसंधानकर्ता ने एक और नवीन रहस्यमयी किरण का निर्माण किया है। कहा जाता है कि इन्होंने अपने आविष्कार का प्रदर्शन भी स्थल और जलसेना-विशेषज्ञों के समक्ष किया है। इस किरण से नर-हत्या नहीं होती, वरन् अदृश्य मनुष्य के अनुसंधान में यह किरण उपयोगी होती है। छिपा हुआ मनुष्य चाहे एक मील की दूरी पर हो, उसके शरीर की गर्मी द्वारा यह किरण उसकी उपस्थिति जान लेगी। इस किरण द्वारा वायुयान की गर्मी का भी पता लग जाता है, चाहे वह कितनी ही दूर हो या कितनी ही ऊंचाई पर हो। जलयान को ढूंढ निकालने मे तो तनिक भी कठिनाई उपस्थित नही होती। ऐसी किरण का आविष्कार न केवल महत्वपूर्ण है, वरन् सम्भव भी हो सकता है।

एक अन्य नर-घातकी आविष्कारक का दावा है कि उसने एक ऐसी युक्ति का निर्माण किया है जिस के द्वारा वह रासायनिक और गैसीय (Gasous) पदार्थों को रेडियो तरङ्गों द्वारा विस्तृत कर सकता है। हाईड्रोमाइनिक एसिड नामक गैसको यदि रेडियो-तरङ्गो द्वारा विस्तरित किया गया तो क्षण भर मे प्रलय के दृश्य उपस्थित हो जाने मे कुछ भी सन्देह नहीं है। किसी भी प्रकार की महामारी के कीटाणुओं का ब्रौडकास्ट यदि किया जा सकेगा तो शत्रुपक्ष क्षण भर मे महामारी-ग्रस्त हो जायगा।

इन घातक वैज्ञानिकों के आविष्कारों की सत्यता मे किस प्रकार विश्वास किया जाय, यह वैज्ञानिक ही बता सकते हैं। ससार के कुछ प्रमुख वैज्ञानिक इन आविष्कारों की सत्यता मे सन्देह करते हैं। परन्तु इगलेंड की 'रेडियो सोसाइटी' नामक संस्था ने 'मृत्यु-किरण' के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया है। इस सस्था ने एक ऐसा विभाग खोला है, जिसमे मृत्यु-किरण सम्बन्धी आविष्कारों का अध्ययन किया जायगा। अल्ट्रा शार्ट तरङ्गो (Ultra short-wave) द्वारा पतिगों, मक्खियो तथा अन्य कीटाणुओ की हत्या करने के प्रयोग किये जायेंगे।

वैज्ञानिकों ने अनेक अवसरों पर अल्ट्रा शार्ट-तरङ्गों के मार्ग मे कीटाणुओ को रखकर उनकी हत्या करने मे सफलता प्राप्त कर ली है। न्यूयार्क मे इस प्रकार के एक प्रयोग का हाल मे ही प्रदर्शन किया गया था। एक छोटे यन्त्र द्वारा पृथ्वी पर तरङ्गो का प्रभाव डाला गया। दो मिनट तक तरङ्गो के विस्तार के उपरान्त कृषि-शास्त्र विशेषज्ञों ने अनुसंधान कार्य आरम्भ किया। इन तरङ्गो के प्रभाव से उस बागभर मे,

जिसमें यह प्रयोग किया गया था, कीटाणुओं का नाम निशान भी शेष न रहा। वृक्षों की लकड़ी के भीतर रहने वाले कीटाणु भी जल-भुन कर राख हो गये।

वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि रेडियम और एक्स-किरणों को उचित मात्रा में एकत्र करके प्रयोग किया जाय, तो उसका प्रभाव संहारक हो सकता है। एक वैज्ञानिक ने इसका वर्णन किया है कि किस प्रकार केवल रेडियम के उपयोग से ही सफलतापूर्वक पूर्ण हत्याकाण्ड किया जा सकता है। परन्तु रेडियम द्वारा तुरन्त मृत्यु नहीं हो पायगी। रेडियम का एक बालुका सदृश कण भी घातक होगा, परन्तु उसका भीषण प्रभाव कुछ काल के बाद ही ज्ञात होगा।

फेयरहम (Fareham) के लार्ड ली महोदय ने उन घातकी परिणामों का वर्णन किया है, जो रेडियम के प्रभाव से हुए हैं। कहा जाता है कि न्यूजर्सी में घड़ी बनाने के एक कार्यालय में मिश्रित रसायनों का उपयोग घड़ी के डायल पेण्ट करने में किया जाता था। जो लड़कियां ब्रश द्वारा घड़ी के डायल पेण्ट करतीं थीं, बहुधा ब्रश की नोंक को सीधा करने के लिये वे उसे जीभ पर लगा लेती थीं। रेडियम के अदृश्य कण उनके शरीर में व्याप गये। कई वर्षों के पश्चात् उसका प्रभाव ज्ञात हुआ। इन लड़कियों के शरीर से रेडियम का तेज फूट निकला और मृत्यु हो जाने पर भी रेडियम का तेज चमकता ही रहा। उनको जो पीड़ा अनुभव हुई, उसका वर्णन किसी प्रकार भी नहीं किया जा सकता। इनमें से एक लड़की ने एक दिन अन्धेरे में अपने शरीर से तेज किरणों को निकलते देखा और वह एक अद्भुत पीड़ा मे ग्रस्त हो गयी।

यदि 'मृत्यु-किरण' का अस्तित्व सत्य है, तो मृत्यु-किरण इन्हीं किरणों को कहा जा सकता है, जिनका वर्णन हमने ऊपर किया है। इसमें सन्देह भी नहीं है कि रेडियम अल्ट्रा-शार्ट तरङ्ग, स्पेक्ट्रम तथा 'कास्मिक किरणों' की शक्ति के विषय मे अनेक प्रयोग और अनुसन्धान किये जा रहे हैं। इन अनुसन्धानों का परिणाम क्या होगा, यह वैज्ञानिकों पर निर्भर है।

परन्तु क्या वैज्ञानिक अपने अनुसन्धानों और प्रयोगों को गुप्त रखे हुए हैं और उनके परिणाम से संसार अनभिज्ञ रहेगा? क्या वैज्ञानिकों ने 'मृत्यु किरण' सरीखी कोई वास्तविक वस्तु खोज निकाली है? हम अभी तक अन्धकार में हैं, हमने सम्भावनाएं और समाचार ही सुने हैं। अभी तक 'मृत्यु-किरण' का रहस्य प्रकट नहीं हो पाया है। मृत्युकिरण सम्बन्धी आविष्कारों को सुन-सुनकर हमारा हृदय काप जाता है, परन्तु वास्तव में मृत्यु-किरण कोई वस्तु है भी, इसमें हमें सन्देह है, और तब तक सन्देह रहेगा, जब तक संसार के प्रमुख वैज्ञानिक 'मृत्यु-किरण' के अस्तित्व में विश्वास न करने लगेंगे।

(विश्वमित्र)

शंका-समाधान

(क्रमागत)

VII. CASTE.

Question

1 Are you for retention, abolition or modification of the present Caste system, including divisions into sub-castes ?

2 Is it possible to allow Hindus to retain there present caste distinctions and yet create in them such a community of interest that the members of all castes may regard each other as equally important parts of the Hindu Society ? If your answer is in the affirmative, please state what steps are necessary to bring about the above result.

Answer

Arya Samaj is in favour of complete demolition of the present caste system It believes in Varnas on the basis of GUNA, KARMA and SVABHAVA and not on heredity

जात पांत

प्रश्नः—

(१) क्या आप वर्तमान जात-पाँत और उप जातियों पक्ष में हैं और क्या आप उनका उन्मूलन या संशोधन चाहते हैं ?

(२) क्या यह संभव है कि हिन्दू लोग अपने वर्तमान जात-पांत के भेदों को स्थिर रखते हुए ऐसी जाति में परिणित हो जाय जिस से कि समस्त जातियों के लोग एक दूसरे को हिन्दू समाज के समान रूप से महत्वपूर्ण अंश समझें। यदि आपका उत्तर स्वीकारात्मक हो तो कृपया लिखे कि ऐसा करने के लिए किन किन आवश्यक उपायों का अवलम्बन किया जाय।

उत्तर —

आर्य्य समाज वर्तमान जात-पांत की प्रणाली के पूर्ण उन्मूलन के पक्ष मे है। गुण कर्म, और स्वभाव पर आश्रित वर्णों मे उसकी आस्था है। जन्म की जात-पांत में बिल्कुल नहीं—

ईश्वर की सत्ता

प्रश्न :—

तुम ईश्वर ईश्वर चिल्लाते हो यदि ईश्वर होता तो दिखलाई क्यो न पड़ता ? चूंकि वह दिखाई नहीं देता है इसलिये ईश्वर है ही नहीं ?

उत्तर —

यदि ईश्वर दिखाई देता तो शायद सब कोई अपनी २ मनोवाञ्छा पूरी करने की प्रार्थना करता और उसे हैरान करता। दूसरे जिन तत्वो से मनुष्य का यह शरीर बना है उनसे उसको देखना असभव है। परमेश्वर दिखाई भी देता है, वह मनुष्य, पशु, वृक्ष आदि सब पदार्थ जो इस संसार मे दिखाई देते हैं, उनका कोई एक बनाने वाला जान पड़ता है यही उसका देखना है। जैसे सुख दुख पहचाना जाता है वैसे ही परमेश्वर को पहचानो। अब सबमे है और

इसमें भी है और जैसे सुख दुख की प्रतीति मन में होती है वैसी ही उसकी भी हो सकती है। ईश्वर सब जगह एक सा है परन्तु यह बात है कि उस चेतन का जितना जिसके आत्मा में प्रकाश है अर्थात् जितना जिसे ज्ञान है उतना ही उसे परमात्मा का अनुभव होता है।

प्रश्न :—

यह बात स्पष्ट नहीं हुई। कृपया और स्पष्ट कीजिए। ईश्वर की सत्ता विज्ञान से सिद्ध है या नहीं?

उत्तर —

इस प्रत्यक्ष सृष्टि में रचना विशेष आदि ज्ञानादि गुणों के प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर का भी होना प्रत्यक्ष है। वैज्ञानिकों में भी ईश्वर का विषय अब मान्य हो गया है परमेश्वर है या नहीं इस विषय की नई छान बीन से पता लग गया है कि बिना परमेश्वर की सत्ता को माने साइंस का काम ही नहीं चल सकता। विज्ञान और धर्म (Religion & Science) नामी पुस्तक में साइंस के महा विद्वान डा० जे० ए० फ्लिमिंग कहते हैं कि 'साइंस के अध्ययन से हमको इस प्राकृतिक जगत में तरतीब योजना, धारणा और विचार दिखलाई पड़ते हैं। ये बातें इत्तिफाक से अचानक नहीं आगईं। ये विचार और चेतनता की सूचना देते हैं। यह ससार केवल वस्तु ही नहीं है। प्रत्युत यह विचार मय है जो बिना विचारवान कभी हो ही नहीं सकता। इस जगत में एक सर्व व्यापक चैतन्य विचारवान सत्ता भासित होती है जिसका हम भी एक नमूना हैं।" और भी देखो। शरीर में किस प्रकार की ज्ञान पूर्वक सृष्टि रची है कि जिसको विद्वान लोग देखकर आश्चर्य मानते हैं। भीतर हाड़ों का जोड़, नाड़ियों का बन्धन, मांस का लेपन, चमड़ी का ढक्कन, प्लीहा, यकृत, फेफड़ा, पंखा, कला का स्थापन, जीव का संयोजन, शिरोरूप, मूल रचन, लोम नखादि का स्थापन, आंख की अतीव सूक्ष्म शिरा का तारवत ग्रन्थन, इन्द्रियों के मार्गों का प्रकाशन, जीव के जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्था के भोगने के लिये स्थान विशेषों का निर्माण, सब धातु का विभाजीकरण, कला कौशल स्थापनादि अद्‌भुत सृष्टि को बिना ईश्वर के कौन कर सकता है? इसके बिना नाना प्रकार के रत्न धातु से जटित भूमि विविध प्रकार वट वृक्ष आदि के बीजों मे अति सूक्ष्म रचना, असख्य हरे, सफेद, पीले, काले, चित्र, मध्य रूपों से युक्त पत्र पुष्प, फल मूल निर्माण, मिष्ट, क्षार, कटु, कषाय, तिक्त, अम्लादि विविध रस सुगन्धादि युक्त-पत्र, पुष्प, फल, अन्न, कन्द मूलादि रचन, अनेकानेक क्रोड़ों भूगोल, सूर्य्य चन्द्रादि लोक निर्माण, धारण, भ्रामण, नियमों में रखना आदि परमेश्वर के बिना कोई भी नहीं कर सकता। नाना प्रकार सृष्टि मे विविध रचना बनाने वाले परमेश्वर को सिद्ध करती है। जब आत्मा मन और मन इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता वा चोरी आदि बुरी वा परोपकार आदि अच्छी बात के करने का जिस क्षण में आरम्भ करता है उस समय जीव की इच्छा ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर झुक जाती है उसी क्षण में आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, शङ्का और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय निशङ्कता और आनन्दोत्साह उठता है। वह जीवात्मा की ओर से नहीं किन्तु परमात्मा की ओर से है।

———

हिन्दू जाति के रोग का वास्तविक कारण क्या है ?

(श्री भाई परमानन्द जी)

"उच्च सिद्धान्त तथा उसके मानने वालों का आचरण ये दो विभिन्न बातें हैं। मनुष्य की उन्नति और सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसके सिद्धान्त और आचरण में कहां तक समता पाई जाती है। जब तक यह समता रहती है—वह उन्नति करता है, जब मनुष्य के सिद्धान्त और आचरण में विषमता की खाई गहरी हो जाती है तब अवनति आरम्भ हो जाती है। मनुष्य की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि उसका लक्ष्य सदा ऊंचे सिद्धान्तों पर रहता है, परन्तु जब तक उसके आचरण में दृढता नहीं होती वह उन (सिद्धान्तों) की ओर अग्रसर नही हो सकता है, परन्तु फिर भी संसार को वह यही दिखाना चाहता है कि उन सिद्धान्तों का पालन कर रहा है। इस प्रकार मानव समाज में एक बड़ा रोग उत्पन्न हो जाता है धार्मिक परिभाषा में इसे ही 'पाखंड' कहते हैं। जब कोई जाति या राष्ट्र इस रोग से घिर जाता है तो इसकी उन्नति के सब द्वार बन्द हो जाते हैं और उसके पतन को रोकना असाध्य रोग सा असम्भव हो जाता है"।

जब किसी जाति या राष्ट्र में उन्नति की अभिलाषा उत्पन्न हो तो इसको कार्यरूप में परिणत करने का प्रथम आवश्यक साधन उसके व्यक्तियों के आचरण की दृढता है। चरित्र जितना अधिक उच्च और भला होगा उतना ही शीघ्र उच्च और भले विचार बद्धमूल होंगे। 'चरित्र' के खेत को भली भांति तय्यार किये बिना उच्च विचाररूपी बीज बखेरना ऊसर भूमि में बीज फेंकने के समान ही व्यर्थ होगा, उच्च विचारों की शिक्षा देने के साथ २ आचरण और चरित्र को ऊँचा रखने का विचार अवश्य होना चाहिये। अन्यथा चरित्र के भ्रष्ट होने साथ २ यदि उच्च विचारों की बातें हो रहीं तो 'पाखड' का भयानक रोग लग जाना स्वाभाविक हो जायगा।

यह पाखड हिन्दुओं में कैसे उत्पन्न हुआ ? और किस प्रकार भीतर-ही-भीतर दीमक की भांति खोखला कर रहा है यह बात मैं यहां दो तीन उदाहरणों से स्पष्ट करता हूं। 'तपस्या' का अर्थ आजकल प्रचलित भाषा में नियंत्रण (Discepline) किया जा सकता है। जिस युग में हिंदू जाति के पुरुषाओं ने 'तपस्या' को जीवन का महत्वपूर्ण सिद्धान्त निर्दिष्ट किया था, वे इसके महत्व को जानते हुए यह भी समझते थे कि जिन लोगों को इसका उपदेश दिया जा रहा है वे भी इसके महत्व को समझते हैं और इन्द्रियदमन व मन के वशीकरण को आचरण मे लाना 'तपस्या' का लक्ष्य समझते हैं। समय आया कि जब लोग इस तप को कुछ से कुछ समझने लगे और अब तप इसलिये नहीं किया जाता कि अपने मन को वश में करना है अपितु इसलिये कि संसार को दिखा सकें कि हम 'बड़े तपस्वी' हैं। आग की धूनी लगाकर बैठ गये।

कभी एक हाथ ऊंचा उठा लिया कभी दूसरा और लोगों में प्रसिद्ध कर दिया कि हम बड़े तपस्वी हैं। 'तप' सिद्धांत रूप में बहुत ऊंचा सिद्धांत है—परन्तु यह जिन लोगों के लिये है—उनका आचरण गिर गया। 'सिद्धांत' और 'आचरण' में विषमता होने के कारण पाखण्ड आरम्भ हो गया और आज हज़ारों लाखों स्त्री-पुरुष इस पाखंड के शिकार हैं। 'त्याग' को ही लीजिये। 'त्याग' के उच्च सिद्धांत पर आचरण करने के स्थान पर आज लाखों व्यक्तियों ने इसलिये घरबार छोड़ रखा है कि वे गृहस्थ जीवन की कठिनाइयों को सहन नहीं कर सकते। वे त्यागियों का बाना धारण कर दूसरों को ठगने का काम कर रहे हैं। कितनों ही ने न केवल सांसारिक इच्छाओं का त्याग ही किया अपितु इनकी पूर्ति के लिये प्रत्येक अनुचित उपाय का अवलम्बन तक किया है। जाति की पतितावस्था में 'त्याग' का ऊंचा आदर्श एक भारी पाखंड के रूप में रहता है।

देश के लिये बलिदान का आदर्श भी उच्च आदर्श है। परन्तु यदि देश भक्त कहलाने वाले व्यक्ति इसके सिद्धांत के आचरण में इतने गिर जांय कि वे अपने से भिन्न व विरुद्ध सम्मति रखने वाले व्यक्ति को सम्मति प्रगट करने को स्वतन्त्रता भी न दें। ऐसी देश भक्ति एक प्रकार से व्यवसाय रूप देशभक्ति है। कई बार ये लोग रुपया उड़ा लेते हैं और फिर इस बात का प्रचार करते हैं कि संसार में कोई भी व्यक्ति रुपये के लालच से नहीं बच सकता। इसलिये जो व्यक्ति इनसे असहमत रहता हो उसे भी वे अपने ही समान रुपये के लालच में फंसा हुआ बताते हैं। ऐसी अवस्था में देश-भक्ति की भावना एक पाखंड का रूप धारण कर लेती है। इसी प्रकार, अनाथालय, विधवाश्रम आदि सब परोपकार और सर्व साधारण की भलाई के कार्यों के नाम पर आज जो रुपया एकत्र होता है वह सब चरित्र-बल न होने के कारण धोखे की टट्टी बने हुए हैं। "निर्वाण" या "मुक्ति" प्राप्त करने की भावना भी उच्च आदर्श है। परन्तु आज चरित्र बल न होने से चरित्र हीन व्यक्तियों ने इसी "निर्वाण" और "मुक्ति" के नाम पर सैकड़ों अड्डे बना रखे हैं। और लाखो नर नारी इनके फंदे मे फस कर भी गर्व करते हैं।

यदि मुझ से कोई पूछे कि हिन्दू जाति की निर्बलता और उसके पतन का वास्तविक कारण क्या है? तो मेरा तो एक ही उत्तर होगा कि इस रोग का वास्तविक कारण यह ढोंग है। हिन्दुओं मे प्रचलित इस 'ढोंग' से यह भी प्रमाणित होता है कि किसी युग में हिन्दू जाति का चरित्र और आचरण बहुत ऊंचा था। और इसीलिये उन्हें ऊंचे आदर्श की शिक्षा दी जाती थी—परन्तु पीछे से घटना क्रम के वश हिन्दू जाति का आचरण गिरता गया, और 'सिद्धांत' शास्त्रों में सुरक्षित रहने के कारण ऊंचे ही बने रहे। व्यक्ति इन सिद्धांतों के अनुकूल आचरण न रख सके—फिर भी उनकी यह इच्छा बनी रही कि संसार यह समझे कि उनका जीवन उन्हीं ऊंचे आदर्शों के अनुसार है। इस प्रकार 'सिद्धांत और आचरण' अथवा 'आदर्श और चरित्र' में विभिन्नता हो जाने के कारण 'दिखावा' या ढोंग' का रोग लग गया। इस समय यह 'ढोंग' दीमक के समान जाति की जड़ों में लगा हुआ है। इस जाति के उत्थान का यत्न करने की इच्छा रखने

सत्यार्थप्रकाश लेख माला

मोक्ष से आवृत्ति

(लेखक—स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी)

मोक्ष के साधन कर्म तथा ज्ञान उभय हैं और मोक्ष में जीव ब्रह्मभाव को प्राप्त नहीं होता है अपितु जीव ही रह कर आनन्द को भोगता है यह बात मैं दो लेखों मे पूर्व लिख चुका हूं इस लेख मे इस विषय पर विचार करना है मोक्ष नित्य है वा अनित्य है अर्थात् जीव मोक्ष को प्राप्त करके पुन किसी समय बन्ध को प्राप्त होता है अथवा सर्वदा मुक्तावस्था मे ही रहता है। इस विषय में आर्य समाज का सिद्धांत है जीवन के लिये मोक्षावस्था नित्य नही है अनित्य है।

जो मोक्ष को नित्य मानते हैं उनको इसका विचार करना आवश्यक है। जो वस्तु नित्य होती है उसका कारण नहीं होता है जिसका कारण हो वह अनित्य होगी जैसे घट पट आदि के काष्ठ, तन्तु आदि कारण होने से वह अनित्य है और आकाश का कारण न होने से वह नित्य है। इस नियम के अनुसार यदि मोक्ष नित्य है तो उसके कर्म अथवा ज्ञान कारण क्यो माने जाते हैं प्रकरण पुस्तकों में वैराग्यादि बाह्य साधन हैं और श्रवणादि अतरंग साधन है। अथवा कर्मादि बाह्यसाधन हैं और ज्ञान अंतरग साधन हैं। यह बातें क्यों लिखी हैं और प्रत्येक महात्मा धर्म करो की रट क्यों लगाता है जो वस्तु नित्य होती है वह साध्य होती है और मोक्ष तो साध्य है यह सिद्धान्त सर्व तत्र है इसलिए इस समय तक यह दु:साहस किसी ने भी नही किया है कि मोक्ष को साध्य न माने इस अवस्था मे मोक्ष नित्य न होगी।

जो वस्तु जन्य होती है वह जिस प्रकार सादि होती है उसी प्रकार सात भी होती है ऐसी कोई वस्तु नही है जो सादि अनन्त हो। इस विषय में कई प्रध्वंसाभाव को उदाहरण मे रखा करते हैं नैयायिक प्रध्वंसाभाव को स दि अनत मानते है। इसे समझने के लिए कुछ विस्तार से लिखता हूं। जिस समय किसी पदार्थ का नाश होता है वह उसका प्रध्वंसाभाव है जैसे जिस समय घट मुद्गरादि से टूट जाता है पट अग्नि से जल जाता है। उस समय घट और पट का स्वरूप नष्ट हो जाता है वही घट पट का प्रध्वसाभाव है यदि इसको सात मान लिया जाय तो उनके मत मे प्रागभाव, प्रतियोगी, प्रध्ववसाभाव इन तीनो मे से किसी समय कोई एक होता है। जब घट पट की उत्पत्ति

वाले के लिये आवश्यक है कि वह पहले इस 'पाखंड वृत्ति' को निकाल फैंके। यदि हम अपने आचरण या चरित्र को ऊंचा नहीं बना सकते तो उच्च आदर्श का पाखंड रचने की अपेक्षा अच्छा तो यही होगा कि हम ऊंचे आदर्शों का लोभ त्याग कर अपने आचरणों के अनुसार ही आदर्श को अपना लक्ष्य बनावें।

——

न थी तब तो उनका प्रागभाव था जब घट, पट बन गये तब प्रागभाव का नाश होकर प्रतियोगी घट, पट बन गए और इस काल में प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव नहीं हैं प्रतियोगी है और उत्पत्ति से पूर्व प्रतियोगी प्रध्वंसाभाव न थे प्रागभाव था अब जब घट, पट का नाश होगा उस समय प्रध्वंसाभाव उत्पन्न होगा। इस समय प्रतियोगी का नाश होने से वह नहीं है और प्रागभाव का नाश प्रतियोगी की उत्पत्ति काल में हो गया था दोनों के न होने से तीसरा प्रध्वंसाभाव है यदि उसको सात मानें तो उसके नाश के समय के साथ २ इनमें से किसी एक का भाव होना चाहिये इनका भाव होना असभव है अत प्रध्वंसाभाव सादि अनन्त है।

जैसे प्रध्वंसाभाव सादि है इसी प्रकार मोक्ष भी सादि और अनंत है इसका उत्तर यह है प्रध्वंसाभाव अभाव रूप है अभाव को भाव समता नही होती इसलिए प्रध्वंसाभाव को सादि अनत होने पर भी मोक्ष जो भाव रूप है वह सादि अनंत न होगी यदि मोक्ष को केवल दु खाभाव रूप माना जाय तो यह उदाहरण माना जा सकता था परन्तु मोक्ष को हम दु खाभाव के साथ २ सुख रूप भी मानते हैं इस लिए जो सुख उत्पन्न हुआ है उसका नाश भी अवश्य होगा जो उस सुख का नाश है वही मोक्ष की अनित्यता सिद्ध करता है इस प्रकार युक्ति से मोक्ष की नित्यता सिद्ध नहीं होती।

अब रहा प्रमाणवाद। मोक्ष की नित्यता में निम्न प्रमाण दिये जाते हैं।

१ अनावृत्ति शब्दात्। वेदात दर्शन ४-४-२२

२ ब्रह्मलोकमभिसंपद्यते न च पुनरावर्तते।
छा० ८। १५। १

३ स तु तत्पदमाप्नोति यस्माद्भूयो न जायते।
कठ ३। ८

४ तस्मिन्वसति शाश्वती' समाः। बृ० ५-१०-१

५. यद्गत्वा न निवर्तते तद्धाम परम' मम। गीता

अर्थ—श्रुति में लिखा है आवृत्ति नहीं होती।

ब्रह्म लोक को प्राप्त करके पुन. जन्म नहीं लेता है।

वह उस पद को प्राप्त होता है जिससे फिर जन्म नहीं होता है वहा अनंत काल तक वास करता है।

जहा जाकर फिर नहीं आता वही मेरा परम धाम (मेरा स्वरूप) है। इनको देख कर कई कहते हैं पुनरावृत्ति नहीं होती यदि वह ध्यान से इनको देखे और इन पर विचार करके दूसरे वाक्यों से इनकी सगति करे तो इनका भाव प्रतीत हो जाय। इनमें जो आवृत्ति का निषेध है वह पुनर्जन्म वत् इसी समय आवृत्ति का निषेध है न कि मुक्ति की अवधि पूरी होने पर आवृत्ति का निषेध।

वेदात सूत्र स्वयं कहता है कि शब्द ऐसा कहता है इस लिए आवृत्ति है इसमें छादोग्योपनिषद् का ८-१५-१ का कथन है उसके पूर्व 'यावदायुषम्' पाठ है जिसके अर्थ मुक्ति की अवधि है और इसी उपनिषद् में एक और पाठ इस प्रकार है।

'सएतान्ब्रह्म गमयत्येश देव पथो ब्रह्म पथ एतेन प्रतिपद्यमाना इमं मानवावर्त नावर्तते। छा० ४-१५-५

वह इस मार्ग से ब्रह्म को प्राप्त होता है इसी

का नाम देव पथ, ब्रह्म पथ है इससे ब्रह्म को प्राप्त इस मानवावर्त में फिर नहीं आता है अर्थात् दूसरे कल्प में आता है। उपनिषद् की मिताक्षरा नाम की टीका मे इसके अर्थ लिखते समय लिखा है।

'कल्पांतरेषु आवर्तंत एवेममिति विशेषणात्।

भावार्थ—इम' विशेषण होने से कल्पांतर में जन्म होता है। यही बात स्वामी आनन्दगिरि जी ने इसकी टीका में लिखी है दोनों वाक्यों मे ब्रह्म की प्राप्ति है इस लिये वह निषेध इम कल्प के लिये है सर्वदा के लिए नहीं है इसी वाक्य का पोषक महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश मे माडूक्योपनिषद् का यह वाक्य दिया है

ते ब्रह्म लोकेषु प्रान्त काले परामृतः परिमुच्यति सर्वे। मु० ३-२-६

कल्प के अन्त में (मोक्ष की अवधि समाप्त होने पर सर्व मोक्ष से छूट कर जन्म प्राप्त करते हैं यह इसका भाव है और गीता मे दो वाक्य दूसरे हैं।

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।
तानह वेद सर्वाणि नत्वं वेत्थ परतप॥
गीता ४।५

हे अर्जुन! तेरे और मेरे अनेक जन्म बीत गये मैं जानता हूं तुम नहीं जानते।

आब्रह्म भुवनाल्लोको पुनरावर्तीनामर्जुन (गीता)
ब्रह्म लोक पर्यंत सब पुनरावर्ती हैं।

श्री स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी ने 'वैदिक धर्म' नाम की पुस्तक में चार मन्त्र दिये हैं वह चारों ऋग्वेद मडल १० सूक्त ६२ के हैं उनमे से मैं एक लिखता हूँ—

ये यज्ञेन दक्षिणया समक्ता इन्द्रस्य सख्यममृत्य त्वमानशे। तेभ्यो भद्रमंगिरसो वो अस्तु प्रतिगृभ्णीत मानवं सुमेधस ॥ ऋ० १०-६२-१

अर्थ—जिन महात्माओं ने यज्ञ, दक्षिणा से इन्द्र का सख्य मोक्ष रूप को प्राप्त किया है ऐसे उत्तम बुद्धि युक्त ज्ञानी मनुष्य शरीर को पुनः प्राप्त करते हैं वा करें और उनका कल्याण हो उनको सुख हो।

इस प्रकार वेद, उपनिषद्, गीता, आवृत्ति में प्रमाण हैं और ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास में ऐसा लिखा है।

'प्रथम तो जीव का सामर्थ्य शरीरादि पदार्थ और साधन परिमित हैं पुन उसका फल अनन्त कैसे हो सकता है? अनन्त आनन्द को भोगने का असीम सामर्थ्य कर्म और साधन जीवों मे नही इस लिए अनत सुख नही भोग सकते। जिनके साधन अनित्य हैं उनका फल नित्य कभी नही हो सकता" पृष्ठ २६६

इस प्रकार युक्ति और प्रमाण से मुक्ति की अनित्यता सिद्ध है इसलिए आर्य समाज के सिद्धांतानुकूल मुक्त जीव की मुक्ति की अवधि पूरी होने पर आवृत्ति होना आवश्यक है।

ऋषि दयानन्द और वेद भाष्य शैली

(लेखक आचार्य पं० चन्द्रकान्त जी वेदवाचस्पति गुरुकुल महाविद्यालय सोनगढ़ काठियावाड़)
तथा
[लेखिका—श्रीमती सुशीला देवी त्रिवेदी विद्यालङ्कृता, गुरुकुल महाविद्यालय सोनगढ़]

उत्थानिका

वेदों के ऊपर समय २ पर विद्वानों ने कलम उठाई हैं, ब्राह्मणग्रन्थ-रचियता ऋषियों के बाद पौराणिक काल में, आचार्य उव्वट, महीधर तथा सायण आदि ने वेदों पर भाष्य किये हैं। इसी प्रकार आधुनिक युग में मैक्समूलर, विटनी ग्रिफथ आदि पाचात्य लेखकों ने भी वैदिक साहित्य पर बहुत कुछ लिखा है, परन्तु इन विद्वानों के ग्रन्थों में वेदों की आत्मा का विकास नहीं हुआ है। पौराणिक कालीन भाष्यकार तो याज्ञिकवाद, देवतावाद ऐतिहासिकवाद, आदि वादों की बाधाओं से जकड़े गये हैं। वे अपने समय की रूढ़ियों से ऊपर नही उठ सके हैं। उन्होंने पूर्व परिग्रह से रगी ऐनकों से वेद को तो देखा है। यही हालत पश्चात्य लेखको की भी है। एक तो इनके भाष्य अक्षरशः अनुवादमात्र हैं, फिर ये अनुवाद लौकिक तथा वैदिक सस्कृत में भेद करते प्रतीत नहीं होते। इस पर मजे की बात यह है कि ये सायणाचार्य के पदचिन्ह पर ही चलते हैं। और विकासवाद (अशुद्ध अर्थो मे) की रट लगा २ कर वेदों के असली तात्पर्य से दूर हो गये हैं। इस लिये वैदिक साहित्य को समझने के लिये इनके लेख प्रामाणिक नहीं माने जा सकते।

ऋषि दयानन्द और उनकी परिस्थिति

ब्राह्मणकार, पौराणिक भाष्यकार और पश्चात्य भाष्यकारों के अतिरिक्त आधुनिक समय में वेद के ऊपर युगपरिवर्तनकारी कलम उठाने वालों मे सब से प्रमुख नाम महर्षि दयानन्द का है।

इनका जन्म १८८१ मे एक ब्राह्मण कुल में हुआ था। इन्होंने सामवेदी होते हुए भी रुद्राध्याय का पाठ करके यजुर्वेद पढ़ा था। इनके समय मे वेदविद्या का ह्रास हो रहा था। वेदों की अनेक शाखाय लुप्त होचुकी थीं जो थी वे भी दुर्लभ होरही थी। वेद का पठन पाठन बंद हो चुका था। भारत के विद्या मन्दिर काशी में भी वेदों के नाम मात्र पण्डित ही रह गये थे। फिर इन को सायण आदि आचार्यों की भाति न तो कोई राजकीय आश्रय ही मिल सकता था और न कोई विद्वान् सहायक ही मिल सकते थे। ऐसी अवस्था में इन्होंने अपनी अप्रतिम प्रतिभा से वेद के ऊपर आये हुए बादलों को हटाकर वेद सूर्य के प्रकाश से मानव-जाति को पुनरुज्जीवित किया है। वैदिक साहित्य में की हुई इनकी क्रान्ति किसी भी क्रान्ति से कम महत्व की नहीं है क्योंकि इस ने भिन्न २ देशों में विशेषतः पाश्चात्य सभ्यता में ऐसे भारतीय नवयुवकों के हृदयों में सभ्यता और संस्कृति का नया सन्देश फूंका है। उन्नीसवीं

सदी मे ऋषि के रूप में एक प्रचन्ड अग्नि इस आर्यावर्त में जगी थी जिस में कि सब मत मतान्तर भस्म होते थे। इस अग्नि की समिधायें छन्दोबद्ध ऋचायें थीं। ऋषि ने इन ऋचाओं का सत्य अर्थ प्रकाशित करके ससार को सभ्य धर्म का उपदेश दिया है।

इस प्रकरण मे हमे विस्तार से यह देखना है कि महर्षि के वेद-भाष्य कितने है। उनकी भाष्य शैली मे वे कौन सी विशेषतायें है जिन से कि वेद जीवित और जागृत प्रतीत होने लगते हैं और इनसे पूर्व के भाष्यकारों की त्रुटियो का क्रियात्मक समाधान हो जाता है।

स्वामी जी के भाष्यग्रन्थ—महाराज का सम्पूर्ण भाष्य यजुर्वेद पर ही मिलता है। ऋग्वेद पर तो वे सातवे मण्डल ६१ वे सूत्र के दूसरे अंग से आगे किन्ही अपरिहार्य कारणों से भाष्य न कर सके फिर सामवेद और अथर्ववेद पर वे कैसे कलम उठाते ? अत. वर्तमान समय मे ऋषि के भाष्य यजुर्वेद पर तथा आधे से अधिक ऋग्वेद पर ही उपलब्ध होते हैं परन्तु इन से भी अधिक शैली का पूर्ण परिचय प्राप्त किया जा सकता है।

महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेद भाष्य का निर्माण सं० १६३४ मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष की छठी को प्रारम्भ किया था। इस विषय में ऋग्वेद भाष्य के आरंभ में लिखा है—

विद्यानन्दं समवति चतुर्वेद संस्तावना या
संपूर्येषं निगमनिलयं सप्रणम्याथ कुर्वे।
वेदत्र्यङ्के विधुयुतसरे मार्गशुक्लेऽङ्कभौमे
ऋग्वेदस्याखिल गुण गुणिज्ञानदातुर्हि भाष्यम॥

अर्थात् जो चारों वेदों की भूमिका विद्यानन्द को देती है उसे पूरा कर प्रणाम कर स १६३४ मार्ग शुक्ल ६ ठी मंगलवार के दिन ऋग्वेद-भाष्य का आरंभ करना है। इसके कुछ समय के अनतर विक्रमीय स० १६३४ के पौष सुदी १३ गुरुवार के दिन यजुर्वेद भाष्य का प्रारम्भ किया। इस सम्बन्ध मे भाष्यारंभ मे निम्न श्लोक दिया गया है—

चतुस्त्र्यङ्कैरङ्कै रवनिसहितैर्विक्रमसरे
शुभे पोषे मासे सितदलभविश्वोन्मित तिथौ।
गुरोर्वारे प्रात प्रतिपदमतीष्टं सुविदुषा
प्रमाणैर्निबद्धं शतपथनिरुक्तादिभिरपि॥

विक्रमीय स० १६३४ पोपसुदी गुरुवार त्रयोदश तिथि के दिन यजुर्वेदभाष्य का बनाना प्रारम्भ किया जाता है। एवम् ऋग्वेद भाष्यके प्रारम्भसे लगभग एक मास पीछे ऋषिने यजुर्वेदभाष्य निर्माण प्रारम्भ कर दिया था। इस भाष्य की समाप्ति के विषय में भाष्य समाप्ति पर निम्न लेख किया गया है। मार्ग-शीर्ष कृष्ण पक्ष १ (एक) शनौ स० १६३६ मे समाप्त किया। वैशाख शुक्ल ११ स० १६४६ मे छप कर समाप्त हुआ। एव ऋग्वेद तथा यजुर्वेद का भाष्य ऋषि ने लगभग एक ही समय प्रारभ कर दिया था। उन में यजुर्वेद का लगभग ५ वर्षो मे पूरा कर लिया था। साथ ही साथ आधे से अधिक ऋग्वेद का भाष्य भी ऋषि निर्माण कर चुके थे।

भाष्योंमें त्रुटि आनेका क्या कारण है ?

ऋषि की ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का मुद्रण

सं० १९३४ मे प्रारंभ हुआ था और १९३५ में पूरा हो चुका था। परन्तु वेदभाष्यों का मुद्रण तथा संशोधन ऋषि के स्वर्गारोहण (१९४० स०) के अनन्तर भी होता रहा। ऋषि के भाष्य पहले २ मासिक अंको मे ही मुद्रित किये गये थे। ऋषि के जीवन काल मे यजुर्वेद के ११ अध्याय और कतिपय मंत्र ही ५१ अंको तक मुद्रित हुए थे और ऋग्वेद प्रथम मंडल ८९ सूक्त के ५ वें मंत्र तक ही ५१ अकों में मुद्रित हो पाया था। एव ऋषि के सामने दोनों भाष्यों के लगभग पाचों हिस्से ही मुद्रित हो सके थे। शेष उनके लीला संवरण के बाद मुद्रित हुए हैं। यजुर्वेद का पूर्ण मुद्रण लगभग ऋषि की मृत्यु के ६ वर्ष बाद सं० १९४६ में हुआ है और ऋग्वेदभाष्य का पूर्ण मुद्रण इससे भी १० वर्ष बाद लगभग १९५६ विक्रमी आषाढ़ कृष्ण पक्ष पंचम को हुआ है। एवम् ऋषि की मृत्यु के चिरकाल के बाद ही ये दोनों भाष्य वर्तमान रूप में आये थे।

इन भाष्यों का हिन्दी में अनुवाद भीमसेन आदि विद्वानों ने किया है। और सस्कृत भाष्य भी बहुत अंशो में महाराज की देख रेख में पण्डितों ने किया है*। भाष्यों के बहुत कुछ अंश महाराज के लीला सवरण के अनन्तर ही ही संशोधित तथा मुद्रित हुए हैं। इन बातों को ध्यान मे रख कर ऋषि के उपलब्ध भाष्य क्या अक्षरश: प्रमाण माने जा सकते हैं? यदि नहीं तो इसमें ऋषि का तनिक भी गौरव घटता नही है। रात दिन प्रचार करने मे व्यग्र रहने से ऋषि वेद भाष्य के लिये प्रति दिन ३-४ घंटे से अधिक समय ही न दे सकते थे फिर उन्होंने भाष्य अपनी लेखनी से नही लिखा, पण्डितो से लिखवाया जिन से अशुद्धियों का होना स्वाभाविक था। जैसा कैसा भी ऋषि भाष्य मिलता है वह हमारे लिये तो अगाध ज्ञान-उदधि के तुल्य है, वेद के सत्यज्ञान का प्रकाश स्तंभ है।

ऋषि के भाष्य संस्कृत तथा हिन्दी दोनों में उपलब्ध होते हैं। संस्कृत भाष्य मे पहले पदार्थ फिर अन्वय तथा भावार्थ दिये गये हैं। स्थान २ पर निरुक्त, व्याकरण, ब्राह्मण ग्रन्थ, मैत्रायणी आदि उपनिषद्, मनुस्मृति आदि आप्त ग्रथों के

*स्वामी का पत्र "और समर्थदान से लिखा है कि ज्वालादत्त नई भाषा बनाता है। यदि वह हमारे संस्कृत और अभिप्राय के अनुकूल हो तो ठीक है नही तो जो पोपलीला की भाषा बना कर वहीं छपवा दे और हम को मालूम न हो, पश्चात् प्रसिद्ध होने से कोलाहल होगा तो क्या होगा हां, अब तक तो उसने कुछ नहीं किया, परन्तु संभव है कुछ गड बड करे तो हो सकता है। इस लिये जो कुछ वह बनावे उस पर समर्थ दान देख लो। जैसा कि अब भाष्य मे एक गोलमाल शब्द (देवता) लिख दिया था। सो यह हमारे दृष्टि गोचर होने से शुद्ध हो गई। यदि वहां ऐसी छप गई तो बड़ी हानि का संभव है। इस लिये ऐसा न होना चाहिये।

मि० आ० ब० ९
शुक्रवार सं० १९४० दयानन्द सरस्वती
जोधपुर मारवाड़

प्रमाणों से भाष्य अलक्रत हैं । कहीं २ पर महीधर, उव्वट, सायण आदि आचार्यों के पक्षों का विरोध भी प्रदर्शित किया गया है। यजुर्वेद भाष्य में तो हर एक अध्याय की समाप्ति पर अध्याय का सार तथा पूर्व अध्याय से सगति भी प्रदर्शित की गई है। हरेक मत्र के प्रारभ में उस मंत्र का प्रतिपाद्य विषय भी निर्दिष्ट किया गया है। हिन्दी भाष्य में अर्थ तथा भावार्थ दण्डान्वय सहित किये गये हैं। दोनों भाष्यों (हिन्दी, संस्कृत) मे तुलना करने से प्रतीत होता है कि भाषा भाष्य सस्कृत के मुकाबले मे कहीं २ असमीचीन है । मुद्रण तथा संशोधन की त्रुटियों के अतिरिक्त अर्थ विषयक भी नाना अशुद्धिया दीख जती हैं। इस लिये भाषा भाष्य बहुत प्रमाणिक नहीं होता है। सस्कृत भाष्य में ऋषि ने पदों का अर्थ देने में अपनी अनुपम योग्यता का परिचय दिया है। गहराई से देखने से प्रतीत होता है कि यह भाष्य ब्राह्मण, उपनिषत् तथा निरुक्त की आर्षशैली को ही अनुसरण करता है।

ऋषि भाष्य का सामान्य परिचय

भाष्य में दण्डान्वय के साथ पदों का अर्थ नहीं दिया गया। इस से प्राय: अर्थ करते समय कठिनता प्रतीत होती है। परन्तु वास्तव में देखा जाय तो ऋषि ने ऐसा करके महान उपकार किया है। पदों के अर्थ दे दिये गये हैं, पाठक उनको भली भाति चर्वितचर्वण करें। उनको एक के स्थान पर अनेक अद्भुत प्रतीत होने लगेंगे। जब शब्दों के अर्थों का अन्तस्तल में प्रवेश कर लिया जाये, फिर मत्र को देखने से अर्थ में कुछ अद्भुतता प्रतीत होगी। दण्डान्वय के साथ दिये गये अर्थों मे पाठकों को परिश्रम नहीं करना पड़ता है जिस का परिणाम यह होता है। कि शब्दों की गहराई में जाने का स्वभाव नहीं हो जाता। जिस के परिणाम स्वरूप मत्र का स्वाभाविक गहरा मनन करना कठिन हो जाता है। इस लिये ऋषि की यह शैली तो पाठकों की विचार शक्ति को उत्तेजना देने वाली है।

एक २ पद के अर्थ ऋषि भाष्य मे प्रकरण भेद से भिन्न २ किये गये हैं। इन पदों के अर्थ का सग्रह कर के एक कोष का भी निर्माण किया जा सकता है (जो कि किया भी गया है) ऋषि के भाष्य में पदों के जो अर्थ किये गये है वे निराधार नहीं हैं उनके आधार में अन्य आर्ष ग्रन्थ हैं। ऋषि भाष्य के पारायण के समय हमे एक शब्द के उस विशेष स्थान में दिये गये अर्थ से ही सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये प्रत्युत जितने भी अर्थ किये गये हैं वहा उनका प्रयोग करके अर्थ का आनन्द लेना चाहिये। शब्दो के नाना अर्थ करने में सकोच न करना चाहिये क्योंकि प्रकरण तथा विशेषणों के आधार पर शब्दों के नाना अर्थ हो ही जाया करते हैं। सिद्धान्त के विरोधी न होने से उन अर्थों के न लेने में कोई बाधा नहीं होती है। हम देखते भी हैं कि प्राचीन ऋषियों ने मत्रों के भिन्न २ अर्थ किये हैं—परन्तु वे सब सगत तथा सिद्धान्त के अनुरूप हैं। हमें भी इस विषय का ध्यान रख कर अपनी ऊहा से नाना अर्थ करने मे हिचकना नहीं चाहिये

ऋषि भाष्य के इस दृष्टि से देखने पर हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि ऋषि ने मंत्र का जो अर्थ किया है वह एक रूप से पूर्ण है सर्वथा पूर्ण नहीं क्योंकि स्वयं ऋषि के ही पदार्थों के अनुसार उस मन्त्र का सगत द्वितीय अर्थ भी हो सकता है। इस रीति से देखने पर ऋषि भाष्य अनेक प्रकार के विचारों का भाण्डार प्रतीत होने लगता है।

अपने भाष्य के विषयों पर लिखते हुए ऋषि लिखते हैं—

१" परन्त्वेतैर्वेदमन्त्रैर्यत्राग्निहोत्राद्यश्वमेधान्ते यद्यत् कर्तव्यं तत्तदत्र विस्तरतो न वर्णयिष्यते। कुत· कर्मकाण्डानुष्ठानस्यैतरेयशतपथ ब्राह्मणपूर्वमीमांसा श्रौतसूत्रादिषु यथार्थ विनियोजितत्वात्। तथैवोपासनाकाण्डस्यापी प्रकरणशब्दानुसारतो हि प्रकाश करिष्यते। ···' एवमेवज्ञानकाण्डस्यापि" अर्थात् ऋषि की प्रतिज्ञा है कि उनके भाष्य में ज्ञान, कर्म तथा उपासना वा गुण का विचार नही किया जायगा क्योंकि ये विषय दर्शन, उपनिषत् तथा ब्राह्मण ग्रन्थो मे विचार पूर्वक कहे गये है भाष्य मूल-अर्थ ही दिया जायगा। इससे स्पष्ट है कि ऋषि दयानन्द के भाष्य अन्वय पूर्वक अर्थ का विवेचन करते है। अन्य भाष्यकारो की तरह मत्र गत भावों की व्याख्या नही करते हैं। इस का कारण पाठकों का मनन शक्ति तथा विचार स्वातन्त्र्य की रक्षा करना ही है।

———

हिन्दुस्तानी शिष्टाचार

[ले० श्री पं० रामनारायण जी मिश्र]

गताक से आगे

साधारण

(४३) शीशे का टुकडा, ईंट, पत्थर, काटा या कोई ऐसी चीज रास्ते मे देखो, जिस से दूसरे को कष्ट होने की संभावना हो तो उसको हटा या हटवा दो।

(४४) दूसरों की सेवा इस भाव से मत करो कि उसके बदले में कुछ इनाम मिलेगा। ऐसी सेवा निष्काम भाव से करो।

(४५) गाली-गलौच मुंह से न निकालो। एक्के वालो या बैलगाडी वालो को, जो अपने घोडों या बैलों को मा-बाप की गाली देने लगते हैं, ऐसा करने से प्रेम पूर्वक रोको। भद्दी हसी दिल्लगी किसी से भी न करो। विवाह के अवसर पर या किसी त्यौहार पर गदे गीत मत गाओ। होली के त्यौहार पर जो रग लगवाने से परहेज करे उसके साथ जबरदस्ती न करो।

(४६) जिस बाजार मे बदचलन औरतें रहती हों या जिस विवाह-शादी मे बदचलन औरत नाचने-गाने आवे, वहा मत जाओ।

(४७) कसम कभी नहीं खानी चाहिये।

(४८) किसी देश या जाति के झंडे या राष्ट्रीय गान का निरादर मत करो। जब राष्ट्रीय गान गाया जाय, खडे हो जाओ।

(४९) सब धर्मों के प्रवर्तकों का नाम आदर से लो। धार्मिक बहस नम्रता और प्रेम के साथ करनी चाहिये।

(५०) प्रार्थना के समय आखें बद रखो। मन को स्थिर रखने की चेष्टा करो।

(५१) बहस मे गर्मागर्मी नही होनी चाहिये। दूसरे की बात सब्र से सुननी चाहिये और उसका शान्ति से जवाब देना चाहिए।

(५२) किसी कमरे मे काम होता हो तो उसके पास से इस तरह गुज़रो कि अन्दर वालो का हर्ज न हो।

(५३) दो आदमी बातें करते हों तो उनके पास बिना पूछे न जाना चाहिये।

(५४) कई आदमी बैठे हों तो उनके बीच में से न जाना चाहिये। जाना हो तो पीछे से जाओ। बीच ही मे से होकर जाना पडे तो झुक कर क्षमा मागते हुए निकल जाओ।

(५५) कई आदमी एक साथ भोजन करने बैठे तो सब को साथ ही शुरू करना चाहिये। और साथ ही उठना चाहिये। कोई पहले खा ले, तो उस समय तक बैठा रहे जब तक सब न उठे जल्दी उठो तो आज्ञा ले लो और अपनी जूठी थाली या पत्तल दूर हटा दो जिस मे खाने वाले को ग्लानि न मालूम न हो।

(५६) किसी स्थान मे जाएं जहा हमारा आदर सत्कार हो और हमारे साथ कोई मित्र या अतिथि हो तो हमे उसको भूल न जाना चाहिये उसको भी अपने आदर-सत्कार मे शरीक करना चाहिए।

(५७) किसी को अपने साथ गाड़ी पर लाओ तो उसको यथासंभव उसके घर तक पहुंचाओ ।

(५८) अपनी गाड़ी पर बाहर जाओ और किसी स्नेही मित्र या बड़े को पैदल जाते देखो तो उनको भी साथ बैठा लो ।

(५९) हम किसी तंग पगडंडी पर चल रहे हों जिसके दोनो तरफ खेत हों या कंकड हों और दूसरी तरफ से भी आदमी आ रहे हों तो जो नगे पैर हो उसको हमें पगडडी पर चलने के लिए जगह देनी चाहिए।

(६०) रेल में आवश्यकता से ज्याद. जगह मत लो। रेल के अन्दर जाकर बाहर वालों को अन्दर आने से न रोको।

(६१) किसी लंगड़े, लूले, भिखमंगे, तुतला कर बोलने वाले की उसके सामने नकल न करो। किसी का भी मुंह चिढ़ाना, उसकी हंसी उड़ाना या नकल करना अच्छा नहीं।

(६२) कोई हमारी गिरी हुई चीज उठा दे या हमारा काम करदे तो हमें उसको धन्यवाद देना चाहिए। मुसलमान लोग ऐसे अवसर पर "तसलीम" कहते हैं।

(६३) किसी की खोई हुई चीज कहीं मिल जाय तो कोशिश करके उसको उसके मालिक के पास पहुंचाओ या सेवा-समिति के सपुर्द करो।

(६४) किसी की धरोहर (अमानत) अपने काम में मत लाओ।

(६५) किसी मंडली में यदि ऐसे आदमी से बात करनी हो जो दूर बैठा है तो अपनी जगह से ही चिल्लाकर बात मत करने लग जाओ, उठकर उसके पास चले जाओ।

(६६) खिड़की में निरर्थक बैठे रहना और नीचे झाकना बुरा है, विशेषकर स्त्रियों के लिए।

(६७) दूसरे को चिट्ठी ऊपर से या पीछे से झांककर या किसी हालत में भी मत पढ़ो।

(६८) जब तक आवश्यक न हो किसी से यह मत पूछो कि तुम कहा जाते हो। दूसरे की गुप्त बातें जानने या सुनने की कोशिश मत करो और अगर जान लो या सुन लो तो उसको अपने तक रखो। दूसरे की डायरी मत पढ़ो।

(६९) किसी से उसकी तनख्वाह आमदनी या जात मत पूछो, जब तक कि पूछना आवश्यक न हो।

(७०) किसी के घर जाकर उसकी चीजों को मत छुओ या उनका उलट-पलट मत करो। यदि उठाना ही पडे तो उन्हे उसी तरह रख दो जिस तरह वे पहले थीं। किसी के बगीचे में जाकर फल-फूल मत तोडो।

(७१) खेल मे हारो तो विरोधी का दोष मत बतलाओ, जीतो तो अपनी तारीफ मत करो। हारने वाले से ऐसे प्रेम का व्यवहार करो कि उसको हारने की शर्म न मालूम हो।

भूल हो जाने पर सच्चे दिल से माफी, क्षमा मांगो। माफी के शब्द बनावटी नहीं होने चाहिएं।

(७२) किसी से मिलो तो बार बार घड़ी मत

देखो। कहीं जाना हो तो स्पष्ट कह दो।

(७३) कोई मिलने आवे और उसको इंतजार करना पड़े तो वक्त काटने के लिए कोई अखबार या किताब दे दो।

(७४) कोई पत्र लिखे तो उसका जवाब देना मत भूल जाओ, परन्तु बहुत अधिक पत्र-व्यवहार करना उचित नही।

(७५) किसी घनिष्ठ मित्र का भी, जहा तक हो सके, अहसान मत लो। सार्वजनिक कामों मे सेवा-भाव से ऐसा करना बुरा नही है। पर स्वयं दूसरों की उचित सेवा के लिए सदा तैयार रहो।

(७६) सभा आदि मे यदि किसी कुर्सी पर टोपी आदि पड़ी हो तो समझ लो कि वह कुर्सी खाली नहीं है। उस पर जो चीज पडी हो उसको मत हटाओ।

(७७) कुर्सी पर टाग उठा कर मत बैठो।

(७८) किसी से कर्ज मत लो, चाहे कितना ही कष्ट हो,। अपनी कमाई थोडी भी हो तो उसी में गुजर करो। कर्ज लेना ही पडे तो उसको जल्दी चुकाने की चिता करो। किसी सस्था का रुपया तुम्हारे पास हो तो उसका ठीक ठीक हिसाब रखो एक मद का रुपया दूसरे किसी मद पर खर्च न करो। हिसाब बराबर जॅचवाते रहो। सार्वजनिक सस्था का या दूसरे किसी का धन अपने खर्च मे मत लाओ। दूसरे के रुपए में तुम्हारी असावधानता से कमी हो जाय तो उसको अपने पास से पूरा कर दो।

(७९) कर्ज देना बुरा है। दूसरों के भी लेन देन में मत पड़ो।

(८०) भीख मागना बुरा है।

(८१) जूआ खेलना बुरा है। लाटरी आदि से भी दूर रहो।

(८२) जहा तक हो सके नीलाम की चीजें मत लो। नीलाम-घर में बार बार जाना ठीक नही

(८३) चुगी, टैक्स, किराया तुरन्त दे दो। चुगी और टैक्स वसूल करनेवालों से कोई बात मत छिपाओ और न उनसे लडाई झगडा करो। अनुभवी पुरुष उनसे गभीरता से बातचीत करते है।

(८४) किसी को दान या इनाम दूर से, घमंड या घृणा से, मत दो—मुस्कराते हुए दो। किसी की सेवा अपना बडप्पन प्रगट करते हुए मत करो, विनीत भाव से करो।

(८५) जेब में हाथ रख कर बातचीत मत करो।

(८६) पेंसिल, कुजी पैसा आदि हर वक्त उँगली में नचाते मत रहो, न उनको मुँह में डालो।

(८७) किसी जीवित आदमी के नाम पर कोई संस्था खोलना हो या उनको कोई पद प्रदान करना हो, तो उन से आज्ञा ले लो।

(८८) आतिशबाजी से दूर रहो। इस पर धन नही फूंकना चाहिए पर इसका प्रदर्शन जब कभी हो तो खुले मैदान मे होना चाहिए, घर के अन्दर या तंग गली मे नही।

(८९) किसी घटना का जिक्र करो तो पहले यह निश्चित करलो कि वह सची है या नहीं।

(९०) यज्ञोपवीत कुर्ते के बाहर मत निकाल

रखो। काम हो जाने पर उसको फिर भीतर कर लो।

(६१) चोटी, शिखा बँधी रखो और यदि टोपी पहनी हो तो देखो कि वह उसके बाहर न रहे।

(६२) पजामे का इजारबंद (नाला) या जूते का फीता इस प्रकार रखो कि वह लटकता न चले। कोट, कमीज आदि का बटन टूट जाए तो उसको पहनकर बाहर न जाओ जब तक बटन न लग जाए।

(६३) डूबते हुए आदमी को बचाने को उसी को जाना चाहिए जो डूबने से बचाने की कला और तैरना दोनों जानता हो, नहीं तो रस्सा आदि फेंककर बचाने का यत्न करो।

(६४) अपनी आमदनी के सौवें हिस्से से लेकर दसवें हिस्से तक अलग करके जितना हो सके किसी सुपात्र को अथवा किसी संस्था को दान देते रहना चाहिए।

(६५) अनावश्यक खर्च कम करना चाहिए। जीवन में सादगी होनी चाहिए। प्रकृति की गोद में रहने की आदत होनी चाहिए, जिसमें मौसिम की गरमी-सरदी सहने की आदत पड़ जाय।

(६६) परस्पर का झगड़ा आपस में तय करलो आत्म-सम्मान अथवा स्वजातीय गौरव मे फर्क न पड़े तो झगड़ा न बढने न दो थोडी बरदाश्त अच्छी है।

(६७) जहा दो आदमी लड रहे हो वहा भड़काने की बातें मत करो। कोशिश करो कि मेल हो जाय।

(६८) दूसरे के घरेलू झगडों या उनकी बुराइयो का जिक्र कहीं न करो, विशेष कर उनका, जो वही रोजगार करते है जो हम करते हैं। अपने हमपेशा के माल को बुरा मत कहो।

(६९) पाप से और गन्दगी से दूर रहो, घृणा करो पर पापी या गन्दे आदमी से प्रेम का व्यवहार मत छोडो।

(१००) दिहात के लोगों और दिहाती वायुमंडल को बुरा न समझो। जितना उनके निकट जाओगे उतना ही उनको अच्छा पाओगे

सार्वदेशिक सभा के प्रचारकों का कार्य

सितम्बर, अक्टूबर, ३७

—※—

मद्रास-समाचार

[श्री मन्त्री द्वारा]

आर्य समाज-मद्रास का कार्य भली भांति चल रहा है। अक्टूबर नवम्बर मासों में अनेक शुद्धियां, विवाह तथा अन्य वैदिक संस्कार हुए हैं। बहिरंग-प्रचार जो कई मासों से हिन्दू मुस्लिम-फ़साद के कारण बन्द था अब पुनः प्रारम्भ हो गया है।

कुछ सप्ताह पूर्व सा दे सभा के उपप्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज यहां पधारे थे। उन्होंने मद्रास में एक आर्य प्रतिनिधि-सभा खोलने का विचार बल पूर्वक सामने रखा है। यद्यपि कई वर्ष पूर्व मद्रास-कांग्रेस के समय स्व० डा० केशव देव शास्त्री की प्रेरणा से उपरोक्त प्रतिनिधि सभा की स्थापना हुई थी तथापि परिस्थितियां अनुकूल न होने के कारण वह चल न सकी। अब क्योंकि दक्षिण में समाज का प्रचार पूर्वापेक्षया अधिक है इस लिये संभव है कि प्रतिनिधि सभा बन सके।

दयानन्द-दिवस

दीपावली के अवसर पर इस वर्ष बड़ी धूमधाम से प्रसिद्ध गोखले हाल में श्री—"दयानन्द-दिवस" मनाया गया। इसके प्रधान श्रीमान् मुनि स्वामी पिल्ले, मद्रास-मिनिस्टर थे। वक्ताओं में श्रीमान् सत्यमूर्ति ऐम. एल ए. (सैन्ट्रल), मिस्टर बी ऐस मूर्ति, पार्लियामैण्टरी सैक्रेटरी, मद्रास, श्री पण्डित केशवदेव जी ज्ञानी, डाक्टर वरद राजलु नायडु और कैप्टेन वेंकटेश्वर आदि महानुभाव थे।

प्रधान महाशय ने आर्यसमाज के हरिजन-कार्य की भूरि २ प्रशंसा की।

श्रीमान् सत्यमूर्ति जी के भाषण का निम्न अंश आवश्यक है—

"गुजरात को गर्व है कि उसने प्रसुप्त भारत को जाग्रत करने के लिये स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी जैसे दो कुशल कार्यकर्ता दिए हैं। मैंने दयानन्द की लहराती खेती को उत्तर भारत में अपनी आंखों से देखा है। आर्य समाज का शिक्षा कार्य समस्त देश के अभिमान का विषय है। आर्यसमाज ने अपने आचार्य के चरण चिन्हों पर चलते हुए प्राचीन हिन्दू-धर्म को नवीन बौद्धिक वेश प्रदान किया है। इसके अतिरिक्त स्वामी दयानन्द का हिन्दी व अछूतोद्धार का कार्यक्रम जिस प्रकार आज फलीभूत हो रहा है उससे ऋषि की दिव्य दृष्टि का पता चलता है।"

श्री सत्यमूर्ति जी के भाषण के पश्चात् श्री पण्डित केशवदेव जी ज्ञानी ने भाषण दिया। उनके भाषण का सार यह था—

"स्वामी दयानन्द भारतीय समाज को सर्वांग-पूर्ण बनाना चाहते थे। इसी लिए उनके कार्यक्रम में निम्न चार विषय मुख्य थे—'स्वधर्म", "स्वभाषा", 'स्वदेशी" और "स्वराज" । जिस उत्थान कार्य को

दयानन्द अधूरा छोड़ गये थे आज उसे महात्मा गांधी पूरा करने की चिन्ता मे है।"

अन्य वक्ताओं के भाषण तथा सभापति महोदय के उपसंहार के साथ सभा समाप्त हुई।

अक्तूबर का केरल प्रचार

(ट्रावनकोर स्टेट)

पं० नारायणदत्त जी सिद्धान्त भूषण वैदिक मिशनरी

मौखिक प्रचार—कोट्टयम, नट्टाशेरी, काजडी वेल्लूक्कुट्टा, वैकम, वेल्लूर इन स्थानों में विविध विषयों पर व्याख्यान दिया।

इसके अतिरिक्त पांपाडी पोनकुन्नम में जाकर लोगों से मिलकर आर्यसमाज की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया। पांपाडी वाले एक हैन्दव समाज कायम करके उसके द्वारा आर्यसमाज के सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिए तैयारी कर रहे हैं। शीघ्र ही एक हिन्दू समाज कायम होने की संभावना है।

शुद्धि—इस महीने में आठ ईसाईयो की शुद्धि की। यदि शुद्धि के कार्य को और भी महायता मिले तो यहां शुद्धि का कार्य अधिक ज़ोर से चल सकता है।

लेख—महात्मा नारायण स्वामी जी कृत वैदिक सन्ध्या और आर्यसमाज के नियमोपनियम (सार्वदेशिक सभा द्वारा संशोधित) का मलयालम भाषा में अनुवाद किया गया है।

कोट्टयम में श्रद्धानन्द हिन्दीमहाविद्यालय में एक हिन्दी क्लास भी चलाई जा रही है।

नारायणदत्त

बम्बई

पारडी—ता० १-१०-३७ शुक्रवार को पारडी में सभा हुई। गान्धि जयन्ति के दिन ईश्वरभक्ति और झण्डा और उसकी पूजा पर विवेचन किया गया।

गोलवड—ता० २-१०-३७ शनिवार को गोलवड पारडी हाई स्कूल में प्रचार किया गया। उस दिन भी गान्धि जयन्ति मनाई जा रही थी। उस दिन 'अहिंसा का वास्तविक स्वरूप और गान्धि' पर विवेचन किया गया।

उसी दिन गोलवड कांग्रेस हाउस में भी सभा हुई उसमें अछूतोद्धारक का वास्तविक मार्ग। 'सस्कार और गान्धि' मद्य निषेध और आर्यसमाज और वर्तमान परिस्थिति आदि विषयों पर विवेचन किया गया।

दहाणू—ता० ३ १०-३७ रविवार को स्टेशन के पास आने वाले गजानंद प्रिण्टिङ्ग प्रेस के बरामदे में श्री० अच्युत नारायण खरे, जो एक प्रतिष्ठित वकील माने जाते हैं। उनकी अध्यक्षता मे व्याख्यान हुआ। विषय "मानव धर्म" था। शका समाधान भी रखा गया था।

ता० ४ १० ३७ सोम वार को उसी स्थान र श्री० डा० दत्तात्रेय जी की अध्यक्षता में व्याख्यान हुआ। व्याख्यान का विषय "भारतीय संस्कृति" था।

वापी—ता० ५ १०-३७ मगल वार को धर्म चर्चा हुई।

वलसाड—ता० ६-१०-३७ बुध वार को सार्वजनिक हाई स्कूल में "धर्म ही जीवन है" विषय पर मुख्याध्यापक श्री० घाटे की अध्यक्षता में व्याख्यान हुआ। बाद को शंका समाधान भी रखा गया था।

ता० ७ १०-३७ से ११-१०-३७ तक केन्द्र में प्रचार और गुजराती पत्रों में लेख से प्रचार किया गया।

बीलीमोरा—१४-१० ३७ बृहस्पतिवार को श्री० मुकुन्द राव नारायण राव सरदेसाई की अध्यक्षता में हिन्दू व्यायामशाला मन्दिर बंगले में एक सभा हुई। व्याख्यान का विषय "विजय दशमी का संदेश" था। जनता की अच्छी उपस्थिति थी।

ता० १५-१० ३७ से २१ १०-३७ तक 'ज्ञानामृत' प्रथम भाग १०० से १२५ पृष्ठो मे लिखा गया।

ता० ३० १०-३७ शनि वार को बीलीमोरा के हनुमान मोहल्ला में 'उपनिषदों का रहस्य' पर कथा की गई।

ता० ३१-१० ३७ रविवार को उसी स्थान पर कथा की गई। साथ में शंका समाधान भी रखा गया था। जनता की उपस्थिति अच्छी होती थी।

२०० हरिजनों को ईसाई होने से बचाया

ईसाई मिशनरियों से शास्त्रार्थ

दावनूगेटे (मैसूर रियासत) नामक नगरमे ५ मील की दूरी पर स्थित 'बाथी' नाम के ग्राम में लगभग २०० हरिजन सवर्ण हिन्दुओं के अत्याचार से तग आकर ईसाई बनने वाले हैं यह समाचार सुन कर पं० धर्म देव विद्यावाचस्पति गत ९ अक्तूबर को बंगलौर से दावनूगेटे गये। वहां के प्रतिष्ठित व्यक्तियों विशेषत चन्द्र शेखरैय्या B A, B L, M L C साहूकार रंगप्पा आदि से वे इस सम्बन्ध में मिले और अगले दिन दावनूगेटे प्राविदया ज्ञान प्रसारक सङ्घ के प्रचारक श्रीयुत शेषाचलैय्या तथा तीन अन्य उत्साही युवकों को साथ लेकर वे पैदल पुराने बाथी नामक गाँव में पहुंचे। वहाँ जाने पर मालूम हुआ कि ८ ईसाई प्रचारक गत ३ दिनों से उस गाँव मे तम्बू लगाये हुए है और इन हरिजनों को ईसाई बनाने का पूरा प्रयत्न किया जा रहा है। यह भी ज्ञात हुआ कि उसी दिन हमारे वहां पहुचने से लगभग दो घण्टे पूर्व उस गाँव के पटेल तथा अन्य कुछ सवर्ण हिन्दुओं ने हरिजनों को मारा था जिससे वे लोग बड़ी घबराहट की हालत मे थे। हम लोगों ने हरिजन भाइयों को प्रेम पूर्वक समझा बुझा कर शान्त किया और उनको विश्वास दिलाया कि उनके कष्ट निवारणार्थ सब प्रयत्न किया जायगा। हरिजनों की उपस्थिति में स्ना० धर्मदेव जी ने ४ ईसाई मिशनरियो के साथ जो उस गांव में आये थे ईसाइयत के विषय मे शास्त्रार्थ किया। उनके प्रश्नों का वे मिशनरी लोग कुछ उत्तर न दे सके। इस शास्त्रार्थ का भी हरिजना पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा और उन्हों ने शपथ खाकर विश्वास दिलाया कि हम ईसाई या मुसल्मान न बनेंगे। स्नातक जी ने उनको ईसाइयत और वैदिकधर्म विषयक, कुछ पुस्तकें भी दीं। इसके पश्चात उस ग्राम के पटेल को प्रेरित करके स्नातक जी ने सवर्ण हिन्दुओं की एक सभा रात ९ से ११ बजे तक मन्दिर मे करवाई जिसमें धर्म की व्याख्या करते हुए अस्पृश्यता निवारण और हरिजनोद्धार पर विशेष बल दिया। सवर्ण हिन्दुओं ने वचन दिया कि आगे से हरिजन भाइयों के साथ बुरा व्यवहार न किया जायगा। वहाँ से बडे बाथी नामक ग्राम में प्रचार करते हुए स्नातक जी का दल दावनूगेट पहुंचा जहाँ श्रीयुत चन्द्रशेखरैय्या M L C इत्यादि प्रतिष्ठित सज्जनों से मिल कर स्नातकजी ने सारी स्थिति

बताई और शिक्षादि विषयक हरिजन भाइयों के कष्ट निवारणार्थ प्रयत्न करने को उन्हें प्रेरित किया। शीघ्र ही उस ग्राम में एक सरकारी विद्यालय की स्थापना का प्रयत्न किया जा रहा है जिसकी बड़ी भारी आवश्यकता थी। स्नातक जी ने उन सज्जनों को कम से कम सप्ताह में एक बार वहाँ जाते रहने और उनके साथ प्रेम पूर्वक सम्पर्क मे रहने की प्रेरणा की जिससे हरिजन लोग धर्म पर दृढ रहें। इस प्रकार २०० हरिजन भाई और बहिन ईसाई बनने से बचा लिये गये। यह खुशी की बात है कि अब ब्रह्मसमाज के सज्जन भी आर्य समाज और आर्य धर्म के प्रति विशेष प्रेम रखने लगे हैं। बगलौर छावनी ब्रह्मसमाज की प्रार्थनानुसार स्नातक जी ने २ व्याख्यान सितम्बर में और अक्तूबर में दिये जिनमें वैदिक ईश्वर वाद, वैदिक यज्ञादि, वैदिक तत्वों की अगरेज़ी में व्याख्या की। Intei National Fellowship के अधिवेशनों में भी जिस के मन्त्री श्रीयुत पुट्टैय्या जी B A. Retd Supt of the Govt Press आर्य समाज के उपप्रधान हैं स्नातक जी ने सितम्बर और अक्तूबर के अधिवेशनों में भाग लिया। गाँधी जयन्ति के सप्ताह में स्नातक जी ने बगलौर शहर छावनी कगेरी, बैरापट्टम ग्राम (चन्द्रपट्टम के पास) इत्यादि में चार व्याख्यान अस्पृश्यता निवारण, ग्राम संगठन समाज सुधार आदि पर दिये।

गढ़वाल

इस मास में उपदेशक महाशयने अनेक देहातों में प्रचार किया, पिथोरा गढ में समाज स्थापित हुआ और अनेक व्यक्ति उसके सदस्य व सहायक बने। इस प्रान्तमें मूर्ति पूजा का विशेष प्रचार है उपदेशक महाशय के प्रचार से जनता में कुछ जागृति होती जा रही है आगामी वर्ष भी यही प्रचार कराया जायगा।

डरबन (दक्षिण अफ्रीका) में आदर्श विवाह

गत ४ अक्टूबर को दक्षिण अफ्रीका के प्रसिद्ध नगर डरबन के सिटी हाल में श्रीमान मेयर के सभा पतित्व में एक भारतीय विवाह का जो उत्सव मनाया गया वह यहाँ के प्रवासी भाइयों के इतिहास में अभूत पूर्व है। श्री मगन लाल और श्री गायत्रीदेवी के विवाह के उपलक्षमे साउथ अफ्रिकन इन्डियन कॉंग्रेस के प्रधान मन्त्री श्री अब्दुल्ला इस्माइल काजी और स्वामी भवानी दयाल जी सन्यासी की ओर से एक चाय पार्टी दी गई थी जिसमे डरबन के सभी प्रख्यात भारतीय और युरोपियन सम्मलित हुए थे।

श्री काजी साहब ने अपने विनोद पूर्ण व्याख्यान से उत्सव का श्री गणेश किया। आपने नगर के मेयर श्री फ्लेमिङ्ग जोनसन् की उपस्थिति पर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और पांचवीं बार मेयर के पद पर निर्वाचित होने के कारण उनको बधाई दी। माननीय सेठ इ० एम पारख ने मेयर को पुष्पहार पहनाया और मेयोरेस एवं गायत्री देवी को पुष्प गुच्छ प्रदान किया।

श्रीमान मेयर ने वर और कन्या के मगल भविष्य के लिए शुभ कामना प्रगट की। नेटाल की प्रोविन्शियल कौन्सिल के माननीय मेम्बर श्री एस० जे० स्मिथ ने श्री मगन लाल की योग्यता का बखान किया और यह भी कहा कि प्रवासी भारतीयों की अपूर्व सेवा करके स्वामी भवानी दयाल और श्री अब्दुल्ला इस्माइल

काजी उनके प्रेम और आदर के पात्र बन गए हैं। उनके बाद हिन्दू महा सभा के प्रधान श्री बी० एम० पटेल आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री सत्यदेव, बैरिस्टर एम० आर० पसर और श्री मख्दुदीन ने वर और वधू को बधाई दी। श्री मगन लाल ने सभी वक्ताओं की शुभ कामना के लिए धन्यवाद दिया। अन्त में स्वामी भवानी दयाल जी ने सभी अतिथियों और विशेषत मेयरके प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

इस उत्सव में जिन लोगों ने भाग लिया था उनमें से निम्न व्यक्तियों का नाम विशेष उल्लेख योग्य है—डाक्टर और श्रीमती फचेमिङ्ग जोनसन, श्रीमती मोराब जी रुस्तम जी, सपत्नीक कौन्सिलर कपेल, श्री उमर हाजा अहमद जवेरी, श्री अलेख वेन लेख एम. पी सी, श्री शेख हमीद, श्रीमती यूल, डाक्टर सिद्दात, सपत्नीक श्री ब्रेमर श्री के० बैजनाथ शास्त्री कालिज के प्रिन्सपल श्री बसु और उनकी पत्नी, श्री ए एम एम लोकाट, श्रीमती मारेल, रेवरेन्ड बी एल इ सिगामणी, सपत्नीक श्री सेन्ड फोर्ड, सपत्नीक श्री बा लावरेन्स, श्री आर राजकुमार, सपत्नीक श्री बैली, श्री एम बी नायक, सपत्नीक श्री मेकाले, पं० रामसुन्दर पाठक, श्रीमती और कुमारी जानमन् सपत्नीक श्री सत्यपाल, श्रीमती और कुमारी जेम्स, सपत्नीक श्री सापूरजी रडेरिया, सपत्नीक श्री फिरोजशाह, श्री रामप्रताप, श्री इ एम अली, श्री अब्दुल हक काजी, श्रीमती कुंजबिहारी सिंह, श्री राघव जी रघुनाथ, श्री चुन्नीलाल, श्री गोविन्दमाणी, श्री इ जे खुन्नू और श्री बी बेचू।

इस विवाह का धार्मिक कृत्य पूर्ण वैदिक विधि से महात्मा गान्धी के जन्म दिवस पर दूसरी अक्तूबर को जेकब्स (डरबन) में हुआ था। यह सम्बन्ध जात बन्धन को तिलाञ्जलि देकर हुआ है। वर एक सुशिक्षित युवक है और वधू है—जालन्धर कन्या महाविद्यालय की एक छात्रा और स्वामी भवानी दयाल जी की भतीजी। दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों के इतिहास में यह पहला ही विवाहोत्सव है जो नगर के श्रीमान मेयर की अध्यक्षता में डरबन के सिटी हाल में मनाया गया है। हिन्दू सन्यासी और मुसलमान काजी इस उत्सव के मेज़बान थे और मेहमान थे। हिन्दू मुसलमान ईसाई और पारसियों के सभी प्रमुख व्यक्ति और अनेक भारतीयों के हित चिन्तक प्रतिष्ठित युरोपियन। सिटी हाल की सजावट और प्रथम श्रेणी के वाद्य-गान के कारण उत्सव की शोभा और भी बढ़ गई थी।

साहित्य-समीक्षा

AGNIHOTRA by Dr Satya Prakash D Sc (The Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha Delhi Price Rs 2 8/-

Dr Satya Prakash's object in writing this book is to interpret the various details of Devayajna from the modern scientific point of view and to study the effects on the process of fumigation or oblations to fire prescribed by the Veda on the health of a religious and devout Hindu family. The chemical composition of the articles used in the ceremony and the products of their slow and partial combustion and the disinfecting properties of these products e g formaldehyde, formic acid and carbon di oxide have been described in detail

Dr Ganga Nath Jha contributes a fore word and Dr N R Dhar of the Allahabad University a preface to the book

All those interested in placing religious ceremonies on a scientific and utilitarian basis and reading such a significance in these ceremonies will find this book instructive

Reviewed by United India & Indian States NEW DELHI

हिन्दू-समाजमें विधवाओंकी दशा

श्री चन्द्रकला देवी

आज देश क्रान्ति के युगमें गुजर रहा है। सामाजिक, साहित्यिक और राजनैतिक क्षेत्रो में उग्र-से-उग्र विचार प्रगट किये जा रहे हैं। यदि इन विचारोंके अनुसार कुछ अंशोंमें भी काम किया जाता, तो देश उन्नतिके शिखरपर पहुँच गया होता; पर ऐसा नही हो रहा। यदि गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाय, तो सामाजिक सुधारों को कार्यरूपमें परिणत करना राजनैतिक लेक्चरबाजीसे कही अधिक कठिन है। कितनी ही बार ऐसा देखा जाता है कि राजनैतिक क्षेत्रमें उग्र विचार रखनेवाले लोग भी सामाजिक मामलोंमें घोर प्रतिक्रिया वादी हैं। विधवाओंके प्रश्नको ही लीजिए। इतने वर्षोंके आन्दोलनके बाद भी विधवाओंकी दुर्दशा लगभग ज्यों-की-त्यों बनी हुई है। विधवाश्रम क़ायम किये जाते हैं, विधवाओं की दुर्दशाका प्रदर्शन करके इनके नाम पर चन्दे की अपीले की जातीं हैं और श्रद्धालु जनता से रुपया भी इकट्ठा किया जाता है, पर क्या इससे मुख्य प्रश्न किसी अंशमे भी हल हुआ है? समय-समय पर विधवाश्रमोंके जो भण्डाफोड़ समाचारपत्रोंमे पढ़ने को मिले हैं, उनसे हिन्दू समाज के गौरवमे कोई वृद्धि नहीं होती और पुरुष-जातिके उत्तरदायित्व के प्रति कुछ सम्मान भी नही उत्पन्न होता है।

दरअसल बात तो यह है कि रोगका निदान किये बिना ही लोग इसका उपचार करनेके लिए उतारू हो जाते हैं। पंजाबमें सर गंगाराम तथा दक्षिणमें सेवा-सदनके उद्योगको छोड़कर देशके अन्य भागोंमें कोई उल्लेखयोग्य कार्य हो रहा हो, तो मुझको उसका पता नहीं है।

इस देशमे स्त्री-समाजकी और विशेषत विधवाओंकी जो दुर्दशा है, वैसी शायद ही किसी देशमें हो— और बाल विधवाएं तो, जिन्हें गृह-जीवन का सुख एक दिन के लिए भी नसीब नही हुआ, इतनी अधिक किसी भी देशमे न पाई जाती होंगी। एक तो विधवाएँ वैसे ही अभागी होती हैं और फिर उनका दैनिक जीवन कठोर सामाजिक बन्धनों तथा रूढियों से इतना अधिक जकड़ दिया जाता है कि वह मृत्युसे भी अधिक भयंकर बन जाता है। मै यह नहीं कहती कि सभी घरोंमें विधवाओं का जीवन नरकतुल्य बना दिया जाता है; कितने ही घर ऐसे भी हैं जहा वे देवी की तरह पूज्य मानी जाती है, पर अधिकांश कुटुम्बोमे उन्हें अपने दैनिक जीवनमें अत्यन्त कटु अनुभव होते है। चाहे पीहरमें रहें चाहे ससुरालमें, पर उन्हें चैन नही। विधवा—रात-दिन काम धन्धेमे जुटी रहनेवाली, रातों चक्की खींचनेवाली, दिन-भर चूल्हा झोंकनेवाली विधवा—कठिन-से-कठिन काम करनेसे न घबराती, यदि सास, ससुर, ननद, देवरानी, जिठानी आदि की ईर्ष्यावर्षा उस बेचारीके टूटे हुए हृदयपर न होती। हत भाग्य तो वह है ही, पर वह अपने को और भी हीन समझने लगती है, जब सास जी नाक भौं

सिकोड़कर अपना फतवा देती हैं— 'जब से यह कम्बख्त हमारे घरमें आई है, तबसे हमारा तो नाश ही करती चली आई। डायन मेरे फूल-से बच्चे को निगल गई, इतने पर भी छाती पर ही धरी रह गई। इसकी मौत न-जाने कहां जा छिपी। पीहर भी तो जाकर नहीं मरती। अभी न-जाने क्या-क्या गुल खिलायगी !', और ससुर साहब भी कटु बात कहनेसे नहीं चूकते।

कितना निन्दनीय व्यवहार है। सुसराल में ही ऐसा निन्दनीय व्यवहार होता हो, सो बात नहीं—पीहरमें भी कुछ कमी नहीं रहती। यदि वहां भौजाईका आतंक हो, तब तो कुछ कहना ही नहीं। अपशब्दों का प्रयोग तो एक मामूली-सी बात है, वैसे नौबत तो चुटिया खींचने तक आ जाती है और गाली-गलौजका तो कहना ही क्या है। ससुराल वाले पीहर को दुत्कारते हैं और पीहर वाले ससुराल को। ऐसी दशा में हतभाग्य विधवा जाय तो कहां जाय? उस बेचारी का और ठिकाना ही कहां है? ऐसी ही अमानुषिक परिस्थितियों के कारण हज़ारों विधवाओं ने वेश्यावृत्ति ग्रहण कर ली है।

घर के अत्याचारों का अन्त नहीं। विवाहोत्सव है। बड़ी भारी चहल-पहल है। सबके हृदय-कमल खिले हैं, परन्तु बेचारी विधवा को उत्सव में भाग लेने की आज्ञा नहीं है। उसे अशुभ समझ कर विवाह की प्रत्येक रीति से अलग रखा जाता है। तब उसका कोमल हृदय किसी अज्ञात वेदना से तड़प उठता है। वह रोकर दिल का गुबार निकालना चाहती है, पर रो नहीं सकती। जिह्वा रहते हुए भी वह गूंगी है। अपनी दुःख की बातें कहे तो किससे? उसकी सुनने वाला इस संसार में और है ही कौन? बेचारी मन मारकर बैठ रहती है। मनुष्य होकर भी वह पशु है। जिस प्रकार एक पशुको खाने, पहनने और काम करने में दूसरों पर आश्रित रहना पड़ता है, उसी प्रकार विधवा भी समाजके डंडे से हांकी जाती है। उसकी प्रत्येक इच्छा को पशु बल से दबाया जाता है। सुनते हैं कि गुलामी की प्रथा कभी की नष्ट हो चुकी, पर यदि ध्यान पूर्वक देखा जाय, तो आधुनिक विधवाओं की दशा पहले के गुलामों की दशा से भी कहीं अधिक बदतर है। गुलामों को स्वतंत्रता पूर्वक हंसने खेलने, ओढ़ने-पहनने की आज्ञा तो थी, पर बेचारी विधवा को इतनी भी आज्ञा नहीं कि वह किसी से हंस बोल सके, मन चाहा पहन-खा भी सके। उसका जीवन जीवन नहीं है, वह एक जेलखाना है। वह इस संसार की बन्दिनी है। विधवा अपने एकाकी जीवन को चाहे कितना ही पवित्रता से व्यतीत करे, पर समाज उसके उठने बैठने, खाने पीने, पहनने ओढ़ने, सोने-जागने, हर एक काम को अत्यन्त सतर्कता से देखता है और उसके उज्ज्वल सतीत्व में भांति-भांति की आशंकाएं करने लगता है। भयंकर अपराध के किसी अभियुक्त पर भी इतनी कड़ी दृष्टि नहीं रखी जाती, जितनी एक अनाथ विधवा पर!

समाज के कर्णधारो! क्या आपने कभी विधवाओं के आन्तरिक भावों को समझने की चेष्टा की है? क्या कभी आप उस अनन्त विरह

वेदना का अनुमान भी कर सकते हैं, जो उस अभागी को दिन-रात सताया करती है? क्या आपने कभी अशोक-वाटिका में सीता-विलाप सुना है? अवश्य सुना होगा और उसे सुनकर हृदय अवश्य ही दुःखित हुआ होगा, पर विधवा विलाप उससे कहीं उग्रतर है। उस विलाप में आशा का आलोक कुछ सान्त्वना प्रदान करता है पर इस विलाप मे निराशा की दग्ध लपटें हृदय-तलको निरन्तर जलाया करती हैं। दरअसल आप विधवाओं के इस अविरल रुदन सुनने के आदी हो गये है। जैसे फैक्टरियों में काम करने वाले कलाकों के काम मे मशीनों की खट-खट की आवाज कुछ नही जान पड़ती, ठीक वैसे ही विधवा-जगत का करुण क्रन्दन भी आपकी सुख-शान्ति को भंग नहीं कर सकता।

समाज को विधवाओं का भार तो ढोना ही है—चाहे वह इस भार को रो-भींक कर ढोये, चाहे हसी-खुशी से। यह बात दूसरी है कि जो कार्य प्रसन्नचित्त से किया जाता है, वह बहुत सरल मालूम होता है, और जो काम नाक-भौ सिकोड़ कर किया जाता है, उसका पूरा मुश्किल से ही पडता है। ऐसी हालत में समाज की बुद्धिमानी इसी में है कि वह इस प्रश्न पर गम्भीरता-पूर्वक विचार करे। विधवाश्रमों के विषय मे जो समाचार समय समय पर पत्रों मे प्रकाशित होते रहते हैं, उनके देखते हुए यह आवश्यक हो गया है कि किसी जिम्मेवार संस्था की ओर से (उदाहरणार्थ, अखिल भारतीय महिला-सभा की तरफ से) इन विधवाश्रमों की विधिवत जाच कराई जाय। जिन गैर ज़िम्मेवार आदमियों ने अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए विधवाश्रम खोल रखे हैं—जहा जानवरों की तरह विधवाओं का क्रय-विक्रय हुआ करता है—उन्हें समाज तथा सरकार की ओर से घोर दण्ड मिलना चाहिए। मैने सुना है कि अधिकांश विधवाश्रम पंजाब तथा सिन्ध के पुरुषों के लिए स्त्री बेचने के अड्डे बने हुए हैं।

चाहे जिस के साथ विवाह कर देने से ही तो विधवाओं की समस्या हल नही हो जाती, और लाचार हो कर विधवाश्रमों की शरण लेने वाली बहनों की सख्या कुल सख्या की दस हजारवां हिस्सा भी न होगी। फिर अभी तक देश में विधवाओं के लिए जो कुछ प्रयत्न हुए हैं, वे सब प्राय बाल-विधवाओं तक ही परिमित है। ऐसी विधवाओं के लिए जिन के दो एक बच्चे हों, अभी तक कोई प्रयत्न नहीं किया गया। उनकी समस्या और भी अधिक जटिल है। उन की ओर ध्यान दिया जाना अत्यन्त आवश्यक है। आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक प्रान्त में पूना के सेवा-सदन की तरह की एक केन्द्रीय सस्था हो, जिसका मुख्य उद्देश्य विधवाओ की सेवा करना हो उन्हें अध्यापन, डाक्टरी इत्यादिकी उचित शिक्षाकी भी व्यवस्था होनी चाहिए। शिक्षा प्राप्त होनेपर कुछ बहनें ऐसी भी निकलेंगी, जिनमें साहित्यिक रुचि हो। इस रुचिको विकसित करनेके अवसर उन्हें मिलने चाहिए। सद्ग्रन्थोंके अध्ययनसे दुःखोंका बोझ कुछ तो हलका होगा। विधवाओंकी दुर्दशाका वास्तविक चित्र तो कोई सुशिक्षित भुक्तभोगी बहन ही खींच सकेगी पुरुष लेखक तो उन कठिनाइयों की कल्पना भी नहीं कर सकते, जो भारतीय विधवा-समाजको उठानी पड़ती हैं। जब तक हिन्दू-समाज उस महान शक्तिका, जो विधवाओंमें सन्निहित है और जो आज भारी पत्थर के रूप में समाज की छाती पर विद्यमान है, जीवन के भिन्न-भिन्न विभागों में उपयोग करना नहीं सीखता, तब तक वह पिछड़ा हुआ ही रहेगा। आवश्यकता है रचनात्मक कार्योंकी, न कि व्याख्यानों अथवा प्रस्तावों की।

शुद्ध हवन सामग्री

धोखे से बचने के लिये आर्यों

को

बिना वी० पी० भेजते हैं

पहले ।) पोस्ट खर्च मनीआर्डर द्वारा भेजकर ॥ नमूना

फ्री (मुफ्त) मगा लें

अगर नमूना जैसी सामग्री हो तो मूल्य भेजदें

अन्यथा

कूड़े में फेंक दें।

फिर मूल्य भेजने की आवश्यकता नहीं

क्या इससे भी बढ़कर कोई सच्चाई की कसौटी हो सकती है

भाव ॥) सेर =) भर का सेर।

थोक ग्राहक को ... रुपया पर सस्ता कमीशन।

मार्ग-व्यय ग्राहक के जिम्मे।

पता —

रामेश्वरदयालु आर्य पो० असोली (फतेहपुर) यू० पी०

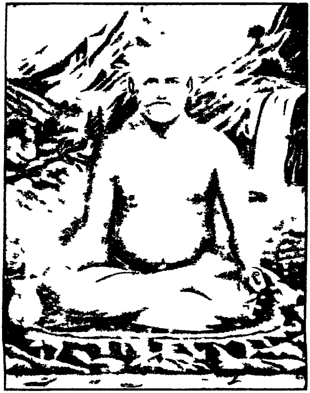
प० रघुनाथ प्रसाद पाठक —पब्लिशर के लिये चन्द्र प्रिन्टिङ्ग प्रेस ... से प्रकाशित

फरवरी १६३८ Reg No L 2121

ॐ

ऋग्वेद यजुर्वेद

सार्वदेशिक



सम्पादक—प्रो० सुधाकर एम० ए०

स० सम्पादक—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक

वार्षिक मूल्य स्वदेश २) एक प्रति का =) विदेश से ५ शि० वार्षिक

अथर्ववेद सामवेद

लेख-सूची

केन्द्रीय अनाथालय, रावी रोड, लाहौर की आवश्यकताएं

(ले० ला० बोसाराम रिटायर्ड स्टोर कीपर N W R.)

(१) इस समय इस अनाथालय मे १७५ बालक बालिकाएं हैं और इस समय शीत ऋतु है। उनके लिये गरम वस्त्र, रजाई, तुलाई, और दरियों की आवश्यकता है। दानी सज्जन जहां अपने बालकों के लिये वस्त्र बनवाए वहां इन बालको का भी अवश्य ध्यान रखें।

(२) वस्त्रों के अतिरिक्त भोजन के लिये घृतादि की आवश्यकता है दानी सज्जन घृत भेजें अथवा उसके लिये दान देकर कृतार्थ करें।

(३) अनाथालय का व्यय १३००) मासिक है वह दानी महाशयों की कृपासे पूरा होगा इसलिये प्रत्येक नर नारी दान देकर इस व्यय को पूरा करें।

(४) इस अनाथालय के प्रबन्ध के विषय मे यह लिखना पर्याप्त होगा कि सरकार ने जो भगाए गए बालक पकड़े थे जिनके संबंधियों का पता नही लगा वह सब बालक इसी अनाथालय मे रखे हैं।

(५) अनाथालय के बालक कभी बाहर मांगने के लिए नहीं भेजे जाते हैं। उनके पढ़ाने के लिये स्कूल भी है जो सरकार से स्वीकृत है।

(६) इसके अधिकारी इस समय निम्न सज्जन हैं.—

प्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

उप प्रधान पं० विश्वम्भरनाथ जी उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

„ पं० ठाकुरदत्त शास्त्री मुलतानी लाहौर

„ डाक्टर गणेशीलाल जी M B , B. S

कोषाध्यक्ष श्री विज्ञानशील जी, बी० ए०

अंत में नम्र निवेदन है प्रत्येक धर्मप्रेमी सज्जन अपनी शक्त्यानुसार कुछ न कुछ दान देकर सभा का हाथ बटावें और पुण्य के भागी बनें।

ओ३म्

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष ११ | माघ १९९४ | अङ्क १२

फरवरी १९३८ ई०] [दयानन्दाब्द ११३

❀ वेद की शिक्षाएँ ❀

एक एव नमस्यो विक्ष्वीड्यः । Ath 2-2-1

वह एक ही पूजा करने योग्य और प्रजाओं में प्रशसा करने योग्य है ।

He alone is worthy of adoration and worship by His creatures

एको विश्वस्य भुवनस्य राजा । Rig 6-36-4

वह सब लोकों का एक ही स्वामी है ।

He is the King and Ruler of the entire Universe.

सम्पादकीय—

दीवान-हाल का उद्घाटन

गत ३० दिसम्बर को देहली में 'दीवान हाल' का उद्घाटन श्री० माननीय पुरुषोत्तम दास जी टंडन, स्पीकर यू० पी० असेम्बली, द्वारा समारोह पूर्वक हुआ। यह हाल जैसा कि हम इससे पूर्व इन स्तम्भों में लिख चुके हैं श्री स्वर्गीय ला० दीवानचन्द जी की वसीयत के अनुसार बना है और इसका शिलारोपण श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज द्वारा गत वर्ष हुआ था। इस हाल पर लगभग २ लाख रुपया व्यय हुआ है। हाल में लगभग ३००० व्यक्ति बैठ सकते हैं। यह आर्य समाज देहली के अधिकार में होगा और इसका नाम आर्य समाज दीवान हाल होगा। सुन्दरता और आकार की दृष्टिसे हाल देखने योग्य है और देहली में अपने ढ ग की एक ही इमारत है। इस सब का श्रेय दीवान चन्द ट्रस्ट तथा उसके सुयोग्य मन्त्री श्री ला० नारायणदत्त जी को है जिनके सचिन्त्य उद्योग और परिश्रम से न केवल ट्रस्ट की अन्य सब शर्तें ही शीघ्र से शीघ्र पूरी हुईं वरन् लोगों के देखते ही देखते इतना विशाल भवन भी बन गया।

श्री पुरुषोत्तम दास टंडन ने ट्रस्ट को साधुवाद देते हुए ठीक ही कहा था कि बहुत कम ट्रस्ट इस ट्रस्ट जैसे देखने में आते हैं जो अपनी जिम्मेवारी को इतनी तत्परता और सुन्दरता के साथ निबाहते हैं। अधिकाश ट्रस्ट प्रबन्ध इत्यादि के लिए बदनाम होते हैं और दानी की सम्पत्ति नियत उद्देश्य में प्रयुक्त न होकर मुकदमेबाजी इत्यादि में नष्ट भ्रष्ट हो जाती है।

इस अवसर पर श्री टण्डन जी ने आर्य-समाजियों को भी एक चेतावनी दी थी और वह यह थी कि वर्तमान में आर्य समाजी वैदिक शिक्षाओं को क्रिया में लाने में पिछड़ रहे हैं।

'वेद ज्ञान के भाण्डार हैं, हमारे शास्त्र सर्वोपरि हैं' केवल यह कहने चिल्लाने से काम नहीं बनेगा। काम बनेगा उनपर आचरण करने से। उन्होंने यह भी कहा कि आर्य समाजियों से हमें प्रकाश और आदर्शग्रहण करना है इसलिए उनको वैदिक शिक्षाओं को अधिक से अधिक अमल में लाना चाहिए। यह चेतावनी नए समाज मन्दिर के उद्घाटन के समय दी जानी उचित ही है।

लार्ड लोथियन

कदाचित पाठकों को ज्ञात होगा अभी हाल में इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ श्रीयुत लार्ड लोथियन कुछ समय भारत में रहकर और यहा की सामाजिक और राजनैतिक प्रगति का अध्ययन करके इंग्लैण्ड को रवाना हुए हैं। देहली में भी वे कई दिन पर्यन्त रहे थे। सार्वदेशिक सभा की ओर से हिन्दू महा सभा के द्वारा उन्हें आर्यसमाज का अंग्रेजी साहित्य भेंट किया गया था। आशा है उन पुस्तकों का अध्ययन और मनन धर्म और आर्य संस्कृति का वास्तविक परिज्ञान कराने में सहायक होगा। कहने की आवश्यकता नहीं इस प्रकार के महानुभावों तक इस प्रकार का जितना साहित्य पहुँचे उतना ही उत्तम है।

शहीदगंज का विषय

उपर्युक्त शीर्षक से 'हिन्दुस्तान टाइम्स' लिखता है:—

आल इण्डिया मुस्लिम लीग ने शहीदगंज के निर्णय की उत्तरदायित्व लीग के एक विशेष अधिवेशन पर छोड दी है जो इसी काम के लिए बुलाया जायगा। वह निर्णय क्या होगा उस पर इस समय विचार करना व्यर्थ है। परन्तु इस बीच मे मुसलमान नेताओं की एक जिम्मेवारी है जिससे वे नहीं बच सकते हैं। इसमे सन्देह नहीं पजाब और दूसरी जगहों के मुसलमान बहुत बेचेन है और चू कि मस्जिद के कब्जे से सम्बन्धित झगडा है इसलिए भावों को भडकाने और गडबड पैदा करने वालों के लिए ऐसा करना बहुत आसान काम है। मुस्लिम लीग की इस सम्बन्ध मे जो अन्तिम स्थिति हो सकती है उसकी बहुत बड़ी जिम्मेवारी लीग का नेता होने के कारण मि० जिन्ना पर है।

मि० जिन्ना प्रसिद्ध वकील हैं। इस तमाम मामले मे निहित जो कठिनाइयां है वे उनसे अनभिज्ञ नही हो सकते है। नेतृत्व का अर्थ केवल हवा के रुख के साथ बहना ही नहीं है वरन इसका अर्थ ठीक २ निर्णयो का करना और उन पर दृढ़ रहना है भले ही कुछ समय के लिए वे अप्रिय ही क्यो न देख पडे। नेता का कर्त्तव्य यह भी देखना है कि जो लोग किसी नेता मे अपना विश्वास करते हैं वे कमजोर अथवा लुढकने वाले नेतृत्व से किसी गलत स्थिति मे न पड जाय। मि० जिन्ना ने अपने देहली के भाषण मे कहा है यदि ८ करोड़ मुसल्मान मुस्लिम लीग के सहायक हो जायँ तब ही वह यह कहने मे समर्थ हो सकेंगे कि शहीदगज और पैलेस्टाइन के सम्बन्ध मे वे क्या करना चाहते हैं। इस बात का आलङ्कारिक अथवा वक्तृत्व कला सम्बन्धी कोई भी प्रभाव क्यों न हो निश्चय ही वे मामले का गला घोटरहे है और उसका सामना नहीं कर रहे है।

हम तो मुस्लिम समाज और मुस्लिम नेताओ के सामने स्थिति से सम्बन्ध रखने वाली कतिपय बातें रख देना चाहते है और चाहते हैं कि किसी निर्णय पर पहुँचने से पूर्व उन पर विचार किया जाय। किसी पक्ष या जाति के लिए यह मानना कि वे अदालत के फैसलो को तभी मानेंगे जब वे उसके हक मे होंगे और जो हक मे न होंगे नहीं मानेंगे असभव पोजीशन है। इस रीति से हम समस्त व्यवस्थित गवर्नमेंटों की मृत्यु के निकट होंगे। निस्सन्देह मुसल्मानों को अधिकार है कि वे मुकदमे को प्रीवी कौंसिल तक ले जायें परन्तु प्रीवी कौंसिल भी हाई कोर्ट के निर्णय को पुष्ट करेगी यहा सभावना है जो उन्हे चिन्तित कर रहा है। इस प्रकार की स्थिति मे हमे कोई वैधानिक उपाय नहीं देख पडता है जिससे वे मस्जिद का अधिकार प्राप्त कर सकते हों। सर सिकन्दर हयात का मन्त्रिमण्डल भी हाई कोर्ट के फैसले के विरुद्ध नहीं जा सकता है और न सिक्खो से बलात छीन कर मस्जिद मुसल्मानो के हवाले कर सकता है। हो सकता है मन्त्रिमडल इस विषय पर त्याग-पत्र दे दे। यदि वह दे देगा तो कांग्रेस सरकारें बडे ध्यान से बाद की घटनाओ का अध्ययन करेंगी इसलिए कि ऐसी स्थितियों का यदि किसी समय उन्हें सामना करना पड जाय तो वे घटनाएँ उन्हें क्या सबक दे सकती हैं। सत्याग्रह से केवल कष्टही होगा और मस्जिद की प्राप्ति नही होगी। हम आशा है कि मुसल्मान नेता सस्ती वाह वाह लूटने के लिए जाति के वास्तविक हितो को कुर्बान नहीं करेंगे।

म० वेदप्रकाश का वध

पाठक अन्यत्र हैदराबाद राज्यान्तर्गत गजोटा नामक स्थान पर आर्य्य नवयुवक म० वेदप्रकाश जी के मुसलमानो द्वारा वध के समाचार पढ़ेंगे। कहा जाता है कि धर्म्मान्ध मुसलमानों ने मन्त्री समाज के घर में घुसकर उसे पकड़ा और कहा गया या तो इस्लाम धर्म्म स्वीकार करो अन्यथा मार डाले जाओगे। उस धर्म्म वीर ने आर्य्य वीरो की प्रथा और मर्यादा के अनुसार इस्लाम धर्म्म का आलिंगन करने के बजाय मृत्यु का आलिंगन करना पसन्द किया। इस वीरता और धर्म्म रक्षा का मूल्य उसे अपने प्राणो के द्वारा देना पड़ा और उसका वहीं वध कर दिया गया।

इस प्रकाश के युग में सहसा ही इस समाचार पर विश्वास नहीं होता है साथ ही हैदराबाद राज्य में पिछले कुछ अर्से से आर्यों पर जो नृशंस अत्याचार देखे और सुने जाते है और राज्य का आर्य्य समाज के प्रति जो रुख देखा जाता है उन सब की मौजूदगी मे सहसा ही इस घटना पर सन्देह भी नहीं होता है। कौन ऐसा सहृदय व्यक्ति होगा जो इस वध की निन्दा न करेगा। हमें आश्चर्य्य है कि निज़ाम सरकार ने इस घटना के सम्बन्ध में जहा तक हमे विदित है कोई प्रकाश नहीं डाला है। प्रतीत होता है निज़ाम सरकार इस घटना को उस गभीरता से नहीं लेती है जिससे ली जानी चाहिए।

आर्य्य जगत में इस घटना से असन्तोष, और क्रोध की लहर दौड़ गई है।

आर्य्य समाज की ज़िम्मेवार सभाएं और आर्य्य समाजे इस घटना पर प्रस्ताव पास करके अपने असन्तोष को प्रगट कर रही हैं और निजाम सरकार से माग कर रही हैं कि वह इस घटना की निष्पक्ष जाच कराके और अपराधियों का पता लगाकर उन्हें समुचित दण्ड दे और आगे के लिए इन घटनाओं को असभव बना देवे। आर्य्य समाज के इस असन्तोष और हलचल का निज़ाम सरकार को पता होगा या इस समय तक पता हो गया होगा। उसे चाहिए वह स्थिति की गभीरता को अनुभव करे और आर्य्यों की मांग का आदर करते हुए इस सम्बन्ध में अविलम्ब उचित कार्य्यवाही करे।

वे भाई बड़े भोले हैं जो सचाई को दबाने के लिए इस प्रकार के जघन्य उपायो का अवलम्बन करते है। इन उपायों से सचाई छिपने के बजाय और भी निखर जाती है। भाई वेदप्रकाश के वध से वेदप्रकाश तो अमर हो ही गया साथ ही हैदराबाद में आर्य्य समाज को भी अमर कर गया।

— —

पश्चिमी देशों मे शव-दाह

पाश्चात्य देशो मे मुर्दे जलान की प्रथा बढ रही है। सन् १६३३ से सन् १९३५ तक जर्मनी मे ११४५६, सोवियट रूस में १२०८३, ब्रिटेन में ३६१४, फ्राम मे १३३०, स्विटजरलैंड मे ६३३७, आस्टिया मे ३११६, डेनमार्क में ३३०४ और जकोस्लोवाकिया मे ५६१२, मुर्दे जलाये गये। इन दो वर्षों म सारे युरोप मे इनकी सख्या १०५२८७ से बढकर ११२८८५ हो गई। जर्मनी मे ११५ ब्रिटन मे २३, और स्विटज़रलैंड म २० क्रमोटरियम है जहा मुर्दे बिजली से जलाये जाते है। युरोप में इस प्रथा का पचार करने के लिए कई साम तियां बनी हुई हैं। गत सितम्बर में लंडन म इनका सम्मेलन हुआ था जिसमे प्रचार कार्य के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय सघ स्थापित किया गया है।

मुर्दे का दाह सस्कार करना आर्य सभ्यता की स्वास्थ्य सम्बन्धी एक उत्तम वैज्ञानिक प्रथा है। प्रसन्नता है युरोप में यह प्रथा वेग के साथ प्रचलित हो रही है। युरोप में इस प्रथा के प्रचलन का महत्व और भी अधिक बढ जाता है इसलिए कि युरोप ईसाई धर्म्म प्रधान देश है और ईसाई धर्म मुर्दे के दाह की आज्ञा नहीं देता है।

———

आर्य्य विवाह ऐक्ट की व्याख्या

जैसा कि पाठक अन्यत्र पढ़ेंगे 'आर्य्य मैरेज ऐक्ट' की व्याख्या सार्वदेशिक सभा की ओर से प्रकाशित की जा रही है। व्याख्याकार बिल के निर्माता तथा उसे ऐक्ट का रूप दिलाने वाले सार्वदेशिक सभा के मान्य प्रधान श्री० बा० घनश्याम सिंह जी गुप्त हैं। इस व्याख्या से आशा है कि कानून के सामाजिक और कानूनी दोनों पहलुओं का अच्छा ज्ञान हो जायगा और कानून के समझने में जो बाधाएँ उपस्थित हो सकती थीं वे न रहेंगी और कानून के अधिक से अधिक प्रचलन में मदद मिलेगी। हम बिल के पास होने के समय से ही हम सोच रहे थे कि इस कानून की एक तो उपर्युक्त प्रकार की व्याख्या दूसरे इस बिल का शुरू से अन्त तक का इतिहास तय्यार हो। इस बिल के सविस्तर इतिहास से जनता को पता लगेगा कि इस बिल की प्रगति बड़ी मनोरंजक रही है। उदार और अनुदार भावों का बहुत उग्र संघर्ष रहा है। नई २ विविध कानूनी, सामाजिक और धार्मिक स्थापनाएँ और खोजें प्रकाश में आई हैं और सब से बढ़कर आर्य्य समाज का गौरव स्थापित हुआ है तथा बिल के पक्षपातियों को घोर परिश्रम करना पड़ा है। प्रसन्नता है कानून की व्याख्या की तजवीज़ स्थूल रूप में हमारे सामने आ गई है। क्या ही अच्छा हो दूसरी तजवीज़ भी स्थूलरूप में आ जाय भले ही कुछ और समय के बाद आए। आशा है आर्य्य समाज और आर्य्य जनता इस व्याख्या का अधिक से अधिक प्रचार करेंगे।

पादरियों का दृष्टिकोण

(उपर्युक्त शीर्षक से 'आर्य मित्र' लिखता है)

केण्टरबरी के आठ पादरियों ने एक कमीशन नियत किया था जिसकी रिपोर्ट में कई प्रचलित विश्वासों पर आपत्ति उठाई गई है और यह बात स्वीकार कर ली है कि बाइबिल निर्भ्रान्त नहीं है। कमीशन ने लिखा है कि कुमारी मरियम के गर्भ से पुत्रोत्पत्ति के सम्बन्ध में साक्षी निर्णयास्पद है। यह धारणा भी भ्रान्त है कि कयामत के दिन मुर्दे इकट्ठे खड़े होंगे। चमत्कारों (मुअज़िज़ों) के सम्बन्ध में भी परस्पर मत भेद है। हां रिपोर्ट में यह अवश्य स्वीकार किया गया है कि परमात्मा चाहे तो चमत्कार दिखा सकता है। रिपोर्ट में विकास सिद्धान्त पर भी कोई आपत्ति नहीं की गई। इस प्रकार की रिपोर्टों और तहकीकातों का यही अर्थ है कि ईसाई लोग भी अपने धर्म्म की असम्भवता को दूर कर उसे वैज्ञानिक रूप देने की चिन्ता में हैं। वस्तुतः जो धर्म्म तर्क की टक्कर सहकर बुद्धिवाद के क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ सकता वह आधुनिक युग में अपनाए जाने योग्य नहीं हैं। यही कारण है कि सत्य सनातन वैदिक धर्म्म का महत्व उत्तरोत्तर बढ़ रहा है और समझदार जनता इसे किसी न किसी रूप में स्वीकार करने के लिए अत्यन्त उत्सुक दिखाई देती है।

आर्य विवाह एक्ट

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा ने अपने ६-१-३८ के अधिवेशन मे जो कई महत्व पूर्ण प्रस्ताव पास किए हैं उनमे एक आर्य्य विवाह ऐक्ट सम्बन्धी निम्न प्रकार है :—

"आर्य विवाह एक्ट के लिए 'आर्य समाजी' की परिभाषा नियत करने के सम्बन्ध में उपसमिति के सदस्यों की सम्मतियां तथा उन पर श्री प्रधान जी की रिपोर्ट पढ़ी गई। विचार के बाद सर्व्व सम्मति से निश्चय हुआ कि श्री प्रधान जी द्वारा निर्धारित निम्न दोनों फ़ार्म स्वीकृत किए जावे तथा प्रान्तिक सभाओं के पास आर्य समाजो तक पहुँचाने के लिए भेजे जावें। इस सभा की यह भी स्थिर सम्मति है कि आर्यसमाज के उपनियमों में 'आर्य' और 'आर्य सभासद' की जो परिभाषा है वह केवल आर्यसमाज के सगठन के लिए ही है और विस्तृत आर्य जगत के लिए नहीं है अतः जो प्रधान जी द्वारा प्रतिपादित घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर करेंगे वे 'आर्य विवाह एक्ट' की मंशा के भीतर आर्य समाजी होंगे, इसमें सन्देह नहीं—

घोषणा पत्र सं० (१)

मैं.. .. पुत्र/पुत्री ... ..निवासी.........तहसील...

ज़िला ...... उम्र ... . पेशा.. ......घोषणा करता हूँ/करती हूँ कि मैं आर्य समाजी हू और श्रीयुत.....

के पुत्र/पुत्री ......के साथ जिसकी अवस्था की है

और आर्य समाजी भी है विवाह करना चाहता/चाहती हूँ।

ह... .. घोषणा करने वाला/वाली

तिथि .

हमारे सामने उक्त घोषणा की गई और हस्ताक्षर भी हुए

ह० मन्त्री आर्य समाज ह० प्रधान आर्य समाज

तिथि तिथि . ...

हस्ताक्षर अन्य उपस्थित सज्जन गण

... ...

घोषणा पत्र सं० (२)

मैं...... .. . पुत्र/पुत्री ... .

निवासी तहसील......

ज़िला उम्र . .. पेशा......

घोषणा करता/करती हूँ कि तिथि को शुद्धि करा

के आर्य समाजी हो गया/गई हूँ। मैं यहभी घोषणा

करता/करती हूँ कि मैं आर्य समाजी हूँ और श्रीयुत.. ... .

के पुत्र श्रीयुत/पुत्री श्रीमती ...के साथ जिसकी उम्र है और

जो आर्य समाजी भी है विवाह करना चाहता/चाहती हूँ शुद्धि

से पूर्व मैं . ... था/थी ❀

ह० घोषणा करने वाले के

तिथि ...

हमारे सामने उक्त घोषणा की गई और हस्ताक्षर भी हुए।

ह० मन्त्री आर्य समाज ह० प्रधान आर्य समाज

तिथि... ... तिथि...... ..

हस्ताक्षर अन्य उपस्थित सज्जन गण

यह निश्चय स्वयं अपनेमे स्पष्ट है। इस निश्चय के प्रकाश में वे सब आर्य्य समाजी जो आर्य्य समाज के रजिस्टर्ड मेम्बर नहीं हैं इस ऐक्ट से लाभ उठा सकते हैं।

❀ मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी, इत्यादि,

अजमेर आर्य्य-जगतके झगड़ेके सम्बन्ध में सार्वदेशिक आर्य्य-प्रतिनिधि सभाके प्रधान आनरेबिल श्रीयुत् घनश्यामसिंह जी गुप्त का निर्णय

१—सब मुकद्दमात उठा लिए जावें या खारिज करा दिये जावें। इस कार्य का भार श्रीमान् चांदकरण जी शारदा तथा श्रीयुत दत्तात्रेयजी बावले पर सौंपा जाता है जो इसे शीघ्रातिशीघ्र संपन्न करके सार्वदेशिक सभा को सूचित करेंगे।

२—एक दूसरे के विरुद्ध और किसी भी सस्था के विरुद्ध कोई नोटिसबाजी न होगी।

३—अजमेर में जितनी आर्य-समाजे हैं उन सबका पृथक अस्तित्व प्रबन्ध आदि रहेगा। जब तक कि वे स्वय स्वतन्त्रता पूर्वक सम्मिलित होना न चाहे।

४—एक वर्ष के लिए वहा के सब आर्य-समाजोका साप्ताहिक अधिवेशन और पर्व आदि पर अधिवेशन एक ही साथ और एक ही जगह मे हुआ करेगा।

इन अधिवेशनो में

(१) श्री कुंवर आलिमसिंह जी प्रधान होंगे।

तथा—

(२) श्री प० सूर्यदेव जी शर्मा मन्त्री होंगे।

सम्मिलित अधिवेशन में निम्न नियम लागू होगे—

५—(क) अजमेरके प्रत्येक आर्यसमाज का प्रत्येक सभासद उपस्थित हो सकेगा।

(ख) उस आर्य समाज के मंत्री जिन जिन को अपने समाजका मेंबर बनावें वह मान्य होगा। और इस पर कोई बहस इस सम्मिलित अधिवेशन मे न होगी।

(ग) इस सम्मिलित अधिवेशन की बैठक के लिए श्रीमान् आलिम सिंह जी की सूचना पाने पर स्थान बिछावन आदि की सुविधा तथा आर्यसमाज के भवन के उपयोग की अनुमति उस आर्य समाज का मन्त्री देगा जिसके पास कुवर साहब सूचना भेजे।

(घ) सम्मिलित अधिवेशनो को सुचारु रूप से चलाने का अधिकार तथा जिम्मेवारी कुंवर साहब पर पूरी पूरी होगी। उस सम्बन्ध में उनकी बाते सब को मान्य होंगी।

६—हरएकआर्य समाज प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित रहेगा और केसर गज स्थित आर्यसमाज अगले निर्वाचन पर अपने प्रतिनिधि नियमानुसार भेजेगा।

७—अजमेर तथा अन्य किसी स्थान का जो भी आर्यसमाज अपना जो नाम बतावे वह प्रतिनिधि सभा को मान्य होगा और उसी नाम से वह आर्य समाज निर्दिष्ट होगा। यदि एक ही नाम के दो या अधिक आर्य समाज हों तो पते में भिन्नता की जावेगी नाम में नहीं।

८—हरएक आर्यसमाज का भवन व अन्य स्थावर सम्पत्ति प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम रजिस्ट्री की जावेगी इस कार्य के लिए केसर गज स्थित आर्य समाज अजमेर को दो वर्ष की मुहलत दी जाती है।

९—जो भी कोई आर्य किसी भी आर्य समाज में प्रवेश होना चाहे उसे पूर्ण स्वतन्त्रता होगी। किसी को सदस्य न बनाने तथा सदस्यता से पृथक करने का अन्तिम अधिकार सार्वदेशिक सभा के हाथ मे रहेगा। आर्य समाज अपना रिपार्ट भेजगा।

१०—इस सम्बन्ध मे तथा अन्य कोई झगड़ा जो उपस्थित हो वह श्रीमान् प्रिन्सपल शेषाद्रि जी तथा श्रीमान् प्रोफेसर देवकीनन्दन जी के सामने निर्णय के लिए पेश किया जावेगा और उनका निर्णय मान्य होगा। उनके निर्णय पर यदि किसी को एतराज हो तो वह सार्वदेशिक सभा को दरख्वास्त दे सकता है परन्तु सार्वदेशिक सभा के निर्णय होने तक उक्त महानुभावो का फसला मान्य रहेगा।

११—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को आशा है कि उक्त दोनो बातो के यथोचित पालन होने पर किसी को किसी व्यक्ति के विरुद्ध या किसी सस्था के विरुद्ध शिकायत का मौका न रहेगा, तथापि यदि किसी खास शिकायत की विद्यमानता रही तो सार्वदेशिक सभा उनपर उचित विचार और अनुसन्धान करके उचित कार्यवाही करेगी।

आर्य्य प्रतिनिधि सभाओं के नाम सार्वदेशिक सभा के सरक्यूलर

(१)

सभा के उप प्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का इस सभा के लिए प्रतिनिधि सदस्यों के चुनाव से सम्बन्धित निम्न प्रस्ताव आपकी सेवा में सम्मति के लिए भेजता हूँ। आशा है आप अपनी सभा की सम्मति से यथा सम्भव शीघ्र सूचित करेंगे।

"प्रान्तीय सभा जिस समय अपनी साधारण सभा में सार्वदेशिक सभा के लिए माननीय सदस्यों का निर्वाचन करें उस निर्वाचन के पश्चात् वह माननीय सदस्य जो सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के लिए निर्वाचित हुए हैं वे यदि प्रान्तीय सभा के सदस्य हों तो वहां से त्याग-पत्र देकर स्थान रिक्त कर देंगे और वे सार्वदेशिक सभा के ही सदस्य होंगे। एक ही समय में कोई सदस्य प्रान्तीय और सार्वदेशिक सभा का सदस्य न होगा बल्कि एक ही सभा का सदस्य हो सकेगा।" मन्त्री सभा,

सरक्यूलर

(२)

सभा की ओर से प्रथम प्रान्तीय सभाओं को आदेश किया गया था कि वह आर्य्य समाजों को प्रेरणा करें। जहां जहां जेलखाने हैं वहां वहां उन जेलखानों में धर्मप्रचार का प्रबन्ध किया जाय। उस समय प्रान्तीय सभाओं ने सभाओं को उत्तर दिया था कि उन्होंने आर्य्य समाजों को ऐसा करने को लिख दिया है। आशा है आर्य्य समाजों ने इस विषय में कुछ न कुछ कार्य्य किया होगा।

अब पुनः प्रान्तीय सभाओं को निश्चित कार्य्य लिख कर सभा प्रेरणा करती है कि वह आर्य्य समाजों को ऐसा करने का आदेश करें।

(१) जहां जहां जेल घर हैं वहां के अधिकारियों से पत्र व्यवहार करके धर्म प्रचार के लिए समय नियत करके किसी व्यक्ति को नियत किया जाय। जो नियम पूर्वक वहाँ जाकर प्रचार करे। यदि एक व्यक्ति इतना समय देने वाला न मिल सके तो एक से अधिक व्यक्ति नियत किए जाएं।

(२) उसी अवसर में अथवा भिन्न समय में कारागार वासियों को आर्य्य भाषा पढ़ाने का प्रयत्न किया जाय। कोई व्यक्ति वहां जाकर उन्हें पढ़ावे अथवा अन्य कोई उचित प्रबन्ध किया जाय।

(३) कारागार वासी सज्जनों को पढ़ने के लिए पुस्तक दिये जांय। जब वे उसे समाप्त कर लिया करें तो वह लेकर और दिए जांय। इसके लिए उन स्थानों की आर्य्य समाजों में पुस्तकालय बनाए जाय।

स्वतन्त्रानन्द उपप्रधान
सार्वदेशिक सभा, देहली।

श्री युत शिवचन्द्र जी का दौरा

गत नवम्बर तथा दिसम्बर मास में श्रीयुत शिवचन्द्र जी ने आर्यवीर सेवा दलों के स्थापनार्थ संयुक्त प्रान्त में एक लम्बा दौरा किया और मुरादाबाद चन्दौसी, बरेली, हरदोई, लखनऊ, फैज़ाबाद, बनारस, मिर्ज़ापुर, इलाहबाद, फतेहपुर तथा कानपुर में उक्त दलों की स्थापना की तथा मेरठ जयन्ती महोत्सव के अवसर पर संयुक्त प्रान्तीय आर्यवीर सेवादल समिति का निर्माण कराया।

आपने जनवरी मास में अजमेर के झगड़े के सम्बन्ध में श्री प्रधान सार्वदेशिक सभा के साथ अजमेर की यात्रा की।

॥ ओ३म् ॥

आर्य्य पर्वों की सूची

सार्वदेशिक सभा आर्य समाजों की सूचना के लिए प्रति वर्ष स्वीकृत आर्य पर्वों की देशी तथा अंग्रेजी तिथियों के उल्लेख के साथ, जिन पर वे पर्व पड़ते हैं, सूची प्रकाशित किया करती है। इस वर्ष की सूची निम्न प्रकार है:—

क्रम सं०	नाम पर्व्व	देशी तिथि	अंग्रेज़ी तिथि
१.	नवसम्वत्सरोत्सव	चैत्र सुदि प्रतिपदा	१-४-१९३८
२.	आर्यसमाज का स्थापना दिवस	चैत्र सुदि ५	५ ४-३८
३.	रामनवमी	,, ९	८-४ ३८
४.	हरि तृतीया (तीज)	श्रावण सुदि ३	२९-७ ३८
५.	श्रावणी उपाकर्म	,, ,, १५	११ ८ ३८
६.	कृष्णाष्टमी	भाद्रपद वदी ८	१९-८-३८
७.	विजयादशमी	आश्विन सुदि १०	३-१०-३८
८.	दयानन्दनिर्वाण (दीपावली)	कार्तिकवदी ३०	२२-१०-३८
९.	श्रद्धानन्द दिवस	पौष ९ (सौर)	
१०.	मकर संक्रान्ति	माघ कृष्ण ६	१४-१-३८
११.	वसन्त पंचमी	माघ शुक्ला ५	५-२-३८
१२.	सीताष्टमी	फाल्गुन वदी ८	२२ २ ३८
१३.	दयानन्द जन्म दिवस	,, ,, १३	२८-२-३८
१४.	लेखराम वीर तृतीया	,, सुदि ३	५-३-३८
१५.	वसन्त नवसस्येष्टि (होली)	,, ,, १५	१५-३-३८

नोट—श्रद्धानन्द दिवस की निश्चित तिथि की सूचना उचित समय पर दी जायगी।

सुधाकर एम० ए०,
मन्त्री—
सार्वदेशिक आर्य्य-प्रतिनिधि सभा,
बलिदान-भवन, देहली।

हैदराबाद-राज्य

The International Aryan League has adopted the following resolution at its meeting held on the 9th January at Delhi —

"Resolved that the International Aryan League puts on record its sense of profound sorrow and deep indignation at the assassination of Mr Vedaprakash Arya by Muslim Fanatics at Gunjoti in Hyderabad State and urges upon the Nizam Government to have this accident investigated by an impartial tribunal and to punish the accused suitably The League further hopes that the Nizam Government would render the commission of such atrocities impossible in future.

'सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा धर्म्मान्ध मुसलमानों द्वारा निज़ाम राज्यान्तर्गत गंजोटी मे म० वेद प्रकाश जी के वध पर दुख प्रकाश करती हुई इस वध की घोर निन्दा करती है और निज़ाम सरकार से आग्रह करती है कि वह इस घटना की निष्पक्ष ट्रिब्यूनल के द्वारा जांच कराए, और अपराधियों का पता लगा कर उन्हें समुचित दण्ड देवे। यह सभा यह भी आशा करती है कि निज़ाम सरकार भविष्य में इस प्रकार के अत्याचारों को असंभव बनादेगी।

आर्य्य विवाह एक्ट की व्याख्या

सर्व साधारण विशेषतः आर्य्य जनता की सूचना के लिए घोषित किया जाता है कि 'आर्य्य विवाह ऐक्ट' की कानूनी और सामाजिक व्याख्या इगलिश और हिन्दी में तय्यार कराई गई है और प्रेस में दे दी गई है। शीघ्र पुस्तक रूप में प्रकाशित होगी। यह सौभाग्य की बात है कि व्याख्याकार स्वयं बिल के निर्माता सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय श्री बाबू घनश्यामसिंह जी बी एस. सी एल एल. बी हैं। इस व्याख्या से ऐक्ट के हरेक पहलू का पूरा पूरा ज्ञान हो जाता है। इस व्याख्या को ऐक्ट की कुंजी कह सकते है। आर्य्यमात्र को यह व्याख्या अपने पास रखनी चाहिए और आर्य्य समाजो को अधिक से अधिक सख्या मे यह जनता तक पहुँचानी चाहिए ताकि ऐक्ट अधिक से अधिक और ठीक ठीक प्रचलित हो। यह व्याख्या सार्वदेशिक सभा देहली द्वारा प्रकाशित की जा रही हैं और इसकी न्यून से न्यून कीमत रक्खा जायगी। आर्य्य भाइयों तथा आर्य्य समाजों को शीघ्र से शीघ्र सार्वदेशिक सभा को सूचित करना चाहिए कि उन्हे हिन्दी तथा अंग्रेज़ी व्याख्या की कितनी कितनी प्रतियां दरकार होगी ताकि उतनी ही संख्या मे प्रतियां छपवाई जा सकें।

सुधाकर
मन्त्री—सार्वदेशिक सभा, देहली

ग्राहकों से निवेदन

प्रायः ग्राहक महानुभाव पत्र व्यवहार मे वा मनीआर्डर इत्यादि भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या नहीं लिखते हैं। इससे कार्यालय को असुविधा होती है और स्वय ग्राहकों को भी पत्र समय पर नहीं मिलता। अतएव ग्राहक महानुभावों से निवेदन है कि वे पत्र व्यवहार इत्यादि में अपना ग्राहक नम्बर लिखना कृपया न भूला करें—

"अमैथुनि सृष्टि और युवा प्राणियों का उत्पन्न होना"

लेखक—
श्री नारायण स्वामी जी महाराज

महा प्रलय में जगत का अत्यंताभाव हो जाता है। कार्य्य रूप में परिणत प्रकृति का चिन्ह बाक़ी नहीं रहता न कोई लोक बाक़ी रहता है न कोई योनि, सूर्य्य चन्द्र सभी कारण रूप प्रकृति की गोद में शयन करने लगते हैं। ऋग्वेद में इसी कारण रूप प्रकृति अथवा सत रज और तम की साम्यावस्था के लिये "तमासीत्तमसा गुढमग्रे" (देखो ऋग्वेद १०।१२६।३) कहा गया है। प्रचलित विज्ञान ने भी इस महाप्रलय वाद का समर्थन किया है। क्लाशियस (The founder of the mechanical theory of heat) ने ताप को दो भागों मे बाटा है —

(१) The Energy of the universe is constant, It is convertable into work

(२) The entropy of the universe tends towards a maximum (It is not convertable into work) Entropy (ie force that is directed inwards) this energy already converted into heat and distributed in the cooler masses, is irrevocably lost as far as any further work is concerned. The entropy is continuously increasing at the cost of the other half (The first kind of energy) As, therefore the mechanical energy of the universe is daily being transferred into heat and this can not be reconverted into mechanical force, the sum of heat and energy in the universe must continually tend to be reduced and dissipated All difference of temperature must ultimately disappear and completely the latent heat must be equally distributed thro one invert mass of motion less matter All organic life and movement must cease, when this maximum of entropy has been reached, that would be a real end of the world

इस अवस्था के प्राप्त हो जाने और नियत अवधि तक क़ायम रहने के बाद जब जगत उत्पन्न होता है तब प्रत्येक लोक क्या और प्रत्येक योनि क्या, नये सिरे से ही बनती हैं। यहा लोक नहीं किन्तु योनि के उत्पन्न होने के सम्बन्ध मे विचार करना है —

भिन्न भिन्न प्राणियों के शरीर, जैसा वैशेषिक दर्शन मे लिखा है, दो प्रकार के होते हैं —

(१) "योनिज" जो माता पिता के संयोग से

उत्पन्न होते हैं। (मैथुनि सृष्टि)

(२) अयोनिज जो बिना माता पिता के सयोग के उत्पन्न होते हों १ (अमैथुनिसृष्टि)

समस्त प्राणी जो जगत में उत्पन्न होते हैं उनकी उत्पति चार प्रकार से होती है —

(१) जरायुज जिन के शरीर जरायु (झिल्ली) से लिपटे रहते हैं और इस जरायु को फाड कर उत्पन्न हुआ करते हैं जैसे मनुष्य पशु आदि।

(२) अण्डज जो अण्डों से उत्पन्न होते हैं जैसे पक्षी, साप मछली, मेंढक आदि।

(३) स्वेदज जो पसीने और सील आदि से उत्पन्न होते हैं।

(४) उद्भिज जो पृथिवी फाड कर उत्पन्न होते हैं जैसे वृक्ष आदि।

इन मे से अन्तिम दो की तो सदैव अमैथुनिसृष्टि हुआ करती है और प्रथम दो की मैथुनि और अमैथुनि दोनों प्रकार की सृष्टि हुआ करती है।

अमैथुनि सृष्टि का क्रम

स्थूल भूतों की उत्पत्ति का आरभ आकाश (Ether) से हुआ करता है आकाश के बाद क्रम से वायु अग्नि, जल और पृथिवी उत्पन्न होती है।

(१) तत्र शरीर द्विविध योनिजमयोनिज च ॥

नोट—इस सूत्र के भाष्य में—(वैशे० ४ । २ । ५ ।) "आचार्य्य प्रशस्त पाद ने लिखा है कि जल अग्नि और वायु से उत्पन्न शरीर अयोनिज होते हैं आचार्य्य प्रशस्त पाद की यह बात प्रकट नहीं है।

पृथिवी से औषधि, औषधि से अन्न, अन्न से वीर्य (वीर्य से तात्पर्य रज और वीर्य दोनो हैं), और वीर्य से पुरुष उत्पन्न होता है।१

चाहे मैथुनी सृष्टि हो या अमैथुनी दोनों मे प्राणी रज और वीय के मेल ही से उत्पन्न हुआ करता है। मैथुनी सृष्टि मे रज और वीर्य के मिलने और गर्भ की स्थापना का स्थान माता का पेट हुआ करता है परन्तु अमैथुनि सृष्टि मे मेल का स्थान माता के न होने से, माता के पेट से बाहर हुआ करता है।

प्राणी शास्त्र के विद्वान बतलाते हैं कि अब भी ऐसे जन्तु पाये जाते हैं जिन के रज और वीर्य माता के पेट से बाहर ही मिलते हैं और उन्हीं से बच्चे उत्पन्न हो जाते हैं। उन में से कुछ का विवरण नीचे दिया जाता है —

(१) समुद्रों मे एक प्रकार की मछली होती हैं जिनकी मादा मछलियों मे नियत ऋतु मे बहु सख्या में रजकण (ova) प्रकट हो जाते हैं और इसी प्रकार नर मछली क अण्डकोषों मे जो पेट के नीचे (within the abdominal avity) होते है वीर्यकण (zoosperms) प्रादुर्भूत होने लगते है। जब मादा मछली किसी जगह अण्डे

(१) तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाश सम्भूत ।
आकाशाद्वायु वायोरग्नि अग्नेराप ।
अद्भ्य पृथवी । पृथिव्या ओषधय ।
ओषधीभ्योऽन्नम् । अन्नाद्रेत । रेतस पुरुषः ॥
(तैत्तिरीयोपनिषद् ब्रह्मानन्द वल्ली, प्रथम अनुवाक)

देने के लिये रज कणों को, जो हजारों की संख्या में होते हैं, गिराती है वह जगह प्राय जल की निचली तह में रेतीली अथवा पथरीली भूमि होती है, तो उसी समय नरमछली वहीं पहुंच कर उन्हीं रज कणों पर वीर्य कणों को छोड़ देता है जिस से पेटके बाहर ही गर्भ की स्थापना होकर अंडे बनने लगते हैं।

(२) इसी तरह एक प्रकार के मेंढक होते हैं जो रज और वीर्य कण बाहर ही छोड़ते हैं। नर मेंढक मादा मेंढक की पीठ पर इस प्रकार बैठ जाता है जिससे मादा के छोड़ते हुये रज कणों पर वीर्य कण गिरते जावें और इस प्रकार मेंढकी के पेट से बाहर ही इन के अंडे बना करते हैं।

(३) एक प्रकार का कीट जिन्हें टेपवर्म (Tapeworm) कहते है और जो मनुष्यो के भीतर पाचन क्रिया की नाली (Human digestive canal)मे पाया जाता है, २० हजार अंडे एक साथ देता है। एक अंडे में से जब कीट निकलता है तो उसका एक मात्र शिर हुकों के साथ जुड़ा हुआ होता है (It consists simply a head with hooks) उन हुकों के द्वारा वह आंतों की श्लैष्मिक कला (mucuons membrance of the intengtines) से जुड़ जाता है और उसी शिर से उस का शरीर विकसित होता है और इस प्रकार उत्पन्न शरीर अनेक भागों (Segments) मे विभक्त हो जाता है। और वे क्रमश संख्या और आकार मे बढ़ते जाते हैं। प्रत्येक भाग मे स्त्री पुरुष के अंग होते हैं जिन से, स्वयमेव, बिना किसी बाह्य सहायता के गर्भ की स्थापना हो जाती है। कुछ काल के बाद पुराने भाग (Segments) पृथक होकर स्वतन्त्र कीट बन जाया करते हैं, इत्यादि।

इन उदाहरणों से यह बात अच्छी तरह समझी जा सकती है कि यह असम्भव नहीं है कि रज और वीर्य का सम्मेलन माता के पेटसे बाहर हो और उस से प्राणी की उत्पत्ति हो सके।

इसी मर्यादा के अनुसार अमैथुनि सृष्टि मे रज और वीर्य का मेल माता के पेट से बाहर होकर एक झिल्ली मे गर्भ की तरह सुरक्षित रहते हुए बढता रहता है।

रज और वीर्य किस प्रकार झिल्ली मे आकर मिल जाते हैं इसका कुछ अनुमान फूलों के पौधों से किया जा सकता है। फूल के पौधे नर भी होते हैं और मादा भी। नर पोधो से पक्षी वीर्य कण ले जाकर मादा पौधों के रज कणो पर छोड़ देते हैं और उसका फल फूल की उत्पत्ति हुआ करती है और इसी लिये पक्षियों को Marriage priest of flowers कहा करते हैं। इसी अथवा अन्य इसी प्रकार की किसी विधि से रज और वीर्य का सम्मेलन झिल्ली मे हो जाया करता है। यहा पर झिल्ली का अभिप्रायवृक्षों के चौडे पत्तों आदि से उत्पन्न झिल्ली समझना चाहिये। अस्तु, जब प्राणी इस बाह्य गर्भ मे इतना बडा हो जाता है कि अपनी रक्षा आप कर सके, तब वह झिल्ली फट जाती है और उसमे से वह निकल आया करता है। इसी का नाम अमैथुनि सृष्टि है।

"एक कीट का उदाहरण"

अमैथुनि सृष्टि की कार्य प्रणाली, भली भाति समझी जा सके कि किस प्रकार बिना प्राणियो के यत्न के रज और वीर्य का स्वयमेव सम्मेलन तथा प्राणी के पुष्ट और स्वयं काय करने के योग्य होने पर झिल्ली का अपने आप फट जाना आदि कार्य अलौकिक रीति से हो जाया करते हैं, इसके लिये एक उदाहरण दिया जाता है:—

सुदर्शन नामक औषधि एक प्रसिद्ध औषधि है। कानों की तकलीफ इसका रस डालने से दूर हो जाया करती है। इस सुहावने पोधे मे एक प्रकार का कीड़ा लग जाता है और वह इसके पत्ते और फूल सब को खराब कर दिया करता है। वह कीड़ा कहां से आ जाता अथवा किस प्रकार उत्पन्न हो जाता है इसी के जान लेने की जरूरत है।

जब इस के नये पत्ते निकल आते हैं तो ध्यान पूर्व देखते रहने से पता चलेगा कि कोई काले रंग की सूखी चीज इस के पत्ते पर कहीं से आकर गिर पड़ती है। और पत्ते से अलग नहीं होती, दो चार दिन मे किसी अज्ञात विधि से वह चीज पत्ते के मोटे दल और झिल्ली के बीच मे आ जाती है और साफ तौर से मालूम होता रहता है कि वही काली वस्तु पत्ते के मोटे और पतले दलों के बीच में आ गई है। फिर कुछ दिनों के बाद वही वस्तु अब पत्ते के दलों के बीच मे इस प्रकार आ जाती है कि अब उसका रूप रंग कुछ दिखलाई नही देता, परन्तु पत्ते के भीतर एक गाठ सी मालूम होने लगती है। अब क्रमश पत्ते के भीतर वह वस्तु लम्बाई मे बढ़ती जाती है और लगभग दो इ च के लंबी हो जाती है। इसके बाद कुछ कार्य भीतर ही भीतर होता है। और अन्त मे कई दिन के बाद वह पत्ता फट जाता है और उसमे से हरे रंग का एक लंबा और गोल कीड़ा निकल आता है, इस कीड़े की लबाई दो सुनहरी रेखाओ से ३ हिस्सो मे बंटी रहती है। यही कीडा है, जो सुदर्शन की पत्तियो को खाकर अपने को तो पुष्ट बनाता है, परन्तु पौदे को खराब कर डालता है। अब इसी कीड़े को एक शीशे की अलमारी मे रखकर उसका भोज्य सुदर्शन की पत्तिया उसमे डाल दी जावें। तो ८-१० दिन के बाद वह कीडा ३ तितलिया के रूप मे परिवर्तित हो जाता है और ये तितलिया अलमारी खोलते ही उड़ जाती है।

यह परीक्षण, जिसे जब भी कोई चाहे कर सकता है, अमैथुनि सृष्टि की अनेक अलौकिक बातो पर प्रकाश डालता है कि किस प्रकार ये सब कार्य प्राकृतिक नियमो के द्वारा हो जाया करते हैं।

सांचे का उदाहरण

यह अमैथुनि सृष्टि और उसके बाद इसी से होने वाली मैथुनि सृष्टि का क्रम वैज्ञानिक और ठीक उसी प्रकार का है जैसे खिलौने आदि बनाने वाले पहले एक साचा बना लेते हैं और उसके बाद उसी सांचे से अनेक खिलौने ढाल लिया करते हैं। अमैथुनि सृष्टि की प्रत्येक योनि साचे

के सदृश है और उसके बाद की मैथुनि सृष्टि उसी साचे से, ढले हुये खिलोनों को भाति है।

यहा तक जो कुछ कहा गया उस से स्पष्ट हो जाता है कि अमैथुनि सृष्टि का होना न तो कोई अस्वाभाविक बात है और नहीं कोई आश्चर्य जनक अप्राकृतिक घटना। धार्मिक और वैज्ञानिक जगत इसे बराबर स्वीकार करता रहा है। आदम और हव्वा की उत्पत्ति अमैथुनी सृष्टि के द्वारा ही हुई थी। इसे यहूदी, ईसाई आदि सभी सिमिटिक मतों के मानने वाले स्वीकार करते है।

Darwin ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ Origin of Species में ईश्वर द्वारा जगत के प्रारंभ में प्राणियों की उत्पत्ति स्वीकार की है। उसके शब्द ये है—

There is a grandeur in this View of life having been Originally breathed by the Creator into a few forms or into one"

अमैथुनि सृष्टि मे केवल मनुष्य ही नही अपितु पशु पक्षी सभी उत्पन्न होते हैं। ये भिन्न भिन्न योनिया क्यों उत्पन्न होती हैं, इसका उत्तर वैशेषिककार ने दिया है कि इससे पहली सृष्टि के अन्त में प्राणियों के कर्मानुसार नवीन अमैथुनि सृष्टि में उन्हें भिन्नभिन्न योनिया मिलती हैं।१ इसी वैशेषिक दर्शन में अमैथुनि सृष्टि होने के सम्बन्ध मे दो सूत्र और दिये हैं—एक में कहा गया है कि

१ धर्म विशेषाच्च ॥ (वैशे० ४-२-८)

महा प्रलय हो जाने पर किसी दिशा अथवा स्थान मे कोई प्राणी किसी योनि मे भी बाकी नहीं रहता इसलिये अमैथुनि सृष्टि का होना अनिवार्य्य हो जाता है। (२) दूसरे मे कहा गया है कि प्राचीन आर्य्य प्रथानुसार अमैथुनि सृष्टि में उत्पन्न होने वाले व्यक्तियों को पिता के नाम से नही पुकारते जैसे भरद्वाज का पुत्र भारद्वाज किन्तु उत्पन्न होने वालों के मूल नाम ही लिये जाते है जैसे अग्नि वायु, आदित्य, अंगिरा तथा ब्रह्मा आदि इसलिये कि इनके कोई माता पिता नहीं थे। (३) इन हेतुओं को देने के बाद दर्शन कार ने परिणाम यह निकाला है कि "अयोनिज शरीर" का होना आवश्यक है। (४) और इस की पुष्टि में प्रकट किया है कि वेद मे अमैथुनिक सृष्टि का प्रमाण पाये जाने से भी उसकी सिद्धि होती है। ५

वेदों में अनेक स्थानों पर, मनुष्य, पशु और पक्षी आदि की, ईश्वर द्वारा रचना का विधान किया गया है। पुरुष सूक्त मे उदाहरण के तौर पर, देखा जा सकता है। इनके सिवा ऋग्वेद मे एक जगह कहा गया है.—

ईश्वर अमैथुनि सृष्टि मे उत्पन्न मनुष्यों से कहता है कि "हे समस्त प्राणियो! तुम न पशु

२ अनियत दिग्देश पूर्वकत्वात् ॥ (वैशे० ४-२-७१)

३ समाख्याभावाच्च ॥ सज्ञाया आदित्वात् ॥ (वैशे० ४-२ ९,१०)

४ सन्त्ययोनिजा. ॥ (,, ४ २ ११)

५ वेद लिङ्गाच्च ॥ (वैशे० ४ २-१२)

सत्यार्थ प्रकाश लेखमाला —

राम स्नेही

(श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज)

सत्यार्थ प्रकाश के ११ वें समुल्लास में ऋषि ने राम स्नेही मत पर लिखा है। इसकी दो शाखायें हैं एक शाहपुरा मेवाड़ वाली दूसरी सिंहथल वाली। मुझे प्रथम शाखा के विषय मे कोई पुस्तक नहीं मिला है परन्तु दूसरी के विषय मे एक पुस्तक मिला है। उसके मिलने की भी कथा है। मै एक बार बीकानेर गया था। स्टेशन से जो सगा लिया वह मुझे प्रथम राम स्नेही मन्दिर मे लेगया वहा पूछ कर फिर मैं आर्य समाज में पहुँचा। एक आर्य समाजी सज्जन से मैंने राम स्नेही मत के सम्बन्ध मे पूछा उसने कहा उनकी धर्म पुस्तक छपी हुई है

हो और न छोटे बालक किन्तु (महान्) युवा हो।२

नोट—सायणाचार्य्य ने भी शिशु और कुमार न होने और महान होने का भाव भी यही लिया है "सर्वेयूय सवयसो नित्य तरुणा भवथ"।

मन्त्र में स्पष्ट रीति से अमैथुनि सृष्टि मे उत्पन्न प्राणियो की अवस्था वर्णन की गई है। इसलिए अमैथुनि सृष्टि मे युवा प्राणियों का उत्पन्न होना न अस्वाभाविक है और न प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध।

२ न हि वो अस्त्यर्भको देवा सो न कुमारक ।
विश्वे सतो महान्त इत ॥ (ऋ० ८ ३० १)

—

मैंने उनको ही पुस्तक लाने के लिए भेजा। वह उत्तर लाये कि वह कहते हैं हम उसको देते हैं जो तम्बाकू आदि मादक द्रव्यों का सेवन न करता हो। मैंने कहा यह व्यसन मुझे नहीं है। जब जाकर यह कहा तब महंत ने कहा हम आपको पुस्तक न देंगे। उस समय यह बात समाप्त हो गई। परन्तु उस आर्य सज्जन ने चलते समय मुझे कहा मैं आपको पुस्तक अवश्य भेजूंगा। सचमुच कुछ मास पश्चात् मुझे वह पुस्तक मिल गई। उसका नाम है श्री राम स्नेह धर्म्म प्रकाश' इसके प्रकाशक चौकसराम जी सिंहथल निवासी है। यह पुस्तक प्रथम बार विक्रमी १९८७ तदनुसार ईसवी १९३१ में निर्णय सागर मुंबई में छपी है। इसमें अनेक महात्माओं के वचनों का सग्रह है।

सत्यार्थ प्रकाश मे निम्न पाठ है अब

दूसरी इनकी शाखा 'खेड़ापा ग्राम मारवाड़ से चली है। उनका इतिहास एक रामदास नामक ··· ·· 'सीथल' मे ढेढों का गुरु था उससे मिला उसने उसको रामदेव का पंथ बताके अपना चेला बनाया। उस रामदास ने खेड़ापा ग्राम मे जगह बनाई और इसका इधर मत चला' एकादश समुल्लास। सीथल पर समर्थदास ने टिप्पणि दी है कि सीथल जोधपुर राज्य में एक बड़ा ग्राम है। वह मुन्शी जी को भ्रम है। सिंहथल

बीकानेर राज्य में है और बीकानेर से ६ कोस है जो रेल बीकानेर से हिसार को जाती है उस पर स्टेशन है।

ऋषि ने इस मत में राम नाम जप का विधान माना है। पुस्तक मे प्रथम इस शाखा के महतों के नाम लिखना उचित समझता हूँ ताकि पाठकों को ठीक २ पता लग जाय इस पुस्तक के आरम्भ में ही परिचय शीर्षक से जो पाठ दिया है उसमें लिखा है श्री रामानुज स्वामी की २३ वीं पीढ़ी में श्री रामानन्द स्वामी हुए, और इनकी ११ वीं पीढ़ी श्री जैमल दास जी महाराज हुए। आप सावतसा ग्राम (बीकानेर) में रहते थे और मन्दिर की पूजा करते थे। १७६० में उनको बोध प्राप्त हुआ पश्चात् आप दुलचोसा और फिर रोडे ग्राम में रहे १८१० में इनका शरीरात हो गया दुलचासा और रोडा में इनके रामदास नामक शिष्य ने मकान बनवाये थे जो सिंहथल के गुरु स्थान माने जाते हैं यह वैष्णव हैं।

आगे रामस्नेही संप्रदाय इस प्रकार है। सिंहथाल ग्राम में 'हरि रामदास का जन्म भाग्यचंद जोशी ब्राह्मण के घर हुआ आप जैमलदास जी के शिष्य हुए और सिंहथल में गद्दी बनाई। १८३४ में आपका देहात हुआ उसके पश्चात् क्रम से श्री बिहारीदास जी, श्री हरदेवदास जी, श्री मोतीराम जी, श्री रघुनाथ दास जी, श्री चेतनदास जी, श्री रामप्रताप जी महंत हुए। पुस्तक छपने के समय यही सिंहथल के महंत थे।

खेडापा स्थान बनने का कारण इस प्रकार है। श्री रामदास जी का जन्म १७८३ विक्रमी में बीकोंकोर ग्राम जो जोधपुर राज्य में है हुआ था। आप बड़े होकर शाक्तिक हो गए। भ्रमण करते थे और औघड़ रूप रखते थे सिंहथल आकर शिष्य बनना चाहा श्री हरिरामदास जी ने कहा रामस्नेही आप जैसे औघड़ नही होते हैं। अन्त में शिष्य हो गए। १८०६ में शिष्य हो गए और १८२२ में खेडापा जाकर ठहरे और स्थान बनाया और सहस्रों शिष्य बनाकर रामस्नेही मत का प्रचार किया। १८५५ में आप परधाम पधारे। इनके पश्चात् श्री दयालुदास जी महंत बने १८८५ में देहावसान हुआ, पश्चात् पूर्णदास जी महंत बने यह १८०८ को मालवा प्रांत के मेलकी ग्राम में वैश्य वंश में उत्पन्न हुए थे १८८५ में महंत हुए इनके पश्चात् श्री अर्जुनदास जी तदनन्तर श्री हरलाल दास जी श्री लालदास जी महंत बने जो पुस्तक छपने के समय पर महंत थे।

यह क्रम से सिंहथल और खेडापा की गद्दी के महत हैं। शाहपुरा का विवरण कोई लिख दे तो अच्छा है क्योंकि मुझे उसका कोई पता नहीं है। शाहपुरा में राजाधिराज उम्मेदसिंह जी हैं उनके स्वर्गीय पिता जी ऋषि के शिष्य थे वहा से पता लेना सहल है।

राम जप को हो यह मुख्य मानते हैं।

(१) राम नाम नहि चेतयो कर कर मन की दौल। पृष्ठ ६६

(२) राम बिना कुण रखसी ज्यू खेती किरसान। पृष्ठ ६८

(३) निशि दिन सुमरे राम कबू नहिं भूलरे। पृष्ठ ५६

राम शब्द प्रमाण सग्रह पृष्ठ ८४ से ६३ तक किये हैं पुराण तंत्र, साधु वचन, राम तापनी आदि उपनिषद् जहा कहा मिला संग्रह किया है। इसलिये यह राम राम जप से मोक्ष प्राप्ति मानते हैं।

आरंभ में राम स्नेहियों के सिद्धान्त दिये हैं।

रामस्नेही धर्म के १५ नियम

(१) निर्गुण निराकार एक रामजी का ही इष्ट रखना और उन्हें निर्लेप निरंजन परमेश्वर की पराभक्ति से उपासना करना।

(२) वेद, श्रुति, स्मृति गुरुवाणी, शास्त्र, आर्षग्रंथ, पुराण, आप्त वाक्यों को मानेना और सद्विद्या का प्रचार करना।

(३) पाठपूजन सन्ध्या वन्दनादि नित्य कर्मों का पालन करना और शरीर के सारे सुखों को छोड़कर निरन्तर राम स्मरण पूर्वक योग भ्यासी होना।

(४) सद्गुरु और संतों की आज्ञा मानना उनको ईश्वर रूप जानना और सत्सग को परम लाभ समझना।

(५) अपने सर्व व्यवहारों को ईश्वराधीन जानना और हिंसा रहित सत्य धर्म युक्त सात्विक उद्यमी होना।

(६) भोजनाछादन की चिता न करना और न किसी से याचना करना केवल सर्वशक्तिमान एक ईश्वर का ही आशा विश्वास रखना।

(७) ईश्वर के अर्पण किया हुआ प्रसाद ग्रहण करना अन्य देवताओं के प्रसाद का स्पर्श तक न करना और न अन्य देवताओं को देवत्व बुद्धि से मानना।

(८) शील, संतोष, त्याग, वैराग्य, क्षमा, सरलता, धृति, आदि धारण करना और हितमित सत्यभाषी होना।

(९) काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष, अभिमान, ईर्षा, निन्दादि का त्याग का अंत करण शुद्ध रखना संयम नियम से रहना और स्त्री मात्र को माता बहन समझना।

(१०) जल छान कर पीना, रात्रि में भोजन न करना जीव रक्षार्थ पाव देख कर धरना और चातुर्मास मे विहार न करना अर्थात् एक जगह रहना।

(११) दूसरो के सुख दु ख हानि लाभ को अपनी ही तरह समझना। और सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति मानना।

(१२) मानापमान रहित होकर तन मन वचन से परोपकार करना और संपूर्ण प्राणी मात्र को एक ही आत्मरूप से देखना

(१३) भाग, तम्बाकू, अफीम, पोस्त, गाजा, चरस, सुलफा आदि नशों से तथा मास, मदिरा जुआ आदि सर्व व्यसनों से रहित होना और व्यसनो व बुरे पुरुषों को संगति से बचना।

(१४) बाह्याडंबर में रत न हो शुक्ल अथवा सात्विक रंग रजित वस्त्र धारण करना और हर समय ईश्वर को याद करते रहना।

(१५) भ्रमात्मक भीड़ हट में न फंस कर सद्गुरु द्वारा प्राप्त वेदानुकूल सत्पथ का अनुसरण करना।

"लोकसेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है"

श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी के एक भाषण का सार

आज कल लोग ईश्वर की उपासना के लाभ पूछते हैं। मैं ऐसे लोगों के विश्वास के लिए यह मजमून रख रहा हूँ कि हमारे पास ईश्वर की उपासना का क्या अर्थ है। यदि आप किसी मुसलमान से यह प्रश्न करें तो वह कहेगा कि हम खुदा की इबादत करते हैं। "इबद" का अर्थ बंदा है अर्थात् वे अपने खुदा के सामने अपने बंदा होनेकी प्रतिज्ञा करते हैं। और उससे शब्द बन्दगी निकला है लोग आजकल प्राय एक दूसरे को बन्दगी करते है। हिन्दू भी प्राय ऐसा करते हैं। तो ऐसा कह कर अपने आपको गुलाम बनाया जाता है। इसलिये कम से कम हिन्दुओं को ऐसा शब्द नहीं कहना चाहिये। अब आप एक सनातनी से पूछ वह कहेगा कि हम परमात्मा की भक्ति करते हैं। भक्ति का अर्थ सेवा है। परन्तु आर्य-समाज की उपासना का अर्थ है परमात्मा के निकट होना। परमात्मा के नजदीक रहने का क्या है मतलब इसके साथ ही मुसलमानों की इबादत और सनातनियों की भक्ति इन तीनो चीजों पर रोशनी डालूंगा।

मैने एक बार दीनानगर के एक शास्त्रार्थ मे मुसलमान भाई से पूछा कि आप बतलाएं कि इस नमाज का क्या अर्थ है। इससे क्या लाभ है? उसने फरमाया कि हम खुदा का अदब बजा लाते है। मैने उनसे पूछा कि क्या खुदा इससे प्रसन्न हो जायगा, क्या वह बाह्य चीजो से प्रसन्न होता है या आभ्यन्तरिक भाव देखकर? यदि आन्तरिक भाव देख कर तो बाह्य दिखावट का क्या लाभ? इसके अतिरिक्त मैने यह प्रश्न किया कि सचमुच खुदा प्रसन्न होगा, यदि वह खुश होगा तो उसमे तबदीली आ गई। आपने एक कुरानशरीफ की आयत पढ कर इस बातको दर्शाया कि खुदा ने अपने बन्दो को इबादत के लिए उत्पन्न किया उसे किसी वस्तु की आवश्यकता नही इस लिए उस मे तबदीली नही आती। तो फिर खुश करने का क्या अर्थ? वह भाई उससे आगे न चल सका। अब आर्य्य-समाज की उपासना को लें। हम पर यह प्रश्न किया जाता है कि उसके समीप जाने का क्या अर्थ है? क्या परमात्मा दूर है जो इसके निकट जाएं। हमारा कहना यह है कि परमात्मा और जीव के

गुरुवाणी से उद्धृत

यह नियम किसी गुरू ने तो नहीं लिखे हैं वाणी से भाव लेकर बनाए गए हैं।

रामस्नेही राम का जप करते हैं। गुरू बनाना आवश्यक है. स्त्री-पुरुष प्रत्येक बनाता है। यही इनका सार है।

अन्दर मकानी (दैशिक) या ज़मानी (कालिक) कोई फासला नहीं। मतलब यह है कि यदि हम परमात्मा के गुणों को अपने अन्दर धारण करलें तो हम उसके निकट चले जायेंगे। परमात्मा हर स्थान पर विद्यमान है। वह जीव के साथ रहता है। हम में और उसके मध्य इलमी फासला है। उदाहरण रूप में कई वस्तुयें हमारे निकट होती हैं परन्तु हमें पता नहीं चलता। कई बार लेखनी कान में होती है हम उसे मेज़ पर ढूंढते हैं। गाज़िआबाद में एक बार मैंने अंधकार में अपना उपनेत्र(ऐनक)पगड़ी में रख दिया। जब ऐनक का ख्याल आया तो हम इधर उधर ढूंढते रहे। अन्त में सिर की पगड़ी में से मिल गई। मतलब यह कि यह इलमी भूल थी परमात्मा जाहिलों [मूर्खों] से दूर है और आक़िलों [बुद्धिमानों] के समीप है।

अब सनातनियों की भक्ति को लीजिए। मैंने एक भाई से पूछा कि सेवा के क्या अर्थ हैं वह ख़िदमत के अर्थ न कर सका। मैंने कहा कि समय पर किसी मनुष्य की आवश्यकता को पूरा करना ख़िदमत कहलाता है। अर्थात् आवश्यकता पूरा करना। अब आवश्यकता किसे कहते हैं ? मुझे एक बार अध्यापक ने आवश्यकता का अर्थ बताया कि जिस वस्तु के बिना हमारा जरूर नुक़सान हो उसे ज़रूरत कहते हैं। अर्थात् जिस वस्तु के बिना हम रह नहीं सकते वही जरूरत है। यदि हम जल न पिएं तो मर जायें। परन्तु क्या आपने इस बात पर विचार किया है कि जिस ईश्वर की आप जरूरियात (आवश्यकतायें) पूरी कर रहे हैं, उसकी आवश्यकतायें क्या हैं ? हम किसी को प्रसन्न करने के लिये सबसे प्रथम यह देखते हैं कि उसे किस वस्तु की आवश्यकता है। मै एक मनुष्य के घर अभ्यागत रूप से जाता हूँ। वह मुझ से पूछता है कि आप क्या खायेंगे ? वह पूछता है कि आप चाय पीवेंगे ? मै कहता हूं कि चाय मैंने कभी नहीं पी। तब वह कहता है कि अच्छा दूध पीलो। मैंने कहा दूध रात को पीता हूं, वह कहता है कि अच्छा पूरी खालो, रोटी खालो। मै कहता हूं कि अभी रोटी की जरूरत नहीं। गर्ज़ेकि वह ऐमी चीज़ ढूंढना चाहता है जिससे कि वह मुझे प्रसन्न करे। परन्तु कभी चूक भी हो जाती है। भाषा की गलतफहमी हो जाती है। और सेवा बेजा रीति से भी हो सकती है। एक बार लाला लाजपतराय जी गुजरात काठिया-वाड़ में गये। वहां उन्हें एक सज्जन ने चाय पर बुलाया। चाय पेश की जब और देने लगे तो लाला जी ने कहा कि काफी है। उन्होने फिर पूछा फिर लाला जी ने कहा कि काफी है। काफी का अर्थ यह है कि और नहीं चाहिये परन्तु उन्होंने उसको "पीने वाली" समझा। और वह काफी बनाकर लाला जी के सामने ले आए। इस प्रकार बेजा तरीके पर भी ख़िदमत हो सकती है। एक रोगी को बादाम का हलवा खिला दिया जाय तो यह उसकी सेवा नहीं है बल्कि हानिकारक है। एक वृद्ध को यदि कठिन लड्डू दे दिये जायें तो वह अप्रसन्न हो जाएगा। इसी प्रकार किसी का उदर भरा हुआ हो, उसे खाने के लिए दिया जाए और जो भूखा है उसे न खिलाया जाय यह भी एक गलती है।

मूर्ति को हलवा खिलाया जाता है किन्तु वह उस के होंठों के आगे नहीं जाता, सब जानते हैं। देहली मे स्त्रिया एक स्थानपर मूर्ति की पूजा करती हैं। वहा पर कई पदार्थ खाने के लिये पेश किये जाते हैं। एक बार मुझे उधर से गुजरने का अवसर मिला। देखा स्त्रिया मूर्ति के मुख पर हलवा लगा रही हैं। मैंने सोचा चलो इन्हें कुछ उपदेश ही दे चलें। मैंने मूर्ति के समीप जाकर देखा कि मूर्ति के होंटों पर हलवा कई दिनों से चिमट कर सूख गया है और लकड़ी की तरह हो गया है। मैने देवियों से कहा यह तो पहला हलवा भी नहीं खाती और इसे क्यों खिलाती हो देख लो यह कितने दिन का हलवा इसपर लगा हुआ है। देविया देख कर हस पड़ीं। मैने कहा यह मूर्तिया कुछ नहीं खाती। यदि यह खाने लग जावें तो सब से पहले उनका विरोध पुजारी ही करेंगे क्योंकि अगर मूर्तिया ही सभी कुछ खा जावें तो पुजारियों को क्या मिले।

परमात्मा पूर्ण है उसे किसी वस्तुकी आवश्यकता नहीं, परन्तु फिर भी कोई लड्डू ले जारहा है कोई फूल। ईश्वर पूर्ण है और प्रकृति जड़। जो चीज पूर्ण है वह किसी से कुछ नहीं चाहती वह दूसरों के लिये है। प्रकृति न अपने सम्बन्ध में कुछ जानती है और न किसी के विषय में, किन्तु ईश्वर अपने आप को भी जानता है और दूसरों को भी। एक ईश्वर पूर्ण है और दूसरी प्रकृति। न ईश्वर को किसी चीजकी आवश्यकता है न प्रकृति को। उन से कोई चीज ली जा सकती है, उन्हें दी नहीं जा सकती। आर्य समाजी उपासना करना चाहता है ईश्वर के समीप बैठना चाहता है इसलिए कि ईश्वर से कुछ लेकर उस की खिदमत करे। अब खिदमत किस तरह की जाती है। आप एक पडितजीके घर जाते हैं और एक हाथीका खिलौना भी उनके घर ले जाते हैं। आप पडितजीके लड़के को वह हाथी देते हैं और कहते हैं कि लो बालक। इस पर सवारी करो। पडित जी बहुत प्रसन्न होंगे और आपका सत्कार करेंगे। परन्तु यदि वही हाथी आप लेकर पण्डित जीसे कहें पण्डितजी! यह है आप की सवारी के लिये, पण्डितजी अति क्रोध करेंगे। उनकी स्त्री अलग नाराज, बच्चा दूर दूर। अब हाथी को दोनों अवस्थाओं मे एक ही घर मे रहना है फिर कारण क्या है कि बच्चे को देने पर पण्डित जी खुश पर जब उन्हें दिया गया तो नाराज।

लोक सेवा ही ईश्वर की खिदमत है। पण्डित को उस हाथी की जरूरत नहीं किन्तु उस के लिये वह अत्यन्त हेय है परन्तु यदि उसे दिया तो वह बड़ा नाराज होगा। क्या ईश्वर नाराज न होगा। यदि उस किसी वस्तुकी आवश्यकता न हो और दी जाय। यदि वही चीज उस के बच्चों को दी जाय तो वह प्रसन्न होगा। और यह उस की सेवा है, भक्ति है। खिदमते खलक भी ईश्वर की उपासना और खिदमत है और अगर उस के बच्चों को लाभ पहुचेगा तो ईश्वर प्रसन्न होगा। अब आप सब शंका मे पड़ जाएंगे कि यदि लोक सेवा ही ईश्वरकी उपासना है तो दो समय संध्या पढ़ने की क्या आवश्यकता है। इसके सम्बन्ध में आप को बतलादू कि दो समय संध्या पढना जरूरीही है। संध्या करना अपने आपको खलक की सेवा के लिये तय्यार करना है।

हिन्दू-समाज में स्त्री

एक अंग्रेज महिला के विचार

अभी हाल मे लंडन मे एक पुस्तक प्रकाशित हुई है और वह थोडे अर्से मे ही काफी अप्रिय हो गई है।

'मनुष्य के हाथ की कठपुतली' पुस्तक का यह नाम है। उसकी लेखिका कोई मिस (कुमारी) साउथगेट है; जिसका दावा है कि वह भारतवर्ष को प्रेम करती है। परन्तु जो व्यक्ति भारतीय लोगो को बहुत निकट से जानता है और स्वयं कुमारी जी भ ऐसा ही कहती हैं उसके लिए उनकी लम्बी गाथा पर स्वीकृति की मुहर लगा देना कठिन है। उन्होंने हिन्दू देवियों को बदनाम करने की चेष्टा की है।

पिछले कई वर्षों से कीचड उछालने वालों की जो सेना अस्तित्व में आई हुई है कुमारी जी उस की ताजा रगरूट हैं। इन लोगों ने हिन्दू रस्म रिवाजो और रहन-सहन की खिल्ली उडाना और सच्चाइयों को तोड मोड कर भोली भाली जनता के समक्ष रखना अपने जीवन का ध्येय बना रक्खा है।

सचमुच इस प्रकार के द्वेष पूर्ण प्रचारकों की जितनी निन्दा की जाय थोडी है। जिस बात या प्रणाली का उन्हें बिल्कुल भी ज्ञान न हो वा लेश मात्र ज्ञान हो उसपर आक्रमण करने के लिए वे क्यों मैदान में आते हैं? मुझे आश्चर्य है।

अपने निज के वास्तविक अनुभव से मैंने हिन्दू देवियों को कई बातों में उनकी पाश्चात्य देशों की बहनों से कहीं अच्छा पाया है, ऐसी अवस्था मे मिस मेयों और साउथगेट जैसी शरारत फैलाने वाली प्रचारिकाओं की वे दया की पात्र नहीं है।

नि सन्देह हिन्दू रीति रिवाज ऐसे नहीं हैं जो हवा मे उडाये जा सकें। वे सर्व साधारण के समझने योग्य हैं और अनुपम तर्क पर आश्रित हैं।

'आलोचना स्वतन्त्र होती है परन्तु सचाइया पवित्र होती है।' हिन्दू धम को स्त्रियों के प्रति अभिशाप रूप मे जाहिर करना गैर जिम्मेदारी की पराकाष्ठा है। स्त्रियो के प्रति हिन्दू धर्म का दृष्टि कोण हजारों वर्षों की परम्पराओ पर आश्रित है और हिन्दू लोग उजड्ड और पशु होने के बजाय स्वयं बुद्धिमान और सभ्य हैं

श्रीमती सेसिल चेस्टर टन इस समय (Cecil chesterton) 'इधर उधर बहती हुई स्त्री' शीर्षक एक मनोरंजक लेख-माला लिख रहीं हैं। यह उन लडकियों की अत्यन्त कारुणिक कहानियों का समह है जो हिन्दू समाज मे पाशविक अत्याचारों का शिकार बनाई दिखलाई जाती है।

मैक्समूलर ने जब हिन्दुओं को 'दार्शनिकों की जाति' कहा था तो उसने बहुत बड़ी गलती नहीं की थी। हिन्दुओं की सामाजिक प्रणाली

शताब्दियों के विचार और अनुभव का भव्य परिणाम है।

समष्टि रूप से यह पूर्ण है। हिन्दुओं की प्रत्येक प्रथा अकाट्य नियमों से शासित है और ये नियम प्रकृति से प्राप्त किए गए हैं। हिन्दुओं के सर्व्व श्रेष्ठ मस्तिष्कों ने सामाजिक समस्याओं की ग्रन्थियों को कई युग व्यतीत हुए उस समय ही सुलझा दिया था जब पश्चिम के लोग जो आज पूर्व्व के ज्ञान विज्ञान के पुनर्निर्माण की कल्पना करते हैं घोर अन्धकार, अज्ञान और अन्ध विश्वासों में डूबे हुए थे।

हिन्दू घरानों में विवाह बहुत कम असफल रहते हैं। मैं यह बात दावे के साथ कहती हूँ क्यों कि मै जानती हूँ, मैं ठीक हूं। मैं असंख्य हिन्दू महिलाओं के साथ आजादी के साथ रही हूं। और मैंने उन्हें प्रसन्न और अपनी दशा में संतुष्ट पाया है। यह भी तब जब कि उनमे से बहुतों की बहुत छोटी उम्रों में शादी हुई थी जिस प्रथा के विरुद्ध समालोचक ज़मीन आस्मान एक कर देते हैं।

हिन्दू समाज मे पहले विवाह और बाद को प्रेम होता है। विवाह सूत्र में बंधकर लड़के और लड़की निरन्तर बढ़ती हुई मात्रा मे एक दूसरे की ओर आकर्षित होते रहते हैं और धीरे२ वे अनश्वर पारस्परिक प्रणय में बन्ध जाते हैं। विवाह के बाद कुछ समय तक एक दूसरे से बोलने भी नही दिए जाते हैं (इस प्रथा का तेजी के साथ अन्त हो रहा है)

इस प्रकार के प्रतिबंध दोनों को एक दूसरे के अधिक निकट ही लाते हैं। कभी२ होने वाली पारिवारिक कटुता के होते हुए भी समष्टि रूप से उनका जीवन सुखमय होता है और वे सुख दुख में प्रेम और प्रीति के साथ एक दूसरे के प्रति सच्चे रहते है। यदि यह प्रेम नहीं है तो मै जानना चाहूँगी वह क्या है ?

हिन्दुओं में विवाह अटूट और पवित्र सम्बन्ध होता है। अग्नि के सामने वर और वधू प्रतिज्ञाएँ करते हैं और जीवन पर्यन्त अग्नि उनका साक्षी रहता है। यह विषय बड़ा गम्भीर होता है। यदि विवाह आवाछनीय होते हैं तब भी वैवाहिक पवित्रता उन विविध बुराइयों से जो मेरे अपने देश के वैवाहिक जीवन में पाई जाती है विनष्ट नहीं होती।

सचमुच हिन्दुओं की सामाजिक प्रथा स्त्रियों में अत्यन्त प्रिय गुणों के विकास और रक्षण के लिये हितकर है। हिन्दूदेवी की आकर्षक लज्जा, निष्कलङ्क सतीत्व, वीरोचित आत्म-समर्पण और दया और सहानुभूति देखते ही बनती है। यह प्रथा उसमे ऊँचे नैतिक गुण और विशेषताएँ कूट २ कर भरती है। यह प्रथा उसमें स्वाभाविक सुकुमारता और विशुद्ध प्रेम का सचार करती है।

औसत हिन्दू देवी प्राय धर्म परायण, प्रेममयी, गंभीर, विनम्र और लज्जाशील होती हैं। वह मनुष्य की सगिनी होती है, प्रति स्पर्द्धनी या अमित्र नही होती। उसका पति उसका भली भाति पालन पोषण करता है और वह उसके लिये तन मन धन सब कुछ न्यौछावर करने को उद्यत रहती है।

विधवाओं के सम्बन्ध में ही केवल हिन्दू प्रणाली कठोर देख पड़ती है।

समय के प्रवाह ने हिन्दू समाज प्रणाली में आवाछनीय परिवर्तन उपस्थित कर दिया है। इसका मुख्य कारण आधार भूत सिद्धान्तों के न समझने की भूल ही है।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त (स्वर्ण जयन्ती महोत्सव)

आर्य वीर सेवादल सम्मेलन के सभापति श्री ला० देशबन्धु जी एम०एल०ए० का

अभिभाषण

•परम पिता परमात्मा का धन्यवाद है, उसने हम ऋषि सन्तानो को संसार में सर्व श्रेष्ठ मर्यादाओं, आदर्शों और उत्तराधिकार का अधिकारी बनाया, जिनको लेकर हम अब भी अपनी असहायावस्था में गर्व अनुभव कर सकते हैं। उन्हीं आदर्शों और परम्पराओं में से हमारा 'सेवा' का चमकता हुआ आदेश है। हमारे पूर्वजों ऋषियों और महर्षियों ने, सुधारकों और धर्म गुरुओं ने, राजाओं और साधारण स्त्री पुरुषों ने, राजकुमारों और राजकुमारियों ने अपने उदाहरण से सेवा के इस आदर्श को गौरवान्वित किया है। हमारे सेवा के आदर्श का मुख्य स्वर परोपकार भावना से, फल की कामना के बिना पीड़ित मानव समाज की बौद्धिक, आर्थिक आध्यात्मिक और शारीरिक सेवा करना रहा है और सेवा-धर्म के उचित पालन के लिए त्याग, बलिदान और आत्म समर्पण मुख्यतम योग्यतायें रहीं हैं। हमारी सेवा का क्षेत्र विशाल मानव समाज रहा है और देश या समाज विशेष तक सीमित नहीं रहा है। हमारी 'सेवा' का अर्थ आत्म विकाश एवं जीवन की सर्वाङ्गीण पूर्णता की सिद्धि करना रहा है। हमारा आदर्श धर्म्म भावनाओं से ओत प्रोत धर्म की दृढ़ चट्टान पर केन्द्रित है। सचमुच धर्म के बिना हमारे यहां समाज सेवा की बात सोची भी नहीं जा सकती है।

बुद्ध और महावीर की अहिंसा में, महात्मा ईसा की पर दुःख कातरता में, शङ्कर और दयानन्द के बलिदान में तथा अन्यान्य असंख्य ज्ञात और अज्ञात महान आत्माओं के त्याग और उत्सर्ग में सेवा के इस महान आदर्श को हम प्रतिष्ठित, गौरवान्वित और प्रतिध्वनित होते देखते रहे हैं और श्रद्धा और प्रेम से अनायास ही हमारा मस्तक उनके चरणों में झुकता रहा है। दुर्भाग्य से हम अपनी इन श्रेष्ठ मर्यादाओं और आदर्शों को भूल गये थे। हमें पता नहीं था हम किस बहुमूल्य उत्तराधिकार के अधिकारी हैं। परमात्मा को किन शब्दों में धन्यवाद दें जिस की असीम कृपा से देश में दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ और उस महान आत्मा ने हमें हमारे उत्तराधिकार से परिचित करा के उसकी रक्षा के लिए आर्य समाज को जन्म दिया और सेवा के गौरवमय आदर्श को हमारे सम्मुख उपस्थित किया।

आर्य्य समाज ने सेवा के इस पुनीत आदर्श को पुनः प्रतिष्ठित और जीवित किया है। आर्य समाज की उन्नति में जहां महर्षि के त्याग, तप और बलिदान तथा आर्य समाज के महान सिद्धान्तों का योग रहा है वहां आर्य समाज के सदस्यों के निस्वार्थ-सेवा के पुनीत व्रत ने भी कम योग नहीं दिया है। दुर्भाग्य से सेवा का यह आदर्श हम से दूर होता जा रहा है और निष्काम भाव का स्थान स्वार्थ भाव, मान प्रतिष्ठा और पद लोलुपता के भाव ले रहे हैं। आत्म समर्पण का स्थान आत्म-संवर्द्धन ले रहा है।

श्रद्धा पर कुतर्क भावना विजयी हो रही है। इसी कारण हमारे सामाजिक जीवन में विप्लव मचा हुआ है।

इसका दुष्परिणाम यह हुआ है कि समाज-सेवाके क्षेत्र से हम दूर होते जा रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि असंख्य आर्य्यवीर निष्काम सेवा के पुनीत व्रत से दीक्षित होकर मैदान में आएं और समाज सेवा तथा आर्य्य-समाज के कार्य्य को पुन उच्च पद पर आसीन करें और उसे अधिक से अधिक जितना सम्भव हो गौरवान्वित, विस्तृत और प्रकाशित करें। आर्यवीरों को हताश नही होना चाहिए। आशा के भावों और पवित्र उद्योग से उन्हें कार्य्य में जुट जाना चाहिए। उनके लिए सेवा का विशाल क्षेत्र मौजूद है। सफलता यश, और कीर्ति स्वयं उनकी ओर दौड़ी चली आवगी। निश्चय ही हमें अब सेवा को नया रूप और नयी प्रेरणा देनी है और इसके लिए संगठित प्रयत्न की ज़रूरत है।

आर्य्य समाज के प्रत्येक सदस्य पर हर प्रकार की सेवा का उत्तर-दायित्व है और समाज का प्रत्येक सदस्य आर्य्यवीर है। परन्तु यहां प्रश्न उपस्थित होता है कि जब आर्य्य समाज के सुदृढ़ सगठन के भीतर रहते हुए आर्य्यवीर सेवा कर सकता है तो फिर आर्य्यवीर सेवा दलों के पृथक सगठन की क्या आवश्यकता है? हमारा यह निवेदन है कि सेवा जैसे गहन और कठिन कार्य को सगठित रूप में करने के लिए आर्यवीर सेवा दलो की स्थापना नितान्त आवश्यक है। आज आर्य्य समाज में प्रचारकों की कमी अनुभव की जा रही है जो भी हैं वे निर्वाह मात्र लेकर प्रचार करने वाले प्रचारक तथा इने गिने सन्यासी महानुभाव हैं। हम मानते हैं इनकी आवश्यकता रहेगी परन्तु दल प्रचारकों के अभाव को बहुत कुछ दूर करके समाज को सुपरीचित और सुनियन्त्रित सेवक प्रदान कर सकते हैं। आर्य्य समाज की सेवा के प्रत्येक क्षेत्र में भले ही वह प्रबन्ध सम्बन्धी हो या प्रचार सम्बन्धी हो, साहित्यिक हो या जनोपकारक हो, आर्य्य वीर बहुत उपयोगी कार्य्यकर्त्ता सिद्ध हो सकते हैं। कौन जानता है इन्हीं वीरों में से समाज को लेखराम, गुरुदत्त और श्रद्धानन्द जैसे सेवक प्राप्त हो जाय।

सन् १९२७ में एर्यन कांग्रेस देहली के अवसर पर आर्य्यवीर दलों के आन्दोलन का सूत्रपात हुआ था। उस समय ये दल आर्य्य समाज के अधिकारों की रक्षा के तात्कालिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए अस्तित्व में आये थे और जनोपकारक (Hum imitarian) कार्य्य तथा समाज सेवा के आदर्शो को प्रचारित करने के लिए इस दल का एक सेवा विभाग पृथक नियत कर दिया गया था। हम लोगों ने और हमारे आर्य्य समाजों ने इन दलों के संगठन के प्रति अक्षम्य उदासीनता दिखलाई है। इसका कारण हमारी लापरवाही हो सकती है या इन दलों की आवश्यकता और उपादेयता की अस्पष्टता हो सकता है परन्तु जहां तक मैंने विचार किया है एक मुख्य कारण किसी ऐसे कार्य्यक्रम का अभाव भी है जो आर्य्य वीरो को सेवा कार्य्य म सलग्न रख सकता। अतः इस बात की परम आवश्यकता है कि कोई ऐसा कार्य्यक्रम बन जाय जो उनके सामने स्थिर कार्य रख सके। सौभाग्य से कहो या दुर्भाग्य से आर्य्य समाज अधिकारों के रक्षण

की परीक्षा में अभी तक नहीं उतरा है। यदि कही उतर जाता तो निश्चय ही इस प्रकार के सुसगठित दलो की आवश्यकता के प्रति उसकी आखे खुल जाती। सेवा दल जहा २ ४ देख और सुन पड़ते हैं वे मेलो, कान्फ्रेंसो और सम्मेलनो इत्यादि के प्रबन्ध मे अपने कर्त्तव्य की इति श्री समझ बैठते है और ट्रेनिग के अभाव मे उनकी सेवा का कोई महत्व नहीं होता है। आर्य्य समाजो को इन दलों के संगठन के प्रति उदासीनता और अकर्मण्यता नही दिखानी चाहिए। उन्हे अपना सुदृढ अंग बनाना चाहिए और अपने अधीनस्थ सगठनो इत्यादि की भांति उनकी देख रेख और सहायता करते रहना चाहिए। जहा तक संभव हो आर्य्य वीरो को सेवा म लगाना चाहिए। सेवा कार्य के लिये उन्हे हर प्रकार की सहायता और सुविधाएं प्रदान करनी चाहिये। सार्वदेशिक तथा प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओ को भी इन दलों के सगठन मे पूरा सहयोग तथा सहायता प्रदान करनी चाहिए।

आर्य्य वीरों के लिए उत्तम से उत्तम ट्रेनिंग की व्यवस्था होनी चाहिए। बाय स्काउटिंग, सेवा-समिति की नाई जनोपकारक सेवा के लिए उन्हे तैरन, निशाना मारने, राइफल चलान और फ़स्ट एड इत्यादि के शिक्षण का प्रबन्ध होना चाहिए। फ़ौजी शिक्षा की भी यथा संभव व्यवस्था होनी चाहिए। सदाचार, निष्काम भाव से चुपचाप विनम्र भाव मे सेवा करना, अनुशासन इत्यादि के भाव उनमे अंकित करने का यत्न होना चाहिए। जनोपकारक कार्य्यों के लिए आर्य्य वीरो के ट्रेनिग कैम्प के खुलने की विशेष आवश्यकता है। हम अविलम्ब इस आवश्कता की पूर्ति करनी चाहिये।

आज भारत वर्ष को भारत वर्ष के ग्रामो को जगाने की नितान्त आवश्यकता है। प्रसन्नता है देश हितैषियो का ध्यान शहरों से हट कर ग्रामों पर केन्द्रित होगया है। सुपरोषित संस्थाए और कार्य्यकर्त्ता ग्रामोद्धार के सपादन के लिए सेवा के व्रत से दीक्षित होकर ग्रामो मे बैठ गए है। देश की विविध गवर्नमैन्ट उनकी पीठ पर हैं। ग्रामो मे एक प्रकार की मूकक्रान्ति पैदा होने वाली है। आर्य्य समाज को इस क्रान्ति का बड़ी सावधानता के साथ निरीक्षण करते रहना चाहिए। देखना चाहिए कि क्रान्ति की इस लहर मे धार्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण से हमारे ग्राम, अवाञ्छनीय दिशा मे न बह जांय। वहा हमारे गंभीर सिद्धान्तो की व्याख्या और हमारा शुष्कतर्कवाद कार्य्य न कर सकेगा। वहा तो सीधी साधी उनका सेवा से, उनके दुखा, कष्टों और मुसीबतो के निवारण से उनमें उनकी इच्छाओ और जीवनो मे ओत प्रोत होने से उनके आर्थिक सामाजिक राजनैतिक और शिक्षा सम्बन्धी उत्थान कार्य्य करने से ही काम चल सकेगा। बहुत से कार्य्य है जो उनके हित के लिए किये जा सकते हैं। उदाहरणार्थ ग्रामो की सफ़ाई उनमे व्याप्त कुरीतियो का निवारण, निरक्षरता का नाश औषधि वितरण, राजनैतिक अत्याचारो का निवारण, वयस्को की शिक्षा, अनेकानेक कार्य्य है जिन मे बाहरी आर्थिक वा अन्य प्रकार की सहायता की जरूरत नहीं और जिनके सम्पादन के लिए किसी प्रकार की योजना की जरूरत नहीं। जीवन के साधारण व्यवहार द्वारा ही इस प्रकार हम बहुत कुछ सेवा कर सकते है।

आर्य्य समाज का संगठन

श्री० पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय

श्री प्रधान जी सार्वदेशिक सभा ने एक महत्वपूर्ण सरक्यूलर प्रान्तीय सभाओं तथा आर्य्यसमाजों के नाम जारी किया है। इसमें आर्य्य समाज के संगठन की आवश्यकता बताई गई है और कांग्रेस तथा आर्य्य-समाज के संगठन की तुलना करके यह दिखलाया गया है कि जब तक आर्य्य समाज की शक्ति केन्द्रित न हो उस समय तक आर्य्य समाज के काम को आगे बढ़ाया नहीं जा सकता। वस्तुत यदि आप बड़े बड़े समाजों में भी जाइये और प्रधान या मन्त्री को छोड़ कर अन्य सदस्यों से पूछिये कि प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा क्या है या सार्वदेशिक सभा क्या है तो वे उसके विषय में कुछ भी नहीं जानते। वे तो केवल इतना ही समझते हैं कि आर्य्यसमाज एक चीज़ है जिसके वे सभासद हैं। दान देते समय भी आज तक मैंने नहीं देखा कि किसी ने प्रतिनिधि सभा या सार्वदेशिक सभा को दान दिया हो। क्यों? इसलिए कि हम को इनका पता भी नहीं। आर्य्यसमाज के मन्त्री तथा प्रधानों को वर्ष के अन्त में केवल प्रतिनिधि सभा की याद आ जाती है। वह भी निर्वाचन के समय और विशेष कर उन सज्जनों की बदौलत जो प्रान्तीय निर्वाचन म भाग लेने के लिये उत्सुक हों या विशेष आन्दोलन में भाग लेना चाहें। प्रतिनिधि सभा से कभी कभी उपदेशक आकर मन्त्री या प्रधान को प्रतिनिधि सभा के अस्तित्व का कुछ पता दे जाते हैं। सार्वदेशिक पर तो यह बात भी लागू नहीं होती। कांग्रेस के राष्ट्रपति को कांग्रेस के बाहर के लोग भी जानते हैं। भारतवर्ष के दस लाख आर्य्यों में शायद एक हज़ार भी ऐसे न होंगे जिन्होंने सार्वदेशिक के प्रधान का नाम सुना हो। उनको तो यह भी नहीं मालूम कि इस प्रकार का व्यक्ति भी कोई हुआ करता है। समाज और समाज के मन्दिर या सस्थायें तो प्रत्यक्ष पदार्थ हैं जिनको आर्य्य भाई बहिन रोज़ देखते हैं। प्रतिनिधि सभा या सार्वदेशिक सभा तो अदृष्ट अमूर्त और परोक्ष चीज़ें हैं। परोक्षप्रिय तो विरले ही होते हैं और देव कहलाते हैं। प्रत्यक्ष प्रिय हरएक हो सकता है। इसीलिये संगठन नहीं हो पाता। बहुत से आर्य्य, आर्य्य सिद्धान्तों की आवश्यकता है समझते हैं परन्तु आर्य्य समाज की नहीं। वे घर पर संध्या और हवन कर सकते हैं। सत्यार्थ प्रकाश

परमात्मा हमें अपने प्राचीन सेवा धर्म को पुनर्जीवित प्रतिष्ठित और गौरवान्वित करने और समाज में व्याप्त हर प्रकार की अशान्ति और विप्लव को दूर करके सुख शान्ति समृद्धि का प्रसार करने में समर्थ बनाए, इस कामना और शुभेच्छा के साथ अपना भाषण समाप्त करता हू और आपके प्रेम और वात्सल्य के लिए एक बार पुनः धन्यवाद देता हूं।

पढ़ सकते हैं या उपनिषद् की कथा सुन सकते हैं। फिर आर्य्य समाज का सभासद् होने की क्या आवश्यकता। इसी प्रकार बहुत से समाज प्रचार कर लेते हैं, उत्सव करा देते हैं, यज्ञ आदि का अनुष्ठान कर लेते हैं उनको प्रतिनिधि सभा या सार्वदेशिक की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। उनको यह नहीं पता कि आर्य्य प्रतिनिधि सभा न हो तो आर्य्यसमाज कभी ऐसे झगड़े में फंस सकता है जिससे छुटकारा कठिन हो जायगा। सार्वदेशिक का भी यही हाल है। आर्य्यसमाजें क्या जानती हैं कि सार्वदेशिक सभा से भी उनको कुछ सहायता मिल सकती है या ऐसा अवसर आ सकता है जब सार्वदेशिक के बिना काम न चले। जब प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं का निर्वाचन होता है तो कई सौ सदस्य होते हैं। सार्वदेशिक का निर्वाचन थोड़े ही सदस्य कर लेते हैं। इसलिये हल्ला गुल्ला नहीं होता। इसलिये किसी को ज्ञान भी नहीं पड़ता। यह अवस्था है बड़ी शोचनीय। जो हृदय का अवयवों से सम्बन्ध है वही सार्वदेशिक का समाजों से होना चाहिये। हृदय धड़क धड़क कर सब अंशों को सचेत करता रहता है। इसी प्रकार सार्वदेशिक को भी कोई ऐसा काम करना पड़ेगा कि समाजें उसको मान जायं। इसके लिये मेरी सम्मति में सबसे पहले तो उच्च अधिकारियों का दौरा होना चाहिये। यह दौरा पहले से निश्चित कर लिया जाय और समारोह के साथ होना चाहिये कि आर्य्य समाज के अमुक मुख्य नेता का शुभागमन हो रहा है। हम में बड़ा दोष यह है कि हम अपने नेताओं का मान नहीं करते इसलिये बाहर वाले भी उनको मान की दृष्टि से नहीं देखते। हम समझते हैं कि प्रधान जी तो हम में से ही एक हैं। इन में क्या विशेषता है? उनको समझना चाहिये कि इतनी विशेषता क्या कम है कि वह हमारी उच्च सभा के प्रधान हैं। कांग्रेस को देखिये। वह भी तो सार्वजनिक संस्था ही है। परन्तु जहां कांग्रेस का प्रधान जाता है राष्ट्रपति, राष्ट्रपति की ध्वनि गूंजने लगती है। शत्रु भी कान बन्द नहीं कर सकते। इससे कांग्रेस का मान बढ़ता है। हमारी सभा के सभापति का भी इसी प्रकार मान होना चाहिये। ऐसा करने में हम अपने किसी व्यक्ति का मान नहीं कर रहे किन्तु अपनी सभा का मानकर रहे हैं। ऐसा करने में जो कुछ काम भी होगा वह व्यर्थ नहीं जायगा। उससे आर्य्य समाज का दूसरों पर अधिक प्रभाव पड़ेगा।

———

हैदराबाद के हिन्दुओं की हीनावस्था

लेखक—रघुनाथ प्रसाद परसाई

हैदराबाद हिन्दुस्तान की सब से बडी रियासत है, इसके शासक मुसलमान हैं, राजनैतिक दृष्टि से वहा प्रजातंत्र के सिद्धान्तो के विरुद्ध प्रजा की भाषा व सस्कृति की रक्षा की अपेक्षा इसलामी सस्कृति व भाषा हैदराबाद के हिन्दुओं पर लादी जा रही है और राज की नोकरियों में भी ८५ फी सदी मुसलमानों की तादाद है। मुसल्मानों की मनुष्य सख्या कठिनाई स १५ फी सदी होगी और हिन्दुओं की तादाद ८५ फी सैकडा होते हुए भी उन्हे १५ फी सैकडा जगह दीजाती है। जहा राजनैतिक क्षेत्र मे पक्षपात होता है वहा यदि धार्मिक पक्षपात भी हो तो कोई आश्चय नही। खेद के साथ लिखना पडता है कि एक ओर दुनिया के सम्मुख निज़ाम महोदय व उनकी सरकार यह ऐलान करती है कि उनकी रियासत मे किसी की धामिक स्वतन्त्रता पर किसी तरह का आघात नही किया जाता व पक्षपात छोड सब को समानता की दृष्टि से सरकार देखती है, और दूसरी ओर हिन्दुओ पर नित्य अत्याचार होते हैं तथा उनकी धामिक स्वतन्त्रता पर आघात होते रहते हैं। यही नहीं पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रयत्नों से राज कर्मचारी इस्लाम के प्रचार को उत्तेजना देते है और हिन्दुओं की जागृति के मार्ग मे रुकावट पहुँचाते हैं। जहा मुसलमान खुले आम अपना प्रचार करते हैं वहा हिन्दुओं को पग २ पर आज्ञा लेनी पडती है, जो कभी मिलती है और कभी नहीं। आर्यसमाजियों का तो पूछना ही क्या है? न उनको जलसे करने दिये जाते हैं और न उन्हे नगरकीर्तन ही निकालने दिये जाते है। हलीखेडा आदि अनेकों आर्य समाजियों के वार्षिक उत्सव वर्षों से राज्याज्ञा प्राप्त न होने के कारण बन्द है। हैदराबाद मे ऋषि दयानन्द का उत्सव तक भी बिना आज्ञा न मनाने दिया गया और सब तैयारिया बन्द करा दी गई। अखिल भारतीय आर्यन कान्फ्रेन्स की इजाजत न मिलने पर निजाम स्टेट मे आर्य सम्मेलन करने के लिये आर्य-समाजियो ने दरख्वास्त दी, वह भी अस्वीकृत कर दी गई।

जैसा ऊपर कहा गया है कि एक तो उत्सव आदि के लिए इजाजत नही दी जाती और यदि कही आज्ञा मिल गई तो नोटिस आदि नहीं लगाने दिये जाते। एक बार ऐसे ही नोटिस लगा देने पर दुबलगुर्दी के तुरनदप्पा को मुन्तजम ने जूतो से पिटवाया। वैसे कानून यह है कि यदि चहारदीवारी के भीतर कोई जलसा हो तो उसके लिए कोई रोक न की जाय पर पुलिस ऐसे जलसे भी नही होने देती। उदगीर, हिंगोली, मुरम कल्याणी आदि स्थानो मे ऐसे जलसे राक जा चुके हैं। कभी यदि जलसे करने की आज्ञा मिल जाती है तो हथियार न रखने, यूनिफोर्म ड्रेस न पहनने आदि की शर्तें लगा दी जाती हैं और प्रोग्राम की

कापिया पुलिस, तहसील व डिवीजन मे भेजना लाजिमी होता है। मुहर्रम के माह मे हिन्दुओ के विवाह बिना इजाजत नहीं हो सकते। यदि राम नवमी आदि को ऐसा त्यौहार आ जाए तो हिंदुओं को बिना बाजे बजाये अपने घर मे चुपचाप पूजा करना लाजिमी होता है। हुमनाबाद के नाजिम ने एक बार किसी के मुहरम मे शादी कर लेने पर मानिक नगर के सैक्रटरी को कानूनन कार्यवाही करन के लिए लिखा था। आर्य समाज मालेगाव को एक बार राज्य की ओर से लिखा गया कि मोहर्रम के ११ दिन कादाजिग्रारत होते है, इसलिए कोई व्याख्यान आदि करने के लिए सरकार की इजाजत नहीं है। रामचन्द्र वल्द आनन्द आर्य राजेश्वर वाले को हिदायत दी गई कि तुम्हारे घर वसी लाल हलीखेडे से दीवाली पर आए है, वे व्याख्यान नहीं दे सकते है यदि व्याख्यान देंगे तो कानूनी कार्य वाही की जावेगी। एक साल हो गया जब रघुनाथप्रसाद नागरसौजा को लिखा गया था कि हवन कुड बाकायदा कायम नही कर सक्ते हगरा में दो लडको क यज्ञोपवात किये जाने पर नोटिस दिये गये थे कि कौनसा उत्सव मनाया गया और वे दो लडक कौन थे। नरसिंग रेडी मौजा छागल को तहसीलदार ने लिखा कि तुमने बलदेव नाम का आर्यसमाजी बुलाया और हिंदू मुसलमानों मे झगडा फैला रहे हो इसलिये तुम्हे पुलिस की रिपोर्ट पर मुअत्तल किया जाता है। कल्याणी मे कोई २० वर्ष से एक स्कूल चलता था पर उसे आर्यों का स्कूल कहकर पुलिस द्वारा बन्द करा दिया गया। प्रतिनिधि सभा हैदराबाद की ओर से "वैदिक आदर्श" एक पत्र निकलता था उसे बन्द कर दिया और इजाजत मागने पर दूसरा पत्र निकालने की आज्ञा नही दी गई इस लिये कुछ उत्साही सज्जनों ने सोलापुर से "वैदिक सदेश' पत्र निकाला है। आर्यसमाजियो के साथ यही तक बात खतम नहीं होती है उन पर निगरानी रक्खी जाती है, जैसे कि वे कोई जरायम पेशा हो। सातेगाव के नाकेदार को सबइन्सपैक्टर ने लिखा कि सुना है कि सातेगाव मे आर्यसमाजी आये है अतएव लिखो कि वे कहा से आये हैं क्या आये है और कितने आये है, कहा ठहरे है, और किसने उन्हें बुलाया है, उनका लीडर कौन है उनके कार्यों की जुम्मेदारी आप पर है। बोरी के इन्सपक्टर को उसमानाबाद के सबइन्सपेक्टर न लिखा कि आर्यो की सख्या, उनकी उमर, उनका पेशा लिखो और सुना है कि होली के समय पर लातूर मे बहुत से आर्य आने वाले है सो उनकी खूब खबर ली जावे और खबर लेते समय होशियारी रक्खी जावे। साको । के विषय मे एक कर्मचारी ने लिखा है कि साकात का भाग आर्यावत बन गया है वहा सरकारी कर्मचारी को कोई नही पूछता।

यदि इधर सरकार ध्यान नही देगी और आर्यों का दमन नही करेगी तो सरकार व उसके नौकरों की कोई कदर नही रहेगी। केवल आर्य-समाजी ही नही उनसे सबन्ध रखने वालों पर भी निगाह रक्खी जाती है और उन्हे तग किया जाता है। आर्यसमाजी व उनके साथी राज-कर्मचारियो का तबादला कर व तरक्की न देकर तग किया जाता है। रघोतम नामक एक सज्जन की उनके महकमे के आलाह अफसर ने सिफारिश की कि उसे तरक्की दी जाय और मुस्तकिल किया जाय। ऊपर से हुक्म निकला कि उसे स्थायी रूप से रक्खा ही न जाय।

एक ओर हिन्दुओ के साथ राजकीय ओर से यह व्यवहार होता है दूसरी ओर मुसल्मानों को सहूलियते दो जाती हैं। वे मन माना अपना प्रचार कर सकते हैं। उनके नोटिस हर जगह यहा तक कि अदालत पर भी लटके रहते हैं। सिद्दक दीन-

दार उर्फ चदवैश्वर विना इजाजत आम जलसे करता रहता है। मेलादुननबी के जलसे हर जगह बिना इजाजत होते रहते हैं। मामूली से मामूली मौजे में मुसलमानों का अंजुमन मौजूद है। न उनको कोई दरखास्त भेजने की जरूरत और न इजाजत की। उमर मजहबी एक मुसलमानी धर्म के प्रचार के लिये अलग महकमा है। इस महकमे का हिन्दुओं के मन्दिर आदि से भी सम्बन्ध है? पर इसका मुख्य काम इस्लाम का प्रचार ही है क्योंकि इससे अंजुमन को मदद मिलती है और वह इस्लाम के प्रचार के लिये हिदायतें भी देता रहता है। नाजिर को आज्ञा उसके द्वारा ही मिलती रहती है। इसकी ही आज्ञा से जब अछूत बालक मुसल्मान हो जाते हैं तो बिना फीस पढ़ाये जाते है। मोहम्मद हनीफ साहिब व सैयद मोहम्मद कासिम साहिब को खास तौर से इस महकमे में मुकर्रिर किया है जिससे इस्लाम का प्रचार हो। यह महकमा एक ऐसी तजवीज में है जिससे एक ऐसी पाठशाला व बस्तीगृह (colony) बनाई जाय जहा इस्लाम व उनकी सस्कृति की शिक्षा दी जाय।

इस प्रकार के पक्षपात से मुसलमानों का हौसला बढ़ना स्वाभाविक है। वे हैदराबाद को अपना ही राज्य समझते हैं और अपने आपको शासक कौम का समझकर हिन्दुओं व आर्यसमाजियों पर मनमाना अत्याचार करते हैं। और राजकर्मचारी जो अधिकाश मुसलमान हैं उन्हें सब करने देते हैं। और कहीं-कहीं तो वे स्वय भी खुलेआम अत्याचार करनेमें मजहबी दीवाने बन कर शरीक रहते हैं। कल्याणी के मंत्री आर्यसमाज को मुंतजिम स्वयं मारता हुआ सड़क पर लेगया। हुमनाबाद और परली में पुलिस व मुसलमानों द्वारा आर्यसमाजियों के यज्ञोपवीत तोड़ डाले गये। निलगे मे हवनकुण्ड ठुकरा दिया गया। अधरी, हलीखेड़ी मुरम, उदगीर इत्यादि स्थानों में आर्यों पर एक नहीं, सैकड़ों मुकदमे चलाये गये ताकि उनका पैसा व समय बरबाद हो, वे सदा सत्ता द्वारा तंग किये जाते रहे हैं। गुलबर्गे के साप्ताहिक अधिवेशन पर पत्थर फेंके गये और हालीखेड़े मे हजारों मुसलमानों ने लाठी तलवार बन्दूकें लेकर आर्यों व हिन्दुओं के विरुद्ध जलूस निकाला, इसी प्रकार उदगीर में अनेकों बार पत्थर फेंके। निलगा मे अनेकों बार जलूस पर आक्रमण हुए, मानिक नगर मे श्री० श्याम लाल जी व प० नरदेव पर छुरे व डडों से आक्रमण किया जिससे गहरी चोट आई और उल्टे उनपर ही मुकदमे चले। ओरादशाहजाने मैं प्रचार के समय ५०० मुसलमानों ने आकर बन्दूक के फायर किये, कल्याणी में गणपत शास्त्री व प० उदयभानु के मकानों पर आक्रमण किये, और वीरभद्र को पीटकर उनका रिवालवर मुसलमानों ने छीन लिया, चिटगोपा व कमलाकोर के आर्यसमाज पर मुसलमानों ने हमला किया और आर्यसमाजियों से मार पीट की। युवक वेदप्रकाश का कत्ल तो अभी की ताजी घटना है।

एक नहीं बल्कि ऐसे अनेकों उदाहरण हैं। उपरोक्त बातें तो सक्षेप मे इसलिये लिखी गई है कि पाठकों को हैदराबाद के न्याय व धार्मिक स्वतत्रता का कुछ ज्ञान हो जाय, आशा है कि इतने से हिन्दुओं व आर्यसमाजियो पर होने वाले अत्याचारों और अन्यायों का बोध पाठकों को हो जावेगा।

आशा है हिन्दूमात्र हैदराबाद के साथ सहानुभूति दिखा कर उनका साथ देंगे और इन अत्याचार व अन्यायों को जड़मूल से नष्ट करने की कोशिश करेंगे।

—❀—

॥ विद्या धर्मेण शोभते ॥ — धर्म से ही विद्या की शोभा होती है

आर्य कुमार जगत्

[भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की प्रार्थना व अनुरोध से 'सार्वदेशिक' में ये पृष्ठ 'आर्य कुमार जगत' के नाम से प्रतिमास रहेंगे। इन पृष्ठों में आर्य कुमारों व कुमार सभाओं के समाचार तथा उनकी प्रगति पर लेख आदि रहा करेंगे। आशा है आर्य कुमार इनसे लाभ उठावेंगे। —सम्पादक सार्वदेशिक]

धन्यवाद

श्रीमती सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने मासिक पत्र 'सार्वदेशिक' में 'आर्य कुमार जगत्' को हमारी प्रार्थना पर स्थान देकर जो कृपा की है उसके लिये हम सभा को धन्यवाद देते हैं और आशा करते हैं कि ये पृष्ठ आर्य कुमारों व कुमार सभाओं में संगठन व जागृति उत्पन्न करने में लाभदायक सिद्ध होंगे।

मंत्री भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्।

आर्य कुमारों व आर्य कुमार सभाओं का कर्त्तव्य

आर्य कुमारों से हमारा विशेष अनुरोध है कि वे 'सार्वदेशिक' के ग्राहक बन जावें जिससे उनको तमाम कुमार जगत के समाचार और परिषद् की सूचनाएं बराबर मिलती रहें। आर्य कुमार सभाओं को तो तुरन्त एक साल का चन्दा भेज कर 'सार्वदेशिक' अपने नाम जारी करा लेना चाहिए।

आर्यकुमार सभाओं को अपने समाचार इन पृष्ठों में छपने के लिए मंत्री, भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद के पास हर महीने की २० तारीख तक भेज देने चाहिएं।

मंत्री—भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद्,
दीवान हाल, दिल्ली।

विशेष भारतवर्षीय आर्यकुमार सम्मेलन, मेरठ

संयुक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर मेरठ में शनिवार तारीख २५ दिसंबर १९३७ को मध्याह्न के ३॥ बजे से पंडित बुद्धदेव जी वेदालंकार के सभापतित्व में मुख्य पंडाल में एक विशेष आर्यकुमार सम्मेलन हुआ।

स्वागताध्यक्ष प० अलगूराय जी शास्त्री M L A के भाषण के पश्चात् सभापति महोदय ने अपना मौखिक भाषण पढा जिसमें उन्होंने आजकल की देश की सामाजिक दशा तथा आर्य कुमारों के कर्त्तव्य पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् निम्न दो प्रस्ताव पास हुए जिन पर पंडित रामचंद्र जी देहलवी, डाक्टर युद्धवीरसिंह जी, पंडित सूर्यदेव जी शास्त्री, पंडित शिवदयालु जी तथा बाबा इन्द्रमणि जी ने अपने विचार प्रगट किए।

१—इस सम्मेलन की सम्मति में मानव जाति के संगठन के लिए जो भावी कार्यक्रम रखे जाते

हैं उनमे इस समय साम्यवाद (Socialism) का मुख्य सिद्धान्त ही अग्रगण्य है। परन्तु वैदिक धर्म द्वारा उपस्थित किया गया वर्णाश्रम व्यवस्था का कार्यक्रम उसकी अपेक्षा भी अधिक लोक हितकारी है। इसलिए इसे राजनैतिक क्षेत्र मे व्यवहारिक रूप देकर जल्दी से जल्दी ससार के सामने लाना आर्यकुमारो का वर्त्तमान समय मे प्रथम कर्त्तव्य है।

२—आयसमाज का सामूहिक रूप से तो राजनैतिक क्षेत्र मे सम्मिलित होना जितना अनुचित है व्यक्तिगत रूप मे अथवा आर्यसमाज से प्रथक् तथा आर्य सिद्धान्तो के अनुकूल सगठित रूप मे राजनैतिक कार्यों मे भाग लेना उतना ही उचित और आवश्यक है।

अब तक आर्यसमाज के नेताओं की नीति व्यक्तिगत रूप मे भी राजनैतिक कार्यों में भाग लेने को प्रोत्साहित करने की नहीं रही है। किन्तु इस सम्मेलन की सम्मति मे अब वह समय आ गया है जब कि नवयुवक इस बात की घोषणा करदें कि हम राजनैतिक ससार मे एक जीवित जागृत तथा प्रभावशाली शक्ति बने बिना नहीं रहेंगे और अतएव यह सम्मेलन आर्य युवको को साग्रह प्रेरणा करता है कि वे राजनैतिक क्षेत्र मे प्रवेश करके वहा भी वही स्थान प्राप्तकर दिखावें जो उन्होने आज तक शिक्षा और समाज सुधार के कार्य मे कर दिखाया है।

परिषद् की अन्तरंग सभा

सम्मेलन के पश्चात् परिषद् की अंतरंग सभा की बैठक हुई जिसम पास हुए कुछ प्रस्ताव निम्न प्रकार हैं।

प्रस्ताव सं० ३—निम्न आर्यकुमार सभाओ के आवेदन पत्र स्वीकार हुए तथा वे परिषद् से सम्बन्धित करली गई—

आर्य कुमार सभा इन्दौर तथा आर्यकुमार सिरसा।

आर्य कुमार सभा पीलीभीत का फोर्म इस शर्त पर स्वीकार किया गया कि वह अपना वार्षिक शुल्क शीघ्र भेज दे।

प्रस्ताव स० ४—आगामी वार्षिक सम्मेलन की तिथियो के विषयमे आर्य कुमार-सभा बिजनौर का पत्र पढा गया। सम्मेलन के लिए मई १९३८ का तृतीय सप्ताह निश्चय किया गया तथा कार्य कारिणी सभा को अधिकार दिया गया कि वह आर्य कुमार सभा बिजनौर से परामर्श करके सम्मेलन का प्रोग्राम तय कर ले।

प्रस्ताव सं० ६—वैदिक धर्म विशारद परीक्षाओं के शुल्क तथा पाठ विधिमे निम्न परिवर्तन किए गए जो सन् १९३९ की परीक्षाओं से कार्य रूप मे आवेंगे—

(१) प्रथम खण्ड का शुल्क चार आने से बढा कर छ आने कर दिया गया

(२) 'ईश्वरीय ज्ञान वेद' तथा वृहत् विज्ञान' पुस्तकें बाजार मे न मिल सकने के कारण कोर्स से हटा दी गई तथा परीक्षा मन्त्री को अधिकार दिया गया कि वह परीक्षा समिति के सदस्यो से राय लेकर इनके स्थान मे दूसरी पुस्तकें रखदें।

(३) परीक्षाओं के नियम स० ५ का दूसरा भाग जो इस प्रकार है 'परीक्षा समिति किसी दीन विद्यार्थी को व्यवस्थापक की इच्छानुसार शुल्क से मुक्त भी कर सकती है' हटा दिया गया।

———

अन्तरङ्ग सभा के १२ अक्तूबर १९३७ के अधिवेशन में पास हुए कुछ प्रस्ताव।

आर्य कुमारों की वर्दी

निश्चय हुआ कि आर्य कुमारों के लिए निम्न प्रकार की दो वर्दियां होंगी —

(१) विशेष अवसरों के लिए अर्थात उत्सवों जल्सों इत्यादि पर खादी का सफेद कुरता, सफेद गाधी टोपी तथा धोती।

(२) सेवा कार्य के अवसर पर (अर्थात जब स्वय सेवक का कार्य करना हो) खादी की आधी बांह की सफेद कमीज़ तथा खाकी निकर।

आर्य कुमार सभाओं के साप्ताहिक अधिवेशनों का कार्य क्रम

कार्य क्रम इस प्रकार निश्चित हुआ:—हवन, संध्या, प्रार्थना, सामूहिक भजन गायन, स्वामी दयानन्द अथवा अन्य किसी महानुभाव का जीवन चरित्र (आरम्भ स्वामी जी के जीवन चरित्र से हो) 'सत्यार्थ प्रकाश' आदि की कथा या किसी महात्मा का व्याख्यान।

ऊपर लिखा सब कार्यक्रम अनिवार्य होगा। इसके अतिरिक्त क्रम से वाद विवाद (Debates), व्याख्यान आदि रहे जो समयानुसार किए जा सकें।

प्रांतिक आर्य कुमार परिषद्

भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् इस बात पर विचार करते हुए कि आर्य कुमार दो सभाओं के शासन व चन्दे के भार को बर्दाश्त करने में असमर्थ हैं, किसी नई प्रान्तीय आर्यकुमार परिषद् को स्थापित करना उचित नही समझती और चाहती है कि सब आर्यकुमार सभायें अपना साक्षात् सम्बन्ध भारतवर्षीय आयकुमार परिषद् से ही रखें। परन्तु जो प्रान्तीय सभायें पहले से स्थापित हैं और आगे अपने अस्तित्व को रखना भी चाहती हैं उनसे भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् अनुरोध करती है कि उनको भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् से सम्बन्ध कर लेना चाहिए। और जो कुमार सभायें अपनी प्रान्तीय परिषदों से सम्बन्धित हैं वे उसी तरह पर रहे। हमको उनके नए सम्बन्ध की आवश्यकता नहीं है।

२२ वां भारतवर्षीय आर्य कुमार सम्मेलन

आर्यकुमार सभाओं का विशेष ध्यान इस सम्मेलन मे पास हुए प्रस्ताव सख्या २ व १८ की ओर दिलाया जाता है। जिन आर्यकुमार सभाओं ने अभी इन प्रस्तावों को कार्य रूप नही दिया है वे कृपा कर इस ओर ध्यान दे। प्रस्ताव निम्न प्रकार है —

सख्या २—यह सम्मेलन भारत में प्रचलित ग्राम सुधार तथा ग्राम प्रचार के आन्दोलन को अत्यावश्यक समझता है और आर्यकुमारों तथा आर्यकुमार सभाओं से अनुरोध करता है कि वे यथावकाश ग्राम सुधार तथा ग्राम प्रचार के कार्य मे यथा शक्ति सहयोग दिया करें।

संख्या १८—क्योंकि यह दुःख के साथ देखा जा रहा है कि भारतीय युवकों का स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है और क्योंकि मानसिक उन्नति के लिए शारीरिक उन्नति अत्यावश्यक है इसलिए यह सम्मेलन समस्त आर्यकुमार सभाओं से प्रार्थना करता है कि वे अपने २ स्थानों पर आर्यकुमार व्यायाम मडलों की स्थापना करें तथा समय २ पर खेलों (Sports) का भी आयोजना करें।

हिन्दुस्तानी शिष्टाचार

ले० श्री० प० रामनारायण जी मिश्र

(ख) स्वास्थ्य-सम्बन्धी

(१) पानी, दूध, घी आदि में उंगली या नाखून मत डालो। दूध में चीनी उंगली से मत घोलो, चमचे से काम लो या दो बर्तनों मे उलट-फेर कर लो। ध्यान रखो कि ऐसा करने मे दूध की एक बून्द भी बाहर न गिरे।

(२) जिस वर्तन मे पीने का पानी या दूध आदि रखा हो उसको ढकना मत भूल जाओ। उसको जमीन से कुछ ऊपर रखना अच्छा है। वर्तन ऐसा होना चाहिए जो अन्दर से साफ हो सके। जिस शीशी मे तेल आदि रखा हो उसको कार्क से बन्द करना मत भूल जाओ, विशेषकर जिसमे दवा हो।

(३) नई दवा या कोई और चीज किसी पुरानी बोतल मे डालो तो पहले बोतल को गरम पानी और सोडा से धो लो।

(४) पानी, दूध, घी आदि निकालने के लिए जिस लोटे, कटोरे या ग्लासको वर्तन मे डालो उसकी पेंदी पहले धोलो या साफ कपडे से पोछ लो। उसको धोती या कुरते से मत पोंछो। उसके लिए एक अलग साफ कपड़ा रखो।

(५) डोल वालटी या घडे के पास हाथ धोने के लिए भरा हुआ लोटा हमेशा रखना चाहिए। खाली होने पर उसे फिर भर देना चाहिए। पानी से भरे हुए डोल, बालटी या घडे मे हाथ नहीं डालना चाहिए। हाथ की कलाई से लोटे को टेढा करके पानी लेना चाहिए, उसमे भी हाथ नही डालना चाहिए।

(६) हाथ धोने या वर्तन माजने के लिए हर जगह की मिट्टी इस्तेमाल मत करो। देख लो कि जहा की मिट्टी लेते हैं उस जगह को लोग गदा तो नही करते। साफ मिट्टी ढूंढकर काम मे लाओ। जमीन खोदकर खेत की मिट्टी मिल सके तो अच्छा है। मिट्टी जमा करो तो उसको हडी या कनस्टर मे रखो, जमीन पर रखने से बिल्ली आदि जानवर उसको गन्दा कर देते हैं।

मिट्टी के बदले चूल्हे की राख इस्तेमाल करना अच्छा है।

(७) पहनने के कपडे, जूते आदि रोज झाड लिया करो। सोने से पहले प्रतिदिन अपने बिछौने का हर एक कपडा झाड लो।

(८) वर्तन या खाने की चीज किसी नई जगह रखने से पहले उस जगह को धो डालो या साफ कर लो।

(९) रात को जो कपडे पहन कर सोओ, उनमे जो सूती हो उनको दूसरे दिन धो डालो और जो ऊनी हों उन्हे धूप में डाल दो। याद रखो, ऊनी या काले या गर्द खोर कपडों मे भी मैल लगता है, उनको भी धोते रहना चाहिए। शरीर के साथ जो कपडे लगे रहते हैं उनको खूब साफ रखो। उनमे बदबू न आनी चाहिये। जो लोग जनेऊ पहनते हैं उनको अपना जनेऊ खूब साफ रखना चाहिए।

(१०) हाथ और पैर के नाखून बढ़ने मत दो, उनके अंदर मैल न जमने दो।

(११) जिस बिछौने पर सोओ उसको थोड़ी देर धूप में रहने दो परंतु इसका ध्यान रखो कि उसको चिड़ियां आदि गंदा न करदें। पहनने के कपड़ों को भी इसी प्रकार धूप दिखला दो।

(१२) मोजा भी रोज पहनने के बाद धो डालना चाहिए।

(१३) पहनने से पहले और उतारने के बाद कपड़ा झाड़ लो। पैजामा झाड़ने के वक्त उसके नीचे का हिस्सा पकड़ों क्योंकि उसमें गर्दा ज्यादा रहता है। नंगे पैर रहो तो बाहर से आकर पैर झाड़ डालो या धो डालो।

(१४) अपने साथ हमेशा एक अंगोछा या रूमाल रखो। धोती, दुपट्टे या कुरते से नाक साफ करके नाक और हाथ धो लेना चाहिए।

(१५) कूड़ा रखने के लिये बालटी, कनस्टर आदि घर में दो-तीन जगह अवश्य होना चाहिए। जो कूड़ा उसमें जमा हो जाय उसको दिन में दो तीन बेर हटा देना चाहिए। जिसमें कूड़ा रखा जाय उसको भी प्रति दिन अन्दर से साफ करना चाहिए और उसके नीचे की जमीन में ,झाड़ू लगा देना चाहिए।

लिखने-पढ़ने की मेज के नीचे रद्दी के लिए एक टोकरी रखनी चाहि।

कूड़ा घर से दूर लेजाकर या तो जला देना चाहिए या खाद के काम में लाना चाहिए।

(१६) घर में हर जगह जूता नहीं ले जाना चाहिए; सीढ़ी मे या कमरे के बाहर एक तरफ उतार देना चाहिए। भोजनालय में जूता ले जाना ठीक नहीं।

(१७) जूता या जूठे बर्तन छूकर हाथ धोना चाहिए।

(१८) बाहर से आकर जूते को झाड डालना चाहिए—जूते पर बराबर पौलिश आदि लगाते रहना चाहिए। पहनने से पहले जूता—भीतर और बाहर से—झाड़ लेना चाहिये। गीला जूता जब सूख जाए तब पहनो।

(१९) लिखते समय उँगलियों में स्याही न लगा लो—यदि लग जाय तो तुरन्त रगड़ कर हाथ धो डालो।

(२०) लिखने के बाद अक्षरों को उँगली से नहीं सुखाना चाहिए, सोखता काम में लाना चाहिए।

(२१) रोशनाई कलम से जमीन पर न छिड़को और न उसको सिर के बालों से पोंछो।

(२२) मिट्टी लगा हुआ लोटा या गगरा कुएँ में मत डालो।

(२३) कुएं से दूर नहाओ जिससे बदन का पानी कुएँ में न जाय।

(२४) कुएँ की सफाई कराते रहना चाहिए। उसमें कभी २ थोड़ा परमैंगनेट पोटाश डालते रहना चाहिए।

(२५) पीने का पानी लेना हो, तो नदी में जरा आगे बढ़ कर धारा के पास जाओ, और कपड़े धोने हों तो नदी के बहाव के नीचे की ओर जाना चाहिए। ऐसा करने से पानी गन्दा नहीं होता।

(शेष फिर)

।नज़ाम स्टेट में आर्य्य समाज की वेदी पर एक आर्य्य वीर 'वेदप्रकाश' का पहिला बलिदान

मन्त्री आर्य्य प्रतिनिधि सभा समय पर पहुंच गये

गंजोटी इलाके पायगा में मोहतमीम साहेब पोलिस, तालुकादार, तहसीलदार की उपस्थिति में मुसलमानों ने (जिनमें सरकारी मुलाजिम अरब, चपरासी, घोड़े सवार, ऊंट सवार व जिला बरैस पुलिस भी थी)—दगा किया। प्रातः काल से सारे मुख्य मुख्य पुरुषों को मोहतमीम साहेब ने सन्धि कराने के लिए अपने पास बुला लिया इधर मुसलमानों ने सबसे पहले एक जलूस निकाला और दाऊदखां के घर जाकर उसे फूलों की माला पहनाई। फिर मन्त्री आर्य समाज को पकड़ कर गले पर तलवार रक्खी गई। पोलीस को सूचना देने पर अमीन साहेब जाकर मन्त्री को लेकर आए और कहा कि कुछ नहीं कुछ लोग सेंधी पीकर गड़ बड़ कर रहे थे। ऐसा कह कर मुख्य मुख्य लोगों को बातों में लगाकर वहीं पर ठहरा लिया गया उधर मारपीट होने लगी। हिन्दुओं के घरों पर हमला होने लगा। अकेले दुकेले को मारने लगे। सन्धि के भरोसे पर हिन्दू जनता निश्चिन्त रही। एक वेद प्रकाश आर्य्य युवक को मन्त्री आर्य्य समाज के घर में घुस कर पकड़ लिया। वह रिक्त हस्त था। उसे कहा गया कि मुसलमान होजा, जीवन दान दिया जायगा। उत्तर मिला कि मुसलमान हो कर जीवित रहने से मैं मृत्यु को अधिक पसन्द करता हूं। यह उत्तर सुन कर उसे नीचे गिरा कर छुरे से उसका गला काट दिया गया केवल चार अंगुल छोड़ा गया। तड़पता देहछोड़ कर चले गए। दोपहर को जब टोलियां घूमती फिरती थीं तो कहती थीं कि जो आर्य्य होगा उसका वध कर दिया जायगा। मार्ग शीर्ष शुक्ल मगल के दिन "वेद प्रकाश" मारा गया। इसकी आयु २१ वर्ष की थी। आर्य्य समाज की वह जान था। अपना सारा जीवन आर्य्य समाज के कामों मे अर्पण कर चुका था। बृहस्पति वार को प्रात काल दस बजे मोटर से शव तुलाजापुर के दवाखाने को भेजा गया क्योंकि स्थानिक डाक्टर पर सन्देह था क्योकि वह मुसलमानों के मशवरों में शरीक रहता था। पोलिस ने कोई प्रबन्ध नहीं किया। आर्य्य-समाजियों ने मोटर स्वयं मंगवा कर शव तथा अन्य घायल पुरुषों को तुलजापुर के दवाखाने में भेजा। आर्यों को स्थानिक पुलिस पायगा पर विश्वास नहीं है अभी दंगा करने वाले स्वछन्द फिर रहे हैं, सारी हिन्दू समाज भय भीत है। यदि ठीक समय में प्रबन्ध न हो तो जान वा माल का खतरा है। मन्त्री आर्य्य प्रतिनिधि सभा समय पर पहुंच गए।

राम देव शास्त्री

(वैदिक संदेश सोलापुर २१-३८ से)

साहित्य-समीक्षा

(समाचार पत्रों की सम्मतियां)

अग्निहोत्र

लेखक—श्रीयुत डा० सत्य प्रकाश डी० एस सी० प्रकाशक—सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा देहली, मूल्य २॥)

इस पुस्तक के लिखने का डा० सत्य प्रकाश जी का उद्देश्य आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि कोण से 'देव यज्ञ' के विविध रूपों की व्याख्या करना और धार्मिक और विच्छ्वाव हिन्दू परिवार के स्वास्थ्य पर वेदों में विहित अग्निहोत्र के प्रभावों का अध्ययन करना है। अग्निहोत्र की सामग्री के पदार्थों की रासायनिक क्रियाएँ, प्रक्रियाएँ मूल्य इत्यादि का भी सम्यक् विश्लेषण उपस्थित किया गया है। डाक्टर गंगानाथ झा ने पुस्तक का पूर्व्व वचन लिखा है तथा इलाहाबाद विश्व विद्यालय के डाक्टर ऐन० आर० धर ने भूमिका लिखी है।

जो व्यक्ति धार्मिक संस्कारों को विज्ञान और उपयोगिता की कसौटी पर परखने के अभ्यस्त हैं और जो इन संस्कारों में इस प्रकार की महत्ता का दिग्दर्शन करने के इच्छुक हैं अवश्य ही वे इस पुस्तक को उपयोगी और शिक्षा-प्रद पायेंगे।

(यूनाइटेड इण्डिया ऐण्ड इण्डियन स्टेट नई देहली)

[२]

हमारे पास एक अत्यन्त सुन्दर सजिल्द अंग्रेज़ी पुस्तक 'अग्निहोत्र' नामक समालोचनार्थ आई है जिसे श्रीयुत पंडित सत्य प्रकाश जी डी० एस सी० उपाध्याय इलाहाबाद यूनिवर्सिटी ने बनाया है तथा सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा ने प्रकाशित किया है। हमने इस पुस्तक का अध्ययन किया है और हम प्रतिवाद के भय के बिना कह सकते हैं कि वह अपने ढंग की पहली और विद्वत्ता पूर्ण रचना है। विद्वान लेखक ने वैज्ञानिक परीक्षणों के आधार पर यह सिद्ध किया है कि प्राचीन ऋषियों द्वारा प्रतिपादित 'हवन यज्ञ' मानवी स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभ दायक है। अंग्रेज़ी पढ़े लिखे लोगों और योरप वालों में यह पुस्तक बड़ी उपयोगी सिद्ध होगी। हम विद्वान लेखक को साथ ही सार्वदेशिक सभा को इस उत्तम पुस्तक को प्रकाशित करने पर बधाई देते हैं। हमारी सम्मति में किसी अंग्रेज़ी भाषा विज्ञ आर्य्य समाजी को इस पुस्तक के पढ़े बगैर नहीं रहना चाहिए। तमाम आर्य्य समाजों को इस पुस्तक को अपनी लाइब्रेरियों में रखना चाहिए। कागज़ छपाई इत्यादि बहुत उत्तम है। मूल्य केवल २॥)

(आर्य्य मुसाफ़िर लाहौर)

आर्य समाज मद्रास द्वारा प्रकाशित

सस्ता आर्य-साहित्य (अंग्रेजी में)

Light of Truth श्री स्वामी दयानन्द-सरस्वती कृत सत्यार्थ प्रकाश का यह अंग्रेजी अनुवाद है। इसकी भाषा शुद्ध व सुन्दर है। भावों के विषय में इतना कहना पर्याप्त है कि इस अकेली पुस्तक ने जितनों को आर्य बनाया है उतना अन्य साधनों ने नहीं।

ग्लेज पेपर, कैलिको की मजबूत जिल्द २) अजिल्द १॥)

Fountainhead of Religion इस पुस्तक के विद्वान लेखक श्री गंगाप्रसाद जी चीफ जज, टिहरी ने पुष्कल प्रमाणों द्वारा वैदिक धर्म को समस्त धर्मों का मूल-स्रोत सिद्ध किया है। इस पुस्तक के अनेक भाषाओं मे अनुवाद हो चुके हैं। केवल अंग्रेजी में ही कई संस्करण छप कर हाथों हाथ बिक चुके हैं।

फैदरवेट पेपर, सुन्दर छपाई। अजिल्द ॥) सजिल्द १)।

Ten Principles of Aryasamaj: गुरुकुल-कांगडी के भूतपूर्व आचार्य श्री चमूपति एम ए. ने इस पुस्तक में आर्यसमाज के दस नियमों की विस्तृत, वैज्ञानिक व्याख्या की है।

पृष्ठ संख्या १६०। मूल्य ।=) मात्र।

Arya Philosophy अजमेर-अर्धशताब्दी पर दिये गए अंग्रेजी व्याख्यानों का यह संग्रह है। देश तथा विदेश दोनों मे प्रचार का अत्युत्तम साधन है। इसकी भूमिका श्री आचार्य रामदेव जी ने लिखी है। मूल्य ।=) मात्र

Vedic Caste System and Panchama Problem यह समयोपयोगी ट्रैक्ट श्री पं० केशवदेव जी ज्ञानी, मद्रास ने लिखा है। इसमे युक्ति-प्रमाण द्वारा आर्य समाज के पक्ष की पुष्टि की गई है। मूल्य =)

The outlines of Aryasamaj लेखक श्री पं० केशवदेव जी ज्ञानी, मद्रास। इसमे आर्य समाज के सिद्धान्तों का संक्षिप्त परिचय है। चतुर्थ संस्करण। मूल्य –)

Sayings of Swami Dayanand इस मे ईश्वर, वेद, वर्ण, आश्रम, शिक्षा, राजनीति आदि विषयों पर श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के वचनों का संग्रह है। मूल्य –)

Hinduism Vs. Xinity श्री पण्डित केशवदेव जी ज्ञानी ने इस पुस्तिका मे हिन्दू-धर्म तथा ईसाईयत का मुकाबिला किया है। शुद्धि प्रचार के लिए उपयोगी है। मूल्य –)

Hinduism Vs Islam ले० पं० केशवदेव जी ज्ञानी। इसमे हिन्दू धर्म तथा इस्लाम का मुकाबिला है। शिक्षित मुसलमानों के हाथों मे देने योग्य है। मूल्य –)

Verses From The Vedas ले० श्री० ज्ञानीजी। इसमे चारों वेदों के मन्त्र चुनकर उनकी सरल अंग्रेजी मे व्याख्या की गई है। पुस्तक वेद-प्रचार के लिए अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य –)

पता —

श्री मंत्री, आर्यसमाज

१७०, चाइना बाजार, मद्रास।

पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिय 'चन्द्र प्रिंटिंग प्रेस' देहली,
से प्रकाशित

माघ ६२ Reg No L 2121

ऋग्वेद ॐ यजुः

सार्वदेशिक



सम्पादक—श्री [illegible] एम० ए

स० सम्पादक—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक

वार्षिक मूल्य स्वदेश ५) एक प्रति का ≡ विदेश में ५ शि० वार्षिक

अथर्ववेद सामवेद

लेख-सूची

केन्द्रीय अनाथालय, रावी रोड, लाहौर की आवश्यकताएं

(ले० ला० बोसाराम रिटायर्ड स्टोर कीपर N W R.)

(१) इस समय इस अनाथालय मे १७५ बालक बालिकाएं हैं और इस समय शीत ऋतु है। उनके लिये गरम वस्त्र, रजाई, तुलाई, और दरियों की आवश्यकता है। दानी सज्जन जहाँ अपने बालकों के लिये वस्त्र बनवाएं वहां इन बालकों का भी अवश्य ध्यान रखें।

(२) वस्त्रों के अतिरिक्त भोजन के लिये घृतादि की आवश्यकता है दानी सज्जन घृत भेजें अथवा उसके लिये दान देकर कृतार्थ करें।

(३) अनाथालय का व्यय १३००) मासिक है वह दानी महाशयों की कृपासे पूरा होगा इसलिये प्रत्येक नर नारी दान देकर इस व्यय को पूरा करें।

(४) इस अनाथालय के प्रबन्ध के विषय मे यह लिखना पर्याप्त होगा कि सरकार ने जो भगाए गए बालक पकड़े थे जिनके संबंधियों का पता नहीं लगा वह सब बालक इसी अनाथालय में रखे हैं।

(५) अनाथालय के बालक कभी बाहर मांगने के लिए नही भेज जाते हैं। उनके पढ़ाने के लिये स्कूल भी है जो सरकार से स्वीकृत है।

(६) इसके अधिकारी इस समय निम्न सज्जन हैं.—

प्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

उप प्रधान पं० विश्वम्भरनाथ जी, उप प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

,, पं० ठाकुरदत्त शास्त्री मुलतानी, लाहौर

,, डाक्टर गणेशीलाल जी M B, B S

कोषाध्यक्ष श्री विज्ञानशील जी, बी० ए०

अंत मे नम्र निवेदन है प्रत्येक धर्मप्रेमी सज्जन अपनी शक्त्यानुसार कुछ न कुछ दान देकर सभा का हाथ बटावें और पुण्य के भागी बनें।

ॐ

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष १२ | फाल्गुन १९९४ | मार्च १९३८ ई०] | [दयानन्दाब्द ११३ | अङ्क १

❀ वेद की शिक्षाएँ ❀

इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा । Rig 1-32-15

परमेश्वर चराचर का राजा है ।

He controls both the animate and inanimate Universe.

एष इन्द्रो वरिवस्कृत् । Rig. 9-16-6

यह इन्द्र ही बल का देने वाला है ।

He is the Giver of strength—moral, physical and spiritual.

वेद के प्रकाश में धर्म-यात्री

(लेखक—प्रो० ऐम० बी० वेंकटेश्वर एम० ए०)

कर्म्म और उन्नति

आध्यात्मिक (धर्म) यात्री का प्रथम कर्तव्य आत्मा को निष्कामता से बचाना है। मनुष्य आलसी बनने के लिए पैदा नहीं होता है। पुरुषार्थ का भाव उसकी आत्मा में ओत प्रोत है और मनुष्य के प्रत्येक हाव भावसे और उसके शरीरके अंग प्रत्यंग से पुरुषार्थ का ध्वनि निकलती है। मनुष्य दुनियां में पैदा होता है और इस दुनियां के साधन से वह अपनी उन्नति करता और मोक्षकी सिद्धि करता है इसलिए उसे दुनियां के व्यापारों में से होकर गुज़रना होता है। वैदिक साहित्य में इस प्रकार के स्थल हैं जो सन्तान, सन्तति और शक्ति की आशाओं का मनुष्य में सचार करते हैं परन्तु वे बतलाते है कि दुनियां का इस प्रकार भाग करो कि वह तुम्हारी जीवन यात्रा के अन्तिम ध्येय ईश्वर प्राप्ति में साधक हो बाधक न हो। दुनियां में लिप्त न हो और उसेही, ध्येय न समझो। यह भाव तभी विकसित और स्थिर रहता है जब हम दुनियां की चीजों में प्रयोग की भावना ही रक्खें उनमें ममत्व वा अधिकार की भावना न जोड़े

उन्नति के लिए कोई राज मार्ग नहीं है। यह हमें अपने पुरुषार्थ से ही बनाना होता है। परन्तु इतिहास अपने को दुहराता है और हम से पूर्व जो इस क्षेत्र में रह चुके है हम उनके अनुभवों से अच्छा फायदा उठा सकते हैं। इसीलिए धर्म यात्री का आदेश किया गया है। उस मार्ग पर अपनी दृष्टि रक्खो जिस पर तुम्हारे पुरुषा चले हैं परिणाम यह होगा कि तुम्हारी आत्मा प्रकाश मान हो जायगी। ठीक रास्ते के चिन्ह निम्न प्रकार दर्शाए गए हैं —

१) तुम्हारा मार्ग कटकों और समाज के दुष्टों से शून्य हो।

(२) तुम्हारा मार्ग प्रशस्त और सुख दायक हो।

(३) सबका मित्र ऐश्वर्य और सुखों की वृष्टि करने वाला पालन करने हारा और दुर्बलों का रक्षा करने वाला तुम्हारा मार्ग दर्शक हो

प्रकृति से सम्पर्क

धर्म यात्री को प्रकृति के चमत्कारिक सौन्दर्य्य और भव्य औदार्य्य का पान करने का प्रेरणा की गई है। प्रभात कालीन आकाश के इन्द्र धनुष के रंग गुलाबी उषा काल। रातकी कोमल शान्ति में प्रकृति का संगीत ये सब मनुष्य के ममत्व और आत्मा पर आच्छादित धूलि को धो देते हैं। धर्म यात्री के समस्त स्वाध्याय और क्रिया कलाप का विधान उस समय किया गया है जब पुराने खेतों से प्रकृति नया अन्न प्रदान करती है। श्रावण की पूर्णिमा को उसके स्वाध्याय (उपाकर्म) का वार्षिक सत्र शुरू होता है। इस समय हरी २ औषधियों पर वर्षा की पड़ी हुई बूंदें मनोरम दृश्य उपस्थित करती हैं और प्रकृति एक नए जीवन से ओत प्रोत होती है। जब मेंढकों की ध्वनि शुरू होती थी वैदिक विद्यार्थी अपना अध्ययन प्रारम्भ करते थे। जब प्रकृति क्रुद्ध अवस्था

में होती थी अर्थात् जब आकाश धुंधला होता था, या जब बिजली चमकती थी अथवा वायु में मृत्यु और रोग होता था निस्सन्देह तब पढ़ाई मे विघ्न पड़ जाते थे। दिन के समय में वह दर्वाजों के भीतर बन्द नहीं रहता था। वनस्थली के विद्या केन्द्र में गुरु चरणों में बैठ कर उसे प्रकृति के प्रत्यक्ष सम्पर्क में रहना होता था।

विद्यार्थी जीवन समाप्त करने के पश्चात् भी प्रकृति उसकी मित्र रहती थी क्योंकि विद्वान् यात्री को दूर दूर की यात्रा करनी होती थी। इस रीति से स्थानीय और प्रान्तीय तंग भावनाओं का समुचित सुधार होता रहता था।

वैदिक ग्रन्थों में यद्यपि प्राकृतिक दृश्यों का सम्यक वर्णन है फिर भी वे एक देशीय नहीं है और विशेष गुण के तौर पर घर का प्रेम और विशेष सिद्धान्त के तौर पर देश का प्रेम उनमें नहीं पाया जाता है।

यह आवश्यक है कि हमारी शक्तियां प्रकृति की शक्तियों के साथ २ गति करें। प्रकृति की इन शक्तियों मे सबसे अधिक प्रभावशाली शक्ति सूर्य है। सूर्य की दिन प्रति दिनकी गति दिखलाती है कि पुरुषार्थ और कार्य्य दिव्य हैं। सूर्य हमें निःस्वार्थ सेवा और निरन्तर पुरुषार्थ की शिक्षा देने वाला सर्व प्रथम शिक्षक है। बाहरी और भीतरी अंधियारे को प्रकाश में बदल कर, और नीचेको ऊंचा बनाकर यह हमें बहुत उत्तम शिक्षा प्रदान करता है।

———

अध्यात्म धारा

भगवान कृष्ण गीता में कहते हैं, जब मनुष्य परमात्मा की उपासना करने लगता है, तब उसकी भक्ति दो रूप ग्रहण करती है। वे दो रूप ज्ञान और कर्म हैं। बिना कर्म किए मनुष्य ज्ञान की प्राप्ति नहीं कर सकता है और बिना ज्ञान के केवल ज्ञान रहित कर्म से मनुष्य मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता है। मनुष्य एक क्षण के लिए भी निष्काम नहीं रह सकता है। इच्छा के न होते हुए भी मनुष्य की आभ्यन्तरिक प्रवृत्तियां उसे काम करने के लिए बाधित करती हैं। सदेव अपने कर्त्तव्य कर्मों के संपादन में लगे रहो। कामको टालने की अपेक्षा उसका कर डालना उचित है। सब कामों को टालने से तुम्हारे शरीर का रक्षण भी असम्भव हो जायगा। वेद बतलाते है ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति किस प्रकार होती है ? आत्म ज्ञान किसे कहते है ? उसकी प्राप्ति के उपाय क्या हैं ? मोक्ष की प्राप्ति कैसे होता है ? यही विषय है जिनकी हमें वेद शिक्षा देते हैं। वे घोषणा करते है "ईश्वर प्राणी मात्र मे ओत-प्रोत है।"

उसको कौन प्राप्त कर सकते है ? जो वीर हैं, बुद्धिमान है, अर्थात जिनका शरीर और आत्मा बलिष्ठ है वही उसे प्राप्त कर सकते हैं। कमज़ोर शरीर और मस्तिष्क वाला आत्म ज्ञान की प्राप्ति नहीं कर सकता है। आत्मा और शरीर को बलवान बनाओ, ईश्वर की प्राप्ति हो जायगी। वेद सच्चे और अनादि धर्म की चर्चा करते है। अनादि और सच्चे धर्म से क्या अभिप्राय है ? जो धर्म समान रूप से सब समयों मे सबके आचरण योग्य हो और जो सदैव एक जैसा रहता हो और जो अपरिवर्तन शील हो। पुराण, बाइबिल, कुरान इत्यादि दूसरे धर्म्म ग्रन्थ मनुष्यों की एक श्रेणी, या विशेष देश और काल के लिए ही अभिप्रेत हो सकते है।

शास्त्र कहते हैं सृष्टि का आदि नहीं है। यदि सृष्टि का आदि स्वीकार कर लिया जाय तो परमात्मा मे अपूर्णता का दोष आता है।

यदि यह कहा जाय कि सृष्टि से पूर्व भी वह पूर्ण था तो यह मानना पडेगा सृष्टि के बाद वह और ज्यादा पूर्ण हो गया। यदि यह कहा जाय कि सृष्टि के बाद वह ज्यादा पूर्ण हो गया है तो इसरा यह अर्थ हुआ कि पहले वह अपूर्ण था। ये दोनों ही विकल्प गलत हैं। 'अधिक पूर्ण' शब्द अपना खडन स्वय करता है। क्यों कि जो पूर्ण था और अधिक पूर्ण हो गया वह वस्तुतः अपूर्ण ही था। यदि सृष्टि का आरंभ स्वीकार कर लिया जाय तो हम इससे परमात्मा में निर्दयता का दोष लगायेंगे। क्या हम जगत मे कुछ व्यक्तियों को गरीब, बिना पढ़े लिखे और रोगी नही देखते हैं जब कि दूसरे समृद्ध, विद्वान और स्वस्थ्य है। यदि परमात्मा ने विविध व्यक्तियों को इस प्रकार की विविध परिस्थितियों में रक्खा है तो परमात्मा में पक्षपात और निर्दयता के दोष प्रत्यक्ष हो जाते हैं। इसी लिए शास्त्र सृष्टि को अनादि बतलाते हैं। सृष्टि प्रवाह से अनादि ही है।

जगत में 'हम देखते हैं' कुछ व्यक्ति गरीब हैं और कुछ अमीर हैं। कुछ सुखी हैं और कुछ दुखी हैं। कुछ विद्वान हैं और कुछ मूर्ख हैं। इस भेदका क्या कारण है ?

शास्त्र कहते है 'कर्म' ही इस अन्तर का कारण है। शास्त्रों में विशाल अर्थों में 'कर्म' शब्द व्यवहृत हुआ है। वे कहते हैं कि सुर्य्य चन्द्र नक्षत्रादि की भी कर्म से ही उत्पत्ति है। जब सृष्टि का आदि नहीं है तो यह कहना बेकारहै कि कर्म भी जो सृष्टि में समस्त

भेदों का कारण है अनादि है।

कर्म के फलों को कोई नहीं टाल सकता है। तुम कोई भी कर्म करो, तुम जैसा बोओगे वैसा ही काटोगे। यह बड़ा कठोर है। मानसिक कार्य्य अर्थात भावों और विचारों के उठने के भी फल हैं। बुरे विचार के मन में आते ही उसके फल स्वरूप तमाम शरीर अपवित्र हो उठता है। यदि विचार बलशाली हो तो यह भौतिक या शारीरिक कार्य्य के रूप में अपने को प्रगट करदेता है। कभी २ हम कर्म के फलों को नहीं देखते हैं, परन्तु वे अवश्य कहीं न कहीं छुपे होते है इसमें सन्देह नहीं है। स्वास्थ्य के नियमों का कोई भी अति क्रमण शारीरिक रोग के रूप में स्पष्ट हो जाता है। दवाइयों से रोगों का शमन हो जाता है। यह क्या है ? यह केवल कर्म फलों के एक प्रकार का परिवर्तन मात्र है। अर्थात औषध प्रदान से स्वास्थ्य के एक नियम का दूसरे मे परिवर्तन ही होता है। यह भी कर्म का एक दूसरा रूप है। परन्तु हम दोनों के फलों को भुगतना होता है। कोई भी नष्ट नहीं हुआ था। फर्क कवल इतना ही है कि दोनों एक परिणाम को जाहिर करने के लिए मिल गए है। यही भेद है। परन्तु कर्म फल कभी नष्ट नहीं होते हैं।

कुछ देशों में यह विश्वास प्रचलित है कि किसी अवतार पर विश्वास करने मात्र से पाप धुल जाते हैं। वेद इसका निषेध करता है। हमारा मुक्ति हमारे अपने यत्नों से ही संभव है। ये अवतार कहे जाने वाली महानआत्माए हमें क्या मदद देती है। हम महान जीवनों से प्रकाश ही ग्रहण कर सकते है। कहा जाता है, कुदरत आचारिक विशेषताओं की कतई परवा नहीं करती है और साधु और पापी में कोई भेद नहीं करती है। यह विचार बड़ा उथला है।

यदि साधु प्रकृति किसान की ज़मीन में ही वर्षा होती और यदि आकर्षण शक्ति पापी को नुकसान पहुंचाती और अच्छों को अछूता छोड़ देता तो निश्चय ही सज्जनता बुद्धिमत्ता का ही विषय बन जाती और शब्द के ठीक २ भाव में सुजनता का अस्तित्व ही लोप हो जाता। चीज़ों के बनने बिगड़ने मे अनिश्चितता का यह अंश ही नैतिकता को संभव बनाता है। जिस दुनियां मे अच्छे काम का समृद्धि द्वारा तत्काल बदला मिल जाय और बुरे काम का दुख दारिद्रय द्वारा बदला मिल जाय तो उस दुनियां का कोई अर्थ ही न होगा। सचमुच जिस जगत में मानवी जीवन के सुख दुख, असमानताएं और बहुत सी अनिश्चित बातें हो तो वही एक दुनियां है जिस में अच्छाई पाई जा सकती है।

उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ मे इंग्लैंड में दो कवि थे उनमें से एक लोक प्रिय था और दूसरे को कोई पूछता न था। लोक प्रिय का नाम सेमुअल रोगर्स और दूसरे का नाम विलियम वर्ड्सवर्थ था। समय ने दोनों को उचित स्थानों पर रख दिया। आज रोगर्स को कोई नहीं जानता। और वर्ड्सवर्थ अमर है। दो हजार वर्ष हुए नीरो—एक राक्षस—राजसिंहासन पर विराजमान था और पाल—एक साधु—कैदखाने मे था। समय ने उसे भी ठीक कर दिया। आज अंग्रेज लोग अपने बच्चों का नाम पाल रखने में गर्व अनुभव करते है परन्तु नीरो का नाम कुत्तों के लिए रिर्जव हो गया है।

एक पुराने लेखक ने कहा है—

God does not always pay his wages on saturday night but he always pays them" अर्थात् परमात्मा अपनी प्रजा को सदैव शनिवार को ही मजदूरी नहीं बाटता है परन्तु बाटता अवश्य है। भाव यह है कि किए हुए का फल यह जरूरी नहीं तत्काल मिल जाय पर यह जरूरी है कि फल मिलता अवश्य है। इससे कोई भी कभी भी नहीं बच सकता है। इसलिए हमारे कर्म श्रेष्ठ होने चाहिये और ऐसे होने चाहिये जो हमारी परतन्त्रता दूर करते हुए मृत्यु के बंधनों को ढीला करने वाले हों।

———

विवाह-भेद

(लेखक—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज)

विवाह का प्रचार समग्र संसार में है। प्रत्येक सम्प्रदाय में इसका विधान है। वेद में अनेक स्थलों पर इसका उल्लेख है उनमे से ऋग्वेद मंडल १० सूक्त ८५ और अथर्ववेद काड १४ विवाह परक ही हैं परन्तु इस लेख में मुझे वेद मन्त्रों पर विचार नहीं करना है। जो वेद में इस विषय की जिज्ञासा रखते हैं उनको वेद में उपरिलिखित स्थलों में देख लेना चाहिये। इस लेख में मुझे केवल विवाह के भेद दिखाने हैं। यह विषय स्मृतिकारों का है क्योंकि समयानुसार विवाह में भेद होना अनिवार्य सा है। स्मृतिकार उसे व्यवस्था में लाकर नियम बना देते हैं। स्मृतियों से ही इन भेदों का उल्लेख करके विचार करना है कि इस समय कौन २ से विवाह प्रचलित हैं।

(१) अथ ब्रह्म देयायाः प्रदान विधि वदयाम।
काठिक गृह्य सूत्र प्र० १५-१

इस सूत्र में ब्रह्म विवाह का उल्लेख है यह ब्रह्म विवाह की विधि का वर्णन करता है। अन्य किसी विवाह विधि का नहीं। इससे प्रतीत होता है यह एक ही प्रकार विवाह में मानता था।

(२) षड् विवाहा। २८। ब्राह्मो दैव आर्षो गांधर्व' क्षात्रो मानुषश्चेति। २६। वासिष्ठस्मृति अ० १

विवाह ६ प्रकार का है १ ब्राह्म २ दैव ३ आर्ष ४ गाधर्व ५. क्षात्र ६. मानुष इनमें ४ के लक्षण आगे चलकर लिखूंगा अन्य दो के लक्षण यहा ही लिखता हूँ क्योंकि यह दोनों नाम अन्य स्मृतियों में नहीं हैं।

या बलेन सहसा प्रमथ्य हरति स क्षात्र। ३४
वासिष्ठ स्मृति अध्याय १

जिस कन्या को बलपूर्वक हरण किया जाता है वह हरण युक्त विवाह क्षात्र विवाह है। यही दूसरी स्मृतियों में राक्षस के नाम से लिखा है।

पणित्वा धन क्रीता स मानुष। ३५। वा० स्मृति अध्याय १

जिस विवाह में कन्या धन देकर प्राप्त की जाय वह विवाह मानुष विवाह कहा जाता है यही अन्य जगह आसुर है।

जिस प्रकार वासिष्ठ स्मृति मे विवाह ६ प्रकार का लिखा है इसी प्रकार वासिष्ठ धर्म सूत्र में भी विवाह ६ प्रकार का ही है और उसमे भी यही नाम है और वही लक्षण हैं। वासिष्ठ स्मृति और वासिष्ठ धर्म सूत्र वसिष्ठ के होने से एक मत का होना स्वाभाविक ही है।

(३) ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुर।
गंधर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोधम॥
मनुस्मृति अध्याय ३। २१

१. ब्राह्म २ दैव ३ आर्ष ४ प्राजापत्य ५. आसुर ६. गंधर्व ७ राक्षस ८. पैशाच।

मनु जी इस प्रकार आठ प्रकार के विवाह मानते हैं

शख स्मृति अध्याय ४ श्लोक २ में मनुवत् आठ प्रकार के ही विवाह लिखे हैं।

गौतम स्मृति अध्याय ४ श्लोक २ में मनुवत् आठ प्रकार के ही विवाद लिखे हैं।

गौतम धर्म सूत्र प्रश्न १ अध्याय ४ में मनुवत् आठ प्रकार के ही विवाह लिखे हैं।

वैखानस धर्म सूत्र प्रश्न ३ अध्याय १ मे मनुवत् आठ प्रकार के ही विवाह लिखे हैं।

आश्वलायन गृह्य सूत्र १, ६ में भी मनु की भाति विवाह आठ ही लिखे हैं।

इन आठ प्रकार के विवाहों के लक्षण सबने लिखे हैं मैं उन सब के पाठ लिखना उचित न समझ कर केवल धर्म सिंधु और याज्ञवल्क्य स्मृति के पाठ उद्धृत करता हू ताकि पाठक समझ सकें कि उनके क्या लक्षण हैं और दूसरी स्मृति मे भी केवल शब्द भेद हैं भाव भेद नहीं हैं।

(१) योग्य वरमाहूयालंकृत्य कन्यादानविधिना तस्मैदानं ब्राह्मो विवाह.

(२) यज्ञे ऋत्विग् कर्मकुर्वतेलंकृत्य कन्यार्पणं दैवः।

(३) वरादेक गो मिथुन द्वैवा गृहीत्वा तस्मै कन्यार्पणमार्ष ।

(४) त्वदैतयैव सह गृह धर्म आचरणीय एतस्या जीवन पर्यन्त विवाहोत्तरं चतुर्थाश्रमोन कार्य इत्याभाष्य कन्यादानं प्राजापत्य ।

(५) ज्ञातिभ्यो यथेच्छं धन दत्त्वा विवाह आसुर ।

(६) वरवध्वोरिच्छयान्योन्य संयोगो गंधर्व ।

(७) युद्धादिना बलाद्धरणं राक्षस'।

(८) चौर्येण कन्या हरणं पैशाच ।

योग्य वर को बुलाकर अलंकृत कन्या विधि पूर्वक देना ब्राह्म विवाह है इस समय भी इस प्रकार के विवाह होते हैं परन्तु उनकी संख्या अत्यंत न्यून है।

जिसमे ऋत्विज् कर्म करते हों उस प्रकार शान से अलकृत कन्या वर को देना देव विवाह है

आज कल अधिक विवाह इसी कोटि में किये जाते हैं। विवाह मे बरात बुलाना ऋण उठाकर भी प्रतिष्ठा प्राप्त करना आज कल देखा जाता है यह दैव विवाह ख्याति के इच्छुक जनों के लिए आवश्यक प्रतीत होता है।

तीसरा आर्ष है जिसमें एक वा दो गौ वरसे लेकर उसे कन्या दी जाती थी। इस समय इस प्रकार गौ लेने की प्रथा मैने किसी प्रात में देखी नहीं है इस आधार पर मैं यही लिख सकता हूं कि आजकल यह विवाह नहीं होता है।

इसके साथ जीवन पर्यन्त गृहस्थ में रहकर गृह धर्म का पालन करवाना और वानप्रस्थ वा सन्यास मे न जाना इस प्रकार का निश्चय करके कन्या देना चौथा प्राजापत्य विवाह था।

आजकल प्राय 'वानप्रस्थ वा संन्यास में नहीं जाते हैं इस दृष्टि से तो अधिक विवाह प्राजापत्य ही हैं परन्तु विवाह समय वर से ऐसा पूछा नहीं जाता इतनी न्यूनता होने पर भी कार्य की दृष्टि से इन विवाहों को प्राजापत्य मान लेना चाहिये।

कन्या वालों को धन देकर विवाह करना आसुर विवाह है। यह विवाह इस समय भी होते हैं। कन्या के सम्बन्धी जितना धन निश्चय करलें उतना वर से लेकर विवाह कर देते हैं। जहा कन्याओं की संख्या न्यून है वा जिन बिरादरियों में न्यून

कन्याए हैं उनमें दाम भी अधिक पड़ता है। इस विषय में महाभारत में भी पाण्डु के विवाह समय जब भीष्म पितामह जी ने मद्र के राजा से माद्री के विषय में पूछा तो उसने भी यही कहा था कि हम तो धन लेकर कन्या दिया करते हैं जिससे पता लगता है पूर्व समय में भी वह परिपाटी कई परिवारों में निश्चित रूप में थी।

वर कन्या का अपनी इच्छा से विवाह करना गंधर्व विवाह था।

इस प्रकार के विवाह अब भी होते हैं परन्तु कुछ समय पूर्व तो इसका अभाव सा ही था आज कल विवाह युवावस्था में होने से इनकी सख्या भी अधिक हो गई है।

लड़ाई करके कन्या को उठा ले जाना राक्षस विवाह था—

ऐसे विवाह अब भी कहीं २ होते हैं।

चोरी से कन्या का हरण करना पिशाच विवाह था। कई स्मृतियों में कन्या को मादक द्रव्य पिलाकर उन्मत्त होने पर हरण का उल्लेख है। यह विवाह भी कहीं २ हो जाता है।

अंत के दोनो विवाहों को विवाह इसलिये माना है जिस कन्या को लड़कर वा चोरी से ले जाया जाय उसके साथ आजीवन रहना होता था। उसको फिर छोड़ा नहीं जाता था। इसलिये यह भी विवाह माने जाते थे परन्तु यह अच्छे न माने जाते थे इसी प्रकार आसुर विवाह भी अच्छा न माना जाता था। उसमें कन्या का क्रय है।

याज्ञवल्क्य स्मृति में यह आठ विवाह इस प्रकार लिखे हैं।

ब्राह्मो विवाह आहूय दीयते शक्त्यलंकृता।
यज्ञस्थ ऋत्विजे दैव आदायार्षास्तु गोद्वियम्॥
इत्युक्त्वा चरता धर्मं सह या दीयतेर्थिना-
प्राजापत्य।
आसुरो द्रविण दानाद् गंधर्व समयान्मिथ॥
राक्षसो युद्ध हरणात्पैशाचः कन्यकाछलात्।

याज्ञवल्क्य आचार अध्याय विवाह प्रकरण।

इसके अर्थ पूर्व से मिलते जुलते ही हैं। इस प्रकार विवाह आठ प्रकार के होते थे परन्तु इस समय इनके अतिरिक्त परिवर्तन का विवाह भी है अर्थात अपनी कन्या किसी के पुत्र को देकर उसकी कन्या का विवाह अपने पुत्र से कर लेना। यह विवाह स्मृतियों में कहीं नहीं है। इसी प्रकार कन्या पक्ष से धन लेकर विवाह करना इस समय प्रचलित है धनी लोग ऐसे विवाह अधिक करते हैं। आसुर विवाह में वर पक्ष वाले कन्या पक्ष वालों को दिया करते थे अब उसके विपरीत वर पक्षवाले कन्या पक्ष वालों से मागते हैं इसका भी उल्लेख पुरानी स्मृतियों मे नहीं है। यह दो विवाह इस समय प्रचलित हैं और दोनों ही निन्दनीय हैं।

महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में विवाह प्रकरण में मनुस्मृति के आधार पर आठ विवाह लिखे हैं उनमे भी दो निन्दनीय हैं दो मध्यम और चार श्रेष्ठ हैं ऐसा लेख है। इस समय ब्राह्म का प्रचार बढ़ाना चाहिये दैव विवाह मे धन व्यय न करके परोपकार के कार्यों मे व्यय करना ठीक होगा आर्ष मिट चुका है प्राजापत्य, गंधर्व भी अच्छी तरह हो सकते हैं राक्षस, पिशाच, आसुर का तो नाम भी न लेना चाहिये।

वैदिक यज्ञों की अहिंसात्मकता

(लेखक—प्र० स्वा० धर्मदेव सिद्धान्तालङ्कार विद्यावाचस्पति वैदिकधर्मप्रचारक)

(नवम अखिलभारतीय प्राच्य विपश्चित्सम्मेलन (All India Oriental Conference) के ट्रिवेन्ड्रम (ट्रावनन्कोर) अधिवेशन मे २१-१२-३७ को प्रो० सुनीति कुमार चैटर्जी के सभापतित्व में पढे सस्कृत निबन्ध का भाषानुवाद)

ओ३म् योभूतं च भव्यं च सर्व यश्चाधितिष्ठिति स्वर्यस्य चकेवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणेनमः ॥

ओ३म् अग्नेय यज्ञमध्वरं विश्वत परिभूरसि। स इद् देवेषुगच्छति ॥ ऋ १। १। ४

श्रीयुत मान्य सभापति जी तथा मान्य विद्वद्-वृन्द।

आज में आपके सामने वैदिकयज्ञों की अहिंसात्मकता" इस विषय पर निबन्ध पढना चाहता हूँ। सत्य सनातन वैदिकधर्म के प्रेमी आप सब इस निबन्ध को सावधान होकर सुनेंगे और निष्पक्ष हो कर इस आवश्यक विषय पर विचार करेंगे ऐसा मेरा दृढ विश्वास है। समय के सकोच के कारण मै विस्तार से सब प्रमाणो को प्रस्तुत नही कर सकूंगा और न उनकी समालोचना कर सकूंगा इस बात का मुझे खेद है। संक्षेप से ही इस विषय पर प्रकाश डालने का प्रयत्न करूंगा।

(१) यज्ञ की प्रधान धर्मता—

सम्पूर्ण वैदिक साहित्य के अनुशीलन करने पर यज्ञ के प्रधान धर्म होने मे सन्देह का जरा भी कारण नही हो सकता।

"यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेहनाकंमहिमानः सचन्त यत्रपूर्वे साध्या सन्ति देवाः॥' ऋ० १०। ९०।

इत्यादि वेदमन्त्र यज्ञ को प्रधान धर्म बताते हुए उसके द्वारा पूजनीय भगवान् की पूजा का प्रतिपादन करते हैं। विष्णुर्वै यज्ञः ॥ऐत० १। १५ विष्णुर्यज्ञः। गोपथ उ० १। १२ विद्वांसो हिदेवाः॥ (शतपथ ३। ७। ७। ३ सत्यसहिता वैदेवा ॥ ऐत० १। ६ सत्यमयाउ देवाः॥ (कौषीतकि ब्रा० २।८) इत्यादि प्रमाणों से मन्त्र के प्रथम चरण का उपर्युक्त अभिप्राय है कि सत्यनिष्ठ विद्वान् लोग यज्ञ के द्वारा पूजनीय परमेश्वर की पूजा करते है। मन्त्र के २य चरण मे यज्ञ के सब से उत्तम धर्म होने और तृतीय चतुर्थ चरणो मे उसके द्वारा ही विद्वान् सकल क्लेश रहित परमानन्द रूप मोक्ष को प्राप्त करते हैं यह बताया गया है।

(२) यज्ञ शब्द के अर्थ का विमर्श—

अब इस बात का विचार करना है कि यज्ञ शब्द का अर्थ क्या है ? उसके महत्व का विशेष कारण क्या है ? और क्यों 'यज्ञेनयज्ञमयजन्त-देवा' इसमे यज्ञ के लिये एक वचन का प्रयोग होने पर भी 'तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् बहुवचन का प्रयोग किया गया है ?

सब से पूर्व यज् धातु से बने यज्ञ शब्द के धात्वर्थ का धातु पाठ के आधार पर विचार किया जाएगा। धातु पाठ मे यज् धातु के देव पूजा संगति करण दान ये तीन अर्थ बताये गये है। सत्यनिष्ठ विद्वानों को देव नाम से कहा जाता है इस बात को सप्रमाण पहले दिखाया ही जा चुका है। सङ्गति करण का अर्थ जनता मे एकता उत्पन्न करना तथा सङ्घ सम्मेलनादि द्वारा मिल कर कार्य करना है।

दातव्यमिति यत् दानं दीयतेऽनुपकारिणे।
देश काले चपात्रे च, तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्॥
(गीता अ० १७)

इत्यादि गीता वचन के अनुसार देश काल पात्र का विचार करके कर्त्तव्य बुद्धि से अनाथ असहाय दुखित तथा उत्तम सस्थाओ की सहायता करना दान है। इस प्रकार यह स्पष्ट ज्ञात होता हैं कि यज्ञ शब्द द्वारा हमारे तीनो प्रकोर के उत्तम कर्त्तव्यो का जो अपने से बड़ों, अपने समानों तथा किसी अवस्था मे हमारी अपेक्षा हीन स्थिति के लोगों के प्रति हैं, समावेश हो जाता है जिन्हे क्रम से पूजा वा सत्कार, सगति करण और दान श दो द्वारा बताया गया है। यज्ञ शब्द के एक होने पर भी इन तीन प्रकार के कर्त्तव्यो का बोधक होने के कारण 'तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्' यहां बहुवचन के प्रयोग का रहस्य तथा सार्थकता इस व्याख्या से स्पष्ट हो जाती हैं। 'यज्ञो वैश्रेष्ठतमंकम' (शत० ।१।७।१।५) 'यज्ञो हि श्रेष्ठतमं कर्म' (तै० ३।२।१।४) इत्यादि वचनो की यथार्थता को भी बुद्धिमान इस प्रकार जान सकते हैं। इस रीति से यज्ञ का शब्दार्थ सक्षेप से बताकर उसकी व्यापकता और विशालता का प्रति पादन किया जाता है।

(३) यज्ञ शब्द की उदात्तता और व्यापकता—

यज्ञ शब्द अत्यन्त व्यापक है और परोपकारार्थ केवल कर्त्तव्य बुद्धि से किये जाने वाले सब शुभकर्मों को यज्ञ नाम से पुकारा जा सकता है। यह वेद ब्राह्मण उपनिषत्, भगवत् गीता आदि के अनुशीलन से हमे स्पष्ट ज्ञात होता है। 'यज्ञो वै सुम्नम्" (शत० ७।२।२।४) यज्ञो वै विट (शत० १४।३।१।८) 'यज्ञो वै विशो यज्ञे हि सर्वाणि भूतानि विष्टानि।" (शत० ८।७।३।२१) "पुरुषो वाव यज्ञ" (छान्दोग्य) "पुरुषो यज्ञ" (शत० ३।१।४।२३)

द्रव्य यज्ञास्तपो यज्ञा, योगयज्ञास्तथापरे।
स्वाध्याय ज्ञान यज्ञाश्च, यतय संशित व्रता॥ २९
अपाने जुह्वतिं प्राण, प्राणेऽपानं तथापरे।
प्राणापानगती रुद्ध्वा, प्राणायाम परायणा॥ २८
अपरे नियताहारा, प्राणान् प्राणेषु जुह्वति।
सर्वेऽप्येते यज्ञ विदो, यज्ञ क्षपित कल्मषा॥ ३०
गी अ ४

"आत्मा यजमानो मनो ब्रह्मा लोभादयः पशवः।" (गर्भोपनि०) 'अस्य शरीर यज्ञस्य आत्मा यजमान, बुद्धि पत्नी, ओङ्कारो यूप, काम पशु, केशा दर्भानः इत्यादि (प्राणाग्नि होत्रोपनि) यज्ञस्यात्मा यजमान, श्रद्धा पत्नी शरीर निध्मम् हृदय यूप, मन्युः पशु दम शमयिता (महानारायणोपनि०) "आत्मा वै यज्ञ." (शत० ६।२।१।७) "वागु यज्ञ" (शत० १।१।४।११) इत्यादि वाक्यों

भारतवर्ष और समाज-सेवा

[ले०—श्री० स्वामी सम्बुद्धानन्द (रामकृष्ण मिशन)]

(अंग्रेजी लेख का सार)

(१)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। संसार मे होश संभालते ही वह अपने को सामाजिक वातावरण में रखा हुआ अनुभव करता है। ज्यों २ उसकी आयु और उसके ज्ञान मे वृद्धि होती है, वह सामाजिक जीवन के अधिकारों और प्रसादों का आनन्दानुभव करता है। यत वह बुद्धि से युक्त होता है इसलिए उसे सहज ही यह अनुभव हो जाता है कि समाज के लिए बदले के रूप मे उसे भी कुछ करना है। बाद मे वह समय आ जाता है जब वह समाज सेवा को मनुष्य का जन्म-सिद्ध अधिकार मानने लगता है।

एक शब्द मे समाज-सेवा का अर्थ प्रेम-प्रयास है। जब समाज सेवा बिना किसी स्वार्थ या फल की कामना से की जाती है तब यह उपकार कार्य्य समझा जाता है। शाब्दिक रूप मे वह सेवा जो किसी सोसायटी के लिए अभिप्रेत होती है सामाजिक और जब वह किसी देश की समस्त सोसाइटियों के लिए अभिप्रेत होती है तब राष्ट्रीय और जब वह बिना किसी प्रकार के भेद-भाव के विशाल मानव-समाज के प्रति अभिप्रेत होती है तब जनोपकारक कहलाती है।

समाज-सेवा आत्म-विकास का सर्वोत्तम साधन है। मनुष्य जीवन की सर्वाङ्गीण पूर्णता की सिद्धि का यत्न है। प्रत्येक यत्न जब वह सच्चा और शुद्ध होता है अनायास ही सामाजिक और देशीय सीमाओं का अतिक्रमण करके विश्व प्रेम की सर्वोच्च शिखा पर आसीन हो जाता है।

भारतवर्ष मे समाज-सेवा विशेषता-शून्य नहीं है। ग्रेट ब्रिटेन और अमेरिका मे इस शब्द का कुछ भिन्न अर्थ है। भारतवर्ष मे समाज-सेवा अपने को ऊंचा समझने तथा अहकार भावना से रहित है जो प्राय परोपकार के इस प्रकार के कार्य्यों के साथ अविच्छिन्न रूप मे जुड़े होते है। भारतवर्ष मे इस प्रकार के कार्य्य प्रेम और श्रद्धा के भावों के सूचक होते हैं। समाज-सेवा की कुजी नि स्वार्थ भावना और बलिदान है। समाज-सेवा के प्रत्येक कार्य्य मे नि स्वार्थ-भावना अवश्य ही सर्वोपरि होनी चाहिए। अन्यथा वह

पशुहिंसा कभी न करनी चाहिये और ज्ञानियो से यज्ञ के तत्त्व का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये।

विस्तार के भय से इस विषयक अन्य मन्त्रो का यहां उल्लेख नही किया जा सकता। ईश्वरीय ज्ञान रूप वेदों मे कभी परस्पर विरोध नहीं हो सकता। सायण उव्वट महीधर आदि के भाष्यो म जहां यज्ञो मे हशहिंसा का प्र तिपादन प्रतीत होता है वह भाग परस्पर विरुद्ध और ऊपर उद्धृत वैदिक आदेशो के विरुद्ध होने के कारण सर्वथा अमान्य है॥

(क्रमश)

कार्य्य निश्चित असेवा समझा जायगा । भारतवर्ष में बिना त्याग के सेवा सोची भी नहीं जा सकती। सेवा अविच्छिन्न रूप में त्याग के साथ सम्बद्ध होती है। सेवा और त्याग एक दूसरे का बहिष्करण नहीं करते हैं वरन् शरीर और आत्मा के सदृश एक दूसरे पर आश्रित होते हैं। समस्त प्रकार की सेवाओं की अन्तरात्मा 'त्याग' होता है इसी मे वह प्रगट होती और चमकती है।

समाज-सेवा जैसी कि ऊपर प्रस्तुत की गई है वर्तमान युग की साम्यवादी सेवा से नितान्त भिन्न है और हमे किसी प्रकार के भ्रम में नही पड़ना चाहिए। साम्यवाद जो पूर्णतया एक 'वाद' और आन्दोलन है और जिसका उद्देश्य सम्मिलित स्वामित्व एवं उत्पत्ति और निर्यात के साधनो पर सम्मिलित शासन के द्वारा जन-साधारण के स्वार्थों के लिए जाति का सामूहिक संगठन करना है, एक एक करके देशों पर आक्रमण कर रहा है और पिछली कई शताब्दियों से संसार को प्रभावित कर रहा है। वर्तमान साम्यवादी न धर्म्म का समर्थन ही करते हैं और न विरोध ही। परन्तु भारतवर्ष में समाज सेवा वैसी ही पवित्र और शुद्ध मानी जाती है जैसा धर्म्म माना जाता है। इतना ही नहीं, धार्मिक जीवन के प्रत्येक व्यापार में यह महत्व पूर्ण स्थान रखती है और धर्म का एक अनिवार्य अंग समझी जाती है। यत: सेवा पीड़ित मानव-समाज की शारीरिक 'बौद्धिक' आचारिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं से सम्बन्धित होती है इसलिए सेवा कार्य्यों का निम्न प्रकार वर्गीकरण हो सकता है —

(१) आर्थिक (२) मानसिक (३) आध्यात्मिक और (४) शारीरिक।

प्रत्येक राष्ट्र का अपना निजू आदर्श होता है। भारतवर्ष के राष्ट्रीय आदर्श सेवा और आत्म-समर्पण हैं। इन स्रोतों मे उसे दृढ बनाओ शेष के लिए वह स्वय व्यवस्था कर लेगा। सेवा और त्याग भारतीय संस्कृति की आधार-भित्ति हैं। उसकी आकांक्षाएं और भावनाएँ सुरक्षा और समृद्धि ये सब इस ऊंचे आध्यात्मिक आदर्श पर केन्द्रित हैं। इसी आदर्श से भारतवर्ष ने संसार मे एक वार अपना अद्भुत महत्व स्थापित किया था। अब उसके लिए इसमें परिवर्तन करना असंभव है। भारतवर्ष का यह आदर्श उतना ही पुराना है जितनी यह सृष्टि है। यह कहना कि भारतवर्ष में समाज सेवा का आदर्श अपने विविध प्रकाशमान रूपों मे सृष्टि के प्रारम्भ से आज तक विद्यमान है अत्युक्ति नहीं है।

भारत में नवजीवन और पश्चिमी जगत्

(लेखक—एक मर्मज्ञ)

संस्कृतियों का इतिहास 'विचारों की विजय' होती है। इतिहास के सुदूर प्रभात से जब बड़ी २ संस्कृतियों का सूत्रपात हुआ और वे विकसित हुई प्रत्येक संस्कृति कुछ मुख्य २ विचारों को क्रिया में लाने का यत्न करती रही हैं और वे विचार उस संस्कृति के प्रत्येक पहलू पर अपनी छाप छोड़ गए हैं। रोम की संस्कृति कानून और व्यवस्था पर यूनान की संस्कृति स्वतन्त्रता पर, असीरिया की संस्कृति युद्धवाद पर और चीन की संस्कृति आचार सम्बन्धी उत्थान पर केंद्रित रही है। भारतीय संस्कृति का मुख्य और निराला स्वर नए २ और ताजे रूपों में आत्मा का अवगाहन करता रहा है।

भविष्य में संसार की जो संस्कृति विकसित होगी, जिसमें प्रत्येक देश अपना श्रेष्ठतम योग देगा उसमें भारत वर्ष का योग स्थिर महत्व का योग होगा क्योंकि केवल आत्मा ही भौतिक वाद की विनाशक और भयावह शक्तियों को काबू में रख सकता है साथ ही अलौकिक वस्तु ही लौकिक चीजों का ठीक २ नियन्त्रण और समन्वय कर सकती है। यह सचाई धीरे २ जाति विद्वेष की दीवारों पर विजयी हो रही है और पश्चिम के ईमानदार विचारक इस सचाई को स्वीकार कर रहे हैं, सर फ्रांसिस यंग हज़बैंड, आध्यात्मिक विषयों में जिनकी दिलचस्पी प्रसिद्ध है 'न्यू यार्क टाइम्ज मैगज़ीन, (New York Times Magazine) में एक छोटे लेख में इस सचाई की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं।

'भारत में आध्यात्मिक नवजीवन की प्रेरणा मिल रही है' शीर्षक मे लिखते हुए, लिखते हैं —'

हजारों लाखों वर्ष तक भारत वर्ष अध्यात्म वाद का मूल-स्रोत रहा है। भारत वर्ष में ऐसे बहुत से पवित्र व्यक्ति छुपे पड़े हैं जो पब्लिक प्रदर्शन और प्रकाशन से घृणा करते हैं। इसलिए उत्सुक अन्वेषकों को स्वयं उनकी तलाश करनी चाहिए। जिस प्रकार शहद की मक्खी शहद के लिए फूलों के पास जाती है उसी प्रकार हमें भी उनके पास जाना चाहिए और वे लोग हमारे पास आयेंगे यह आशा नहीं करनी चाहिए। यह ठीक है युरोप और अमेरिका मे लैक्चर देने के लिए भारतीय आते हैं परन्तु विचारों के प्रसार का यह स्वाभाविक तरीका नहीं है और पब्लिक प्लैट-फ़ार्म पर हम उन्हें सफल रूपमें नहीं देखते हैं। इसी लिए वे अत्यन्त बहुमूल्य चीज़ हमे नहीं दे पाते हैं। यदि हम उस बहुमूल्य वस्तु को चाहते हैं तो हमें ही उनके पास जाना चाहिए।

पश्चिम के लोगों को भारतीयों के पास क्यों जाना चाहिए? इस प्रश्न का उत्तर सीधा साधा है। भारत वर्ष का आत्म ज्ञान ही संसार की वर्तमान अशान्ति को दूर करके शान्ति स्थापित कर सकता है। हम पश्चिम वालों को अपने बड़प्पन के ख़याल को

शंका समाधान

VIII. ASHRAMAS

1 What do "Ashramas" in a man's life represent ?

2 Is it desirable to preserve them ? If so in what form ?

3. Are they to be renovated ?

4 If they are to be renovated, what should be the Dharma of a person in each of the Ashramas ?

ASHRAMAS.

1. Ashramas represent four stages of ones, life, Brahmacharya the only compulsory and the other optionals.

2 Preservation of all the four is desirable but a discipline is necessary regarding the Vanaprastha and Sanyasa Undesirable element entering into these ashramas should be discouraged

4. Manusmriti gives the necessary Dharma

आश्रम

प्रश्न

१—मनुष्य के जीवन में 'आश्रमों का क्या महत्व है ?

२—क्या आश्रमों का बनाए रखना वाञ्छनीय है ? यदि हाँ तो किस रूपमें ?

३—क्या वे पुनर्जीवित होने चाहिएँ ?

४—यदि वे पुनर्जीवित हों तो प्रत्येक आश्रम धर्मी का धर्म क्या होना चाहिए—

उत्तर

(१) आश्रम के ४ विभागों को जाहिर करते हैं। ब्रह्मचर्य उनमें अनिवार्य है और अन्य दूसरे ऐच्छिक हैं।

(२) चारों आश्रमों का बनाए रखना वाञ्छनीय है परन्तु वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम के लिए नियन्त्रण आवश्यक है। उन आश्रमों में अवाञ्छनीय अंश का प्रवेश निरुत्साहित होना चाहिए।

(३) मनुस्मृति मे आश्रमों के आवश्यक धर्म मौजूद हैं—

दूर रख कर यह स्वीकार करना ही होगा कि यदि भारत वर्ष वैज्ञानिक उन्नति, यांत्रिक आविष्कारों, बड़े२ व्यापारों शासन और सगठन कला में पश्चिम से बहुत कुछ सीख सकता है तो हमें भी आत्मिक ज्ञान विज्ञान में, जिसकी हम में भय कर कमी है, भारत से बहुत कुछ सीखना है। हम भारत वर्ष के आध्यात्मिक नेताओं से सीख सकते हैं कि जब तक आत्मा की बाहरी गति को उसकी अन्दरूनी गति में परिणत नहीं करते तबतक हमारा कल्याण सभव नहीं है।

पुनर्जन्म

प्रश्न—आवागमन सत्य है वा असत्य और इसका क्या प्रमाण है ?

उत्तर—आवागमन सत्य है। जो जैसे कर्म करता है वैसा ही शरीर पाता है। अच्छे कर्म करने से मनुष्य का और बुरे कर्म करने से पक्षी आदि का। बहुत उत्तम कर्म करने से मनुष्य देवता अर्थात् विद्वान और बुद्धिमान होता है।

प्रश्न—अन्य प्रमाण इसके सम्बन्ध में दीजिए ?

उत्तर—(१) बालक पैदा होते ही अपनी माता का दूध पीने लगता है क्यों कि उसको पहले जन्म का अभ्यास बना रहता है।

(२) संसार मे लोगों को धनी, कंगाल, सुखी, दुखी अनेक प्रकार के ऊच नीच देखने से विदित होता है यह सब पूर्व्वजन्म के कर्मों के कारण हैं।

(३) जीव अनादि है। यदि जीव का एक ही जन्म हो तो जगत में सुख दुख की व्यवस्था नहीं रहती फिर यह भी है कि मरने के बाद कयामत के दिन तक न्याय की प्रतीक्षा मे जीव को हवालात में रहना होगा।

(४) जीव और जीव के गुण, कर्म स्वभाव अनादि हैं और परमेश्वर के न्याय करना आदि गुण भी अनादि हैं। जीव के कर्मों का जो प्रवाह रूप से अनादि चले आते हैं, ठीक २ फल देना ईश्वर का काम है। कर्म फल जीव विना शरीर धारण किए पा नहीं सकता अतः आवागमन सिद्ध है। जीव के हर जन्म में संचित और क्रियमाण कर्म होते हैं, एक जन्म का जोक्रियमाण कर्म है, दूसरे जन्म का संचित कर्म बनता है। जो जीव की उत्पत्ति मानी जावे तो उसका नाश भी मानना पडेगा क्यों कि उत्पत्ति और विनाश दोनों का ही कुछ कारण अवश्य होना चाहिए। बिना कारण के कार्य्य की उत्पत्ति नहीं हो सकती।

(५) ऐसे बहुत से बच्चों के प्रमाण से आवागमन सिद्ध है जिन्हों ने अपने पूर्व जन्म की ठीक २ बातें बतलाई हैं।

(६) एक ही माता पिता की, एक ही परिस्थितियों और वातावरण मे पली हुई सन्तानों में मानसिक रुझानों बुद्धि और प्रतिभा इत्यादि में विभिन्नता होती है। कोई चंचल होता है, कोई शान्त होता है। कोई बुद्धिमान होता है कोई कम बुद्धिमान होता है। कोई मूर्ख होता है। यह विभिन्नता पुनर्जन्म को सिद्ध करती है। इसके अतिरिक्त बहुत से कुटुम्बों में ऐसी विशेषताओं के साथ व्यक्ति जन्म लेते हैं जो उन कुटुम्बो मे नहीं होती हैं। उदाहरणार्थ कहते हैं, शेक्सपीयर के कुटुम्ब मे उसके पूर्व कोई कवि नहीं देखा या सुना गया था।

क्रमशः

॥ विद्या धर्मेण शोभते ॥ — धर्म से ही विद्या की शोभा होती है।

आर्य कुमार जगत्

विजयी युवक

(लेखक—श्रीयुत् डाक्टर युद्धवीर सिंह जी, उप प्रधान भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्, उप मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)

यूं तो प्रत्येक मनुष्य की लेकिन प्रत्येक युवक की तो अवश्य ही यह कामना होती है कि वह विजयी बने। चाहे वह किसी भी क्षेत्र में कार्य कर रहा हो उसकी प्रबल इच्छा यह होती है कि वह सब से आगे रहे। अगर वह डाक्टर या वकील है तो एक दम यश और धन कमा लेना चाहता है। वह व्यवसायी है तो अपने कारबार को सब से बढ़ कर चलाना चाहता है। उसकी मनोवृत्तियाँ धार्मिक हैं तो वह समाज में उच्च कोटि का धर्मोपदेशक बनना चाहता है। राजनीति मे नेता बनने को उसकी उत्कट अभिलाषा रहती है—इत्यादि। यह है युवक का स्वभाव। यदि कभी किसी देश और जाति के युवकों में से यह स्वाभाविक भावना जाती रहे उनके हृदयों में ऊंचा उठने और आगे बढ़ने की उमंग और उत्साह न रहे तो समझ लीजिए उस जाति या समाज का नाश अवश्यंभावी है। उस जाति के बडे चाहे जितना ज़ोर लगावें यदि उसके युवक निरुत्साह हो गए हैं तो वह जाति गढे मे गिरेगी और अवश्य गिरेगी। इसी लिए जाति के समझदार और बूढे नेता युवकों को भी निरुत्साहित नहीं करते।

एक किस्सा कभी किन्हीं मौलवी साहब ने सुनाया था वह यह कि एक पठान सौदागर ने अपने लडके को पढाने के लिए एक मौलवी साहब रखे। एक दिन ठीक न पढने के कारण मौलवी साहब ने लडके को गाली दी और शायद चपत भी मारा। पठान युवक अपना अपमान बरदाश्त न कर सका और उसने खूंटी पर से अपने पिता की तलवार उतार ली। तलवार के दर्शन करते ही बूढे मौलवी भाग खड़े हुए। पीछे युवक पठान और आगे मौलवी जा रहे थे कि रास्ते में पठान मिल गया। उसने घबराकर मौलवी साहब से सब हाल पूछा। और सारा किस्सा सुन कर मौलवी को पकड़ कर बोला कि "मौलाना! मेरे लड़के ने आज सब से पहिली दफा तलवार उठाई है। उसको भला तलवार उठाते ही आज मैं कैसे रोक दू"।

किस्सा साधारण है मगर वह मूर्ख पठान भी युवक हृदय को समझता था। युवकों का उत्साह भग करने से क्या हानि होती है इस को जिस

जाति के नेता समझते हैं वे जातियां आगे बढ़ती हैं। जब हम कालेज मे पढ़ते थे तो यह देख कर मुझे बड़ा आश्चर्य होता था कि अंग्रेज प्रिन्सिपल और प्रोफैसर लड़कों की शरारतों और नटखटपन की शिकायतों को बड़ी ही साधारण दृष्टि से देखा करते थे और कभी २ तो वे लड़कों का बड़ा पक्ष भी लेते थे। मगर हिन्दुस्तानी प्रोफ़ैसरों से ऐसी आशा रखना व्यर्थ था। वे जरा सी बात पर लड़कों को अपमानित करने में झिझकते न थे। हमारे युवक भी क्या आज विजय कामना लेकर आगे बढ़ रहे हैं। और अगर नहीं बढ़ रहे हैं, उत्साहहीन हैं तो क्या युवकों का दोष है। नहीं दोष हमारा है। आज आर्य समाज का युवक कहा है? आर्य समाज की गोद मे पला, आर्य समाज के स्कूल और कालेज में शिक्षा पाया हुआ युवक आर्य समाज से रुष्ट है—आर्य समाज मे नहीं है। दोष किसका है? आर्य समाज का या युवक का? यह एक प्रश्न है जिस पर यदि आज आर्य समाज के नेताओं ने विचार नहीं किया तो कल आर्यसमाज शनै २ मृत्युपथ पर दिखाई देगा।

युवक से आप एक ही माँग कर सकते हैं कि वह अभिवादनशील हो—बुजुर्गों की इज़्ज़त करने वाला हो। मगर उसके मुक़ाबले में बुज़ुर्गों को उस युवक को एक चतुर माली की तरह किस तरह पालना पोसना है, किस तरह उसका दिल रखना, उसका मान रखना, उसका उत्साह भंग न करना, उसकी उत्तम शिक्षा और दीक्षा करना है, यह कभी हमने शायद नहीं सोचा है। हमारे समाज के जीवन और मरण का प्रश्न आज हमारे युवकों की कामनाओं पर है।

उत्साही युवक समाज की शक्ति होते हैं। यह जान लेना बहुत ज़रूरी है कि उपदेश और लख जीवन और उत्साह नहीं पैदा करते। चूंकि उत्साह चिरकालीन उदासीनता उत्पन्न करता है। उत्साह उत्पन्न करने के लिए वायु मंडल पैदा करना होता है। वायु मंडल पैदा करना आज आर्य युवकों की संस्थाओं—आर्य कुमार सभाओं आदि का कर्त्तव्य है। इनकी उपेक्षा न कर आर्य विद्वानों और नेताओं को इन संस्थाओं को एक फुलवाड़ी की तरह बड़ा समय और धन खर्च करके ऐसा बनाना चाहिए कि जिस प्रकार सुन्दर बाग को देख कर हमारा मन हरा भरा हो जाता है उसी तरह आर्य कुमार सभाओं में शामिल होते ही कुमारों और युवकों के जीवन हरे भरे हो जावें। उनमें उमंगें पैदा हो जावें और वे विजय कामना करने लगें। जब इन संस्थाओं से हम ऐसे कुमार और युवक पैदा करने में समर्थ होंगे जिनके अन्दर विजय—सब ओर विजय करने ही की आकांक्षाएं होंगी तो आर्य समाज और वैदिक धर्म की विजय के लिए हमें कुछ और न करना होगा।

आज तमाम आर्य कुमार सभाएँ और उनके सचालक इस विषय पर गौर करें कि क्या उनकी सभाएं यह फ़र्ज़ पूरा कर रही हैं और हम फिर कभी इसके उपायों पर इन पृष्ठों में विचार करेंगे।

———

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की रजत जयन्ती

आर्य कुमार सभाओं को यह जान कर हर्ष होगा कि भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की रजत जयन्ती के अवसर पर जो कि बिजनौर (संयुक्त प्रान्त) में मई १९३८ के तृतीय सप्ताह में २३वें अखिल भारतवर्षीय आर्य कुमार सम्मेलन के रूप में मनाई जावेगी, परिषद् की ओर से एक पुस्तक प्रकाशित करने का आयोजन किया जा रहा है। इस पुस्तक मे परिषद् के संक्षिप्त इतिहास के अतिरिक्त परिषद् से सबंधित आर्य कुमार सभाओं के वृत्तान्त भी होंगे। इस लिए भारत की समस्त आर्य कुमार सभाओं से हमारी सानुरोध प्रार्थना है कि वे शीघ्र ही अपने संक्षिप्त वृत्तान्त हमारे पास भेज दें तथा जो आर्य कुमार सभाएं अभी परिषद् से सम्बन्धित नहीं हुई हैं वे भी परिषद् के कार्यालय से नियमावलि मँगवा कर शीघ्र ही परिषद् में सम्मिलित हो जावें।

इस पुस्तक मे अन्य ऐसी संस्थाओं के वृत्तान्त रहेंगे जिन मे आर्य कुमार शिक्षा पाते हैं अत गुरुकुलों, डी ए. वी. स्कूलों तथा कालेजों, आर्य अनाथालयों आदि से भी हमारी प्रार्थना है कि वे भी अपने २ संक्षिप्त वृत्तान्त भेजने की कृपा करें। संक्षिप्त वृत्तान्त मे निम्न बातें अवश्य हो —

संस्था कब स्थापित हुई ?

संस्था के अधिष्ठाता का नाम ?

संस्था किस अवस्था मे कार्य कर रही है ?

संस्था के अन्तर्गत आर्य कुमार सभा भी है या नहीं।

हमे पूरी आशा है कि इस पुस्तक को सुन्दर तथा सर्वोपयोगी बनाने मे आर्य कुमार सभाएं तथा अन्य आर्य संस्थाएं हमे पूरा सहयोग देंगी।

जयन्ती के केवल २॥ मास रह गए हैं। इस लिए आप सब को इस सम्बन्ध मे शीघ्रता करली चाहिए।

मन्त्री भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्
१९७०, नया बजार, दिल्ली

हिन्दुस्तानी शिष्टाचार

(लेखक—श्री० पं० रामनारायण जी मिश्र काशी)

—*—

स्वास्थ्य सम्बन्धी

(गताग से आगे)

(२६) रोगी से विशेषकर पागल से, छेड़छाड़ मत करो। रोगी से मीठी बातें करनी चाहिएँ, चिढ़ानेवाली नहीं। रोगी को जल्दी क्रोध आ जाता है, इसका बुरा मत मानो।

(२७) छूतवाले रोगी से दूर रहना चाहिए, परन्तु उसको निस्सहाय (बिना सेवा के) न छोड़ देना चाहिए। जिसको चेचक निकले उसके कपड़े या तो जला देने चाहिएँ या उबलते हुए पानी मे कुछ देर रखने चाहिएँ और उस पानी मे नीम की पत्ती डाल देनी चाहिए।

(२८) आँखो की पूरी रक्षा करो, उठते ही उनको धो डालो, आँख मे मैल आ जाए तो उसको साफ करो। आँखें आ जाएँ तो धूप रोशनी की चमक, गर्द और मक्खी से उनको बचाओ और हरे कपडे से उनको ढक दो। यह छूतवाला रोग है।

सगतराश, सान रखने वाले नाल जड़नेवाले, आतशबाजी आदि से आखों को दूर रखो। हरी तरकारी, दूध, मक्खन आदि और हलके भोजन से आखों की रक्षा होती है।

(२९) जिस रूई या कपडे आदि से पीप या खून पोंछा जाय उसको जला डालना चाहिए।

(३०) साधारण रोगी के भी कपडे, बिछौने रोज बदलो।

(३१) साधारण रोगी के पास भी उन्हीं को जाना चाहिए जो उसकी सेवा करना चाहे या उसका दिल बहला सकें। रोगी के पास भीड लगाना या रोगी से प्रश्न करना या जबरदस्ती या जोर से बातचीत करना अच्छा नहीं। किसी रोगी को देखने जाना ही पडे तो अपने साथ बच्चों को न ले जाओ।

(३२) थरमामेटर मुँह या बगल मे लगाने के पहले और बाद धो डालना चाहिए।

(३३) बीमार के सामने, विशेषकर रोगी बच्चे के सामने लड्डू, पेडा या चटपटी चीजें मत खाओ या उससे कहकर मेले तमाशे मे मत जाओ।

(३४) क्षय रोग के रोगी के थूक को गाड़ देना चाहिए या जला देना चाहिए। उसको पुराने कपडे के रूमाल या थैली मे थूकना चाहिए जिसको जला देना चाहिए।

(३५) हर जगह थूकने की आदत बुरी है। इससे बीमारी फैलती है। रोग के कारण थूकना जरूरी हो तो पीकदान आदि रखो। हर जगह नाक भी नहीं सिनकना चाहिए इसके लिए रूमाल रखो।

(३६) लिफाफा थूक लगाकर नहीं बंद करना चाहिए, न उस पर थूक से टिकट चिपकाना चाहिए और न पोथी के पन्ने थूक लगाकर उलटने चाहिएँ।

(३७) नदी या तालाब के अंदर कुल्ला नहीं करना चाहिए। उसके अन्दर मल-मूत्र, कूड़ा-कचड़, कांटा आदि फेंकना तो बहुत ही बुरा है।

(३८) सवेरे उठकर कुल्ला करो। दातन की जिस कूची से दांत साफ करो, उसी कूची को आगे-पीछे मसूढ़ों पर भी रगड़ो और दातन के दो टुकड़े करके उसी से जीभ साफ कर लो; तब उसको धोकर कूड़े की टोकरी मे फेंक दो। दातन बिना धोए मत फेंको। दातन और कुल्ला इस प्रकार करो कि दांत के आगे और पीछे का हिस्सा, जीभ, मसूढ़े आदि भी साफ हो जायें।

(३९) सोने से पहले रात को भी मंजन से दांत साफ करो या दातन कर लो। ऐसा करने से दांत साफ और सफेद रहेंगे और मुंह से बदबू नहीं आएगी। कड़वे तेल में नमक डालकर उससे दांत साफ कर लेना बहुत अच्छा है।

(४०) सवेरे बिना शौचादि गए और दांत साफ किए कुछ मत खाओ। भोजन तो नहाने के बाद ही करना अच्छा है।

(४१) जिस बर्तन मे एक बार पानी पी लो या खाना खा लो, या कोई दूसरा पानी पी ले या खाना खा ले, उसको माजकर तब काम में लाओ। जब बर्तन जूठा हो जाय तब उसको अलग एक तरफ रख दो। बर्तन मिट्टी का हो तो उसको एक ही बार इस्तेमाल करके फेंक दो।

(४२) दूसरे का इस्तेमाल किया हुआ साबुन, रूमाल या तौलिया यथासंभव काम में न लाओ।

(४३) दूसरे की इस्तेमाल की हुई बासुरी मत बजाओ। बजानी ही पड़े तो उसको पानी से खूब धो लो।

(४४) एक ओढ़ने में दो आदमी मत सोओ। बचपन ही से अलग सोने की आदत डालो। दूसरे के ओढ़ने और बिछौने को बिना धोये काम मे मत लाओ।

(४५) दूसरे की पहनी हुई धोती, जब तक खूब साफ न हो जाय, काम में मत लाओ।

(४६) दूसरे की इस्तेमाल की हुई कंघी काम में कभी मत लाओ। दूसरे की इस्तेमाल की हुई आख मे सुरमा लगाने की सलाई इस्तेमाल मत करो।

(४७) जिस कपड़े पर स्याही का, पान का या और किसी चीज का दाग लग जाय उसको, जब तक दाग छूट न जाय, मत पहनो। थोड़ा सावधान रहने से ऐसा दाग लगने ही नहीं पाएगा।

(४८) जिस कपड़े को पहनकर शौचादि जाओ या हजामत बनवाओ, उसको धो डालना अच्छा है।

(४९) शौचादि के लिए पानी कम मत ले जाओ। लघुशंका के बाद भी पानी का प्रयोग करो।

(५०) खेत में शौच जाओ तो उठने के बाद मल को मिट्टी से ढक दो। ढूंढने से मिट्टी न मिले तो लोटे से जमीन खुरचकर जमा कर लो। खुर्पी से गढ़ा खोदकर उसी में शौच जाना और पीछे उसमें मिट्टी भर देना सबसे अच्छा है।

(शेष फिर)

प्राप्ति स्वीकार

१—भक्ति प्रकाश या अनमोल मोती, आर्य्य प्रतिनिधि सभा मौरिशस द्वारा प्रकाशित।

२—सिद्धान्त कौमुदी की अन्त्येष्टि, लेखक श्री० पं० राजेन्द्रनाथ शास्त्री प्रकाशक दयानन्द सेवा संघ निगम बोध घाट देहली मूल्य ≡) ।

३—टंकारा लेखक श्री प० श्रीकृष्ण शर्मा आर्य्य मिशनरी। प्रकाशक—दयानन्द मिशन राजकोट मूल्य ।≈)

४—संगीत सुधा—अर्थात परिषद् गीतिकाएं, सपादक—१ ब्र० भूदेव २ ब्र० ज्ञानेन्द्र गुरुकुल वृन्दावन प्रकाशक—प्रकाशन विभाग आर्य्य, प्र० सभा संयुक्तप्रान्त मूल्य ≈)

५—मूर्ति पूजा रहस्य (गुजराती), लेखक—प० ज्ञानेन्द्र सिद्धान्त भूषण विलीमोरा B B & C. I मूल्य)।

६—स्वामी जी की पाठ विधि का वास्तविक स्वरूप, लेखक—आचार्य विश्वश्रवा, प्रकाशक—वेद मन्दिर कार्यालय ११ बाज़ार मोतीलाल बरेली (यू० पी०) मूल्य ।)

७—वेद और विज्ञान वाद, लेखक—श्री० प्रेम चन्द जी काव्य तीर्थ। प्रकाशक—साहित्य सदन हिन्दू महा सभा भवन नई देहली मूल्य ।)

८—भजन कीर्तन (छटा संस्करण), श्री प० केशवदेव ज्ञानी द्वारा संगृहीत और सपादित प्रकाशक—आर्य्य समाज मद्रास मूल्य ≈)

९—(Hinduism and Islam) हिन्दू धर्म और इस्लाम, लेखक—पं० केशवदेव ज्ञानी प्रकाशक—आर्य्य समाज मद्रास।

१०—Verses from the Vedas, वेद मन्त्रों का संग्रह टीका सहित, लेखक—प० केशवदेव ज्ञानी प्रकाशक—आर्य्य समाज मद्रास,

११—Atharvana Collection of Hymnes पिप्पलाद सहिता, श्री प० रामदत्त शुक्ल एडवोकेट तथा श्री० वासुदेव शरण एडवोकेट। प्रकाशक—प्रकाशन विभाग आर्य्य प्र० सभा संयुक्त प्रान्त (मेरठ) मूल्य ≡)

१२—Indian Influence on Early Western Thought प्रारम्भिक पाश्चात्य विचारों पर भारतीय प्रभाव, लेखक शिशीर कुमार मित्र मूल्य –)आर्य्य प्र० स० संयुक्त प्रान्त।

१३—Daya Nanda the man & his Work (Reprint) दयानन्द का व्यक्तित्व और उनका कार्य लेखक—श्री० अरविन्द घोष मूल्य –) आर्य्य प्र० सभा० संयुक्त प्रान्त।

१४—A Commentary on Arya Marriage act आर्य विवाह ऐक्ट की व्याख्या। व्याख्याकार श्री बा० घनश्याम सिंह गुप्त प्रधान सार्वदेशिक सभा तथा स्पीकर सी० पी० लैजिस्लेटिव असेम्बली प्रकाशक—शारदा मन्दिर लिमिटेड नई सड़क देहली मूल्य ।)

नोट—उपर्युक्त साहित्य में से समालोचना योग्य साहित्य की समालोचना यथावसर प्रकाशित की जायगी

—संपादक

ऋतुदान सम्बन्धी एक सिद्धान्त का

वैज्ञानिक आधार

(लेखक—श्री. मास्टर आत्मा राम जी अमृतसरी)

वैदिक शास्त्रों मे ऋतुदान की १६ रात्रियों में पूर्णिमा, अमावस्या चतुर्दशी और अष्टमी की अन्य त्याज्य रात्रियो मे गणना की गई है। इसका वैज्ञानिक आधार है।

प्रोफेसर विलैन फोर्ड अपने जीव विज्ञान भूगोल के पृष्ठ ४५ पर लिखते हैं "सबसे बड़ा और सब से छोटा ज्वार भाटा पूर्णिमा और अमावस्या को अथवा इसके कुछ उपरान्त प्रकट होता और बीच के ज्वार भाटे वे हैं जिनमे पानी का उभार और उतार सब से कम हो।'

प्रथम प्रकार के २ कारणो से प्रकट होता है –

(अ) जब सूर्य्य और चन्द्र दोनों पृथ्वी के एक ओर ही हो अर्थात अमावस्या का।

(ब) जब सूर्य्य और चन्द्र विरुद्ध दिशा मे हों अर्थात् पूर्णिमा को और दूसरे प्रकार के ज्वार-भाटे बार २ प्रगट तब होते है जब सूर्य्य और चन्द्र ६० का कोण बनाते हों, अर्थात दोनो अष्टमियों को।

सूर्य्य और चन्द्र के प्रभाव और आकर्षण का खेल वही लोग अनुभव कर सकते हैं जो समुद्र तटों पर बसते है। पूर्णिमा की रात को किस प्रकार समुद्र लहरें मारता हुआ दौड़ता और चचल घोडे की तरह मुह से झाग गिराता हुआ दृष्टि पड़ता है। अमावस्या को किस प्रकार विशेष रीति से धीरे २ नाचता हुआ देख पडता है। अष्टमी को अपना उभार कम किए हुए मानो रेंग रहा है। यही नहीं इस अवसर पर सूर्य्य और चन्द्र का आकर्षण और उनका प्रभाव समुद्र में आश्चर्य जनक परिवर्तन उत्पन्न करते हों, बरन् सारी पृथ्वी की नदियों, तालाबों, फलों और पशुओं के रक्त में भी उनके असर से इस अवसर पर मुख्य परिवर्तन होते है। रक्त मे क्योंकि जल का भाग है इसलिए रक्त पर इन दिनों मुख्य रीति पर प्रभाव पड़ता है। पुरुष की अपेक्षा स्त्री पर चाद का प्रभाव विशेषता से होता है। चतुर्दशी अथवा अमावस्या अष्टमी और पूर्णिमा को पुरुष और स्त्री के वीर्यादि धातु विषम हो जाते हैं। इसलिए यदि ऋतुदान इन पर्व्व तिथियों पर किया जाय तो वीर्य और आर्त्तव व्यर्थ जाते हैं, स्वास्थ्य खराब हो जाता है। यही वजह थी इन पर्व्व तिथियों पर प्राचीन काल मे छुट्टिया हुआ करती थीं। अमावस्या और पूर्णिमा को विशेष हवन यज्ञ स्वास्थ्य रक्षा और जलवायु की शुद्धि के लिए किये जाते थे जिनको पक्षेष्टि यज्ञ कहते थे। जिस प्रकार से इन दिनो मे समुद्र की दशा विषम हो जाती है उसी प्रकार से मनुष्य के रक्त की दशा हो जाती है। उस विषमता को दूर करने के लिए हवन यज्ञ अत्यन्त लाभ कारी है। इस अवसर पर इन यज्ञो के कारण से ही ये दिन मानो आज तक त्यौहार बन रहे है।

विद्यार्थियों को इन दिनों पढ़ने का निषेध है। दूकानदारों के लिए छुट्टिया है। जब साधारण व्यवसाय तक करने का इन दिनो निषेध है तो क्या गर्भाधान से महान कार्य करने की वे ऋषि कभी आज्ञा दे सकते थे? कदापि नहीं। इसलिए ऋषियों का उपदेश इन पर्व्व तिथियों पर विशेष हवन करने का है, न कि स्वास्थ्य का बिगाड़ने और वीर्य नष्ट करने का।

पश्चिम के सारे विद्वान सूर्य्य चन्द्र के जल पर प्रभाव को मानते है, परन्तु अभी तक मनुष्य के शरीर पर इसके प्रभाव को ठीक २ अनुभव नही किया है परन्तु धीरे २ वे इन ऋषि सिद्धान्तों पर ठोकरें खाते हुए आयेंगे।

मद्रास प्रचार

केरल (१)

जनवरी के अधिकांश भाग में साधु शिवप्रसाद जी समाप्रचारक ने ट्रावनकोर राज्य में त्रिवेंद्रम हैडक्वाटर से प्रचार किया। लग भग ११ व्याख्यान दिए। ट्रावनकोर राज्य के दीवान सर सी० पी० रामा स्वामी प्रभृति प्रसिद्ध पुरुषों से धर्म्मालाप किया तथा वैदिक साहित्य भेंट किया।

साधारण जनता में भी काफ़ी साहित्य वितरण किया।

केरल (२)

मञ्जशेरी, मांपारा, वेल्लूर, पाकिल, इन स्थानों में विविध विषयों पर व्याख्यान दिया। लोगों में व्याख्यानों से आर्य समाज के सिद्धान्तों की ओर अभिरुचि बढ़ती जारही है।

निम्न लिखित स्थानों में शुद्धि और प्रचार के सिलसिले में भ्रमण किया और लोगों का ध्यान सामाजिक सिद्धान्तों और शुद्धि की ओर आकर्षित करने के लिए अनेक व्यक्तियों से मिल कर बात चीत की है।

सत्ताईस ईसाइयों की शुद्धि की गई है। मन्दिर प्रवेश की घोषणा होने के बाद बहुत ईसाई वैदिक धर्म में प्रविष्ट होने को तैयार हैं परन्तु उनकी परिस्थिति इस कदर ख़राब है कि ईसाइयों का साथ छोड़ दें तो उनका जीवन निर्वाह कठिन हो जाता है। उनके बच्चों की पढ़ाई आदि में मदद करने के लिए और उन पर आने वाली आपत्तियों का सामना करने के लिए कोई संस्था नहीं। इस लिए वे भी रुके हुए हैं। कोई संस्था उपरोक्त बातों के लिए तैयार हो जाय तो वहां की शुद्धि में और भी सफलता हो सकती है।

निरन्तर हिन्दी क्लास चलता रहा है। साधारण लोगों में बांटने के लिए एक पुस्तक प्रश्नोत्तरी के रूप में लिखना प्रारंभ किया है।

नारायण कृष्ण
सिद्धान्त भूषण

आन्ध्र

विजगापट्टम

इस समय यहां पर समाज चल रही है। यहां पर मैंने एक आर्य हिन्दी विद्यालय भी खोला है। उसमें २० विद्यार्थी तथा ५ विद्यार्थिनियां हैं। इस बार इस विद्यालय की ओर से १० परीक्षार्थी मद्रास की हिन्दी प्रचार सभा की परीक्षाओं में बैठ रहे हैं। परन्तु इसमें जो विद्यार्थी पढ़ने आते हैं वे प्रायः सभी अच्छी स्थिति के हैं अपना पाठ समाप्त करके व धर्म के विषय में चर्चा आरम्भ कर देते हैं। यहां की समाज जैसे तैसे चल चल रहा है द्रव्य एकत्रित करने में सब से अधिक कठिनाई है।

ताडीपल्लीगूडम् में भी साधारण कार्य हुआ है। राजमहिन्द्री में केवल एक चक्कर श्री उपप्रधान जी के साथ लगाया था।

अब तक इधर केवल थोड़ी सी नाममात्र की हल चल हुई है। जनवरी फर्वरी में मैं सारा ध्यान विजगा की ओर दूंगा। यदि यहां पर समाज पूरे पक्के रूप में चल पड़े तो चारों तरफ़ कार्य चलने की पूरी आशा है।

—मदन मोहन, विद्याधर

योग रहस्य

(ले०—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी)

इस पुस्तक में योग के अनेक रहस्यों को उद्घाटित करते हुए उनविधियों को भी बतलाया गया है, जिनसे कोई आदमी जिसे रुचि हो—योग के अभ्यासों को कर सकता है। मूल्य ।-)

मिलने का पता —
सार्वदेशिक सभा (देहली)।

[करनाटक]

All India Oriental- Conference में प्रचार लगभग १६० ईसाइयों की शुद्धि

(दिसम्बर)

इस मास स्ना० धर्म देव जी विद्यावाचस्पति ने बंगलौर शहर, छावनी, मावल्ली ग्राम, दोड्ड बेल्लापुर, ट्रिवेन्ड्रम, करेकुलम अरुवेक्केरे, कन्ननूमुला इत्यादि में प्रचार दलितोद्धार तथा शुद्धि का कार्य किया। १३ दि० को दोड्डबेल्लापुर में एक बालविधवा का विवाह संस्कार कराया। दो नाम करण और १ चूड़ाकर्म संस्कार बंगलौर में कराये। इस मास की उल्लेखनीय घटना त्रिवेन्द्रम (ट्रावन्कोर रियासत की राजधानी) में होनेवाले अखिल भारतीय प्राच्य विपश्चित्सम्मेलन (All India Oriental Conference) के नवम अधिवेशन मे जो २० से २२ दिस० तक डा० थॉमस M, A. C I E Professor of Sanskrit oxford University के सभापतित्व में हुआ स्नातक जी के सदस्य रूप में सम्मिलित हो कर उस में क्रियात्मक भाग लेने की है। स्नातक जी ने कान्फ्रेन्स के वैदिक विभाग में वैदिक-यज्ञानामहिंसात्मकत्वम्" इस विषय पर संस्कृत मे लिखे निबन्ध का यथा आवश्यक अंग्रेजी भाषा मे विवरण सहित २१ दिस० को पढ़ा और उस पर किये गये प्रश्नों का उत्तर दिया (२१ दिस० की शाम को ट्रावन्कोर के महाराज श्री सर बलराम वर्मा जी G. C I E ने कान्फ्रेन्स मे आये कुछ प्रतिष्ठित सज्जनों और देवियों को अपने राज महल (Kandiyar Palace) मे फल भोज के लिये निमन्त्रित किया था। स्नातक जी भी इन आमन्त्रित अतिथियों मे थे। वहा उन्हों ने महाराज को The Mission and Message of Maharshi Dayananda Saraswati, the Mission & Message of Swami Shraddhananda ji, the Glory of the Vedas, Catechism on Vedic Dharma & Arya Samaj, The Significance of the Vedic Sanskaras इत्यादि अपनी बनाई हुई पुस्तकें साक्षात् भेंट की जिन्हें महाराजा ने सधन्यवाद स्वीकार किया। २२ दिस० को कान्फ्रेन्स की पण्डित परिषत् में स्नातक जी ने ब्रह्मस्वरूप निरूपणम्" पर महामहोपाध्याय दण्डपाणि दीक्षित संस्कृत महोपाध्याय अन्नमले युनिवर्सिटी क सभापतित्व में संस्कृत मे व्याख्यान दिया। ट्रावनकोर महाराज भी पण्डित परिषत् में कुछ देर के लिये उस दिन आये थे। Modern Indian Language Section मे भी सम्मिलित हो कर स्नातक जी ने विचार विनिमय में भाग लिया। इन भाषणों के अतिरिक्त स्नातक जी ने कान्फ्रेन्स के सभापति डा० थॉमस, हौलैण्ड के सुप्रसिद्ध विद्वान Dharma and Society नामक वर्णव्यवस्था पर उत्तम पुस्तक के लेखक डा० मीज M A. LL D. जर्मनी के डा० स्ट्रटरहेम, फ्रांस के प्रो० मील, सीलोन के डा० नोल्, शान्तिनिकेतन के प्रो० मणिलाल पटेल लखनऊ कालेज के प्रो० गोपालदेव जावर दार् इत्यादि अनेक सुप्रसिद्ध देश विदेश के

विद्वानों से मिले और उन्हें आर्य साहित्य दिया (कान्फ्रेन्स उद्घाटनोत्सव स्वयं ट्रावन्कोर महाराज ने किया था जिस अवसर पर नियमानुसार स्नातक जी अपने गुरुकुल विश्वविद्यालय के चोले मे सम्मिलित हुए जिस के अद्भुत होने के कारण भी उनकी ओर जनता का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित हुआ। २३ दिस० को त्रिवेन्द्रम मे मालावार के सुप्रसिद्ध महाकवि परमेश्वर ऐयर M A. B L, के सभापतित्व में स्नातक जी और साधु शिवप्रसाद जी के The Mission and Message of Swami Shraddhananda" पर जोरदार व्याख्यान हुए। २४ दिस० को श्री युत गोविन्दन् B. A B. L. Retired Distt Judge के निमन्त्रण पर स्नातक जी उनके और साधु शिवप्रसाद जी के साथ त्रिवेन्द्रम् से १० मील की दूरी पर अहविक्कैर नामक ग्राम गए जहां उन्हो ने १० ईसाइयों की वैदिक रीति से शुद्धि कराई। २६ दिस० को त्रिवेन्द्रम के समीपस्थ कन्नन् मूला नामक ग्राम मे स्नातक जी ने एक व्याख्यान दिया जिस का साधु शिवप्रसाद जी ने मलयालम मे अनुवाद किया और उसके पश्चात् ल० १५० ईसाइयों की शुद्धि उसी स्थान पर व्याख्यान सहित कराई जिसका उन दीक्षित व्यक्तियों और जनता पर विशेष प्रभाव पड़ा। इस का प्रबन्ध श्री युत कुन्ही कृष्णन् B A B L नामक एक उत्साही ऐडवोकेट ने कराया था। २८ की शाम को त्रिवेन्द्रम् पेट स्टेशन के मैदान में स्नातक जी ने The Message of the Universal Vedic Dharma" पर अंग्रेजी और साधु शिवप्रसाद जी ने मलयालम में श्री युत गोविन्दन Retired Distt Judge के सभापतित्व मे व्याख्यान दिये। ट्रिवेन्ड्रम में आर्य समाज की नियमित स्थापना का भी प्रयत्न किया गया जिस मे शीघ्र सफलता होगी।

अखिल भारतीय सेवा समिति स्काउट मेला

(लेखक—एक दर्शक,)

सेवा समिति बॉय स्काउट एसोसियेशन ने कलकत्ते मे २६ से ३० दिसम्बर ३७ तक अपना नवम मेला मनाया। देश के भिन्न २ भागो के लगभग ५००० स्काउटों ने मेले मे भाग लिया।

'मेला' अंग्रेजी के 'जम्बोरी' शब्द का पर्य्याय वाची है, और देश के नवयुवकों मे भ्रातृत्व और सहानुभूति के भावों को भरने के लिए प्रति वर्ष किया जाता है। यह मेला शिक्षा सम्बन्धी अनुभव से कहीं अधिक महत्व रखता था। यह स्काउटों के नियम और प्रतिज्ञा, देश भक्ति और नागरिकता, विश्व बन्धुत्व और सबसे अन्तिम ट्रेनिंग, डिसिप्लिन और सदाचरण का वास्तविक प्रदर्शन था।

बेडेन पावल बॉयस्काउट एसोसियेशन, नैशनल स्काउट एसोसियेशन, व्रती बालक यद्यपि भारतवर्ष मे १६११ मे प्रचलित हो गए थे परन्तु वे भारतीयों के लिए नहीं थे। भारतीय बच्चो के लिए बालचर शिक्षण (Scouting) की आवश्यकता को अनुभव करते हुए स्वर्गीय ऐनी बिसेन्ट और डाक्टर जी-यस अरुन्डेल ने १६१७ में दक्षिण भारत में भारतीय बॉयस्काउट एसोसियेशन की नीव डाली। उत्तर भारत में पण्डित मदनमोहन मालवीय, पण्डित हृदयनाथ कुंजरू और पंडित श्रीराम वाजपयी ने १६१८ मे सेवा समिति बॉय स्काउट एसोसियेशन स्थापित की।

१९२१ मे संसार के चीफ स्काउट लार्ड बैडन-पावल भारत में पधारे और कतिपय शर्तों के अधीन उस समय की भारत की सब स्काउट समितियों को अपनी समिति के साथ सम्बन्ध स्थापित करने की सुविधा प्रदान की। यद्यपि बहुत सी समितियों ने उनके निमन्त्रण को स्वीकार किया परन्तु भारत मे बालचर शिक्षण के आरम्भिक मार्ग प्रदर्शकों के एक भाग को यह प्रस्ताव सन्तुष्ट न कर सका। देशी राज्यों के कई स्काउट एसोसियेशनों और सेवा समिति स्काउट एसोसियेशन ने नितान्त राष्ट्रीय लाइनो पर कार्य्य करना पसन्द किया।

सेवा समिति का आचारिक मूल्य अनुभव और स्वीकार किया गया और भारत के कोने २ मे यह आन्दोलन वेग के साथ फैल गया और १६२२ मे संयुक्त प्रान्त की सरकार ने इसे अपना संरक्षण प्रदान करके शिक्षा विभाग ने सरकारी तौर पर स्कूलो के लिए इसकी सिफारिश की। सेवा समिति एसोसियेशन के अधीन गर्लसगाइड विभाग भी है। लार्ड बैडन पावल द्वारा भारतीय आचरण और सम्मान-भावना Indian character & Honour पर जो आलोचना हुई थी और उसके कारण हाल मे जो आन्दोलन उठा था उसके फल स्वरूप स्काउटिंग मे राष्ट्र के सम्मान रक्षण का भाव जाग्रत हुआ है और सेवा समिति के कार्य्य को प्रगति मिली है।

पुरी कांग्रेस कमेटी के प्रधान पं० रघुनाथ-मिश्र के शब्दों मे जो मेले मे निरन्तर ५ दिन

बिन्दु ग्वालनका मुकदमा

टीटागढ़ आर्यसमाज का प्रशंसनीय कार्य

"इस मामले मे विचार के समय अदालत मे और सभ्यजगत के सामने निर्ममतापूर्वक और कल्पनातोत रूप से कामवासना और पाशविक प्रवृत्तिके चरितार्थ करने की मर्मभेदी कहानी बतायी गई है।"—इस प्रकार अपनी राय देते हुए गत १६ फरवरी को अलीपुर के अतिरिक्त सेशन जज मि० ई० एम० सिम्पसन ने जूरी के साथ सहमत होकर बारकपुर के मुख्तार और म्यूनिस्पल कमिश्नर अलीहैदर और अहमद सरदार (विद्वान जजने अपने फैसले में इसे अलीहैदर के लिए स्त्रियो को फंसा कर लानेवाला बताया है।) असगर और फेंकनको बिन्दू ग्वालिनी नामकी एक २० वर्षीया हिन्दू विधवा को गैर कानूनी ढग से रोक रखने और उस पर पाशविक अत्याचार करने के अभियोग मे क्रमश १० वर्ष, ७ वर्ष और सात-सात वर्षो का सपरिश्रम कारावास दण्ड दिया।

अभियोगका विवरण—

अभियोग के विवरण में बताया गया है कि प्राय. एक वर्ष पूर्व बिन्दू के पति का देहान्त होगया था, इसके बाद वह श्याम बाजार में अपनी फुफेरी सास के घर रहा करती थी। किन्तु उसके साथ वहाँ दुर्व्यवहार होता था, इसलिए उसने अपनी फुफेरी बहन के घर चली जाने का विचार किया। १६३७ के सितम्बर महीने के अन्त में एक दिन शामको वह सियालदह जाकर रेलगाड़ी में बैठी—अलीहैदर को छोड कर बाकी चार अभियुक्त भी गाड़ी के उसी डब्बे मे बैठे थे जिस मे बिन्दू बैठी हुई थी। बिन्दू से बातचीत करके उन लोगों ने जान लिया, कि वह बेलघरिया मे अपनी बहन

तक रहे थे, "देश के नवयुवकों को आपस में मिलाने और मातृ-भूमि की सेवा के लिए उनको लाभ दायक रूप मे लगाए रखने के लिए स्काउटिंग एक उत्तम मार्ग है। जैसा कि प० जवाहर लाल जी की धारणा है। "स्काउट्स भारतीय स्वतन्त्रता के सिपाहियों का रूप लेंगे।" श्रीयुत अरून्डेल ने ठीक ही कहा है 'सेवा समिति आन्दोलन' ने हमारे देश की बहुत बड़ी सामाजिक सेवा की है। हमारे नवयुवकों और नवयुवतियों में आत्म समर्पण और जन-सेवा के उच्च भाव भरने मे इस आन्दोलन ने उत्तम योग दिया है।" कलकत्ते के मेम्बर ने मेले के उद्घाटन के अवसर पर अपने भाषण में सेवा समिति के सदृश राष्ट्रीय स्काउट संगठन की आवश्यकता पर बल दिया और देश के बुद्धिमान लोगों को प्रेरणा की कि वह किताबी शिक्षा के संशोधक के रूप में इस प्रकार के आन्दोलनों को अपनाएँ।

के घर जा रही है। उन्हों ने बिन्दू से उसके बहनोई का नाम भी पूछ लिया।

बिन्दू को अकेली जाते हुए देख उन अभियुक्तों ने कहा कि हम तुम्हारे बहनोई को जानते हैं और उसके घर का पता भी हमे मालूम है। उन्हों ने बिन्दू का टिकट भी ले लिया और इसके बाद टीटागढ़ के स्टेशन पर उतर पड़, इसके बाद उसे रमजान नामक एक आदमी के घर ले गये। तत्पश्चात पाचों अभियुक्तों ने क्रमशः बिन्दू के साथ पाशविक दुराचार किया। दूसरे दिन शाम को बिन्दू हाजी नगर मे राजा मिया के घर पहुँचाई गई। इसके बाद फिर रमजान के मकान में लाई गई। और ६ हफ्ते तक यहाँ भी रखी गयी। अन्त मे यहाँ से उसे हटाकर अभियुक्त अहमद के घर पहुँचायी गई। और वहाँ १६३७ के अन्तिम जून तक रोक रखी गई। अन्त में एक दिन वहा से किसी तरह भाग कर उसने रहीमन बीबी नाम की एक मुसलमान औरत के घर जाकर शरण मागी रहीमन का घर अभियुक्त के पिछवाड़े वाले रास्ते पर है, रहीमन ने बिन्दु को आर्यसमाज में भेजवा दिया। इसके बाद उसने अभियुक्तों के विरुद्ध अदालत मे मुकदमा दायर किया।

जूरीने सर्वसम्मति से अपराधियों को, बिन्दूको अहमद के घरमे गैर कानूनी तरीके से रोक रखने और उसपर पाशविक अत्याचार करनेका अपराधी करार दिया। एकको छोड़ कर बाकी चार जूरीने रमजानको दो बार बिन्दूके ऊपर पाशविक अत्याचार के अपराध का अपराधी बताया। एक को छोड़ कर बाकी चार जूरीने रजाके घरमे रहनेके समय, हैदर और अहमदको बिन्दू को पीटनेके अपराध मे भी अपराधी करार दिया। इसके बाद सभी जूररोने एक मत होकर हैदर और अहमद पर बिन्दू को रजा मिया के घर मे रोक रखने के जुर्ममे मुजरिम करार दिया। अधिकाश जूरीने रमजानके घरमे दो बार गैर कानूनी ढग से बिन्दू को घर में रोक रखने का दोष बतलाया अजीज के ऊपर भी अहमद के मकान मे बिन्दू के ऊपर व्यभिचार करनेका अभियोग लगाया गया। हैदर और अहमद पर बिन्दूके ऊपर अस्वभाविक उपायसे अत्याचार करने का जो अभियोग लगाया गया था उसे जूरीने संदेहात्मक बताया।

विद्वान जज की राय

अपराधियों को उनके भीषण अपराध के लिए उपयुक्त दण्ड प्रदान करते हुए विद्वान जजने लिखा है "केवल यही नहीं कि बिन्दूका सतीत्व नष्ट किया गया था, वरन सतीत्व नष्ट करते समय घोर नृशंसता और निर्लज्जता का प्रदर्शन किया गया था। आर्यसमाज और मातृ-सदन वाले अगर इस आत्मीय स्वजन-विहीना असहाया अनाथिनी स्त्री की सहायता न करते तो इसका सतीत्व अपहरण करने वाले अपराधियो पर मुकदमा चलना भी सम्भव न होता।

सम्पादकीय—

हमारे पत्र का नया वर्ष

'सार्वदेशिक' के इस अंक के साथ इस पत्र का तेरहवां वर्ष प्रारम्भ होता है। इतने समय में इस पत्र ने आर्य्य समाज की जो सेवा की है उसके सम्बन्ध में हम स्वयं कुछ लिखना नहीं चाहते। यह बात हमारे पाठकों पर भली प्रकार विदित है कि आर्य्य समाज को उत्तम समाचार पत्रों तथा उच्च कोटि के पत्रकारों की बड़ी आवश्यकता है। आर्य्य समाज का मुख्य ध्येय संसार से अज्ञानता को दूर करना है, इसीलिए इसके प्रवर्तक ने आर्य्य समाज के नियमों में आठवां नियम इस प्रकार नियत किया है 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।"

आर्य्य समाज ने अपने प्रवर्तक की उपरोक्त आकांक्षा को पूर्ण करने के लिए अनेक स्कूल, विद्यालय गुरुकुल तथा पाठशालाएं स्थापित की हैं। आर्य्य समाज की इस सेवा को आर्य्य समाज के बाहर के विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से स्वीकार किया है परन्तु अज्ञानता तथा अविद्या को दूर करने का, आधुनिक समय में एक बड़ा साधन समाचार पत्र हैं। आर्य्य समाज ने सम्पादनकला क्षेत्र में भी हमेशा से विशेष रुचि दिखलाई है और इसके पत्र-कारों ने समाज सेवा में पर्य्याप्त भाग लिया है।

'सार्वदेशिक' पत्र के गत बारह वर्ष, आर्थिक स्थिति को देखते हुए, बड़ी कठिनाई से व्यतीत हुए हैं और इसे प्रति वर्ष घाटा ही घाटा रहा है। यदि 'सार्वदेशिक सभा' का इसे संरक्षण प्राप्त न होता तो यह पत्र कभी का बन्द हो गया होता! यू तो आर्थिक कठिनाइयां सभी पत्रकारों को दरपेश होती हैं परन्तु वे इन कठिनाइयों को विज्ञापनों तथा अन्य साधनों के अवलम्बन से बहुत कुछ हल कर लेते हैं। आर्य्य पत्रकारों को ये साधन भी प्राप्त नहीं क्योंकि उन्हें विज्ञापनों की अश्लीलता आदि का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। यही कारण है कि इतने समय तक हम अपने पत्र के लिए अच्छे विज्ञापनों का संग्रह नहीं कर सके।

ऐसी दशा में हम इस पत्र को कब तक जीवित रख सकेंगे इसके सम्बन्ध में कुछ निश्चय-पूर्वक नहीं कहा जा सकता। इसमें सन्देह नहीं कि यह पत्र आर्यसमाज के लिए देश तथा विदेश में प्रोपैगेण्डा का एक अच्छा साधन है। इसी को देखते हुए कई महानुभावों ने हमें यह सलाह दी है कि इस पत्र को द्विभाषी (Bilingual) कर दिया जावे—अर्थात् इसका आधा भाग अंग्रेजी भाषा में रहे और दूसरा आधा हिन्दी भाषा में। यह विचार बहुत उत्तम है।

परन्तु आर्थिक कठिनाई का हल जब तक हमें नहीं सूझता तब तक हम इस उत्तम विचार को क्रियात्मक रूप कैसे दे सकते हैं। यह नितान्त सत्य है कि अभी तक आर्य्यसमाज के प्रोपैगेण्डा के लिए अंग्रेजी भाषा के प्रयोग की बड़ी भारी आवश्यकता है और यह खेद का विषय है कि भारतवर्ष में आर्य्य समाज जैसी संगठित समाज के हाथ में एक भी उच्च कोटि का अंग्रेजी समाचार-पत्र नहीं, जब कि इसी देश में आर्य्य समाज से कहीं अधिक छोटी संस्थाओं के हाथ में उच्च कोटि के अंग्रेजी समाचार-पत्र हैं। मिसाल के तौर पर राम कृष्ण मिशन को ही ले लीजिए। उनका "प्रबुद्ध भारत" अंग्रेजी भाषा में एक उच्च कोटि का पत्र है जिसको देश विदेश में मान की दृष्टि से देखा जाता है। यदि इसी कोटि का एक मासिक पत्र इस सभा के हाथ में होता तो विदेशों में उसके द्वारा कितना महान् कार्य्य सम्पादित हो सकता। आर्य्य समाज के अन्दर

प्रोपैगैण्डा की शक्ति को अनुभव करने वाले तथा उसके लिए सहायता देने वालों की बहुत कमी है।

लोग छोटी छोटी संस्थाओं को जारी रखने के लिए अपना पैसा देने में संकोच नहीं करते, परन्तु जब उनको पत्रकार की हैसियत में पत्र जारी रखने की अपील की जाती है तो वे उसकी तरफ ध्यान नहीं देते।

हम अपने पाठकों से यह विनम्र निवेदन करना चाहते हैं कि वे इस पत्र की आर्थिक सहायता को अपनी दृष्टि में रक्खें। यदि कतिपय धनाढ्य व्यक्ति एक वर्ष के लिए इसके हाथ में पांच हजार सौंप देवें तो इस पत्र को द्विभाषी पत्र बनाया जा सकता है और इसका हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में इकट्ठा सम्पादन किया जा सकता है ताकि यह पत्र इस देश में तथा अन्य देशों में आर्य्य समाज तथा वैदिक धर्म का सन्देश ले जा सके। निवेदन करना हमारा कर्त्तव्य है उस पर ध्यान देना हमारे पाठकों के हाथ में है। देखें इस आगामी वर्ष कैसे गुजरता है?

अन्त में हम अपने कृपालु लेखकों तथा अन्य सहायकों का कोटिशः धन्यवाद करते हैं जिनकी असीम कृपा से यह पत्र अपनी आयु के तेरहवें वर्ष में पदार्पण कर रहा है। आशा है उनका यह सहयोग 'पत्र' के साथ आगे भी बना रहेगा।

कुरान की आलोचना

श्रीयुत पाल सिम्पसन (Paul Simpson McElroy) ने जिन्होंने निकट पूर्व (Near East) में एक कालेज में अध्यापक के रूप में कुछ समय व्यतीत किया था जहां 'इस्लाम' पर वर्तमान विचार धाराओं के प्रभाव का अवलोकन करने का उन्हें पर्याप्त अवसर मिला था 'मुस्लिम संसार' (Moslem World) नामक पत्र में 'मुस्लिम जगत परिवर्तन काल में' विषय पर एक लेख लिखा है। ईसाई जगत' (World Christianity) पत्र में प्रकाशित उक्त लेख के सारांश से निम्न अंश लिए गए हैं—

Moslems themselves are now asking if the Koran is literally inspired. Such questions challenge the Sheikhs embarrassingly.

It means that the Koran must undergo higher criticism, Just as the Bible has done. Higher criticism of the Koran can be postponed no longer.

Within a very few years the enrolment in the ancient & conservative Theological school, 'El Azhar' University is reported to have dropped from about ten thousands to less than five thousands. So significant a drop can hardly be attributed to the depression when tuition is virtually free and when many have chosen Government or foreign schools instead. Modern Mohammedan youths refuse to attend this orthodox institution revered as it is, many of whose teachings are now regarded as obsolete.

'स्वयं मुसलमान लोग अब पूछ रहे हैं कि क्या कुरान वास्तव में दैवीय (इल्हामी) है इस प्रकार के प्रश्न शेखों को चैलेन्ज का मर्म परेशान कर रहे हैं। इस का अर्थ यह है कि जिस प्रकार बाइबिल की उग्र आलोचना हुई है अवश्य ही उसी प्रकार की कुरान की होगी। कुरान की उग्र आलोचना अब और ज्यादा समय के लिए नहीं टल सकती है।

मुसलमानों के 'अल अज़हर' नामक पुराने और कट्टर पन्थी धार्मिक मकतब में थोड़े वर्षों के भीतर ही विद्यार्थियों की संख्या १० हज़ार से घट कर ५ हज़ार से भी कम रह गई है। इस महत्व पूर्ण कमी का कारण आर्थिक संकट मुश्किल से ही बतलाया जा सकता है वह भी उस समय जब शिक्षा निःशुल्क हो और जब बहुतों ने सरकारी स्कूलों में जाना पसन्द किया हो। वर्तमान मुस्लिम युवक इस कट्टर पन्थी संस्था में जाने से इन्कार करते हैं। भले ही यह संस्था सम्मानित है इस संस्था की बहुत सी शिक्षाएं अब असामयिक और पुरानी समझी जाती है।'

शाबास आर्य वीरो ?

पाठक अन्यत्र इसी अङ्क में बिन्दु ग्वालिन नामक एक हिन्दू बंगाली विधवा के मुस्लिम गुन्डों द्वारा अपहरण तथा उनके अभियोग के अलीपुर के सेशन जज के फैसले का समाचार पढ़ेंगे।

घटना इस प्रकार बतलाई जाती है कि एक युवती विधवा अकेली अपनी बहन के पास जाने के लिए रेल में यात्रा कर रही थी। जिस डब्बे में वह बैठी थी उसी में ४ मुस्लिम गुंडे भी बैठे थे। वे मार्ग में उसे धोखा देकर कि वे उसके बहनोई को जानते हैं और उसे उसके पास पहुंचा देंगे अपने घर ले गए और बलात् ४-५ मास अपने पास रक्खा। इस बीच में उस पर जो बीता और उसका सतीत्व नष्ट करने में जिन अमानुषिक अत्याचारों का वह शिकार बनाई गई और जिस निर्लज्जता का प्रदर्शन किया गया उसका किंचित आभास माननीय जज के फैसले के अवतरणों से मिलता है। अन्त में वह असहाया एक सहृदया मुस्लिम देवी की सहायता से उन गुंडों के पाश से मुक्त हुई जिसने उसे आर्य समाज टीटागढ़ की रक्षा में भेजा। आर्य समाज टीटागढ़ ने देवी की रक्षा की और उन गुंडों पर मुकदमा भी चलाया। माननीय जज ने अभियुक्तों को उचित दण्ड देते हुए अपने फैसले में आर्य समाज के इस सत्कार्य को उचित रीति से स्वीकार किया है। और यह भी प्रकट किया कि आर्य समाज के प्रयत्नों के कारण ही यह मामला अदालत तक पहुंचा है।

आर्य्य समाज के इस प्रकार के कार्य्य साधारण कार्य्य हैं। उसने देवी की रक्षा करके और अभियोग चला कर अपने एक साधारण कर्तव्य का पालन किया है इस पर हम हर्ष ही प्रकट कर सकते हैं। निस्सन्देह मुस्लिम देवी का कार्य्य असाधारण है जिसने अपनी पीड़िता बहन की सहायता करके नारी हृदय की कोमलता, परदुःख कातरता और सुन्दरता का परिचय दिया है। उसके सहधर्मियों ने अपने जघन्य कृत्य से इस्लाम की जो अक्षम्य असेवा की थी उसने अपनी बहुमूल्य

सेवा से उसकी मात्रा में कमी करदी है। इस सहृदया देवी के लिए अनायास ही हमारे हृदय से 'धन्य' शब्द निकल पड़ता है यह भी सुना जाता है कि अभियुक्तों का अदालत इत्यादि स्थानों पर पुष्प हारों के द्वारा कुछ गुमराह मुस्लिम भाइयों ने सत्कार करने का भी आयोजन किया था। यदि यह सत्य है तो हम यह कहे बिना नहीं रहेंगे, मानों उनकी दृष्टि में गुंडों का एक असहाया देवी को धोखे से अपने चंगुल में फंसा कर बलात् उसका सतीत्व नष्ट करना और उसे अपने कब्जे में बलात् रक्खे रहना, इस्लाम धर्म्म के प्रति एक बड़ी भारी सेवा थी। इस प्रकार के कृत्य जघन्य हैं और उनका समर्थन किसी भी प्रकार नहीं किया जा सकता चाहे वे हिन्दुओं द्वारा, मुस्लिम देवियों पर और मुसलमानों द्वारा हिन्दू देवियों पर किए जावें और जो धर्म्म अपने अनुयायियों की धर्म्म प्रसार की इस प्रकार की प्रवृत्तियों के लिए जिम्मेवार हो भले ही वह कोई भी धर्म क्यों न हो उसका कम से कम वर्तमान युग में ईश्वर ही रक्षक है।

देहली का सहयोगी हिन्दुस्तान टाइम्स इस घटना पर सम्पादकीय स्तम्भो में विचार करता हुआ निम्न शब्दों में सरकार का ध्यान आकर्षित करता है।

"The observations of Mr Simpson Additional Session Judge of Alipore, in convicting and sentencing five men, one of them a Municipal Commissioner and a Mukhtar to varying terms of imprisonment extending from 7 to 10 years for the offence of wrongfully confining and assaulting one Bindu Goalin, a young widow of 21 deserves to be taken note of by the Government. of Bengal......This is by no means a solitary offence and it is for the Government of Bengal to see that 'Goondas' and 'Badmashes' are not let loose in the Province

अर्थात् अलीपुर के ऐडीशनल सेशन जज श्रीयुत सिम्पसन के विचार बंगाल सरकार द्वारा नोट किए जाने योग्य हैं जो उन्हों ने ५ आदमियों को जिन में एक म्यूनिसिपल कमिश्नर और मुख्तार भी है बिन्दु ग्वालन नामक एक २१ वर्षीया हिन्दू विधवा को जबरदस्ती रोक रखने और उसका सतीत्व नष्ट करने के अपराध में ७ से १० साल तक की मियाद की भिन्न २ सजाएँ देते हुए अपने फैसले में प्रगट किए हैं।

यह अपने ढंग की अकेली घटना नहीं है। बंगाल सरकार का कर्त्तव्य यह देखना है कि प्रान्त में बदमाश और गुण्डे मनमानी न करने पावें।

भयङ्कर फूका-प्रथा

जब गाय भैंस बालने (दूध बन्द होना) पर आती हैं, तब दूध देने की अवधि बढ़ाने के विचार से, उन्हें दुहने के लिए अत्यन्त क्रूरता पूर्ण फूका-प्रथा से काम लिया जाता है। सबसे प्रथम गाय या भैंस के चारों पांव मज़बूत रस्सी से जकड़ कर बाँध दिये जाते हैं, और फिर पूंछ को उसके मूत्र-मार्ग में प्रविष्ट कर देते हैं पूंछ के साथ ही मनुष्य का हाथ भी जहाँ तक जा सकता है, पशु के मूत्रमार्ग में प्रविष्ट किया जाता है, इससे बेचारे पशु को मर्मान्तक वेदना होती है, पर बेचारा विवश है, हाथ पाँव तक नहीं छट पटा सकता। केवल बुरी तरह 'बां' करके रँभाता रहता है। थोड़ी देर बाद पूंछ को निर्दिष्ट स्थान पर छोड़ कर हाथ निकाल लिया जाता है और फिर दूध दुहने का कार्य शुरु होता है। संक्षेपमें यही फूका -प्रथा है। फूका प्रथा का कलकत्ता-बम्बई आदि बड़े शहरों में ख़ूब प्रचार है। बेरहम लोग दया करुणा के भावों को मट्टी में झोंक कर अपने स्वार्थ-साधन के लिए इस पापाचार को करने में तनक भी नहीं शर्माते। बड़े बड़े डाक्टरों की स्पष्ट सम्मति है कि फूका-प्रथा द्वारा जो दूध प्राप्त किया जाता है, वह अत्यन्त अस्वाभाविक और हानिकारक है। मनुष्य को वह कभी न पीना चाहिए। उसमें पौष्टिक तत्वों का सर्वथा अभाव होता है। वायसराय ने भी इस अमानुषिक फूका की घोर निन्दा की है। राष्ट्रपति प० जवाहर लाल नेहरू तो कहते हैं कि यह क्रूर और भयंकर प्रथा क्षण-भर के लिए भी सह्य नहीं। कारपोरेशन और गवर्नमेंट को एक दिन के लिए भी इस पापाचार की आज्ञा न देनी चाहिए। श्रीयुत राजेन्द्रप्रसाद जी, श्री रामानन्द चटर्जी, श्री फ़ज़लुल हक प्रीमियर बंगाल महामना मालवीय जी, श्री सुभास बोस, श्री रवीन्द्रनाथ टगौर, श्रीजिन्हा, श्रीमती सरोजिनी नायडू इत्यादि सभी देशमान्यों ने फूका-प्रथा को तुरन्त बन्द कर देने की सम्मति दी है।

प्रसन्नता है बंगाल गवर्नमेंट ने इस प्रथा के निराकरण के लिए कानून पास कर दिया है। इस कानून के अनुसार अपराधियों को २ वर्ष तक की क़ैद और ५०० रुपए तक जुर्माने का दण्ड होगा।

साम्प्रदायिक क़त्ल और मुस्लिम नेता

कराची का समाचार है अपर सिन्ध फ्रंटियर के डिप्टीकमिश्नर श्रीयुत जे० बूथ ने जकोबाबाद में फ्रंटियर वार्षिक दरबार में भाषण देते हुए साम्प्रदायिक हत्याओं का अन्त करने और धर्म को बचाने के बहाने से हिंसा को प्रोत्साहन देने वाली मौलवियों में व्याप्त प्रत्येक प्रवृत्ति को नष्ट करने के लिए अपील की।

डिप्टी कमिश्नर ने तीन साम्प्रदायिक क़त्लों का जिक्र करते हुए-जिनमें फ्रंटियर ज़िले में हाल में मुसल्मानों द्वारा ३ निर्दोष हिन्दुओं की नृशंस हत्या की गई थी और हत्यारों का यह ख़याल प्रतीत होता था कि वे इस्लाम की कोई सेवा कर रहे हैं, कहा इस प्रकार के अपराध केवल तबही बन्द हो सकते हैं जब जातियों के नेता धर्म के नाम में होने वाली इस प्रकार की ज़्यादतियों का बिना किसी प्रकार की झिझक और पक्ष के खुले आम खण्डन करेंगे। आगे श्रीयुत बूथ ने कहा 'आप लोगों को शायद इस बात का भय है कि यदि हम कुछ गुमराह मौलवियों के भाषणों पर प्रतिबन्ध लगायेंगे और दूसरी जाति के विरुद्ध उठे हुए आन्दोलन का खण्डन

करने के लिए हम आगे बढ़ेंगे तो लोग हमारी धार्मिक निष्ठा पर सन्देह करेंगे। आप लोगों को इस तरह के मामलों में अपनी सम्मति का स्वय नेतृत्व करना चाहिए और दूसरों की गलत सम्मति का आदर करके अपने कर्त्तव्य से विचलित नहीं होना चाहिए।"

यह भाषण स्वयं अपने मे स्पष्ट है, क्या हम आशा करें मुस्लिम नेता भाषण मे स्पष्ट किए हुए अपने कर्त्तव्यो का पालन करने का साहस किया करेंगे ? सच मुच धर्म के नाम पर होने वाली हिन्दुओं की हत्याओं और अन्यान्य अत्याचारों के समय मुस्लिम नेताओं की चुप्पी अप्रत्यक्ष रूप से इन कुकृत्यों और ज्यादतियों के दुहराए जाने के लिए जितनी जिम्मेवार होती है उतनी शायद ही अन्य कोई बात हो। यह एक सचाई है और श्रीयुत बूथ की नाई देश के समझदार और दूर दर्शी लोग इसे अनुभव करते और प्रगट करते हैं।

जेल सुधार और हमारा कर्त्तव्य

संयुक्त प्रान्तीय सरकार जेलों में सुधार की आयोजना कर रही है। इस आयोजना का मूल भूत आधार अपराधियों का सुधार करना है। वर्तमान में जेल जीवन के इस पहलू की भारत वर्ष में बहुत अवहेलना हुई है। प्राय देखा जाता है कि जेल जीवन में अपराधी का सुधार तो क्या वरन् उलटा उसका जीवन पहले से भी बदतर हो जाता है और वह जेल से लौट कर समाज का एक अच्छा अंग होने के बजाय पहले से भी ज्यादा हानि कारक अंग बन जाता है और कुछ हालतों मे वह परित्यक्त अंग के रूप में रहता है। इसका कारण जेल में सुधार के भावों के स्थान में बदले के भावों द्वारा उस पर शासन होना ही जेल-जीवन का परीक्षण करने और उसका सम्यक ज्ञान रखने वाले एक स्वर में प्रगट करते हैं।

जेलोंमें सुधार के कई प्रस्ताव विचारार्थ प्रस्तुत हुए हैं। सब से मुख्य प्रस्ताव यह है कि कैदियों को कई श्रेणियों मे विभक्त किया जाय और उन्हे पृथक् २ रक्खा जाय जिससे निरन्तर स्वभाव के रूप में अपराध करने वाले इत्तिफ़ाक रूप में अपराध करने वालों को न बिगाड सके। राजनैतिक अपराधियों को नैतिक अपराधियों के साथ सम्पर्क में आने की इजाज़त देदी जाय। एक प्रस्ताव यह भी है कि जेल के कर्मचारियों के शिक्षण के लिए एक स्कूल खोला जाय। यह स्पष्ट नहीं हुआ है कि दस्तकारी का शिक्षण दिया जायगा या इसके अलावा भी कोई शिक्षण दिया जायगा। इस सम्बन्ध में देश के उच्च वर्ग के कतिपय लोगों की सम्मति है कि जेल कर्मचारियों को ऐसा शिक्षण भी दिया जाय जिससे उनका व्यक्तित्व भी शिक्षा प्रदान कर सके। वे लोग मानवी भावनाओं से युक्त होने चाहिएँ और केवल यन्त्र जैसे मनुष्य नहीं होने चाहिएं जो हाथ मे कोड़ा लिए हुए काम लेना ही जानते हों।

जेलों के अधिकारी ऐसे होने चाहिएं जो मनोविज्ञान के पूर्ण ज्ञाता हों। वर्तमान में डाक्टरों को जेल का सुपरिन्टेन्डेन्ट बनाने की प्रथा का भूतकाल में ही शायद कोई महत्व रहा हो। इंग्लैंड में जेलोंके अधिकारी डॉक्टर लोग बडे सहृदय सिद्ध हुए हैं यह ठीक है परन्तु भारत वर्ष में अपवादों को छोड़ कर वे लोग सब जगह असफल हुए हैं। संक्षेप में मानवीय भावों से पूर्ण व्यक्ति ही जेल के संचालन में लगने चाहिएं। हम बड़ी उत्सुकता से भारत में जेलों के सुधार

के आवश्यक और ... नोपकारक कार्य को देखेगे।

आर्य्य समाज ने जेलों में प्रचार कार्य पर इन दिनों बहुत बल दिया जा रहा है यह बहुत उत्तम है। इस कार्य के दूरवर्ती सुपरिणामो को यहां गिनाने की जरूरत नहीं है। केवल यह देखना है कि हमारी अकर्मण्यता से यह कार्य न हो अथवा अपेक्षित रीति से हो।

भारत मे शराब बन्दी

अभी हाल मे बम्बई सरकार के स्वास्थ्य विभाग के अंग्रेजी मत्री ने भारत में शराब विरोधी प्रगतियों के सम्बन्ध म अच्छे उद्गार प्रगट किए है। उन्हो ने कहा कि भारत वर्ष ससार के अन्य देशों की अपेक्षा शराब बन्दी के लिए ज्यादा तय्यार है। और जो लोग इस आन्दोलन की अन्य स्थानो पर असफलता का चर्चा करते हैं वे यहा की अवस्थाओ को अनुभव नही करते है। भारत वर्ष में धार्मिक और सामाजिक भाव शराब के बिलकुल विरुद्ध है। यदि सरकार धार्मिक शक्तियो का ठीक २ उपयोग करती तो निश्चय ही देशमें शराब खोरी को बन्द करनमें समर्थ होता। पश्चिम म मिकदार मे मास खाना और शराब पीना एक जैसा ही समझा जाता है। भारत में यदि कोई थोड़ी सी भी शराब पीता है तो वह शर्म अनुभव करता है। वह समझता है शराब पीना एक बुरा और बदनामी का कार्य्य है।

भारत में इस बुरी आदत के प्रचार के लिए कौन ज़िम्मेवार है इस पर प्रकाश डालने की ज़रूरत नही है। यह अवश्यक है जितनी जल्दी इस बुराई का अन्त हो देशके स्वास्थ्य और लोगों की आर्थिक और नैतिक सुरक्षा के लिए उतना ही अच्छा है।

शारदा ऐक्ट में संशोधन

शारदा ऐक्ट के प्रभाव से सुरक्षित रहने के लिए कुछ लोग अपने पुत्र पुत्रियो के विवाह १८ और १४ वर्ष की आयु से पूर्व किसी रियासत या फ्रेन्च इलाके मे जाकर कर आते हैं जहा बाल विवाहों का निषेध नहीं है। इस कानूनी दोष को दूर करने के लिए केन्द्रीय धारा सभा के पिछले अधिवेशन मे एक सशोधन पेश किया गया था जो पास होगया। इस सशोधन के अनुसार अब कोई भी ब्रिटिश प्रजा रियासतो या फ्रेन्च इलाके मे जाकर बाल विवाह न कर सकेगी यदि कोई करेगा तो उसे उसी प्रकार दड मिलेगा जिस प्रकार ब्रिटिश भारत मे बाल विवाह करने पर मिलता।

बम्बई सरकार का अछूतोद्धार सम्बन्धी कानून

बम्बई गवर्नमेंट ने अभी हाल में अछूतोद्धार सम्बन्धीएक कानून पास किया है। इस कानून के अनुसार जहाँ लोकमत पक्ष मे होगा मदिरों के ट्रस्टी अछूतों के लिए मदिर खोल सकेंगे।

पोंगा पंथियों का दुष्कृत्य

समाचार मिला है कि दक्षिण भारत मे इरनाकुलम स्थान पर पोगा पथियो ने एक अछूत कहे जाने वाले भाई पर आक्रमण किया, केवल इस अपराध पर कि वह एक देव मन्दिर के दरवाज़े के भीतर चला गया था और उस बेचारे को एक हस्पताल मे रक्षा के लिए शरण लेनी पड़ी। घटना के विस्तृत समाचार हमारे सामने नही है इसलिए नही कहा जा सकता है कि अछूत भाई का वास्तविक अपराध मन्दिर प्रवेश ही था अथवा अन्य कोई अपराध था। परन्तु यह जरूर

कहेंगे कि इस घटना से अछूतों के प्रति लोगों को सहानुभूति बढ़ेगी ही। अछूतों के उद्धार के लिए इस समय जो वातावरण बना हुआ है उसमें पोंगापंथियों से इस प्रकार की घटनाओं से अधिक और आशा ही क्या की जा सकती है। सचमुच उस अछूत भाई पर जितने डंडे पड़े हैं उन में से प्रत्येक उसकी जाति की बहुमूल्य सेवा में योग देगा।

आर्य्य मैरेज ऐक्ट की व्याख्या

आर्य्य मैरेज ऐक्ट की अंग्रेजी व्याख्या जिसकी चर्चा आर्य्य जगत् में पिछले सप्ताहों से चल रही थी, छपकर तैयार हो गई है। पुस्तक की छपाई गैटअप इत्यादि बहुत अच्छा है, इससे पुस्तक आकार इत्यादि की दृष्टि से भी बहुत आकर्षक बन गई है। सभा ने इस व्याख्या को प्रकाशित करके जनता के ऐक्ट सम्बन्धी मार्ग प्रदर्शन के लिए अपने एक महत्व पूर्ण कार्य्य को पूरा कर दिया है। अब आर्य्य समाजों, प्रान्तिक सभाओं तथा आर्य्य जनता का फर्ज़ है कि वे इस व्याख्या का अधिक से अधिक मात्रा में प्रचार करें।

प्रत्येक आर्य्य समाज में इस ऐक्ट की हिन्दी और अंग्रेजी दोनों की १ १ कापी तो अवश्य रहनी ही चाहिए साथ ही आर्य्य समाजों को आर्य्य भाइयों तक ही तक नहीं वरन् गैर आर्य्य समाजी भाइयों तक अधिक से अधिक सख्या में पहुंचानी चाहिए और इसमें प्रमाद वा शिथिलता नहीं होनी चाहिए। इसका मूल्य I) रक्खा गया है और सार्वदेशिक सभा (देहली) वा शारदा मन्दिर नई सड़क देहली से मिल सकती है। इस ऐक्ट को व्याख्या के साथ२ आर्य्य-समाजों में शारदा ऐक्ट, हिन्दू विधवाओं के उत्तराधिकार सम्बन्धी ऐक्ट तथा अन्यान्य इस प्रकार के समाज सुधार के ऐक्ट भी रखने चाहिएं।

हिन्दी की व्याख्या, आशा है इस मास के अन्त तक तयार हो जायगी कहने की आवश्यकता नहीं आर्य समाजों को केवल हिन्दी ही की व्याख्या अपने यहां रखना पर्याप्त नहीं समझना चाहिए हिन्दी की व्याख्या के साथ २ अंग्रेजी व्याख्या भी अवश्य रखनी चाहिए।

कुम्भ -प्रचार

प्रसन्नता है आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने आगामि कुम्भ के अवसर पर हरिद्वार में निरन्तर १ मास पर्य्यन्त वैदिक धर्म का प्रचार करने का आयोजन किया है। इस अवसर पर ही गुरुकुल कांगड़ी और महा विद्यालय ज्वालापुर के उत्सव भी होंगे। और आर्यों का भी हरिद्वार में काफी जमाव होगा। पंजाब की सभा ने इस कार्य के सम्पादनार्थ धन और साहित्य की अपील की है। उसका विचार अन्य साहित्य के अतिरिक्त ३०००-४००० सत्यार्थ प्रकाश वितरण करने का है। हम इस अपील का समर्थन करते हैं। आशा है देशभर के आर्य नर नारी पंजाब की सभा की अपील का आशा वर्द्धक उत्तर देंगे। कुम्भ प्रचार सार्वदेशिक महत्व रखता है अब का यह प्रचार सार्वदेशिक सभा ने इस बार उक्त सभा को ही, उसकी प्रेरणा पर सुपुर्द किया है। इसलिए यह प्रचार सार्वदेशिक ही समझना चाहिए और पंजाब की सभा को पूरी २ सहायता देनी चाहिए।

आर्य समाज मद्रास द्वारा प्रकाशित
सस्ता आर्य-साहित्य (अंग्रेजी में)

Light of Truth श्री स्वामी दयानन्द-सरस्वती कृत सत्यार्थ प्रकाश का यह अंग्रेजी अनुवाद है। इसकी भाषा शुद्ध व सुन्दर है। भावों के विषय मे इतना कहना पर्याप्त है कि इस अकेली पुस्तक ने जितनों को आर्य बनाया है उतना अन्य साधनों ने नहीं।

ग्लेज पेपर, कैलिको की मजबूत जिल्द २)
अजिल्द १।।)

Fountainhead of Religion इस पुस्तक के विद्वान लेखक श्री गंगाप्रसाद जी चीफ जज, टिहरी ने पुष्कल प्रमाणों द्वारा वैदिक धर्म को समस्त धर्मों का मूल-स्रोत सिद्ध किया है। इस पुस्तक के अनेक भाषाओं मे अनुवाद हो चुके है। केवल अंग्रेजी में ही कई संस्करण छप कर हाथों हाथ बिक चुके हैं।

फैदरवेट पेपर, सुन्दर छपाई। अजिल्द ।।।) सजिल्द १)

Ten Principles of Aryasamaj: गुरुकुल-कांगडी के भूतपूर्व आचार्य श्री चमूपति एम ए. ने इस पुस्तक मे आर्यसमाज के दस नियमों की विस्तृत, वैज्ञानिक व्याख्या की है।

पृष्ठ संख्या १६० । मूल्य ।≈) मात्र ।

Arya Philosophy. अजमेर-अर्धशताब्दी पर दिये गए अंग्रेजी व्याख्यानो का यह संग्रह है। देश तथा विदेश दोनों मे प्रचार का अत्युत्तम साधन है। इसकी भूमिका श्री आचार्य रामदेव जी ने लिखी है। मूल्य ।≈) मात्र

Vedic Caste System and Panchama Problem यह समयोपयोगी ट्रैक्ट श्री प० केशवदेव जी ज्ञानी, मद्रास ने लिखा है। इसमे युक्ति-प्रमाण द्वारा आर्य समाज के पक्ष की पुष्टि की गई है। मूल्य ≈)

The outlines of Aryasamaj लेखक श्री प० केशवदेव जी ज्ञानी, मद्रास। इसमे आर्य समाज के सिद्धान्तो का संक्षिप्त परिचय है। चतुर्थ संस्करण। मूल्य –)

Sayings of Swami Dayanand इस मे ईश्वर, वेद, वर्ण, आश्रम, शिक्षा, राजनीति आदि विषयो पर श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के वचनों का संग्रह है। मूल्य –)

Hinduism Vs Xinity श्री पण्डित केशवदेव जी ज्ञानी ने इस पुस्तिका मे हिन्दू-धर्म तथा ईसाईयत का मुकाबिला किया है। शुद्धि प्रचार के लिए उपयोगी है। मूल्य –)

Hinduism Vs Islam ले॰ पं॰ केशव देव जी ज्ञानी। इसमे हिन्दू धर्म तथा इस्लाम का मुकाबिला है। शिक्षित मुसल्मानों के हाथो मे देने योग्य है। मूल्य –)

Verses From The Vedas ले॰ श्री॰ ज्ञानीजी। इसमे चारो वेदों के मन्त्र चुनकर उनकी सरल अंग्रेजी मे व्याख्या की गई है। पुस्तक वेद-प्रचार के लिए अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य –)

पता —
श्री मंत्री, आर्यसमाज,
१७०, चाइना बाजार, मद्रास।

शुद्ध हवन सामग्री

धोखे से बचने के लिये आर्यों

को

बिना वी० पी० भेजते हैं

पहले ।) पोस्ट खर्च मनीआर्डर द्वारा भेज कर ऽ॥ नमूना

फ्री (मुफ़्त) मँगा लें

अगर नमूना जैसी सामग्री हो तो मूल्य भेजदें

अन्यथा

कूड़े में फेंक दें ।

फिर मूल्य भेजने की आवश्यकता नहीं ।

क्या इससे भी बढ़कर कोई सच्चाई की कसौटी हो सकती है

भाव ॥) सेर, ८०) मन का सेर ।

थोक ग्राहक को २५) रुपये प्रति सैकड़ा कमीशन ।

मार्ग-व्यय ग्राहक के जिम्मे ।

पता—

रामेश्वरदयालु आर्य, पो० अमोली (फतेहपुर) यू०पी०

प० रघुनाथ प्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये 'चन्द्र प्रिंटिंग प्रेस' देहली,
से प्रकाशित

ऋग्वेद   अप्रैल १६३८   ॐ   Reg. No. L. 2121.   यजुर्वेद

सार्वदेशिक

सम्पादक—प्रो० सुधाकर एम० ए०

स० सम्पादक—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक

अथर्ववेद   वार्षिक मूल्य स्वदेश ३)   एक प्रति का ≡)   विदेश से ९ शि० वार्षिक   सामवेद

लेख-सूची

केन्द्रीय अनाथालय, रावी रोड, लाहौर की आवश्यकताएं

(ले० ला० बोसाराम, रिटायर्ड स्टोर कीपर N W R)

(मन्त्री केन्द्रीय अनाथालय)

(१) इस समय इम अनाथालय मे १८० बालक बालिकाएं हैं जिनका न केवल पालना पोषण किया जाता है बल्कि उनको धार्मिक तथा सांसारिक शिक्षा देकर अच्छा नागरिक बनाया जाता है। उनके लिए बिस्तरो और अन्य वस्त्रो की आवश्यकता है। दानी सज्जन जहां अपने बालको के लिये वस्त्र बनवाएं वहां इन बालको का भी अवश्य ध्यान रखें।

(२) वस्त्रो के अतिरिक्त भोजन के लिये घृतादि की आवश्यकता है। दानी सज्जन घृत भेजें अथवा उसके लिये दान देकर कृतार्थ करें।

(३) अनाथालय का व्यय १५००) रु० मासिक है वह दानी महाशयो की कृपा से पूरा होगा इस लिये प्रत्येक नर नारी दान देकर इस व्यय को पूरा करें।

(४) इस अनाथालय के प्रबन्ध के विषय मे यह लिखना पर्याप्त होगा कि सरकार ने जो भगाए गए बालक पकड़े थे और जिनके सबधियो का पता नही लगा वे सब बालक इसी अनाथालय मे रखें हैं वा जो अन्य असहाय बालक सरकार के पास आते हैं वे भी इस अनाथालय मे भेजे जाते हैं। यह अनाथालय सरकार की तरफ से Registered भी है इसके हिसाब किताब बराबर रखें और Audit किए जाते है।

(५) अनाथालय के बालक कभी बाहर मांगने के लिए नही भेजे जाते हैं। उनके पढ़ाने के लिये टैकनीकल स्कूल भी है जो सरकार से स्वीकृत है। इसमे बाहर के बालक भी मुफ्त पढ़ाये जाते हैं।

(६) इसके अधिकारी इस समय निम्न सज्जन है —

प्रधान-श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

उप प्रधान श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी, उप प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

, श्री प० ठाकुरदत्त शास्त्री मुलतानी, लाहौर

„ श्री डाक्टर गणेशीलाल जी M B, B S

कोषाध्यक्ष लाला विज्ञानशील जी B.A, लाहौर।

अंत मे नम्र निवेदन है कि प्रत्येक धर्मप्रेमी सज्जन अपनी शक्त्यानुसार कुछ न कुछ दान देकर सभा का हाथ बटावें और पुण्य के भागी बनें। जो धन इस अनाथालय मे आता है इस की रसीद तत्काल भेजो जाती है।

ओ३म्

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष १२ | चैत्र १९९५ | अप्रैल १९३८ ई० | [दयानन्दाब्द ११४ | अङ्क २

❁ वेद की शिक्षाएँ ❁

येषामिन्द्रस्ते जयन्ति । ऋग्० ८—१६—६

प्रभु जिनका सहायक है वे विजयी होते है ।

They alone conquer in the long run who are befriended by God

तमेव विद्वानेन बिभाय मृत्योः । अथर्व १०—८।४४

परमात्मा को अनन्य भाव से जानने वाला ही मृत्यु के भय से मुक्त होता है ।

One who knows Him with singlemindedness or realize His presence everywhere is not afraid of Death

अध्यात्म धारा

शान्ति (Peace)

'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' अर्थात् बुद्धिमान् लोग भिन्न २ रूपों में एक ही परमात्मा की चर्चा करते हैं। इस प्रसिद्ध वैदिक लोकोक्ति में भारत के प्राचीन ऋषियों का सदेश छुपा है और यही 'शान्ति' की वैदिक भावना की नींव है। यह एक सीधी सादी सचाई है परन्तु सीधी सादी सचाइयों को क्रियामें लाने के लिए तत्पर होना बड़ा कठिन होता है। परमात्मा व्यक्ति विशेष नहीं है वह एक महान् निराकार चेतन सत्ता है जो तमाम विश्व में ओत प्रोत है। कोई खास देश या जाति यह दावा नहीं कर सकती है कि परमात्मा केवल उसका है। परमात्मा सबका है और सब ही परमात्मा के हैं। हम सब एक परिवार के सदस्य और उसके बच्चे हैं। सब धर्मों का सुदूरवर्ती स्रोत वही प्रभु है। यदि हम प्राणी इस सचाई को ठीक २ समझ लेवें तो हम शान्ति की दिशा में एक महत्त्व पूर्ण कदम उठा लेवें—

वेद शिक्षा देते हैं कि धर्म्म का अर्थ जीवन है। यह अनुभव है। प्रतिदिन के जीवन के व्यवहार में आने और लाने योग्य वस्तु है। रीति-रिवाजों और क्रिया-कलापों का नाम जैसा कि हम गलती से समझ बैठे हैं, धर्म्म नहीं है। विशेष प्रकार के विश्वास सिद्धान्त या मत का रूप ले लेते हैं और प्रायः लोग उन्हें ही सत्य का सार समझ बैठते हैं। इस प्रकार वे सिद्धान्त हमारी कोई खास मदद नहीं करते हैं। धर्म्म का सार जीवन से और अनुभव से और जीवन को पवित्र बनाने से ही प्राप्त होता है। जब हम ईमानदारी और सचाई से धर्म्म तत्व को प्राप्त करने के यत्न में लगे होते हैं तो हम सचमुच शान्ति के राज मार्ग पर चलते होते हैं। शान्ति में जितनी अधिक आध्यात्मिक प्रेरणा है और जितनी अधिक यह मूल्यवान है उतनी शायद ही अन्य कोई वस्तु हो। सच्चे आनन्द और सच्ची पवित्रता का ही दूसरा नाम 'शान्ति' है। हम आर्य्य लोग शान्ति के विशेष रूप से इच्छुक रहे हैं। हम शान्ति पाठ के द्वारा अपनी भावना को प्रगट करते हैं। हमारी प्रार्थना, उपासना, हमारे उपदेश, प्रवचन और शंका समाधान और शास्त्रार्थ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!! के साथ समाप्त होते हैं। शान्ति की यह भावना हमारी परम्परा में ओत प्रोत है परन्तु यह भावना तब ही पूरी हो सकती है जब हम अपने सिद्धान्तों को काम में लाएं; अपने आदर्शों को सच्चे अर्थों में चरितार्थ करें, तथा दूसरे लोगों के साथ हमारे व्यवहार श्रेष्ठ हों। अध्यात्म जीवन के लिये सब से पहली आवश्यक चीज 'साम' (शान्ति) होती है। पूर्ण और किसी प्रकार की मिलावट रहित शान्ति का ही दूसरा नाम 'मोक्ष' है।

आज दुनिया को सबसे अधिक जरूरत 'शांति' की ही है। केवल शांति का उपदेश करते रहने ही से 'शान्ति' प्राप्त नहीं हो सकती है विशेषतः जबतक हमारे विचारों और आचारों में चौड़ी खाई हो। बाहरी शान्ति के लिए सबसे पहले भीतरी शान्ति की जरूरत होती है। मन की शान्ति अध्यात्म और धर्म्म मार्ग की विशेषताओं और

वास्तविक जीवनों में हम प्राय. एक दूसरे से अनुचित लाभ उठाते हैं। हम ईर्ष्या और अभिमान से अपने सच्चे आइने को मैला करदेते हैं। हम पक्के आत्म-प्रपंची बनगए हैं। हम न सिर्फ दूसरों को ही बरन् अपने को भी बहुत धोखा देते हैं। जब तक हम इस लबादे को उतार कर नही फेंक देते हैं और सत्य और नम्रता का व्यवहार नहीं करते हैं तब तक सच्ची शान्ति की कोई आशा नहीं हो सकती है। मक्कारी मौजूदा दुनियाँ का सबसे बड़ा पाप है और जब इसके साथ अभिमान जुड़ जाता है तो यह बड़ा अनर्थ और हर प्रकार का पतन करती है।

इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि आज हम दुखी संसार में रहते हैं। विरोध और अविश्वास के भाव प्रबल हैं। इस सब के होते हुए भी हम सबका कर्त्तव्य है कि पारस्परिक सद्-भाव को पैदा करें।

गुणों को जिनका सत्शास्त्रों मे वर्णन किया गया है चरितार्थ करने से ही प्राप्त होतो है।

सत्य, ईमान्दारी, और प्रेम के व्यवहार मे बाहरी शान्ति उपलब्ध करने की हममें योग्यता आती है। तबही अपने साथियों के साथ हमारे व्यवहार शुद्ध होते हैं। व्यक्तियों की तरह राष्ट्रों को भी शान्ति के लिए योग्यता प्राप्त करने की जरूरत होती है। हाथ में तलवार लेकर तुम शान्ति के लिए काम नहीं कर सकते हो इस का अर्थ अवि-श्वास और संदेह है, यह दोनों शान्ति के सबसे बड़े शत्रु होते हैं। शान्ति के लिए कोशिश करने का पेशा बनाने से भी काम नहीं बनता। इस कोशिश के साथ पूर्ण आचारिक तपस्या और नियन्त्रण होना चाहिए जो 'बदले प्रति हिंसा' शोषण, और दोहन इत्यादि की दुर्भावनाओं को साफ करदे।

स्वाभाविक धर्म

(लेखक—श्री बा० पूर्णचन्द्र जी ऐडवोकेट आगरा)

अनेक प्रचलित धर्मों मे से मनुष्य के लिये कौन सा धर्म सब से प्राचीन और मानने योग्य है यह एक जटिल प्रश्न है। इस पर सदैव से विचार होता रहा है और होता रहेगा। पूर्व इसके कि हम यह निश्चित कर सके, कि कौन से धार्मिक सिद्धान्त स्वाभाविक हैं हमे यह जानना जरूरी है कि मनुष्य के स्वभाव से क्या अभिप्राय है। और उस अभिप्राय को लक्ष्य मे रखकर हम यह निर्धारित कर सकते हैं कि जिन धार्मिक सिद्धान्तों से स्वाभाविक गुण विकसित हो सके वही सिद्धान्त स्वाभाविक धर्म के सिद्धान्त है। यहा पर दूसरी बात और स्पष्ट कर देनी है कि धर्म के शब्द से आजकल कहीं तो अधिक विस्तृत अर्थ लिये जाते है और कहीं अधिक सङ्कुचित। धर्म और मजहब पर्यायवाची नहीं है। स्वाभाविक धर्म से हमारा अभिप्राय उन धार्मिक सिद्धान्तो से हैं, जो रूढ़ियों और रिवाजों से परे है। जो देश काल और इतिहास के बन्धन से रहित हैं। जिस मे साम्प्रदायिकवाद का रग नहीं है। जो स्त्री-पुरुष काले-गोरे, जातीय और वंश की शृंखलाओं से जकड़ा हुआ नहीं है।

धर्म को यदि हम सार्वजनिक और सार्वभौमिक रूप देना चाहते हैं अथवा धर्म का ऐसा स्वरूप समझना है जो ससार मात्र में प्रचलित होने योग्य और हर दशा मे लागू हो तो हमे सच्चे स्वाभाविक धर्म की खोज करनी चाहिये।

मनुष्य का स्वभाव क्या है ?

मनुष्य के स्वभाव से अभिप्राय जीवात्मा के स्वाभाविक गुणो से है। जीवात्मा के स्वाभाविक गुण प्राचीन वैदिक साहित्य के अनुसार निम्न लिखित हैं —

(१) ज्ञान

(२) इच्छा
(३) द्वेष
(४) प्रयत्न
} = कर्म

(५) सुख
(६) दुख
} = भोग

जीव के छः स्वाभाविक गुण हैं। वह छः तीन के अन्तर्गत आजाते हैं। अर्थात् ज्ञान कर्म, और भोग के और कर्म और भोग का भी घनिष्ट सम्बन्ध है। कर्मों का फल भोग हैं और भोग भी कर्मों ही द्वारा होता है। जीव के उपयुक्त छहों गुणों का यदि ठीक २ विकास होता रहे तो जीव उन्नति करके इस कर्म और भोग के बन्धन से एक विशेष नियत अवधि के लिये छुटकारा पा सकता है।

इन गुणों का विकाश कैसे हो ?

सब से पहिले हम जीव के ज्ञान सम्बन्धी गुण को लेंगे। ज्ञान ही मनुष्य की विशेषता है और यह विशेषता ही उसे प्राणी मात्र मे श्रेष्ठ बनाती है।

ज्ञान की वृद्धि स्वाध्याय से होगी, जितना हमारा ज्ञान बढ़ेगा उतना ही हमारा विकास होगा इसलिये हमेहर समय स्वाध्याय करते रहना चाहिये चाहे वह पुस्तको से हो, या सत्सङ्ग से हो अथवा ससार के पदार्थों के परीक्षण और देख भाल से हो।

ज्ञान के पश्चात् हमे कर्म के विषय पर विचार करना है। कर्म जब हम करते हैं, तो उसके मुख्य दो कारण होते हैं। हमारे अन्दर किसी चीज की प्राप्ति की इच्छा होती है इसका नाम इच्छा है। किसी चीज को हम अपने पास से हटाना चाहते है इसका नाम द्वेष है। चाहे इच्छा की पूर्ति के लिये चाहे अनाच्छित चीज को अपने पास से हटाने के लिय हमे उद्योग करना पडता है। इस उद्योग का नाम ही प्रयत्न है। यह जीवात्मा के तीनो गुण अर्थात् कर्म करने का स्वभाव उस समय पूर्णरूप से विकाश पा सकता है जब कर्म करने की हम मे शक्ति हो, और हम कर्म करने के योग्य हो। यह दशा शौच और तप से प्राप्त हो सकती है। शौच-सफाई का नाम है न केवल शारीरिक सफाई बल्कि मन की बुद्धि की और विचारों की भी सफाई। हमारे निर्मल विचार होने चाहिये और कर्म करने मे मिहनत, सहनशीलता होनी चाहिये और जिसमे जरा भी आलस्य न हो। शौच और तप से कर्म मर्यादित हो जाते है। कर्म ठीक-ठीक मर्यादित होजाने पर भी भोग का प्रश्न फिर भी शेष रह जाता है क्यों कि कर्मों का फल तो किसी दूसरी शक्ति द्वारा प्राप्त होता है। कर्म मर्यादित होते हुये भी भोग की दशामे मर्यादा होने की महान् आवश्यकता है।

जब हम इच्छा या द्वेष के कारण प्रयत्न करेंगे तो उस के दो ही परिणाम हो सकते है। हमे इच्छित पदार्थ मिल जावें या न मिल जावें। यदि हमारी इच्छा पूरी होगई तो इसका नाम सुख और न पूरी हुई तो इसका ही नाम दु ख है। कर्म करते हुए सु ख और दुख उत्पन्न होते रहना स्वाभाविक है। यदि हम सुख की दशा मे मर्यादा के अन्दर और दुख की दशा मे भी मर्य्यादा के अन्दर रहें तो हमारा विकास होता रहेगा। अर्थात् हमारे ज्ञान और कर्म की शक्ति रहेगी। सुख की दशा मे अभिमान उत्पन्न होजाना बडी साधारण सी बात है। अभिमान आते ही दूसरों से द्वेष होजाता है और अपने को सब से अधिक सुखी समझने से यदि हम किसी दूसरे को अधिक सुखी देखते हैं तो वह हमारे सुख की दशा दु ख मे बदल जाती है। सुख की दशा मे विकास ईश्वर पर भरोसा करने से होगा। अर्थात ईश्वर प्रणिधान से। ईश्वर पर भरोसा करन से हमारे अन्दर सफलता की दशा मे यह भाव होग कि हमे जो कुछ सफलता मिली है, वह ईश्वर की ही कृपा है। दु ख की दशा मे सब्र या सन्तोष की आवश्यकता है। सन्तोष क

बिना दुःख का कोई उपाय नहीं है। यदि हम दुःख को सुख मे परिवर्तित करना चाहें तो न तो यह सदैव सभव है और इसका उद्योग भी कुछ कम दुःख का कारण नहीं। दुःख की अचूक औषधि सन्तोष है। सन्तोष भी ईश्वर पर ही भरोसे का दूसरा रूप है। सफलता में हमें यह समझना चाहिए कि सफलता उसके अनुग्रह से हुई, असफलता मे हमें यह समझना चाहिए कि हम ने तो भरसक उद्योग किया परन्तु परिणाम ईश्वर के अधीन था। दुखी तो हम जब हों जब हमारे परिश्रम में कमी हो, पूरा परिश्रम करके परिणाम ठीक न होने पर दुखित न होना इसी का नाम सन्तोष है। यहा यह भी स्पष्ट कर देना है कि सन्तोष अकर्मण्यता या आलस्य का नाम नहीं है। कर्म और योग का घनिष्ट सम्बन्ध है। कर्म पूरा पूरा करके उसके फल पर चिन्तित न होना सच्चा सन्तोष है और हमें सुखी बनाने के लिए रामबाण है।

हमने जहां तक जीवात्मा का विचार और आचार सम्बन्धी बातों से सम्बन्ध है, उसके लिए स्वाभाविक धर्म ऊपर दिखलाये, जिस के आवश्यक अंग इस प्रकार हैं—

स्वाध्याय, शौच, तप, ईश्वर प्रणिधान और सन्तोष। अब हमे जीवात्मा के लिए व्यावहारिक धर्म के भी आवश्यक अंगों पर विचार करना है।

मनुष्य संसार में अकेला नहीं रहता और न रह सकता है, वह स्वभाव से मिल-जुल कर रहता है और उसका सम्पर्क दूसरों से होता है। यदि हमारे आचार और विचार ठीक भी हों परन्तु यदि हमारा व्यवहार दूसरों से ठीक न हो या दूसरों का हम से तो भी परिणाम ठीक न होगा, जीवात्मा का विकास न हो पावेगा, वह अपने आचार से एक पग आगे बढ़ावेगा तो दूसरे उसे चार कदम पीछे घसीट लेंगे। व्यावहारिक धर्म के अंगों पर विचार करने में भी हमें जीवात्मा के ऊपर वर्णित स्वाभाविक गुणों पर ही दृष्टि रखनी होगी। यदि स्वाध्याय से ज्ञान की वृद्धि होती है तो हमें दूसरों के साथ अपने स्वाध्याय को ठीक ठीक रूप मे रख देना चाहिए। अर्थात् सब से पहला व्यावहारिक धार्मिक नियम सत्य अर्थात् सच बोलना और सत्य व्यवहार करना, जो बात जैसी हो, उसे वैसी ही कह देना, इस लिए जीव का स्वाभाविक गुण ज्ञानी होना, सत्य से वास्तविक रूप मे विकसित हो सकता है।

जीव का स्वाभाविक दूसरा गुण अर्थात् कर्म करना यदि व्यक्ति गत दृष्टि से शौच और तप से विकसित होते हैं तो दूसरों के व्यवहार में ब्रह्मचर्य और अहिंसा की आवश्यकता है। ब्रह्मचर्य का और शौच का घनिष्ट सम्बन्ध है। ब्रह्मचर्य से अभिप्राय हर प्रकार की व्यावहारिक शुद्धि से है। हमारे मन, वाणी व कर्म न केवल अपने लिए शुद्ध होने चाहिए बल्कि दूसरों के संग व्यवहार में भी। इसी लिए ब्रह्मचर्य एक आवश्यक अंग है। तप के लिए अहिंसा की आवश्यकता है। हमें खब परिश्रम करना चाहिए परन्तु हमारे परिश्रम से किसी दूसरे को कष्ट नहीं होना चाहिए। यदि हमारे परिश्रम का फल दूसरों को दुख पहुंचाना हुआ तो उसका नाम तप नहीं होगा, वह तो एक

कोई और ही दशा होगी। इसी प्रकार योग मे हमें अस्तेय और अपरिग्रह की आवश्यकता है। यदि हमे असफलता में सन्तोष न होगा तो हम दूसरों की चीज चुराने की चेष्टा करेंगे। सन्तोष हमारे व्यक्ति गत सुधार के लिए है, और उसका व्यावहारिक रूप चोरी न करना है। जो चीज हमें अपने परिश्रम से प्राप्त नहीं हुई है, उसके लिए हमे दूसरों के पास से बलात्कार या छिप कर लेना बहुत बुरा है। इसी प्रकार सफलता की दशा मे हमें अपरिग्रह अर्थात कंजूसी से बचना चाहिए। जो चीज हमें प्राप्त हो गई है उससे हम अपनी आवश्यकता पूरी करें और फिर उसको दूसरों के लाभ में लगावें। जिस प्रकार दूसरे की चीज को बिना अधिकार के लेना चोरी है, उसी प्रकार अनुचित मोह के कारण चीज को अपने पास अनुचित रूप से रोके रखना और दूसरों तक न जाने देना भी एक प्रकार की चोरी है। अपरिग्रह का दान की मर्यादा से घनिष्ठ सम्बन्ध है, और इस लिए जीव के लिए व्यावहारिक धर्म जिन्हें हम स्वाभाविक कह सकते हैं, यह है ब्रह्मचर्य अहिंसा, अस्तेय और अपरिग्रह।

बाधाओं से बचना

विकास प्राप्त करने के लिए यदि किन्हीं विशेष सिद्धान्तों की आवश्यकता है, तो हमे उन बातों से भी सचेत हो जाना चाहिए जो उनमें बाधाएं उत्पन्न करती हैं। हम उनको चाहे अधर्म के नाम से कहें चाहे धार्मिक मार्ग मे रुकावटों के नाम से।

अहंकार अर्थात् अभिमान सत्य का विरोधी है। काम अर्थात् अनुचित इच्छा ब्रह्मचर्य की विरोधी है। क्रोध अहिंसा का विरोधी है। लोभ चोरी की जड अर्थात् अस्तेय का मूल कारण है। मोह का सम्बन्ध अपरिग्रह से है। इस लिए हमें व्यावहारिक दृष्टि से भी और व्यक्ति गत आचरण की दृष्टि से भी अहंकार काम, क्रोध, लोभ और मोह से बचना चाहिए। अहंकार से स्वाध्याय असफल हो जायगा, क्रोध से तप में बाधा होगी काम से शौच मे त्रुटि आजायगी, और लोभ और मोह से न सन्तोष रहेगा और न ईश्वर प्रणिधान।

लक्ष्य क्या होना चाहिये।

उपयुक्त प्रकार के विचार आचार और व्यवहार सम्बन्धी स्वाभाविक धार्मिक नियमों के पालन से हमे लक्ष्य क्या रखना चाहिए। और वह यह है कि सब से पहिला लक्ष्य रखना धर्म पालन करना है। अर्थात् Duty for Duty Sake उससे अर्थ की प्राप्ति होगी और अर्थ की प्राप्ति से कामना पूरी होगी, और कामना पूरी होजाने का ही नाम मोक्ष है। अर्थात् हम धर्म के साथ अर्थ प्राप्त करते हुए अपनी कामनाओं को पूरा करेंगे। और इस जीवन मे सुखी रहेंगे और मोक्ष भी प्राप्त कर सकेंगे।

विज्ञान और सृष्टि-संहार

रघुनाथ प्रसाद पाठक

पश्चिम का विज्ञान (सायन्स) अर्से से विशाल मानव समाज को प्रेम करने वाले लोगों में तिरस्कृत है, क्योंकि वह निरुद्देश्य है। पता नहीं वह मानवसमाज को कहां पहुंचाना चाहता है। मनुष्यों का हित करने के स्थान में वह सिर्फ उनका अहित ही नहीं कर रहा है वरन उन के संहार में भी प्रयुक्त हो रहा है। वैज्ञानिक आविष्कार संसार की सुख शान्ति और प्रसन्नता के समुदाय में योग देने के बजाय उन्हें ही मिटा देने पर तुले हुए दीख पड़ते हैं। इस विज्ञान ने मानवी-प्रतिभा के प्रति शान्ति प्रिय लोगों के हृदयों में भयंकर तूफान पैदा कर दिया है। आज पूर्व और पश्चिम के रंग-मंच पर सृष्टि संहार का जो ताण्डव नृत्य हो रहा है, उस में सब से अधिक वैज्ञानिक आविष्कारों का प्रयोग हो रहा है। वर्तमान में स्पेन और चीन की निर्दोष प्रजा के विध्वंस ने हवाई जहाज़ों द्वारा बम वर्षा से आहत पीड़ित, रोती, बिलखती और तड़पती हुई प्रजाके चीत्कारों ने मनुष्य समाज से प्रेम करने वाली जनता की आत्मा को कंपा दिया है। पश्चिम तथा पूर्व के साम्राज्यवादी राष्ट्र अधिक से अधिक और शीघ्र से शीघ्र विध्वंसकारी आविष्कारों की होड़ में लगे हुए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि संसार में

विध्वंस का एक महान विप्लव

आने वाला है। लोगों का तभी तो कहना है कि भावी युद्ध जिस के लक्षण असंदिग्ध रूप में देख पड़ रहे हैं बहुत जल्द समाप्त होगा और १९१४ के महासमर से भी जन—संहार इत्यादि प्रत्येक दृष्टि से अधिक भयङ्कर होगा। साम्राज्यवादी राष्ट्र कैसे २ भयङ्कर आविष्कारों मे लगे हुए हैं, अख़बार पढ़ने वाले प्रायः जानते होंगे। अभी हाल में समाचार मिला है कि जर्मन लोग युद्धमें शहरी आबादी (Civil population) के संहार के लिए प्लेग, हैज़े, पीले बुख़ार, चेचक, पेचिश इत्यादि संक्रामक और घातक रोगों के कीटाणु (germs) तय्यार करनेकी सोच रहे हैं। हवाई जहाज़ों से बम वर्षा इत्यादि के मुक़ाबले में ये कीटाणु कितने प्रलयङ्कर सिद्ध हो सकते हैं इस का पाठक सहज ही अनुमान कर सकते हैं। इस सम्बन्धमें २१ सितम्बर के न्यूयार्क टाइम्ज़ (New York Times) की रिपोर्ट से अच्छा प्रकाश पड़ता है।

Wireless to the New York Times.
Berlin—Sep 21

With chemical warfare already proved in the World-War, experts now are busy discussing the potentialities of Germ warfare

A discussion of the effectiveness of distributing deadly microbes among the enemy civilian population is contained, in "Deutsche Wehr," a military publication. The author bases his conclusions on those of an Italian medical officer who recently published his views.

The immediate effect of Bacterial Warfare, with the probable paralyzing

of the opposing nations moral is stressed in the article.

Three main points are dealt with. First the most infectious germs, Second the ways and means of their distribution and third the necessary preparations for the generations of contagious diseases and the spreading of pestilences

The study and preparation of contagious germs is for che mical experts in laboratories, it is pointed out

The most efficacious microbes would include Spotted Typhus, Yellow Fever Typhoid, Small pox, Cholera and Plague.

अर्थात विशेषज्ञ कीटाणुओं के युद्ध की सम्भावनाओं पर विचार कर रहे हैं। शत्रु की शहरी आबादी के संहार के लिये पीले बुख़ार, टाइफाइड चेचक, हैज़े और प्लेग के कीटाणुओं के प्रयोग को सोचा जा रहा है और रसायनशालाओं में उनके परीक्षण पर भी विचार हो रहा है।

आगे इस रिपोर्ट में बतलाया गया है कि मच्छरों से पीले बुख़ार के कीटाणु पैदा किए जाएंगे। कूओं तथा अन्यान्य जलाशयों में हैज़े के कीटाणु फैलाए जाएंगे। यह भी प्रगट किया गया है कि ये कीटाणु प्रयोग कर्ताओं के लिए निर्दोष और बीमारी फैलाने में सशक्त होंगे। यह भी कहा है कि पिछले युद्ध में यह प्रयोग सफल सिद्ध हुआ है। प्लेग के कीटाणु सब से ज्यादा भयंकर ख्याल किए जाते हैं क्योंकि वे ठण्डी और तर हवा में भी फैलाए जा सकते हैं। यह भी सोचा जा रहा है कि शत्रु सेना पर इन कीटाणुओं का प्रयोग युद्ध क्षेत्र में सेना के विरुद्ध नहीं होना चाहिये, वरन्, शत्रु की शहरी आबादी पर होना चाहिए। यदि सेना पर प्रयोग होगा तो आक्रमण करने वाली सेना के लिए भी खतरा होगा। हवाई जहाज़ों द्वारा इनका वितरण बहुत प्रभावशाली बतलाया जाता है या विशेष ऐजेंटों के द्वारा वितरण होगा।

प्रश्न होता हैं

कि विज्ञान का ऐसा दुरुपयोग क्यों होता है। इस के कई कारण हैं। सब से मुख्य कारण विज्ञान और जीवन की भावना को समझने की भूल है। ज्ञान बुद्धि का विषय है। वर्तमान विज्ञानने बुद्धि के अद्भुत चमत्कार फैलाए हैं इस के कारण लोगों ने और राष्ट्रों ने आशातीत उन्नति की हैं। यह सब होते हुए भी लोगों और राष्ट्रों में शाँति नहीं है। इसका कारण इस बुद्धि और ज्ञान में समन्वय या उचित बैलेन्स (balance) रखने वाली चीज़ का अभाव रहा है वह चीज धर्म, आध्यात्मिकता या नैतिकता है। यही बात पश्चिम के विचारक और समझदार व्यक्ति मानते और प्रगट करते हैं। अभी हाल में श्रीयुत लार्ड लोथियान ने जो भारत में आए हुए थे, अलीगढ़ यूनीवर्सिटी में दीक्षांत भाषण के दौरान में इसी सचाई को प्रगट किया है। उन्हों ने कहा है :—

"Modern science in the West has had two main results, On the one hand it has enormously extended the control of man over nature and the forces latent in nature, on the other hand it has undermined the authority of traditional organized religion in the minds of the university educated world,

Civilized man has worked marvels with the new powers that science has put in his hands But he has made no equivalent advance on the moral side so as to ensure that these powers shall be used for the benefit rather than for the destruction of mankind,"

अर्थात "पश्चिम की वर्तमान सायन्स के दो बड़े परिणाम हैं। एक यह कि इसने प्रकृति पर मनुष्य की शक्ति को बहुत बढ़ा दिया है और दूसरे इसने धर्म की ऐतिहासिक शक्ति का नाश कर दिया है। आज यूनिवर्सिटियों के पढ़े हुए सभ्य पुरुष साइन्स से प्राप्त हुई नई शक्तियों से अद्भुत कार्य्य सम्पादन कर रहे हैं। किन्तु इसने उन के नैतिक (Moral) आचार विचारों में कोई ऐसी उन्नति नहीं की जिस से यह शक्तियाँ मनुष्य जाति के लिये विध्वन्सकारी होने के स्थान मे लाभकारी सिद्ध हो सकती"। कारण, जब तक विज्ञान और धर्म्म में उचित समता न होगी तब तक न विज्ञान ही कल्याणकारी हो सकती है और न धर्म ही।

विज्ञान और धर्म का अटूट सम्बंध है

बिना एक के दूसरा व्यर्थ और विनाशक है। जितने अंश में सायन्स में धर्म का अंश होगा उतने अंश में ही वह फले फूलेगी। जितने अंश में धर्म मे ज्ञान का अंश होगा उतने ही अंश में वह फले फूलेगा। दार्शनिकों के कारनामे धर्म-मार्ग में प्रेरित की हुई बुद्धि के जितने फल हैं उतने केवल बुद्धि के नहीं हैं। ये विचार एक दूसरे पाश्चात्य विचारक हर्बर्ट स्पेन्सर के हैं, जो उन्होंने अपनी पुस्तक Education (शिक्षा) में दर्शाए हैं।

तब ही आजकल के विचारक यह कहनें के लिए बाधित हुए है कि हमें आज न बौद्धिक धूर्तों (Intellectual Knaves) की ज़रूरत है और न आध्यात्मिक मूर्खों (Spiritual Fools) को।

हमें आवश्यकता है

बुद्धिमान और धर्म परायण व्यक्तियों की। अर्थात् दिल और दिमाग दोनों रखनवाले सज्जनों को। वैदिक धर्म के आचरण से ही ऐसे व्यक्ति सम्भव हैं। अन्य किसी प्रकार से नहीं। क्योंकि यही बुद्धि युक्त धर्म है।

जब तक पश्चिम का विज्ञान ऊल जलूल रीति से निरुद्देश्य रहेगा और जब तक भारत की प्राचीन आध्यात्मिकता के रङ्ग से वह रङ्गा जाकर लोगों की दृष्टि को न बदल कर, विश्वबन्धुत्व, मानव जीवन की पवित्रता तथा चेतन जगत के प्रति घटते हुए प्रेम को न बढ़ायगा, तब तक पश्चिम का विज्ञान भयकर परिणाम पैदा ही करता रहेगा और विश्व की शान्ति और सृष्टि का सौन्दर्य्य ख़तरे में ही रहेगा। क्याही अच्छा हो यदि हम लोगों का दृष्टिकोण बदल सकें?

हिन्दी के लिये रोमन लिपि ?

[श्री बाबू शिवप्रसाद जी गुप्त काशी]

मैंने सम्मानित भाई सुभाष बाबू का हरिपुरा में राष्ट्रीय सभा के मञ्च से किया हुआ, अभिभाषण पढ़वाकर सुना। मुझे एक बात उस में बहुत खटकी यह भाषण राष्ट्रीय महासभा के मञ्च से किया हुआ है इस कारण इस का एक विशेष महत्व है और इसी कारण इसके विचारों की आलोचना करना देशके एक छोटे से छोटे व्यक्ति का भी कर्तव्य हो जाता है। मैं अपने सम्मानित मित्र को विश्वास दिलाना चाहता हू कि यह पक्तियां इसी विचार से लिखी जा रही है मैं इसका अच्छी तरह अनुभव कर सकता हू कि इन के लिखने की योग्यता और पाण्डित्य मुझ मे नहीं है तो भी दुस्साहस के लिये क्षमा मांगता हुआ नीचे के विचार अङ्कित कर ही रहा हू।

उक्त राष्ट्रपति महोदय ने भारत वर्ष के लिये रोमन लिपि मे" व्यवहार का जिक्र करते हुए उस के गुणो का वर्णन किया है। मुझे अत्यन्त खेद है कि उन्हें स्वीकार करने में मैं अपने को असमर्थ पाता हू। "रोमन लिपि मे" उन सब उच्चारणों को व्यक्त करने की शक्ति नहीं है जिसके बिना भारतीय भाषाओं का ठीक-ठाक उच्चारण हो ही नहीं सकता। मैं इस बात को दावे से कह सकता हूं कि जो व्यक्ति भारतीय भाषाएं नहीं जानता वह "रोमन अक्षरों में लिखी हुई किसी भी भारतीय भाषा का शुद्ध उच्चारण कदापि नहीं कर सकता। इतना ही नहीं वरन् रोमनाक्षरों में लिखी जाने वाली यूरोपीय भाषाओं का उच्चारण भी उन भाषाओं से अनभिज्ञ पुरुष नहीं कर सकता। एक व्यक्ति जो फारसीसी भाषा नहीं जानता वह रोमन भाषा जानते हुए भी फारसीसी भाषा नहीं पढ सकता। इस के विपरीत "नागरी" अक्षरों में लिखी हुई किसी भी ससार की भाषा का उच्चारण नागरी लिपि जानने वाला कर सकता है। यह बहुत बड़ा दावा है अस्तु कोई भी निरपेक्ष व्यक्ति इसे परीक्षा की कसौटी पर कस कर इस की परीक्षा कर सकता है।

आगे चल कर राष्ट्रपति महोदय ने यह भी कह डाला है कि तुरकी वालों ने "तुरकी" भाषा के लिये अरबी अक्षरों के स्थान में रोमनाक्षरों को ग्रहण कर लिया है और इससे वे वर्तमान जगत के निकटतम पहुंच गये है। यह बात कहां तक सही है इस में मुझे बड़ा सन्देह है। हां, यह अवश्य सत्य है कि "कमाल अता तुर्क ने" तुरकी मे रोमन लिपिका प्रचार किया है यह बात सन्दिग्ध है कि तुरकी के उच्चारण रोमन लिपि में ठीक-ठीक आ गये है, या इस परिवर्तन से तुरकी में शिक्षा के प्रचार मे उन्नति हुई है। हा यह बात कुछ अशों में मानी जा सकती है कि अनेक चिन्हों को रोमन लिपि में मिला जुला कर तुरकी भाषा उसमें लिखी जाने लगी होगी,यह बात मानने के लिये कम से कम मैं तैयार नहीं हूं कि इस प्रकार रोमन अक्षरों में लिखी हुई तुरकी को 'अतुरकी" (तुरकी भाषा न

जानने वाला) पढ़ सकता है । किन्तु यह बात तुरकी वालों की है, वे इसका निपटेरा स्वयम् कर लेंगे और समय इसका निपटेरा करा लेगा ।

राष्ट्रपति महोदय ने यह भी कहा है कि देश की भिन्न भिन्न लिपियों के कारण जो कठिनाइयां पड़ती हैं उनको सुलझाने में भी यह व्यवस्था सहायक होगी । क्या देश की भिन्न २ आर्य लिपियां देवनागरी अक्षरों में नहीं लिखी जा सकती ? वास्तव में देश की आर्य भाषाओं के लिखने के लिये जो लिपियां व्यवहृत होती हैं वे सभी "नागरी" लिपि हैं या उसी का रूपान्तर हैं उदाहरणार्थ हिन्दी, बंगला, गुजराती, मराठी, तेलुगू अक्षर जो देखने में भिन्न २ जान पड़ते हैं वास्तव में वे एक ही हैं और सभों की "बारहखड़ियां एक ही हैं । हां, भिन्न २ प्रान्तों में व्यवहृत होने के कारण उनकी रूप रेखा में थोड़ा भेद पड़ गया है जो थोड़ा सा यत्न करने से और आपस में सद्भाव होने से बहुत जल्द मिटाया जा सकेगा । इस ओर प्रातःस्मरणीय श्री शारदाचरण मित्र महोदय ने उद्योग करना आरम्भ भी किया था और "देवनागर पत्र" निकाल कर इस पर आन्दोलन आरम्भ भी किया था पर उनकी मृत्यु के कारण यह कार्य रुक सा गया है, जो फिर से आरम्भ किया जा सकता है और किया जाना चाहिये ।

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि यदि कोई अक्षर ऐसे हैं जो सारे संसार की वर्णमाला बन सकने की योग्यता रखते हैं तो वह देवनागरी अक्षर ही हैं । पर मैं यह मानता हूँ और जानता हूं कि इस की वर्तमान् बारह खड़ियों में कतिपय अन्य अनेक उच्चारणों के वर्णों को बढ़ाने की आवश्यकता है । यदि इस में पांच पांच अक्षरों की जगह आठ आठ अक्षर एक एक वर्ग में कर दिये जावें तो संसार के सब उच्चारण इन में अङ्कित किये जा सकते हैं । उदाहरण के लिये अगर 'क' वर्ग में "क़ाफ़, ख़े, ग़ैन, " के उच्चारण के लिये अक्षर बढ़ा दिये जावें तो यह लिपि पूर्ण वैज्ञानिक लिपि हो जावेगी जैसी कि रोमन लिपि कदापि नहीं बनाई जा सकती ।

अब रह गयी अरबी लिपि की बात । लिपि और भाषा का सम्बन्ध धर्म से नहीं हुआ करता पर हमारे दुर्भाग्य से हमारे देश में यह प्रश्न भी धर्म का अङ्ग माना जाने लगा है । हमारे कुछ मुसलमान भाइयों ने इसे भी अपना धार्मिक प्रश्न बना लिया है । मैं उनकी जान कारी के लिये यहाँ यह लिख देना चाहता हूं कि भारतवर्ष म भी सब प्रान्तों में मुसलमान भाई इस पर आग्रह नहीं करते । बङ्गाल में बङ्गाली मुसलमान अधिकांश बङ्गाली ही बोलते हैं और बङ्गाक्षरों का ही व्यवहार करते हैं । इसी प्रकार गुजराती मुसलमान गुजराती अक्षरों में ही अपना बही- खाता लिखते हैं और कारोबार करते हैं । यही दशा दूसरे प्रांतों की भी है, दूर कहाँ तक जावें, अपने संयुक्त प्रांत के मुसलमान व्यापारी भी अपना बही खाता हिन्दी में ही रखते हैं । हाँ अब थोड़े दिनों से उन में 'अरबी' अक्षरों का प्रचार हो रहा है पर यह चन्द्रोज़ा है यह टिकने वाला नहीं है और न टिक ही सकता है । जिस प्रकार आज दिन अंगरेज़ों की गुलामी से अंगरेज़ी भाषा और रोमनाक्षरों का बोलबाला हो रहा है उसी तरह चार पाँच सौ वर्ष पूर्व जब यहाँ निकट पश्चिमी जातियों का बोलबाला और राज था उस समय यहां 'अरबी' अक्षरोंका रिवाज हुआ और चल गया पर यह भी देवनागरी अक्षरों के निकालने में असमर्थ रहा । मैं यहाँ कह देना चाहता हूं कि मैं मुसलमानों को विदेशी और बाहर से आया

हुआ नहीं मानता। वे भारतीय हैं और उनके बाप दादा भी सात पुश्ततक भारतीय थे। अरब या फारस से चन्द आदमी सुदूर भूत काल में आये रहे होंगे पर आज तो भारतीय मुसलमानों की धमनियों में भारतीय रक्त ही बहता है और वे भारतीय हैं और सदा भारतीय रहेंगे। धर्म और जाति से कोई सम्बन्ध नहीं है। वे दो पृथक् वस्तुएं हैं। आज भारत के ईसाई सज्जनों को कोई अंगरेज नहीं कहता और न वे अंगरेज हैं ही, उसी प्रकार भारतीय मुसलमान 'अरब' या फारसी न हैं और न हो सकते हैं। जो मुसलमान सज्जन खिलाफत आन्दोलन के समय भारत से 'हिजरत कर के काबुल या अन्य देशों में गये थे उन से पूछिये कि उनकी क्या दुर्दशा हुई और जो बेचारे लौट सके वे उस मुसीबत और उस बुद्धि के विपरीत बात का अन्दाजा बता सकते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि भाषा और अक्षर का चोली दामन का साथ है वह क्षणिक आवेश और ज़रा ज़रासी बात पर बदला नहीं जा सकता। हां मैं यह मानने को अवश्य तैयार हूँ कि जहां कहीं इन अक्षरों में कमियाँ हों या कठिनाइयाँ हों उन्हें सुधार लेना चाहिये। उदाहरणार्थ, यदि आज कल की छपाई में ऊपर नीचेकी मात्रा में असुविधा होती हो तो छपाई के लिये ऊपर नीचे की मात्राओं को आगे पीछे लगाकर जैसे बङ्गला एकार में लगाई जाती हैं, वह दिक्कत दूर कीजासकती है पर इनका आमूल परिवर्तन बुद्धिमत्ता न होगी। मैं इसकी ओर भाई जवाहरलाल और श्री रघुजीत सीताराम पण्डित का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ क्यों कि आप लोग रोमन अक्षरों के बड़े पक्ष पाती एक समय थे और स्यात् अब भी हो सकते हैं और उन से प्रार्थना करना चाहता हूं कि इस विचार धारा के लाभ और हानि की ओर विचार करके अपनी सोची हुई सम्मति देने की कृपा करें।

इस विषय में बहुत कुछ लिखा जासकता है और पक्ष तथा विपक्ष में बड़ी बड़ी दलीलें दी जा सकती हैं पर यह काम विद्वानों का है और वे ही इसे करेंगे। मुझे तो केवल राष्ट्रपति की बातों की ओर देश का ध्यान आकृष्ट करना था वह इतने में हो जायगा।

—('आज काशी)

ऋषि दयानंद और वेद भाष्य शैली

[लेखक—आचार्य पं० चन्द्र कान्त जी]
तथा
[लेखिका—श्रीमती सुशीला देवी विद्यालङ्कृता त्रिवेदी]

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका

ऋषि दयानन्द की असाधारण योग्यता वा भाष्यो की मौलिकता का परिचय ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका से हो जाता है। इनकी भाष्य शैली का मर्म इस ग्रथ की पंक्ति २ मे प्रतिभासित हो रहा है। ऋषि के प्रतिपक्षी विद्वान भी इस ग्रथ की प्रशंसा करते हैं। मैक्समूलर लिखते हैं—

* We may divide the whole Sanskrit Literature beginning with the Rigveda and ending with Dayanand s introduction to his edition of the Rigveda, his by means intersting Rigveda Bhoomika, in two great periods (India what can it teach us III lecture)

अर्थात "संस्कृत साहित्य का प्रारंभ ऋग्वेद से होता है और भाष्य भूमिका पर आकर समाप्ति होती है। यह बड़ी रुचिकर है।"

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भाष्य-भूमिका वैदिक साहित्य के मोलिकता के युग की सन्देश वाहक है। ऋषि ने अपनी भाष्य शैली को संक्षेप में समझाने के लिये यह भूमिका लिखी है। जिस विषय का विशेष प्रतिपादन भूमिका में किया है उसी को भाष्य में चरितार्थ किया गया है। भूमिका मे सिद्ध किया गया है कि वेद अनादि हैं, ईश्वर प्रणीत हैं, वेदों में एकेश्वर वाद है और वेद सर्व सत्यविद्याओं के भण्डार हैं। समस्त मत्रो का प्रतिपाद्य विषय ईश्वर ही है। अर्थात वेद की अध्यात्म व्याख्या ही सर्वश्रेष्ठ है। भाष्य मे इसी विचार को विशेष महत्व दिया गया है। ऋषि को अन्य प्रकार के अर्थों के साथ २ आध्यात्मिक अर्थ विशेष पसन्द थे। ऋषि का विचार है कि याज्ञिकों की ३३ देवो की स्तुति का, पाश्चात्यों की जड पूजा का वेदों मे विधान नहीं है प्रत्युत अग्नि, वायु, सूर्य आदि नामो से स्पष्टतया परमात्मा का ही वर्णन होता है। अर्थात् ऋषि दयानन्द औपनिषत् पक्ष के ही पोषक थे। उनके विचारो मे पूर्व के भाष्यकारों से मौलिकता वा स्वतंत्रता का प्रकाश पाया जाता है। इस विषय मे निम्न सम्मतिया दर्शनीय हैं—

आधुनिक विद्वानों की ऋषि भाष्य शैली पर विवेचना

(१) सन १८७० के मार्च मास के 'क्रिश्चियन इन्टेलीजेन्सर' मे प्रो० सदल्फ होर्नले ने ऋषि के विषय मे लिखा है—

He is an independent student of the Vedas and free from the trammels of traditional interpretations.

The standard commentary of the famous Sayon is held of little account by him

अर्थात् दयानन्द वेदों को स्वतंत्रता से पढ़ते हैं और परंपरागत (पौराणिक कालीन पद्धति) पद्धति की परवाह नहीं करते। आचार्य सायण का भाष्य वे निष्प्रयोजन समझते हैं।

(२) 'वैदिक मैगजीन' के 'Daynand and his work" नामक लेख में निम्न विचार अरविन्द घोष ने प्रगट किये हैं—

(१) दयानन्द वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानते थे। वेद उनके लिये जीवन की दृढ़ आधार शिला थी।

(२) उन्हों ने सायण के याज्ञिक विचारों के पर्दे को हटा कर वेद को प्रतिबोध Intuition की आखों से देखा है।

(३) पाश्चात्यों की सम्मति मे वेद असभ्य अथवा अर्धसभ्य लोगों के स्तुतिगान हैं। परन्तु ऋषि दयानन्द जी इनको मानव जाति के लिये ईश्वरीय ज्ञान समझते हैं। आगे चल कर ये लिखते हैं—

To start with the negation of his work by his critics in whose mouth does it lie to accuse Dayanand's dealing with the Veda of a fanatastic or arbitrary ingenuity? Not in the mouth of those who accept Sayon's traditional interpretation For if ever there was a monument of arbitrarily erudite ingenuity of great learning divorced, as great learning too often is, from sound Judgment and sure test & a faithful, critical and comparative observation, from direct seeing and often even from plainest common sense or of a constant fittings of the text into the Procrushean bed of preconceived theory, it is surely this commentary, otherwise so imposing, so useful as first crude material, so erudite & labourious left to us by the Acharya Sayana. Nor does the reproach lie in the mouth of those who take as final the recent labours of European scholarship For if ever there was a toil of interpretation in which the loosest vain has been given to an ingenious speculation in which doubtful indications have been snatched at as certain proofs, in which the boldest conclusions have been insisted upon with the scantiest justification, the most enormous difficulties ignored & preconceived prejudice maintained in face of the clear and often admitted suggestions of the text, it is surely this labour, so eminently respectable otherwise for its industry, good will & power of research, performed through a long century by European vedic scholarship

What is the main positive issue in this matter?

An interpretation of Veda must stand or fall by its central Conception of the Vedic religion & the amount of support given to it by the intrinsic evidence of the Veda itself. Here Dayanand's view is quite clear its foundation

inexpugnable, The Vedic hymns are chanted to the one deity under many names, names which are used and even designed to express His qualities & powers Was this conception of Dayanand's arbitrary conceit fetched out of his own too ingenius imagination ? Not all, it is the explicit Statement of the veda itself, "One existent, sages not the ignorant, mind you, but seers, the men of knowledge speak of in many ways, as Indra, as Yama, as matarisvan, as Agni " the Vedic Rishis ought surely to have known some thing about their own religion, more, let us hope tnan Roth or Maxmuller, and this is what they knew. We are aware how modern scholars twist away from the evidence This hymn, they say, was a late production, this loftier idea which it expresses with so clear a force rose up some how in the later Aryan mind or was borrowed by those ignorant fire-worshippers, sun-worshippers, sky-worshippers from their cultured and philosophic Dravadian enemies But through out the Veda we have confirmatory hymns and expressions, Agni or Indra or another is expressly hymned as one with all the other gods Agni contains all other Divine powers within himself the Maruts are described as all the gods, one deity is addressed by the names of others as well as his own, or most commonly, he is given as Lord and kins of the universe, attributes only appropriate to the Supreme Deity Ah, but that can not mean, ought not to mean, must not mean the worship of one, Let us invent a new word, call it, henotheism & suppose that the Rishis did not really believe Indra or Agni to be supreme Deity but treated any god or every god as such for the purpose that he might feel the more flattered & lend a more gracious ear for so hyperbolic a compliment But why should not the foundation of Vedic thought be natural monotheism rather than this new fangled monstrosity of henotheism ? Well because primitive barbarious could not possibly have risen to such high conceptions & if you allow them to have risen you imperil our theory of evolutionary stages of human development & you destroy our whole idea about the sense of the Vedic hymns & their place in the history of man kind Truth must hide herself, commonsense disappear from the field so that a theory may flourish I ask in this point, and it is the fundamental point, which deals most straight forwardly with the text, Dayanand or the Western Scholars ?

If this fundamental point of Dayanand is granted, if the character given by the Vedic Rishis themselves to their gods is admitted, we were bound whenever hymns speak of Agni or another, to see behind one supreme Deity or else

one of his powers with its attendant qualities or workings Immediately the whole character of the Veda is fixed in the sense Dayanand gave to it, the merely ritual, mythological, polytheistic interpretation of Sayana collapses, the merely meteorological and naturalistic European interpretation collapses We have instead a real scripture, one of the world's sacred books & the divine word of a lofty and noble religion

संदर्भ का सार

इस सन्दर्भ मे निम्न विचार दिये गये हैं—

(१) सायण भाष्य ऊपर से महत्व पूर्ण प्रतीत होता है। परन्तु उसमें वेद का वास्तविक अर्थ प्रतीत नहीं होता है। इसको अपना आधार मान कर चलाने वाले पाश्चात्य लोगों के भाष्यों में भी पूर्वा पर संगति नहीं है तथा स्थान २ पर सधियों की भरमार है।

(२) वेद का अथ वेद से करना चाहिये। इस विषय मे ऋषि का विचार स्पष्ट है।

(३) वेद के सूक्त भिन्न २ नामों से एक ही प्रभु का वर्णन करते हैं अनेक का नहीं। मैक्स-मूलर तथा रोथ की अपेक्षा ऋषि लोग अपने धर्म को तो अवश्य ही अधिक समझते हैं।

(४) पाश्चात्य विद्वान् स्थान २ पर बहुत खींचा-तानी करते हैं। ऊंचे विचारों वाले सूक्तों को आधुनिक काल का बताते हैं। एकेश्वर वाद के विचारों को वेद में मानते हुए वे हिचकते हैं। क्यों कि इसके मानने से उनके प्रियतम विकास-वाद के सिद्धान्त को ठेस पहुंचती है। परन्तु इस विषय में ऋषि वेद का सीधा निष्पक्ष अर्थ करते हैं। वेद में अग्नि आदि देवों के सचमुच ऐसे विशेषण हैं जो कि प्रभु के सिवाय कहीं नहीं घटते इस बात को ऋषिभाष्य स्पष्ट करते हैं।

(५) इन के उपर्युक्त विचारों के परिणामभूत याज्ञिक, बहुदेवतावाद, सम्बन्धी विचार भस्मीभूत हो जाते हैं। पाश्चात्यों के केवल अन्तरिक्ष आदि देवों के सम्बन्ध मे किये अर्थ ओझल हो जाते हैं और वेद एक ससार का पवित्र दिव्य धर्म ग्रन्थ लगने लगता है।

ऋषि अरविन्द के ऊपर के विचारों में भग-वान् दयानन्द की भाष्य शैली की दिशा का तथा ऋषि की अन्य भाष्य कारों से विशेषता का परिचय मिल जाता है। यह प्रतीत होने लगता है कि ऋषि ने अपने भाष्यो मे याज्ञिक, ऐतिहासिक तथा देवतावाद सम्बन्धी विचारों को स्थान नहीं दिया है प्रत्युत वेद को ईश्वरीय ज्ञान मान कर सब सत्य विद्याओं का भण्डार समझ कर वेद की अध्यात्म-आधिभूत तथा अधिदैव व्याख्या की गई है।

एक स्वाभाविक प्रश्न।

इस प्रसंग में इस प्रश्न पर विचार कर लेना उचित है कि महर्षि दयानन्द ने यजुर्वेद भाष्य के प्रत्येक मन्त्र के अन्त मे 'शतपथे व्याख्यात" लिखते हुए शतपथ को अपने भाष्य का प्रामाणिक आधार माना है। और शतपथ ब्राह्मण मंत्रों की याज्ञिक व्याख्या करते हुए प्रतीत होते हैं। लेकिन उनके भाष्य मे 'कपाल' आदि दो चार शब्दों के अतिरिक्त कहीं पर भी याज्ञिक भाव दृष्टि गोचर

नहीं होते। इसका क्या कारण है ? एक कारण तो यह हो सकता है कि स्वामी जी शतपथ को ही प्रमाण न मानते हों और किसी ने पीछे से "शतपथे व्याख्यात" लिख दिया हो। परन्तु यह इस लिये ठीक नहीं क्यों कि शतपथ के प्रामाण्य को तो ऋषि ने स्थान २ पर माना है। दूसरा यह हो सकता है कि शतपथ ब्राह्मण को प्रमाण मानते हुए भी स्वामी जी प्रतीयमान याज्ञिक भावों से भिन्न किन्हीं अन्य भावों को भी शतपथ का विषय समझते हों। प्रथम पक्ष ठीक नही है। दूसरा पक्ष ठीक प्रतीत होता है। इसके विशेष स्पष्टीकरण के लिये 'भाष्य भूमिका' के प्रतिज्ञा विषय का निम्न सन्दर्भ द्रष्टव्य है—

भाष्य भूमिका का सन्दर्भ।

अत्र वेद भाष्ये कर्म काण्डस्य वर्णनं शब्दार्थत करिष्यते परन्त्ये तैर्वेद मन्त्रै कर्मकाण्ड विनियोजितैर्यत्र यन्त्राग्निहोत्राद्यश्वमेधान्ते यद्यत कर्त्तव्यं तत्तदत्र विस्तरनो न वर्णयिष्यते। कुत. ? कर्मकाण्डानुष्ठानस्यैतरेय शथपथब्राह्मण पूर्वमीमामा श्रौतसूत्रादिषु यथाथ विनियोजितत्वात् पुन पुनस्तत् कथनेनानृषिकृतग्रन्थवत्त पुनरुक्तपिष्टपेषण दोषापत्तेश्च तस्मा युक्तिसिद्धो वेदादिप्रमाणानुकूलो मत्रार्थानुसृतस्तदुक्तोऽपि विनियोगो ग्रहीतु योग्योऽस्ति"

सन्दर्भ स्पष्ट है। इससे ज्ञात होता है कि ऋषि दयानन्द शतपथ आदि ग्रन्थों की याज्ञिक व्याख्या से असहमत न थे लेकिन उन की दृष्टि में 'यज्ञ' शब्द विस्तृत अध्यात्म, अधिदैव तथा अधिभूत अर्थों में प्रयुक्त होता था। वह यह समझते थे कि ब्राह्मण ग्रन्थों का तात्पर्य वेद की याज्ञिक व्याख्या के अतिरिक्त अध्यात्म, अधिदैव तथा अधिभूत व्याख्या में है। यह विषय 'वेदार्थ तथा ब्राह्मण ग्रन्थ' नामक प्रकरण म हमने विस्तार से लिख दिया है।

अब विशेष विस्तार न जान कर हमे यह देखना है कि ऋषि के भाष्यों में मौलिक वे कोनसी विशेषतायें हैं ? जिनसे कि उनका भाष्य समस्त भाष्यों से विलक्षण हो गया है।

(क्रमश)



आत्म निरीक्षण—

कड़वी सचाइयाँ

(ले० आचार्य रामदेव जी)

(१) साप्ताहिक सत्सङ्ग

आर्य समाज के साप्ताहिक अधिवेशनों में वेद भगवान् को आगे नहीं ले जाया जाता, यद्यपि आर्यसमाज का नियम है कि वेद का पढ़ना-पढ़ाना सुनना सुनाना आर्यों का परमधर्म है। इसके विपरीत आजकल के आर्यों का परमधर्म अखबारों का पढ़ना-पढाना अथवा हिन्दू सङ्गठन या कांग्रेस के प्रोग्राम की चर्चा करना मात्र रह गया है। ईसाईयो के गिर्जे मे जब कभी सत्सङ्ग होता है तो उसमे बाइबिल की किसी आयत को लेकर उसकी व्याख्या की जाती है, इस व्याख्या मे ही देश और जाति अथवा पारिवारिक एव वैयक्तिक जीवन की समस्याओं पर भी प्रकाश डाला जाता है। मेरी सम्मति में प्रत्येक आर्यसमाज मे एक पुरोहित होना चाहिए जो एक सप्ताह पूर्व उस मन्त्र अथवा सूक्त की सूचना कर दिया करे जिसकी कथा या व्याख्या साप्ताहिक सत्सङ्ग में होनी हो (इस विषय मे 'वैदिक विनय' या वैदिक सम्पत्ति' उपयोगी हैं)। इससे यह होगा कि सब सदस्य उस मन्त्र अथवा सूक्त को पढ़ कर आवें और अपनी शङ्काएं तथा अपने विचार पुरोहित के सम्मुख रख सकेंगे। इस प्रकार साप्ताहिक सत्सङ्ग बहुत मनोरञ्जक हो जावगे और उनकी प्रतिदिन घटती हुई उपस्थिति फिर ठिकाने आजायगी। सत्सङ्गियों के लाभ के साथ चरित्र भी उन्नत होगा। आजकल के सत्सङ्ग तो सिर्फ एक प्रकार का ढोंग मात्र ही रह गये हैं। यह आवश्यक नहीं कि पुरोहित केवल वही हो सके जिन्हे दक्षिणा मिलती हो प्रत्युत किसी भी स्वाध्यायशील आर्य पुरुष को पुरोहित नियत किया जा सकता है। यज्ञ वेदि पर ब्रह्मा के स्थान में पुरोहित ही बैठे इससे वेदि का महत्त्व बढेगा। आजकल आर्यसमाज की वेदि का न तो कोई गौरव ही है और न कोई मर्यादा ही। उपासना मन्दिर मे न तो किसी व्यक्ति को जूता पहन कर जाने की इजाजत मिलनी चाहिये और न वहा कोई पाठशाला आदि खुलनी चाहिये। इसके अतिरिक्त समाज-मन्दिर मे प्रति दिन हवन एव संकीर्तन होने चाहिए, चाहे, उसमें दो तीन आदमी ही क्यों न सम्मिलित हों।

(२) सङ्गीत-शास्त्र का उद्धार

आर्यसमाज में सङ्गीत की बुरी तरह से हत्या होती है। प्रार्थना के भजन थियेटर की तर्ज पर गाये जाते हैं और श्रोताओं में भी किसी प्रकार की गम्भीरता का भाव नहीं होता। भजनीको के चरित्र पर भी ध्यान नहीं दिया जाता। यह भुला दिया जाता है कि भजनीक भी एक तरह का उपदेशक ही है। यह कहने की जरूरत नही कि यदि उपदेष्टा के जीवन में ही वह चीज न हो जिसका वह उपदेश कर रहा है तो उसका श्रोताओं पर कुछ असर नहीं हो सकता। दूसरी बात यह है कि हारमोनियम का बहिष्कार करके उसके स्थान पर सितार, सारंगी, तबला, दिलरुबा एव

वीणा आदि का प्रयोग करना चाहिए। अंग्रेजी बाजे में पियानो और आर्गन आदि को काम में लाना चाहिए। साप्ताहिक सत्सङ्ग में खण्डन मण्डन के भजन न होकर उच्च भक्तिरस से परिपूर्ण भजन होने चाहिए। नए भजन बनाए जावें तो वे वेद मन्त्रों के आधार पर हों। शान्ति प्रकरण और स्वस्तिवाचन के मन्त्रों का सरल हिन्दी में पद्यानुवाद कर देना चाहिए। और वे पद्यानुवाद ही पर्वों तथा सस्कारों के अवसरों पर सब स्त्री पुरुषों को मिल कर गाने चाहिएं। गायन मे सभी को सम्मिलित होना उचित है। जब गिर्जे मे सङ्कीर्तन होता है तो महाराज एडवर्ड भी दूसरे लोगों के साथ साथ गाते हैं। भारत के गिर्जों में भी वाइसराय सब के साथ मिल कर गाते हैं।

आर्यसमाज मे गाना छोटे आदमियों का काम समझा जाता है। इसी लिए आर्यसमाज ने गायन विद्या का यथोचित लाभ नहीं उठाया। आर्यसमाज मे भजन गाने वालो की एक ऐसी जमाअत पैदा होगई है जो अपने साथ आर्यसमाज को भी ले डूबेगी। अत: इस कृत्रिम जमाअत को हटाकर स्वय सब नर-नारियों का प्रभुके गुणगान मे सम्मिलित होना चाहिये। सूरदास कबीर मीरा नानक-रहीम नामदेव चैतन्य इत्यादि भक्तों के अमर गीतों में से भी वैदिक सिद्धान्तो के अनुसार एक संग्रह तय्यार होना चाहिये, जिसका उपयोग सत्सङ्ग के अवसर पर किया जाय।

(३) शास्त्रार्थ और वाद-विवाद

शास्त्रार्थ आज कल गाली-अर्थ एवं शस्त्र-अर्थ बन रहे हैं तथा झगडे और गाली से सत्य का अपमान किया जाता है। ऋषि दयानन्द ने अपने जोवन के अन्तिम दिनों में घोषणा की थी कि शास्त्रार्थ लिखित होने चाहिएं। विषय एक मास पूर्व निश्चित कर दिया जाय और उभयपक्षी तैयार होकर आवें। विधर्मियों के आग्रह करने पर अथवा झूठी लोक लज्जा के वश होकर भय के कारण कभी भी आर्य समाज को ऋषि-प्रदर्शित मार्ग से च्युत नहीं होना चाहिए। सार्वदेशिक सभा तथा प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं को इस विषय की आज्ञाएं भेजकर उनका पालन कराना चाहिए। जो उपदेशक तू तू मैं-मैं मे भाग ले अथवा सदसद् के निर्णय मे इस नियम का पालन न करें उन्हें समाज मे बहिष्कृत कर देना चाहिए।

(४) पर्व और उत्सव यज्ञरूप हों

पर्वों और उत्सवों के लिए यज्ञीय पद्धतियों का निर्माण हो और इनके लिये उपयुक्त वेदमन्त्रों का हिन्दी में सरस तथा सरल पद्यानुवाद हो जिसे यज्ञ की समाप्ति पर सब मिलकर गावें। इन पर्वों मे ऋषिबोधोत्सव, गुरुदत्त दिवस, श्रद्धानन्द बलिदानोत्सव तथा लेखराम बलिदानोत्सव आदि उत्सव भी शामिल होने चाहियें। हमारा उद्देश्य यह होना चाहिये कि वेदों के अक्षरों एवं वेदों के मन्त्रों का प्रचार हो, यदि कोई आदमी दौर्भाग्य से वेद के मूल शब्दों को नहीं समझ सकता हो तो उसके लिए प्रचलित भाषा द्वारा वैदिक सिद्धान्तों के समझ का अवसर उपस्थित होना चाहिये तथा वे उसके मुख से उच्चारित होने चाहिये।

(५) संस्थाओं का एकीकरण

आर्य समाज की संस्थाओं को केन्द्रित करना चाहिए विशेष कर गुरुकुल को। मेरी सम्मति में गुरुकुल विश्वविद्यालय तो एक ही होना चाहिये और अधिकारी तथा ८वीं परीक्षा तक बहुत से गुरुकुल उससे संयुक्त होने चाहियें। विश्वविद्यालय के शिक्षा पटल में सब प्रान्तीय प्रतिनिधि होने चाहियें। गुरुकुल कॉगडी मे जितने प्रोफेसर हैं वे ५०० विद्यार्थियों को पढा सकते हैं अत विश्वविद्यालय तब तक नया नहीं खुलना चाहिये जब तक १००० विद्यार्थी महाविद्यालय विभाग में न होवे।

आर्य समाज के कौलिजों मे संस्कृत की एक प्रवेशिका परीक्षा पास करनी अनिवार्य हो। जो विद्यार्थी इस के लिए तैयार न हों उन्हें कौलिज से निकाल देना चाहिये। पंजाब, यू०पी० के स्कूलों में हिन्दी ही शिक्षा का माध्यम होनी चाहिये। जिन स्कूलों में हिन्दी से इतर कोई भाषा माध्यम हो तो उन्हें बन्द कर देना चाहिए। पंजाब और यू० पी० के बाहर भी जहा, जिस प्रान्त मे आर्य स्कूल हों वहा भी हिन्दी का पढ़ना अनिवार्य कर देना चाहिये। और संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा भी अनिवार्य कर देनी चाहिये। स्वतत्र शिक्षणालयों को भी प्रान्तीय सभाओं का निरीक्षण स्वीकार कर लेना चाहिये। यदि वे शिक्षणालय प्रान्तीय सभाओं का निरीक्षण स्वीकार न करें तो आर्य-जनता उन्हे आर्यसमाजी संस्था न मानें।

(६) प्रचारक संघ

बौद्धों ने अपने धर्म के प्रचार में जिन श्रमणों को नियुक्त किया, उनके आचार, व्यवहार, शिष्टाचार इत्यादि के नियम विनय पिटक द्वारा निश्चित किये। ऐसा करने से श्रमण अपने नियमों का आजकल भी अन्य धर्मों में नेताओं की बात तो दूर, साधारण जनता भी अपने अपने धर्म के नियमों, उपनियमों का पालन बडी कठिनाई से करती है। यह अचिन्त्य है कि कोई मुसलमान अपनी नमाज न पढ़े। यह अचिन्त्य है कोई अपनी प्रार्थना किये बिना रात को सो जाय। परन्तु हमारे आर्यसमाजके साधारण सभासदों की बात तो अलग है नेता तथा प्रचारक लोग भी संध्या हवन नहीं करते। और न यज्ञोपवीत धारण करते हैं जिनसे जनता पर उन प्रचारकों का यथेष्ट प्रभाव नहीं पड़ता। कॉग्रेस की मीटिंग में से एक मुसलमान अपनी नमाज पढ़ने के समय उठकर चला जाता है, परन्तु हमारे आर्यसमाज के उत्सव और सभाएँ होती ही प्राय संध्या बन्दन के समय पर हैं जब नेताओंको ही संध्या आदिका कुछ ध्यान नहीं आता तब सामान्य जनताके बारे में या कहना ही क्या? अत: इन सब बातों पर ध्यान देकर प्रचारकों के आचार व्यवहार तथा वेषभूषा आदि के नियम निश्चित हो जाने चाहियें तथा प्रचारकों को उनका पूर्णतया पालन करना चाहिये।

(७) संगठन का मान

आर्यसमाज में संगठन की कमी है। जिस किसी आदमी को शिकायत होती है अथवा कोई निर्वाचन से असन्तुष्ट होता है तो वह सीधी अखबारों की शरण लेता है और एक जबर्दस्त आन्दोलन करना आरम्भ कर देता है। वस्तुतः

उसे वैदिक रीति का अनुकरण करना चाहिये और इस बात से सम्बन्ध रखने वाली समाज की अन्तरङ्ग सभा अथवा प्रान्तीय सभा से निर्णय कराना चाहिये। ऐसा करने से संगठन बढ़ेगा। नियन्त्रण हीन समाज शीघ्र नष्ट हो जाता है।

(८) नियमों तथा उपनियमों का पालन

नए बने उपनियमों का हर तरह से पालन होना चाहिये। प्राय इन नियमों की अवहेलना की जाती है। अनेकों सदस्य अभी तक मासाहारी हैं, अथवा कितने ही ऐसे हैं जो अपनी आमदनी का मासिक शतांश समाज को दान नही करते। समाजो के प्रधान तथा मन्त्री नियमों का पालन न करने वाले व्यक्तियो को भी समाज का सदस्य प्रमाणित करते हैं जिससे आरम्भ मे ही असद्भावना का सूत्रपात हो जाता है। आर्यसमाज मे ऐसा बल होना चाहिये कि जो सभ्य नियमों की उपेक्षा करे उसे समाज से पृथक् कर दिया जाय।

(९) आर्यसमाज के नेता

आर्यसमाज के नेता ऐसे होने चाहियें जो अपना पूरा समय समाज की सेवा में बिता सकें। कांग्रेस का प्रधान कांग्रेस के काम के अतिरिक्त दूसरा कोई काम नहीं करता, तब आर्यसमाज के नेता और और काम भी करते हुए समाज की यथोचित सेवायें कैसे कर सकते हैं। साथही समाज की सेवा में अपना सारा समय देने वाले सज्जनों के भरण पोषण का भार भी समाज पर ही होना चाहिये। आर्यसमाज के धनी पुरुषों में एक घातक प्रवृत्ति बढ़ रही हैं, वे यह समझने लगे है कि जो व्यक्ति अपने निर्वाह के लिये कुछ लेकर काम करता है वह नौकर है और इस लिये उस का नेतृत्व नहीं होना चाहिये।

आर्यसमाज का काम मुख्य रूप से शिक्षा तथा प्रचार है। ईसाई लोग भी प्रचार एक बड़े पैमाने पर करते हैं लेकिन उनके प्रचार का समस्त प्रबन्ध और नियन्त्रण वेतन भोगी (दक्षिणा लेने वाले) बिशपों एवं लाट पादरियों के हाथ मे ही होता है। शासन का उत्तरदायित्व उन पूंजीपतियों के हाथ मे नहीं होना चाहिये जो किन्ही भी उपायों से धन का सचय करते रहते हैं और केवल अपनी आमदनी के बल पर साधुवृत्ति वाले प्रचारकों पर शासन करना चाहते हैं।

गवर्नमेण्ट के पास भी शिक्षा का काम आर्य-समाज की अपेक्षा कही ज्यादा है, परन्तु वेतन भोगी प्रिन्सिपल ही उस शिक्षा का अन्तरीय प्रबन्ध करते है, वेतनभोगी डाइरेक्टर प्रिन्सिपलो के कार्य का निरीक्षण करते है और वेतन भोगी मिनिस्टर इन डाइरेक्टरों की देखरेख करते हैं। मिनिस्टरों के कार्य को परखने वाले भी असेम्बली के वेतन-भोगी सदस्य होते हैं। ब्रिटिश पार्लमेण्ट सम्पूर्ण ब्रिटिश साम्राज्य के लिए कानून बनाती है, उसमे वेतनभोगी बिशप तथा लाट पादरी भी होते हैं। उन की सम्मति का मूल्य भी पूजीपतियों की सम्मति के बराबर होता है। भारत के सेवा-क्षेत्र मे कार्य करने वाले जितने संघ हैं प्राय उन सबको पूर्ण स्वराज्य प्राप्त है, जैसे गाधी सेवा संघ, सर्वेण्ट्स ऑफ दी पीपल सोसाइटी आदि।

संन्यासी भी वेतनभोगी ही होते हैं, क्यों कि

वेतन का अर्थ यह नहीं है कि मास के अन्त मे एक नियत धन राशि ली जाय, लेकिन वे सब भी वेतनभोगी ही समझने चाहिएं जिनके भरण पोषण का भार समाज पर है। आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब मे कई भद्र पुरुषों ने एक बार ऐसा नियम पास करा लिया था कि वेतनभोगी लोग शासन सम्बन्धी मन्त्रणा में भाग न लें परन्तु महात्मा मुंशीरामजी का जब बस चला तो उन्होंने फौरन् इस प्रस्ताव को रद्द करा दिया। संयुक्त प्रान्त की आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी ऐसे प्रस्ताव को ठुकरा दिया। लेकिन कई भाई इन दोनों प्रान्तों में दक्षिणा लेकर काम करने वालों को बदनाम करने पर तुले हुए हैं। यही कारण है कि पञ्जाब तथा संयुक्त प्रान्त में कोई भी ऐसा निर्धन व्यक्ति जिसको आजीविका का कोई अन्य साधन न हो, पूरे समय काम करने के लिए तय्यार नहीं होता। परिणाम यह होता है कि वे लोग जो ५०-५५ वर्ष की अवस्था मे रिटायर होकर समाज की सेवा करना चाहते हैं, इस लिए तय्यार नहीं होते क्यों कि कई भाई उनको बदनामी करेंगे। अत. वे वृद्धावस्था मे भी कमाते हैं और जब पर्याप्त धन जमा कर लेते हैं तब काम करने के अयोग्य होने पर भी सेवाकार्य संभालने को उद्यत होते हैं।

आर्यसमाज से बाहर भी यदि यही घातक प्रवृत्ति हमारे देश मे होती तो महात्मा गांधी हमारे सर्वमान्य नेता न बन पाते, क्यों कि वे भी २० वर्ष से वेतनभोगी ही हैं। चाहे इस शब्द की कटुता को दूर करने के लिए किसी और मधुर शब्द का प्रयोग ही क्यों न करें परन्तु यह तो मानना ही पड़ेगा कि उनके पालन का भार सोसाइटी पर ही है। कांग्रेसी सरकारों की नीति का निर्णय गांधी जी ही करते हैं और अपना वेतन भी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में लेते हैं।

संसार में सभी वेतन भोगी हैं, परन्तु ब्राह्मण और वैश्यों मे भेद होता है। ब्राह्मण Work first men तथा वैश्य Fee first men होते हैं। आर्यसमाज का दुर्भाग्य है कि यहां वैश्य ब्राह्मण के अफसर होकर उन्हें अपने मातहत करना चाहते हैं। ब्राह्मण सेवा करते हैं और दक्षिणा स्वीकार करते हैं, परन्तु वकील तथा ठेकेदार पहले फीस रखवा लेते हैं फिर सेवा का नाम लेते हैं। इस पर भी वैश्य लोग ब्राह्मणों को अपना नौकर समझ कर उन्हें अपमानित करने की कोशिश करते हैं। यदि इस प्रवृत्ति का एक दम गला न घोंटा गया तो यह समाज को ले डूबेगी तथा समाज की सेवा में कोई अनुरागी एवं त्यागी मनुष्य आने से झिझकेगा और शासन वैश्यों के हाथ में रहेगा। उनके शासन मे कोई सच्चा ब्राह्मण काम करना न चाहेगा।

वेतनभोगी शब्द बुरा नहीं है। शुक्रनीति मे राजा को भी वेतनभोगी कहा गया है। ऋषि दयानन्द ने महाराना उदयपुर को एक पत्र मे लिखा था कि राजा प्रजा का वेतनभोगी भृत्य है। अत: इस मे क्या दोष है कि समाज की सेवा के लिये अपना तन, मन तथा संपूर्ण समय अर्पित करने वाले अथवा समाज सेवा को छोड़कर कोई अन्य काम न करने वाले नेताओं के पालन का भार सोसाइटी पर हो।

यह बात स्पष्ट है कि जो कुछ हम ने लिखा है उसके अनुसार वेतनभोगी का अर्थ केवल निर्वाहार्थ लेने वाले ही समझना चाहिये। यदि कांग्रेस के प्रधान सेक्रेटरी ७५) मासिक लेने पर भी नेता माने जाते हैं और वे अपने वक्तव्य भी प्रकाशित करते हैं तो फिर आर्यसमाज में ही बाबा आदम क्यों निराला है कि इस में काम करने वाले या तो गुजारे मात्र पर मिलते नहीं या उनका उचित मान नहीं होता।

॥ विद्या धर्मेण शोभते ॥ —— ॥ धर्म से ही विद्या की शोभा होती है ॥

आर्य कुमार जगत्

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की रजत जयन्ती

भारतीयवर्षीय आर्य कुमार परिषद की रजत जयन्ती बिजनौर में आगामी २२, २३ व २४ मई को मनाई जावेगी। आर्य कुमार सभा बिजनौर जयन्ती को सफल बनाने के लिए काफी उत्साह से कार्य कर रही है। बिजनौर निवासी आर्य पुरुष भी आर्य कुमार सभा को पूरा सहयोग दे रहे हैं तथा जयन्ती के लिए स्वागत कारिणी भी बनाली गई है।

स्वागत कारिणी के कार्यकर्त्ताओं के नाम इस प्रकार है:—

प्रधान—श्रीयुत बाबू रामचन्द्र जी गुप्ता मुख्तार।

उप प्रधान—पंडित जगदीश प्रसाद जी शर्मा

चौधरी शूरवीरसिंह जी वकील।

चौधरी रघुराजसिंह जी रईस।

चौधरी नरदेवसिंह जी रईस।

बाबू मगनसिंह जी वकील।

बाबू गंगा शरण जी मुख्तार।

पण्डित रामस्वरूप जी वकील।

श्रीयुत ईश्वर दयालु जी आर्य।

पंडित रामेश्वर प्रसाद जी शर्मा।

पंडित इन्द्रमणि जी।

बाबू जगदीश प्रसाद जी गर्ग।

पंडित सोम देव जी शर्मा।

महाशय मनफूलसिंह जी।

चौधरी रघुवीरसिंह जी।

कोषाध्यक्ष—बाबू शान्ति स्वरूप जी।

स्वागत कारिणी की ओर से आर्य कुमार सभाओ को जयन्ती मे प्रतिनिधि भेजने के लिए फार्म इत्यादि शीघ्र भेजे जावेंगे। जो कुमार सभाएं अभी तक परिषद् से अलग हैं वे शीघ्र ही परिषद के कार्यालय से नियमादि मँगवाकर परिषद मे सम्मिलित हो जायें।

—— —

२—जैसा कि हमने गत मास के 'आर्य कुमार जगत' मे लिखा था, जयन्ती के अवसर पर परिषद की ओर से एक पुस्तक प्रकाशित की जावेगी जिस मे परिषद के इतिहास के अलावा कुमार सभाओं के तथा अन्य ऐसी संस्थाओं के भी परिचय होंगे जिनमे आर्य कुमार शिक्षा पाते हैं जैसे गुरुकुल, अनाथालय, डी० ए० वी० कौलेज तथा स्कूल आदि। हमे यह लिखते दुःख होता है कि अभी तक बहुत ही थोड़ी सभाओ ने हमे अपने परिचय भेजे हैं। इस पुस्तक को उपयोगी बनाना आप सब के हाथ है। इस लिए शीघ्र ही अपने परिचय लिख भेजने की कृपा करें।

इस परिचय में अन्य बातों के अलावा निम्न

बातें अवश्य हों:—(१) संस्था कब स्थापित हुई। (२) संस्था के अधिष्ठाता का नाम। (३) संस्था किस अवस्था में कार्य कर रही है। (४) तथा संस्था के अन्तर्गत आर्य कुमार सभा है या नहीं।

कुमार सभाओं को तो शीघ्र ही अपना पूरा वृत्तान्त भेज देना चाहिए। कार्यकर्त्ताओं के नाम तथा सभासदों की संख्या अवश्य हो।

———

३—यद्यपि 'आर्यकुमार जगत' को निकलते यह तीसरा मास है और हमने पहिले ही अङ्क में आर्य कुमार सभाओं से प्रार्थना की थी कि वे अपनी रिपोर्टें तथा सभा सम्बन्धी अन्य समाचार 'आर्य कुमार जगत्' में छपने के लिए हमें प्रत्येक मास की २० तारीख तक अवश्य भेज दिया करें। फिर भी अभी तक कुमार सभाओं ने इस ओर ध्यान नहीं दिया है कुमार सभाओं को चाहिये कि वे अपनी रिपोर्टें बराबर भेजते रहा करें।

४—जयन्ती के सम्बन्ध में परिषद् का सर्कूलर हाल में ही सब कुमार सभाओं को भेजा गया है। जिन कुमार सभाओं के पास अभी तक न पहुंचा हो वे हम से मंगालें।

कुमार सभाओं का कर्त्तव्य है कि वे जयन्ती में अधिक से अधिक प्रतिनिधि भेजें ताकि वे सब मिल कर परिषद् को जो कि भारतवर्ष की आर्य कुमार सभाओं की एक मात्र प्रतिनिधि संस्था है संगठित करने में सहयोग दे सकें

मंत्री भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद

१६२०, नया बाजार, दिल्ली

—*—

साम्प्रदायिकता का अभिशाप

श्री डाक्टर भगवानदास जी ने साम्प्रदायिकता के सम्बन्ध में अखबारों में भी अभी हाल में लेख लिखे हैं और कांग्रेस का साम्प्रदायिकता के सम्बन्ध में जो रुख है वह गलत प्रगट करते हुए सुधार के उपाय सुझाये हैं। उन लेखों का सार हम अपने पाठकों के लाभार्थ 'सार्वदेशिक' में छाप रहे हैं।

(१)

अस्तित्व विहीन बीमारी

गत २० मार्च को दयालसिंह कालेज लाहौर में विद्यार्थियों की एक सभा में भाषण देते हुए श्रीयुत भूला भाई देसाई ने 'साम्प्रदायिकता' की चर्चा की और कहा कि मैं "उन व्यक्तियों में से हूं जो यह मानते हैं कि भारतवर्ष में साम्प्रदायिकता नहीं है। साम्प्रदायिकता एक बीमारी है जो भारत में नहीं है।" श्री भूला भाई असेम्बली में हमारे सम्मानित नेता हैं। वे भारत के ५—६ सिद्ध वकीलों में से हैं। 'साम्प्रदायिकता एक रोग है और उसका भारत में अस्तित्व नहीं है।' उनके इस कथन का अवश्य ही कोई अर्थ होगा। परन्तु उनके कथन का क्या मतलब है यह मेरी समझ में नहीं आया है। वे ईसाई वैज्ञानिकों और दिमाग़ के रोगों को दूर करने वालों के स्वर में मुश्किल से ही बोल सकते हैं जो यह कहते हैं 'विश्वास रक्खो तुम्हें रोग नहीं है और न तुम्हें रोग होगा।' मेरी कमज़ोर आंखों ने श्री भूलाभाई देसाई के फतवे से ४ दिन पूर्व देखा कि यह अस्तित्व विहीन बीमारी मेरे अपने अभागे बनारस में हत्याओं द्वारा १० और मेरे पड़ोसी प्रयाग नगर में १४ जानें ले गई और बहुतों को चोटों द्वारा घायल कर गई।

लौकिक शिक्षा

श्री भूला भाई जी ने उसी दिन उस भाषण से पूर्व डी० ए० वी० कालेज में पारितोषिक वितरण समारंभ के प्रधान पद से कहा "मेरा यह विश्वास है कि देश का कल्याण लौकिक शिक्षा से ही हो सकता है। क्योंकि धर्म्म एक ही है।"

चार शिक्षाएँ

ब्रिटिश शासन ने भी लौकिक शिक्षण की नीति का दृढ़ता से पालन किया है और नतीजा यह है कि देश की साम्प्रदायिकता और उसके दुष्परिणामों से मुक्ति पहले से भी ज्यादा दूर की बात हो गई है। परन्तु शायद श्री देसाई जी का किसी दूसरे प्रकार की मुक्ति से अभिप्राय होगा जो हमारे 'स्वराज्य' शब्द की नाईं गूढ़ और परिभाषा में न आने योग्य होगी। मेरा यह विश्वास हो गया है कि हमारा कल्याण केवल लिखने पढ़ने और अरिथमेटिक से न होगा। बल्कि लिखने, पढ़ने अरिथमेटिक और व्यापक धर्म (Universal Religon) से होगा जिस के मूल तत्व सब धर्मों में समान पाए जाते हैं और जो रीतिरिवाजों और क्रिया-कलापों से भिन्न है।

ध्यान पूर्वक प्रचार करो

'व्यापक धर्म्म एक ही है'। श्रीयुत देसाई का यह कथन उदार और प्रशंसनीय है और वस्तुतः सब ही धर्मों के उदार चेता सज्जन बार २ इसे दुहराते और स्वीकार करते हैं। इस कथन से प्रतीत होता है, श्रीयुत देसाई सब धर्म्मों के विरुद्ध नहीं हैं परन्तु एक बड़े कालेज के विद्यार्थियों की एक विराट सभा में लौकिक शिक्षण सम्बन्धी उनके विश्वास की पूर्व घोषणा के यह कथन न्यूनाधिक रूप में विरुद्ध जाता है। मेरे जैसे विचार के लोग जो इसमें विश्वास रखते हैं, वह यह कहते हैं कि यह सचाई है परन्तु दृढ़ता और व्यवस्था के साथ बच्चों, नवयुवकों और नवयुवतियों के हृदयों पर उपदेश और पुस्तकों के द्वारा इसके अंकित किए जाने का यत्न भी तो होना चाहिए। सिर्फ जब तब जिक्र कर देने से ही तो काम नहीं बनेगा।

दो मुख्य समस्याएँ

शायद यह कहा जाय और बहुधा हमारे नेता कहते भी हैं कि जिसे साम्प्रदायिकता कहा जाता है या जो साम्प्रदायिकता के रूप में देख पड़ती है यह तो कुछ स्वार्थियों और अपना हल्वा माण्डा सीधा करने वाले व्यक्तियों की पैदा की हुई समस्या है। कुछ थोड़े से व्यक्तियों की यह सुनिश्चित सम्मति हो सकती है परन्तु जहा तक मुझे पता है भारतवर्ष के हितैषियों और विचारकों के एक बहुत बड़े भाग की सम्मति इसके विपरीत है। उनका विश्वास है कि आज भारतवर्ष की मुख्य दो समस्याएं हैं। एक हिन्दू मुस्लिम और दूसरी गरीब-अमीर की समस्या है। केवल अन्तिम एक ही समस्या नहीं है।

क्या मनुष्य अज़ान देते और आरती के घंटे बजाते हुए स्वर्ग में जायेंगे ? क्या गउओं का बध करते अथवा बकरियां भेंडे, सुअर और ऊटों की हत्या करते हुए स्वर्ग को प्राप्त करेंगे ? क्या लोग धोती या पाजामे में सुसज्जित हुए, सिर पर या ठोड़ी के नीचे लम्बे बाल रक्खे हुए, बड़ी बड़ी मूछें रक्खे हुए या बिलकुल साफ कराए हुए, लंबे लम्बे चोले धारण किए, माला या तस्बीह घुमाते हुए ऊंची हिन्दी या उर्दू बोलते हुए परमात्मा को अर्बी या संस्कृत में आव्हाहन करते हुए स्वर्गारोहण करेंगे ? आज इसी प्रकार की साम्प्रदायिक समस्या है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है कुछ लोग यह कहते हैं कि वास्तव में साम्प्रदायिक कोई समस्या नहीं है। 'धर्म्म खतरे में है' यह षड्यन्त्रकारी ही आवाज लगाते है जो धर्म्म गुरुओं के वेश में जनता को जान बूझ कर अपने स्वार्थों के लिए गुमराह करते हैं। इस बात में सत्य का कुछ अंश अवश्य है परन्तु यह पूर्णतया सत्य नहीं है। धर्म्म खतरे में है इस आवाज का जनता द्वारा जिस तत्परता और लगन से, अन्धा धुन्ध रीति से और वस्तुतः अति करते हुए उत्तर दिया जाता है उतना रोटी खतरे में है इस पुकार का नहीं दिया जाता है।

जनता धर्म्म के मामले में इतनी जल्दी क्यों उत्तेजित हो जाती है ? इसका स्पष्ट अर्थ यह है

कि हमारे सामने दो समस्याएँ है सिर्फ एक समस्या नही है। यह माना वे दोनों एक दूसरे मे घुली मिली हैं ठीक उसी तरह जिस तरह हृदय और पेट के कार्य्य एक दूसरे मे घुले मिले है।

कुछ नहीं किया गया

हम काग्रेसियो ने और हमारे नेताओ ने इस समस्या का वास्तविक और स्थिर रहने वाला क्या हल किया है?

जहाँ तक मे देख सकता हूँ—कुछ नहीं किया है।

जहा तक साम्प्रदायिक समस्या का सम्बन्ध है पब्लिक व्याख्यानों, लेखो और व्यक्तिगत तौर पर नेताओं द्वारा भावो को भडकाने वाला काफी आदेश उपदेश होता रहा है और इस समय भी हो रहा है। हमारे कॉग्रेसी मन्त्री भी एकता सम्मेलनों के प्रस्तावों से हिन्दू और मुसलमान नेताओं के हस्ताक्षरों से युक्त सार्वजनिक अपीलों द्वारा यह कार्य्य कर रहे हैं। परिणाम यह हुआ कि ज्यों ? दवा की मर्ज बढता हो गया'।

साम्प्रदायिक—राजनैतिक नेता या हिन्दुओं और मुसलमानोंके अवाछनीय नेता जो तीसरी पार्टी बने हुए चल जाते है वे अपने ? अनुयायियो में इस आगको भडकाने के लिए कम जिम्मेवार नहीं हैं। इस वर्ष होली न सिर्फ रगसे वरन बहुत जगहों पर लाल खून से खेली गई है? काग्रेसी मन्त्री और अन्य काग्रेसी नेता क्या कर रहे है? वे वही पुरानी अनुनैय-विनय-उपदेशो और अपीलो का जो सत्य है परन्तु प्रभाव-शून्य है राग अलाप रहे है और कोई निश्चित उपाय नही बतलाते है। प्रत्येक इस प्रकार की बातें जानता है और धार्मिक-राजनैतिक नेता एकान्त मे उन पर हसते है और अपने मन मे कहते है हम चाहते हैं हमारे हाथ मे शासन हो तुम काग्रेसी मन्त्रियों के हाथ मे नहीं।

जन साधारण लडते चले जारहे है और यह (ध्यान देने योग्य बात है) कभी भी कोई साम्प्रदायिक राजनैतिक-नेता 'धर्म्म खतरेमे है' की उच्च और महान आवाज देता हुआ बहादुरी के साथ युद्ध क्षेत्र मे अपनी सेना का नेतृत्व करते हुए नहीं देखा गया।

मेल किस प्रकार हो?

मिनिस्टरी के भीतर या बाहर किसी काग्रेसी लीडरने हमें यह कभी नहीं बतलाया कि मेल किस प्रकार किया जाय? दूसरी ओर मौलवी और पडित लोग फूट का जोरो के साथ जनता मे प्रचार करते फिर रहे है।

दिनमें ऋतुदान क्यों वर्जित है ?

(ले० श्री मास्टर आत्माराम जी अमृतसरी)

मनु महाराजने 'प्रशस्ता दश रात्रय अर्थात् गर्भाधान के लिये दश रात्रिएं उत्तम हैं' ऐसा लिखा है। तथा अन्य नीति और शास्त्रकारों ने गर्भाधान के लिये रात्रि का विधान किया है। प्रश्न होता है गर्भाधान के लिये रात्रि ही क्यों निश्चित की गई है। दिन क्यों नहीं ? इसका उत्तर हम इन पंक्तियों में देने का यत्न करेंगे।

दिन में गर्भाधान करने से गर्मी ज्यादा बढ जाती है। शास्त्रकार लिखते हैं कि गर्भाधान के बाद उचित समय पर स्नान करना चाहिये। क्योंकि गर्भ-क्रिया से शरीर की गरमी उत्तेजित होजाती है और इसके उत्तेजित होजाने से दिमाग़ में आलस्य छाजाता है। गर्भ-क्रिया के बाद यदि स्नान न किया जाय तो शरीर शिथिल और रोगी हो जाता है। दिन के समय में जोकि उष्णता का समय है गर्भाधान करने से गरमी के अत्यन्त उत्तेजित होजाने से पागलपन का रोग हो जाने की आशङ्का होती है। जो लोग दिन में गर्भाधान करते हैं वे भद्दे और निष्प्रभ हो जाते हैं। उनका चित्त काम करने को सर्वथा नहीं चाहता।

पश्चिमी देशों के अनेक डाक्टर गर्भाधान के लिये दिन का ही समय बताते हैं। इन डाक्टरों को अभी तक पता ही नहीं गर्भाधान का समय दिन अच्छा है अथवा रात। ये डाक्टर दिन के समय में गमन करने के लाभ बुद्धि पूर्वक कुछ नहीं बतलाते अधिकतर एक युक्ति के कारण दिवस गमन पर बल देरहे हैं। इनका असत्य विचार यह है कि लोग जो रात्रि को गमन करते हैं वे कदाचित इसलिये करते हैं कि गर्भाधान कोई बुरा कार्य है जिसको छिपाकर रात के समय करना पड़ता है। और जोकि इन डाक्टरों के विचार में गर्भाधान पाप कर्म नहीं इसलिये इसको दिन धौले में करने की ये शिक्षा देते है। हम यहां तक तो इन डाक्टरों से सहमत हैं गर्भाधान पाप कर्म नहीं वरना हम पूछते हैं कि क्या रात के समय जो कार्य किये जाते हैं वे सब पाप कर्म ही होते है और क्या दिन को जो कर्म किये जाते हैं वे सब पुण्य रूप ही होते हैं। वे कभी इस बात को सिद्ध नहीं कर सकेंगे कि दिन में पाप नहीं किया जा सकता और रात में पुण्य कर्म नहीं हो सकता। जब यह बात है तो इनका यह कहना ठीक नहीं है। दूसरीओर अन्तिम तर्क यह किया जाता है कि दिन के बारह बजे मनुष्य में पूर्ण बल होता है इसलिये दिन के समय अर्थात् दोपहर को गर्भाधान करना चाहिये। यहां भी डाक्टरों से भूल इस कारण से हुई है कि प्रथम उन्होने इस बात पर विचार नहीं किया कि गर्भ क्रिया से दिमाग़ में कितनी ज्यादा गरमी बढ जाती है। दिन के समय जब कि पहिले ही दिमाग उष्ण होता है उस समय इस क्रिया के करने से शिर दर्द और अनेक दशाओं में पागलपन आदि कई प्रकार के रोगों के होजाने का भय है। दूसरे दिमाग़ और शरीर की शक्तियों में उन्होने अन्तर नहीं रक्खा। आधी रात से लेकर दिनके बारह बजे तक आदमी की मानसिक शक्ति और दिन के बारह बजे से आधी रात तक शारीरिक शक्ति पूर्णता को पहुचती है। गर्भाधान कोई रेखागणित की साध्य (शकल) का हल नहीं जिसमें अधिकतर मानसिक शक्ति से काम लेना है। बरन् यह कर्मेन्द्रियों का कार्य है जो मुख्यतया शारीरिक अवस्था से सम्बन्ध रखता है इसलिये उसका समय दिन के स्थान में रात का होना चाहिये था। इन डाक्टरों के मत का खण्डन एक अन्य पश्चिमी डाक्टर निम्न प्रकार करते हैं।

'दो पहर के बाद का समय शारीरिक कामो के लिये अत्यन्त उपयुक्त है रात्रि का समय विचार व पठन-पाठन के लिये ठीक नहीं। वरन् साधारण कार्य और मिलने जुलने के लिये उचित है। रात्रि के ६ बजे का समय प्रेम के भोग के लिये स्वाभाविक और उचित है।

शंका समाधान

IX. WOMEN

Question—

1. What is considered to be the status of women in your province according to the Shastras ?

2 What is her status at present ?

3 If you think there is degradation, what are your su·gestions to improve her status ? In particular do you think woman should have greater economic rights than she has at present ?

4 What steps should be taken to enable her to play her proper part in the social scheme ?

Answer—

1 Woman is the mistress of the house, a comate of the husband, an ideal wife and mother Besides being wife in a family, she has her own individuality also where her Dharma is similar to that of a man

2 The status of woman at present in the Hindu society is more of a wife than of an individual human The status can be improved by education and self consciousness In a good family, the question of economic rights is immaterial but there should be some provision for special cases

3 In a social scheme, she should work in co-operation with and side by side of her husband Both of them together should form one unit

स्त्री

प्रश्न—

१–शास्त्रों के अनुसार आपके प्रान्तमें स्त्रियोंका क्या दर्जा समझा जाता है ?

२–वर्तमान में उसकी क्या स्थिति है ?

३–यदि आप समझते हैं कि गिरावट की अवस्था है तो आपकी सम्मति में उसकी स्थिति के सुधार के क्या उपाय होने चाहिए ? मुख्यत: क्या आपके विचार में वर्तमान की अपेक्षा उसके अधिक आर्थिक अधिकार होने चाहिए ?

४–सामाजिक स्कीम में अपना उचित भाग लेने में उसे समर्थ करने के लिए क्या उपाय काम में लाने चाहिएं ?

उत्तर-

१–स्त्री घरकी मालकिन है, पति की संगिनी आदर्श पत्नी और माता है। परिवार में पत्नी होने के अतिरिक्त उसका अपना निजी व्यक्तित्व भी है जहां उसका धर्म मनुष्य जैसा ही धर्म है।

१–वर्तमान में हिन्दू समाज में स्त्री का मानव-प्राणी के स्थान में पत्नी का ही अधिक स्थान है। शिक्षा और आत्मजागृतिसे ही उसकी स्थिति सुधार सकती है। सद् गृहस्थ में आर्थिक अधिकारों का प्रश्न अनावश्यक है परन्तु विशेष अवस्थाओं के लिए कोई व्यवस्था होनी चाहिए।

३–समाज कार्य में स्त्री को अपने पति के सहयोग और संगमें ही कार्य करना चाहिए। दोनों को एक साथ मिल कर एक सत्ता के रूप में काम करना चाहिए।

परन्तु सब से प्रामाणिक कारण जैसा कि ऊपर बतलाया गया है यह है कि रात्रि गमन से दिमाग़ में गरमी अधिक नहीं बढ़ती। गर्भ क्रिया से शारीरिक गरमी प्रबल होजाती है और दिन के समय जब पित्त का राज्य होता है यह क्रिया रोग उत्पन्न करती है। दिन के समय में सोने से क्यों सिर में दर्द होने लगता है और शरीर शिथिल हो जाता है इसका कारण यह है कि सोने से दिमाग़ में गरमी बढ़ जाती है इस बात की पुष्टि में कि गर्भ क्रिया से गरमी उत्तेजित होजाती है हम सुश्रुतकारका मत लिखकर इस लेख को समाप्त करते हैं।

"स्त्री पुरुष का संयोग होने पर जो गरमी पैदा होती है वह शरीर में वायु को उत्तेजित करती है और फिर उस गरमी और वायुके मेलसे शुक्र निकलता है।"

मूक सन्देश

केवल आर्य समाजियों के लिये

ले० एक मर्मज्ञ

मैं आर्य समाज के सम्बंध में आजकल बहुत सी विपरीत चर्चा सुनता हूं। मुझे असीम दुख होना है कारण यह कि आर्य समाज देश, धर्म और जाति के सच्चे हित के लिये स्थापित हुआ था। इस का लक्ष्य बहुत ऊंचा था। आर्य संस्कृति का पुनरुद्धार केवल आर्य समाज द्वारा ही हो सकता था क्योंकि उस संस्कृति में इसी को अगाध श्रद्धा थी। परन्तु वर्तमान समय के आर्य समाजी अपनी बनाई आदतों के ऐसे गुलाम बन गये हैं कि उन्हें अब अपना लक्ष्य या तो दीखता ही नहीं या दीखता है तो उसके प्रति कोई आकर्षण नहीं रहा। मैंने एक बार 'सार्वदेशिक' पत्र के सम्पादक से निवेदन किया कि यदि वह मुझे यह अधिकार प्रदान करें कि मैं आर्य समाजियों के साथ हार्दिक सम्भाषण कर सकूं तो मैं उन को स्पष्ट बता सकता हूं कि वह किन कुत्सित आदतों के शिकार बन रहे हैं और यदि वह उन आदतों को न छोड़ेंगे तो सर्वदा के लिये अपने उपार्जित यशको खो बैठेंगे और समाज का उज्वल भविष्य सदा के लिये अन्धकार मय बन जावेगा। सम्पादक महोदय न मुझे यह अधिकार प्रदान किया और मैं अपना पहली किस्त इस अङ्क द्वारा अपने पाठकोंके सन्मुख पेश करता हूं।

इस समय के आर्य समाजी प्राय सभी उपदेशक हैं। उनके उपदेशों को आर्य समाज के मन्दिरों में लोग नहीं सुनते। मन्दिर में जाने वाले आर्य समाजियों की सख्या दिनों दिन घट रही है। जब वहां पर उपदेश होता है तो अधिकांश सुनने वालों का ध्यान उपदेश के सुनने में नहीं रहता। जो सुनते भी हैं, वह पीछे यही कहते सुनाई देते हैं कि इस महाशय ने कहा ही क्या है? यह बातें तो अनेक बार सुनी हैं। कुछ तो उपदेश ही नीरस होते हैं, कुछ विपरीत आलोचना उन के रहे सहे प्रभाव को मिटा देती हैं। आर्य समाज के मन्दिर से उठकर श्रोता और वक्ता दोनों ही कोरे उठते है।

आर्य समाजियों में नम्रता को ढूंढना व्यर्थका प्रयास करना है। प्रत्येक आर्य समाजी अपने को अफलातून समझता है। भला जिस समाज में सारे अफलातून हों उसकी क्या गति! "विद्या ददाति विनय" वाली बात आर्य समाजियों मे क्यो दिखाई नहीं देती? मेरे विचार में इस का एक मात्र कारण यह है कि उन का सारा स्वाध्याय योग्यता-प्रदर्शन के लिये होता है न कि अपनी संकीर्णता और अज्ञान को दूर करने के लिये।

आर्य समाजियों की दृष्टि सर्वदा दूसरों के दोषो को देखने मे लगी रहती है। उनका यह अभ्यास इतना बढ़ गया है कि भूल कर भी वे अपने भीतर नहीं देखते। वैयक्तिक उन्नति के लिये यह आवश्यक है कि हम अपने आप को उस दृष्टि से भी देख सकें, जिस दृष्टि से लोग हमको देखते हैं। प्राय हमारी सम्मति अपने विषय में पक्षपात-पूर्ण होती है। अत यह ज़रूरी है कि हम कभी कभी अपने सम्बंध में दूसरों की सम्मति भी जान लिया करें और सम्मति का आदर करते हुए उसके अनुसार अपना सुधार कर लिया करें।

हम देखते यह हैं कि जब कभी किसी आर्य भाई को यह कहा जाता है कि लोक मत को अपने सम्बन्ध में उपेक्षा वृत्ति से न देखो तो वह यही कह देता है कि लोक मत का अवहेलना में ही तो उन्नति है। यह भोले भाई इस बात को नहीं जानते कि अपने सम्बन्ध में लोक मत को सदा दृष्टि में रखना चाहिये। एक अंग्रेज कवि ने क्या ही अच्छा कहा है—

> Would the Giftie Power give us,
> To see ourselves as others see us

आर्यसमाजी अपना प्रदर्शन स्वय करते रहते हैं। वे इस बातकी प्रतीक्षा नहीं करते कि उनके गुणोंकी महिमा दूसरे गायन करें। अपना ढोल स्वय पीटना कोई अच्छी बात नहीं समझी जाती। पर आर्य समाजियों की इस प्रवृत्ति ने आर्य समाज में एक आडम्बर और कृत्रिमता का वायुमण्डल पैदा कर दिया है, जिस के विरुद्ध कोई आवाज़ उठती सुनाई नहीं देती।

पुनर्जन्म में एक और प्रमाण

(लेखक—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराजा उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, देहली)

एक बालक जिसका नाम अमरसिंह सुपुत्र बचना जाट ग्राम-तलबंडी साबो (रियासत पटियाला) का रहने वाला है। उसकी आयु ७ साल की है। वह तीन साल से हिसाब की बातें बताता है। स्कूल मे इसी साल पढ़ने के लिए भेजा। अभी उर्दू के कायदे के एक दो पृष्ठ पढ़े हैं। परन्तु किसी प्रकार का हिसाब का प्रश्न यदि उससे करें तो उसका उत्तर जबानी ठीक ठीक देता है। लिखता कुछ नहीं है। उसे अंक अभी १०० तक भी लिखने नहीं आते। हिसाब वह चुप चाप बैठा करता है। कुछ बोलता नहीं है मैंने उससे निम्न प्रकार के प्रश्न पूछे :—

(१) आपकी आयु क्या है ? इसमें कितने महीने हुए ? पश्चात पूछा कितने दिन हुए।

(२) सोने का भाव ३१) तोला है ५ रत्ती का दाम क्या हुआ ?

(३) एक चीज १) मे २॥। सेर आती है।)॥। मे कितनी आवेगी ?

(४) १) में २॥ गज कपड़ा आता है तो ७ गिरह का दाम क्या होगा ?

(५) एक जमीन का टुकड़ा इतने गज लम्बा और इतने चौड़ा है तो उसका क्षेत्र फल (रकबा) कितना हुआ ?

उस सबके उत्तर प्रश्न करने के बहुत थोड़ी देर बाद ही ठीक ठीक दिए। मैंने उससे पूछा कनाल कितनी लम्बी चौड़ी होती है। उसने कहा मैं कनाल नहीं जानता। बीघा और घुमा जानता हूँ जिससे पता लगता है कि वह जिस प्रश्न को नहीं जानता उसे उसी समय कह देता है मुझे नही आता।

उसका पिता निरक्षर है न उसकी माता पढ़ी हुई है और न घर मे और ही कोई पढ़ा हुआ है। इस अवस्था मे बिना पिछले जन्म के सस्कारो के और कोई कारण प्रतीत नहीं होता यदि किसी को उसे देखने की अभिलाषा हो तो वह भटिण्डा स्टेशन पर उतर कर मोटर लौरी से तलवडी साबो जा सकता है। लारी का किराया लग भग ॥) होगा। अथवा B.B. & C.I Ry से रामा स्टेशन पर उतर कर चार कोस चल कर तलवण्डी साबो जाना होगा। रामा में गेंदाराम प्रधान आर्य्यसमाज अथवा म० निहालचन्द्र मन्त्री आर्य्यसमाज अथवा किसी व्यक्ति से तलवण्डी साबो जाने में सहायता प्राप्त कर सकता है।

सम्पादकीय--

आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

कोई समय था जब कि आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के गौरव की गाथा सभी प्रान्तों मे बड़े चाव से सुनी जाती थी। इसका कार्य्य, इसका संगठन तथा इसके आदेश सभी प्रान्तो के आर्य्य नर नारी आदर की दृष्टि से देखते थे, परन्तु कुछ वर्षो से इस सभा के आन्तरिक घरेलू झगड़ों ने पंजाब के आर्य्य सामाजिक वातावरण को इतना गंदा कर दिया है कि गम्भीर आर्य्य समाजी अब आर्य्य समाज के भविष्य को ही संदेह की दृष्टि से देखने लग गये हैं। जब झगड़े साधारण सीमा से आगे बढ़ जाते हैं और वैयक्तिक आक्षेपों तथा घड़े बन्दियों का रूप धारण कर लेते हैं, तो उस समय धर्म, कर्म का ख्याल उड़ जाता है और केवल प्रति पक्षी को गिराने और उसको जलील करने का ख्याल बाकी रह जाता है। परन्तु लड़ने वाले व्यक्ति अपने समय पर अपने कार्य्य क्षेत्र को किसी न किसी कारण छोड़ जाते हैं, परन्तु उनके लड़ाई झगड़ों से जो क्षति एक समाज, सोसाइटी या संगठन को पहुंचती है उसका कलङ्क हमेशा के लिए बना रहता हैं। यदि लड़ने वाले व्यक्ति इस भाव को अपने हृदय मे स्थान देंगे तो सम्भव है कि वे अपने समाज के हितों का दृष्टि में रखते हुए लड़ाई झगड़ों से दूर रह सकें।

हमे अभी तक यह बात समझ में नहीं आती कि धर्म के क्षेत्र में इस प्रकार के लड़ाई झगड़े क्यों होते हैं? यहा किसी की विशेष सम्पत्ति का कोई प्रश्न नहीं। सेवा के लिए लोग समाज में आते हैं। सेवा की दृष्टि से वे समाज में अग्रसर होते हैं। फिर सेवकों में एक दूसरे को पद-दलित करने की वृत्ति क्यों पैदा होती है? सेवकों में सहायता, सहयोग का भाव तो समझ में आ सकता है, परन्तु स्पर्धा और दूसरों को कुचलने का भाव नि स्वार्थ सेवा के गौरव को गिराने वाले हैं।

कुछ भी हो इस समय पंजाब प्रतिनिधि सभा के घरेलू झगड़ों ने भयानक रूप धारण कर लिया है, कई वर्षों से इस प्रान्त से बाहर के आर्य्य समाजी उस शुभ अवसर की प्रतीक्षा मे हैं कि इस सभा का पुराना गौरव, यश और अभिमान पुन. स्थापित हो जावे। परन्तु उनकी यह अभिलाषा अभी तक पूर्ण नहीं हुई। इस सभा के गत वार्षिक साधारण अधिवेशन मे यह आशा की गई थी कि राय बहादुर दीवान बद्रीदास के प्रधानत्व में सभा के अन्तर्गत दोनों विरोधी दल मिलकर काम करेंगे और पारस्परिक झगड़ों की सर्वदा के लिए समाप्ति हो जायगी। जनता की यह आशा पूर्ण नहीं हुई। हम इसके कारणों में नहीं जाना चाहते।

राय बहादुर बद्रीदास आर्य्यसमाज के उन कतिपय व्यक्तियों में से हैं जिनकी गम्भीरता विद्वत्ता और नीति की प्रशसा सारे पंजाब में होती है। वह चोटी के कानून दां है उन्होंने अपने जीवन में सैकड़ों कानूनी उलझनों को सुलझाया होगा। शहीदगंज जैसे जटिल अभियोग में जो

गहरी विवेचना उन्होंने की थी उसकी हाई कोर्ट के जज ने भी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की थी। क्या इतना दिमाग रखने वाले आर्य्यसमाज के कर्णधार अपनी सभा के साधारण घरेलू झगड़े को मिटाने में असमर्थ हैं? हम ऐसा स्वीकार नहीं करते। हमारी सम्मति है किन्हीं कारणों से दीवान बहादुर जीने अपने हाथों में इस समस्या को सुलझाने का कार्य्य दत्त चित्त होकर नहीं लिया। हमें पूर्ण विश्वास है कि अभी तक भी दोनों दलों के प्रमुख व्यक्ति दीवान बद्रीदास जी की न्याय शीलता को आदर और भक्ति की दृष्टि से देखते हैं और हमें इसका समर्थन दोनों दलों की ओर से मिल चुका है। अत हमारा दीवान बद्रीदास जी से सानुरोध निवेदन है कि वह अपने संकोच को तिलांजलि देकर इस बात के लिए कटिबद्ध हो जावें कि वह दोनों दलों के सम्बन्ध मे अपना अन्तिम निर्णय जनता के सन्मुख रक्खें। आर्य्य जनता यह जानना चाहती है कि उनके शिरोमणि नेता आर्य्यसमाज के घरेलू झगड़ों के सम्बन्ध में अपनी क्या सम्मति रखते हैं? यदि उनके हस्तक्षेप से झगड़ों का निपटारा न होसका तो भी इतना तो आर्य्य जनता को अवश्य मालूम होजायगा कि ज्यादती का अंश किस ओर है? इस ज्ञानके प्राप्त हो जाने पर आर्य्य जनता अपनी किं कर्त्तव्य विमूढ़ता को छोड कर एक दम जाग्रत हो जायगी। और जिन ग्रन्थियोंको वह अबतक सुलझा नहीं सकी उनको एक झटके से तोड़ कर फैंक देगी। हम आशा करते हैं कि दीवान बहादुर आर्य्यसमाज की यह सब से बड़ी सेवा करने को तैयार होंगे।

हैदराबाद राज्य

अभी हाल में श्रीभाई परमानन्द जी मैसूर, भूपाल और हैदराबाद राज्यों को यात्रा करके लौटे हैं। आनो यात्रा के वर्णन में जो अखबारों में छपा है हैदराबाद राज्य के सम्बन्ध में श्री भाई जी लिखते हैं ,—

सर अकबर हैदरी से भेंट

पूर्व सूचनानुसार सर अकबर हैदरीसे मैं १० बजे उनके कार्यालय में मिला। मैंने पहला प्रश्न उनसे यही किया कि महासभा के शिष्टमण्डल को उत्तर क्यों नहीं दिया गया? जिसके उत्तर मे सर हैदरी ने कहा कि हमारी नीति यह है कि रियासतों में बाहरी लोगों का कोई हस्तक्षेप न हो। मैंने पूछा "रियासत में उनके सहधर्मियों के कष्ट दूर न होंगे तो बाहरी लोगों के लिये और मार्ग ही क्या है?" उत्तर में कहा गया कि निजू भेंट या पत्र व्यवहार से काम चल सकता है। उनकी सम्मति में मेरी यह भेंट भी उचित न थी।

मैंने हिन्दुओं के कष्ट निम्न शीर्षकों में रखे—

(१) हिन्दू प्रजाको धार्मिक कठिनाइयां,

(२) राज्य की नौकरियों में हिन्दू प्रजा के उचित भाग का अभाव।

(३) राज्य की ओर से उर्दू को प्रोत्साहन तथा प्रजाको दूसरी विभिन्न भाषाओं की उपेक्षा। राज्य में ७० लाख तैलगू ३६ लाख मराठी और २० लाख हिन्दी बोलने वाले हैं, जब कि उर्दू बोलने वाले केवल १९ लाख हैं।

(४) दलितवर्गों के सामूहिक धर्म परिवर्तन में राज्यके अधिकारियों का सक्रिय भाग।

(९) हिन्दू प्रजाको सभा सम्मेलन व भाषण आदि के मूल नागरिक अधिकारोंका अभाव।

हमने इनपर परस्पर विवाद किया। सर हैदरी का विचार है कि राज्यकी हिन्दू प्रजाको विशेषतया कोई कष्ट नहीं है। ये शिकायतें हिन्दू और मुसलमान दोनों की हैं। धर्म परिवर्तन को वह नहीं रोक सकते, हां राज्यके अधिकारियोंको इन में कोई सहायता न करने की आज्ञा उन्होंने प्रचरित कर दी है। नौकरियों के लिये एक विशेष समिति नियुक्त करदी गई है जिसे निष्पक्ष रहने का निर्देश दिया गया है। मुझे विश्वास दिलाया गया कि यदि भविष्यमें कोई शिकायत सुनें तो मुझे लिखें। मैंने तीन विशेष घटनायें उनके सामने रखीं जिनमें अधिकारियों ने हिन्दू प्रजा को कष्ट दिया। इसकी जांच के लिये उन्होंने तत्काल आज्ञादी। कौंसिल के सदस्यों से उन्होंने मेरा परिचय करवाया और मैंने इस सब के लिए उनका धन्य वाद दिया।"

हैदराबाद राज्य में हिन्दुओं और आर्यों को जो मुसीबतें है, भाई जी द्वारा वर्णित मुसीबतें उनकी स्थूल रूप रेखा मात्र ही हैं। वहाँ आर्य्य समाज की जो स्थति है वह पाठकों से छुपी नहीं हैं। यदि बतलाई ही जाय तो हम एक शब्दमें कहेंगे कि वहाँ आर्य्य समाज जीवन और मृत्यु के बीच में झूल रहा है। म० वेद प्रकाश के ताजे कत्ल से बढ़ कर क्या और कोई बात इसके प्रमाण में हो सकती है? प्रश्न यह है कि हैदराबाद में इस असाधारण स्थिति का अन्त किस प्रकार किया जाय और आर्य्य समाज की रक्षा किस प्रकार की जाय? केवल दुख और असन्तोष के प्रस्ताव पास करदेने से ही काम नहीं चलेगा। असाधारण स्थिति के अन्त के लिए असाधारण उपायों की जरूरत होती हैं वे आर्यसमाज को अपनाने होंगे तबहीं स्थिति ठीक होगी। इस समस्य पर हमें गंभीरता पूर्वक विचार करके उपाय निश्चित करने चाहिए और उन्हें पूरी तनदेही से काममें लाना चाहिए।

आर्य्य कन्या पाठशालाओंमें मांस प्रचार

आर्य्य सेवक सभा अमृतसर द्वारा प्रकाशित कन्या पाठशालाओं में मांस प्रचार शीर्षक हमें एक पोस्टर मिला है जिसमें आर्य्य कन्या पाठशालाओं के पाठ्य क्रम में नियत कुछ ऐसी पुस्तकों का विरोध किया गया है। जिनमें मांसाहार की पुष्टि में कतिपय पाठ हैं। और मांग की गई है कि शीघ्र से शीघ्र कन्या पाठशालाओं के सचालकों को वे पाठ निकलवा देने चाहिये या वे पुस्तकें हीबदल देनी चाहियें। पोस्टर में उन पुस्तकों के कुछ अवतरण भी दिए हैं जिन से मांसाहार की पुष्टि होती है।

उदाहरणार्थ—

स्वास्थ्य विधि पृष्ठ ८०—उत्तम पुष्टिकारक भोजन खाना उचित है। जैसे दूध, मक्खन, मलाई अण्डा, मास,

पृष्ठ ११२—अन्डे का शर्बत और अन्डे का जल बनाना जो अति बलदायक और उपकारी है।

पृष्ठ १६७—धीरे २ आयु के अनुसार बच्चों को अन्न देना आरम्भ करना चाहिये, जैसे दाल, चावल खिचड़ी, अन्डा, माँस का शोरवा इत्यादि।

सुशिक्षित स्त्री अर्थात् सुघड बीबी भाग १

पृष्ठ ११०—इसलिये अन्डा बड़ा उत्तम खाना है जिसे परमेश्वर बच्चों के लिये तैयार करता।"

रोगी की सेवा

पृष्ठ १०१—(च) खाने के १॥ घण्टे बाद एक या होसके तो दो कच्चे अण्डे तोड़कर एक गिलास में डालो। फिर ज़रा सा नमक और काली मिर्च मिलाओ और खिलाओ।

(छ)—दोपहर को अच्छा भोजन, बियर, लाल शराब या ह्निट भी साथही।

पोस्टर प्रकाशित करने वालों का विरोध और मांग दोनों ही उचित हैं। इस प्रकार के मामलों में अन्यों को मांग प्रदर्शन करने के बजाय स्वयं अपनी पाठशालाओं में इस प्रकार के साहित्य का प्रचार करना या प्रचार का कारण बनना आर्य्य समाज के लिये बड़ा लज्जा जनक है। ऐसी पुस्तकों का आर्य्य कन्या पाठशालाओं में होना एक क्षण के लिये भी सह्य नहीं है कन्या पाठशालाओं के संचालकों को इस तरफ शीघ्र ध्यान देकर मांग की पूर्ति करनी चाहिये।

यदि ऐसी पुस्तकों के रखने के लिये प्रबन्ध मजबूर हो तो बजाय ऐसी पुस्तकों के रखने के पाठशाला का न रखना ही अच्छा होगा क्योंकि विशेषता शून्य वा विशेषता से वंचित हुई किसी भी संस्था का जीवित रहना समाज पर भार और समाज के उद्देश्यों के विरुद्ध काम करने वाली वा उसका कारण बनने वाली संस्था समाज का अभिशाप ही होती है।

रोमन लिपि और भारत की सम्मिलित लिपि

पाठक अन्यत्र काशी के सुप्रसिद्ध विद्या प्रेमी रईस श्री० बाबू शिव प्रसाद जी गुप्त का लेख पढ़ेंगे जिसमें उन्होंने राष्ट्रीय महासभा के प्रमुख श्री० सुभाष-चन्द्र बोस की हरिपुरा कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में अपने भाषण में स्थापित हुई इस स्थापना का खंडन करने का सफल यत्न किया है कि भारत वर्ष को सम्मिलित लिपि के रूप में रोमन लिपि को स्वीकार कर लेना चाहिए इस सम्बन्ध में यद्यपि विशेष कहनेकी आवश्यकता नहीं रह गई है और माननीय बाबू जी ने उत्तम प्रकार से अपने पक्ष को रख दिया है फिर भी एक दो बातें बाबूजीके कथनमें वृद्धिके तौरपर कहदेना चाहते हैं।

श्री० सुभाष बाबू ने रोमन लिपि को स्वीकार करने के पक्ष में सबसे बड़ा हेतु अपने हरिपुरा कांग्रेस के अभिभाषण में यह दिया है कि इस लिपि को ऐतिहासिक और वैज्ञानिक दोनों प्रकार की महत्ता है और इस लिपिके अपनाने से हमें वे ही लाभ प्राप्त होंगे जो संसार के अन्य देशोंको प्राप्त हैं। आज कल एशिया में भारत को यदि हम छोड़ भी देवें ब्रह्मा, लंका, स्याम, जापान, तिब्बत, मंगोलिया और मुस्लिम देशों में रोमन से भिन्न अपनी २ लिपियां हैं। उत्तरी अफ्रिका के कुछ देशों में अरबी लिपि प्रचलित है। पैलेस्टाइन के यहूदियों की लिपि हिब्रू है। यूरोप में सबसे बड़े प्रदेश सोवियट रूस में रोमन से भिन्न लिपि है। यूनान में भी भिन्न लिपि है। जर्मनी ने भी अभी तक पूर्ण रूप से रोमन लिपि को नहीं अपनाया है। अतएव श्री० सुभाष बाबू की यह स्थापना कि रोमन लिपि को अपनाने से संसार के अन्य देशोंके समान इस लिपि से हमें लाभ होगा, ठीक नहीं है। श्री० सुभाष बाबू का यह भी विचार है कि रोमन लिपि के माध्यम से युरोपीय भाषाओं के अध्ययन में सहूलियत होगी। परन्तु भारत वर्ष में इस लिपि के व्यवहार से कुछ स्वरों और व्यञ्जनों की ध्वनि कतिपय युरोपीय भाषाओं

में प्रयुक्त उन्ही स्वरों और व्यञ्जनो की ध्वनि से भिन्न होगी और इस कठिनाई को वजह से इस लिपि का अपनाना संभव नहीं देख पड़ता है। रोमन लिपि के अक्षर संस्कृत, देव नागरी और संस्कृत जैसी अन्य लिपियों के अक्षरों के मुकाबले में नाम मात्र के वैज्ञानिक हैं और यह सुनिश्चित निर्विवाद सत्य है फिर रोमन लिपिकी वैज्ञानिकता से सुभाष बाबू का क्या अभिप्राय है यह समझ में नहीं आया।

एक प्रवासी भाई का आगमन

इस मास हमे देहली में मौरिशस के औपनिवेशिक भाई श्री० पं० गयासिह जी आर्य्य के दर्शन करने और मौरिशस में आर्य्यसमाज के सम्बन्ध में विचार विनिमय करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। गयासिंह जी १० वर्ष के बाद आर्य्यसमाज के पुनीत मिशन पर मातृभूमि को लौटे हैं। उनकी यात्रा के फल स्वरूप सभा के उप प्रधान श्री० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी बहुत सभव है सभा की ओर से निकट भविष्य मे आर्य्यसमाज के प्रचारार्थ और वहाँ के आर्यो के पारस्परिक मनो मालिन्य के निवारणार्थ मौरिशसकी यात्रा करेंगे।

हमसे विदा लेने के बाद श्री० गयासिह जी ने २०-२१ दिन के अर्से में भारत के भिन्न २ प्रान्तो यथा बम्बई, सी० पी०, काठियावाड़, राजपूताना, बिहार, बगाल, पजाब, यू० पी० सिन्ध इत्यादि में आर्य्य समाज की प्रगति का अध्ययन करने और उस अध्ययन से मौरिशस में आर्य्य समाज को जो लाभ पहुँचाया जा सकेगा लाभ पहुँचाने के उद्देश्य से यात्रा की। वस्तुत उनका धर्म प्रेम और साहस प्रशसनीय है। उनकी यात्रा का संक्षिप्त हमारे सामने है। उन्हें सिन्ध, गुजरात और काठियावाड़ में आर्य्य समाज की गति अन्य प्रान्तों की तुलना में बहुत मन्द देख पड़ी है। इन प्रान्तों के आर्य्य भाइयों को विशेष रूप से आर्य्य समाज के प्रचार को ओर ध्यान देना चाहिये।

दृष्टि कोण में सुधार

महिला नैशनल कौंसिल की भारतीय शाखा ने अभी हाल में खाद्य पदार्थ सम्बन्धी एक उपसमिति की रिपोर्ट को स्वीकार किया है तथा एक प्रस्ताव द्वारा भारतीय सरकार के स्वास्थ्य सुधार तथा पुष्टिकारक भोजन सम्बन्धी उपायों और यत्नों की प्रशसा की है, तथा गवर्नमेन्ट को प्रेरणा की है कि वह अच्छे और सस्ते दूध के प्रबन्ध पर विशेष ध्यान दे हाथ के कुटे हुये चावलों की बाजारों में व्यवस्था करें और खाने की चीजों में जो इन दिनों अन्धाधुन्ध मिलावट होरही है उसे बन्द करे।

महिला कौन्सिल को यह प्रस्ताव पास करने के लिये हम बधाई देते हैं। हमे प्रसन्नता है महिला कौन्सिल ने स्वास्थ्य वर्द्धक तथा पुष्टिकारक भोजन की आवश्यकता की ओर अपना ध्यान दिया है। राजनैतिक तथा अन्य प्रकार की समानताओं के शोर में जिसपर बहुतसी हमारी बहनें पिछले कई वर्षों से ज़ोर देरहा हैं हमारी यह धारणा हो गई थी कि वे आवश्यक बातो की उपेक्षा कर रही हैं। पश्चिम की नारियों का अन्धाधुन्ध अनुकरण करते और पश्चिमको प्रकाश स्थान समझते हुए हमारी बहुतसी देवियोंने इस बातकी लगभग बिलकुल उपेक्षा की थी कि उनका प्रारम्भिक और जो वास्तविक कार्य्य-क्षेत्र घर है जहां उन्हें राष्ट्र के

लिये उत्तम नागरिकोंका पालनपोषण और शिक्षण करना चाहिये। परिवार के लोगों के लिये उपयुक्त भोजन की व्यवस्था करना उनका एक मुख्य काम है। राजनैतिक और आर्थिक समानता का पश्चिम की स्त्रियों के लिए भले ही कोई महत्व हो परन्तु जिन स्थितियों में हमारी बहनें है और उनकी जो परम्पराएँ और आदर्श है उनको देखते हुए परिवार का पालन पोषण करना उनका एक मुख्य कर्तव्य है। महिला-समितियों द्वारा, दुःख है स्त्रियों के इन कर्तव्यों की पिछले वर्षों में बहुत अवहेलना हुई थी।

भारतीय चिकित्सा प्रणाली

अभी पिछले दिनो श्रीमती विजय लक्ष्मी मिनिस्टर यू० पी० सरकार ने यू० पी० असेम्बली में बजट की बहस के सिलसिले में वैद्यक और यूनानी भारतीय चिकित्साओं के समर्थन और संरक्षण मे एक बहुत उत्तम और खोज पूर्ण व्याख्यान दिया था। उनके व्याख्यान का सार यह था कि इन दोनों, को जो हमारी लापरवाही और राजनैतिक दासता के कारण कोने में डालदी गई है कांग्रेस सरकार द्वारा प्रोत्साहन मिलेगा और उन्हें उनकी प्राचीन महत्ता की ओर लेजाने की दिशा मे यत्न किया जायगा।

वर्तमान डाक्टरी व्यवसाय पर प्रकाश डालते और सेवाका उत्कृष्ट आदर्श रखते हुये उन्होंने अपना भाषण इस प्रकार समाप्त किया।

"मैं समझती हूं इस सभा तथा उसके बाहर डाक्टरों के सम्बन्ध मे काफी कहा जाचुका है।

चिकित्सा के पवित्र पेशे के किसी सदस्य विशेष के सम्बन्ध में मुझे कुछ नहीं कहना है। परन्तु मैं यह कहना चाहती हू कि जहा तक डाक्टरों का सम्बन्ध है पाश्चात्य चिकित्सा प्रणाली का व्यापारिकता मे तेजी के साथ पतन हो रहा है और जब तक यह नहीं रोका जायगा तब तक यह उच्च विज्ञान वह नहीं होगा जो होना चाहिये। यह बात भारतवर्ष तक ही सीमित नहीं है वरन् तमाम पश्चिम मे पाई जाती है। मिशनरी भाव का, जो इस पेशे की जान है ह्रास हो रहा है और सेवा के भाव का लोप हो रहा है। डाक्टर लोग वर्गों में बट गए है और उनमें हर प्रकार की तुच्छ ईर्षाएं पाई, जाती है। मै यह भी कहना चाहती हूं कि जब हम पश्चिम की नकल भले के लिये करने लगें तो हमे उस पश्चिम की नकल करनी चाहिएं जो हमे कुछ सिखा सकता हो। हमे उस पश्चिम की नकल नहीं करनी चाहिये जिसको उसके ही विचारक बुरा कहते हो।

इस सम्बन्ध मे भारतीय रीति को अपनाना चाहिये। वह रीति यह है कि "सेवा" पैसो की माप से नहीं नापी जानी चाहिये। राष्ट्र-निर्माण के लिये हमें आज इसी भाव की जरूरत है और मुझे इसमे सन्देह नहीं है यदि समय दिया जाय तो भारत के बच्चो के दिमाग मे सेवा का यह भाव घर कर जायगा और हम न केवल आराम पहुंचाने में ही वरन् चरित्र बनाने मे भी सफल होगे और एक बार फिर हमारा ज्ञान विज्ञान और हमारी चिकित्सा प्रणाली बुद्धि पूर्वक उन्नति करती हुई बौद्धिक कौशल की उस उच्चता को प्राप्त करेगी जिस पर से अन्याय पूर्वक वह गिरादी गई है।"

शुद्ध हवन सामग्री

धोखे से बचने के लिये आर्यों

को

बिना वी० पी० भेजते हैं

पहले ।) पोस्ट ख़र्च मनीआर्डर द्वारा भेज कर ऽ॥ नमूना

फ़्री (मुफ़्त) मँगा लें

अगर नमूना जैसी सामग्री हो तो मूल्य भेजदें

अन्यथा

कूड़े में फेंक दें ।

फिर मूल्य भेजने की आवश्यकता नहीं ।

क्या इससे भी बढ़कर कोई सच्चाई की कसौटी हो सकती है

भाव ॥) सेर, ८०) भर का सेर ।

थोक ग्राहक को २५) रुपये प्रति सैकड़ा कमीशन ।

मार्ग-व्यय ग्राहक के जिम्मे ।

पता—

रामेश्वरदयालु आर्य, पो० अमोली (फतेहपुर) यू०पी०

पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये 'चन्द्र प्रिन्टिंग प्रेस' देहली,
से प्रकाशित

मई १९३८ Reg.No. L. 2121

ॐ

ऋग्वेद यजुर्वेद

सार्वदेशिक



सम्पादक—प्रो० सुधाकर एम० ए०

उ० सम्पादक—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक

वार्षिक मूल्य स्वदेश २) एक प्रति का ।=) विदेश से ५ शि० वार्षिक

अथर्ववेद सामवेद

लेख-सूची

ओ३म्

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष १२ | वैशाख १९९५ | अङ्क ३

मई १९३८ ई० | दयानन्दाब्द ११४

वेद की शिक्षाएँ

न यस्य हन्यते सखा न जीयते कदाचन । ऋग०१०—१५२—१

ईश्वर के भक्त को कोई नष्ट नहीं कर सकता और न जीत सकता है ।

They who have dedicated their lives to the service of the Lord are neither destroyed nor conquered.

तस्य ते भक्तिवांसः स्याम । अथर्व, ६—७९—३

हे प्रभो ! हम तेरे भक्त हों ।

May we all become devoted to Thee, O Lord !

अध्यात्म–धारा

हम क्या हैं ? इस प्रश्न के उत्तर के साथ जीवन का अर्थ जुड़ा है। खाना-पीना और मौज उड़ाना ही जीवन का अर्थ है, इस भावना के वशीभूत हो हम जीवन क वास्तविक उद्देश्य को भूल जाते है। हमारे चारों ओर की दृश्यमान और निरन्तर बदल ने वाली दुनिया हमारी इन्द्रियों को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है और हमारी आखें सासारिकता की खाई से ऊपर नहीं उठतीं है। हम आत्मा को भूल जाते हैं। हमारी इन्द्रियो का स्वभाव बाहर की ओर देखने का है इसी लिए उनके वशीभूत हो हम भीतर की ओर न देखकर बाहर की ओर देखते है। हमें आत्मा का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये, इसी के द्वारा हम जीवन का अर्थ समझ सकते हैं और इसी के द्वारा हम उसका व्यवहार जान सकते हैं। आत्मा के अस्तित्व और अनादित्व के सम्बन्ध मे विशेष कहने की जरूरत नहीं है। ये दोनों बातें हमारे यहा स्वय सिद्ध हैं। और जो लोग इन मे विश्वास नहीं रखते थे अब वे भी विश्वास करने लग गए हैं।

मै कहाँ से आया हूँ ? और मै क्या हूँ ? ये प्रश्न पवित्रात्माओं और कर्म परायण व्यक्तियों के लिए भले ही साधारण हों परन्तु जो व्यक्ति ससार के अनित्य आनन्दो मे लिप्त हैं उन साधारण व्यक्तियों के लिए कौनसा मार्ग है ? इस प्रकार के लोगों के लिए आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय और सत्पुरुषो का सत्सग, जिन की आत्मा उन्नत और बलिष्ठ हो मुख्य मार्ग है। यहाँ सत्पुरुषो से मतलब उन लोगों से नहीं है, जिन्हें आत्मिक ज्ञान तोते की नाईं रटा हुआ होता है, वरन् उन लोगो से है जिन्हे वह ज्ञान जीवन के अनुभव से प्राप्त होता है और जो ऋषि होते है केवल विचारकही नहीं होते है। ऋषि उन लोगो को कहते हैं जो अपनी जाग्रत अवस्था मे साधारण व्यक्तियों की अपेक्षा अन्तिम सचाइयो को ज्यादा गभीरता से अनुभव करते हैं। वे आध्यात्मिक अन्वेषक होते है जिनके लिए अध्यात्मिक जीवन किताबी विद्या का विषय नहीं होता है वरम् जिनका उन सचाइयो से साक्षात् कार होता है जो इन्द्रियो से ऊपर होती हैं। केवल विचारक न्यूनाधिक रूप मे दार्शनिक होते हैं जो वाद विवाद और तर्क मे निमग्न और सन्तुष्ट रहते हैं। श्रीयुत रसकोन मनुष्यों की इन दो श्रेणियो मे अपने एक निबन्ध मे निम्न प्रकार भेद दर्शाते हैं—

"जितना अधिक मैं इस विषय पर सोचता हूँ उतना ही अधिक मुझ पर अङ्कित होता है कि मनुष्य की आत्मा सबसे बड़ा कार्य जो इस दुनियाँ मे करता है वह किसी वस्तु को देखना और उस देखे हुए को सीधे सादे तरीके मे प्रगट करना है। सैकड़ों आदमी उस आदमी की चर्चा कर सकते हैं जो सोच सकता है परन्तु हजारों आदमी उसका

खयाल कर सकते हैं जो देख सकता है। साफ २ रीति से देखना ही कविता, ज्ञान और धर्म है"।

आत्म-ज्ञान के जिज्ञासु के लिए हृदय और दिमाग के कुछ विशिष्ट गुणों से युक्त होना चाहिए। सबसे पहली चीज नम्रता है। इस के बिना जिज्ञासु को आत्म ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती है। शंकराचार्य जी के पास एक शिष्य था जिसने उनकी बड़े दिनों तक सेवा की परन्तु फिर भी उन्हो ने उसे आत्म-ज्ञान की शिक्षा न दी। एक बार शंकराचार्य जी अकेले बैठे थे, उन्होंने अपने पीछे किसी के आने की आहट सुनी। उन्होंने पुकारा कौन है ? शिष्य ने उत्तर दिया "महाराज मैं हूँ।" शंकर ने कहा "यदि तुम्हें 'मैं' शब्द इतना अधिक प्रिय है तो तुम इसे या तो अपरिमित रूप से फैलाओ या उसका सर्वथा परित्याग करदो।"

जिज्ञासु के लिए दूसरी वस्तु 'तर्क वितर्क' है उसे आत्म-ज्ञान की प्रबल प्रेरणा होनी चाहिये और सत्पुरुषों से तर्क वितर्क करना चाहिये।

तीसरी योग्यता श्रद्धा और विद्वानो की सेवा है। सत्संग से हृदय पवित्र होता है और सेवा श्रद्धा से शरीर और दिमाग का शिक्षण और नियन्त्रण होता है।

संसार के बड़े २ सभी शिक्षको ने इस बात पर बल दिया है कि ज्ञान की प्राप्ति और उस प्राप्त ज्ञान के अमल से ही कल्याण होता है। वह ज्ञान और कर्म शुद्ध और पवित्र होना चाहिए। भले ही उसे तुम कहीं से भी क्यों न प्राप्त करो, और यह ज्ञान परतंत्रता के बंधनो को ढीला करने वाला होना चाहिये। उस ज्ञान से मृत्यु पर विजय प्राप्त करके कर्म से अमरता की सिद्धि करनी चाहिए। आत्म-ज्ञान के जिज्ञासु को भौतिक जीवन मे मोह छोड कर हर प्रकार के त्याग और तपस्या के लिये तय्यार रहना चाहिए। उसे इस संसार मे लिप्त हरगिज न होना चाहिए वरन् अपने कार्य की सिद्धि के लिए इस दुनिया को साधन समझते हुए उसका उचित उपयोग करना चाहिए। इसका अर्थ अपने को जीवन की समस्याओं और खतरो से पृथक रखना नहीं है और न इसका मतलब अपने सासारिक कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्व से बचना ही है।

ससार मे लिप्त होने का एक मुख्य कारण मनुष्य का बड़ी २ आशाओं का बाधना बतलाया जाता है। इसी लिए धर्म ग्रन्थो में अपने कर्त्तव्य कर्मों के फल की इच्छा न करने की शिक्षादी गई है। इसका भाव यह है कि आध्यात्मिक प्रयत्नों की सफलता निस्स्वार्थ भाव के गुण को धारण करने पर निर्भर है।

आध्यात्मिक जीवन एक कला है, क्यों कि यह उस सुन्दर वस्तु की प्राप्ति का यत्न है जो प्रत्येक व्यक्ति में छुपी होती है। जीवन की सच्ची कला आत्मिक जीवन में पूर्णता को प्राप्त होती है और यह जीवन आत्मा द्वारा प्रकृति पर विजय प्राप्त करने मे छुपा है या बाहर से भीतर की ओर चलकर आन्तरिक उन्नति करने मे है और यही आन्तरिक उन्नति मनुष्य की वास्तविक उन्नति कहलाती है।

सत्यार्थ प्रकाश लेख माला

नियोग और पुनर्विवाह

[लेखक—श्री स्वामी स्वतन्त्रा नन्द जी]

सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में महर्षि जी ने यह पाठ लिखा है।

प्रश्न—स्त्री और पुरुष का बहु, विवाह होने योग्य है वा नहीं ?

उत्तर—युगपत् न, अर्थात् एक समय में नहीं।

प्रश्न—क्या समयान्तर में अनेक विवाह होने चाहियें ?

उत्तर—हां ... ...किन्तु ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य वर्णों में क्षतयोनि स्त्री, क्षत वीर्य पुरुष का पुनर्विवाह न होना चाहिये।

प्रश्न—पुनर्विवाह में क्या दोष है ?

उत्तर—(पहिला) स्त्री पुरुष में प्रेम न्यून होना क्यों कि जब चाहे तब पुरुष को स्त्री और स्त्री को पुरुष छोड़ कर दूसरे के साथ सम्बन्ध करले।

दूसरा—जब स्त्री वा पुरुष, पति व स्त्री के मरने के पश्चात् दूसरा विवाह करना चाहे तब प्रथम स्त्री वा पूर्व पति के पदार्थों को उड़ा ले-जाना ...

तीसरा—बहुत से भद्र कुल का नाम वा चिन्ह भी न रह कर उसके पदार्थ छिन्न भिन्न हो जाना।

चौथा—द्विजों में पुनर्विवाह वा अनेक विवाह कभी न होना चाहिये।

प्रश्न—पुरुषों को नियोग करने की क्या आवश्यकता है क्यों कि वह दूसरा विवाह करेगा।

उत्तर—हम लिख आये हैं द्विजों में स्त्री और पुरुष का एक ही वार विवाह होना वेदादि शास्त्रों में लिखा है, द्वितीय वार नहीं।

प्रश्न—नियोग मरे पीछे ही होता है वा जीते पति के भी ?

उत्तर—जीते भी होता है।

प्रश्न—...रहा न जायतो फिर क्या करें ?

उत्तर—...किसी से नियोग करके उसके लिये पुत्रोत्पत्ति करदे परन्तु वेश्यागमन वा व्यभिचार कभी न करें।

इस उद्धरण से निम्न बातें सिद्ध होती हैं।

(१) नियोग, (२) नियोग पति के जीते भी हो सकता है (३) पुनर्विवाह।

(१) देवराद्वा सपिण्डाद्वा स्त्रिया सम्यङ्नियुक्तया। प्रजेप्सिताधि गंतव्या संतानस्य परिक्षये॥ मनु ६.५६

संतान न होने की अवस्था मे संतान की इच्छा वाली स्त्री विधि पूर्वक देवर (पति के भ्राता) अथवा सपिण्ड के पास संतानार्थ जाय।

यह श्लोक सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि जी ने लिखा है।

अपतिरपत्य लिप्सुर्देवरात्। पिण्ड गोत्रर्षि संबंधेभ्यो योनि मात्राद्वा। नादेवरात्येके। गौतम धर्म सूत्र प्रश्न २ अध्याय ६ सूत्र ४, ६, ७।

पतिकी मृत्यु पर संतान की इच्छा वाली देवर, सपिण्ड, सगोत्र, समान प्रवर अथवा ब्राह्मण से संबंध करके संतान वाली बने। कई कहते हैं केवल देवर से ही संबंध करें अन्य से नहीं।

अत ऊर्ध्वं गुरुभिरनुमता देवराज्जनयेत्पुत्र-मपुत्रा।

बोधायन धर्म सूत्र प्रश्न २ अध्याय २ सूत्र ६२ एक वर्ष वा ६ मास पति की मृत्यु पर बीत जांय, तब गुरु आदि से अनुमति लेकर देवर से संबंध करके पुत्रवति बने।

अपुत्रा गुर्वनुज्ञातो देवरः पुत्र काम्यया।

इन प्रमाणों से मृत पति स्त्री को नियोग का विधान है।

सपिण्डो वा सगोत्रो वा घृताभ्यक्त ऋतावियात्। याज्ञवल्क्य विवाह प्रकरण पुत्र रहित स्त्री गुरु की आज्ञा से देवर, सपिण्ड, सगोत्र से ऋतु समय शरीर में घृत लगाकर संतान उत्पन्न करे।

(२) जीवित पति वाली स्त्री के नियोग में प्रमाण—

यस्तल्पज प्रमीतस्य क्लीवस्य व्याधितस्यवा।

स्वधर्मेण नियुक्तायां स पुत्र' क्षेत्रज. स्मृत'॥ मनु अध्याय ९, १६९। जो मृत, नपुंसक, प्रसव विरोधी व्याधि युक्त पति की स्त्री नियोग से संतान उत्पन्न करे वह क्षेत्रज पुत्र कहलाता है।

इसमें नपुंसक और व्याधि युक्त जीते समय के विशेषण हैं।

तदलाभे नियुक्तां ना क्षेत्रजो द्वितीयः। वसिष्ठ स्मृति अ० १७।

औरस न होने पर नियोग से उत्पन्न क्षेत्रज पुत्र होता है।

इसमें भी पति के जीते समय नियोग का विधान है।

(३) पुनर्विवाह

या पत्या वा परित्यक्ता विधवा वा स्वयेच्छया।

उत्पादयेत्पुनर्भूत्वा स पौनर्भव उच्यते। मनु० अध्याय ९, १७५। कल्लूका, या भर्त्रा परित्यक्ता मृत भर्तृका वा स्वेच्छया न्यस्य पुनर्भार्या भूत्वा...।

जो पति से छोड़ी हुई अथवा विधवा अपनी इच्छा से अन्य पति से विवाह करके संतान उत्पन्न करे उसे पौनर्भव कहते हैं।

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीवे च पतिते पतौ।

पंचस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते॥ पराशर स्मृति ४. ३०।

पति—विदेश गये (जिसका पता न लगे) मरे, सन्यासी बने, नपुंसक होने, पतित हो जाने पर स्त्री अन्य पति करले।

इस श्लोक पर सत्यार्थ प्रकाश में यह टिप्पणी है—

"क्या स्त्री के पाच ही आपत्काल हैं जो रोगी पड़ा हो वा लड़ाई हो गई हो इत्यादि। आपत्काल पाच से भी अधिक हैं"।

या च क्लीबं पतितमुन्मत्त वा भर्तार मुत्सृज्यान्यं पतिं बिन्देे मृतेवा सा पुनर्भूर्भवति। वसिष्ठ स्मृति अध्याय १७, २१।

जो स्त्री नपुंसक, पतित वा उन्मत्त पति को छोड़ के अथवा पति के मरने पर अन्य पति करती है वह पुनर्भू कहाती है।

'विधवोद्वाह मीमांसा' लेखक बदरीदत्त जोशी

शर्मा मैशीन प्रिंटिङ्ग प्रेस, मुरादाबाद सम्वत१६८० विक्रमी प्रथम संस्करण के पृष्ठ ६६ पर लिखा है

अब हम कुछ ऋषियों के प्रमाण 'सनातन धर्म' नामक पुस्तकों मे से· उद्धृत करते हैं।

नष्टे सन्यासमा पन्ने व्याधि ग्रस्ते चभर्त्तरि।

पुन· स्त्रीणा विवाहः स्यात्कलावपि न संशय

अत्रिस्मृति यह बात संशय रहित है कि कलियुग में भी, यते के माने,संन्यास लेने, व्याधिग्रस्त होने पर भी पुनर्विवाह कर सकती है। मरणानन्तरं भर्तर्यपनाहत योनय.।

स्त्रियो विवाह मर्हन्ति नात्र कापी विचारणा। गौतम स्मृति। पति की मृत्यु पर यदि स्त्री सन्तान रहित हो अथवा अक्षत योनि हों तो विवाह कर सकती है, इस में कोई सन्देह नहीं है।

पुरुषाणाभिव स्त्रीणा विवाहा बहवो मताः।

भर्तृनाशे पुनः स्त्रीणा पुन्सो पत्नी नये यथा वैशपायन स्मृति, पुरुषों की भांति स्त्रियों के भी बहुविवाह संमत है पति मरने पर स्त्री भी विवाह कर सकती है जिस प्रकार पत्नी मरने से पति करता है।

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्या शूद्रा. स्वकुल योषिताम।

पुनर्विवाह कुर्वीरन्नन्यथा पाप संभव। जाबालि चारों वर्ण अपनी विधवा स्त्री का पुन विवाह करें अन्यथा अचार दोष की संभावना है।

पत्नी नाशे यथा पुरुषो भर्तृ नाशे तथा स्त्रियां पुनर्विवाह कर्त्तव्य कलावपि युगे तथा। व्याघ्रपाद जिस प्रकार पत्नी नाश पर पुरुष पुनः विवाह कर लेता है इसी प्रकार पति नाश पर स्त्री कर सकती है कलियुग में दूसरे युगों की भांति। इसी प्रकार और स्मृति तथा पुराणों के श्लोक लिखे हैं मैंने पुराणों को इस में कोई स्थान नहीं दिया और स्मृतियों के, भी कई छोड दिये हैं ·मेरी सम्मति में यह प्रमाण पर्याप्त हे यदि कोई अधिक देखना चाहेतो उसी पुस्तक को देखलें।

इसी प्रकार महाभारत से भी उद्दालक पाडू आदि के नाम लिखे जा सकते हैं यह सब देखकर निश्चय होता है स्मृति मे नियोग और पुनर्विवाह दोनों विधान रुप से लिखे गए हैं अब विचारना यह है इस समय तक पत्नी देहात पर किसी महा-पुरुष धर्म विधायकने पतिपर पुन· विवाद करने में कोई प्रतिबंध नहीं लगाया है केवल महर्षिदयानन्द जी हैं जो खुले शब्दों में लिखते हैं द्विजों मे क्षत वीर्य पुरुष का पुनः विवाह न होना चाहिये, आर्य समाज ने भी इस विषय को अधिक महत्व नहीं दिया है क्योंकि जहा आर्य समाज में महाधन स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वर्गीय लालानन्द लालजी आदि व्यक्तियों ने पत्नी देहात के पश्चात् पुनर्विवाह नहीं किया वहा करने वालों की संख्या न करने वालों से अधिक है और करने वालों को आर्य समाज में विशेष घृणा से भी नहीं देखा जाता है इस लिये सत्यार्थ प्रकाश का यह लेख दोनों पर प्रतिबंध लगाता था जब पुरुषों ने इस का पालन पूर्ण रीति से नहीं किया तों स्त्रियों से यह आशा करना कि वह विवाह न करें उचित नहीं है।

द्विजों में स्त्रियों पर पूर्ण रुप से पुनर्विवाह का प्रतिबन्ध था परन्तु समय ने उनको भी इस स्थान से हिला दिया है, अब भारत के प्रत्येक

प्रात मे प्रत्येक वर्ष में पुनर्विवाह सुनने में आते है उनको विशेष घृणा से नहीं देखा जाता है, यदि कोई देवी स्वय न करना चाहे तो न करे जो करना चाहे वह कर सकती है भविष्य मे यह प्रथा बढ़गी ऐसी आशा की जा सकती है।

इस समय भारत वर्ष के किसी प्रात मे नियोग की घटना सुनने मे नहीं आई है। प्र-येक प्रात मे प्रत्येक जाति मे (ईसाई, मुसलमान, आर्य) पति के होतेहुए पर पुरुष गामिनी स्त्री कोई न कोई मिल जायगी जिस का पति को भी पता हो परन्तु वह व्यभिचार है नियोग नहीं, पति की मृत्यु पर इस समय दो अवस्थाए है, एक धन सपन्न स्त्रिये हैं और दूसरी धन रहित स्त्रियें है। इन दोनों मे ब्रह्मचारिणी रहने वाली भी है वह स्वाध्वी, पूज्या हैं। और प्रथम कक्षा मे जो जितेन्द्रिया नहीं है विषयवासना युक्त है उनको एक ओर धन आकर्षण करता है दूसरी ओर विषय प्रबल हैं वह अपनी ओर खीचते है धन लोभसे वह उस गृहको छोडना नहीं चाहती इस लिये वह व्यभिचारिणी होकर भ्रूण इत्यादि पाप कर्म करती है। मेरी सम्मतिमे यदि वह नियोग करले तो इन पापो से बच सकती है। बिना नियोग के उनके लिये और कोई उपाय प्रतीत नहीं होता है। महर्षि जी ने सत्यार्थ प्रकाश मे इनके लिये ही 'पूर्व पति के पदार्थों को उठा लेना' लिखा है।

दूसरे जो निर्धन विधवायें है, उनके धनहरण की कथा ही क्या उनको तो अपना पेट भरने की चिन्ता है, और युवा अवस्था के कारण विषय प्रवृत्ति भी है यदि उनका पुनर्विवाह कर दिया जाय तो उनके जीवन की दोनों कठिनाइया दूर हो सकती हैं। उनके पास पूर्व पति का धन न होनेसे धन ले जाना असम्भव है, और पूर्व पति के लिये पुत्रोत्पन्न करने से भी कोई लाभ नहीं उस पुत्र का पालन पोषण कहा से होगा, माता को तो अपना पेट भरना दु साध्य हो रहा है। इस प्रकार विधवाओं का नियोग और पुनविवाह हो सकता है

शेष रहा जीते पति के पुत्रार्थी का नियोग, शास्त्र इसकी आज्ञा देता है। पुत्रार्थियो के लिये अन्य उपाय भी दत्तक कृत्रमादि पुत्रो द्वारा किया है उन साधनो मे नियोग भी एक साधन है यह पुत्रार्थी की इच्छा पर है जिस साधन को प्रयोग मे लेना चाहे ला सकते है।

इसप्रकार मेरी सम्मति का सार यह है—

(१) जो धन सपन्न, विषय वासना युक्त विधवाएं है, उनको नियोग कर लेना चाहिये।

(२) जो धन रहित, विषय वासना वाली विधवाए है वह पुनर्विवाह करें।

(३) क्लीव, दीर्घ रोगी आदि पति वाली स्त्री और पति यदि पुत्र की अभिलाषा रखते है और साथ ही पृथक् भी होना नही चाहते है वह कृत्रमपुत्र बना सकते है यदि स्त्री को विषय वासना भी है तो उसके लिये भी नियोग ही है, वह भी पति के भ्राता से किया जाय तो ठीक है, यदि पति या पत्नी पृथक् होना चाहें तो पृथक् होने पर वह स्त्री भी पुनर्विवाह करले।

विज्ञान

[ले० रघुनाथ प्रसाद जी पाठक]

आर्य धर्म में विज्ञान की वास्तविक भावना सृष्टि के कार्य और कारणभाव की जाँच करना है और उस ज्ञान के द्वारा परतन्त्रता के बन्धनों को छिन्नभिन्न करते हुये मोक्ष की सिद्धि करना है। इस विज्ञान से सृष्टि, जीव ईश्वर, कर्मफल, पुनर्जन्म, प्रलय तथा ईश्वर प्राप्ति और सृष्टि के उचित उपयोग का रहस्य स्पष्ट होजाता है। इन सिद्धान्तों के मौलिक ज्ञान और सृष्टि उपयोग की मौलिक विधि अर्थ और काम के ठीक उपयोग से मोक्ष सुलभ हो जाता है। एक समय था जब पश्चिम का विज्ञान ईश्वर जीव इत्यादि सचाइयों का कतई निषेध करता था और यह बड़े भयङ्कर अनर्थों के लिये जिम्मेवार रहा था। परन्तु समय के प्रवाह से इस विज्ञान ने पलटा खाया और इसे जीव, ईश्वर, इत्यादि सचाइयों को स्वीकार करना पड़ा। विज्ञान का यह युग डार्विन इत्यादि नास्तिक वैज्ञानिकों के युग के नाम से प्रसिद्ध है। आज समय के प्रवाह ने इस नास्तिक विज्ञान को आस्तिकता के रंग से रंग दिया है, भले ही पूरे तौर से गाढ़े रंग में नहीं। सचमुच मानव जाति के आधुनिक युग में यह बड़े महत्व की बात है और भारत के प्राचीन ऋषियों की बुद्धि के चमत्कारों की अकाट्यता और महत्ता की द्योतक है, आज बड़े २ वैज्ञानिक अपनी सतत खोजों और अन्वेषणाओं के फल स्वरूप विज्ञान को परमात्मा की सृष्टि के रहस्यों को खोलने वाला एक मात्र साधन स्वीकार करने के लिये वाधित हुए हैं। वे मानते और कहते हैं, कि यह विश्व विचार मय है, इसके पीछे कोई विचारवान महान सत्ता है। निस्सन्देह वैज्ञानिक क्षेत्र में यह बात युगान्तरकारी है और इसका परिणाम भी मानव जाति की भलाई की दृष्टि से शुभ ही सिद्ध होगा। होसकता है यह परिणाम कुछ देर से हो।

भारतवर्ष और पश्चिम में सत्य मालूम करने के तरीको में एक मुख्य भेद है। भारतवर्ष ने हमेशा अपने अन्वेषणों को भले ही वे वैज्ञानिक रहे हों या अन्य किसी प्रकार के, जीवन के आध्यात्मिक अङ्ग पर केन्द्रित रक्खे हैं, और पश्चिम आध्यात्मिक लाभों की अपेक्षा साईंस की खोजों के क्रियात्मक फायदों पर अधिक ल देता है। भारतवर्ष का इन कारणों से विदेशी लोगों ने बहुत मजाक उड़ाया है। भारतवर्ष को उन्होंने दार्शनिकों, रहस्य और आदर्श वादियों का स्वप्न लेने वालों और जीवन तथा मृत्यु की अप्रत्यक्ष बातों का व्यर्थ विचार करने वालों का देश प्रगट किया है। ऐसा करते हुए भारत वासियों की उदाहरण के रूप में पेश होने वाली सुख समृद्धि और सम्पत्तिको वे कदाचित भूल जाते प्रतीत होते थे। भारतवर्ष की सृजनी प्रेरणा को पश्चिम की सृजनी प्रेरणा से पृथक करने वाले

तीन चीजें रही हैं और वे मानवी प्रतिभा के सदुपयोग पूर्वक मानवी विचारधारा को समुन्नत करते हुए मनुष्य के हर्ष समुदाय और सस्कृति में योग देनेके अपने ऊंचे आदर्श वाद को चरितार्थ करना और ससार ।में सुख और शांति के हितों को समुन्नत करना रही है ।

उन्होंने कभी भी मानवी प्रतिभा और बुद्धि के साथ व्यभिचार नहीं किया है और न होने दिया है । जैसा,कि आजकल युरोप और अमेरिका के साइन्सदा नर सहारक आविष्कारों मे कर और कराके मानवी प्रतिभा के प्रति घृणा पैदा करने का कारण बन रहे हैं. और मनुष्य जाति के प्रति अक्षम्य अपराध के भागी बन रहे हैं । केवल भौतिक उद्देश्यो के लिये साइन्स की अन्धाधुन्ध ढ ढ तलाशों के भयंकर परिणामों और विज्ञान की बहुमूल्य सम्पदा के दुरुपयोग ने पश्चिम मे मानव जीवन और प्राणी मात्र पर जो गजब ढाए हैं भारत उन सब से पूर्ण परिचित है । नि सन्देह भौतिक विज्ञान ने मनुष्य समाज को लाभ पहुंचाया है । परन्तु इन लाभों का पलड़ा उन ऊचे उद्देश्यों के मुकाबले मे जो इसे पूरे करने चाहिए थे हल्का रहा है । आज भारतवर्ष को अपनी आर्थिक स्थिति की उन्नतिके लिए विज्ञान से पूरा २ लाभ उठाने की सलाह दी जाती है । यह सलाह ठीक है परन्तु उसके लिए इस सलाहको वहीं तक ही क्रिया में लाना लाभप्रद और उचित होगा जहा तक उसकी आध्यात्मिक सम्पदा जो उसकी बहुमूल्य सम्पत्ति रही है और इस समय भी है अक्षुण्ण बनी रहे ।

वह रैड रसेल (वैज्ञानिक दृष्टिकोण (The Scentific out look) मे कहते हैं ।

"ज्ञान का प्रेम जिसके कारण साइन्स की उन्नति हुई है दो प्रकार की प्रवृत्ति का फल है । हम किसी पदार्थ के ज्ञान मे प्रवृत्त हो सकते हैं एक तो इसलिए कि हमें उस पदार्थ से प्रेम है दूसरे इसलिये कि हम उसपर शक्ति प्राप्त करना चाहते हैं । पहिला उद्देश्य विचारात्मक ज्ञान की ओर प्रवृत्त करता है और दूसरा व्यवहारिक ज्ञान की ओर । शक्ति का भाव व्यवसाय वाद और राजनैतिक चालबाजियोंसे सम्बधित है यह उपयोगिता वाद और धूर्तता वाद के साथ भी जुड़ा है । शक्ति अपने मे खतरनाक नहीं है । शक्ति के लिए शक्ति संचय करना हानि कारक है । वर्तमान जगत के नेता शक्ति के मद में चूर हैं । शक्ति जीवन का उद्देश्य नहीं है वल्कि दूसरे उद्देश्यों के लिये साधन है । और जबतक मनुष्य यह नहीं याद करेंगे कि शक्ति का प्रयोग ऊचे उद्देश्योंके लिये हुआ करता है तबतक विज्ञान संसार का साम्मिलित लाभ जो उसे करना चाहिए नहीं करेगी ।"

साइन्स के द्वारा मनुष्य समाज पर जो अत्याचार हुए है वे बड़े भयानक और जघन्य है यहा उन्हें गिनाने की जरूरत नहीं । साइंस के अस्त्रों द्वारा चीन, स्पेन, और अबीसीनियां मे जिस जघन्यता और नर सहार का प्रदर्शन ससार ने देखा है, वह पुराना नहीं ताजा ही है । चीन और स्पेन मे तो अब भी यह जघन्य व्यापार जारी है । कहने की जरूरत नहीं यदि साईन्स मनुष्य की

ईश्वर भक्ति

श्री पण्डित रामचन्द्र जी देहलवी के एक भाषण का सार—

सतौली मे जैनी साहिबान के साथ शास्त्रार्थ हो रहा था। जैनी 'जीव' की एक अवस्था का नाम ईश्वर मानते हैं। वे जगत का कर्ता ईश्वर नहीं मानते। प्रतिपक्षी ने सवाल किया "आप बहुत खुदा खुदा कह रहे हैं। जिस वृक्ष के नीचे मैं खड़ा हू इस में कौनसी तरतीब देख सकती है। आप कहा करते हैं कि परमात्मा की सृष्टि में बुद्धि के अनुसार बनावट है इस वृक्ष मे क्या तरतीब है?" जैनियों के २० पण्डित उनके स्टेज पर बैठे थे। मैंने कहा "ये पण्डित जो आपने कुर्सियों पर बैठाए है उनमें क्या तरतीब है? कहने लगे उनमें विद्या की तरतीब है? मैंने जवाब दिया। बस जिस वृक्ष के सम्बन्ध में आप पूछ रहे हैं उसमें तरतीब यह है कि इतना बड़ा वजन कितने बड़े तने पर होना चाहिए। फिर शाखें कितनी बड़ीं और कितने बड़े डंठल में निम्बोलियाँ लगनी चाहिए"? क्या यह तरतीब नहीं। कहने लगे हम इसमें बहुत से परिवतन कर सकते हैं। मैंने कहा आप इसीलिये परिवर्तन कर सकते हैं, कि परमात्मा ने उनमें परिवर्तन की गुन्जाइश रक्खी है। परमेश्वर ने भिन्न २ वृक्षों में भिन्न २ गुण रक्खे हैं। कहने लगे यह क्या तरतीब है? यदि तरतीब देखनी हो तो हमारे बाग में चलकर देखिये। एक ओर तमाम संतरे के वृक्ष हैं तो दूसरी ओर सेब के पेड़ हैं। लोगो को इस बात ने अपील किया कि वास्तव में बाग में तो तरतीब है परन्तु परमात्मा के बाग मे ऐसी कोई बात नहीं। मैंने उनसे पूछा यदि कोई आदमी शेक्सपीयर की Lambs Tales दे और किसी बच्चे से कहे कि इसमें से ए बी सी डी इत्यादि अक्षर सब छाँट लो। इसके लिये कितनी योग्यता चाहिए? आप यह बात किसी एम. ए को सुपुर्द करेंगे या केवल अक्षर विज्ञाता को। यही हाल आपके बाग में है कि संतरे और सेब छटे हुए हैं।

पाशविक प्रवृत्तियों के साथ खिलवाड़ करती और राजनीतिज्ञों के हाथ मे संहार का अस्त्र बनी रही तो निश्चय ही शान्ति और भ्रातृत्व के भावों को बढ़ाने के अपने ऊंचे उद्देश्य मे वह सफल नहीं होगी।

आज आवश्यकता इस बात की है कि भारत-वर्ष साइन्स के प्रसादों से अपनी आर्थिक दुर्दशा को ठीक करने मे लाभ उठाए, उसी शर्त के साथ जिसका उल्लेख हमने ऊपर किया है और पश्चिम अपने वैज्ञानिक दृष्टि कोण मे आमूल परिवर्तन करदे और साईन्स तथा जीवनके वास्तविक उद्देश्य को समझ जाय तो इस प्रकार दो विचार धाराओं के सम्मिश्रण का फल मानव जाति के कल्याण के लिये एक ऊंची संस्कृति का प्रादुर्भाव होगा जिसकी आज नितान्त आवश्यकता है।

थोड़े पढ़े लिखे की निगाह थोड़ी होती है। किसी विद्वान की लिखी हुई एक किताब ऐस से शुरू होती है। एक बच्चे ने कहा "यह अजीब मामला है" कि पुस्तक ऐस से शुरू करता है। क्या विद्वान वही है जो ए बी. सी डी सिलसिलेवार बाले जो इधर उधर करे वह विद्वान नहीं। वाह अच्छा तर्क है ?

जब मैंने यह कहा तो प्रति पक्षी महोदय ज़रा झेंप से गये। कहा आप भी ऐसा ही ईश्वर चाहते हैं जो ए बी सी. डी पढ़ा करे।

यदि योग्यता न हो तो ख़त भी नहीं पढ़ा जाता। कहने लगे कि, सुनार लोग जब सोना गलाते हैं तो फूकनी में सोना खींच लेते है।" मैंने कहाँ बिलकुल गलत, क्या ठंडी फूकनी में गरम सोना आ जायगा और वे फूकते रहेंगे। बस यह इसी तरह की अक्ल के लोग हैं जो व्यर्थ की बातें कहते रहते हैं।

एक लड़का था। हिरण्यकश्यप और प्रहलाद की तरह का अर्थात् लड़का आस्तिक और पिता नास्तिक था। लड़के को पिता यही उत्तर देता कि तू हमसे पैदा हुआ है या हम तुझ से पैदा हुए हैं। तू हमें क्या सिखायगा। मूर्ख लोगों के पास बस यही बड़ी दलील होती है एक दिन लड़के ने हिम्मत की कि चाहे कुछ हो पिता को आस्तिक बना कर ही छोड़ूंगा यह दृढ निश्चय करके पुत्र ने यह काम किया कि जहाँ पिता बैठा करता था उसके पैड पर "नालायक" "बेवकूफ" उल्लू का ' इत्यादि शब्द लिख दिये। अब ज्यों २ पिता जी का मेज पर आने का वक्त निकट आता है लड़के के दिल की धड़कन बढ़ रही है पिता जब मेज पर आयें तो बस देखते ही गुस्से में आगये और कहने लगे 'यह उसी का काम है।" लड़का भी आगया। थोड़ा सा आगे बढ़ा पिता ने कहा 'मूर्ख' यह तूने क्या किया है ? तेरे सिवा और कोई नहीं होसकता।

बच्चे ने कहा 'पिता जी' आप किस बात से नाराज़ हैं ? पिता ने कहा "ऐसी बुरी बातें क्यों लिखी ?" बच्चे ने पूछा किसने लिखी है ? कागज़ और पेंसिल ने ही तो लिखी है ? और आप कैसे कहते हैं। "तेरे सिवा और कोई नहीं लिख सकता।" बस इसी पर दोनों में झगड़ा होगया। पिताने कहा क्या ये स्वयं लिख सकती है ? बच्चे ने कहा "यदि कलम ज़रा सी खड़ी होजाय और हिल जाय तो बस लिख गई।"

बापने कहा "भला ऐसा भी कभी हो सकता है ? बच्चे ने कहा बस फैसला होगया। यदि यह बात है तो फिर ये सूर्य और चाँद क्या खुद ही चल रहे हैं या इन्हें कोई चला रहा है।"

पिता प्रसन्न होगया और बच्चे को शाबाशी दी।

आज नवयुवकों की बहु संख्या परमेश्वर को नहीं मानती है। जहाँ तक बनावटी ईश्वर का सम्बन्ध है मैं उनके साथ हूं। एक ताक में गणेश जी रक्खे थे। एक नवयुवक कहने लगे, क्या यह हमारा ईश्वर है ? मैंने कहा नहीं ' यह गेट की पर (द्वारपाल) है। वास्तव में तो कोई इन्सान ऐसा नहीं हो सकता। अलबत्ता नकशा खींच सकता है।

एक और नवयुवक कहने लगे "बाबा जी सन्ध्या तो करते है परन्तु मैं उनके जीवन मे कोई परिवर्तन नही देखता। मुझे आप कोई जिन्दा मिसाल दें कि सन्ध्या करने से फ़ायदा होता है ? मैंने कहा यदि बाबा सिर्फ मन्त्रोच्चारण करता है तो मन्त्र की रक्षा होती है,

उसकी अपनी नहीं। यदि मतलब न समझा और अमल न किया तो कोई फायदा नहीं। जिस प्रकार कोई किसी नुस्खे को याद करे परन्तु उसके अनुसार आचरण न करे तो कोई लाभ न होगा। फिर उसने कहा अपनी ही भाषा में सन्ध्या क्यों न करली जाय। मैंने समझाया कि एक वेद मन्त्र के बहुत से अर्थ होते हैं।

सन्ध्या में जो एक अर्थ उचित समझें लिख दिए हैं। यदि मन्त्रकी रक्षा न की जाय तो वह ख़ज़ाना जो इसके भीतर है खो जायगा। यदि रोटी बनने के बाद पत्नी से कहो कि परांठे बनाओ तो वह कैसे बनायगी। हाँ आटे से परोठा बन जायगा। आटे से दलिया नहीं बनता अलबत्ता गेहूं से दलिया बन सकता है। एक अर्थ करके सस्ती प्रार्थना तो करली जा सकती है। इस मन्त्र के जो और अर्थ उसमें से निकल सकते हैं वह आप न जान सकेंगे। इसलिये घ टे में रहेंगे पण्डित ज्वालाप्रसाद जी ने "ये त्रिषप्ता" वाले मन्त्र के १६ अर्थ किए हैं। उपासना समझकर करनी चाहिये, वरना कोई फायदा न होगा। एक पुरुष ने पूछा कि आप ने कहा है कि परमात्मा सब जगह है आप बता सकते हैं कि कोई जगह परमात्मा से खाली नहीं और वह सब जगह है। क्या गलाज़त और टट्टी में भी ईश्वर हैं ? उन्होंने साथ ही नाक पर रूमाल भी लगा लिया। मैंने कहा अजीब नाजुक मिज़ाजी हैं। यदि नजर आजाय तो न मालूम क्या हो। क्यों जी। अब वे बाहर तशरीफ लाते हैं तभी बदबू आती है न। अन्दर तो नहीं आती कहने लगे हां मैंने कहा तो पता लगा कि नाक बाहर काम करती है अन्दर नहीं। परमात्मा से प्रार्थना करे कि वह आपकी नाक का सम्बन्ध अन्दर करदे। कहने लगे यह तो बड़ी बदकस्ती होगी। मैंने कहा सब चीजें मेरे परमात्मा के अन्दर हैं। जब आपके अन्दर का मैला आपको बदबू नहीं देता तो परमात्मा को कैसे देगा ?

High Thoughts (ऊँचे विचार)

Ability (सामर्थ्य)

(1) Ability involves responsibility, power to its last particle, is duty

सामर्थ्य का अर्थ उत्तर दायित्व और कर्त्तव्य होता है।

(2) To know how to hide one's ability is great skill.

अपनी योग्यता कैसे छिपाई जाती है यह जान लेना सबसे बड़ी बुद्धिमत्ता है।

(3) There is something that is much more scarce something finer for, something rarer than ability. It is the ability to recognise ability

कोई चीज है जो बड़ी मंहगी है, बड़ी नाजुक और सुन्दर है और योग्यता से भी ज्यादा अलभ्य है। वह चीज योग्यता को समझने की योग्यता है।

(4) The winds and waves are always on the side of the ablest navigators.

हवा और लहरें सदैव सुयोग्य मल्लाहों का साथ देती हैं।

रूस और धर्म

(ले०—एक भारतीय यात्री)

मास्को के पुश्किन स्क्वेअर में एक गिर्जे के सामने हमारी कार ठहरी। अन्य बहुत से गिरजों के सदृश यह गिरजा धर्म विरोधी अजायब घर में परिवर्तित हो गया है। दरवाजे के बाहर कुछ मिनटों तक हमें प्रतीक्षा करनी पड़ी, इस प्रतीक्षा का मुझे कोई सन्तोष जनक कारण नहीं बतलाया गया शायद अजायब घर की अध्यक्षा देवी कहीं दूसरी जगह चली गई थी। मैंने अपनी गाइड (मार्ग-निर्देशिका) से अजायब घर की चीजों को समझाने के लिए कहा। अजायब घर बहुत बडा नहीं है परन्तु उसके कुछ संग्रह बहु मूल्य थे।

नक्शों और चित्रों के द्वारा अनपढ़ जनता मे यह विश्वास पैदा करने के लिए कि यह संसार और स सार की समस्त चीजे स्वय विकसित हुई हैं और उनका बनाने वाला या परमात्मा कोई नही है विकासवाद के सिद्धान्त की व्याख्या की गई है। यह तर्क निस्सन्देह गंभीर और बुद्धिमान मनुष्य के तर्क का सामना नहीं कर सकेगा। क्रान्ति से पूर्व के दिनों मे जिस प्रकार रूस के चर्च ने किसानों को बेवकूफ बनाया था और सन्तान प्राप्ति, अच्छी फस्ल, रोगों से निवृत्ति, पापों से मुक्ति, और परमात्म दर्शन की झूठी आशाएँ दिलाकर उनके धन और सर्वस्व का अपहरण किया था उसी प्रकार धर्म विरोधी वर्तमान सरकार उनके सामने निस्सार तर्क और जीवन और प्रकृति की गलत फिलासफी रखकर उन्हें बेवकूफ बना रही है। सत्य और न्याय की वेदि के सम्मुख वर्तमान सरकार वैसीही अपराधी है जैसा रूस का प्राचीन चर्च था।

हम अजायब घर के उस हिस्से में पहुँचे जहाँ उन चीजों का संग्रह था जिन्हें जन साधारण पवित्र समझता था और जिनमे उनका विश्वास था कि वे न छुई जा सकती हैं और न उनकी आलोचनाही की जा सकती है। सुनहरी जिल्दो के बाइबिल, क्रास और अन्यान्य धर्म चिन्ह आज दर्शनीय चीजों के रूप मे रक्खे हुए हैं, जिनकी किसी दिन हजारों स्त्री-पुरुष घुटने टेककर उपासना किया करते थे, मुसीबत और खतरे के समय जिनपर वे लोग आंख मीच कर अपनी पूर्ण श्रद्धा रखते थे जिनसे वे लोक और परलोक में अपने सुखों की याचना किया करते थे, जिनके सामने वे अपने अपराध स्वीकार किया करते थे, इस अन्ध विश्वास से कि वे ईश्वर द्वारा मुआफ कर दिए जायेंगे। आज वे उन्हे छू सकते है और उनकी निस्सारता के सम्बन्ध में विचार कर सकते हैं। आज वे उन्हे साधारण ऐतिहासिक दर्शनीय चीजों से अधिक महत्व नहीं देते हैं परन्तु उनपर न तो बिजली ही टूटती है, न महामारियाँ उनके परिवारों को नष्ट करती हैं, न उनके हाथ और होठ गलकर टूटते हैं। इन सब बातों का नतीजा यह हुआ है

कि किसानों का यह विश्वास हो गया है कि जिन्हें उन्होंने ईश्वर मानकर देरतक उनकी पूजा, अर्चना की थी वे सब निर्जीव, शक्तिहीन, झूठी और निकम्मी चीजें थीं जब उनमे अपमान से अपनी ही रक्षा करने की क्षमता नही है तो फिर वे दूसरों की कैसे रक्षा कर सकते हैं। परमात्मा की महिमा और राजसी ठाठ वाले पादरियों का आकर्षण विदा हो गये हैं जिनके परमात्मा के साक्षात प्रतिनिधि होने की शिक्षा दी जाया करती थी। बाइविल की पवित्रता भी कूच कर गई है। धर्म्म विरोधी नए विचारों से प्रभावित किसान लोग बाइविल के पृष्ठों को सिगरेट के कागजों के तौर पर इस्तेमाल किया करते थे। उन्होंने क्रासों को अग्नि के अर्पण कर दिया था और क़बरों के पत्थरों को उखाड़कर उन्हें अपनी इमारतों के काम में ले आए थे।

मेरा विश्वास है यद्यपि बोलशेविक लोग आर्य्य धर्म्म के तर्क और फिलासफी पर विजय नहीं पा सकते हैं तो भी यह स्वीकार करना चाहिये कि 'ईसाई धर्म' के विरुद्ध पर्याप्त साक्षी और युक्तिया प्रस्तुत करने में वे एक बड़ी सीमातक सफल हुए है और यह एक बहुत बड़ी चीज है। उन्होंने साबित कर दिया है कि बाइविल के बहुत से सिद्धान्त जो इसाई धर्म्म की आधार शिला है एक दम ग़लत हैं सूर्य्य का पृथ्वी के चारों तरफ घूमना, सृष्टि की उत्पत्ति जिसके सम्बन्ध मे साईन्स बाईविल से बिल्कुल विरुद्ध बोलती है इत्यादि बाइविल की शिक्षाओं को अब कौन पढ़ा लिखा समझदार स्वीकार कर सकता है। ये सब असत्य सिद्ध हो चुकी हैं। रूसियों ने बाइविल के विचारों और सिद्धान्तों की सचित्र व्याख्या की है और इसी के साथ ही उनके सम्बन्ध मे साइन्स मत दर्शा दिया है। उन्होंने ऐसे पत्र और साक्षिया प्रस्तुत की हैं जिनसे सिद्ध होता है कि पादरी लोग जनता के हितों को कुचल कर सदैव जार का पक्ष लिया करते थे। कुछ साक्षि यह प्रगट करता है कि जब कभी-बडी राजनैतिक गड़-बड़ की सम्भावना होती थी तो पादरी लोग जार से सलाह करके कोई धमिक पर्व और उत्सव की घोषणा कर देते थे जिससे धर्म जीवी किसानों का ध्यान बट जाया करता था। यह तथा इस प्रकार की बातें भोले भाले किसानो मे पादरियो के प्रति जिन्हे वे अपना गुरु और शुभ चिन्तक समझते थे घृणा और अश्रद्धा पैदा करने के लिए पर्य्याप्त समझी जा सकती हैं।

रूस का कट्टर पन्थी चच धमे की रूढियो और क्रिया-कलापों पर ज्यादा बल देता था और इस प्रकार चर्च और पादरियों के प्रति सम्मान के बाह्य प्रदर्शन का खूब ढोल पीटता था। जब किसानों ने उनके विरुद्ध बगावत की तो स्वभावतः धर्म की रूढियो और स्वयं धर्म के ही वे खिलाफ हो गए परन्तु रूस मे ईसाइयो का एक दूसरा सम्प्रदाय भी था। प्रोटे स्टेंट लोग धर्म की बाहरी क्रिया कलापों के स्थान मे समाज के लिए जनोपकारक कार्य में लगे हुए थे, उन्होंने हस्पताल, स्कूल और लाइब्रेरिया खोली हुई थीं और इस प्रकार देश के जनसाधारण से उनका वास्तविक सम्बन्ध था। अतएव पादरियों के विरुद्ध आलो-

चन का इस सम्प्रदाय पर कोई असर न हुआ और स्वय सरकार को भी बल पूर्वक इसका गला घोटने का साहस नहीं होता था। इसके विपरीत, क्रांति के पहले कुछ वर्षों में यह धर्म खूब फला-फूला क्योंकि यह सम्प्रदाय जिन सामाजिक कर्तव्यों की शिक्षा देता था वे सब सोशलिज्म की शिक्षाओं से मिलती जुलती थीं। यह लोग (प्राटस्टैंट) केवल परमात्मा का प्रभुत्व स्वीकार करते थे और उन किसानों को जो बचपन से धर्म की छत्र-छाया में पले और बढे थे यह धर्म बड़ा प्रिय लगता था। बोलशेविक लोग प्रोटैस्टैंट मत की लोकप्रियता से घबरा गए और १६२६ मे उन्होंने एक कानून पास किया, जिसके द्वारा उन्होंने धर्म के समर्थक व्याख्यानों पर पाबन्दी लगादी और समस्त धार्मिक सोसाइटियों को जनोपकारक कार्यो के द्वारा समाज पर प्रभाव डालने की मनाही कर दी। आज कल यह कानून किसी भी सार्वजनिक सस्था द्वारा १८ वर्ष से कम उम्र के बच्चों को धार्मिक शिक्षण की मनाही करता है। निस्सन्देह १८ वर्ष से ऊपर की उम्र वाला कोई भी व्यक्ति किसी भी धर्म का अध्ययन और उसे अंगीकार कर सकता है और इस मे राज्य को कोई आपत्ति नही होती है। विदेशियों द्वारा यह कहा जाता है कि रूस के सब गिर्जे गिरा दिए गए हैं और रूस के अधिकारी लोग धार्मिक स्त्री-पुरुषों को शत्रु वत समझते हैं। परन्तु मैं पूर्णतया इस कथन से सहमत नही हूँ क्योंकि इसका आधार दुर्भाव पूर्ण आन्दोलन ही है। रैड स्क्वेअर मे क्रिमलिन के ठीक सामने और सेंट बसिल चर्च की बगल में जो आज कल धर्म विरोधी अजायब घर है मैने अपनी आखों से एक छोटा गिर्जा देखा है जहां बहुत से बूढे स्त्री-पुरुष घुटनों के बल बैठे बड़े श्रद्धाभाव से परमात्मा की उपासना कर रहे थे, और बोलशेविकों में 'सुमति' जागृत करने के लिए प्रार्थना कर रहे थे। आजकल रूस मे गिरजाओं को केवल राज्य का वह विशेष सरक्षण प्राप्त नहीं है जो ज़ार के समय मे प्राप्त था। वे किराये से मुक्त नही है, वरन् उन पर भारी टैक्स लगा है। जिन लोगो के अधिकार में कोई चर्च होता है, उनकी बिना रज़ामन्दी के वह नहीं तोडा जाता। किसी चर्च को तोड़ने अथवा उसे किसी दूसरी सस्था मे बदलने से पहले वोट लिये जाते हैं और बहुसम्मति के अनुसार कार्य किया जाता है। यह सत्य है कि राज्य की धर्म के प्रति बड़ी भारी उदासीनता है, परन्तु इस का परित्याग कराने के लिए राज्य सीधे बल का प्रयोग लोगो पर नही करता है। राज्य हर सम्भव उपायों से जो उसकी शक्ति मे होते है, धर्म के विरुद्ध प्रचार करता है। राज्य अखबारों किताबों और रेडियो इत्यादि के द्वारा प्रचार करता है।

जब हम बाहर आये तो अजायब घर की अध्यक्षाने मेरी मार्ग-प्रदर्शिका से धर्म के सम्बन्ध में मेरी सम्मति पूछने की प्रार्थना की।

क्रमशः

हैदराबाद-समस्या

विचारों का नियन्त्रण

कई वर्षों से हमें हैद्राबाद राज्य में आर्य्य तथा हिन्दू जनता पर किए गए अत्याचारों के समाचार प्राप्त होरहे हैं। हिन्दू जनता तो सोई हुई है। हैद्राबाद राज्य में ८५ प्रतिशत हिन्दुओं की संख्या होते हुए भी हिन्दुओं को शासन विभाग में नाम मात्र के अधिकार प्राप्त हैं और नहीं उनको अपनी सामाजिक धार्मिक स्थिति को सुधारने का पूरा अवकाश दिया जाता है। रियासत की शिक्षा की बागडोर मुसलमान अधिकारियों के हाथ में है और हिन्दू जनता को अपनी शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किसी प्रकार का प्रोत्साहन नहीं दिया जाता। केवल आर्य-समाज ही सदैव और सर्वत्र हिन्दू समाज के हितों को अपना समझ कर कार्य करती है, इस समय आर्य्य समाज वहाँ घोर संकट का सामना कर रही है और बलिदानों की आहुतियाँ देकर भी वहाँ के आर्य्य वीर हिन्दू जनता के मान मर्यादा की रक्षा कर रहे हैं।

यह प्रश्न किया जा सकता है कि सार्वदेशिक सभाने हैद्राबाद में होने वाले अत्याचारों को रोकने के लिए अब तक क्या कुछ किया है? आर्य्य जनताकी सूचनार्थ मैं संक्षेप से इस विषय में कुछ लिखना चाहता हूँ। चार वर्ष पूर्व सार्वदेशिक सभा के वर्तमान मन्त्री ने हैद्राबाद में १५ दिन रहकर वहाँ की स्थिति का भली प्रकार अनुशीलन किया और वे उच्च कर्मचारियों से भी मिले जिन्होंने उन्हें यह आश्वासन दिया कि भविष्य में आर्य्यसमाज के प्रचार मार्ग में कोई रुकावट न डाली जावेगी।

इसके पश्चात निज़ाम सरकार की वही नीति रही। श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा पढ़ी की गई। स्वय निज़ाम साहब की सेवा में भी प्रार्थनायें भेजी गई परन्तु उन पर लेश मात्र भी ध्यान न दिया गया।

जब सभा ने यह देखा कि निज़ाम सरकार की कठोर और हटीली नीति के सामने प्रार्थनाओं और पत्र व्यवहार का कोई प्रभाव नही पड़ता तो यह निश्चय किया कि आर्य्य समाज के कर्णधार तथा इस सभा के मुख्य कार्य्यकर्त्ता श्री पूज्यमहात्मानारायणस्वामीजी महाराज श्री आचार्य रामदेव तथा श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी स्वय हैद्राबाद में जाव और आर्य्यसमाज पर लगाये हुए प्रतिबन्धों को तोड़ कर वहाँ प्रचार कार्य करें। उन्होंने लगभग एक सप्ताह वहाँ रह कर ऐसा ही किया। इसमें सन्देह नही कि इन महानुभावों की उपस्थिति से हैद्राबाद की हिन्दू तथा आर्य्य जनता को बहुत आश्वासन प्राप्त हुआ और निज़ाम सरकार कर्मचारियों ने उनके प्रचार कार्य्य में कोई हस्तक्षेप नहीं किया परन्तु उनके चले जाने के पश्चात् निज़ाम सरकार की साम्प्रदायिक नीति में कोई अन्तर नहीं आया।

इसके पीछे जब पुन. आर्यों तथा हिन्दुओं की कष्ट गाथा सुनने में आई तो इस सभा ने एक वृहत डेपुटेशन की आयोजना की, जिस में हिन्दुओं तथा आर्य्य समाजियों के नेता सम्मिलित हुए और वे सब मिलकर देहली में निज़ाम हैद्राबाद के प्राइम मिनिस्टर तथा

अन्य उच्चाधिकारियों से मिले और इस कष्ट-गाथा को उनके सामने रक्खा। फिर पूर्ववत उसी आश्वासन को दुहराया गया और यह आशा दिखाई गई कि वे महानुभाव स्वयं इन कष्टों की जांच पड़ताल करेंगे और शीघ्र उनका निराकरण करेंगे। इस बात को भी पूरा डेढ़ वर्ष व्यतीत हो चुका है और इस अन्तर में आर्य्य समाजों पर जो अत्याचार हुए हैं उनके रोमाञ्चकारी समाचार समय समय पर समाचार पत्रों में छपते रहे हैं। अभी हाल में ही आर्य्यवीर वेद प्रकाश का बलिदान जो गुंजोटी में हुआ उसका वृत्तान्त भी आर्य्य जनता तक पहुंच चुका है। हुपला के हिन्दुओं के साथ जो रोमाञ्चकारी अत्याचार हुए है जहां तीन जीवित हिन्दुओं को जलाया और मारा गया, ये सब घटनाएं प्रकट करती हैं कि निज़ाम सरकार की साम्प्रदायिक नीति कितनी भयानक है।

आर्य्यसमाज के मन्दिरों में पुलिस द्वारा जूते पहिन कर जाना, यज्ञ कुण्ड आदि को अपमानित करना, ओ३म् के झण्डे का निरादर करना तथा आर्य्यों पर झूंठे मुकदमे चलाकर उनको ज़लील करना ये तो अब साधारण बातें होगई हैं।

उपर्युक्त शिकायतो का एक क्रमबद्ध विवरण तैयार करने के लिए मैंने इस सभाको आर्य्य रक्षा समिति के सहायक मन्त्री श्रीयुत शिवचन्द्र जी को हैद्राबाद में भेजा था। उन्होंने वहां डेढ़ मास तक स्थान स्थान पर भ्रमण करके आर्य्यों और हिन्दुओं की कष्ट गाथा की पूरी फायल तैयार करली है और हैद्राबाद-काण्ड का विषय सभा की आगामी अन्तरंग सभा (१० अप्रैल) में उपस्थित होने वाला है।

निज़ाम सरकार की नीति इस समय तक तो यही मालूम होती है कि बाहर से तो आश्वासन दिये चलो और अन्दर से अपना कार्य्य सिद्ध किये चलो। हैद्राबाद से हमारी दूरी भी एक ऐसा कारण है जो हमारे आन्दोलन को बहुत प्रभाव शाली नहीं बना सका। बृटिश सरकार ने भी हमारे आन्दोलन पर कोई ध्यान नहीं दिया। यद्यपि भारत सरकार तथा रेज़िडेन्ट तक भी शिकायतें पहुँचाई जा चुकी हैं। इन सब बातों को दृष्टि मे रखते हुए मेरा निमन्त्रण गम्भीर और शान्त प्रकृति आर्य्य सज्जनो को है कि वे शीघ्रातिशीघ्र इस सभा को अपना परामर्श दें कि इस हैद्राबाद काण्ड की समस्या को कैसे सुलझाया जावे।

सुधाकर एम० ए०
मन्त्री,
सार्वदेशिक सभा

High Thoughts (ऊँचे विचार)

(5) Ability is a poor man's wealth
निर्धन की संपदा उसकी योग्यता होती है।

(6) There may be luck in getting a good job but there's no luck in keeping it.

अच्छा काम भले ही भाग्य से प्राप्त हो जाय परन्तु उस काम को बनाए रखने में भाग्य का कोई प्रश्न नहीं होता।

(7) Faith in the ability of a leader is of slight service unless it be united with faith in his justice

किसी नेता की योग्यता में विश्वास रखने से कोई लाभ नहीं होता जबतक उसकी न्याय परायणता उस विश्वास के साथ जुड़ी हुई न हों।

दंगे का कारण कौन है ?

❀

पाच एप्रिल १६३८ मगलवार की रात मे मुहल्ले धूलपेठ मे हिन्दू मुसलमानों के दरमियान एक दगा हो जाने की खबर सारे हैद्राबाद मे गश्त लगा रही थी, एक सन्दल के साथ जुमला मुहल्लेजात से जमा हुवे २ बाहथियार तीस हजार मुसलमान धूल पेठ को चारो तरफ से घेरे हुए थे। इस रात व दूसरे दिन कुछ लूट खसोट हुई व चन्द जाने भी जाया हुई। इस दगे की निस्बत गुरुवार के रोज सरकार ने एक कम्युनिक निकाला। जिस मे सरकार ने यह बयान किया कि धूलपेठ की आर्यसमाज की बैठक मे करीबन छै सौ आर्यों ने सम्मिलित होकर इस बात का निश्चय किया था कि वह मुसलमानों पर हमला करें। उस कम्युनिक मे सरकार ने दबे शब्दो मे यह भी जाहिर करने की कोशिश की थी कि सन्दल पर जो पत्थर फेंके गये थ वह भी आर्यो का ही काम था। इस कम्युनिक का जो नतीजा होना था वह होकर रहा। इसने दहकती आग मे पेट्रोल का काम किया। कम्युनिक के छपते ही हर मुसलमान की जबान से एक ही बात सुनाई दे रही थी कि यह झगडा आर्यसमाजो न ही लगाया है। परिणाम स्वरूप शुक्रवार के बारह बजे के करीब आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य के प्रधान जी के मकान को करीब चार पाच हजार मुसलमानो ने घेर लिया और वे सब के सब गुस्से के मारे आग बबूले हो रहे थे। उनकी ललकारो और शोर व गुल से साफ जाहिर हो रहा था कि अगर समय पर ओनरेबल मिस्टर क्राफटन और पोलिस के ओहदेदारान न पहुच पाते, और शस्त्रधारी पोलिस का फौरन इन्तजाम न कर पाते तो मकान की ईट से ईट बज जाती और अन्दर रहने वालो की क्या अवस्था होती इसकी निस्बत कुछ नहीं लिखा जा सकता। उस दिन से आज तक हर मुसलमान हैद्राबाद के आर्यसमाजियो को ही दगे का बानी मुबानी करार दे रहा है।

बहुत से मुसलमान जिन पर सबसे अधिक दगे का दोष आरोपित किया जा सकता है जान बूझ कर इस अफवाह को फैला रहे हैं। तथापि हमे पूर्ण आशा है कि अधिकारी वर्ग मे तथा आम जनता मे बहुत से ऐसे मुसलमान भाई मोजूद है जिनके सामने अगर सही वाकयात का इजहार किया जाय तो वे इस विश्वास को छोड देंगे कि दगे का प्रारम्भ और उसका ऐसा भीषण स्वरूप आर्य समाज की वजह से हुआ है। इसी तौर पर अगर सरकार ने किसी खास पौलीसी के आधीन आर्य समाजियो को दंगे की बुनियाद करार दिया है तो हमे कुछ नहीं कहना है क्यों कि असलियत कभी न कभी जरूर खुल ही जायेगी। लेकिन अगर अफसरों की बेबुनियाद बातो पर विश्वास करते हुए महज गलत फहमी की बिना पर हैद्राबाद की गवर्नमेंट

ने यह करार दे दिया है कि दंगे की बुनियाद आर्य समाज की तहरीक है तो हम सरकार को विश्वास दिलाते हैं कि मौजूदा दगे से आर्य समाज का कोई भी ताल्लुक नहीं है।

आर्य समाज हैद्राबाद में आज चालीस साल से काम कर रहा है। गत बीस वर्षों से आर्य-समाज के उत्सवों में हजारों की तादाद में हिन्दू मुसलमान जमा होते रहते हैं मगर आज तक उनके यह जलसे किसी झगड़े के कारण नहीं हुये हैं।

ऐसी अवस्था में समझ में नही आता कि यह समाज तीस हज़ार के मुसलमानों के मजमे मे क्यों दंगा बरपा करने गया होगा, यह बात ऐसे ही अविश्वसनीय मालूम होती है।

दूसरी बात जिसकी ओर हम सरकार की तवज्जो दिलाना चाहते है वह यह है कि हैद्राबाद शहर के जुमला आर्य समाजों के मेम्बरों को मिलाया जाय तो उनकी सख्या तीन सौ से अधिक न होगी। हमे यह कतअन समझ मे नही आता कि यह तीन सो की तादाद जब कि न दीगर हिन्दू न मुसलमान किसी तौर का दंगा करना चाहते थे, तो किस प्रकार इतना बड़ा दंगा बरपा कर सकती थी। अगर दंगे की बुनियाद यही हों तो इन तीन सौ अशखास को फौरन गिरफ्तार कर लिया जा सकता था और दंगा उसी वक्त बन्द हो जाता। पांच रोज तक शहर व शहरियों को परेशान रहने की कोई जरूरत न थी। लेकिन सरकार ने ऐसा अमल नहीं किया क्योंकि सरकार खूब समझती थी कि इन सौ आदमियों को जेलखाने में डालने से या इनको सीमा के बाहर करने से यह आग बुझने वाली नहीं, यह आग उनकी लगाई हुई न थी और उन पर किसी तरह का अवरोध रखने से रुकने वाली न थी। इस आग के लगाने वाले अशखास वे हैं जिन्हों ने तीन सौ आर्य समाजियों की आड़ में तीस हजार आदमियों को जमा कराया उनको भड़काया और उनको धूलपेठ के मोहल्ले में सशस्त्र छोड़ दिया।

सरकार की तवज्जो हम इस तरफ खास तौर से दिलाना चाहते हैं कि यह तीस हजार का मजमा बगैर किसी साबिका तय्यारी के जमा नहीं हो सकता था। जिस सन्दल के साथ हजार दो हजार से जायद कभी मजमा नहीं रहा, वहा इस साल तीस हजार बाहथियार अशखास का जमा होना खास माने रखता है। इनको जमा करने के लिये मुमकिन है कि आर्य समाजियों के नाम का इस्तेमाल किया गया हो। मगर यह कह देने से कि आर्य समाजियों के खौफ से इन तीस हजार बाहथियार आदमियों को जमा किया गया था, आर्य समाजियों पर दंगे की जबाबदारी नही आती है।

वास्तव में बात यह है कि कुछ वर्षों से हैद्राबाद सरकार की पुरानी पौलीसी मे फरक आने के कारण हैद्राबाद के हिन्दुओं को अपने भविष्य की निस्बत फिक्र पड़ गई है और उन में एक प्रकार की जागृति उत्पन्न हो गई है। हैद्राबाद के हिन्दू अपने अधिकारों और अपनी मांगों को सरकार के सामने रख रहे हैं। सरकार भी, सुना जाता है कि, इस पर किसी कदर गौर

व खोज कर रही है। परन्तु मुसलमानों में एक पार्टी ऐसी पैदा हुई है जिनको शोक से कहना पड़ता है कि बहुत से स्थानों पर सरकारी मुलाजमीन की बड़ी सहायता रहती है। जो कि लठ्ठ के जरिये हिन्दुओं की इस तहरीक को दबाना चाहती है। इस समय फेडरेशन का भी सवाल आकर खड़ा हो गया है। इन प्रश्न को भी यह पार्टी डंडे और ताकत के जोर पर हरिजनों और गरीबों को धर्मान्तर कराके हल कर देना चाहती है और चूंकि आर्य समाज की शुद्धि की तहरीक इनके इस कार्य में विघ्न डालती है इसलिये इस पार्टी ने आर्य समाज के विरुद्ध भी शोर मचा रक्खा है। हैद्राबाद की गवर्नमेन्ट को शीघ्र इस ओर ध्यान देना चाहिये, अन्यथा उनका यह लाडला बेटा बहुत बोझल साबित होगा। आज के रोज तक ही हैद्राबाद स्टेट में काफी दंगे फिसाद हो चुके हैं और हो रहे हैं। अगर इस पार्टी को इसी तरह स्वतन्त्र रखा गया तो कुछ दिनों में इनके कारण जो क्रिया और प्रतिक्रिया उत्पन्न होगी उसकी वजह से हैद्राबाद स्टेट एक दंगल का मैदान हो जायेगी जिसको रोकना सिवाय किसी बाह्य शक्ति के हैद्राबाद सरकार को मुश्किल हो जायेगी।

हम फिर दोबारा बता देना चाहते हैं कि आर्यसमाज सोलह साल से शान्ति के साथ हैद्राबाद में प्रचार कर रहा है और उसी शान्ति के साथ फिर भी प्रचार करता रहेगा। आर्यसमाज का हैद्राबाद के दंगे से या किसी और दंगे से जो कि स्टेट में बरपा हो रहे हैं कोई सम्बन्ध नहीं है। आर्य समाज के खिलाफ जो तोहमत लगाई जारही है वह गलत है, वे बुनियाद और किसी न किसी खास मकसद के तहत है। हमें शोक है कि सरकार ऐसे बेबुनियाद वाकयात पर भरोसा करके कम्युनिक तक शाया कर देती है जिस का नतीजा बजाय भला होने के हानिकारक साबित होता है। मसलन ६ तारीख के सरकारी कम्युनिक मे जो यह वाकया बयान किया गया था कि धूलपेट की आर्यसमाज की बैठक में ६ सौ आर्यसमाजी जमा हुये थे वह सिर्फ गलत ही नहीं था बल्कि मुजरिमाना भी था। सरकार को चाहिये कि उस अफसर का सख्त तदारुक करें जोकि ऐसे वे बुनियाद वाकये को कम्युनिक में दर्ज कराने का जिम्मेदार बना है।

बहर हाल अब शहर में शान्ति स्थापित हो चुकी है अब सरकार का कर्तव्य है कि वह एक निष्पक्ष कमीशन द्वारा इस बात की सही और सच्ची तहकीकात करायें कि इस दंगे के व दीगर दङ्गों के जो कि अजला में हो रहे हैं और हो चुके हैं बानी मुबानी कौन हैं ताकि भविष्य मे शान्ति का प्रसार हो सके। (वैदिक सन्देश)

HIGH THOUGHTS (ऊँचे विचार)

(8) Men are often capable of greater things than they perform, they are sent into the world with bills of credit and seldom draw to their full extent.

मनुष्य जितना कार्य करते हैं उनमें उस से अधिक कार्य करने की योग्यता होती है। वे संसार में पूर्व संस्कार सहित भेजे जाते हैं और वे उस से कदाचित् ही पूर्ण लाभ उठाते हैं।

इन्दौर राज्य में एक आर्यवीर की नृशंसहत्या

—❀—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्य्यालय मे इस आशय की सूचना मिली है कि इन्दौर राज्यान्तर्गत नारायण गढ आर्य्य समाज के प्रधान श्री प० मेघराज महाराज का नृशसता पूर्वक बध किया है गया। देहली के हिन्दी दैनिक 'वीर अर्जुन' अप्रैल के अङ्क मे भी यह छपा है कि श्री महाराज ने कई अछूत बच्चो को स्कूलो मे दाखिल कराया था और इन्दौर दरबार की मन्दिर-प्रवेश सम्बन्धी वर्त्तमान घोषणा का दृष्टि मे रखकर वे रामनवमी की रात्रि मे 'देव-दर्शन' के लिए अछूतो का एक जलूस ले जाने की व्यवस्था कर रहे थे। इस व्यवस्था से कुछ सनातनी नाराज हो गये थे।

जलूस निकाले जाने से पूर्व श्री महाराज का निर्दयता पूर्वक बध कर दिया गया, उनकी आखो में कीले गाडदी गई, हाथ और पैर काटे गए और शरीर के टुकडे २ कर दिये गए। यह भी कहा जाता है कि पुलिस इस मामले मे उचित तहकीकात नही कर रही है और इस भयकर अपराध के करने वालों के बच जाने की सभावना है।

मै महात्मा गाधी और पडित मालवीय जी का ध्यान इस दुर्घटना की ओर खीचता हूँ और होल्कर गवर्नमेण्ट से आग्रह करता हूँ कि वह अपराधियो का पता लगाकर उन्हें कठोर दण्ड देवे। मैने राज स्थान आर्य्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री को तार द्वारा प्रेरणा की है कि वे तत्काल नारायण गढ जाकर हमे पूरे २ विवरण भेजे।

मुझे निश्चय है इस प्रकार की घटनाओं से आर्य्य समाजी हताश और निरुत्साहित न होगे वरन देश से अस्पृश्यता को उखाड फेकने के लिए दूने उत्साह से कार्य करेगे।

समाज-सशोधन का कार्य्य इस प्रकार के बधों से कभी नही रुकता है। प्रतिवर्ष अपने बलिदानों की सूचि मे उत्तम वृद्धि करने का आर्य्य समाज को अभिमान है। हमे याद रखना चाहिए यदि हम अपने ध्येय के लिए जिसका हम प्रचार करना चाहते है मरने के लिए तय्यार न रहे तो हमारी कोई उपयोगिता नहीं। शहीदों का खून धर्म्म भवन की आधार शिला होती है।

मन्त्री
सार्वदेशिक सभा

अमरशहीद धर्मवीर श्री मेघराज जी के सम्बन्ध में

श्री दीपचन्द्र शर्मा मन्त्री आर्य-समाज नारायण गढ की रिपोर्ट।

महाराजाधिराज राजराजेश्वर श्री सवाई यशवन्त राव होलकर की हरिजनों के प्रति जो घोषणा निकली थी, स्थानीय समाज की ओर से वह सब को सुनाई गई और बधाई देने के लिये प्रार्थना कीगई तत्पश्चात् वहाँ पर हरिजनो के मोहल्लों मे आ आकर सरकार की घोषणा सुनाई गई। हरिजन-सेवा सङ्घ इन्दौर से भी श्रीमन्त की घोषणा नारायणगढ आर्यसमाज में आई थी। हरिजन लोग अत्यन्त गरीब होने के कारण स्कूल में आकर पढ़ने से मजबूर थे अतः हम सब ने यथा शक्ति उन्हें सहायता प्रदान कर पढाने का निश्चय किया। इसी सिलसिले में स्थानीय कार्यकर्ता श्री घनश्याम माहेश्वरी ने हम लोगों के सहयोगके आधार पर हरिजनों को स्कूल में भर्ती कराने का पूर्ण निश्चय कर लिया परन्तु उन्हें उनके परिवार वालो तथा अनेक शरारती लोगो ने तकलीफें दी, मार कूट से पेश आये भरती कराने के पूर्व रात्रि को २ बजे सोये हुये घनश्याम के मकान को ताला लगा दिया। घनश्याम को अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करना था। इसलिये उसने दीवार में एक ६ इन्च की तार की लगी हुई कील द्वारा मकान की दीवार को भीतर से खोदना शुरू कर दिया। सूर्य्य के निकलने से पहिले ही घनश्याम घर से बाहर निकल गया और हरिजनों के बालकों को ले आने वाले लोगो के साथ हो गया यह घटना ता० २ अप्रैल की है।

ता० ४ को कन्या पाठशाला में हरिजनों की लड़कियों को ले आकर दाखिल कराया गया। घनश्याम को और भी अधिक तकलीफे दी जाने लगी यहां तक कि उनके पिता ने उनको दूसरे गांव मे रख दिया। परन्तु ता० ८ ४ ३८ की शाम को रामनवमी होने से हरिजनो को मन्दिर में ले जाने का प्रोग्राम बना था। अत घनश्याम ता० ७ को ही दूसरे गांव से आगया। इधर ७ ता० को हरिजन लडकियो को स्कूल से हैड अध्यापिका ने उनके घर भेज दिया उसका कारण यह था कि ता० ६ को रघुनाथसिंह ठाकुर मगनीराम पटवारी तथा मूलचन्द्र कुमट ने नाथू नामक हरिजन को धमकियां दीं, कि यदि तुम लोग स्कूल में पढोगे तो तुम्हारे और तुम्हारे साथियो के सिर फोड दिये जावेगे उस पर से ता० ६ की रात को श्रीयुत मेघराज जी ने वाचनालय के अन्दर कहा था कि ता० ८ को रामनवमी के दिन, शाम को हरिजन लोग मन्दिरो में दर्शन करेंगे। हम लोग सिर फुडवाने के लिये तैयार हैं।

ता० ८ को मुझे कार्यवशात् मनासा जाना पडा मनासा जाने से पहिले श्रीयुत मेघराज जी और मैं दिन के १२ बजे तक आपस में हरिजनो के मन्दिरो मे दर्शनार्थ वार्तालाप करते रहे, जिसकी कि चर्चा गाँव में फैल चुकी थी ता० ९ को १० बजे मुझे मनासा खबर मिली कि नारायणगढ मे मेघराजजी का कत्ल होगया। अत मैं ३॥ बजे की मोटर से नारायणगढ आया। आने के पूर्व मुझे एक पत्र मिला था कि नारायणगढ

में तुम्हारा भी कत्ल होने वाला है अत आप कदापि वहाँ न जाय। नारायणगढ पहुचते ही मैंने प्रथम श्री मेघराज जी के परिवारके लोगो को संभाला तत्पश्चात् घटना का हाल मालूम किया जो कि निम्न प्रकार है—

श्रीयुत मेघराज जी अपनी भैंसें लेकर पानी पिलाने के लिये कुए पर गये थे। करीब दो बजे अधिक गर्मी पड़ने के कारण एक झाड के नीचे जाकर लेट गये। अचानक एक ओंकार सीताराम नामक कट्टर सनातनी ने पीछे से आकर लाठी मारी। मेघराज जी ने उसको पकड कर नीचे डाल दिया और छाती पर चढ बैठे। पीछे से दो आदमी और आये वे भी उसी के परिवार के थे उन्होंने श्री मेघराज जी पर लाठिया बरसाना शुरू कर दिया। श्री मेघराज जी ने भी यथाशक्ति हिम्मत की, परन्तु और भी आदमी आ गये और उन्होंने आपको जमीन पर डालकर चाकू से आपकी आखे फोड दी, पैर तोड दिया। हत्यारे लोग आपको मरा समझ कर छोड के चले गये। आस पास काफी मनुष्य थे। हत्या का स्थान खुला मैदान था। कपास की बखटी का खेत था, लेकिन आस पास के देखने वाले दुष्टो ने इनकी तरफ देखा ही नहीं।

तुलसी नाम की एक लडकी ने मेघराज के घर पर जाकर खबर दी कि मेघराज जी मारे गये है। उनकी धर्म-पत्नी आनन्दी बाई बुखार में सोई हुई थी। अचानक इस घटना को सुनकर दौडकर भागी और उसके पीछे २ पडोसी भी भागे। घटना स्थल पर सब से पहले आनन्दी बाई पहुँची और अपने पति का सिर गोद मे लेकर रोने लगी। पोखर लटीक और हीरा जट्या भी वहां पहुँच गये। आनन्दी देवी ने मेघराज जी से पूछा कि आपको किन हत्यारो ने मारा है? मेघराज जी सचेत होकर बोले कि देवी जी मुझे जल्दी खाट पर डालकर ले चलो पुलिस मे बयान हो जावेंगे तो ठीक है। देवी जी ने फिर भी पूछा कि आप मेरे से कहो आपको किसने मारा है? उन्होने ५ आदमियो के नाम बताये, ए६ पहिचानने मे नही आया। जल्दी से खाट मगाई गई और पडोसी लोग उनको खाट पर डाल कर शफाखाने की ओर ले जाने लगे, रास्ते मे एक नीम का झाड आया, मेघराज जी ने कहा यहाँ पर ठण्ड मालूम पडता है- मुझे नीचे उतार दो। खाट नीचे उतार दी गई पानी मांगा, परन्तु पानी दूर था इसलिये उनको उठाकर शफाखाने ले गये। शफाखाने जाकर उन्होने पूछा कि क्या यह दवाखाना है? तब मेघराज जी ने डाक्टर साहब को बुलाकर कहा कि डाक्टर साहब मुझे दवा दो, परन्तु डाक्टर साहब ने कोई हमदर्दी न दिखलाते हुये कहा कि पुलिस में ले जाओ। कम्पाउण्डर ने दवा पिलाइ, दवा पिलाते ही प्राणान्त हो गया।

लाश को लेकर पुलिस मे गये। वहा से पुलिस वाले शफाखाने लाये। डाक्टर साहब ने फिर कहा कि इसका पोस्टमार्टम कल होगा। आज रात्रि पड जायेगी। फिर लाश को लेकर पुलिस मे गये और वहा लाश के पास रात भर रहना पडा। दूसरे दिन डाक्टर साहब ने १० बजे के बाद पोस्टमार्टम किया। तत्पश्चात् मेघराज की लाश जलाने का अवसर आया। आनन्द बाई और दो पडोसियो के कहने पर ६ आदमियो को निगरानी मे ले लिया गया। पुलिस ने पञ्चनामा किया उसमे पूछा कि इसमे कोई आर्य समाजी तो नही है। उसका पञ्चनामा हम नही लेंगे। पुरावा होने लगा तो पूछा कि कोई आर्यसमाजी तो नहीं है। उस पर ता

मेघराज जी के साथ महानुभूति रखने वालों को कोई भी उम्मेद नहीं होने लगी कि क्तल का केस सुधर सकेगा।

ता० १० को डी आई जी साहब गरोठ से आये, उन्होंने मौका मुलाहिज़ा किया। पश्चात् आरोपियो को हवालात मे लिया। केस के लिये मनासा के सब इन्सपैक्टर दौलतसिंह जी पवार और आन्त्री के सब इन्सपैक्टर साहब को नारायणगढ़ के सब इन्सपैक्टर मोहनसिंह जी की इमदाद के लिये मुकर्रर किया गया है और डी० आई० जी०

साहब ने हम लोगों को आश्वासन दिलाया है कि मामले की जाँच होरही है। आप लोग चिन्ता न करो। यह बात आपने ता० १२-४-४८ को फरमाई थी और यह भी कहा था कि बहुत सी बाते सबूत में भी रही हैं।

ता० १२ की शाम को श्रीयुत बा० अभयसिंहजी डाँगी एडवोकेट अजमेर, श्रीयुत बा० शोभारामजी वकील छावनी नीमच तथा, मि० चन्दनसिंहजी, आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आये। ता० १६ के ४ बजे तक आप सबने जाँच-पड़ताल की और घटना स्थल का मौका देखा। मेघराजजी की धर्म पत्नी आनन्ददेवी को धैर्य दिया। आनन्ददेवी का कहना है कि मैं अपने पति मेघराजजी की राम नवमी की प्रतिज्ञा को पूर्ण करना चाहती हूँ, क्योंकि मैं उनकी अर्धांङ्गिनी हूँ। मुलजिमो का चालान नहीं हुआ है। ता० १७ को आर्य समाज मल्हारगञ्ज इन्दौर से श्रीयुत किशोरीलालजी B.A. LL.B. वकील हाईकोर्ट आये उन्होंने भी आशा दिखाई कि इन्दौर का जितना भी कार्य होगा वह हमारा समाज व हम कर सकेंगे।

ता० १८ ४ ४८ को १२ बज की मोटर से श्री मेघराजजी की धर्म पत्नी आनन्दीदेवी को और पड़ोस के लोगों को तथा पाखर पुना खटाक और हारा, गुलया अटूया को डी० आइ० जी० के पास बयान करा ने को नारायणगढ़ पुलिस सब इन्सपैक्टर श्री मोहनसिंहजी ले गये हैं। बात-चीत से मालूम होता है कि अभियुक्तों में से दुलीचन्द कुलमी को चालान से बचा लेगे जो कि षड्यन्त्र कारियो का एक प्रमुख व्यक्ति है। षड्यन्त्र मे यह व्यक्ति बहुत चुस्त-चालाक है, इसके पीछे और भी आदमी हैं। इन्हीं लोगो न तीन रोज तक पुरावा नही होने दिया। पुरावा देने वालों को भय दिखलाया। यहाँ तक कहा जाता है कि लोगों में दुलीचन्द के छूटने की उनके साथियो ने खबर देकर डाट देरखी है। दूसरी बात इसके छूटने से यह भी होगा कि दकियानूसी हमसे दबे छिपे आर्यों पर अवश्य होगे जिसका पुरावा मिलना मुश्किल होगा।

विद्या धर्मेण शोभते। धर्म से ही विद्या की शोभा होनी है।

आर्य कुमार जगत्

मार्च मास के 'आर्य कुमार जगत्' मे हमने लिखा था कि जयन्ती पर परिषद् की ओर से एक पुस्तक प्रकाशित होगी। अब हमे यह लिखते हर्ष होता है कि पुस्तक के लिए काफी सामग्री एकत्रित हो गई है और पुस्तक अवश्य प्रकाशित होगी। पुस्तक का नाम 'उन्नति की ओर" होगा और उस मे निम्न विषयो पर विद्वानो के लेख होगे—

उन्नति का रूप, कुमार जीवन, वातावरण और उसका उन्नति पर प्रभाव, स्वास्थ्य, चरित्र गठन, शिष्टाचार, अभिवादनशीलता, नियन्त्रण (Discipline) सत्य, अहिंसा, स्वाध्याय, आश्रम धर्म, धैर्य्य, इन्द्रिय निग्रह, श्रद्धा और भक्ति, देश धर्म, शिक्षा, ऋषि दयानन्द, धर्म, मजहब और सम्प्रदाय, पाप और पुण्य।

इन लेखों के अतिरिक्त गायन, कविताएँ तथा नेताओं के चित्र भी होंगे। लेकिन पुस्तक का मुख्य अंग परिषद् का इतिहास तथा कुमार सभाओं के परिचय होंगे। मुझे यह लिखते दुःख होता है कि अभी तक बहुत ही कम कुमार सभाओं ने अपने परिचय भेजे हैं। इस लिए जिन कुमार सभाओं ने अपने परिचय अभी नही भेजे है उनसे फिर प्रार्थना है कि वे १० तारीख़ तक अवश्य भेजदें।

पुस्तक में आर्य कुमारो के लेख भी होंगे। इस लिए जो आर्य कुमार अपने लेख व कविताएँ भेजना चाहे भेजदें।

अन्य आर्य सस्थाओं से भी जिनमे आर्य कुमार शिक्षा पाते है हमारी प्रार्थना है कि वे भी पुस्तक में छापे जाने के लिए अपने परिचय हमें शीघ्र लिख भेजने की कृपा करें।

आर्य संस्थाओं से अपील

भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् भारत की सब आर्य कुमार सभाओं की एक मात्र प्रतिनिधि संस्था है। इसके नियमों में आर्य "कुमार सभाओं से उन तमाम सभाओं से तात्पर्य है जो परिषद द्वारा निश्चित नियमों को मानती है, वास्तविक नाम उनका चाहे कुछ भी हो। इस लिए हमारी समस्त ऐसी सस्थाओं से जैसे गुरुकुल, डी० ए० वी० कालेज व स्कूल, अनाथालय आदि—जिनमे आर्य कुमार शिक्षा पाते हैं, प्रार्थना है कि वे परिषद् मे सम्मिलित हो जावे ताकि हम सब मिलकर भारत के नवयुवको मे आर्य समाज का प्रचार अच्छी प्रकार कर सके।

आर्य कुमार सभाओं के समाचार

१-आर्य कुमार सभा मुरादाबाद।

इस कुमार सभा की ओर से निम्न प्रस्ताव भेजा गया है।

"आर्य कुमार सभा मुरादाबाद महाशय काज़मी के 'शरियत बिल' को समस्त हिन्दू जनता के अधिकारों का घातक समझती है और उसका तीव्र प्रतिकार करती हुई आशा करती है कि असेम्बली के सभी सदस्य तथा सरकार बलपूर्वक उसका विरोध करेगी"

२—आर्य कुमार सभा, पटना सिटी।

आर्य कुमार सभाकी ओर से गत अप्रैल मास मे बिहार प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलन किया गया। आर्य कुमार सभा को हम इस शुभकार्य के लिये बधाई देते हैं और आशा करते हैं कि सम्मेलन पूर्ण सफल हुआ होगा। सम्मेलन के पूरे समाचार आने पर अगले मास मे छापे जावेंगे।

३—आर्य कुमार सभा, मल्हार गंज इंदौर।

यद्यपि यह सभा गत वर्ष ही स्थापित हुई है परन्तु इसका कार्य बहुत ही सुचारू रूप से चल रहा है। यह इस सभा का सौभाग्य है कि इसमे अनेक उत्साही युवक अपना पूरा समय दे रहे है और इन्दौर के दानी पुरुषो का भी इस पर हाथ है। सभा ग्राम प्रचार का काफी कार्य कर रही है।

सभा की इन्दौर रियासत द्वारा रजिस्ट्री भी हो गई है।

४—आर्य कुमार सभा, लल्लापुर काशी।

इस सभा का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है। सभा के अंतर्गत सावजनिक पुस्तकालय भी है और आर्य वीर सेवा दल भी।

५—आर्य कुमार सभा, बुरहानपुर।

इस कुमार सभा का कार्य काफी फैला हुआ है। यह सभा बहुत सुचारु रूप से चल रही है। इस सभा की यह खूबी है कि इसके अन्तर्गत एक गरीब विद्यार्थी पुस्तकालय भी है जिसके द्वारा गरीब विद्यार्थियो को सहायता मिलती रहती है। सभा मे आर्य कुमार सेवादल भी है।

६—आर्य कुमार सभा, रांची।

यह सभा न केवल स्वयं सुचारु रूप से चल रही है बल्कि इसके अधिकारी राँची जिले मे अनेको स्थानों मे आर्य कुमार सभाएँ स्थापित करते जा रहे हैं। सभा की ओर से ग्राम प्रचार कार्य भी हो रहा है।

७—आर्य समाज गोपाल गंज, सारन।

आर्य समाज, गोपालगंज सारन के अधिकारियों के हम कृतज्ञ है कि उन्होंने अपने समाज के अन्तर्गत शीघ्र ही आर्य कुमार सभा खोलने का निश्चय कर लिया है।

अन्य आर्य समाजें भी इसी प्रकार हमारी सहायता करें।

८—आर्य कुमार सभा, सिमडेगा।

इस सभा का मुख्य कार्य ग्राम प्रचार है। सभा के प्रधान श्रीयुत कृष्ण गोविन्द जी आर्य सुदूर जङ्गली स्थानों मे आर्य समाज का खूब प्रचार कर रहे हैं।

मन्त्री भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् दिल्ली।

"कुमारों का सुधार"

[लेखक—श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु दरिया गंज देहली]

मनुष्य समाज का सब से बड़ा धन उसके कुमारों का पवित्र जीवन है। देश और समाज कुमारों के भावों, विचारों, और कार्य्यों पर निर्भर है। कुमार ही देश और जाति की आशाएँ हैं। जिस देश और समाज में कुमारों के जीवनों को पवित्र, धार्मिक और उपयोगी बनाया जाता है उस देश और समाज का भविष्य सदा उज्जवल रहता है।

आर्य्य वर्त के पुराने आर्य्य अपने कुमारों के जीवनों को सयमी, सदाचारी और धार्मिक बनाते थे। परन्तु दुर्भाग्य वश कुछ काल से आर्य्य जाति अपने कुमारों की ओर से निताल उदासीन और लापरवाह हो रही है। जिस के दुष्परिणाम स्वरूप हम देख रहे हैं कि आधुनिक आर्य्य कुमार अपनी संस्कृति, सभ्यता, वेश और भाषा से घृणा कर रहे हैं। न उनकी माता पिता और बडों मे श्रद्धा है न गुरुजनों में भक्ति। न उन्हे ईश्वर से प्रेम है न वेदादि धर्म शास्त्रों में विश्वास। आज यदि उन्हें कोई वस्तु प्रिय है तो वह है चटपटी, मसाले दार, उत्तेजक और बुद्धि नाशक खाद्य-सामग्री, फैशनेबल और भड़कीले कपड़े, उपन्यासों और नाटकों का अध्ययन, और सिनेमाओं का प्रदर्शन।

इस बिगाड़ का मुख्य कारण तो है कुमारों के माता पिताओं का उनकी ओर से उदासीन होना हाँ इसके साथ २ आधुनिक पाश्चात्य नास्तिकीय शिक्षा दीक्षा का भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। मेरी सम्मति में हमें शीघ्राति शीघ्र इस ओर ध्यान देना चाहिए और जैसे बने अपने कुमारों के जीवनों की रक्षा कर अपना, अपनी जाति और देश का कल्याण करना चाहिए। यदि निम्न लिखित नियमों का पालन करें तो कुमारों का सुधार हो सकता है॥

(१) माता पिताओं को अपने बच्चों की ओर से सदा पूर्णतया सतर्क और सावधान रहना चाहिए। जिस से वे कुसङ्गति में न पड़ें। (२) अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षणालयों में ही शिक्षा दिलानी चाहिए जिस से वे उत्तम वायुमण्डल में रहकर धार्मिक एवं सदाचारी बन सकें। (३) बच्चों को सदा सादा नियमित तथा तपस्वी जीवन व्यतीत करने का अभ्यास कराना चाहिए जिस से कि वे अपने आगामी जीवन संग्राम में आने वाली कठिनाइयों और विपत्तियों को सहन कर सकें और धर्म पथ से च्युत न हों।

(४) धार्मिक ग्रन्थों के स्वाध्याय में उनकी रुचि बढ़ानी चाहिए जिससे कि वे अपने धर्म के महत्व को समझ सकें। (५) उन्हें अपने देश और जाति के बड़े २ धार्मिक महापुरुषों के जीवन की गाथाएं सुनानी चाहिएं जिस से उनके मनों मे शुभ संस्कार पड़ें और वे पूर्वजों के पद चिन्हों पर

चल अपने देश और जाति के सच्चे भक्त तथा सेवक (रक्षक) बन सकें। (६) बच्चो को सेवा भाव का महत्व समझाया जावे। उन के सामने अपने बडों की सेवा स्वय कर के आदर्श उपस्थित किया जावे जिस से वे अपने जीवन मे सच्चे सेवा व्रती बन सकें। (७) दैनिक तथा नियमित व्यायाम की बान डाली जावे जिस से बच्चो का स्वास्थ्य ठीक रहे उनके शरीर सुन्दर और सुगठित बन सकें। (८) बच्चों मे खोज और पूछ ताछ की जो शक्ति है माता पिताओ को उसे दबाने और कुचलने के स्थान पर बढाना चाहिए जिससे उनका ज्ञान बढ़े और वे सन्तुष्ट रहें। (९)बच्चो को धर्म स्थानो, सत्सङ्गों, कथा और उपदेश आदि मे अपने साथ ले जाना चाहिए और वहाँ उन्हे शान्ति पूर्वक अपने पास बिठा कर ध्यान से सब कृत्य देखने और सुनने की बान डालनी चाहिए जिस से वे धर्म मे विश्वास, श्रद्धा और प्रेम करने लग जावें। (१०) घर पर भी साय प्रात यज्ञ, सन्ध्या प्रार्थना और भजन आदि करते समय अपने बच्चो को अपने साथ सम्मिलित करना चाहिए। जिस से वे ईश्वर विश्वासी बन सकें। (११) कुमारो को कभी खाली न बैठने देकर उन्हे सदा किसी न किसी अच्छे काम मे लगाये रखना चाहिए जिस से वे परिश्रमी उत्साही और परोपकारी बन सकें। (१२) उन्हे स्वदेशी वस्तुए ही प्रयोग करानी चाहिऐ, स्वमातृ भाषा हिन्दी का प्रेमी बनाना चाहिए और अपनी सभ्यता एव सस्कृति का गर्व सिखलाना चाहिए जिस से वे सच्चे भारतीय और दृढ़ आर्य बन सकें। (१३) माता पिताओं को सब से बढ कर इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वे अपने कुमारो को कुमार सभाओं का सदस्य बनवा देवें और उन्हे प्रति सप्ताह ठीक समय पर कुमार सभा के सत्सङ्ग मे और अन्य कार्य्यों मे भाग लेने भेज दिया करें और कुमार सभा से वापसी पर कुमारो से पूछा करें कि उन्होंने वहाँ क्या २ अच्छी बाते सुनी है या नोट की है और उन्हे कइ तरह से प्रोत्साहित करते रहा करें ताकि कुमारो की कुमार सभाओ मे जाने का रुचि बढे।

— —

इन्दौर में सर्व धर्म सम्मेलन

वैदिक धर्म के प्रतिनिधि का भाषण

गत मास १८ से २१ एप्रिल तक इन्दौर के किंगएडवर्डहालमें सब धर्म सम्मेलन वा All Faiths Conference का तृतीय अधिवेशन बडे समारोह से मनाया गया जिसमें सिक्ख, ईसाईयत, जैन इस्लाम, ब्रह्म समाज, बहाई इत्यादि अनेक मतो के प्रतिनिधि दूर २ प्रान्तो तथा देशो से सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन का उद्घाटन इन्दौर के प्राइम मिनिस्टर सर एस एम बापना Kt C I E ने १८ की सायकाल किया। महानुभावो तथा विदुषी देवियो ने सम्मेलन मे विशेष रूप से भाग लिया उनमे से निम्न व्यक्तियो के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं (१) डा मु ज भू पू प्रधान अखिल भारतीय हिन्दू महासभा (२) प्रो० गङ्गासिंह प्रिन्सिपल सिख मिशिनरी कालेज अमृतसर (३) ब्र० शीतलप्रसाद जैन (४) प० धर्मदेव विद्यावाचस्पति (५) डा० मुहम्मद हफ़ीज़ सयाद M A Ph D D Lit प्रयाग विश्वविद्यालय (६) मिस मार्था रूट (न्यूयार्क) बहाइ मत प्रचारिका (७) श्रीमती शारानू फाजदार Secretary All Faiths League Bombay बहाईमत (८) डा० सुरेन्द्रनाथ M A Ph D (ब्रह्मसमाज) इत्यादि। सम्मेलन के आयोजको की प्रार्थना पर श्रीमती सार्वदेशिक सभा ने अपने सम्मानित प्रचारक श्री स्नातक धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति को अपने प्रतिनिधि रूप मे इन्दौर भेजा जिन्होने सम्मेलन का विषय निर्धारिणी समिति (Subjects Committee) तथा गोलमेज सम्मेलन (Round Table Conference) मे विशेष भाग लेने के अतिरिक्त २० एप्रिल को सम्मेलन के खुले अधिवेशन मे "वेदो का सार्वभौम, युक्तियुक्त और वैज्ञानिक शिक्षाएँ" (The Universal National and Scientific Teachings of the Vedas) इस विषय पर एक महत्व पूर्ण व्याख्यान दिया जिसे World Fellowship of Faith, के प्रतिनिधियों, न्यूयार्क मे सुप्रसिद्ध सम्पादिका मिस् रूट् तथा अन्य उपस्थित विद्वान् महानुभावो और विदुषियो ने बहुत पसन्द किया और उन्हे हार्दिक बधाइया दी। अनेक बार करतल ध्वनियो से जनता ने उनके विचारो पर हर्ष प्रगट किया। उस भाषण का साराश निम्न है।

"इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य मनुष्य मात्र मे भ्रातृभाव तथा प्रेम को उत्पन्न करना है, जो अत्यन्त प्रशसनीय है। वेदों में इस उत्तम तत्त्व का बहुत ही अच्छी तरह प्रतिपादन किया गया है। वेदो की शिक्षाएँ सार्वभौम है और उनका उद्देश्य मनुष्य मात्र का कल्याण करना है। वेदो के अन्दर

'त्व हि न पिता वसो त्व माता शतक्रतो बभूविथ।
अथा ते सुम्नमीमहे।"

"त्व भ्रातासि तरणे चेत्यो भू पिता माता सदमिनमा नुषाणाम्"

इत्यादि मन्त्रो द्वारा परमेश्वर को सारे प्राणियो का पिता और माता बताया गया है। हम सब उस

एक भगवान् के पुत्र हैं, अत हमें परस्पर पूर्ण प्रेम भाव से रहना चाहिये तथा भ्रातृ भाव धारण करना चाहिये इस बात को

संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि जानताम् । देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ।

"समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम् । समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ॥"

"समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः । समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥"

इत्यादि मन्त्रों में स्पष्टतया बताया गया है जो ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त के हैं और जिन में वेदों की पवित्र शिक्षाओं का निचोड़ दिया गया है कि हे मनुष्यो ! तुम सब एक उच्च उद्देश्य की ओर मिल कर आओ, मिल कर प्रेम से संभाषण करो तथा तुम्हारे मन पर स्पर मिले हुए और सुसंस्कृत हो। वेद मन्त्रों का उपदेश तुम सब के लिए समान रूप से किया गया है। तुम्हारी सभाओं में सम्मिलित होने का सब को समान अधिकार हो (जन्म के कारण प्रतिबन्ध न हों) तुम्हारा मन और चित्त समान हो। तुम्हारे संकल्प समान हों। तुम्हारे हृदयों और मनों के अन्दर प्रेम और समानता के भाव पूर्णतया भरे हुए हों जिस से तुम्हारा परस्पर पूर्ण सहयोग हो सके। इस प्रकार वेद हार्दिक प्रेम और एकता का कितना सुन्दर उपदेश करते हैं यह स्पष्टतया ज्ञात हो सकता है। जब तक हृदय और मन मिले हुए न हों तब तक ऊपर ऊपर की एकता से कुछ लाभ नहीं हो सकता। अथर्ववेद के एक सूक्त में इस विषय का उपदेश इस रूप में दिया गया है।

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः । अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या ।

अर्थात् मैं (परमेश्वर) तुम्हारे हृदय और मन को मिलाता और द्वेष भाव को दूर करता हूँ। तुम एक दूसरे के साथ ऐसे प्रेम करो जैसे गाय अपने नये पैदा हुए बछड़े के साथ करती है।

भ्रातृभाव का इससे अधिक स्पष्ट और उत्तम उपदेश और कहाँ पाया जा सकता है जितना निम्न लिखित वेद मन्त्र में है।

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते, सम्भ्रातरो वावृधुः सौभगाय । युवा पिता स्वपा रुद्र एषां, पृश्निर्मीर्ता सुदिना मरुद्भ्यः ॥

अर्थात् सब मनुष्य भाई हैं। इन में कोई बड़ा या छोटा नहीं है। इस भावको मनमें धारण कर के प्रेमपूर्वक कार्य करने से ही सौभाग्य प्राप्त होता तथा समाज की उन्नति होती है। सब मनुष्यों का सर्वशक्तिमान परमात्मा है और प्रकृतिव भूमि माता है। इस प्रकार जन्ममूलक ऊंच नीच के भावों का सर्वथा परित्याग करते हुए भ्रातृ भावना धारण करने का वेद भगवान् उपदेश देते हैं। मनुष्य मात्र को मित्र दृष्टि से देखने तथा अपने सारे जीवन को मधुमय अथवा प्रेममय बनाने का उपदेश निम्न वेद मन्त्रों में कितनी अच्छी तरह से किया गया है ?

दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् । मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

मधुमन्मे निक्रमणं मधुमन्मे परायणम् । वाचा वदामि मधुमद् भूयासं मधुसंदृशः ॥

इन दो मन्त्रों का भावार्थ यह है कि मैं सब

प्राणियों (केवल मनुष्यों को ही नहीं) को मित्र की दृष्टि अर्थात् प्रेम से देखू । सब प्राणी मुझे मित्र का दृष्टि से देखें । हमारा खाना जाना तथा अन्य सब व्यवहार मिठास से भरा हुआ हो । हम वाणी से सदा मीठी बात बोलें इतना हो नहीं, किन्तु हमारी दृष्टि मे भी मिठास अथवा सच्चा प्रेम भरा हुआ हो । ऐसा न हो कि हम ऊपर ऽ से मीठी बात कह और अन्दर से छुरी चला रहे हो किन्तु हमारा सारा जीवन प्रेम मय होजाए ।

वद एकेश्वर पूजा का प्रतिपादन करते हैं जो इसी रूप में हो सकती है कि हम अपने हृदयो को पवित्र करके भगवान के पवित्र गुणा का चिन्तन कर और उन्हे अपने अन्दर यथाशक्ति धारण करन का प्रयत्न करें तथा जनता विशेष दीन दुखितों के कष्ट निवारण का सदा यत्न कर ।

य एक इत् तमुष्टुहि, कृष्टोमा विचर्षणि । पतिर्जज्ञे वृषक्रतु ॥

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते। न पंचमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते ।''

स एष एक एव वृदेक एव ।

दिव्यो गन्धर्वो भुवनस्य यस्पतिरेक एव नमस्यो विक्षीड्य ।

इत्यादि मन्त्रो में यही उपदेश किया गया है कि सब मनुष्य श्रद्धाभक्ति पूर्वक एक सर्व व्यापक सर्व शक्तिमान् सवज्ञ भगवान् का भजन करें क्योंकि वही एक पूजनीय तथा सारे ससार का धारक और स्वामी है । वह परमात्मा एक और केवल एक है १,३,३ १,१०,८, ६,१० या परमात्मा नहीं। वेद परमात्मा को सपर्यगाच्छु क्रमकायमव्रणमस्नाविर शुद्धमपाप विद्धम् ।

इत्यादि मन्त्रों द्वारा सर्व व्यापक सर्वशक्तिमान् सवज्ञ, सर्वान्तर्यामी, निराकार, निर्विकार तथा सर्वथा शुद्ध पवित्र पाप रहित बताते हैं ईश्वर विषयक वैदिक विचार सर्वथा युक्ति युक्ति है । किन्तु आज कलके कुछ अर्धशिक्षित मनुष्य यह समझते हैं कि इस ईश्वर वाद का जिसका वेद भी प्रतिपादन करते हैं विज्ञान से स्पष्ट विरोध है । विज्ञान ईश्वर के अस्तित्व का स्पष्ट खण्डन करता है फिर विज्ञान विरुद्ध ईश्वर वाद को कैसे स्वकार किया जा सकता है ?

इस अशुद्ध विचार का निराकरण करते हुए वक्ता न बताया कि विज्ञान की उन्नति के साथ २ उसका झुकाव ईश्वर वाद को ओर होता जा रहा है । यह कहना सर्वथा अशुद्ध है कि विज्ञान ईश्वर वाद का खण्डन करता है अथवा सब बड़े २ वैज्ञानिक ईश्वर की सत्ता से इन्कार करने वाले है । इस सम्बन्ध में Science and religion by seven men of science The religion Science by Dr Paul Religion of the Scientists edited by Diaw Bridge M A Religion and Science a syonposium इत्यादि अत्युत्तम ग्रन्थो का निर्देश करते हुए जिन में इस समय के वैज्ञानिक शिरोमणियो के धर्म विषयक विचारो का सग्रह किया गया है और उन में से कुछ उद्धरण देते हुए वक्ता ने सिद्ध किया कि सर ओलिवर लाज F R S, D Sc, LL. D President Royal Society प्रो० फ्लेमिङ्ग M A. D Sc F R S प्रो० बोटम्ले M A, Ph D F I S F C S प्रो० जुक् हेक् M A II. D M D F R

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि-सभा का वार्षिक चुनाव

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा काबृहद्-धिवेशन १-५-१९३८ को बलिदान भवन देहली मे हुआ। आगामी वर्ष के लिए बजटकी स्वीकृति तथा पदाधिकारियों का निर्वाचन हुआ। इस निर्वाचन की विशेषता यह थी कि सभाने माननीय श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त बी० एस० सी० एल० एल० बी, स्पीकर, लेजिस्लेटिव एसेम्बली (सी० पी०) का प्रधानपदके लिए निर्वाचन करके शेष अधिकारियों तथा अन्तरङ्ग सदस्यो की नियुक्ति का इस वर्ष के लिए विशेष रूप से उन्हे अधिकार दे दिया था।

निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ —

प्रधान–श्री माननीय घनश्याम सिंह जी गुप्त

उपप्रधान–(१) श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

(२) ,, प० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति।

(३) ,, पं० गगा प्रसाद जी एम० ए० चीफ जज

मन्त्री–श्री प्रो० सुधाकर जी एम० ए०

उपमन्त्री–श्री डा० युद्धवीर सिंह जी

कोषाध्यक्ष–श्री लाला नारायणदत्त जी

पुस्तकाध्यक्ष–श्री लाला ज्ञानचन्द जी

अन्तरङ्ग सदस्य

(१) श्री राय बहादुर ठाकुर ब्रजनन्दन सिंह जी (बिहार)

(२) श्री पं० बन्सीलालजी (हैदराबाद दक्षिण)

(३) ,, बाबू पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट (उपनिवेशोंसे)

(४) ,, लाला देशबन्धुजी एम एल ए (समाजो से)

(५) ,, महात्मा नारायण स्वामी जी

(६) ,, म० कृष्णजी बी० ए०

(७) ,, पं० भगवान स्वरूप जी न्याय भूषण (राजस्थान)

(८) श्री बाबू ज्योति स्वरूप जी

(९) ,, राय साहिब मदन मोहन जी सेठ एम० ए० एल० एल० बी सब जज (सयुक्त प्रान्त)

(१०) श्री प्रो० महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री एम० ए० (संयुक्त प्रान्त)

(११) श्री बा० श्रीराम जी (संयुक्त प्रान्त)

(१२) श्री प० ज्ञानचन्द जी बी० ए० आर्य सेवक (पंजाब)

(१३) ,, आचार्य्य राम देव जी बी० ए० (पजाब)

C P F, R S F प्रो थौम्पसन् B A, M. D, LL. D, D. Sc F R S इत्यादि वर्तमान समय के प्रायः सब धुरन्धर वैज्ञानिक ईश्वरवाद को (जैसा वेदो मे बताया गया है) स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हैं।

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक सर् आइज़क न्यूटन के

All this material Universe is the handi work of one Omniscient and Omnipotent creator

तथा लॉर्ड केल्विन् नामक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक के

'Science positively affirms creative power. We are absolutely forced by science to believe with perfect confidence in Directive power

इत्यादि वचनो का वक्ता नें विशेष रूप से निर्देश किया।

(शेष अगले अङ्क मे)

प्रतिदिन की धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं पर महत्व पूर्ण सम्वाद

श्रीमती सोफियावादिया अखिल भारतीय प्रसिद्धि की एक सुशिक्षित महिला हैं। उन्होंने 'बुद्धिमानों का भ्रातृसंघ' नामक संस्था की स्थापना की है। अभी हाल मे जहाज पर श्री मातीलाल दास नामक एक सज्जन से संसार की वर्तमान कई समस्याओं के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर के रूप में उनकी बातचीत हुई थी जो अप्रैल मास के माडर्न रिव्यू' मे छपी है। सार्वदेशिक के पाठकों के लाभार्थ उस बातचीत का सार हम यहां प्रस्तुत करते हैं। —सम्पादक

श्री मातीलाल जी—क्या धर्म में आपका विश्वास है? क्या धर्म के बिना संस्कृति जीवित रह सकती है?

श्रीमती वादिया—जीवन के आन्तरिक मार्ग के रूप में धर्म मे मेरा विश्वास है। आजकल जैसे धर्म में मेरा विश्वास नहीं है। आज का धर्म आत्मा रहित शरीर और प्रकाश रहित छाया के सदृश है। सच्चे धर्म के बिना संस्कृति जीवित नही रह सकती है झूठा और बाह्य आडम्बर युक्त धर्म संस्कृति को नष्ट कर देगा।

मो०—धर्म के भविष्य के सम्बन्ध में आपका क्या विचार है?

वादि०—जबतक धर्म के सार्वभौम आधार भूत सिद्धान्त पुन: प्रतिष्ठित नही होते हैं और धर्म जीवन का विषय नही बन जाता है तब तक धर्म का कोई भविष्य नहीं है। रूढ़ियां बाह्य आडम्बरों और कट्टरता से युक्त मत मतान्तरों का विनाश अवश्यम्भावी है।

मो०—संसार की आर्थिक प्रणालीके प्रति आपका कैसा रुख है? क्या सब समान रूप से धनवान हो सकते हैं? संसार में शांति किस प्रकार स्थापित हो सकता है?

वादि०—जबतक हमारे भीतर शांति नहीं होती है तबतक बाहर शान्ति नही हो सकती है। बाहरी दुनिया की लड़ाई हमारे भीतर जो युद्ध हो रहा है उस का प्रतिबिम्ब है। पहले से ही हम सबके पास काफी है परन्तु लाभ और कम्पीटीशन की प्रणाली की वजह से संघर्ष हो रहा है। सब आदमियों के पास समान पैसा हो सकता है इस में मेरा विश्वास नहीं है। मेरा विश्वास उस आर्थिक प्रणाली में है जो लालच के स्थान पर निःस्वार्थ भाव पर आश्रित हो।

मो०—उन्नति के सम्बन्ध मे आपका क्या विचार है? क्या दुनिया में कभी पूर्णता प्राप्त हो सकती है?

वा०—केवल धन वैभव की उन्नति को मैं उन्नति नही समझता हूं। वास्तविक उन्नति मानसिक विकाश और सदाचरण के पैमाने से ही नापी जाती है। इस दुनिया मे पूर्णता प्राप्त हो सकती है और वह जन्म जन्मांतरों के बाद आत्म संयम और परोपकार का जीवन व्यतीत करने से संभव है।

मो०—विवाह की वर्तमान थ्यूरी के सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं ? आपकी सम्मति में विवाह प्रथा का भविष्य क्या होगा ?

वा०—आज कल की दोस्ती की शादी को मैं बहुत बुरा समझती हूँ। मेरा विश्वास है जब इस प्रकार की शादियों की बुराइयाँ सब पर जाहिर हो जाँयगी तब यह शादियाँ बन्द हो जायँगी। रूस में सरकार विवाह, गृहस्थ निर्माण और बच्चोंके पालन-पोषण के सम्बन्ध मे प्रौपैगैन्डा कर रही है।

मो०—तलाक के सम्बन्ध मे आपकी क्या सम्मति है ? क्या इसे आप पसन्द करती है ? स्त्री जाति का भविष्य क्या होगा ?

वा०—कुछ अवस्थाओं में और हमारी वर्तमान सांस्कृतिक दशा में तलाक ठीक हो सकता है परन्तु ऐसा तलाक नही जैसा आज कल फैल रहा है ?-जो स्त्री पुरुषों को अपनी हीन वृत्तियों को पूरा करने को आजादी दे रहा है।

मेरी सम्मति मे स्त्री और पुरुष में शरीर काही एक मात्र भेद है वास्तविक सत्ता (आत्मा) स्त्री पुरुष के भेद भाव से शून्य है। बतौर आत्मा के स्त्रियो का भविष्य वैसाही महान होता है जैसा पुरुषो का।

मो०—क्या जगत में आपका विश्वास है ? मनुष्य के भविष्य के सम्बन्ध मे आपका क्या मत है ? क्या पुनर्जन्म में आपका विश्वास है ? क्या अमरता की आपको इच्छा नहीं ?

वा०—पुनर्जन्म में मेरा विश्वास है। संसारकी सब पैदाशुदा चीजों का विनाश निश्चित है। अपने शरीरकी अमरता की मुझे इच्छा नहीं है। इस जीवन में काम करने के लिए शरीर एक आवश्यक अंग है। आत्मा की अमरता की जो पहले से ही निश्चित है मुझे अवश्य इच्छा है।

मो०—बुराई से क्या मतलब है ? संसार में आम रूप से जो बुराई पाई जाती है क्या उससे आपको घृणा है ? और क्या यह आवश्यक है ?

वा०—वास्तविक बुराई मानव स्वभाव मे है। जान बूझ कर गलती करने को मैं बुराई समझती हूं और मनुष्य जानते बूझते और समझते हुए बुराई करता है। इस प्रकार की त्रुटियो की प्रति क्रिया दुख-दायक होती है। परमात्मा निर्दय नहो हैं वरन मनुष्य स्वयं निर्दय है और वह प्रत्येक को उसके कर्म का उचित फल देता है। वह महान शिक्षक है। उसको सार्वभौम व्यवस्था से मेरा कोई विरोध नहीं है। मैं इसे अच्छा समझती हूं और इसके अस्तित्व के लिए बड़ी कृतज्ञ हूं।

मनुष्य बहुत धोरे २ सीखता हैं इसीलिए उसे बार २ शिक्षा दी जाती है। ज्योंही मनुष्य पर यह स्पष्ट हो जाता है कि जीवनोद्देश सीखना है त्योंही वह बुद्धिमान जिज्ञासु बन जाता है और वह बहुत से कष्टों से बच जाता है।

मो०—क्या प्रेम मे आपका विश्वास है ? फ्रायड की थ्योरी की बाबत आपका क्या मत है ?

वादि०—सच्चे प्रेम में मैं विश्वास करती हू वह भी वासनाओं की उत्तेजनाओं में नहीं जो आज प्रेम समझा जाता है वरन् आत्मिक प्रेम में। फ्रायड की थ्योरी हमारे गूढ़ और मिश्रित स्वभाव के एक अङ्ग पर अतिशयोक्ति पूर्ण प्रकाश डालती है और इसे ही हमारी समस्त प्रतिक्रियाओं का आधार ठहराती है। न यह सत्य है और न वाँछनीय है। इस थ्योरी ने हमारी सभ्यता को बड़ी हानि पहुंचाई है।

मो०—क्या आप आशावादी हैं या निराशा वादी है ?

श्री ला० मेघराज जी की हत्या तथा हरिजनोद्धार कार्य

इन्दौर सरकार का कर्तव्य

[लेखक—प्र० स्वा० धर्मदेव विद्यावाचस्पति]

मैं अभी हाल ही मे नारायण गढ़ (इन्दौर-राज्य) से लौट कर आया हूँ, जहा पाठको को ज्ञात होगा कि गत ८ एप्रिल को मध्यान्ह रामनवमी के दिन नारायण गढ़ आर्य समाज के प्रधान श्री मेघराज जी की क्रूर हत्या की गई थी। इन्दौर-राज्य के प्रकाशन विभागाध्यक्ष (Publicity officer) की तरफ से पिछले दिनों एक सूचना समाचार पत्रों मे प्रकाशित कराई गई है कि श्री मेघराज जी की हत्या का हरिजनोद्धार अथवा अस्पृश्यता निवारण कार्य के साथ कोई सम्बन्ध न था। वह हत्या केवल वैयक्तिक द्वेष के कारण उनके कुछ जाति बन्धुओं ने की थी। इन्दौर के सर्व धर्म सम्मेलन और आर्य समाज सयोगिता-गंज इन्दौर के उत्सव के पश्चात् २७ एप्रिल को प्रात मै नारायण गढ़ पहुंचा और वहा जाकर मैं ने इस सम्बन्ध मे जांच की। हत्या के स्थल, सार्वजनिक वाचनालय श्री मेघराज जी का घर हरिजन मोहल्ला तथा अन्य स्थानो को देखा और लगभग ४० व्यक्तियो की साक्षी ली, जिन मे से बहुतों ने लिखित बयान भी दिये। उनके आधार पर मै बिल्कुल निश्चित तौर पर इस बात को कह सकता हूँ कि श्री मेघराज जी की हत्या कुछ कट्टर पन्थियो ने उनके हरिजन कार्य से चिढ़ कर और अस्पृश्यता निवारण के कार्य मे बाधा डालने के लिये ही की थी। इस विषय मे निम्न लिखित स्पष्ट घटनाओ का उल्लेख पर्याप्त है जो एप्रिल मास सन् ३८ मे हुई और जिन से इस घोर हत्या के हरिजन कार्य के साथ सम्बन्ध होने मे अणुमात्र भी सन्देह नहीं रह सकता।

(१) २ एप्रिल को श्री मेघराज जी की प्रेरणा से आर्य समाज नारायण गढ के मन्त्री श्री-दीपचन्द जी और आर्य नवयुवक श्री घनश्याम जी आदि ने ११ हरिजन बालको को लड़को के स्कूल में दाखिल कराया।

वादि०—मैं आशावादी हू परन्तु मूर्ख आशा वादी नही। मैं मानवी स्वभाव की पवित्रतामें विश्वास रखती हूं। साथ ही कर्म फिलासफी में मेरी आस्था है मेरा यह भी विश्वास है कि मनुष्य जब अपने पाशविक स्वभाव को मानव स्वभाव मे बदलगे और तब पशुत्व देवत्व में बदल जायगा।

मो०—जीवन का मुख्य उद्देश्य क्या है ? आदर्श स्टेण्डर्ड क्या है ? जीवनका आपकी फिलासफी क्या है ?

वादि०—मनुष्य समाज को लाभ पहुंचाना मोक्ष प्राप्त करना मेरी सम्मतिमें जीवनोद्देश्य है। यह ऊचे स्वप्न देखने और उन्हे जीवन के प्रति दिन के व्यवहार में लाने से सम्भव है केवल स्वप्न देखने मात्र से नहीं।

—

(२) ४ एप्रिल को कुछ हरिजन लड़कियो को नारायण गढ की कन्या पाठशाला मे श्री मेघराज जी की विशेष प्रेरणा से दाखिल कराया गया।

(३) ६ एप्रिल को नारायण गढ़ के पौराणिक दल के प्रमुख मूलचन्द्र कुमठ तथा मगनी राम पटवारी ने नथू तथा मन्नालाल नामक २ हरिजनो को बुलाकर धमकी दी कि यदि तुम (हरिजनो) ने अपने लड़के लड़कियो को स्कूलो से नहीं हटा लिया तथा मन्दिर मे प्रवेश का यत्न किया तो तुम्हारे और तुम्हारे साथियो के सिर फोड दिये जाएगे। उन्हो ने यह भी कहा कि हमारे पास एक २ मन्दिर मे पाच २ सौ आदमियो का (इस काम के लिए तुम्हे न घुमने देने और घुसने पर मारपीट करने) बन्दोबस्त है। उन्हो ने यह बात श्री दीपचन्दजी मन्त्री आर्य समाज को कही।

(४) श्री दीपचन्द जी ने रात को ८ बजे सार्वजनिक वाचनालय मे श्री मेघराज जी को यह सारी बाते सुनाईं और पूछा कि इस बारे मे आप का क्या करने का विचार है? तब श्री-मेघराज जी ने बडी गम्भीरता और उत्साह के साथ वाचनालय मे अनेक जनो की उपस्थिति मे यह घोषणाकी (जिसे वे १५,१६दिन पहलेसे प्रकट कर चुके थे) कि मैं रामनवमी के दिन सायकाल (८ एप्रिल) हरिजनो का जलूस निकलवा कर मन्दिर मे अवश्य ले जाऊगा। मैं सब से पहले अपना सिर फुड़वाने को तय्यार हूँ। इस घोषणा के समय वाचनालय के अन्दर और उसके सामने बाहर को तरफ (राम मन्दिर के सामने के चबूतरे पर,)अनेक पौराणिक कट्टर पन्थी लोग उपस्थित थे।

(५) ८ एप्रिल की दोपहर को (रामनवमी के दिन जिस दिन श्री मेघराज जी ने जलूस निकलवाकर हरिजनो को मन्दिर ले जाने की घोषणा कर रखी थी) जब श्री मेघराज जी अपनी भैंसे लेकर पानी पिलाने के लिये कुए पर गए हुए थे और अधिक गर्मी के कारण एक वृक्ष के नीचे कुछ आराम कर रहे थे तब ओकार सिह, ओकारलाल, मथुरालाल, वरदीचन्द, भवरलाल और दूलीचन्द इन ६ व्यक्तियो ने पहले एक दो ने अलग २ और फिर मिलकर उन पर लट्ठो, चाकू और कुल्हाडी से हमला किया। उनकी आखो मे चाकू लगा कर उन्हे फोड़ दिया गया। उनका दाया पैर तोड डाला। शरीर के सब हिस्सो का लाठी कुल्हाड़ी आदि के प्रहार से जख्मी और लोहू लुहान कर दिया।

ठीक रामनवमी के दिन इस हत्या का होना भी श्री मेघराज जी के हरिजन कार्य के साथ इस के सम्बन्ध को सूचित करने के लिये किसी भी विचार शील निष्पक्ष सज्जन की दृष्टि मे पर्याप्त है। यह आश्चर्य और खेद की बात है कि इन स्पष्ट घटनाओ को छिपाने की कोशिश की जा रही है। नारायण गढ़ के पोलीस सब इन्स्पेक्टर मि० मोहनसिह का जिसके पिता वहाँ कथावाचक है कई वास्तविक घटनाओ के छिपाने, प्रत्यक्षदर्शियो तक के बयान लेने से इन्कार करने और इस मामले को केवल वैयक्तिक द्वेष का रूप देने मे सब से अधिक भाग है। नारायण गढ़ की जनता का दृढ़ विश्वास है कि मि०मोहन सिंह की जो आर्य समाज और आर्य समाजियों का कट्टर

विरोधी है जब तक नारायणगढ से एक दम बदली न कर दी जाएगीं और उस की जगह पर किसी निष्पक्ष पोलीस आफिसर को नियुक्त न किया जाएगा तब तक बहुत सी सच्ची घटनाए प्रकट न होगी। अभियुक्तो मे से दो के पिता नारायणगढ की सनातन धर्म सभा के प्रधान हैं। उनका श्री मेघराज जी के हरिजन कार्य से नाराज हो कर मन्दिर प्रवेश रोक देने के लिये निश्चित समय से कुछ ही घण्टे पूर्व हत्या कर डालना जरा भी आश्चर्य जनक नही। यह सत्य है कि हत्या करने वालो मे से ५ मेघराजजी के (तथा कथित जाति वाले थे किन्तु इसी आधार पर यह कहना सर्वथा असङ्गत है कि केवल वैयक्तिक द्वेष वश उन्होने ऐसा घोर कार्य किया। सन् १६०३ मे जम्मू के श्रीयुत रामचन्द्र जी का (जो रियासत मे खजान्ची थे) हरिजनोद्धार कार्य के कारण ही उन के अपने राजपूत बन्धुओ ने वध कर डाला था। ऐसे ही अन्य कई उदाहरण दिये जा सकते है। इस मामले को दूसरा रूप देने के लिये जो द्वेष की बात कही जाती है वह जाच करने पर ज्ञात हुआ कि एक कुएं के सम्बन्ध मे झगडे की है जिसे लगभग ४० वर्ष हो चुके है। वह कुंआ श्री मेघराज जी का था जिसे औरो ने छीन लिया था। इतने वर्षो के पश्चात अब विरोधियो ने उनकी हत्या इस कारण करदी इस बात को कौन बुद्धिमान मान सकता है? श्री मेघराजजी की धर्म पत्नी श्रीमती आनन्दी बाई तथा इन के पुत्र श्री जगदेव सिह वर्मा इत्यादि से जाच करने पर भी यही ज्ञात हुआ कि इस प्रकार के वैयक्तिक द्वेष का गत कई वर्षों से कोई कारण ही न था। इस लिये वैयक्तिक द्वेष का बहाना न बताते हुए इन्दौर सरकार को चाहिये कि अपराधियो को कठोर से कठोर दण्ड इस घोर अपराध के लिये दे। इन्दौर राज्य के प्राइम मिनिस्टर सर बापना Kt C I E से आर्य समाज इन्दौर का एक डेपुटेशन मेरे नेतृत्व मे २६ एप्रैल को मिला था और उन का ध्यान इस विषय की ओर विशेष रूप से आकर्षित करते हुए उन से निवेदन किया गया था कि शीघ्र से शीघ्र उचित जाच करके फैसला कराया जाय और अपराधियों को कठोर दण्ड दिया जाए क्यो कि इन्दौर महाराज की अस्पृश्यता निवारण तथा मन्दिर प्रवेश विषयक घोषणा का पालन करते हुए ही श्री मेघराज जी की क्रूर हत्या की गई है जैसे कि उपर्युक्त घटनाओ से स्पष्ट ज्ञात होता है।

यहा जनता की सूचनार्थ इतना और बतादेना चाहता हूँ कि श्री मेघराज जी के बडे पुत्र डा० रघुनाथसिह जी टीकम गढ रियासत मे लगभग १३०) पर (Customes commissioner) है अत. उनकी धर्म पत्नी श्रीमती आनन्द बाई जी अपने निर्वाहार्थ जनता से कुछ लेना अनुचित समझती है। उन की यही प्रबल इच्छा है कि उन के पति देव का जिस अस्पृश्यता निवारण दलितो द्धारादि कार्य करते हुए बलिदान हुआ है उस कार्य को जनता जोरोसे चलाये। और उनके स्मारक रूप मे नारायणगढ मे आर्य समाज मन्दिर (अब तक वहा आर्य समाज का अपना मन्दिर नही है) और हरिजन पाठशालादि की स्थापना की जाए। इसी से उनको सन्तोष होगा।

सम्पादकीय—

हैदराबाद और आर्य समाज

इस पत्र के सम्पादक ने थोड़े दिन पूर्व एक सरक्यूलर द्वारा आर्य समाजों तथा आर्य समाजियों से अपील की थी कि वे आर्य समाज की जो गति विधि हैदराबाद में इस समय बन रही है, उस पर गम्भीर दृष्टि से विचार करें। ४ वर्ष से यह समस्या हमारे सामने उपस्थित हो रही है और ४ वर्ष से ही लगातार सार्वदेशिक सभा इस समस्या को सुलझाने का प्रयत्न कर रही है और जो प्रयत्न सार्वदेशिक सभा द्वारा इस समय तक हो चुके हैं, उन्हें ब्यौरेवार उस सरक्यूलर में दर्ज कर दिया था। यह सरक्यूलर भी इसी अङ्क में अन्यत्र दिया जा चुका है। पाठक वृन्द उसे पढ़कर अन्दाजा लगा लेंगे कि वैधानिक उपाय अवलम्बन करने में इस सभा ने कोई कसर उठा नहीं रक्खी। परन्तु फिर भी हैदराबाद गवर्नमेंट टस से मस नहीं हुई। उन्होंने अपने व्यवहार से यह सिद्ध कर दिया है कि वे अनेक आश्वासनों के देने के पश्चात् भी अपनी निश्चित नीति को बदलने के लिए तैयार नहीं।

हैदराबाद राज्य में हिन्दू जनताकी प्रबल प्रधानता है और हम यह अनुभव करते हैं कि हिन्दू जनता को अपने धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक विकाश में वहाँ की सरकार को पूरी सहाता देनी चाहिए। परन्तु ऐसा लेशमात्र भी नहीं हो रहा। विपरीत इस के आर्य समाज तथा हिन्दू जनता की धार्मिक तथा शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं को क्रूरता पूर्ण व्यवहार से कुचला और मसला जा रहा है।

यह स्थिति बहुत दिनों तक नहीं रह सकती। जैसा कि सरक्यूलर में प्रगट किया गया था इस विषय पर गम्भीर विचार करने के लिए सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा ने अपने १०-४-३८ के अधिवेशन में बहुत देर तक इस परिस्थिति पर वाद विवाद किया और श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति के एक महत्व पूर्ण प्रस्ताव को सर्व सम्मति से पास किया। हम अपने पाठकों की सूचनार्थ उस प्रस्तावको अक्षरश नीचे दे रहे हैं। यह प्रस्ताव प्रत्येक दृष्टि से परिस्थिति की गम्भीरता को दर्शाने वाला है। इस प्रस्ताव मे जो निर्देश आर्य्य समाज को दिए गए है, उनकी पूर्ति के लिए आर्य्य समाज को आगामी काल में बड़ा उद्योग करना पड़ेगा। साथ ही यह प्रस्ताव आर्य्य समाजियो को एक भारी त्याग के लिए आवाहन करता है। हमे पूर्ण आशा है कि आर्य्य समाज अपने परीक्षा काल में अवश्य उत्तीर्ण होगा। पं० इन्द्र जी को हम बधाई देते हैं कि उन्हों ने हैद्राबाद समस्या को सुलझाने के लिए आर्य्य समाज का विशेष रूप से मार्ग प्रदर्शन किया है। उनके द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव इस प्रकार है —

यह सभा हैदराबाद रियासत में आर्य्य समाज और आर्य्य समाजियों पर जो अत्याचार हो रहे हैं, उनकी घोर निन्दा करती हुई उस रियासत के आर्य्य निवासियों के साथ हार्दिक सहानुभूति प्रकट करती है।

इस सभा को इस बात का विशेष दु ख है कि रियासत के उच्च अधिकारियों ने सभा के प्रतिनिधियों को बार बार आश्वासन दिए है कि रियासत में आर्य समाज के साथ न्याय पूर्ण व्यवहार किया जायगा। परन्तु सदा उन आश्वासनों को तोड़ा गया है और स्थिति को अधिक से अधिक भयंकर होने दिया है। यह सभा समझती है कि अब दशा बहुत ही बिगड़ गई है और उसकी उपेक्षा करना असम्भव है।

सभा की हैदराबाद रियासत से माग है कि—

(१) गश्ती निशान ५४ को मन्सूख कर दिया जावे।

(२) कवायद तकरीबन मजहबी मन्सूख कर दिये जाय।

(३) कानून अखाडा मन्सूख कर दिये जाय।

(४) खानगी मदरसे की गश्ती मन्सूख कर दी जाय।

(५) फिर्के वारी दगो के मुकदमे की तहकीकात निष्पक्ष कमीशन द्वारा कराई जाय।

(६) बाहर के उपदेशको पर इजाजत की पाबन्दी न लगाई जाय। कोई खिलाफ कानून काम करे तो मुकद्दमा चलाया जाय। जिस का दाखिला बन्द है खोल दिया जाय।

(७) पुस्तके बिना जाच जब्त न किये जावे।

(८) समाचार पत्र के निकालने की आज्ञा दीजाय।

(९) मुसलमान हिन्दु और आर्य्य के त्यौहार मिलकर आने पर उनके मनाने की स्वतन्त्रता रहनी चाहिये।

(१०) आर्य्य समाज, हवन कुण्ड के स्थापित करने के लिए इजाजत की जरूरत न रखी जाए।

(११) जेल खाने मे कैदियों को मुसलमान न बनाया जाय और हमको उन मे प्रचार की आज्ञा हो।

(१२) सरकारी नौकर जो आर्य्य हैं उन पर आर्य्य होने के कारण सख्ती न की जाय।

(१३) आर्य्यों को अपने घरों पर और आर्य्यसमाज पर झडा लगाने की स्वतन्त्रता दी जाये।

(१४) गुलबर्गा निजामाबाद, हैद्राबाद के मुकद्दमों की तहकीकात निष्पक्ष कमीशन द्वारा की जाये।

क्योंकि सभा को दिए गए आश्वासनों की रियासत के अधिकारियो ने कोई परवाह नहीं की, और सभा यह भी आवश्यक समझता है कि सम्पूर्ण आर्य्य जनता को इस आवश्यक प्रश्न के सम्बन्ध मे साथ लेना आवश्यक है इसलिए सभा निश्चय करती है कि पाच मास के अन्दर अन्दर मध्य प्रदेश मे अथवा महाराष्ट्र में किसी ऐसे केन्द्र में जो हैद्राबाद रियासत के समीप हो, एक आर्य्य महा सम्मेलन (Aryan Congress) की जाय जिस मे विशेषतया हैद्राबाद की समस्यापर विचार हो।

सभा की सम्मति है कि यदि रियासत के अधिकारी शीघ्र ही अपनी नीति मे परिवर्तन करने को तैयार नही, तो सम्पूर्ण आर्य्य समाज को सब उचित उपायो से, जिन मे सत्याग्रह भी शामिल है, अपने अधिकारो के लिए लडने के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

यह सभा आर्य रक्षासमिति को आदेश देती है

कि वह इस प्रस्ताव के अनुसार आर्य महा-सम्मेलन के सगठन, तथा अन्य सब आवश्यक उपायों को काम मे लाकर हैद्राबाद मे आर्यसमाज के अधिकारों की रक्षा का प्रयत्न करे।

श्री० पं० मेघराज जी का वध

नारायेण गढ़ (इन्दौर) आर्य्यसमाज के प्रधान श्री प० मेघराजजी की हत्या के समाचार आर्य्य जगत का मिल चुके हैं। हत्यारे कौन और कितने व्यक्ति थे हत्या किस नृशसता और क्रूरता पूवक की गई और हत्या का कारण क्या था ये सब बातें आर्य्य जनता पर पर्याप्त रूप से विदित हो चुकी हैं। अन्यत्र प्रकाशित समाचारों से भी उन पर काफा प्रकाश पड़ता है। हत्या करने वाले हिन्दू धर्म्मानुयायी थ और हत्या का कारण प० मेघराजजी का हरिजनो को इन्दौर दरबार की घोषणाके अनुसार रामनवमीके दिन मन्दिरो मे देवदर्शन कराने का निश्चय और उसको घोषणा थी। यद्यपि इन्दौर दरबार के प्रकाशन विभाग ने हत्या के इस कारण का अखबारो मे खडन किया है और उसका कारण व्यक्तिगत द्वेष प्रगट किया हैं तथापि नारायणगढ आर्य्यसमाज के मन्त्री के वक्तव्य तथा अन्य जिम्मेवार महानुभावों की जाच पड़ताल के परिणामो से जो उन्होने मौके पर पहुंच कर प्रत्यक्ष दर्शियों के बयान मौखिक और लिखित रूपो में लेले-कर की है प्रकाशन विभाग की सूचना की पुष्टि नहीं होती है और हत्याका कारण हरिजनोद्धार कार्य्य ही पुष्ट होता है। यह हत्या रामनवमी के दिन हुई है, स्व० मेघराजजी ने हरिजन बालको और बालिकाओ को सवर्णों के स्कूलों मे दाखिल कराया था हरिजनों की मन्दिरो मे ले जाने की घोषणा की थी और उन सवर्ण लोगो को चुनौती भी दी थी जिन्होंने मन्दिर प्रवेश के लिए हरिजनो को मारने पटने की धमकी दी थी। ये सब बाते सत्यही बतलाई जाती है। ऐसा अवस्था मे इस हत्याका कारण व्यक्तिगत द्वेष किस प्रकार हो सकता है यह समझ मे नही आता। इस हत्या की तह मे व्यक्तिगत द्वेष ही यदि मान लिया जाय जैसा कि बतलाया जाता है कि स्व०मेघराजजी की अपनी बिरादरी वालो से शत्रुता थी तब भी हत्याका तात्कालिक कारण यह द्वष सिद्ध नहीं होता है। लगभग ४० वर्ष हुए जब उनका बिरादरी वालो से अपने किसी कुंए के मामले म झगड़ा हुआ था। ४० वर्ष बाद ठीक रामनवमी के दिन हरिजनोद्धार सम्बन्धी उनके कार्य्यों और घोषणाओ की मौजूदगी मे उनका वध उस व्यक्तिगत द्वेष का कारण हो सकता है इसे कौन मामलेदार व्यक्ति स्वीकार कर सकता है।

हमे आश्चर्य है कि इन्दौर दरबार के प्रकाशन विभाग ने इस प्रकारकी घोषणा क्योंकर निकाली। हमें मालूम हुआ है कि पुलिस इस मामले को दबाने का पूरा २ यत्न कर रही है। आर्य समाज इन्दौर का इस मामले को हाथ मे लेकर इन्दौर दरबारसे न्याय कराना चाहिये हम आर्य जगत की ओर से इन्दौर समाज को विश्वास दिला देना चाहते हैं कि उसको हर प्रकार की सहायता उसे प्राप्त होगी। यदि यदि यह मामला दबा दिया गया तो इस से आर्य समाज के दीवानो की प्रगतियों मे कोई बाधा नही पहुंचेगी। वे अपनी सुनिश्चित प्रथा और मर्यादा के अनुसार कार्य मे दत्त रहेगे। इस प्रकार के वध और हत्याओ की आशङ्का या भय उनके

कर्त्तव्य पालन में कभी भी बाधक नहीं हुई हैं। निश्चय ही यह हत्या उस क्षेत्र में हरिजनोद्धार कार्य में ठीक उसी प्रकार चार चाँद लगायगी जिस प्रकार राजपूतों द्वारा म० रामचन्द्रजी की हत्या ने जम्मू राज्य में चार चाँद लगायें थे। हाँ इस मामले के दबाए जाने से इन्दौर दरबार की प्रशंसनीय घोषणा को क्रियान्वित करने वाले अन्य सुधारकों को बड़ी निराशा होगी जो स्वयं इन्दौर दरबार वा अन्य प्रगति शील सज्जनों को वाँछनीय न होगा। आर्यसमाज अपराधियों को बदले की किसी भी भावना से दण्डित नहीं कराना चाहता है न वह देव मन्दिरों मे हरिजनों के दर्शनों का पक्षपाती है परन्तु वह अपने एक बलिदान को स्वार्थियों के प्रयत्नों के द्वारा विस्मृति की धूलि में विलीन नहीं होने देना चाहता है और इसके लिए वह कोई यत्न उठा न रक्खेगा। आर्य समाज केवल मानवता के अधिकारों की रक्षा के लिये ही देव मंदिरों इत्यादि में हरिजनों के प्रवेश का पक्ष लेता है जिसप्रकार अहमदी उपदेशक के अफ़गानिस्तान मे संग सार किए जाने पर आर्य समाज ने उस घृणा की दृष्टि से देखा था और प्रचार स्वतन्त्रता का माग की थी और उसके लिये यत्न करता है। यह बात हम डके की चोट स्पष्ट कर देना चाहते हैं।

हम किन शब्दों मे स्वर्गीय मेघराजजी के परिवार तथा उनकी धर्म पत्नी आनन्दी बाई के प्रति अपनी सम्वेदना प्रगट करें यह सूझ नहीं पड़ता है। हमारा हृदय उनके दुख में फटा पड़ता है। स्वर्गीय मेघराज जो वस्तुतः मरे नहीं हैं जिस काममें उनकी मृत्यु हुई है वह बड़ा उच्च है और इसमे वे अमर होगये हैं यह सोचकर उनके परिवार को उनके बलिदान पर दुख नहीं वरन हर्ष प्रगट करना चाहिये।

हमारा यह विचार है कि आर्य्यसमाज को इस प्रकार के व्यक्तियो और अन्य कार्य्य कर्ताओंके आश्रित निराधार परिवारों के भरण पोषण इत्यादि की व्यवस्था संगठित रूप से करनी चाहिए। इस घटना ने हमारे इस विचार को बहुत उग्र रूप दे दिया था और हमने मालूम किया था कि स्व० मेघराजजी के आश्रित परिवार को सहायता की जरूरत होगी वा नहीं। मालूम हुआ है उन्हें सहायता की जरूरत नहीं है, उनकी धर्मपत्नी चाहती हैं कि स्व० मेघराजजी की याद में नारायण गढ़ में आर्य्यसमाज तथा हरिजनोद्धार सम्बन्धी पाठशाला इत्यादि के रूप में स्मारक बना दिया जाय। यह विचार शुभ है उसके लिए यत्न होना चाहिए। परन्तु साथही सहायता की व्यवस्था के उपर्युक्त विचार पर गंभीरता पूर्वक विचार करके उसे भी क्रियान्वित करना चाहिए। हम समझते हैं सार्वदेशिक सभा में 'आर्य्य परिवार सहायता निधि' या अन्य किसी उपयुक्त नाम से तत्काल निधि खुलनी चाहिए और उसके लिए आर्य्य जनता को उदारता पूर्वक धन देना चाहिए।

धर्म्मार्य्य सभा—

तिथि १-५-१९३८

नि० स० १

यह सभा श्री पं० चमूपतिजी की मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रगट करती हुई उनके परिवार के प्रति सम्वेदना प्रगट करती है।

नि० स० २

अन्तरंग सभा द्वारा भेजा हुआ वानप्रस्थाश्रम सम्बन्धी व्यवस्थाओं का विषय पेश हुआ। विचार के पश्चात् निम्न निश्चय हुए —

(१) वानप्रस्थियों के लिये पेंशन अथवा अपने पुत्रादि से निर्वाहार्थ धन लेना विहित है परन्तु उन्हें पेंशन से अपना निर्वाहार्थ लेकर शेष धन सार्वजनिक कार्यों मे खर्च कर देना चाहिए।

(२) वानप्रस्थ अपने पूर्व सम्बन्धियों के पास कुछ समय के लिये आवश्यकतानुसार उसी प्रकार ठहर तथा उनसे पत्र व्यवहार कर सकते हैं जिस प्रकार अन्य गृहस्थियों के यहाँ ठहर तथा पत्र व्यवहार करते

हैं।

(३) वानप्रस्थी किसी ऐसी संस्था मे कार्य कर सकते हैं जहाँ उनके आश्रम सम्बन्धी कर्तव्यो में बाधा न पड़े। आवश्यकतानुसार वे भोजन और वस्त्र संस्था से ले सकते हैं, वेतन किसी दशा में भी नहीं ले सकते।

(४) वानप्रस्थी आश्रम में कुटी बना कर रह सकते हैं।

(५) कन्द मूल आदि के स्थान पर इस समय वानप्रस्थियों का भोजन सात्विक दाल रोटी इत्यादि होना चाहिए।

६—उनके वस्त्र कुर्ता और धोती सफेद बिना लाँग की होनी चाहिये और एक पीला दुपट्टा गले मे डालना चाहिए। धोती के नीचे लंगोट पहनना आवश्यक है।

(७) वानप्रस्थियों को देश कालानुसार जटिल अथवा मुण्ड होना चाहिये आंशिक मुण्ड नही होना चाहिये।

(८) वानप्रस्थियों को केवल 'वानप्रस्थ' शब्द से सम्बोधित करना चाहिये गृहस्थो की भाँति लाला जी, बाबू जी इत्यादि से सम्बोधित नहीं करना चाहिये।

नि० स० ५

नोटिस का विषय सं० १—संस्कार विधि के संशोधन का विषय पेश हुआ। श्री प्रधान जी ने विषय का स्पष्टीकरण किया तत्पश्चात् श्री प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने निम्न प्रस्ताव रखा—

गत. २८ ३ ३४ के अधिवेशन म जहाँ तक संशोधन कार्य किया था उसके आगे उसके बाद कुछ नहीं हुआ न उस समय के निश्चय के अनुसार अन्य कोई कार्यवाहि हुई है अत उस पर आगे कार्यवाहि की जाय। इस प्रस्ताव का स्वामी ब्रह्मानंद जी ने अनुमोदन किया।

इस प्रस्ताव पर स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी ने संशोधन प्रस्तुत किया कि निम्न शब्द उपर्युक्त प्रस्ताव में और जोड़ दिये जावे —

संस्कारोकी आर्य विद्वान एक ऐसी संक्षिप्त संस्कार विधि के केवल विधि भाग के आधार पर से पद्धति बनावे जिससे संस्कारो मे उनमे श्रद्धापूर्वक करने मे आर्य जनता की रुचि बढ़े।

प० धर्मदेवजी विद्यावाचस्पति ने संशोधनका अनुमोदन किया।

वाद विवाद क पश्चात् संशोधन पर सम्मति लेने और पक्ष विपक्ष मे ५, ५ सम्मतियाँ आने पर श्री प्रधान जी की सम्मति से संशोधन पास हुआ।

(१) निश्चय हुआ कि वर्तमान संस्कार विधि के संशोधनीय स्थलों को छाँटने तथा संशोधनो की सूची बनान का कार्य निम्न सज्जनो की उप समिति के आधीन किया जाय।

(१) श्री प० भद्रसेन जी (संयोजक)
(२) ,, ,, ब्रह्मदत्त ,, जिज्ञासु
(३) ,, ,, जयदेव ,, विद्यालङ्कार
(४) ,, ,, सूर्यदेव ,, ,,

तथा संक्षिप्त विधि लिखनेका कार्य निम्न सज्जनो के सुपुर्द किया जाय।

(१) श्री स्वामी वेदानन्द जी
(२) ,, प० बुद्धदेव जी
(३) ,, ,, धर्मदेव जी

ये तीनो सज्जन पृथक् पृथक् अपनी अपनी सम्मति के अनुकूल संक्षिप्त विधि बनाकर यथा सम्भव शीघ्र इस सभा के कार्यालय मे भेज देंगे।

केन्द्रीय अनाथालय, रावी रोड, लाहौर की आवश्यकताएं

(ले० ला० बोसाराम, रिटायर्ड स्टोर कीपर N. W. R.)
(मन्त्री केन्द्रीय अनाथालय)

(१) इस समय इस अनाथालय में १७१ बालक बालिकाएं हैं जिनका न केवल पालन पोषण किया जाता है बल्कि उनको धार्मिक तथा सांसारिक शिक्षा देकर अच्छा नागरिक बनाया जाता है। उनके लिए वस्त्रों की आवश्यकता है। दानी सज्जन जहां अपने बालकों के लिये वस्त्र बनवाएं वहां इन बालकों का भी अवश्य ध्यान रखें।

(२) वस्त्रों के अतिरिक्त भोजन के लिये सर्व प्रकारके खाद्यपदार्थ घृतादि की आवश्यकता है। दानी सज्जन घृतादि भेजें अथवा उसके लिये दान देकर कृतार्थ करें।

(३) अनाथालय का व्यय (१५००) रु० मासिक है। वह दानी महाशयों की कृपा से पूरा होगा इस लिये प्रत्येक नर नारी दान देकर इस व्यय को पूरा करें।

(४) बालकों के रहने के लिये स्थान पर्य्याप्त है परन्तु रोगी गृह कोई नहीं है इन में से किसी न किसी का किसी समय रोगी होना स्वाभाविक हैं अतः यदि कोई दानी कमरा बनवाना चाहे तो वह बनवाने की कृपा करें ताकि वह कष्ट दूर हो जावे।

(५) इस अनाथालय के प्रबन्ध के विषय मे यह लिखना पर्याप्त होगा कि सरकार ने जो भगाए गए बालक पकड़े थे और जिनके सम्बधियो का पता नही लगा वे सब बालक इसी अनाथालय मे रखें हैं वा जो अन्य असहाय बालक सरकार के पास आते हैं वे भी इस अनाथालय मे भेजे जाते हैं। यह अनाथालय सरकार की तरफसे Registered भी है इसके हिसाब किताब बराबर रखे और Audit किए जाते हैं।

(६) अनाथालय के बालक कभी बाहर मांगने के लिए नहीं भेजे जाते हैं। उनके पढ़ाने के लिये टैकनीकल स्कूल भी है जो सरकार से स्वीकृत है। इसमे बाहर के बालक भी मुफ्त पढ़ाये जाते हैं।

(७) इसके अधिकारी इस समय निम्न सज्जन है:—

प्रधान-श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

उप प्रधान श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी, उप प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

,, श्री पं० ठाकुरदत्त शास्त्री मुलतानी, लाहौर

,, श्री डाक्टर गणेशीलाल जी M B, B S

कोषाध्यक्ष लाला विज्ञानशील जी B.A, लाहौर।

अंत मे नम्र निवेदन है कि प्रत्येक धर्मप्रेमी सज्जन अपनी शक्त्यानुसार कुछ न कुछ दान देकर सभा का हाथ बटावें और पुण्य के भागी बनें। जो धन इस अनाथालय मे आता है उस को रसीद तत्काल भेजी जाती है।

पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये 'चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस' देहली, से प्रकाशित

ॐ

सार्वदेशिक

वार्षिक विवरणाङ्क

सम्पादक—प्रो० सुधाकर एम० ए०

वार्षिक मूल्य स्वदेश २) एक प्रति का ≈) विदेश से ५ शि० वार्षिक

विषय सूची

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों के प्रचारार्थ बहु संख्या में ये ग्रन्थ एकत्र किये गये हैं और निश्चय किया गया है कि पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन भी कुछ अधिक दिया जावे। छोटे बड़े सभी ग्रन्थ अच्छे कागज पर बड़े आकार में हैं। उनका मूल्य सहित विवरण इस प्रकार है। इनके मँगाने के लिये शीघ्र आर्डर भेजने चाहियें:—

	असली मू०	घटा हुआ मू०
(१) दयानन्द ग्रन्थमाला दो जिल्दों में	४)	२॥)
(२) ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका बढ़िया	१॥)	१)
(३) आर्याभिविनय	।-)	।)
(४) महर्षि का संक्षिप्त जीवन चरित्र मय रंगीन चित्रों के	।)	=)
(५) वेद विरुद्ध मत खण्डनम्	=)॥	=)
(६) गो करुणानिधि	=)	-)॥
(७) शिक्षापत्री	=)	-)॥
(८) भ्रान्ति निवारणम्	=)	-)॥
(९) सत्यधर्म विचार	-)॥	-)
(१०) काशी शास्त्रार्थ	-)	)॥
(११) भ्रमोच्छेदन	-)	)॥
(१२) आर्योद्देश्य रत्न माला	)॥	)॥
(१३) स्वीकार पत्रम्	)॥	)॥

सार्वदेशिक सभा के पुस्तकालय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

(१) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश—

यह महर्षि दयानन्द कृत हिन्दी सत्यार्थप्रकाश का संस्कृतानुवाद है। अनुवादक गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) के संस्कृत विभाग के मुख्याध्यापक श्री पण्डित शङ्करदेव पाठक हैं। अनुवाद की भाषा मधुर एवं सरल है। महर्षि का आशय ज्यों का त्यों प्रगट किया गया है। मूल्य २।) सजिल्द २॥)

मूल्य प्रचारार्थ ।)

(२) प्राणायाम विधि—

यह पुस्तक जिसमें प्राणायाम सम्बन्धी कठिन से कठिन विधियों को सुगम बनाया गया है श्री पूज्यपाद १०८ श्री नारायण स्वामी जी महाराज द्वारा लिखी गई है। प्राणायाम के प्रेमियों की एक बड़ी खोज तथा आवश्यकता इसके द्वारा पूरी हो सकती है। मूल्य -) घटा हुआ मूल्य)॥

(३) दयानन्द लहरी—

इसमें भगवान दयानन्द का जीवन शिखरणी आदि सुन्दर छन्दों में किया गया है। प्रत्येक छन्द के साथ भाषानुवाद भी दिया गया है। पुस्तक के लेखक श्री पं० मेधाव्रत जी कविरत्न हैं। मूल्य -)॥, घटा हुआ मूल्य =)

(४) दश नियम व्याख्याः—

श्री पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति द्वारा यह "दश नियम व्याख्या" नाम की पुस्तक लिखी गई है। इसमें आर्यसमाज के दश नियमों की विस्तृत तथा गवेषणापूर्ण व्याख्या की गई है। मूल्य ।), घटा हुआ मूल्य ≈)

(५) ओम्प्रत्ययः—

यह पुस्तक श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति की लेखनी से लिखी गई है। ओ३म् परमात्मा की विस्तृत व्याख्या विद्यमान है। मूल्य ॥।), घटा हुआ मूल्य ।≈)

(६) वैदिक सिद्धान्तः—

यह पुस्तक भिन्न भिन्न वैदिक सिद्धान्तों पर आर्य्य विद्वानों द्वारा लिखित निबन्धों का अत्युत्तम संग्रह है। मूल्य १।) सजिल्द १।।), घटा हुआ मूल्य ।।।) सजिल्द १)

(७) वैदिक विवाहादर्शः—

इस पुस्तक में वैदिक विवाह का आदर्श प्रस्तुत किया गया है और विवाह सम्बन्धी लगभग सभी आवश्यक बातों पर प्रकाश डाला गया है। मुख्यतया पश्चिमी थ्योरियों के विवेचन पूर्वक विवाह सम्बन्धी वैदिक आदर्शों और शिक्षाओं की श्रेष्ठता प्रतिपादित की गई है। मूल्य १।), घटा हुआ १)

(८) विदेशों में आर्यसमाज का इतिहासः—

जिस पुस्तक को छपाने की मथुरा शताब्दी पर घोषणा की गई थी और जिसके पढने के लिये पिछले आठ वर्षों से देश और विदेशों के आर्य्य-नर नारी बेचैन हो रहे थे वह सार्वदेशिक सभा की ओर से तैयार हो कर छप गई है। पुस्तक में आर्य्य प्रचारकों तथा विदेश की आर्य्य-संस्था आदिकों के लग-भग ११ चित्र हैं। पुस्तक पढ़ने योग्य है। छपाई, सफाई, कागज आकार प्रकार बढ़िया। मूल्य ॥), घटा हुआ ।≈)

(९) यमपितृ परिचय—लेखक श्री पं० प्रियरत्न जी 'आर्ष' मूल्य २), घटा हुआ १)

इस पुस्तक में 'यम और पितृ' प्रकरण वाले वेद मन्त्रों की विद्वत्ता पूर्ण व्याख्या की गई है। स्वाध्याय शील सज्जनों के पढ़ने और संग्रह करने योग्य अनुपम ग्रन्थ है।

(१०) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर—सम्पादक—श्री कृष्णचन्द्र जी विरमानी, मूल्य १।)

पुस्तक की विशेषता यह है कि भिन्न भिन्न महत्व पूर्ण विषयों पर स्वामी जी महाराज की भिन्न भिन्न पुस्तकों व पत्र व्यवहार तक में वर्णित मत को एक जगह संग्रह किया गया है। यह पुस्तक सम्पादक के लगभग ११ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल है। जिस किसी विषय में भी ऋषि दयानन्द की सम्मति जानना चाहो वही प्रकरण इस पुस्तक में देखोगे। पुस्तक बहुत उपयोगी है।

(११) आर्य्य सिद्धान्त विमर्श— प्रथम आर्य्य विद्वत् सम्मेलन के निबन्धों का संग्रह। कतिपय आर्य्य विद्वानों ने गम्भीर विषयों पर अपनी लेखनी द्वारा प्रकाश डाला है। स्वाध्याय शील व्यक्तियों के लिए यह पुस्तक अमूल्य ग्रन्थ का काम देगी। पृष्ठ संख्या लग भग ५०० मूल्य १॥)

(१२) भजन-भास्कर— (दूसरा संस्करण) यह पुस्तक भाव, भाषा, संगीत, छन्द, वैदिक सिद्धान्त शिक्षण इत्यादि की दृष्टि से उत्तम भजनों और कविताओं का संग्रह है। इसमे देश के और आर्य समाज के प्रसिद्ध २ संगीतज्ञों कवियों और भजनोपदेशकों की उत्कृष्ट रचनाएँ हैं। इसमे देश, धर्म, ईश्वर, समाजसुधार, बाल-शिक्षण शुद्धि, ऋषि-महिमा, आर्य्यसमाज महिमा इत्यादि अनेकानेक धार्मिक, सामाजिक और जातीय विषयों पर भजन मौजूद है। संग्रहकर्त्ता श्री पं० हरिशंकर शर्मा कविरत्न (भूत पूर्व सम्पादक आर्य मित्र) हैं। आर्य्यसमाज मे तुकबन्दों की बढ़ती हुई तुकबन्दी को निरुत्साहित करने तथा आर्य्यसमाजों और परिवारों में श्रेष्ठ संगीत को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ही मथुरा की दयानन्द शताब्दी महोत्सव के अवसर पर यह संग्रह तैयार कराया गया था। अब जनता की बढती हुई माग को पूरा करने के उद्देश्य से ही इस सग्रह का दूसरा संस्करण बढ़िया आकार प्रकार इत्यादि मे छपाया गया है। मूल्य ॥)

(१३) सत्यार्थ प्रकाश— (सस्ता संस्करण) - महर्षि दयानन्द सरस्वती की अमर कृति। २० × ३० सोलह पेजी साइज के ८०० से अधिक पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल ।)॥ प्रति १०० प्रति या इससे अधिक लेने पर ।) (चार आना) प्रति।

		अ० मू०	घ० मू०		अ० मू०	घ० मू०
(१४)	वेद में असित शब्द	–)।	–)	(१६) विरजानन्द विजय	।)	≈)
	२५ प्रति का	१।)	१।)	(१७) हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद उर्दू	।)	≈)
(१५)	वैदिक सूर्य विज्ञान	≈)	≈)			

18 Agnihotra—

By Dr Satya Prakash D Sc Lecturer in Chemistry University of Allahabad
Well Bound—Price R 2 8 0

The Author has described in details the process of Agnihotra and has shown that during the process of this fumigation, such products are given out which are bactericidal and vermifugal, and this ancient practice of the Aryans is very healthy, hygienic and productive of physical and spiritual results

"The writer is a **Doctor of Science** He has brought to bear upon the subject all the scientific lore that he has acquired at the University and environments"

—*Ganganath Jha*

"As the book deals with the ancient practice in a systematic manner, I believe, it will be found interesting and useful to readers in the East and in the West, and hence I have a great pleasure in recommending it to the public"

—*N. R. Dhar*

19 Crucifixion by an eye witness—
This valuable book contains a detailed account of the crucifixion of Jesus Christ, given by one who witnessed it with his own eyes—price As 6, Reduced price As

20 Truth and Vedas—
It is an excellent exposition and translation of "Vibhrat"—price As 8. Reduced price A 6

21 Truth Bed Rocks of Aryan culture—
The Subject dealt with in this book is the ideal of truth stating candidly by means of Vedic Mantras and fine stories to what extent the Aryan race has lived to this ideal.—price As 10, Reduced price As 8

22 Torch Bearer—
A biographical sketch of Swami Dayanand.—price Rs. 1/8/- Reduced price Re 1/-

23 Vedic Teachings—
This book contains the most authentic replies to the objections raised about the Vedas by Dr Bhandarkar. The learned author has, besides, brought forth the superiority, the Vedic Teachings contain—price Rs, 1/12/-, Reduced price Rs 1 4/-

24 Voice of Aryavarta—
This little book comes from the pen of Mr T L Vaswani and contains most lucid reflections on Rishi Dayanand and his life and teaching,—price As 8 Reduced price As 2

25 The daily Prayer of an Arya—
This booklet contains an ethical exposition in the light of Modern Thought of our daily Sandhya—price As 4, bound and As 3/- unbound.

26 The Light of the Vedas—
It contains lucid translation of 500 Vedic Mantras. A book worth presenting to people of alien faiths price Rs 1/4/-

27 Commentary on Ishopanishat—
Translated by the late Pt Ghasi Ram M. A L. L. B.—price As. 4.

पुस्तक मिलने का पता:—

कार्यालय—सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा,

श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि-सभा

का

३० वां वार्षिक वृत्तान्त

वियोग

वर्ष का विवरण देने से पूर्व यह प्रगट कर देना आवश्यक है कि इस वर्ष श्री० प० चमूपति जी एम० ए० के निधन से आर्य जगत को महती हानि उठानी पड़ी है।

(१) निर्माण-व्यवस्था

गत वर्ष तक इस सभा में १४ प्रति निधि सभाएँ सम्मिलित थीं। कार्य्य विवरणान्तर्गत वर्ष मे आर्य्य प्रति निधी सभा (दिवाकर) हच गायना अपनी अनियमित और आर्य्य समाज विरोधी कार्य्य वाहियो के कारण अन्तरग सभा तिथि ६-६-१६३७ के नि० स० २ के अनुसार सभा से पृथक् की गई। इस वर्ष जो प्रति निधि सभाएँ इस सभा मे सम्मिलित रहीं उनके नाम और उनके प्रति निधि सदस्यो की सख्या प्रत्येक के सामने निम्न प्रकार दी जाती है —

नाम सभा		प्रतिनिधि सदस्यों की संख्या
१ आर्य्य प्रतिनिधि सभा	पंजाब	७
२ ,, ,, ,,	सयुक्त प्रान्त	७
३. ,, ,, ,,	राजस्थान	३
४ ,, ,, ,,	विहार	५
५ ,, ,, ,,	बम्बई	५
६ ,, ,, ,,	बंगाल	५
७. ,, ,, ,,	मध्य प्रदेश	३
८. ,, ,, ,,	निजाम राज्य	२
९. ,, ,, ,,	नैटाल	४
१०. ,, ,, ,,	मौरिशास	१
११. ,, ,, ,,	फिजी	५

१२.	आर्य्य प्रतिनिधि सभा	सिन्ध	×
१३.	„ „ „	सुरी नाम	×
		उच गायना	×
			४२

नियमानुकूल वे आर्य्य समाज जिनके आर्य्य सभा सदों की संख्या ५० या अधिक हो और जो प्रति वर्ष दशांश इस सभा को देवें वे इस सभा में प्रविष्ट हो सकते हैं। इस वर्ष ११ आर्य्य समाजें इस सभा में प्रविष्ट रहीं।

	नाम समाज	प्रतिनिधियों की संख्या
१.	गाजियाबाद	×
२.	खुर्जा	×
३.	बरेली	१
४.	बरादाव	×
५.	देहली शाहदरा	×
६.	मद्रास	×
७.	टिप्लीकेन	×
८.	सूलै	[illegible]
९.	मंगलौर	[illegible]
१०.	देहली	[illegible]
११.	बंगलौर	×
		१

प्रतिष्ठित और आजीवन सदस्य

इस वर्ष निम्न महानुभाव सभा के प्रतिष्ठित और आजीवन सदस्य रहे—

प्रतिष्ठित सदस्य

(१) श्री महात्मा नारायण स्वामी जी
(२) „ स्वामी सर्वदानन्द „
(३) श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी
(४) „ स्वामी ब्रह्मानन्द ,

आजीवन सदस्य

(१) श्री० म० वेद मित्र जिज्ञासु जी
(२) „ ला० ज्ञानचंद „
(३) श्री बाबू ज्योति स्वरूप जी
(४) श्री लाला रलाराम „

(५) श्री ला० नारायण दत्त जी
(६) ,, पं० मूलचन्द्र ,,
(७) श्री पं० गंगा प्रसाद जी चीफ जज
(८) ,, दीवान तुल्जाराम ,,

इस वर्ष के अन्त में यह सभा १३ प्रतिनिधि सभाओं ११ आर्य्य समाजों के ४५ प्रतिनिधि सदस्यों ४ प्रतिष्ठित और ८ आजीवन कुल ५७ सभा सदों का समुदाय थी।

(२) सभा के अधिकारी और अन्तरंग सदस्य

गत वर्ष की अपेक्षा कार्य्य विवरणान्तर्गत वर्ष में अधिकारियों तथा अन्तरंग सदस्यों में क्या अन्तर हुआ था यह प्रगट होजाय इस लिये दोनों वर्षों के अधिकारियों और अन्तरंग सदस्यों के नाम नीचे दिये जाते हैं —

गत वर्ष के अधिकारी

(१) श्री महात्मा नारायण स्वामी जी प्रधान
(२) ,, स्वा० स्वतन्त्रानन्द ,, उप ,,
(३) ,, पं० गंगाप्रसाद जी चीफ जज उपप्रधान
(४) ,, बा० घनश्यामसिंह जी ,,
(५) श्री ला० देशबन्धु जी मन्त्री
(६) ,, ,, नारायणदत्त ,, कोषाध्यक्ष
(७) ,, ,, ज्ञानचंद ,, पुस्तकाध्यक्ष

कार्य्य विवरणांतर्गत वर्ष के अधिकारी

(१) श्री बा० घनश्यामसिंह गुप्त प्रधान
(२) ,, ,, गंगा प्रसाद जी चीफ जज उप ,,
(३) ,, स्वामी स्वतन्त्रानन्द ,, ,, ,,
(४) ,, प्रो० सुधाकर ,, मन्त्री
(५) श्री डा० युद्धवीरसिंह जी उप मन्त्री
(६) ,, ला० नारायणदत्त ,, कोषाध्यक्ष
(७) ,, ,, ज्ञानचंद ,, पुस्तकाध्यक्ष

गत वर्ष के अन्तरंग सदस्य

(१) श्री० प्रो० सुधाकर जी एम० ए० (राजस्थान)
(२) ,, पं० वेदव्रत ,, (बिहार)
(३) ,, म० नगीनदास ,, (बम्बई)
(४) ,, बा० पूर्णचन्द्र ,, (प्रवासियोंके प्रतिनिधि)
(५) ,, बा०ज्योतिस्वरूप ,, (आजीवन सदस्यों के प्रतिनिधि)
(६) ,, डा० श्यामस्वरूप ,, (समाजों के प्रतिनिधि)
(७) ,, पं० चमूपति ,,
(८) श्री म० कृष्ण जी
(९) ,, पं०इन्द्र ,,
(१०) ,, आचार्य रामदेव ,,
(११) ,, पं० ज्ञानचन्द ,,
(१२) ,, प्रो०महेन्द्रप्रताप ,,
(१३) ,, बा० पीतमलाल ,,
(१४) , बा० श्रीराम ,,

कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष के अन्तरंग सदस्य

(१) श्री० पं० वेदव्रत जी	(विहार)	(८) श्री बा० ज्योतिस्वरूप जी		
(२) ,, म० नगीनदास ,,	(बम्बई)	(९) ,, बा० श्रीराम ,,		(युक्त प्रान्त)
(३) ,, बा० पूर्णचन्द्र ,, प्रवासियों के प्रतिनिधि		(१०) ,, प० धुरेन्द्र ,		,,
(४) ,, ला० देशबन्धु ,, (समाजों के प्रतिनिधि)		(११) ,, बा० मदन मोहन ., सेठ		.
(५) ,, नारायण स्वामी ,,		(१२) ,, पं० ज्ञानचन्द ,,		(पंजाब)
(६) ,, म० कृष्ण .		(१३) ,, ,, इन्द्र ,,		,,
(७) ,, कुँवर चान्दकरण ,,		(१४) ,, आचार्य रामदेव,,		,,

अन्तरंग सभा तिथि ३-१०-३७ के निश्चय स०३ के अनुसार श्री० प०धुरेन्द्रजी शास्त्री के स्थान मे श्री कुँवर हुक्मसिंह जी अन्तरंग सदस्य निर्वाचित हुए।

(३) मद्रास प्रचार

इक वर्ष मद्रास प्रान्त में सभा की ओर से निम्न प्रचारक काम करते रहे:—

१ श्री पं० धर्म देव जी (कर्नाटक) मैसूर
२ ,, ,, केशव देव जी (आंध्र तामल) मद्रास
३ ,, ,, नारायणदत्त जी (दक्षिण केरल)
४ श्री पं० साधु शिव प्रसाद जी (उत्तर केरल)
५ ,, ,, मदन मोहन विद्याधर जी (आंध्र)

श्री पं० केशवदेव जी ज्ञानी ने १८ मई १९३७ से सभा की वैतनिक सेवाओं से अपने को मुक्त करके अवैतनिक रूप से प्रचार कार्य किया। प० जी के स्थानपर १६ सितम्बर १९३७ से श्री प० मदन मोहन विद्याधर जी स्नातक गुरुकुल कागड़ी नियुक्त हुए और वे विजगापट्टम को प्रचार केन्द्र बनाकर प्रचार कार्य्य करते रहे। इन प्रचारकों के अतिरिक्त श्री मती देवी विद्यावती जी धर्म पत्नी श्री पं० धर्म्म देव जी, भी अवैतनिक प्रचारिका के रूप में अपने पतिदेव के साथ प्रचार कार्य्य में योग देती रहीं।

कर्नाटक (मद्रास)

मौखिक प्रचार—बंगलौर शहर, बंगलौर छावनी, मैसूर, हिन्दू पुर, कान्कन हल्ली, गौरी-बेदनूर, टिप्पूर, दावन गेरे, हैद्राबाद, कंगेरी शूलै, राज पुरम, श्री रामपुर, मावल्ली इत्यादि स्थानों पर प्रचार किया गया।—

लेख बद्ध प्रचार—इस वर्ष निम्न लिखित पुस्तक तथा ट्रैक्ट लिखे और प्रकाशित किए गए-

(1) Thunder Voice of Rishi Dayananda.

यह ट्रैक्ट ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर प्रकाशित हुआ।

(2) The significance of the Vedic Sanskars—Outline of the Vedic Marriage Ceremony

(3) Yogiraj Shri Krishna and the Arya Samaj

यह ट्रैक्ट कृष्ण-जयन्ती के अवसर पर प्रकाशित किया गया।

(4) The Mission and Message of Rishi Dayananda

ऋषि निर्वाणोत्सव के अवसर पर यह ट्रैक्ट प्रकाशित हुआ।

(५) वैदिक धर्म आर्य समाज प्रश्नोत्तरी।

यह पुस्तक हिन्दी से कनरी मे अनूदित हुई।

उपर्युक्त ट्रैक्टों के अतिरिक्त मगलौर आर्य समाज की तरफ से वैदिक धर्म ग्रन्थ माला के ६ पुष्प वेदों का महत्व' 'वैदिक धर्म का महत्व' 'शकर रामानुज दयानन्द' 'सस्कार' 'श्राद्ध निर्णय' 'पूजा रहस्य' इत्यादि विषयो पर इस वर्ष प्रकाशित हुए।

पर्व्व और सम्मेलन

पर्व्व

इस वर्ष ऋषिबोधोत्सव, आर्य समाज स्थापना दिवस, श्रावणी उपाकर्म, कृष्ण जयन्ती, विजया दशमी, ऋषि निर्वाणोत्सव, श्रद्धानन्द दिवस, वसंत पचमी इत्यादि पर्व्व बड़े समारोह पूर्वक कर्नाटक तथा केरल के अनेक नगरों और ग्रामों मे मनाए गए तथा आर्य समाज के प्रचार मे इन पर्व्वों का अधिक से अधिक उपयोग किया गया। इन सब पर्व्वों में हरिजन भाई बहु संख्या मे सम्मिलित होते रहे और उनके साथ सब आर्य भाई प्रेम और समानता पूर्वक भोजन तथा मिष्टान्नाहार आदि करते रहे।

सम्मेलन

इस वर्ष निम्न लिखित सम्मेलनों की आयोजना वैदिक धर्म प्रचार तथा समाज सुधारार्थ की गई जिन में सभा के प्रचारकों ने विशेष क्रियात्मक भाग लिया —

एक देव सम्मेलन (One God Conference)

२ एक धर्म सम्मेलन (One Religion Conference)

ये दोनों सम्मेलन ३० मार्च १९३७ को कनानौर के निकट चौवा में सभा के प्रचारक श्री पं० धर्मदेवजी के सभापतित्व में हुए।

(३) समाज सुधार सम्मेलन—यह सम्मेलन बेंगलौर में ३० जनवरी १९३८ को श्री स्वामी भारतानन्द जी (Mr Maurice—एक पौलैन्ड निवासी सज्जन ने संन्यास ग्रहण किया हुआ है तथा आर्य्य धर्म और संस्कृत के अत्यधिक प्रेमी हैं) के सभा पतित्व में हुआ। इस में श्रीमती लोकसुन्दरी

रमन (सर. सी० वी० रमन की सुयोग्य धर्म्म पत्नी) श्रीमती नम् जम्मां B H L T. प्रो० यामुना चार्य M. A श्रीयुत सम्पत आयंगर रिटायर्ड जज इत्यादि प्रतिष्ठित देवियों और सज्जनों के बाल-विवाह, जाति भेद, अस्पृश्यता, दहेज प्रथा इत्यादि कुप्रथाओं के विरुद्ध भाषण हुए और समाज सुधार विषयक प्रस्ताव पास हुए।

इस के अतिरिक्त सभा के प्रचारक श्री० प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति ने अखिल भारतीय ओरियन्टल कान्फ्रेंस में जो २० से २२ दिसम्बर १९३७ तक त्रिवेन्द्रम में हुई थी आर्य्यसमाज के प्रतिनिधि केरूप में भाग लिया और "वैदिक यज्ञाना महिंसात्मकत्वम्" इस विषयपर संस्कृत में अंग्रेजी भाषा नुवाद सहित निबन्ध पढ़ कर सुनाया। इसी अवसर पर सभा के प्रचारक ने ट्रावन्कोर के महाराजा को फल-भोज के अवसर पर जो महाराज ने सम्मेलन के विद्वान प्रतिनिधियों को अपने राज प्रसाद में दिया था और जिसमें सभा के प्रचारक भी आमन्त्रित किये गए थे, आर्य्यसमाज का हिन्दी अंग्रेजी और कनरी का साहित्य भेंट किया।

इस अवसर पर भिन्न २ धर्म्मों के देश और विदेश के प्रसिद्ध २ प्रतिनिधियों और सज्जनों से सभा के प्रचारकों का विचार विनिमय हुआ और उन्हें आर्य्य साहित्य भेंट किया गया।

संस्कार—

इस वर्ष वैदिक संस्कारों को लोक प्रिय बनाने का विशेष प्रयत्न किया गया। इस विषय में मौखिक तथा लेखवद्ध दोनों प्रकार के उपायों का आश्रय लियागया। इस वर्ष निम्न सस्कार हुए.—

११ विवाह संस्कार, २ नाम करण, १ मुंडन १ गृहप्रवेश, ६० यज्ञोपवीत,—

इन संस्कारों में श्रीमती डाक्टर भाग्यम्मा ऐम बी. वी ऐस, ऐफ. आर सी का आन्ध्र विश्व विद्यालय के उपाध्याय डा० पुरुषोत्तम एम ए., पी यच डी के साथ विवाह संस्कार विशेष उल्लेखनीय है। देवी जी ईसाई धर्म्म से आर्य्य धर्म मे दीक्षित हुई हैं।

शुद्धि—

इस वर्ष लगभग १७० ईसाइयों की शुद्धि की गई जिनमे सवसे अधिक उल्लेखनीय ईसाई मिशनरी रेवरेंड भद्रप्पा की पुत्री डा० भाग्यम्मा एम बी बी ऐस. जो मैडिकल कालेज विजगापट्टम में प्रोफेसर हैं, की शुद्धि है।

इन शुद्धियों के अतिरिक्त दावनगेरे (मैसूर राज्य) मे २०० हरिजनों को ईसाई बनने से बचाया।

अछूतोद्धार—

हरिजनोद्धार का कार्य्य इस वर्ष भी प्रचारकों की प्रचार-प्रगतियों का एक मुख्य अंग रहा है। इस वर्ष हरिजनों में ५ विवाह संस्कार तथा १० यज्ञोपवीत संस्कार वैदिक रीति से कराएगए तथा

आर्य्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशनों में वे बहु सख्या मे भाग लेते रहे। इसके अलावा उनमें व्याप्त मद्य मांसादि सेवन की बुरी आदतों, अन्यान्य मामाजिक कुरीतियों, तथा उनके विविध नागरिक कष्टों के निराकरण का यत्न होता रहा है।

आर्यसमाज स्थापना

कंगेरी में एक आर्य्य समाज की स्थापना की गई।

इस समाज को मिलाकर अब तक इस भाग मे निम्न समाजें स्थापित हुई हैं .—

(१) मंगलौर (२) बेंगलौर (३) मैसूर (४) तीर्थहल्ली (५) कासर गोड (६) कुकरपुर (७) नलनागढ़ी (८) वेलगांव (९) हुब्ली (१०) पुत्तुर (११) होस दुर्ग (१२) हिंगी पड़क (१३) रामचन्द्र पुरम (१४) कार्कल (१५) कन्नानौर (१६) हिन्दू पुर (१७) देवनहल्ली (१८) बंगलौर छावनी (१९) कंगेरी।

आन्ध्र

मौखिक प्रचार

विजगा पट्म, एल्लूर, नाड़ी पल्ली. गूड़ा. बरहामपुर, पन्डूर, (विजयनगर स्टेट)

कक्षाएँ

विजगा पट्म में पहली दिसम्बर ३७ से 'आर्य्य हिन्दी विद्यालय' की स्थापना की गई। विद्यार्थियों की संख्या लगभग ३० है। २० विद्यार्थियों को दक्षिण-भारत हिन्दी प्रचार सभा की परीक्षाओं के लिए तय्यार किया गया। कई वकील भी इस विद्यालय में हिन्दी का अध्ययन करते रहे हैं। आर्य्य समाज की शिक्षाओं के प्रचार की दृष्टि से भी यह प्रयोग सफल रहा है।

संस्कार

१ विवाह तथा २ नाम करण सस्कार कराए गए।

लेख-बद्ध प्रचार

१२ पुस्तकें उड़िया भाषामे लिखी तथा अनुवादितकी गईं। सत्यार्थ प्रकाश उड़ियामें छप चुका है। तेलुगु भाषा में भी आर्य समाज के साहित्य के निर्माण की व्यवस्था की जा रही है।

मालावार (केरल)

मौखिक प्रचार

इस वर्ष तिरुवल्ला, कोट्टयम, मूवाटयला, आलप्पी, कुताट कुलम, कालड़ी, कन्याकुमारी, वेल्लूर, त्रिवेन्द्रम, कोचीन, कन्नानौर, कल्ली कट, सीलोन, लंका पालघाट इत्यादि में प्रचार हुआ।

लेखबद्ध प्रचार

वैदिक संध्या, प्रार्थना पुस्तकें मलयालय भाषा में अनूदित तथा दो ट्रैक्ट मलयालय में लिखे तथा प्रकाशित किए गए।

शुद्धि

इस साल मण कीड़, तिरुवेचूर, कुमार नेल्लौर, मूवाटपुला, वेल्लूर, वेल्लु, कट्टा, और पाकिल इन स्थानों पर ४१६ ईसाइयों की शुद्धि की गई।

संस्कार—१ वैदिक विवाह कराया गया।

कक्षाएं

इस वर्ष निरन्तर हिन्दी क्लास लगती रहीं। कुछ समय पर्य्यन्त संध्या क्लासें भी जारी रहीं। इन क्लासों में उपस्थिति लगभग ३० के रही।

गत अक्टोबर मास में श्री स्वामी स्वतन्त्रा नन्द जी उप प्रधान सभा, सभा के मद्रास प्रचार के निरीक्षणार्थ मद्रास प्रान्त में गए। सभा के प्रचार केन्द्रों विज़गापट्टम बरहामपुर, बंगलौर, मद्रास, कोटयम, कनानौर तथा विविध आर्य्य समाजों में कार्य्य का निरीक्षण किया। उनकी रिपोर्ट सभा में विचाराधीन है। मद्रासप्रान्त में आर्य प्रतिनिधि सभा तथा मालावार में ईसाइयोंसे हिन्दुओं की रक्षार्थ अनाथालय के ढंग पर किसी सस्था की स्थापना का प्रश्न उठ रहा है। सभा इस प्रान्त में आर्य्य समाज के कार्य्य को सगठित तथा उन्नत करने पर गंभीरता पूर्वक विचार कर रही है।

(४) पहाड़ी इलाकों में प्रचार

गढ़वाल और कुमायू प्रदेश में वर्ष पर्य्यन्त प्रचार होता रहा। श्री० प्रो० महेन्द्र प्रताप जी देहरादून की अध्यक्षता में म० रघुवरदयालु जी तथा म० खुशहालसिंह जी द्वारा गढ़वाल मे तथा श्री० बा० बद्रीप्रसाद जी (हल्द्वानी) की अध्यक्षता में श्री० प० शान्ति स्वरूप जी द्वारा कुमायू में प्रचार हुआ। सभा इन दोनों सज्जनों को धन्यवाद देती है। प्रचार कार्य्य का विवरण इस प्रकार है —

गढ़वाल

इस वर्ष उपदेशकों ने एक एक हजार मील से अधिक पैदल यात्रा करके लगभग ५०० ग्रामों में ६०-६५ हज़ार व्यक्तियों तक वैदिक धर्म्म का सदेश पहुंचाया है। ३ नाम करण, ३ चूड़ा कर्म, ६ यज्ञो पवीत तथा ३ विवाह सस्कार वैदिक रीति से कराये गए। १ विधवा का पुनर्विवाह कराया गया।

"१० मवासों के ५० आदमियों की शुद्धि हुई। इसके अतिरिक्त ४ ईसाईयों तथा १ मुसलमान की शुद्धि की गई।

३ नए आर्य्य समाज स्थापित हुए तथा ८६ नए सदस्य बनाए गए।

१६ आर्य्य समाजों का निरीक्षण किया गया। पौड़ी आर्य्य समाज के सत्संगों को नियमित किया गया।

१०० सत्यार्थ प्रकाश तथा २५ सस्कार विधि वितीर्ण किये गये।

१० मेलों म प्रचार किया गया जिन में बैमासी तथा देहरादून का झंडे का मेला उल्लेखनीय है।

कुमायूं

इस वर्ष निम्न स्थानों पर प्रचार किया गया —

हल्द्वानी, काशीपुर, राम नगर, चैनपुरी, गो जानी, चोपडा, लेडी. रामपुर ढकली, कुन्दन पुर. भूवरा, बास खेड़ा, रानी खेत, अल्मोड़ा सोमेश्वर, गारुड, नागेश्वर, बैजनाथ, बास, पिथौरा गढ़ इत्यादि।

२०० व्याख्यान हुए। ४ वैदिक विवाह तथा २ विधवा विवाह हुए। १ मुंडन संस्कार तथा २० यज्ञोपवीत संस्कार कराये गये, १६ शिल्पकारों को शुद्धि हुई। अगल्या, पिछोरा गढ़, बड़ा बाजार, रहमतगंज इन स्थानों पर ४ आर्य्य समाज स्थापित हुए तथा १५० आर्य्य समाज के सदस्य बनाए गए। ८ मेलों मे प्रचार किया गया।

पहाडी इलाकों मे प्रचार का व्यय श्री० सेठ जुगल किशोर जी विड़ला के धन से हुआ। सभा श्री सेठ जी की इस सहायता के लिए कृतज्ञ है।

श्री० पं० ज्ञानेन्द्र सिद्धान्त भूषण का कार्य

श्री० पं० ज्ञानेन्द्र जी मई १९३७ से वर्ष पर्यन्त अवैतनिक रूप में बम्बई प्रान्त के गुजरात प्रदेश में बीली मोरा में हैड क्वाटर बना कर सभा की ओर से प्रचार कार्य्य करते रहे। प्रचारकार्य्य का विवरण इस प्रकार है —

मौखिक प्रचार

बलसाड़ बीली मोरा, गोलबड़, पारडी और मरोली आदि हाई स्कूलों में प्रतिमास २ बार प्रचार हुआ। इसके अतिरिक्त सीसोदरा, सोनम, गंगाधरा, सूरत, विजलपेट, कासिकबंडी, हरीपुरा अहमदाबाद, विश्वनगर, बम्बई, नवसारी, आनन्द, बड़ौदा आदि स्थानो पर प्रचार किया गया।

लेख बद्ध

निम्न ट्रैक्ट प्रकाशित किये गये —

(१) वैदिक धर्म की सार्वभौमता (२) बालकोपयोगी धर्म शिक्षा (३) मूर्ति पूजा रहस्य (३) सहशिक्षण एक रोग।

वर्ग—हिन्दी तथा संस्कृत क्लासें नियम से चलती रहीं।

संस्कार—२ नामकरण १ विवाह ३ उपनयन संस्कार कराए गए।

मेला—५१ वें राष्ट्रीय महासभा के हरिपुरा अधिवेशन मे वैदिक धर्म के प्रचार मे भाग लिया गया।

पुस्तकालय

विकाऊ पुस्तकों का विवरण

गत वर्ष

	पुस्तक	मूल्य
गत वर्ष का स्टाक	२३३१८	१६१७६।।।≡)
आय	१६	२०।।।=)
योग	२३३३७	१६२००।।।–)
बिक्री तथा फ्री वितरण	८१६२	६२३७।–)
१५३० शा० वृत्तान्त		
शेष	१५१७५	१७६६३।।)

कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष

	पुस्तक	मूल्य
गतवर्ष का स्टाक	१५१७५	१२६६३।।)
आय	२	४।।)
योग	१५१७७	१७६६८=)
बिक्री तथा फ्री वितरण	२१२१	१४२३।–)
शेष	१३०५६	११५४४।।≡)

सार्वदेशिक पत्र

आय

ग्राहकों तथा विज्ञापन से	१०७६।।।)

व्यय

कागज	१६४)
छपाई	८४६।=)।
वेतन लेखक	३००)
डाक व्ययादि	३३३।=)।
	१६७३।।।)।।
घाटा	५६७)।।

गत वर्ष पत्र के ५२२ ग्राहक थे तथा घाटा ४०८।।।)।। था। इस वर्ष के अन्त पत्र पर ४१६ ग्राहक तथा घाटा ५६७)।। है।

कार्यालय व पत्र व्यवहार

कार्यालय मे जो पत्र व्यवहार इस वर्ष हुआ उसका विवरण इस प्रकार है :—

	गत वर्ष	कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष
आने वाले पत्रों की संख्या	१८७२	१११४
जाने वाले ”	३५४८	२४४२

इस पत्र व्यवहार के अतिरिक्त २ पत्रिकाएँ आर्य्य-समाज के संगठन को दृढ़ करने तथा आर्य्य विवाह ऐक्ट के प्रचलन की प्रेरणा के साथ प्रान्तिक सभाओं तथा आर्य समाजों को भेजी गई।

प्रान्तिक सभाओं के द्वारा आर्य पर्वों की सूचि आर्य विवाह ऐक्ट सम्बन्धी सभा द्वारा निर्धारित घोषणा पत्र, तथा ग्राम प्रचार की स्कीम भी समाजों में सरक्युलेट की गईं।

कार्यालय में गत वर्ष की नाईं इस वर्ष भी २ लेखक और एक चपरासी काम करते रहे। इनका १०७) मासिक व्यय रक्षा सार्वदेशिक और कार्यालय ३ विभागों में इस प्रकार विभाजित रहा—

कार्यालय	५२)
रक्षा समिति	२७॥)
सार्वदेशिक पत्र	२७॥)
	१०७)

अधिवेशनों का विवरण

इस वर्ष इस सभा की साधारण सभा का १ तथा अन्तरंग सभा के ५ अधिवेशन हुए जिनमें सभा सदों की उपस्थिति का विवरण इस प्रकार है—

साधारण सभा

१. श्री० आचार्य्य रामदेव जी	×	१५. ,, प्रो० सुधाकर जी	१
२. श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति	१	१६. ,, कुँवर चान्दकरण ,,	१
३. श्री० म० कृष्ण जी बी० ए०	१	१७. ,, पं० भगवान् स्वरूप ,,	१
४. ,, पं० विश्वम्भरनाथ जी	१	१८. ,, राय बहादुर ठाकर—	×
५. ,, ,, बुद्धदेव ,,	१	ब्रजनन्दन सिंह ,,	×
६. ,, ,, ज्ञानचन्द ,,	१	१९. ,, पं० वेदव्रत ,,	×
७. ,, ,, भीमसेन ,,	१	२०. ,, पं० दीनानाथ जी विद्याऽलंकार	×
८. ,, बा० मदन मोहन सेठ ,,	१	२१. ,, बा० राजेन्द्र प्रसाद जी वकील	×
९. ,, पं० गंगाप्रसाद उपा० ,,	१	२२. ,, स्वा० रामानन्द ,, संन्यासी	×
१०. ,, बा० गङ्गाधर प्रसाद ,,	१	२३. ,, स्नातक सत्यव्रत ,,	×
११. ,, कुँवर हुक्म सिंह ,,	+	२४. ,, पं० हरिशंकर ,,	×
१२. ,, प्रो० महेन्द्र प्रताप ,,	१	२५. ,, बा० कल्याणदास देसाई	×
१३. ,, बा० प्रीतमलाल ,,	१	२६. बा० नटवर लाल वकील	×
१४. ,, बा० श्रीराम ,,	१	२७. , नगीनदास कापड़िया	×

२८. श्री	बा० हरिगोविन्द जी गुप्त	×
२९. ,,	पं० सुखदेव जी	×
३०. ,,	सेठ कृष्णलाल पोद्दार जी	×
३१. ,,	पं० दीनबन्धु वेद शास्त्री जी	×
३२ ,,	बा० विष्णुदास वासल	×
३३ ,,	प्रो० शिवदत्त ज्ञानी एम० ए०	×
३४ ,,	लक्ष्मैया नरसैया जी	१
३५ ,,	पं० विनायक राव जी	×
३६. ,,	,, दत्तात्रेय ,,	'
३७ ,,	स्वा० भवानीदयालु जी सन्यासी	×
३८. ,,	आर० के० कपीटेन	
३९ ,,	सत्यदेव जी	×
४०. ,,	बा० घनश्याम सिंह जी	१
४१. ,,	बी० ए० मेघराज ,,	`
४२. ,,	स्वा० ब्रह्मानन्द ,	
४३. ,,	डा० श्याम स्वरूप ' ,	
४४ श्री	म० वेद मित्र जिज्ञासु जी	×
४५ ,,	ला० ज्ञानचन्द ,,	१
४६ ,,	,, रलाराम मेलाराम जी	१
४७ ,,	प० मूलचन्द जी	१
४८ ,,	ला० नारायण दत्त जी	१
४९ ,	प० गगा प्रसाद चीफ जज	१
५० ,,	बा० ज्योति स्वरूप जी	१
५१ ,,	महात्मा नारायण स्वामी जी	१
५२ ,,	स्वा० स्वतन्त्रा नन्द ,,	१
५३ ,,	बा० पूर्णचन्द ,	१
५४ ,,	ला० देशबन्धु ,,	१
५५ ,,	डा० युद्धवीर सिंह ,	१
५६. ,,	स्वा० सर्वदानन्द ,	१
५७ ,,	दीवान तुलजाराम ,	१

अन्तरङ्ग सभा

	१४-३-३७	२२-३-३७	६-६-३७	३-१०-३७	९-१-३८	य.ग
श्री बा० घनश्यामसिंह जी	०	०				३
, पं० गगाप्रसाद जी	१	१	१			३
,, स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी	१		१	१		४
,, प्रो० सुधाकर जी	१	१		१	१	४
, डा० युद्धवीरसिंह जी			१		१	२
,, ला० नारायण दत्त जी		१	१	१		३
, पं० वेदव्रत जी						.
,, म० नगीनदास जी						
, बा० पूर्णचन्द्र जी		१	१			२
,, ला० देशबन्धु जी		१				१
,, नारायण स्वामी जी	१	१		१	१	४
',, म० कृष्ण जी		१				१

श्री कु० चान्दकरण शारदा जी		१		१	१	३
,, बा० ज्योतिस्वरूप जी	१	१	१	१	१	५
,, ,, श्रीराम जी		१	१			२
,, प० धुरेन्द्र जी						
,, बा० मदनमोहन सेठ जी		१	१			२
,, प ज्ञानचन्द्र जी		१	१	१		३
,, , इन्द्र जी			१		१	२
, आचार्य रामदेव जी						
, ला० ज्ञानचन्द्र जी	१		१	१	१	४
,, बा० प्रीतमलाल	१					१
. कु० हुक्मसिंह जी					१	१
	८	१४	११	८	६	

आर्य्य रक्षा समिति

इस वर्ष समिति का संगठन इस प्रकार रहा —

सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि

१ श्री महात्मा नारायण स्वामी जी
२ , बा० घनश्यामसिंह ,,
३ , स्वा० स्वतन्त्रानन्द ,,
४ म० कृष्ण ,,
५ , कु० चान्दकरण शारदा ,,
६ , बा० श्रीराम ,,
७ श्री बा० पूर्णचन्द्रजी
८ , ला० नारायण दत्त ,,
९ ,, ,, ज्ञानचन्द्र ,,
१० ,, प्रो० सुधाकर ,,
११. ,, ला० देशबन्धु ,,

आर्य्य वीरदल के प्रतिनिधि

१ श्री म० देशराज जी
२ , म० रतिराम जी
३ , प० मिश्रीलाल जी
४ श्री प० पन्नालाल जी
५. , स्वा० ब्रह्मानन्द जी

नामज़द किये हुए प्रतिनिधि

१ श्री ला० अमोलकराम जी
२ ,, प० शिवदयालु जी
३ , बा० शिवचन्द्र जी
४ श्री प० धर्म्म वीर जी
५. ,, भक्त फूलसिंह जी

इस वर्ष समिति के निम्न अधिकारी रहे :—

१. श्री महात्मा नारायण स्वामी जी प्रधान

२. „ स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी उप प्रधान

३. „ ला० देशबन्धु प्रधान मन्त्री तथा दलपति

४. „ ला० नारायण दत्त जी कोषाध्यक्ष

आर्य्य रक्षा समिति की निधि का कुल धन वर्ष के अन्त में २६८६०॥=) १० पाई था। जिसमें से २५०००) स्थिर निधि है।

आर्य्य वीर सेवा दल

आन्दोलन तथा श्री. बा० शिवचन्द्र जी, सहायक मन्त्री आर्य्य रक्षा समिति के दौरे के फलस्वरूप इस वर्ष निम्न आर्य्य वीर दल स्थापित हुए —

(१) मेरठ सिटी (२) मुरादाबाद (३) चन्दौसी (४) बरेली (५) हरदोई (६) लखनऊ (७) फ़ैजाबाद (८) बनारस (९) मिर्जापुर (१०) इलाहाबाद (११) फतेहपुर (१२) कानपुर (१३) आगरा (१४) इन्दौर (१५) शाजा पुर।

इस सभा तथा प्रान्तिक सभाओं के यत्नों के फल स्वरूप आर्य्य वीरदलों के प्रति आर्य्य-समाजों और आर्य्य जनता की दिलचस्पी जाग्रत हो रही है और यदि आर्य्य समाजों ने अपने कर्त्तव्य का यथोचित रीति से पालन किया तो निकट भविष्य मे ही बहुत से सुसंगठित दल हो जायेंगे।

आर्य्यवीर दल सम्मेलन मेरठ

इस वर्ष मेरठ में आर्य्य प्रतिनिधि सभा सयुक्त प्रान्त की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर श्री ला० देशबन्धु जी के प्रधानत्व में आर्य्य वीर दल सम्मेलन हुआ जिसमे कई प्रस्ताव पास हुए। जिनमें विशेषरूप से आर्य्य जगत की हर प्रकार की सेवा तथा जनोपकारक कार्य्य के लिये सुसंगठित और सुनियन्त्रित आर्य्य वीर सेवा दलों की स्थापना और सगठन पर बल दिया गया—

इसी अवसर पर श्री०बा० शिवचन्द्रजीके उद्योग से संशोधित सगठनके अनुसार संयुक्त प्रान्तीय आर्य्यवीर सेवादल समिति का निर्माण हुआ और श्री बा० तेजनारायण जी वकील लखनऊ प्रान्तिक दल पति निर्वाचित हुए। आशा है उनके तत्वावधान में दल का अच्छा कार्य्य होगा।

देहली आर्य्यवीर सेवादल

देहली के आर्य्य वीर सेवादल की अवस्था बहुत शिथिल हो गई थी, उसकी अवस्था ठीक करके नवीन निर्वाचन कराया गया। आशा है आगे उसका कार्य्य पूर्व की नाईं ठीक ठीक रीति से होता रहेगा।—

पानीपत और शाजापुर के नगर कीर्तन

पानीपत

पानीपत मे आर्य्य समाज का नगर कीर्तन पिछले ४० वर्षों से निकलता आ रहा था। इस वर्ष कुछ मुसलमानो की माग पर सरकार द्वारा नगर कीर्तन पर कुछ अनुचित प्रतिबन्धों के लगने की चर्चा छिड़ी थी। पानीपत के आर्य्य भाई अपन ४० वर्ष के पुराने अधिकारों की रक्षार्थ कटिबद्ध हो गए थे और आर्य्य समाजों की वर्तमान नीति के प्रतिकूल विरोध रूप में नगर कीर्तन स्थगित न करने का उन्होने फैसला कर लिया था और साथ ही वे हर प्रकार की कुर्बानी करने के लिए तय्यार हो गए थे। सार्वदेशिक सभा तथा आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने हर प्रकार की उनकी सहायता करने का फैसला करके उन्हे आवश्यक सहायता प्रदान की। श्री० लाला देशबन्धु जी ने पंजाब सरकार के प्रधान मन्त्री सर सिकन्दर हयात खा तथा अन्य अधिकारियों से मिलकर आर्य्य समाज के अधिकारों की रक्षा के लिए प्रयत्न किया। इस सभा ने भी श्री लाला जी के प्रयत्नों में आवश्यक योग दिया, तथा पंजाब सरकार से आवश्यक लिखा-पढ़ी की। आर्य्य जगत् को पानीपत समाज की रक्षार्थ सहायता के लिए प्रेरणा की और प्रसन्नता है आर्य्य जगत आशा से अधिक सहायता के लिए कटिबद्ध हो गया। आर्य्य समाजों ने अपने ? जत्थे आवश्यकतानुसार सत्याग्रह के लिए भेज दिए। श्री पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी, श्री स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी उपप्रधान सार्वदेशिक सभा श्री० बा० शिवचन्द्र जी गुप्त स० मन्त्री रक्षा समिति व आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के श्री० प० ज्ञानचन्द जी, श्री० राय साहब अमृतराय जी तथा श्री० डा० लालचन्द जी तथा अन्यान्य आर्य्य नेता और आर्य्यवीर नगर कीर्तन वाले दिन पानीपत पहुँच गए। आर्य्य समाज के इन प्रयत्नों और कटिबद्धता का नतीजा यह हुआ कि नगर कीर्तन पर कोई प्रतिबन्ध न लगा, और नगर कीर्तन सानन्द समारोह के साथ निकल गया। इसका यह भी परिणाम हुआ कि रामलीला आदि हिन्दू त्यौहारों पर जो प्रतिबन्ध लगाये गए थे वे भी सरकार को हटाने पड़े।

शाजापुर (ग्वालियर)

ता० १० अप्रैल १९३७ को आर्य्य समाज शाजापुर (ग्वालियर) के नगरकीर्तन पर कई सौ मुसलमानो ने आक्रमण किया। सभा ने स्थिति की जाच के लिये श्री बा० शिवचन्द्र जी को शाजापुर भेजा तथा आर्य्यसमाज की रक्षा और बलवाइयों के प्रति उचित व्यवहार के लिये ग्वालियर सरकार को प्रेरणा की गई। श्री शिवचन्द्र जी ने स्थिति की जाच करके और यह सन्तोष करके कि आर्य्य समाजियों के प्रति अन्याय हुआ है, शाजापुर के डि० मजिस्ट्रेट, सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलीस, डि० इन्सपेक्टर जनरल आदि अफसरो से भेट की जिन्होंने आर्य्य समाजियों की मुसलमानों से भविष्य मे रक्षा का आश्वासन दिलाया। बलवे मे ६५ मुसलमान गिरफ्तार हुए थे और उनपर मुक़द्दमा चल रहा है।

अजमेर का झगड़ा

अजमेर के आर्य्य भाइयों मे पिछले कई वर्षों से आपस मे झगडा चला आता था। इस वर्ष इस झगड़े ने बड़ा उग्र रूप धारण कर लिया था और सभा का हस्ताक्षेप नितान्त आवश्यक हो गया था। फलत: सभा ने हस्ताक्षेप का फैसला करके मामले की जांच और रिपोर्ट के लिये श्री शिवचन्द्र जी को अजमेर भेजा। उन्होने अपनी विस्तृत रिपोर्ट सभा में पेश की। इसके बाद श्री डा० युद्धवीर सिह जी मन्त्री सभा मामले को शान्त करने के लिये अजमेर गये और उन्होंने पूरा २ यत्न किया। अन्त में जनवरी ३८ मे श्री बा० घनश्याम सिंह जी प्रधान सभा, डा० युद्धवीरसिंह जी तथा श्री बा० शिवचन्द्र जी के साथ अजमेर गए और उन्होंने दोनों पक्षों से बातचीत और विचार विनिमय करके निम्न फैसला किया और मामला शान्त कर दिया।

१—सब मुकद्दमात उठा लिये जावे या खारिज करा दिये जावें। इस कार्य्य का भार श्रीमान् चादकरण जी शारदा तथा श्रीयुत दत्तात्रेय जी बावले पर सौपा जाता है जो इसे शीघ्रातिशीघ्र संपन्न करके सार्वदेशिक सभा को सूचित करेंगे।

२—एक दूसरे के विरुद्ध और किसी भी संस्था के विरुद्ध कोई नोटिस बाजी न होगी।

३—अजमेर में जितनी आर्य्य समाजें हैं, उन सब का पृथक अस्तित्व प्रबन्ध आदि रहेगा जब तक कि वे स्वयं स्वतन्त्रता पूर्वक सम्मिलित होना न चाहें।

४—एक वर्ष के लिये वहां के सब आर्य्य समाजों का साप्ताहिक अधिवेशन और पर्व, आदि पर, अधिवेशन एक ही साथ और एक ही जगह में हुआ करेगा।

इन अधिवेशनों में—

१. श्री कुँवर जालिमसिह जी प्रधान होगे।

तथा—

२ श्री पं० सूर्य्यदेव जी शर्मा मन्त्री होंगे।

सम्मिलित अधिवेशन मे निम्न नियम लागू होंगे —

५—[क] अजमेर के प्रत्येक आर्यसमाज का प्रत्येक सभासद उपस्थित हो सकेगा।

[ख] उस आर्य समाज के मन्त्री जिन २ को अपने समाज का मेम्बर बनावें वह मान्य होगा, और उस पर कोई बहस इस सम्मिलित अधिवेशन में न होगी।

[ग] इस सम्मिलित अधिवेशन की बैठक के लिये श्रीमान जालिमसिंह जी की सूचना पाने पर स्थान बिछावन आदि की सुविधा तथा आर्य समाज के भवन के उपयोग की अनुमति उस आर्य समाज का मन्त्री देगा, जिसके पास कुंवर साहब सूचना भेजें।

[घ] सम्मिलित अधिवेशनों को सुचारु रूप से चलाने का अधिकार तथा जिम्मेवारी कुंवर साहब पर पूरी पूरी होगी। उस सम्बन्ध में उनकी बातें सब को मान्य होंगी।

६—हर एक आर्य समाज प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित रहेगा और केसर गंज स्थित आर्यसमाज अगले निर्वाचन पर अपने प्रतिनिधि नियमानुसार भेजेगा।

७—अजमेर तथा अन्य किसी स्थान का जो भी आर्य समाज अपना जो नाम बतावें वह प्रतिनिधि सभा को मान्य होगा और उसी नाम से वह आर्य समाज निर्दिष्ट होगा। यदि एक ही नाम के दो या अधिक आर्य समाज हों तो पते में भिन्नता की जावेगी नाम में नहीं।

८—हर एक आर्यसमाज का भवन व अन्य स्थावर सम्पत्ति प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम रजिस्ट्री की जावेगी। इस कार्य के लिये केसरगंज स्थित आर्य समाज अजमेर को दो वर्ष की मुहलत दी जाती है।

९—जो भी कोई आर्य किसी भी आर्य समाज में प्रवेश होना चाहे उसे पूर्ण स्वतन्त्रता होगी। किसी को सदस्य न बनाने तथा सदस्यता से पृथक करने का अन्तिम अधिकार सार्वदेशिक सभा के हाथ में रहेगा आर्य समाज अपनी रिपोर्ट भेजेगा।

१०—इस सम्बन्ध में तथा अन्य कोई झगड़ा जो उपस्थित हो वह श्रीमान् प्रिन्सिपल शेषाद्रि जी तथा श्रीमान् प्रोफेसर देवकीनन्दन जी के सामने निर्णय के लिये पेश किया जावेगा और उनका निर्णय मान्य होगा उनके निर्णय पर यदि किसी को एतराज हो तो वह सार्वदेशिक सभा को दरख्वास्त दे सकता है परन्तु सार्वदेशिक सभा के निर्णय होने तक उक्त महानुभावों का फैसला मान्य रहेगा।

११—सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा को आशा है कि उक्त दोनों बातों के यथोचित पालन होने पर किसी को किसी व्यक्ति के विरुद्ध या किसी संस्था के विरुद्ध शिकायत का मौका न रहेगा, तथापि यदि किन्हीं खास शिकायत की विद्यमानता रही तो सार्वदेशिक सभा उन पर उचित विचार और अनुसन्धान करके उचित कार्यवाही करेगी।

प्रसन्नता है, श्री प्रधान जी के उक्त फैसले पर दोनो पक्ष अमल कर रहे हैं। वहां का वातावरण शान्त है। अभी आर्य्य समाज का कार्य्य पारस्परिक सहयोग पूर्वक हो रहा है।

भीलों में प्रचार तथा सहायता कार्य्य

मध्य भारत के राज्यों में वर्षा की कमी से जून ३७ के लगभग दुर्भिक्ष फैल गया था वहां के भील लोगों की जो खेतीके लिए सर्वथा वर्षा पर आश्रित रहते हैं हालत खराब होगई थी। साहूकारों ने कर्जा देना बन्दकर दिया था और वे भूखे मरने लगे थे। दुर्भिक्षके समाचारों के प्राप्त होते ही आर्य्य समाज और हिन्दू मिशन रक्षार्थ भीलों में पहुँच गए। इस सभा की ओर से श्री शिव चन्द्र जी गए। उन्होंने रतलाम, उज्जैन, झाबुआ, दोहद, बामनिया, पीलेडगंज, थांदला, मेघ नगर तथा इन्दौर इत्यादि में भ्रमण और भीलों की स्थिति का अध्ययन करके झाबुआ को केन्द्र बनाकर लगभग १॥ मास

पर्य्यन्त सेवा सहायता और प्रचार कार्य्य किया। भीलों की मुख्यतया ईसाइयों से रक्षा तथा उनमे प्रचार कार्य्य की एक स्कीम सभा के विचाराधीन है।

झाबुआ में प्रचार

झाबुआ तथा बांसवाड़ा राज्य के दीवान तथा अन्य उच्च पदाधिकारियों से बाबू शिवचन्द्र ने आर्यसमाज के प्रचार के सम्बन्ध मे बातचीत की। इस बातचीत का उन पर अच्छा प्रभाव पड़ा। उन्हे आर्य्य समाज का अंग्रेजी साहित्य भी भेंट किया गया।

श्री बा० शिवचन्द्र जी का मौखिक तथा लेखबद्ध प्रचार कार्य्य

अंग्रेजी के प्रसिद्ध साप्ताहिक इंडियन सोशियल रिफार्मर 'बम्बई' के सम्पादक श्री नटराजन जी ने पिछले दिनों एक लेख के सिलसिले में अप्रासंगिक रूप से आर्य्य समाज और ऋषि दयानन्द की अनुचित आलोचना की थी। श्री० बा० शिवचन्द्र जी ने उस आलोचना का उत्तर 'रिफार्मर' तथा लीडर, हिन्दुस्तान टाइम्ज, सर्चलाइट, हिन्दू, आउटलुक तथा अन्य अंग्रेजी और हिन्दी, उर्दू के समाचार पत्रो में प्रकाशित कराया साथ ही संपादक महोदय को आर्य्य समाज सम्बन्धी साहित्य भेजा जो उन्होंने धन्यवाद पूर्वक स्वीकार किया।

श्री० बा० शिवचन्द्र जी ने आर्य्यवीर दलों के संगठनार्थ तथा अन्य कार्यार्थ प्रचारयात्राओ का वैदिक धर्म के प्रचार मे मुख्यतया विद्यार्थियो में आर्य्य समाज का संदेश पहुंचाने में पूरा २ उपयोग किया। उनका इन्दौर, बनारस और चन्दौसी के कालेजो के छात्रों में प्रचार कार्य्य विशेष उल्लेखनीय है।

हैद्राबाद राज्य

पिछले दिनो गुन्जोटी में आर्य्यवीर वेदप्रकाश का मुसलमानों द्वारा वध किया गया जिसका वृतान्त समाचार पत्रों में प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार हुपला ग्राम में तीन जीवित हिन्दुओ को मुसलमानों ने जला दिया। आर्य्य समाजियों पर झूठे मुकदमे चलाये जाने के समाचार भी सभा मे प्राप्त हुये। इन सब बातो की तहकीकात तथा एक क्रमबद्ध विवरण तैयार करने तथा हैद्राबाद राज्यमें आर्य्य समाज की वर्तमान परिस्थिति का अध्ययन करने के लिये श्रीशिवचन्द्रजी हैद्राबाद गये। उन्होंने श्री पं० बन्सीलाल जी मन्त्री आ० प्र० सभा निजाम राज्य के साथ १—हैद्राबाद, २—सिकन्दराबाद, ३—बीदर, ४—कल्बोमागडी, ५—हुपला, ६—उदगीर, ७—अहमदपुर, ८—लातूर, ९—उसमानाबाद, १०—तुलजापुर, ११—गुरूम, १२—गुन्जोटी, १३—उमरगाह, १४—हुमनाबाद, १५—माणिकनगर, १६—हल्लीखेड का दौरा किया। गुन्जोटी, हुपला तथा अन्य स्थानों पर वास्तविक घटनाओं को नोट किया।

तथा कई लोगों के बयान लिये । इन सारी घटनाओं तथा बयानात की एक पृथक फायल तैयार की जारही है ।

वे हैद्राबाद मे मिस्टर एस० टी हो लेन्स, आई० पी० ऐस० डाईरेक्टर जनरल पुलिस निजाम राज्य तथा अन्य अधिकारियों से मिले और निजाम राज्य मे आर्य्य समाज की कठिनाइयों के सम्बन्ध में बात चीत की । उन्होंने हैद्राबाद, लातूर आदि स्थानों में हिन्दू तथा आर्य्यों की काफी भीड़ों मे व्याख्यान भी दिये ।

हैद्राबाद राज्य में आर्य्य समाज की समस्या के सम्बन्ध मे उन्होंने अपनी रिपोर्ट पृथक पेश की है जो अन्तरंग सभा मे विचाराधीन है ।

आर्य्य समाज मद्रास के मुकदमे

इस वर्ष हिन्दू मुस्लिम झगड़े की आड़ मे मद्रास मे पुलिस द्वारा आर्य्यों पर सख्तियें हुईं और उन पर झूठे मुकदमें चलाए गए। आर्य्य समाज मद्रास ने मुकदमों की पूरी २ तन देही से पैरवी की । प्रसन्नता है सब आर्य्य समाजी निर्दोष प्रमाणित होकर छूट गए । इन अभियोगों में सभा ने १५०) मद्रास समाज को सहायतार्थ दिए ।

बरहाम पुर ट्रस्ट

इस वर्ष भी इस ट्रस्ट का कार्य्य संचालन श्री० वत्स पांड्या जी तथा म० बबलेश्वर जी की सहायता पूर्वक होता रहा। सभा के प्रचारक श्री० प० मदन मोहन जी विद्याधर समय २ पर इसका निरीक्षण करते रहे है । सभा के उप प्रधान जी ने भी इस वर्ष इस संस्था का निरीक्षण किया है । यह देखने का यत्न किया जा रहा है कि यह संस्था उड़ीसा मे प्रचार के लिए मुख्यतया आर्थिक दृष्टि से कहाँ तक सहायक हो सकती है । इस वर्ष आर्य्य समाज के प्रचार तथा गोरक्षण का जो कार्य्य हुआ वह इस प्रकार है —

आर्य्य समाज प्रचार कार्य्य

मौखिक प्रचार—आश्रम मे तथा उसके निकट वर्ती स्थानों मे आर्य्य समाज का प्रचार किया गया । आश्रम मे आर्य्य समाज की स्थापना हो गई है जिस के वर्ष के अन्त में लगभग ४० सभासद् थे । भविष्य मे यहां प्रचार कार्य्य की बड़ी आशा है ।

लेख बद्र—१२ टैक्ट श्री० वत्स पाड्या जी द्वारा उड़िया भाषा में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ लिखे गए ।

इस वर्ष भी रुग्ण तथा स्वस्थ्य गऊ, बैल और बछड़े लगभग २३ पशुओं को आश्रम में आश्रय दिया गया । इस आश्रम को गोपालन के आदर्श आश्रम का रूप दिए जाने का यत्न जारी है । आश्रम को उन्नत और व्यवस्थित करने के लिए सभा के निरीक्षण मे ही बरहाम पुर तथा रसूलकुण्डा के कुछ प्रतिष्ठित दानी महानुभावो की एक उपसमिति बनाए जाने का यत्न हो रहा है ।

आय व्यय

ट्रस्ट को इस वर्ष ज़मीन के लगान, अन्य बिक्री चन्दे और दूध की बिक्री इत्यादि से ६५४॥≈) की आय तथा सरकारी माल गुज़ारी गोशाला और आश्रम के प्रबन्धादि मे ६५४॥≈) का व्यय हुआ।

सार्वदेशिक भवन

इस वर्ष यह भवन नवम्बर ३७ तक श्री डा० पी० यन० भार्गव जी के पास १२५) मासिक किराये पर रहा। हाउस तथा वाटरटैक्स पर १२१॥≡) व्यय हुआ। दुख है म्यूनिसिपल कमेटी के नल के फट जाने से भवन फट गया है और उसका अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। म्यूनिसिपल कमेटी से हर्जाने के लिए लिखा पढ़ी हो रही है।

बलिदान भवन

इस वर्ष इस भवन की तीसरी मंजिल का निर्माण हुआ। इस निर्माण तथा भवन की अन्य आवश्यक मरम्मत इत्यादि में ७४६३) व्यय हुआ। भवन के नीचे की दूकानों तथा दूसरी मंजिल में कार्यालय के किराए से १३१०) की आय हुई। आगामी वर्ष से नीचे की दूकानों का १०) मासिक किराया बढ़ गया है। सार्वदेशिक भवन के किराये की बचत से तीसरी मंजिल का निर्माण हुआ है।

भूकम्प निधि

इस वर्ष इस निधि के सूद से ५) मासिक की १ छात्रवृत्ति बिहार के एक होनहार और ग़रीब विद्यार्थी को जारी रखी गई।

दलितोद्धार सभा

गत वर्ष की नाईं इस वर्ष भी इस सभा का प्रबन्ध निम्न सज्जनों की एक उपसमिति के अधीन रहा :—

(१) श्री प्रो० सुधाकर जी
(२) ,, ला० नारायणदत्त जी
(३) ,, ,, ज्ञानचन्द जी

श्रद्धानन्द नगरी की भूमि तथा समाज मन्दिर इत्यादि इमारतों की रक्षा और व्यवस्था का कार्य श्री म० रामानन्द जी के अधीन रहा। इमारतों की न केवल व्यवस्था और रक्षा ही समुचित रीति से की गई वरन् इमारतों में एक कमरे की वृद्धि भी की गई। एक और दूसरे कमरे के बनवाए जाने का यत्न होरहा है उसके लिये एक दानी सज्जन ने धन देने का वचन दिया है।

इस वर्ष श्रद्धानन्द नगरी समाज का उत्सव बड़ी धूम धाम से मनाया गया तथा वर्ष पर्यन्त

समाज का कार्य उत्तम रीति से होता रहा। उत्सव के अवसर पर देहली क्लाथ मिल के श्री ला० शंकरलाल जी ने १००) दान देने की कृपा की। सभा उनको इस सहायता के लिए धन्यवाद देती है।

श्रद्धानन्द नगरी विद्यालय का कार्य भली भाँति चलता रहा है। वर्ष के अन्त मे विद्यालय में ३ अध्यापक तथा १०० से अधिक विद्यार्थी थे।

दुःख है दयानन्द पाठशाला समैपुर की ग्रान्ट का देहली के शिक्षा विभाग ने अभी तक कोई फैसला नहीं किया है। उन से बराबर पिछले दो साल से लिखा पढ़ी हो रही है। खेद है इस वर्ष समैपुर के खेती के कुएँ को सिचाई योग्य बनाए जाने का कार्य नहीं हो सका है आशा है यह कार्य शीघ्र ही हो जायगा।

आर्य विवाह ऐक्ट

इस ऐक्ट के प्रचलन मे सहायता और आवश्यक मार्ग प्रदर्शन के लिए श्री. प्रधान सभा ने हिन्दी और अंग्रेजी मे इस वर्ष इसकी व्याख्या लिखी। यह व्याख्या प्रकाशित होगई है, इसके अतिरिक्त अन्तरङ्ग सभा ने इस ऐक्ट के सम्बन्ध मे जनता के मार्ग प्रदर्शन के लिए अपनी ६-१-३८ की बैठक मे निम्न महत्व पूर्ण प्रस्ताव पास करके प्रतिनिधि सभाओ मे समाजो तक पहुंचाने के लिये सरक्यूलेट किया है।

"आर्य विवाह एक्ट के लिए 'आर्य समाजी' का परिभाषा नियत करने के सम्बन्ध मे उप समिति के सदस्यों की सम्मतिया तथा उन पर श्री प्रधान जी की रिपोर्ट पढ़ी गई। विचार के बाद सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि श्री प्रधान जी द्वारा निर्धारित निम्न दोनो फार्म स्वीकृत किए जावे।

इस सभा की यह भी स्थिर सम्मति है कि आर्यसमाज के उपनियमो मे 'आर्य' और 'आर्य सभासद' का जो परिभाषा है वह केवल आर्य समाज के संगठन के लिए ही है और विस्तृत आर्य जगत के लिए नहीं है अत जो प्रधान जी द्वारा प्रतिपादित घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर करेंगे वे 'आर्य विवाहएक्ट' को मशा के भीतर आर्य समाजी होंगे, इसमे सन्देह नहीं

घोषणा पत्र न० (१)

मैं ... पुत्र/पुत्री ... निवासी ... तहसील ... जिला ... उम्र ... पेशा ... घोषणा करता/करती हूँ कि मै आर्य समाजी हूँ और श्रीयुत ... के पुत्र/पुत्री ... के साथ जिसकी अवस्था ... की है और आर्य समाजी भी है, विवाह करना चाहता/चाहती हूँ ... ह ... ... घोषणा करने वाला/वाली

तिथि

हमारे सामने उक्त घोषणा की गई और हस्ताक्षर भी हुये।

...

ह० मन्त्री आर्य समाज

तिथि ....

...

ह० प्रधान आर्य समाज

तिथि ...

हस्ताक्षर अन्य उपस्थित सज्जन गण

घोषणा पत्र सं० (२)

मैं पुत्र/पुत्री ... निवासी तहसील

जिला उम्र पेशा घोषणा करता/करती हूँ कि तिथि को शुद्धि करा के आर्य समाजी हो गया/गई हूँ। मैं यह भी घोषणा करता/करती हूँ कि मै आर्य समाजी हूँ और श्रीयुत .. के पुत्र श्रीयुत/पुत्री श्रीमती .. के साथ जिसकी उम्र है, और जो आर्य समाजी भी है, विवाह करना चाहता/चाहती हूँ

शुद्धि से पूर्व मैं .. था*/थी ह० .. घोषणा करने वाला/वाली

तिथि

हमारे सामने उक्त घोषणा की गई और हस्ताक्षर भी हुए।

ह० मन्त्री आर्य समाज ह० प्रधान आर्य समाज

तिथि .... तिथि...

हस्ताक्षर अन्य उपस्थित सज्जन गण

वैदिक आश्रम ऋषिकेश

इस आश्रम की भूमि १००० मुरब्बा गज है। १९३५ के जून मास मे इस भूमि ४ कुटियो तथा १ कुएँ इत्यादि की लगभग ३००७।-) की मालियत को रजिस्ट्री इस सभा के नाम हुई थी। रजिस्ट्री हो जाने के समय से इस समय तक लगभग ५०००) की मालियत के मकान बन चुके है जिन का विवरण इस प्रकार है --

(१) आर्य्य समाज मन्दिर
(२) यज्ञ शाला
(३) एक गुफा
(४) ११ कुटियाएँ (८ पुरुष वार्ड की)
(३ स्त्री " ")
(५) सदरद्वार
(६) २ रसोई घर
(७) १ स्नानागार

पिछले ५ वर्षों मे आश्रम को ८०४४॥।-)॥। की आय तथा ७६५४॥≡) की व्यय हुआ।

आश्रम मे साधु संन्यासी और वानप्रस्थी निवास करते है। प्रतिमास पूर्णिमा और अमावस्या तथा रविवार को सत्संग तथा प्रचार होता है। समय २ पर उपनिषदों इत्यादि की कथाएं और

* मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी, इत्यादि

प्रवचन भी होते रहते हैं। श्री० स्वा० देवानन्द जी महाराज का प्रचार में सब से ज्यादा योग रहता है। सभा उनको धन्यवाद देती है।

इस आश्रम का प्रबन्ध सभा ने वानप्रस्थाश्रम के अधीन किया हुआ है। सम्प्रति श्री० स्वामी शुक्लानन्द जी आश्रम का प्रबन्ध बड़ी तत्परता और परिश्रम से कर रहे हैं। एक प्रकार से आश्रम का अस्तित्व और वर्तमान रूप उन्हीं के प्रयत्नों का फल है। सभा उनकी सेवाओं के लिए उन्हें धन्यवाद देती है।

धर्म्मार्य्य सभा

इस वर्ष २३--३--३८ को इस सभा का वृहदधिवेशन हुआ जिस में नियोग सम्बन्धी अन्तरंग सभा का निम्न निर्णय स्वीकार किया गया। संस्कार विधि के संशोधन के सम्बन्ध में सदस्यों तथा अन्य विद्वानों की सम्मतियां काफी संख्या में प्राप्त हो गई हैं। आशा है, आगामी वर्ष इस विषय पर विचार करके निर्णय हो जायगा।

निश्चय सं० ४

नोटिस का विषय सं० ४ आर्य्य समाज ननकाना साहब (पंजाब), का नियोग सम्बन्धी पत्र अन्तरंग सभा तिथि ३१--३--३८ के निश्चय सं० १ के साथ पेश हुआ। उक्त समाज ने इस सम्बन्ध में व्यवस्था चाही थी कि कोई व्यक्ति जो सिवा नियोग के आर्य्य समाज के प्रत्येक सिद्धान्त को मानता हो और उस पर अमल भी करता हो आर्य्य कहला सकता है, यदि हो तो क्या वह किसी समाज का सदस्य भी बन सकता है या नहीं? विचार के बाद निश्चय हुआ कि आर्य्य समाज नियोग को आपत्काल का धर्म मानता है और इसी रूप में यह आर्य्य समाज का सिद्धान्त है जिसका समर्थन करना आर्य्य समाज का कर्त्तव्य है। जो इसके विरुद्ध प्रचार न करे, वह आर्य्य समाज का सभासद रह सकता है।

बम्बई समाज का मामला

बम्बई प्रतिनिधि सभा तथा आर्य्य समाज बम्बई में गत कई वर्षों से मनोमालिन्य चला आता था। श्री प्रधान सभा ने इसे हल करने का उद्योग किया। और उन्हें अपने मिशन में सफलता भी मिली। वे इस झगड़े के अन्त के लिए पूर्ण प्रयत्न कर रहे हैं आशा है सदैव के लिए यह झगड़ा शान्त हो जायगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली

२८-२-३८ को समाप्त होने वाले वर्ष

का

आय-व्यय

आय		व्यय	
विविध दान	३७८॥)	मद्रास प्रचार	२७२६॥≡) १०
सूद और मकान किराया	२८३३॥) २	सार्वदेशिक पत्र का घाटा	५६७) ६
पंचमांश (प्रान्तिक सभाओं से)	३०४=)	कागज छपाई पोस्टेज और स्टाफ व्यय १६७३॥)॥	
दशांश	५॥-)	आय चन्दे व विज्ञापन से १०७६॥)	
	३५२२≡)२	कार्य्यालय	१८८६=
घाटा वर्ष का	१७८६॥-) ३	प्रौवीडेन्ट फंड	५८=
		घिसाई टाइप राइटर	२७॥
	५३०८॥) ५		५३०८॥) ५

For Jagdish Prasad & Co,

(*Sd*) **Jagdish Prasad**

B A, B COM G D A R A.

Registered accountants

Auditors

Chandni Chowk,
Delhi.
19th. April 1938.

वास्ते जगदीश प्रसाद एँड कम्पनी

(ह०) जगदीशप्रसाद

बी० ए०, बी० कॉम० जी० डी० ए० आर० ए०

रजिस्टर्ड एकाउन्टेन्ट आडीटर्स

चांदनी चौक देहली
१९-४-३८

(*Sd*) Raghunath Prasad Pathak
Accountant
19-4-38

(*Sd*) Sudhakar M A
Secretary

(*Sd*) Swatantra Nand
President

ह० रघुनाथप्रसाद पाठक
एकाउन्टेन्ट

ह० सुधाकर एम० ए०
मन्त्री

ह० स्वतन्त्रानन्द
प्रधान

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा देहली

बैलैन्स शीट

२८-२-३८

१०३२५१) स्थिरनिधियाँ

५००००) देशदेशान्तर प्रचार
२५०००) रक्षा
२००००) सार्वदेशिक भवन
५०००) चन्द्रभानु वेद मित्र निधि
२०००) गंगाप्रसाद गढ़वाल प्रचार
६५०) शिवलाल वेद प्रचार
५०१) ढोढाराम चूडामणि
१००) होमा महतासुन्दर देवी

१२७५०) विशेष फन्ड

६०००) बिहार
१५००) काशमीर
३०००) दलितोद्धार
२२५०) दयानन्द आश्रम

३८१–) ६ कर्म्मचारियों का प्रौवीडेन्ट

१६५२२॥=) ४ पुस्तक प्रचार निधि

२५३३५॥।–) विविध फन्ड

६१३१।≡) सार्वदेशिक भवन
४८६०॥=) १० रक्षा (चलत)
३८५४।) ७ बिड़ला वेद प्रचार
३२६७॥–) ६ देशदेशान्तर (चलत)
२७६६॥≡) ६ अमेरिका प्रचार
१२७२) विदेश निधि
१०८६।॥) ६ मार्ग व्ययार्थ डच गायना
६५६=) ६ आसाम रिलीफ़
३५१≡) टंकारा निधि
१६३॥≡) ६ दयानन्द

४६६४७।≡) ६ जमीन तथा इमारतें

२२५५७।–) ६ सार्वदेशिक भवन पिछला
१८७) वृद्धि इस वर्ष
२२७४४।–) ६
१५७००) गत शेष बलिदान भवन
७४६३–) ६ इस वर्ष की वृद्धि
२३१६३–) ६
१०१०) गाजियाबाद भूमि

३००) टाइप राइटर

३३७॥) गत शेष
३७॥) घिसाई
३००)

२६०००) पाटौदी हाउस ट्रस्ट

५००३३≡) ५ इन्वेस्टमेंट

२५०००) गवर्नमेन्ट लोन
१३२३१) कैश सर्टिफिकेट सेन्ट्रल बंक
३८२३१)
१०) आर्य्य साहित्य मण्डल अजमेर शेअर
११७६२≡) ५ पीपल बैंक

१८८३१॥–) ३ पुस्तकालय

८११२॥≡) ६ विविध उधार

४६५०॥–) ३ पाटौदी हाउस ट्रस्ट (सूद)
४६॥) ३ देहली इलै० कम्पनी

दलितोद्धार

१६०॥=) ३ सूद चन्द्रभानु निधि

१४५।–) ६ सूद काशमीर फंड

१२३।=) ६ आर्य्य मैरेज

१०६॥।) विद्वत सम्मेलन

१००) सुमाटरा आर्य्य समाज

८६।=) ७ सूद दयानन्द आश्रम

५०) सूद गंगाप्रसाद ट्रस्ट

१६॥) ६ नाथूराम स्मारक फंड

८॥।=) ३ सूद बिहार निधि

२०४५)६ विविध अमानतें

१००) दीवानचन्द ट्रस्ट

१३३०=) ३ सेठ बैजनाथ भरथिया

५३४॥।=) ३ विविध अमानतें

८०) प्रचारकों की अमानतें

१६०२८५॥–) ४

३०००) दीपचन्द कृष्णलाल कलकत्ता

४१५॥=) विविध

३३८५॥।≡) २ नक़द और बैंकों में

३७८।) पंजाब नेशनल बैंक देहली

१≡) ३ सेन्ट्रल बैंक देहली

३२१।=) ५ पोस्ट आफिस से० बैंक

१७५॥।=) ६ स्टाफ इम्प्रेस्ट

२५०६≡) कैश हाथ में

३६७४।=) ६ घाटा खाता

१८८७॥।–) ३ गत वर्ष का

१७८६॥–) ३ इस वर्ष का

१६०२८५॥–) ४

आज की तारीख की हमारी रिपोर्ट के साथ साथ हमने सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा देहली के हिसाब की जाच पड़ताल की और हम प्रमाणित करते हैं कि उपर्युक्त बैलैन्स शीट और साथ का आय व्यय का विवरण हिसाब के रजिस्टरों और कागजों के अनुसार जो हमे दिखाए गए हैं ठीक है।

Subject to our separate report of even date, we have examined the accounts of the Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha, Delhi and certify that the above Balance-Sheet and annexed Income and Expenditure a/c are correct in accordance with the account books and papers shown to us

वास्ते जगदीशप्रसाद ऐण्ड कम्पनी

चांदनी चौक देहली (Sd) जगदीशप्रसाद

१६-४-३८ बी० ए०, बी० कौम०, जी० डी० ए०, आर० ए०

रजिस्टर्ड एकाउन्टेन्ट (आडीटर्स)

(ह०) रघुनाथप्रसाद पाठक	(ह०) नारायणदत्त	(ह०) सुधाकर एम० ए०	(ह०) स्वतन्त्रानन्द
एकाउन्टेन्ट	कोषाध्यक्ष	मन्त्री	प्रधान

आर्य रक्षा समिति की प्रगतियां

COMMUNAL RIOTS IN HYDERABAD.

Serious Allegations by the Secretary, Aryan Defence Committee.

Mr S Chandra Secretary Aryan Defence Committee of the International Aryan League, vehemently contradicts the Communique, dated 7th April, issued by the Nizam's Government, holding the Arya Samajists responsible for the recent riots in Hyderabad The facts as gathered by him from responsible sources in Hyderabad are to this effect —

"That on the 5th April a procession consisting of thousands of armed Muslims in connection with an Urs reached Dhruvapeth beating Hindus in the way and crying slogans, "we shall plunder the Hindus to-day" The entire population of that locality got terrified and began to close their shops and houses One Bahadur Yarjung a Tabligh Worker who is always inciting the Muslims against the Hindus in the State, addressed the Muslims and excited them against the Hindus. The Muslim fanatics, thereupon, attacked the houses of the Hindus The Lodhas, a sub-caste of Hindus residing in that locality defended themselves bravely The Police which is composed of ninety five percent of Muslims made a lathi charge on the Hindus, even who were defending themselves Thus the Hindus were beaten both by the Muslim mob and the Police Happily Mr Hollins, Director-General of Police reached the spot and with great difficulty he averted the tragedy

On the 6th of April, although police surrounded Dhruvapeth, yet the armed Muslim crowds were entering there and the Hindus were banned Again the Hindus were beaten and their shops and houses were burnt The Hindus were disarmed and thus lost the opportunity of self-defence The Arya Samaj of Druvapeth and its library were attacked. The Muslim mob was shouting "Maro" 'Maro' and "Deen" "Deen".

On the 7th, stray assaults continued In Goliguda a Sikh boy was also assaulted Arya Girls' School of Dhruvapeth was mobbed by Muslims and it was with great difficulty that the girl students could be rescued The Arya Samaj of Maharajganj was also attacked and several Aryas received injuries Hindu houses were set on fire. From another reliable news, it transpires that when an influential deputation of Hindus waited upon Sir Akbar Hydari and apprised him of the serious situation created by Muslims, he expressed great surprise and said that he was informed only of a very mild and ordinary trouble This is really a terrible thing that even the highest official was kept in ignorance of the serious situation,

On the 8th morning it appeared that the situation had taken a better turn, but at about 10 A M as soon as the Nizam's Government Communique appea-

red in the papers, holding Aryas responsible for the trouble, it added fuel to the fire and infuriated the Muslims, who attacked in ten thousand the house of Pandit Vinayak-Rao, Barrister, the president of the Arya Pratinidhi Sabha Nizam State. It was by the timely and lucky arrival of Hon'ble Mr Crotton the Police Minister that Pandit Vinayak Rao's family were saved from the impending tragedy at the hands of the ruffian Moslems. It is also learnt that this huge mob of Moslems was headed by some responsible Muslim leaders and there were also some office-bearers of the Osmania University Students' Union In spite of the promulgation of Section 145 of the Nizam's Government, banning people carrying weapons, the Muslims were freely carrying them It is also learnt that the breasts of the Hindu ladies were mutilated by the Muslims

Thus the whole of the communique issued by the Nizam's Government seems to be halting and misleading, especially that part of it which holds Aryas whose number in Hyderabad is infintely small, responsible for the riot

We ask the Government of India to appoint an impartial Commission to inquire into these unhappy happenings in the Nizam's State, where the plight of the Hindus and Aryas is becoming every day more evident We also thank Messrs Crotton and Hollins for their timely handling the situation on two occasions

* * *

Mr. MEGHRAJ'S MURDER.

Mr S Chandra, Secretary, Aryan Defence Committee of the International Aryan League, has issued the following statement to the press refuting the communique of Indore Government regarding Mr Meghraj's murder—

The Communique, issued by the publicity Officer of Indore Government, alleging the murder of Mr Meghraj, President of the Aryasamaj at Narayangarh, due to some personal troubles between him and some of his caste-fellows has been brought to my notice I am extremely sorry and surprised to find that the Publicity Officer has entirely relied upon the one-sided report of the Police-officers at Narayangarh and has shut his eyes at many glaring facts in totally denying the connection of Mr Meghraj's murder with his Harijan activities. I put the following questions to the Publicity Officer requesting him to come forward with his replies in the press —

(1) Is it not a fact that on the 2nd of April 1938, some Harijan boys were admitted into the school at Narayangarh, particularly at the instance of late Mr Meghraj ?

(2) Is it not a fact that on the 4th of April 1938, some Harijan girls were admitted into the girls' school at Narayangarh again, at the instance of late Mr Meghraj ?

(3) Is it not a fact that the admission of the Harijan girls into the school created an uproar among orthodox Hindus there, so much so that the Harijan girls were turned out of the school ?

(4) Is it not a fact that on the 6th of April, 1938, one Mool Chand Kumath and Mangni Ram Patwari called two Harijans, named Nathu and Manna Lal while they were passing by the road-side, and threatened them that in case they would not withdraw their children from the school and would enter the temple, they and their supporters would be beheaded ?

(5) Is it not a fact that after hearing about the above threat from Mr Deep Chand Sharma, Secretary, Aryasamaj, Narayangarh Mr Meghraj declared in the local public library in the evening of 6th April, 1938, that he would surely lead a procession of the Harijans to enter into the temples for Dev-Darshan on the evening of Ram Navmi Day, i e 8th April and that he was prepared even to be beheaded serving a noble cause ?

(6) Is it not a fact that Mr Meghraj was murdered just on the Ram-Navmi Day at about 2 P M, only a few hours before the time fixed and announced by him for leading the Harijan procession for temple-entry ?

I challenge the Publicity Officer of Indore State to prove that the above are not facts It these are facts—as they surely are—how absurd it is to say that the murder of Mr Meghraj had nothing to do with Harijan cause The Aryan League has in its possession sufficient material to substantiate the above, which facts the Police officers at Narayangarh are trying to suppress by giving a different colouring to this incident Even the statements of some eye witnesses are not being recorded by Mr Mohan Singh, the Sub-Inspector of of Police at Narayangarh, whose prejudice against the Aryas is too well-known to be mentioned here Unless Mohan Singh is immediately transferred from Narayangarh and replaced by an impartial police officer, there is every likelihood that the facts of the case may not come to light and proper justice may not be meted out

I would therefore, respectfully beg of Sir Bapna, the Prime Minister of Indore State to appoint an impartial commission to inquire into the details regarding this murder, otherwise he will not only be doing injustice to the Aryas but also to that Harijans' noble cause which is so near and dear to the present ruler of Indore

हैदराबाद राज्य में आर्यों पर अत्याचारों का ताँता

पिछले दिनों हैदराबाद राज्य में वहाँ की सरकार की ओर से आर्यों पर जो अत्याचार हुए हैं उनमें से कुछेक संक्षेप में इस प्रकार है —

१—निज़ामाबाद में चार प्रतिष्ठित आर्यों को अकारण ही वहा की पुलिस ने गिरफ्तार कर हवालात में बन्द कर दिया और उनके यज्ञोपवीत ज़बरदस्ती तोड़ दिये, उनको बारी बारी से एक पृथक् कमरे मे रात्रि के समय लेजा कर उन्हें नग्न कर पीटा, उनके मुंह में पेशाब डाला, उनके मुख पर मांस लाकर रक्खा। उन्हें पब्लिक मे अपमानित करने के लिये हाथों मे हथकड़ियाँ डाल कर तमाम बाज़ार और शहर मे घुमाया। उन पर यह झूटा इलज़ाम लगाया गया है कि वे हिन्दुओं को मुसलमानों से लड़ने के लिये भड़काते हैं। उन पर मुक़दमा. चल रहा है।

२—गत् होली के अवसर पर गुलबर्गा में होली खेलते हुए कुछ लिंगायतो तथा मुसलमानो

में झगड़ा हो गया था, जिस के फलस्वरूप एक मुसलमान मारा गया बतलाया जाता है। इन होली खेलने वाले लिंगायतों मे आर्य एक भी नहीं था, चूंकि यह सर्व विदित बात है कि आर्य लोग होली नहीं खेलते हैं। जिस समय यह होली खेली जा रही थी, आर्य लोग आर्य-समाज में होलिका यज्ञ कर रहे थे। परन्तु फिर भी वहा की पुलिस ने चार आर्यों को झूंठे कतल-के अभियोग में गिरफ्तार कर लिया और उन पर मुकदमा चलाया जा रहा है।

३—कल्यानी में वहाँ के एक मुसलमान तालुक्केदार ने आर्य समाज पर से "ओ३म्" का झण्डा जबरदस्ती उतार दिया। उसके सम्बन्ध में इस सभा की ओर से निज़ाम सरकार को तार भेजे जा चुके हैं।

४—हैदराबाद में पिछले दिनों वहाँ के मुसलमानों ने हिन्दुओं को मारना और लूटना शुरु किया। इस प्रकार वहाँ हिन्दू मुसलमानों में बलवा हो गया। इस पर निज़ाम सरकार ने एक निराधार विज्ञप्ति निकाल कर आर्यों को बलवे के लिये जिम्मेवार ठहराया, जिसके कारण वहा के आततायी मुसलमान और अधिक उत्तेजित हो गये और उन्हों ने सशस्त्र दस सहस्र की सख्या मे निज़ाम राज्य की आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रीयुत पडित विनायकराव जी बैरिस्टर के मकान पर हमला कर दिया। मिस्टर क्राम्टन, पुलिस मेम्बर के घटना-स्थल पर पहुँच जाने से वह भयङ्कर दुर्घटना होने से बच गई। निज़ाम सरकार की उक्त निराधार विज्ञप्ति का जोरदार प्रतिवाद इस सभा की ओर से समाचार-पत्रों मे किया जा चुका है और इसी आशय के तार भी निज़ाम सरकार को भेजे जा चुके हैं।

५—इसी पिछले बलवे के सम्बन्ध में कई निरपराधी आर्यों को गिरफ्तार कर उन पर झूंटा कत्ल का अभियोग चलाया जा रहा है।

६—अभी हाल मे निज़ाम सरकार की एक गश्ती चिट्ठी निकली है कि कोई भी आर्य बिना सरकार की आज्ञा के हवन कुण्ड न बनाये।

७—अभी हाल मे वहाँ की सरकार ने एक विज्ञप्ति द्वारा श्री प० देवेन्द्रनाथ जी शास्त्री तथा श्री प० नरेन्द्र जी को व्याख्यान देने से बन्द कर दिया है।

इन सब ज्यादतियों की तह मे असल बात तो यह है कि निज़ाम सरकार अपनी रियासत मे आर्य समाज के मिशन को हर प्रकार से दबाने पर तुली हुई है। ऐसी दशा मे आर्य-समाज किस प्रकार निज़ाम सरकार की इस नीति का मुक़ाबिला करे, इन्हीं सब बातों पर विचार करने के लिये इस सभा ने मध्य प्रदेश अथवा महाराष्ट्र प्रान्त मे हैद्राबाद रियासत के निकट किसी स्थान पर आर्यन कांग्रेस बुलाने का निश्चय किया है। उस कांग्रेस के अधिवेशन के सम्बन्ध मे समय समय पर विज्ञप्तियों तथा समाचार-पत्रों द्वारा आर्य जनता को सूचनायें मिलती रहेंगी।

शिवचन्द्र
मन्त्री—आर्य रक्षा समिति,
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा।

विद्या धर्मेण शोभते ।   विद्या से ही धर्म की शोभा होती है ।

आर्य कुमार जगत

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की रजत जयन्ती का २२, २३ व २४ मई को होना बिल्कुल निश्चित हो गया था और परिषद् तथा स्वागत कारिणी सभा की ओर से सब तैयारियां हो गई थीं। अचानक २३ अप्रैल को स्वागत कारिणी के मन्त्री महोदय का पत्र मिला कि बिजनौर ज़िले में हैज़ा फैलनेका पूरा अन्देशा होने के कारण बिजनौर निवासी सम्मेलन करके बाहर से प्रतिनिधियों को बुलाने का ज़िम्मेदारी लेने म हिचकते हैं। इसलिए उन्होंने प्रार्थना की कि सम्मेलन २२, २३ व २४ मई को न करके सितम्बर मास मे किया जाय। परिषद् की कार्यकारिणी सभा ने अपनी २८ अप्रैल की मीटिंग में स्वागत कारिणी सभा की इस प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यह निश्चय किया कि सम्मेलन बिजनौर मे ही सितम्बर मास के अन्तिम सप्ताह मे किया जावे। इसकी सूचना स्वागत मन्त्री की ओर से अब तक सब आर्यकुमार सभाओं को मिल गई होगी।

हम नहीं चाहते थे कि जयन्ती की एक बार जो तारीखे निश्चित हो चुकी थीं उनमें कोई परिवर्त्तन किया जाय। लेकिन जिस परिस्थिति मे ऐसा किया गया है और जो आपके सामने है उसमें परिषद् और स्वागत कारिणी सभा का कोई दोष नहीं है। अस्तु।

इस प्रकार जयन्ती में लगभग चार मास हैं। इस समय से हम सबको पूरा लाभ उठाना चाहिए। आर्यकुमार सभाओं को चाहिए कि स्वागत कारिणी सभा के कार्य को ढीला न पड़ने दें और जो २ बातें उनसे पूछी गई हैं उनका शीघ्र उत्तर दे दें। स्वागत-मन्त्री महोदय के पास से शिकायत आई है कि बहुत ही थोड़ी आर्यकुमार सभाओं ने उनके पत्रोंके उत्तर दिए हैं। स्वागत-कारिणी सभा ने जयन्ती की तैयारियों में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं रखी है। अब यह आर्यकुमार सभाओं का कर्त्तव्य है कि वे जयन्ती को अधिक से अधिक सफल बनावें। जितने अधिक प्रतिनिधि वे जयन्ती पर भेजने की सूचना स्वागत कारिणी सभा को समय पर भेजेंगी, उतना ही बिजनौर निवासियोंका उत्साह बढ़ेगा, और उतना ही अधिक प्रतिनिधियों का स्वागत होगा। सम्पूर्ण बिजनौर ज़िला उत्सुकता से देश के आर्यकुमारों के इस मेले की आशा लगाए हुए है, और ज़िले भर के प्रत्येक ग्राम से जो बन पड़ा है उसने इस हेतु तन, मन, धन से सहायता दी है। हमें पूरा विश्वास है कि आर्यकुमार सभाएँ बिजनौर निवासियों की आशाओं को अवश्य पूरा करेंगी।

जयन्ती पर परिषद् का अधिवेशन भी होगा। इस लिए आर्य कुमार सभाओ और आर्य कुमारों को अपने प्रस्ताव अभी से भेज देने चाहिएँ, क्योंकि हम इन प्रस्तावो को प्रकाशित करना चाहते हैं, ताकि उन पर अधिक से अधिक सम्मतियाँ आ जावें और प्रतिनिधियो को उन पर अच्छी प्रकार विचार करने का समय मिल जावे।

जो बातें स्वागत मन्त्री महोदय ने अपने १ अप्रैल १९३८ ई० के पत्रों में पूछी हैं, उनके उत्तर सीधे उन्ही के पास जाने चाहिएँ। प्रस्ताव सब परिषद् के कार्यालय को भेजने चाहिएँ।

आर्यकुमार सभाओं के समाचार

१—आर्यकुमार सभा इस्लामनगर, बदायूँ—यह सभा सन् १९११ से स्थापित है। इसके सभासदों

की सख्या थोड़ा होनेपर भी इसके कार्यकर्त्ता सज्जनताले कार्य कर रहे हैं और यदि इसी प्रकार कार्य होता रहा तो सभा अवश्य उन्नति करती जावेगी।

इस सभा ने एक फंड खोल रखा है, जिसके द्वारा ग़रीब विद्यार्थियों को पुस्तकों से तथा अन्य बातों मे सहायता दी जाती है।

सभाने इस वर्ष एक व्यायाममण्डल भी खोला है।

२—आर्य कुमार सभा, बुरहानपुर का वार्षिक अधिवेशन १ व २ मई १९३८ को हुआ जिसमें निम्न प्रस्ताव पास हुए—

(१) यह सभा नारायणगढ के हरिजनोद्धारक आर्य वीर श्री मेघराजजी के आततायियों द्वारा किए गए वध पर रोष प्रकट करती है, और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

(२) यह सभा भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद से प्रार्थना करती है कि वैदिकधर्म-विशारद परीक्षाए अगस्त या सितम्बर मास मे रखी जावें।

(३) यह सभा मध्य प्रदेश तथा बरार प्रान्त के प्रत्येक आर्यसमाज से सानुरोध प्रार्थना करती है कि सच्चे आर्य वीर पैदा करने के लिए वे अपने आधीन एक २ आर्य कुमार सभा की स्थापना करें।

३—आर्यकुमार सभा, कांठ—यह सभा सन् १९२४ मे स्थापित है। इस सभा का प्रत्येक सभासद् तथा प्रत्येक कार्यकर्त्ता उत्साह से अपने २ कार्य को पूरा करता है। इस सभा को स्थानीय आर्य-समाज का भी पूरा सहयोग प्राप्त है फिर क्यों न यह सभा दिन पर दिन उन्नति करता जावे।

४—आर्यकुमार सभा गोपाल गंज, सारन—हमने गत मास लिखा था कि आर्यसमाज गोपाल-गंज में शीघ्र ही एक आर्य कुमार सभा स्थापित होने वाली है। हमें यह लिखते हर्ष होता है कि आर्य समाज ने हमारी आशाओं को पूरा कर दिया। आर्य कुमार सभा मे धन की कमी है। सभा ने इस पत्र द्वारा दानी सज्जनों से धन की प्रार्थना की है। आशा है दानी सज्जन इस सभा की सहायता करेंगे।

५—आर्यकुमार सभा सिमडेगा—इस सभा ने हाल में ही ६ मुख्य केन्द्रस्थल ग्रामों मे एक २ आर्य समाज स्थापित किया है, जिससे अच्छी जागृति हो रही है। शिक्षा के निमित्त चार स्थानो में पाठ शालाएँ खोली गई हैं जिससे ग्रामीण बच्चों का बहुत उपकार हो रहा है। शिक्षा निःशुल्क है। ग्राम-प्रचार के निमित्त, जो इस सभा का मुख्य कार्य है, बा० कैलाश बिहारी जी को नियत किया गया है।

हम पंडित धर्मवीर जी, मन्त्री, भारतवर्षीय श्रद्धानन्द मैमोरियल ट्रस्ट के अत्यन्त कृतज्ञ हैं कि वे अपना अमूल्य समय देकर बिहार प्रान्तीय आर्य कुमार सभाओं को पूरी सहायता दे रहे हैं।

हमारे अन्य आर्य नेता भी यदि इसी प्रकार आर्य कुमारों को उनके कार्य मे उत्साहित करते रहें, तो फिर हम आर्यकुमार क्या नहीं कर सकते। क्या हमारे आर्य नेता इस ओर ध्यान देंगे।

मन्त्री
भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् देहली।

अध्यात्म धारा

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी के प्रवचन का सार

मृत्यु

उपनिषद् की सबसे महत्व पूर्ण शिक्षा मृत्यु के सम्बन्ध में है अर्थात् मृत्यु बहुत कष्ट प्रद नहीं बल्कि सुख प्रद है। मनुष्य का प्रात काल बाल्यावस्था में और अन्त वृद्धावस्था में होता है। बुढापे की अवस्था प्राप्त कर लेने पर मृत्युरूपी रात्रि आती है और वह उस वृद्ध आदमी को छोटे बालक के रूप में बदल जाती है। मृत्यु आराम देने, बुढापे रूपी थकान को दूर करने और नए जन्म रूपी नई जिन्दगी, उत्साह और पुरुषार्थ को देने वाली है तब फिर वह क्योंकर कष्ट-प्रद हो सकती है।

कृष्ण अर्जुन से कहते हैं, 'मेरे और तुम्हारे बहुत से जन्म बीते हैं, मैं इस बात को जानता हू। तुम नहीं जानते हो। यह जन्म-मरण रूपी चक्र अनादि काल से चला आया है और अनन्त काल तक जब तक मोक्ष नहीं मिलेगा चलता ही रहेगा।' यह तो रही सिद्धान्त की बात। जब हम दुनिया के अमल को देखते हैं तब हम मृत्यु को बड़ा डरावना पाते हैं। उदाहरण के रूप में एक कोढी को लीजिए जो बहुत ही पीड़ित है परन्तु फिर भी वह मौत के नाम और उसकी कल्पना से डर जाता है।

मृत्यु कष्ट-प्रद नहीं वरन् सुख-प्रद ही है। इसकी संगति कैसे हो? जब मनुष्य गम्भीरता पूर्वक विचार करता है तब उसे इन दोनों की संगति स्पष्ट दीख पड़ती है। एक साहूकार है। वह मरता है। उसकी धन दौलत एक तरफ रह जाती है और वह दूसरी तरफ़ चला जाता है। एक राजा है। वह बड़े और सम्भ्रान्त राज्य का मालिक है। मृत्यु आती है उसका राज्य एक तरफ़ चला जाता है और वह दूसरी तरफ़ चला जाता है। स्पष्ट है कि मृत्यु का काम मनुष्य को उन चीज़ों से जो उसे प्राप्त हैं अलग कर देना ही है। जब मनुष्य अपनी चीज़ों से स्वयं अपनी प्रसन्नता से अलग हो जाया करता है तब उसे दुःख नहीं होता और जब वह ज़बरदस्ती अलग किया जाता है तब दु खी होता है। प्रसन्नता से तभी अलग होता है जब वह उन चीज़ों को केवल अपने प्रयोग की वस्तु समझता है। प्रसन्नता से तब नहीं छोड़ता जब उनमें उनकी ममता होती है या जिन्हें वह अपनी समझता है। यही बात ठीक मृत्यु और संसार की वस्तु और भोग के सम्बन्ध में है।

एक हँसाने वाला आईना होता है उसमें देखने पर आपको अपनी शक्ल खराब दीख पड़ेगी और दूसरे शीशों में खराब नहीं दीख पड़ेगी। इसमें दोष किस का है? आईने का या शक्ल का? दोष आईने का ही है। इसी तरह मौत तो अच्छी चीज़ है। जब हम उसे ममता के आईने में देखते है तब हमें मौत डरावनी दीख पड़ती है परन्तु जब हम ममता से पृथक करके देखते हैं तब हमें डरावनी नही मालूम पड़ती।

इङ्गलैण्ड के एक डाक्टर ने परीक्षण किया कि मृत्यु दुःख देने वाली है या नहीं। उसकी उम्र ६३ वर्ष की थी। उसने परीक्षण के लिए ऐसा ज़हर तय्यार किया जिससे मृत्यु धीरे धीरे हो। उसने ज़हर पी लिया और परीक्षण करने लगा और परीक्षण को एक नोट बुक में लिखने लगा। उसने अपनी नोट बुक में लिखा है:-

॥ आर्य संस्कृति की रक्षा का एक साधन ॥

लेखक—श्री प्रो० ताराचन्द्र गाजरा, एम० ए०

आर्यावर्त्त में इस समय पूर्वीय और पश्चिमीय संस्कृतियों का संघर्ष हो रहा है। इस सघर्ष में पूर्वीय संस्कृति का ह्रास होने लगा है प्राचीन विचार बड़े जोर से बदल रहे हैं। लगभग एक शताब्दी से संस्कृत विद्या तथा प्राचीन ढंग की वस्तुओं की कीमत बाज़ार में बिलकुल कम हो गई है इसलिए पुराना ज्ञान गुम होता रहा है और आज हमारे देश के बहुत से लोग न केवल निरक्षर हैं परन्तु वह उपयोगी बातें जो पहिले वे लोग हमारे चलते फिरते पुस्तकालय, सन्यासी आदि महानुभावों से सीखते थे वह भी भूल गये हैं।

इस समय हमारे कई देश वासियों के मन मे ऐसा विचार उत्पन्न हुआ है कि देश भर के अन्दर दौरा लगाकर लोगों को साक्षर बनाया जाय यह कार्य बड़ा उत्तम है। परन्तु उसमें कुछ थोड़ा सा दोष आने की सम्भावना है, वह यह है कि वे लोग जो इस कार्य को करना चाहते हैं वे सारे गाधी जी के भक्त नहीं। उनमें कई ऐसे है जो ईश्वर को नहीं मानते, कई रशिया के ढगकी क्रान्ति लाना चाहते हैं। परिणाम यह होगा कि प्राचीन सभ्यता का बचा खुचा जो कुछ भी है वह भी नष्ट हो जायगा। और भारतवर्ष ईसा वर्ष नहीं तो लेनिन वर्ष तो बन ही जायगा। इस अवसर पर आर्यसमाज को जिसका प्राचीन सभ्यता पर पूर्ण विश्वास है उठकर के खड़ा होना चाहिए और बलपूर्वक कार्य करना चाहिए।

आर्यसमाज के पास साधन विद्यमान हैं आर्यसमाज के गुरुकुल कौलिजों पाठशाला तथा स्कूलों में सहस्रो अध्यापक तथा लाखों विद्यार्थी हैं इन सबको अपना अवकाश इस कार्य के लिए देना चाहिए।

चीन, स्पेन और रशियामें क्रान्ति लानेमें विद्यार्थियो ने विचित्र कार्य करके दिखाया है यदि आर्यसमाज के नेता लोग इस कार्य मे जुट जायेंगे तो देश में एक तहलका सा मच जायगा, हिन्दी का भी प्रचार होगा और वैदिक विचारों का भी फैलाव होगा।

कार्य आरम्भ करने से पूर्व किसी मुख्य स्थान मे आर्यविद्या सभाओं तथा आर्य विद्यालयों के प्रतिनिधि एक स्थान पर इकट्ठे होने चाहिए और वहा पर मिलकर इस कार्य के लिए योजना करनी चाहिए श्रीमती सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभ को इस कार्य मे हाथ डालना चाहिए और एक सरक्युलर द्वारा सब आर्यों की सम्मति लेनी चाहिए फिर अजमेर नगर मे राजस्थान प्रतिनिधि के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पर एक मीटिंग बुलानी चाहिए।

Japs are right Death is lovely. I feel fine and no pain

अर्थात् जापानी ठीक कहते हैं कि मृत्यु प्यारी है। तात्पर्य्य यह है कि जब हम ससार की चीजों में अपना प्रयोगाधिकार समझ लेते हैं तब हमें मृत्यु दुखदाई नहीं होती।

वेद भाष्य का उत्तरदायित्व

आर्य विद्वानों के नाम खुली चिट्ठी

"वेद भाष्य का उत्तरदायित्व" शीर्षक एक गम्भीर लेख श्री पं० सातवलेकरजी ने अपने "वैदिक धर्म" (वर्ष १९ अङ्क २) में लिखा है, इसका पूर्वाङ्क देखने का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ। अङ्क ३ में 'वैदिक सूक्तों के ऋषि' शीर्षक लेख गवेषणापूर्ण है। इधर ये दोनों लेख हैं तो उधर आर्यमित्र, आर्यमार्तण्ड आदि पत्रों में श्री सातवलेकरजी के प्रतिवाद मे लेख छपे हैं। 'देवता विषय में श्री सातवलेकरजी की भ्रान्ति' यह लेख जिज्ञासु जी के मेरठ वेद सम्मेलन मे दिये भाषण की परिबृंहित आवृत्ति प्रतीत होती है। "ऋषि दयानन्द प्रदर्शित देवतावाद" यह लेख भी आर्य-मार्तण्ड में छपा। आर्यमित्र के लेख की प्रतिलिपि है जो कई टुकड़ों में छपा है।

वेद भाष्य के उत्तरदायित्व को वे विद्वान् ही भली भाँति समझ सकते हैं जिन्होंने गुरु-चरणों में बैठकर कुछ वेद ज्ञान प्राप्त किया है—सोचिये तो सही, कि कितना कठिन कार्य है ? ज़रा स्वर चूका कि अर्थ बदला। इसीलिये वेदों के साथ ऋषि, देवता, छन्द, स्वर आदि लिखने की परम्परा चलाई गई थी। जिससे वेद ज्ञान में सहायता मिले। इस परम्परा में हस्तक्षेप करने का किसी को अधिकार नहीं।

यदि कोई नया ऋषि खड़ा होता है और उसके ध्यान में कोई अन्य देवता आते हैं तो उसके शिष्यों को चाहिए कि वे अपना वेद पृथक् और नये देवता लिखें। पर किसी अन्य ग्रन्थ में गड़बड़ करने का किसी को कोई भी अधिकार नहीं है। यह कदापि शिष्ट रीति नहीं है कि ' ऋषि तो वे पुराने ही रक्खे जायँ और देवता अपने ध्यान अथवा ज्ञान के अनुसार बदल दिये जायें—" मेरी समझ मे छन्द और स्वर तो बदल ही नहीं सकते।

उस दिन कुम्भ के अवसर पर एक विद्वान् मुझसे पूछने लगे कि प्रचय स्वर के पश्चात् अनुदात्त कैसे आया ? समय की व्यग्रता ने पूर्ण विचार नहीं होने दिया, नहीं तो विचार बढ़ता ही। श्री "जिज्ञासु" महाशय का कथन है कि नये ऋषियों को नये देवता बदलने का अधिकार है किन्तु हम कहते हैं कि यदि कोई नये ऋषि हैं और वे मन्त्रार्थ द्रष्टा की कोटि में आ गये हैं तो बेशक वे उन नये ऋषियों के नाम के साथ नये आविष्कृत देवता लिख सकते हैं पर प्राचीन ऋषि और देवता परम्परा को बदलना अश्लाघ्य प्रयत्न होगा। इस प्रकार कोई भी परम्परा सुरक्षित नहीं रहेगी। फिर यह भी बात विचारणीय रहेगी कि नये मन्त्र द्रष्टाओं में कोई किसी को ऋषि मानेगा और कोई नहीं और मुख्य विषय गौण पड़कर यह नया विवाद ही मुख्य बन बैठेगा।

इस लिए मेरा अपना विचार है कि दस बीस विद्वान जिज्ञासु ऐसे विद्वान् जिनमें अहम्भाव की मात्रा कम हो किन्तु विद्वत्ता अधिक हो, ऐसे विद्वान् दो-चार मास के लिए कहीं एकत्र हों और ऐसे जटिल प्रश्नों पर खुले हृदय से विचार करें और पहुँच सकें तो किसी निर्णय पर पहुँचें—इस प्रकार आम जनता में ललकारने की कुटेव छोड़ें—इससे कोई लाभ नहीं—इस प्रकार श्री सातवलेकरजी और ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी की लेख मालाएँ कोई फल न

जावेंगी और यह सम्भव है कि जो भी 'स्वामीदयानन्द' का नाम लेकर बार बार कहेगा, चाहे उसका पक्ष उसकी निर्बलताओं के कारण विद्वानों की दृष्टि में गिरता हुआ ही क्यों न हो, साधारण जनता में प्रबल माना जायगा। इसमें भूल उनकी ही होगी जो व्यर्थ स्वामी जी का नाम समय—असमय बीच में लाते हैं। एक और प्रकार से घोषित करते हैं कि 'हम तुम्हारी एक बात भी नहीं सुनेंगे।'

वेद शुद्ध छपें किस को अभीष्ट नहीं है। जितने भी प्रयत्न किए जांय थोड़े हैं। हम जन साधारण मे देखते हैं कि भिन्न भिन्न स्थानों में एक ही पुस्तक के अनेक संस्करण निकलते रहते हैं। जिस स्थान के संस्करण की ख्याति हो जाती है जनता उसी को ले लेती है—इसमें झगड़ा क्या है? यदि वैदिक यन्त्रालय में वेद शुद्ध नहीं छपे या नहीं छपते तो श्री-सातवलेकर जी के शुद्धिकरण को कोई सहृदय संमान देगा ही।

अब रहा 'ऋषि—देवता विषयक वाद।" इसमें मेरा कथन यह है कि प० ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु पहिले उन सब मन्त्रों को एकत्र करें जिनके देवता श्री स्वामी दयानन्द जी ने नवीन आविष्कृत किये हैं। फिर एक जगह बैठेंगे, गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगे। पर परम्परा प्राप्त ऋषि अथवा देवताओं में स्वेच्छया परिवर्तन करने का किसी को अधिकार नहीं, क्योंकि वह एक परम्परागत धरोहर चली आ रही है। यदि प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु चाहें तो वेद का नया संस्करण निकालें। जहां जहां स्वामी जी द्वारा नये आविष्कृत देवता हों वहीं मन्त्रों के ऊपर "ऋषि. दयानन्द देवता सविता।" इत्यादि छाप सकते हैं। पर ये ध्यान रक्खें कि इस प्रकार नये ऋषि और नये देवता बढ़ते जायेंगे और उनके प्रामाण्याप्रामाण्य पर चर्चा खड़ी होती रहेगी। श्री ब्रह्मदत्तजी जैसे विद्वान् किसी को ऋषि कहेंगे और विद्वान् उनको ऋषि नहीं मानेंगे फिर एक नया वितण्डवाद खड़ा होगा। फिर जिज्ञासु जी स्वामी जी का नाम लेकर ललकारना शुरू करेंगे, जनता भ्रम में पड़ जायगी, और रोग वहीं का वहीं रहेगा—

मैं इस विषय मे विस्तृत रूप से अपने विचार प्रगट करना चाहता था कि ता० ११ अप्रैल से मैं बराबर रुग्ण हूं और दूसरे ऐसे गम्भीर जटिल विषयों का साधारण अज्ञ जनता के सामने उपस्थित नहीं करना चाहता। यह लेख भी कतिपय विद्वानों के अनुरोध से लिख रहा हूं और आशा करता हूं कि श्री सातवलेकर जी और श्री ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगे।

मैं तो यही नहीं समझ सका कि ये दोनों महानुभाव किस से कह रहे हैं? अज्ञ जनता से? इससे कोई लाभ नहीं। पण्डितों से? तो फिर कहीं एक स्थान पर एकत्र होकर विचार कीजिए और तब तक उठिए नहीं जब तक किसी निर्णय पर न पहुंचे। तब फिर लिखने-लिखाने की बात कीजिये, उससे पूर्व नहीं—(शेष आवश्यकता होगी तो लिखूंगा)

—नरदेव शास्त्री, वेदतीर्थ महाविद्यालय—

ज्वालापुर।



सार्वदेशिक सभा

सार्वदेशिक सभा का बीसवा वार्षिक वृत्तान्त प्रथक प्रस्तुत किया जा रहा है। सभा में इस वर्ष जो कार्य्य हुआ है वह उसमें पाठक पढेगे। उस पर यहा प्रकाश डालने की जरूरत नही परन्तु यह हम अवश्य कहेंगे कि आर्य्य जगत की सहानुभूति और दृष्टि सभा की ओर अब विशेष रूप से खिचने लगी है और वह सार्वदेशिक सभा से आवश्यक मार्ग प्रदर्शन की बहुत ज्यादा आशा करने लग गया है। इन आशाओ के अनुपात मे सभा की उत्तरदायिता बढ़ गई है। सभा उस उत्तरदायिता को पूर्ति के निमित्त यथा-साध्य पूरा २ यत्न करती है।

हम मानते हैं सार्वदेशिक सभा को अभी भी उस सभा का रूप प्राप्त नहीं हुआ है, जो प्राप्त होना चाहिये। यह तो सर्वथा आर्य्य जनता के हाथ की बात है। जितनी मात्रा मे आर्य्य जगत मे उत्साह होगा, आर्य्य समाजो मे स्फूर्ति होगी, प्रान्तिक सभाओ मे दृढता और जीवन होगा उतनी मात्रा मे सार्वदेशिक सभा जीवन ग्रहण करेगी। समाजों और प्रतिनिधि सभाओं से ही तो सार्वदेशिक सभा बनी है। हम उस दिन का स्वप्न देखते है जब सार्वदेशिक सभा सुदृढ सर्वोच्च सत्ता का रूप ग्रहण करेगी, क्या ही अच्छा हो हमारा यह स्वप्न शीघ्र से शीघ्र पूरा हो।

निरन्तर बढ़ती हुई उत्तरदायिताओं और उसके क्षेत्र के विस्तार के साथ साथ उसकी धन जन की आवश्यकताएं भी दिन पर दिन बढ़ रही हैं और उनका हल अनिवार्य है। सभाको पग पग पर अपने कार्यों के सम्पादन के लिए आर्थिक कठिनाइयो का सामना करना पड़ता है। अपने परिमित आर्थिक साधनों से अधिक से अधिक कार्य्य करने की यह कोशिश करती है परन्तु परिमित साधनोके कार्य्यों के परिणाम भी परिमित ही होते है। हम चमत्कारिक कार्य्य तभी प्रस्तुत कर सकते है जब हमारे हाथ हर प्रकार से दृढ़ हों। बिना ऐसा हुए चमत्कारों की आशा करना दुराशा मात्र है। हमारे आर्थिक साधनों की परिमितता का पाठकों को अन्दाजा आय व्यय का विवरण देखने से विदित होगा। इस वर्ष सभा के सेन्ट्रल कार्यों मे १८००) के लग-भग घाटा हुआ है। यही दशा गत वर्ष थी। यदि यही रफ्तार जारी रही तो समझ नही पड़ता, कार्य कैसे होगा।

सभा के कार्य के लिये आय का कोई खास साधन नही है। सभा ने आर्य्य समाज स्थापना-दिवस की आय को अपना स्थिर साधन बनाने की योजना की है। परन्तु दुख हैं यह योजना नाम मात्रको सफल देख पड रही है। एक दूसरी योजना सभा की मासिक सहायता करने वाले सहायकों की है। इसमे भी जैसी सफलता होनी चाहिए नही हो रही है। आशाओ के अनुरूप सभा की गति के लिए उसे आर्थिक चिन्ताओं से मुक्त करना सबसे बड़ा कार्य्य है जिसकी शीघ्र से शीघ्र व्यवस्था होनी चाहिये। यदि उपर्युक्त दोनों योजनाएँ सफल हो जाय तो भी बहुत कुछ कठिनाइयां कम हो सकती हैं। आर्य्य जनता को

गम्भीरता पूर्वक इस पर विचार करना चाहिये।

इस वर्ष की रिपोर्ट में हमें 'विदेश प्रचार' के हैडिङ्ग की कमी बहुत अखर रही है। विदेश प्रचार के लिए हमारे पास थोड़ा बहुत धन भी था, औपनिवेशिक आर्य्य भाई भी इस व्यय में सभा का हाथ बटाने के लिए उद्यत थे। फिर भी उपदेशक न भेजने का कारण यह था कि हमें काफी यत्न करने पर भी अच्छा योग्य प्रचारक न प्राप्त हो सका। वस्तुत सुयोग्य कार्य कर्त्ताओं की कमी भी आर्य्य समाज के कार्य्य मे बाधक सिद्ध हो रही है। आशा है इस वर्ष हम किसी उपदेशक को विदेशों में भेजने मे समर्थ हो जायगे। इङ्गलैण्ड, अमेरिका इत्यादि में तो हमें पूर्णत अपने ही व्यय पर प्रचारक रखने होंगे।

हैद्राबादमें आर्य्यसमाजकी समस्या गत कई वर्षो से हमारे सामने है। उसका हम हल करते रहे हैं। परन्तु अभी भी वह समस्या लगभग ज्यों की त्यों चली आ रही है। इस वर्ष सभा ने इसका अन्तिम हल करने का निश्चय किया है। आश्चर्य नहीं यह समस्या आर्य्यजगत को एक कड़ी परीक्षा में डाल देवें। सभा के जितने साधन हैं वह तो इसमें लगेंगे ही, परन्तु जनता को हर प्रकार के साधन जुटाने के लिए तय्यार रहना चाहिये।

इन शब्दों के साथ सभा के गत वर्ष के कार्य्य का अध्ययन और उसका सिंहावलोकन करने का हम पाठकों को निमन्त्रण देते हैं।

आर्य विवाह एक्ट का संशोधन

आर्य एक्ट की समालोचना कई स्थानों पर की गई है। उनमें से कुछ ऐसी हैं जो उस एक्ट की परिधि को न समझते हुए की गई है। इण्डियन सोशल रिफार्मर तथा कुछ अन्य समाचार पत्रों में इस बात का आग्रह किया गया है कि आर्य मेरिज एक्ट में ऐसी एक त्रुटि रह गई है जो बहु विवाह से सम्बन्ध रखती है वे आर्य मेरिज एक्ट में इस प्रकार का संशोधन कराना चाहते हैं कि जिससे वह एक्ट सिर्फ एक पत्नी विवाह में भी लागू हो सके। यह कहाँ तक इस एक्ट की मन्शाके भीतर होगा गम्भीरता पूर्वक विचारणीय विषय है। यह बात साधारण जनता से छिपी हुई नहीं है कि बहुत थोड़ी सी विशेष अवस्थाओं को छोड़ कर आर्य समाज एक पत्नीव्रत के सिद्धान्त का अनुयायी हैं। परन्तु वर्तमान आर्य विवाह एक्ट में यह कैद लगाना उचित होगा या नहीं इसके लिये आर्य विवाह एक्ट जिस उद्देश्य को लेकर बना है उस ओर ध्यान देना होगा। यह स्मरण रहे कि आर्य विवाह एक्ट आर्यों की विवाह पद्धति का सम्पूर्ण कानून नहीं हैं। जिस क्षण हम इस बात को भूलते हैं उसी क्षण हम गलती कर बैठते हैं। एक्ट का उद्देश्य केवल एक ही है और वह यह है कि शुद्धि विवाह और अन्तर्जातीय विवाह के जायज होने की जो शङ्का थी वह शङ्का दूर कर दी गई है। अब शुद्धि, विवाह और अन्तर्जातीय विवाह भी वैसे ही जायज है जैसे कि सजातीय विवाह से। उनकी सन्तान भी अपने पैत्रिक सम्पत्ति की उसी प्रकार उत्तराधिकारी बनती है जैसे कि सजातीय विवाह से। इसलिए वह संशोधन एक्ट की मन्शा के बाहर होगा। जब तक हम आर्यों के विवाह सम्बन्धी सम्पूर्ण नियमों का एक्ट बनाना न चाहें तब तक इस एक्ट में केवल एक बात का जोड़ना उचित न होगा बल्कि खतरेसे भरा हुआ होगा। केवल एक पत्नी विवाह का विषय ही जोड़ना उचित न होगा। इसके

कारण हैं। धर्म शास्त्रों में यह भी विहित हैं कि कुछ विशेष अवस्थाओं में एक पत्नी के जीवित रहते हुए भी दूसरा विवाह किया जा सकता है। इसके सिवाय विवाहके और भी कई प्रतिबन्ध हैं। जैसे सगोत्र और सपिण्ड का होना। इस प्रकार के अनेक नियम हैं। जिनका एक ऐसे एक्ट में रखना अनिवार्य है जो कि आर्यों के सम्पूर्ण विवाह सम्बन्धी नियमों को एक सरकारी एक्ट में बांधना चाहता है।

इसलिये इन सब बातों को सोचते हुए यह ठीक प्रतीत नहीं होता कि आर्य मेरिज एक्ट मे इस प्रकार का कोई संशोधन किया जाए।

घनश्यामसिंह प्रधान सार्वदेशिक सभा।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब—

आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक निर्वाचन २६ मई को लाहौर में होगया है। सभा ने श्री दीवान बहादुर बद्रीदास जी को प्रधान निर्वाचित करके शेष अधिकारियों और अन्तरग सदस्यों की नियुक्ति का अधिकार उनको दे दिया था। मन्त्री पद पर इस वर्ष भी श्री पं० भीमसेन जी ही नियुक्त हुए हैं।

पंजाब के अप्रिय झगड़े के अन्त के एक उपाय के रूप में हमने इन स्तम्भों में प्रगट किया था कि यह मामला दीवान बहादुर के निर्णय पर छोड़ दिया जाय। हमें प्रसन्नता है कि इस उपाय का यथोचित आदर किया गया। आशा करनी चाहिए कि दीवान बहादुर के सुदृढ़ मार्ग प्रदर्शन और नियन्त्रण में सभा तथा प्रान्त में शान्ति का वातावरण पैदा होगा और आर्य्य समाजियों की शक्ति और उत्साह आर्य्य समाज के हितों की वृद्धि के वास्तविक कार्य में खर्च होंगी।

इन दिनों आर्य्य समाज के वास्तविक रचनात्मक तथा उसके अधिकारों की रक्षा कार्य के लिए सम्मिलित और सुव्यवस्थित शक्ति और उत्साह की जितनी जरूरत है उस पर प्रकाश डालने की जरूरत नहीं है। आर्य्य जनता उससे भली भांति परिचित है। इसलिए उसका लड़ाई टों मे अपव्यय होना न केवल अवाञ्छनीय ही है वरन् घातक भी है।

पंजाब के दोनों दलों से हम प्रार्थना करेंगे कि वे उदारता से काम लें और आर्य्यसमाज के हितों की सिद्धि का अपने को अधिक से अधिक कारण बनाएं।

शरियत बिल का विरोध—

आर्य्य समाजों ने मि० काज़मी के शरीअत बिल (Muslim Women's Opostacy Bill) का जो सैन्ट्रल लैजिस्लेटिव असेम्बली में प्रस्तुत है खूब विरोध किया है और इस समय तक यह विरोध जारी है। विरोध के कतिपय आधार इस प्रकार हैं।

(1) यह बिल न केवल हिन्दू धर्म के प्रतिकूल है अपितु इस बिल के पास हो जाने से हिंदू कला (Hindu Law) मे अनुचित हस्ताक्षेप होता है जिसका कि मुसलमान सज्जनों को कोई अधिकार नहीं है।

(२) इस बिल के कानून बन जाने से हिंदू मुसलमानो मे वैमनस्य बढ़ेगा। अत यह बिल राष्ट्रीयता का विघातक है।

(३) यह बिल मुसलमानों की जो शरीअत अब तक है उसके बिलकुल विरुद्ध है।

(४) भारत के समस्त हाईकोर्टों का फैसला यह है कि किसी हिन्दू स्त्री का सम्बन्ध उसके पति से जीवन

में विच्छेद नहीं हो सकता। अतः उस पर भी यह बिल कुठाराघात करता है।

(५) इस बिल के पास होने से (Freedom of Religion Aat xxl of 1850 में भी बाधा पहुँचती है।

(६) इस बिल से सरकार की नीति—जो धार्मिक मामलों में दूसरे धर्म वालों में हस्ताक्षेप न होने देने की है, उसमें भी विघ्न पड़ता है।

सामाजिक नैतिकता का अपराधी

राजनैतिक कार्य कर्त्ता चौधरी शेरजंग के विरुद्ध उठे हुए आन्दोलन की चर्चा पाठकों ने समाचार पत्रों में पढ़ी होगी। चौधरी महोदय उत्तर भारत की एक रियासत के निवासी हैं। वे अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध हैं। वे अभी हाल में पंजाब की किसी जेल से छूटे हैं। यह सजा उन्हें किसी क्रान्तिकारी राजनैतिक अपराध में हुई थी। जेल से मुक्त होते ही उन्होंने निर्मला एम० ए० नामक किसी पंजाबी लड़की से शादी की है। उनकी दो पूर्व पत्नियां जीवित हैं। यही कारण उनके विरुद्ध आन्दोलन का है। कहा जाता है इस विवाह मे पंजाब प्रान्त के प्रमुख २ राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मिलित हुए थे और उन्होंने शेर जंग को बधाइयाँ दी थीं। यह भी सुना जाता है कि इस अपराध के लिए चौधरी महोदय के सामाजिक बहिष्कार का आयोजन हो रहा है। निर्मला देवी से मातृत्व के सम्मान रक्षार्थ इस विवाह के विच्छेद की अपील भी की जा रही है।

इस आन्दोलन से एक महत्व पूर्ण बात स्पष्ट है और इसकी हमें प्रसन्नता है। वह यह है कि सामाजिक नैतिकता को नष्ट करने वाले इस प्रकार के दुष्कृत्यों के विरुद्ध अब लोकमत काफ़ी जाग्रत हो गया है और यह दीख पड़ने लग गया है कि समाज ऐसे दुष्कृत्यों को आगे बर्दाश्त नहीं करेगा और समाज में स्थान रखने वाले लोगों को तो वह क्षमा भी नहीं करेगा।

चौधरी महोदय के प्रति हम दो शब्द कह देना उचित समझते हैं। उन्होंने देश के लिये त्याग किया है। देश में उनका स्थान भी बन गया था। उन पर अपने सामाजिक और व्यक्तिगत जीवनों की पवित्रता की महान् जिम्मेवारी थी कम से कम इस देश में तो इन जीवनों के सम्बन्ध में यही बात है, भले ही भारत से बाहर पश्चिम में इन जीवनों को पृथक रखने की बात हो और उसका अन्ध अनुकरण करने वाले भारतीय नवयुवकों और नव युवतियों की इस बात का कि किसी के 'प्राईवेट, जीवन में हस्तक्षेप करने का किसी को अधिकार नहीं।' यहां इस देश में मूल्य नहीं के बराबर है। ऐसी अवस्था में इस विवाह का भले ही उसके मूल में कोई कारण क्यों न हो, भारतीय प्रजा का ऊंची दृष्टि से न देखना स्वाभाविक है। यदि लोग यह समझने और कहने लग जायँ, कि उन्होंने देश के लिए किए हुए अपने त्याग का इस विवाह के रूप में दुरुपयोग किया और अपनी सेवाओं का समाज से ऐसा मूल्य चाहा है अथवा आंका है तो इसमें कोई आश्चर्य की बात न होगी। भारत की वर्तमान दयनीय अवस्था में उसके पास अब भी कई अनुपम निधियां सुरक्षित हैं। आचारिक विशेषता उसकी एक ऐसी ही निधि है जिस पर देश अभिमान करता और बाहर के लोग ईर्ष्या करते हैं।

यदि हमारे सार्वजनिक कार्य कर्त्ता स्वयं अपने कृत्यों से उसके ह्रास अथवा विनाश का अपने को कारण बना देवें तो इससे बढ़कर दुख और पश्चात्ताप की और क्या बात होसकती है। सार्वजनिक जीवन निरीक्षण का जीवन होता है। प्रतीत होता है यह शादी करते समय चौधरी शेरजंग ने इन बातों को अपने सामने नहीं रक्खा था।

स्वाध्याय योग्य उत्तम साहित्य

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी कृत

कतिपय ग्रन्थ

(१) मृत्यु और परलोक

शरीर, अन्त:करण तथा जीव का स्वरूप और भेद, जीव और सृष्टि की उत्पत्ति का प्रकार, मृत्यु का स्वरूप तथा बाद की गति, मुक्ति और स्वर्ग, नर्क इत्यादि लोकों का स्वरूप, मुक्तिके साधन आदि आदि विषयों पर अद्‌भुत पुस्तक। मूल्य ।-)

(२) योग रहस्य

इस पुस्तक मे योग के अनेक रहस्यों को उद्‌घाटित करते हुए उन विधियों को भी बतलाया गया है जिससे कोई आदमी जिसे रुचि हो—योग के अभ्यासों को कर सकता है। मूल्य ।-)

(३) विद्यार्थी जीवन रहस्य

विद्यार्थियों के लिए उनके मार्ग का सच्चा पथ प्रदर्शक, उनके जीवन के प्रत्येक पहलू पर शृङ्खलाबद्ध प्रकाश डालने वाले उपदेश । द्वितीय संस्करण ≈)

(४) उपनिषद् रहस्य

ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, उपनिषदों की बहुत सुन्दर, खोजपूर्ण और वैज्ञानिक व्याख्यायें मूल्य क्रमशः ≈), ≈)।।, ≈)।।, ≈)।।, ≈)।।, -)।

अन्य ग्रन्थ कर्त्ताओं का

स्वाध्याय योग्य बहुमूल्य साहित्य

(१) इजहारे हक़ीक़त ।।।≈) सत्य-निर्णय १।)
(उर्दू) (हिन्दी)

श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य्य,

महात्मा गांधी ने आर्य्य समाज और ऋषि दयानन्द के मिशन और ग्रन्थों के सम्बन्ध में जो आक्षेप किए थे इस पुस्तक मे प्रामाणिक रीति से उनका खण्डन किया गया है। पुस्तक की अन्यान्य विशेषताओं में से एक विशेषता यह है कि लेखक ने आलोचना करते हुए उस मान और लोक-प्रियता का पूरा ध्यान रक्खा है जिसके महात्मा जी अधिकारी हैं। पुस्तक में कोई भी स्थल ऐसा नही है जिससे महात्मा जी के प्रति अवज्ञा का आभास होता हो। पुस्तक स्थिर साहित्य मे स्थान पाने योग्य है।

(२) धर्म और उसकी आवश्यकता ।-)

लेखक श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य

इस पुस्तक में धर्म का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। नई रोशनी के उन नव-युवक और नवयुवतियों के हाथमें रखे जाने योग्य

है जो धर्म और ईश्वर में न केवल विश्वास ही नहीं रखते बल्कि उनका मखौल भी उड़ाते हैं। मूल्य।-)

(३) आर्य्य-पर्व्व पद्धति

आर्य्य जगत में एक से ही त्यौहार मनाने तथा त्यौहारों के सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करा देने के लिये इस पुस्तक की रचना की गई है। इस का प्रत्येक आर्य-परिवार में रखना आवश्यक है। संशोधित संस्करण ॥≈)

(४) कर्त्तव्य दर्पण

आर्यों की नित्य कर्म विधि-इत्यादि की यह बहुत उत्तम पुस्तक है। आर्य्यसमाज सम्बन्धी आवश्यक ज्ञातव्य बातें भी इसमें दी गई हैं। मूल्य ≈)॥

(५) कथामाला

इस पुस्तक में स्वामी जी महाराज की विद्वत्ता-पूर्ण और अत्यन्त उपयोगी कथाओं का संग्रह किया गया है। आर्य्य नर नारी मात्रके स्वाध्याय के योग्य है। मूल्य।≈)

(६) आर्य्य जीवन और गृहस्थधर्म

लेखक—पं० रघुनाथप्रसाद पाठक

आर्य्य जीवन किस प्रकार बनाया जाता है और गृहस्थ किस प्रकार श्रेष्ठ बनाए जा सकते हैं इन सब बातों का इस पुस्तक में वर्णन किया गया है। पुस्तक मुख्यतया श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के प्रवचनों और व्याख्यानों के आधार पर लिखी गई है। मूल्य।≈)

(७) आर्य्यवर्त की वाणी

अनुवादक पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक

यह पुस्तक श्रीयुत साधु टी० एल० वास्वानी की वायस आफ आर्य्यवर्त का हिन्दी अनुवाद है। इसमें ऋषि दयानन्द का जीवन संक्षेप में बहुत ओजस्वनी भाषा में प्रस्तुत किया गया है। अन्य भी बहुत सी नवयुवकोपयोगी सामग्री इस पुस्तक में प्रस्तुत की गई है। मूल्य ≈)

(8) Ecclesia Divina

Well - Bound - By Bhunanand Saraswati M A, 5/-

(9) Fountain Head of Religion

By Pt Ganga Prasad M A, Chief Judge

Well-bound	1/4/
Un-bound	-/12/-

(१०) अमृत वर्षा ।॥)

लेखक म० नारायण स्वामी जी

(११) गृहस्थ जीवन रहस्य

सजिल्द १।)

(१२) आत्म दर्शन १।)

(१३) वेद तत्व प्रकाश सजिल्द

सं० श्री सुखदेव विद्यावाचस्पति २)

मिलने का पता :—

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा, श्रद्धानन्द बाज़ार, देहली।

कमीशन रेट्स

पुस्तकालय सार्वदेशिक सभा।

अन्य ग्रन्थ कर्त्ताओं की पुस्तकों को छोड़ कर शेष सभा तथा सभा द्वारा प्रकाशित श्री महात्मा नारायण स्वामी जी की पुस्तकों के घटे हुए मूल्य पर पुस्तक विक्रेताओं को निम्न प्रकार कमीशन दिया जायगा।

५) से २५) तक	१५) प्रति सैकड़ा
२६) से ५०) तक	२०) प्रति सैकड़ा
५१) से १००) तक	२५) प्रति सैकड़ा

नोट—(१) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश तथा (२) दयानन्द ग्रन्थ माला पर कुछ कमीशन नहीं दिया जायगा।

—— ❀ ——

सार्वदेशिक में विज्ञापन छपाई
के
रेट्स

स्थान	१ मासका	३ मासका	६ मासका	१ वर्ष का
पूरा पृष्ठ	१०)	२५)	४०)	७५)
एक कालम	६)	१५)	२५)	४०)
आधा ,,	३॥)	८)	१५)	२५)
चौथाई ,,	२)	४)	८)	१५)

उजरत का धन नियमानुसार पेशगी आना चाहिए।

आर्य्य समाज के नियमोपनियम   १।) प्रति सैकड़ा
)। प्रति

मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

केन्द्रीय अनाथालय, रावी रोड, लाहौर की आवश्यकताएं

(ले० ला० बोसाराम, रिटायर्ड स्टोर कीपर N W R)
(मन्त्री केन्द्रीय अनाथालय)

(१) इस समय इस अनाथालय मे १७? बालक बालिकाएं है जिनका न केवल पालन पोषण किया जाता है बल्कि उनको धार्मिक तथा सामाजिक शिक्षा देकर अच्छा नागरिक बनाया जाता है। उनके लिए वस्त्रो की आवश्यकता है। दानी सज्जन जहाँ अपने बालको के लिये वस्त्र बनवाएं वहां इन बालको का भी अवश्य ध्यान रखें।

(२) वस्त्रो के अतिरिक्त भोजन के लिये सर्व प्रकारके खाद्यपदार्थ घृतादि की आवश्यकता है। दानी सज्जन घृतादि भेजें अथवा उसके लिये दान देकर कृतार्थ करें।

(३) अनाथालय का व्यय (५००) रु० मासिक है। वह दानी महाशयो की कृपा से पूरा होगा इस लिये प्रत्येक नर नारी दान देकर इस व्यय का पूरा करें।

(४) बालको के रहने के लिये स्थान पर्य्याप्त है परन्तु रोगी ग्रह कोई नही है इन मे से किसी न किसी का किसी समय रोगी होना स्वाभाविक है अतः यदि कोई दानी कमरा बनवाना चाहे तो वह बनवाने की कृपा करे ताकि वह कष्ट दूर हो जावे।

(५) इस अनाथालय के प्रबन्ध के विषय मे यह लिखना पर्याप्त होगा कि सरकार ने जो भगाए गए बालक पकड़े थे और जिनके सम्बधियो का पता नही लगा वे सब बालक इसी अनाथालय मे रखे हैं वा जो अन्य असहाय बालक सरकार के पास आते है वे भी इस अनाथालय मे भेजे जाते है। यह अनाथलय सरकार की तरफ से Registered भी है इसके हिसाब किताब बराबर रखे और Audit किए जाते हैं।

(६) अनाथालय के बालक कभी बाहर मांगने के लिए नही भेजे जाते हैं। उनके पढाने के लिये टैकनीकल स्कूल भी है जो सरकार से स्वीकृत है। इसमे बाहर के बालक भी मुफ्त पढ़ाये जाते है।

(७) इसके अधिकारी इस समय निम्न सज्जन है —

प्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

उप प्रधान श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी, उप प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

,, श्री पं० ठाकुरदत्त शास्त्री मुलतानी, लाहौर

,, श्री डाक्टर गणेशीलाल जी M B, B S

कोषाध्यक्ष लाला विज्ञानशील जी B A, लाहौर।

अंत मे नम्र निवेदन है कि प्रत्येक धर्मप्रेमी सज्जन अपनी शक्त्यानुसार कुछ न कुछ दान देकर सभा का हाथ बटावे और पुण्य के भागी बनें। जो धन इस अनाथालय मे आता है उस की रसीद तत्काल भेजी जाती है।

ध्यानयोग प्रकाश

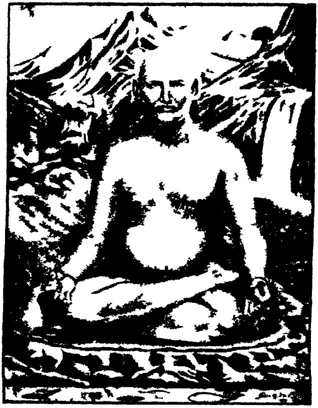
यह वह प्रसिद्ध पुस्तक है जिसको योगी श्री स्वा० लक्ष्मणानन्द जी ने लिखा था और जिसको अपने विषय का अद्वितीय पुस्तक समझा गया था। यह पुस्तक कई वर्षों से अप्राप्य थी। श्रीमती विद्यावती जी सेठ आचार्य्या, कन्या गुरुकुल देहरादून ने अब इसे पुनः छपवा कर सर्व्व साधारण के लिये प्राप्य बना दिया है और इसकी भूमिका भी स्वयं लिखी है और आचार्य्य रामदेव जी ने भी पुस्तक के प्रारम्भ में अपना वक्तव्य दिया है। आर्य्य समाज तथा उसके बाहर के क्षेत्र में योग विषयक चर्चा दिनों दिन बढ़ती जा रही है, परन्तु इस पुस्तक में जो गंभीर तथा क्रियात्मक आलोचना इस विषय की की गई है वह किसी दूसरी पुस्तक में नहीं मिलती। इस पुस्तक की मांग इससे ही प्रगट होरही है कि अब इसका तीसरा संस्करण जनता के हाथ में जा रहा है। ४०० से अधिक पृष्ठों की पुस्तक की कीमत केवल १।=) सजिल्द और १।) अजिल्द रक्खी गई है।

पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये 'चन्द्र प्रिंटिंग प्रेस' देहली, से प्रकाशित

जुलाई १९३८ Reg No L 2121

ऋग्वेद ओ३म् यजुर्वेद

सार्वदेशिक



सम्पादक—प्रो० सुधाकर, एम० ए०

स० सम्पादक—श्री रघुनाथप्रसाद पाठक

वार्षिक मूल्य स्वदेश २) एक प्रति का ≈) विदेश से ५ शि० वार्षिक

अथर्ववेद सामवेद

विषय-सूची

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों के प्रचारार्थ बहु संख्या में ये ग्रन्थ एकत्र किये गये हैं और निश्चय किया गया है कि पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन भी कुछ अधिक दिया जावे। छोटे बड़े सभी ग्रन्थ अच्छे काग़ज़ पर बड़े आकार में हैं। उनका मूल्य सहित विवरण इस प्रकार है। इनके मँगाने के लिये शीघ्र आर्डर भेजने चाहियें—

	असली मू०	घटा हुआ मू०
(१) दयानन्द ग्रन्थमाला दो जिल्दों में	५)	२॥)
(२) ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका बढ़िया	१॥)	१)
(३) आर्याभिविनय	।-)	।)
(४) महर्षि का संक्षिप्त जीवन चरित्र मय रंगीन चित्रों के	।)	≡)
(५) वेद विरुद्ध मत खण्डनम्	=)॥	=)
(६) गो करुणानिधि	=)	-)॥
(७) शिक्षापत्री	=)	-)॥
(८) भ्रान्ति निवारणम्	=)	-)॥
(९) सत्यधर्म विचार	-)॥	-)
(१०) काशी शास्त्रार्थ	-)	)॥
(११) भ्रमोच्छेदन	-)	)॥
(१२) आर्योद्देश्य रत्न माला	)॥	)॥
(१३) स्वीकार पत्रम्	)॥	)॥

सार्वदेशिक सभा के पुस्तकालय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

(१) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश—

यह महर्षि दयानन्द कृत हिन्दी सत्यार्थप्रकाश का संस्कृतानुवाद है। अनुवादक गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) के संस्कृत विभाग के मुख्याध्यापक श्री पण्डित शङ्करदेव पाठक हैं। अनुवाद की भाषा मधुर एवं सरल है। महर्षि का आशय ज्यों का त्यों प्रगट किया गया है। मूल्य २।) सजिल्द २॥)

मूल्य प्रचारार्थ ।)

(२) प्राणायाम विधि—

यह पुस्तक जिसमें प्राणायाम सम्बन्धी कठिन से कठिन विधियों को सुगम बनाया गया है श्री पूज्यपाद १०८ श्री नारायण स्वामी जी महाराज द्वारा लिखी गई है। प्राणायाम के प्रेमियों की एक बड़ी खोज तथा आवश्यकता इसके द्वारा पूरी हो सकती है। मूल्य -) घटा हुआ मूल्य)॥

(३) दयानन्द लहरी—

इसमें भगवान दयानन्द का स्तवन शिखरणी आदि सुन्दर छन्दों में किया गया है। प्रत्येक छन्द के साथ भाषानुवाद भी दिया गया है। पुस्तक के लेखक श्री पं० मेधाव्रत जी कविरत्न हैं। मूल्य -)॥, घटा हुआ मूल्य -)

(४) दश नियम व्याख्याः—

श्री पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति द्वारा यह "दश नियम व्याख्या" नाम की पुस्तक लिखी गई है। इसमें आर्यसमाज के दश नियमों की विस्तृत तथा गवेषणापूर्ण व्याख्या की गई है। मूल्य ।), घटा हुआ मूल्य ≈)

(५) ओम्प्रत्ययः—

यह पुस्तक श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति की लेखनी से लिखी गई है। ओ३म् परमात्मा की विस्तृत व्याख्या विद्यमान है। मूल्य ॥।), घटा हुआ मूल्य ।≈)

(६) वैदिक सिद्धान्तः—

यह पुस्तक भिन्न भिन्न वैदिक सिद्धान्तों पर आर्य्य विद्वानों द्वारा लिखित निबन्धों का अत्युत्तम संग्रह है। मूल्य १।) सजिल्द १॥), घटा हुआ मूल्य ॥।) सजिल्द १)

(७) वैदिक विवाहादर्शः—

इस पुस्तक में वैदिक विवाह का आदर्श प्रस्तुत किया गया है और विवाह सम्बन्धी लगभग सभी आवश्यक बातों पर प्रकाश डाला गया है। मुख्यतया पश्चिमी थ्योरियों के विवेचन पूर्वक विवाह सम्बन्धी वैदिक आदर्शों और शिक्षाओं की श्रेष्ठता प्रतिपादित की गई है। मूल्य १।), घटा हुआ १)

(८) विदेशों में आर्यसमाज का इतिहासः—

जिस पुस्तक को छपाने की मथुरा शताब्दी पर घोषणा की गई थी और जिसके पढ़ने के लिये पिछले आठ वर्षों से देश और विदेशों के आर्य्य-नर नारी बेचैन हो रहे थे वह सार्वदेशिक सभा की ओर से तैयार हो कर छप गई है। पुस्तक में आर्य्य प्रचारकों तथा विदेश की आर्य्य-संस्था आदिकों के लग-भग ११ चित्र हैं। पुस्तक पढ़ने योग्य है। छपाई, सफाई, कागज आकार प्रकार बढ़िया। मूल्य ॥), घटा हुआ ।≈)

(९) यमपितृ परिचय—लेखक श्री पं० प्रियरत्न जी 'आर्ष' मूल्य २), घटा हुआ १)

इस पुस्तक में 'यम और पितृ' प्रकरण वाले वेद मन्त्रों की विद्वत्ता पूर्ण व्याख्या की गई है। स्वाध्याय शील सज्जनों के पढ़ने और संग्रह करने योग्य अनुपम ग्रन्थ है।

(१०) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर—सम्पादक—श्री कृष्णचन्द्र जी विरमानी, मूल्य १।)

पुस्तक की विशेषता यह है कि भिन्न भिन्न महत्व पूर्ण विषयों पर स्वामी जी महाराज की भिन्न भिन्न पुस्तकों व पत्र व्यवहार तक मे वर्णित मत को एक जगह संग्रह किया गया है। यह पुस्तक सम्पादक के लगभग ११ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल है। जिस किसी विषय में भी ऋषि दयानन्द की सम्मति जानना चाहो वही प्रकरण इस पुस्तक में देखोगे। पुस्तक बहुत उपयोगी है।

(११) **आर्य्य सिद्धान्त विमर्श**— प्रथम आर्य्य विद्वत् सम्मेलन के निबन्धों का संग्रह। कतिपय आर्य्य विद्वानों ने गम्भीर विषयों पर अपनी लेखनी द्वारा प्रकाश डाला है। स्वाध्याय शील व्यक्तियों के लिए यह पुस्तक अमूल्य ग्रन्थ का काम देगी। (पृष्ठ संख्या लग भग ५०० मूल्य १॥)

(१२) **भजन-भास्कर**— (दूसरा संस्करण) यह पुस्तक भाव, भाषा, संगीत, छन्द, वैदिक सिद्धान्त शिक्षण इत्यादि की दृष्टि से उत्तम भजनो और कविताओं का संग्रह है। इसमे देश के और आर्य समाज के प्रसिद्ध २ संगीतज्ञो कवियों और भजनोपदेशकों की उत्कृष्ट रचनाएँ हैं। इसमे देश, धर्म, ईश्वर, समाजसुधार, बाल-शिक्षण शुद्धि, ऋषि-महिमा, आर्य्यसमाज महिमा इत्यादि अनेकानेक धार्मिक, सामाजिक और जातीय विषयो पर भजन मौजूद है। संग्रहकर्त्ता श्री पं० हरिशंकर शर्मा कविरत्न (भूत पूर्व सम्पादक आर्य मित्र) हैं। आर्य्यसमाज मे तुकबन्दों की बढ़ती हुई तुकबन्दी को निरुत्साहित करने तथा आर्य्यसमाजों और परिवारों मे श्रेष्ठ संगीत को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ही मथुरा की दयानन्द शताब्दी महोत्सव के अवसर पर यह संग्रह तैयार कराया गया था। अब जनता की बढती हुई माग को पूरा करने के उद्देश्य से ही इस संग्रह का दूसरा संस्करण बढ़िया आकार प्रकार इत्यादि मे छपाया गया है। मूल्य ॥)

(१३) **सत्यार्थ प्रकाश**— (सस्ता संस्करण)—महर्षि दयानन्द सरस्वती की अमर कृति। २० × ३० सोलह पेजी साइज के ८०० से अधिक पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल ।)॥ प्रति १०० प्रति या इससे अधिक लेने पर ।) (चार आना) प्रति।

		अ० मू०	घ० मू०		अ० मू०	घ० मू०
(१४)	वेद में असित शब्द	-)।	-)	(१६) विरजानन्द विजय	।)	=)
	,, २५ प्रति का	१।)	१।)	(१७) हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद उर्दू	।)	=)
(१५)	वैदिक सूर्य विज्ञान	=)	=)			

18 Agnihotra—

By Dr Satya Prakash D Sc Lecturer in Chemistry University of Allahabad
Well Bound—Price Rs 2 8 0

The Author has described in details the process of Agnihotra and has shown that during the process of this fumigation such products are given out which are bactericidal and vermifugal, and this ancient practice of the Aryans is very healthy hygienic and productive of physical and spiritual results

"The writer is a **Doctor of Science.** He has brought to bear upon the subject all the scientific lore that he has acquired at the University and environments"

—Ganganath Jha

"As the book deals with the ancient practice in a systematic manner, I believe, it will be found interesting and useful to readers in the East and in the West, and hence I have a great pleasure in recommending it to the public"

—*N R Dhar*

19 Crucifixion by an eye witness—

This valuable book contains a detailed account of the crucifixion of Jesus Christ, given by one who witnessed it with his own eyes.—price As. 6, Reduced price As [illegible]

20 Truth and Vedas—

It is an excellent exposition and translation of "Vibhrat." —price As 8 Reduced price A [illegible]

21 Truth Bed Rocks of Aryan culture—

The Subject dealt with in this book is the ideal of truth stating candidly by means of Vedic Mantras and fine stories to what extent the Aryan race has lived to the ideal —price As 10, Reduced price As 8

22 Torch Bearer—

A biographical sketch of Swami Dayanand —price Rs. 1/8/- Reduced price Re 1/-

23 Vedic Teachings—

This book contains the most authentic replies to the objections raised about the Vedas by Dr Bhandarkar The learned author has, besides, brought forth the superiority, the Vedic Teachings contain —price Rs. 1/12/-, Reduced price Rs. 1/4/-

24 Voice of Aryavarta—

This little book comes from the pen of Mr T L Vaswani and contains most lucid reflections on Rishi Dayanand and his life and teaching,—price As. 8 Reduced price As 2

25 The daily Prayer of an Arya—

This booklet contains an ethical exposition in the light of Modern Thought of our daily Sandhya —price As 4, bound and As 3/- unbound

26 The Light of the Vedas—

It contains lucid translation of 500 Vedic Mantras. A book worth presenting to people of alien faiths price Rs 1/4/-

27 Commentary on Ishopanishat—

Translated by the late Pt Ghasi Ram M. A L. L. B.—price As. 4.

पुस्तक मिलने का पता:—

कार्यालय—सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा,

श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

ओ३म्

सार्वदेशिक

✽ सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र ✽

वर्ष १२	आषाढ़ १९९५ जुलाई १९३८ ई०]	[दयानन्दाब्द ११४	अङ्क ५

❁ वेद की शिक्षाएँ ❁

आ त्वा रम्भं न जिव्रयो ररम्भा शवसस्पते । ऋग० ८—४५—२०

हे बलों के स्वामिन् ! तू मुझ निर्बल की लाठी है ।

Thou art souree of my strength May Thou be my staff or support in this life !

न पापासो मनामहे नारायासो न जल्हवः । ऋग० ८—६१—११

हम ईश्वर का मनन पापी, कंजूस और यज्ञहीन होकर न करें ।

May we not meditate on Thee as sinners, misers or those bereft of unselfish deeds !

सत्यार्थ प्रकाश लेखमाला—

दन्तधावन

(ले० श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज)

*

भारतवर्ष में दन्तधावन नित्य कृत्य माना गया है-प्रात:काल उठकर शौचादि से निवृत्त हो कर स्नान से पूर्व दन्तधावन करने की परिपाटी है इस समय अनेक जन अंग्रेजी ढंग पर ब्रुश से भी दांत साफ करते हैं। ब्रुश के साथ २ मंजन का प्रयोग भी होता है। विक्रेताओं ने अनेक प्रकार के मंजन बनाये हुए हैं। कई लोग ब्रुश का प्रयोग करके मंजन का व्यवहार दन्तधावन के साथ भी करते हैं, जिनके दांतों में कोई व्याधि हो वह उस व्याधि की निवृत्ति के लिये इस प्रकार का व्यवहार करते हैं। यदि रोग न हो तो केवल दन्तधावन के व्यवहार से ही दांत शुद्ध किये जाने की प्रथा अधिक है।

किसी २ प्रान्त में आजकल युवक मार्ग में चलते चलते दन्तधावन भी करते जाते हैं और अपने साथियों से बातें भी करते जाते हैं। किसी २ प्रान्त में ऐसा नहीं करते है। वहां किसी स्थान में बैठकर दन्तधावन करते हैं। इन अवस्थाओं को देखकर ही मेरे मन में विचार हुआ है कि इस विषय पर यदि प्राचीन पुस्तकों में कुछ मिले तो उसे जनता के ज्ञानार्थ सार्वदेशिक पत्र में छाप दिया जाय। एक दिन मैं एक पुस्तक देख रहा था उसमें यह विषय मिल गया। उससे मेरे विचार की पूर्ति होगई। आशा है पाठक इस पर विचार करके कुछ न कुछ निश्चय अपने लिये अवश्य कर लेंगे।

तत ऊर्ध्वं क्रमेणैव धावयेत्त्वा रवथा दत'। अङ्गिरा

पूर्वं ऊर्ध्वं दन्तान संशोध्य पश्चादधो दन्तान्शोधयेत

दन्तधावन से प्रथम ऊपर के दाँतों को शुद्ध करके पश्चात् नीचे के दांत साफ करे।

मध्यांगुलि समं स्थूल द्वादशांगुलि संमितम्।

स त्वर्कं दन्त काष्ठं स्यात्तदग्रेण तु धावयेत्। कूर्म

मध्यांगुलि के सम दन्तधावन स्थूल हो, और द्वादशांगुल लम्बी हो। त्वचा सहित हो उसके अग्रभाग से दांतों को साफ करे।

इदं तु विषम दन्तस्य इतरस्य तु कनिष्ठिकांगुलि।

समं स्थूलम्।

यह विषम दांत वालों के लिये है अन्य के लिये कनिष्ठिकांगुलि (सब से छोटी अंगुलि) के सम स्थूल होनी चाहिये।

सूक्ष्मं तु हीन दन्तस्य सम दन्तस्य मध्यमम्।

स्थूलं विषम दन्तस्य त्रिविधं दन्तधावनम। विष्णु·

द्वादशांगुलिकं विप्रे काष्ठमाहु मनीषिण।

क्षत्रविट् शूद्रजातीना नव षट् चतुरंगुलिम। विष्णु

पतले दांत वालों के लिये सूक्ष्म, सम दांत वालों के लिये मध्यम और बड़े दांत वालों के लिये मोटी दातुन चाहिये। ब्राह्मण को १२ क्षत्रिय को ६ वैश्य को ६ शूद्र को ४ अंगुल लम्बी दन्त-

धावन हो।

वर्ण भेद से दन्तधावन की लम्बाई का भेद युक्ति रहित प्रतीत होता है इसका भाव यही लिया जा सकता है जो दन्तधावन १२—४ अंगुल तक लम्बी हो। यह तो हुआ दन्तधावन के परिमाण के विषय मे, आगे दन्तधावन कैसे करनी चाहिये यह लिखा हुआ है। यथा—

प्रक्षाल्य पादौ हस्तौ च मुखं च सुसमाहित.।
दक्षिणं बाहुमुद्धृत्य कुर्याज्जन्वन्तरातु तत्। व्यास

हाथ और पग धोकर मुख भली प्रकार साफ करके दक्षिण भुजा जानु के अन्दर करके दन्तधावन करे।

इसमे हाथ, पग और मुख धोकर लेख होने से यही प्रतीत होता है कि प्रात.काल शौचादि के पश्चात् दन्तधावन की जाय। चिकित्सा के पुस्तकों में कहीं २ भोजन के अनन्तर भी दन्तधावन का विधान है, उस समय भी हाथ पग मुख साफ करके ही करना होगा।

प्रक्षाल्य भक्षयेत् काष्ठं प्रक्षाल्यैवतु संत्यजेत्।

दन्तधावन को धोकर ही मुख में डाले और धोकर ही फेंके।

यह विधि एक स्थान पर बैठकर ही हो सकती है। जो व्यक्ति चलते चलते दन्तधावन करते हैं उनके लिये यह असंभव है अत: बैठकर ही करना चाहिये।

दन्तधावन का प्रयोजन क्या है इस विषय में मन्त्र कह कर एक पाठ लिखा है मैं उसे भी लिख देना उचित समझता हूँ। वह इस प्रकार है,

मुख दुर्गन्धि नाशाय दन्ताना च विशुद्धये।
ष्ठीवनाय च गात्राणा कुर्वेऽह दन्तधावनम्।

मुख की दुर्गन्धि दूर करने और दात शुद्ध करने, शरीर को ठीक करने के लिये मैं दन्तधावन करता हूँ।

तूष्णीं वा दन्तधावनम्।

अथवा चुपचाप दन्तधावन करे।

इस लेख मे दन्तधावन करने के विषय में सन्याषाढ़ श्रौत सूत्र में जो प्रमाण लिखे हैं मैंने उनको लिख दिया है जिसका सार यह है।

१ दन्तधावन करनी चाहिये।
२ दन्तधावन ४-१२ अंगुल तक लम्बी और कनिष्ठिका के अग्रभाग से मध्यमागुलि की मोटाई सम मोटी हो।
३ काष्ठ को धोकर मुख में डाले और धोकर हो फेंके जिससे जिह्वा को साफ करने का भाव निकाला जासकता है।
४ बैठकर दाएं हाथ को जानु के अन्दर करके दन्तधावन करे।
५ मुखादि शुद्धि का भाव रख ऐसे शब्दों को बोलकर दन्तधावन करे अथवा चुपचाप करे।

यह तो हुआ दन्तधावन का विधान, अब एक प्रश्न शेष है कि दन्तधावन किस काष्ठ की कीजाय, इस विषय में कहीं २ वृक्षों के नाम भी लिखे हैं उसमें कोई वृक्ष किसी प्रातमे होता है और किसी में नहीं होता है। उसमें भी सर्व वृक्षों के नाम नहीं लिखे हैं इस लिये जिनके नाम नहीं लिखे उनके विषय में भ्रम हो सकता है कि इस वृक्षकी दन्तधावन बन सकती है या नहीं। इस बात को ध्यान में रख कर सामान्य लक्षण लिख देना

पश्चिम और उन्नति

(ले०—श्री पं० रघुनाथप्रसाद पाठक)

❀

मानवी—सफलता केवल साँसारिक समृद्धि के पैमाने से नहीं नापी जा सकती है। वह पैमाना भ्रम में डालने वाला होता है। आज इसी पैमाने के द्वारा पश्चिम बहुत उन्नत समझा जाता है। किसी काल में भारत वर्ष अपनी समृद्धि के कारण संसार प्रसिद्ध था परन्तु भारत के पतन के कारणों का विश्ले-षण करने वालों का यह ठीक मत है कि भारत की वह उन्नति वास्तविक उन्नति नहीं थी, भारतको इसने आध्यात्मिक दृष्टि से दिवालिया बना दिया था और यही अपने विविध दुष्परिणामों के साथ भारत के पतन का कारण बनी थी। ठीक यही दशा आज पश्चिम की है। वह आध्यात्मिक दृष्टि से दिवालिया है, उसकी उन्नति वास्तविक उन्नति नहीं है और यह उसे विनाश की ओर जिसके लक्षण देख पा रहे हैं अग्रसर कर रही है।

वस्तुत भौतिक उन्नति अपना स्थान और मूल्य रखती है परन्तु यह एक उद्देश्य की सिद्धि के लिए साधन होती है। वह उद्देश्य आत्मिक उन्नति होता है। जब हम इस साधन को सिद्ध मान कर चलते हैं तभी ध्येय ओझल हो जाने से हम अव-नति की ओर अग्रसर हो जाते हैं। वे लोग और राष्ट्र धन्य है जो भौतिक और आध्यात्मिक दोनो दृष्टियो से उन्नत होते है। ऐसे ही लोगों और राष्ट्रों से संसार की उन्नति और उसका कल्याण होता है। क्याही अच्छा हो पश्चिम उन्नति के इस मर्मको समझे और उपर्युक्त ऐतिहासिक तथ्य से शिक्षा ग्रहण करे।

पर्याप्त मानकर उसे ही लिखता हूँ।

सार्द्रं दन्त काष्ठं समं छिन्न सत्वक् पर्वकं कषायं तिक्तं कटुकं कण्टकान्वितम्। सुगन्धिवृक्ष गुल्मान क्षीरिणो वा भक्षयेत्। दन्तधावनं कीटाद्य दूषितं शुचिं वितस्तिमात्रम्। सन्यापाद गृह्य सूत्र

दान्तधावन का काष्ठ आर्द्र (गीला) सम सत्वक कषाय, (कसेला) तिक्त (तेज) कटुक (कड़वा) सकण्टक वृक्ष का हो। जिस वृक्ष, गुल्म में सुगन्धि है अथवा दूध भी है उसका भी प्रयोग हो सकता है। वह काष्ठ दूषित न हो, कीटादि का खाया हुआ न हो उस पर कोई बुरी वस्तु भी न लगी हो अर्थात् शुद्ध हो और वितस्ता-मात्र लम्बा हो।

आशा है पाठक इस पर विचार करके कुछ लाभ उठाने का यत्न करेंगे। चिकित्सा शास्त्र मे यह विषय इससे अधिक भी मिलता है परन्तु मैंने इस समय केवल सन्यापाद सूत्र के आधार पर ही कुछ लिखा है। अन्य प्रमाणों की उपेक्षा जान बूझ कर की है।

सर्वधर्म सम्मेलन इन्दौर में वैदिक धर्म के प्रतिनिधि प्र० स्ना० धर्मदेवजी विद्यावाचस्पति के २०-४-३८ को दिये भाषण का सारांश

(सार्वदेशिक के मई-अङ्क के आगे।)

ईश्वरवाद की फिलासफी के साथ सम्बन्ध के विषय मे इङ्गलैण्ड के सुप्रसिद्ध निबन्ध लेखक बेकन ने जो लिखा था अत्यन्त महत्वपूर्ण होने के कारण उसका उल्लेख करना यहा अनुचित न होगा—

A little philosophy inclineth man's mind to atheism, but depth in philosophy bringeth man's mind about to religion, for while the mind of man looketh upon second causes scattered, it may sometimes rest in them and go no further; but when it beholdeth the chain of them confederate and linked together, it must needs fly to Providence and Deity

भावार्थ यह कि थोड़ा सा दार्शनिक ज्ञान (Philosophy) मनुष्य के मन को नास्तिकता की ओर झुका देता है किन्तु गम्भीर तत्त्वज्ञान मनुष्य के मन को अवश्य ही ईश्वरवाद और धर्म की ओर प्रवृत्त करता है। यह संभव है कि गम्भीर विचार न करने पर मन केवल बाह्य गौण कारणों तक सीमित रह जाए और आगे न जाए किन्तु जब संसार के अन्दर क्रम और शृङ्खलाबद्ध नियम दृष्टिगोचर होता है तो मन स्वभावत और आवश्यक तौर पर ईश्वर की ओर दौड़ता है।

न्याय, साङ्ख्य, योग, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त सब दर्शनकार एक स्वर से वेदों को परम प्रमाण मानते हैं क्योंकि उन में कोई बात बुद्धि के विरुद्ध नहीं है।

सार्वभौम धर्म के लिये यह बात आवश्यक है कि उस की शिक्षाएं और सिद्धान्त विज्ञान और बुद्धि के अनुकूल हों। वैदिक धर्म न केवल विज्ञान के विरुद्ध नहीं है बल्कि वह पूर्ण वैज्ञानिक है इस बात को अनेक निष्पक्षपात पाश्चात्य विद्वानों ने भी स्वीकार किया है, उदाहरणार्थ मि० ब्राऊन (W D. Brown) नामक अंग्रेज विद्वान् ने The Superiority of the Vedic Religion नामक अपने ग्रन्थ में वैदिकधर्म के विषय मे लिखा है —

"It recognises but one God It is throughly *Scientific Religion* where Religion and Science meet hand in hand Here Theology is based upon Science and Philosophy"(करतालिका ध्वनि)

अर्थात वैदिकधर्म केवल एक ईश्वर को स्वीकार करता है। यह पूर्णतया वैज्ञानिकधर्म है जहां धर्म और विज्ञान हाथ मे हाथ मिला कर चलते हैं। इसके सिद्धान्त विज्ञान और तत्वज्ञान पर आश्रित हैं।

फ्रांस के सुप्रसिद्ध विद्वान् जैकोलियट् महोदय

ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ The Bible in India में मत मतान्तरों की सृष्ट्युत्पत्ति विषयक कल्पनाओं की इस विषयक वैदिक सिद्धान्त के साथ तुलना करते हुए आश्चर्य के साथ लिखा था—

Astonishing fact! The Hindu Revelation (Veda) is of all revelations the only one whose ideas are in perfect *harmony with modern science* as it oclaims the slow and gradual formotion of the world.

अर्थात् यह बड़ी आश्चयजनक घटना है कि ईश्वरीय ज्ञान माने जाने वाले सब ग्रन्थों में से केवल वेद ही है जिस के विचार वर्तमान् विज्ञान सर्वथा अनुकूल हैं क्योंकि उन में जगत की क्रमिक उत्पत्तिका प्रतिपादन किया गया है।

मिसेज़ ह्वीलर ह्विलौक्स (Mrs Wheeler Wilcox) नामक सुप्रसिद्ध अमेरिकन विदुषी ने वेदों के विषय में कहा था—

We have all heard and read about the ancient religion of India. It is the land of the great Vedas—the most emarkable work containing not only religious ideas and perfect life, but also facts which all the science has since proved true.

Electricity, Radium, Elections, Airships, all seemed to be known to the sires who found the Vedas. (quoted ere from Mother America)

अर्थात् हम सबने भारत के प्राचीन धर्म के विषय में सुना और पढ़ा है। यह भारत महान् वेदों की भूमि है जो अत्यन्त आश्चर्य जनक तथा महत्व पूर्ण ग्रन्थ हैं जिन में न केवल पूर्ण जीवन के लिये उपयोगी धार्मिक विचारों का प्रतिपादन है किन्तु वे सचाइयाँ पाई जाती हैं जिनको विज्ञान ने सर्वथा सत्य सिद्ध किया है। विद्युत्, रेडियम्, ऐलक्ट्रोन्स विमान इत्यादि सब विषय वैदिक ऋषियों को ज्ञात थे ऐसा प्रतीत होता है।

विस्तार भय से वैदिक धर्म की वैज्ञानिकता विषयक अन्य उद्धरण यहा नहीं दिये जा सकते।

वैदिक धर्म के अन्दर अन्य मतों की सब अच्छाइयों का समावेश हो जाता है। उदाहरणार्थ पारसी मत के मूल ग्रन्थ जिन्दावस्ता में पवित्रता पर बहुत बल दिया गया है। वेदों के पवमान' मो अद्यन पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु नः॥ (ऋ० ६।६७।२२)

सहस्रधारे वितते पवित्र आ वाचं पुनन्ति कवयो मनीषिणः॥ (ऋ० ६—७३—७)

तन्मे मन शिवसंकल्पमस्तु॥ (यजु० ३४।१।६

पवमानः पुनातु मा क्रत्वे दक्षाय जीवसे अथो अरिष्टतातये॥ (अथर्व० ६।१९)

इत्यादि मन्त्रों में शारीरिक, वाचिक,मानसिक सब प्रकार की पवित्रता के लिये प्रार्थना तथा उपदेश हैं।

जैन और बौद्ध मत के ग्रन्थों में जिस अहिंसा तत्त्व का प्रतिपादन है उसका

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणिभूतानि समीक्षे मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे। (यजु० ३६।१८)

पशूंस्त्रायेथाम् (यजु० ६।२१)

द्विपादव चतुष्पान्पाहि (यजु० १४।८)

स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्य ।। (अथर्व १।३१।४)

इत्यादि मन्त्रों में बहुत अच्छी तरह से विधान करते हुए सब प्राणियों के हित के लिए प्रार्थना की गई है।

ईसाइयों के मतग्रन्थ न्यूटेस्टेमेन्ट (New Testament) में परमेश्वर को सब के पिता और मनुष्य मात्र को भाई समझने Fatherhood of God and Brotherhood of man) के सिद्धान्त पर बल दिया गया है जो वेदों के त्वंहिन पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। पिता माता सदमिन्मानुषाणाम् इत्यादि मन्त्रों मे स्पष्टतया पाया जाता है जैसे कि पहले सप्रमाण बताया जा चुका है। वेद भगवान् को न केवल पिताके रूप में अपितु मङ्गलमयी करुणामयी माता के रूप मे मानने का आदेश करते हैं जो अत्यन्त शान्तिदायिनी पवित्र भावना है। इसलाम के मूल ग्रन्थ कुरान में एक ईश्वर की पूजा पर जोर दिया गया है साथ ही ईश्वर के प्रति समर्पण का भाव उस में प्रधान है। वेदों में एकेश्वरवाद का ही स्पष्ट प्रतिपादन है और उसके प्रति अपने को समर्पित कर देने का भाव वैदिक प्रार्थनाओं में ओत-प्रोत है, इस बात को संक्षेप से पहले सप्रमाण बताया ही जा चुका है।

कौन्ट जौर्न्संजर्ना (Count Bjornsjerma) श्लीगल, कोल ब्रुक् अर्नेस्टवुड मि० ब्राउन इत्यादि अनेक धुरन्धर पाश्चात्य विद्वानों ने

The Ancient Hindu Religion as founded on the Hindu Scripture Vedas) recognises but one God (Colebrook) "There truly sublime ideas can not fail to convince us that the Vedas recognise only one God" (Count Bjornsjema)

इत्यादि वाक्यों द्वारा अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में इस बात का स्वीकार किया है कि वैदिक धर्म विशुद्ध एकेश्वरवाद प्रतिपादक है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि अन्य मतों की सब उत्तम शिक्षाएं विशुद्ध रूपमे वेदों में पाई जाती हैं और वैदिक धर्म ही सब धर्मों का आदि स्रोत है। इस सार्वभौम युक्तियुक्त और वैज्ञानिक धर्म की उत्तम शिक्षाओं पर जिन मे से विश्वप्रेम तथा विश्वबन्धुत्व विषयक कुछ शिक्षाओं का इस भाषण में निर्देश किया गया है-जब मनुष्य आचरण करते हुए परस्पर प्रीति पूर्वक व्यवहार करने लगेंगे तभी जगत् में सच्ची शान्ति का साम्राज्य स्थापित हो जाएगा इसमें कोई सन्देह नहीं हो सकता। परमपिता परमात्मा हम सब के हृदय मे सच्चा प्रेम स्थापित करते हुए वेद की इन पवित्र शिक्षाओं पर चलने का हमें सामर्थ्य प्रदान करें यही हमारी प्रार्थना है।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

पत्नी का चुराया तथा पति का छीना जाना

(लेखक—श्री रामानन्द जी चटर्जी)

पत्नी का चुराया जाना चाहे वह फुसलाए, बहकाए अथवा भगाए जाने से ही क्यों न किया जाय, समस्त सभ्य देशों में अनुचित समझा जाता है और भारत वर्ष में भी ऐसा ही समझा जाता है।

भारतवर्ष में और कुछ दूसरे देशों में उन जातियों में जिनमें एक से अधिक पत्निया रखने की मनाही है यदि किसी लड़की की शादी ऐसे आदमी के साथ हो जाती है जिसकी दूसरी अथवा कई पत्निया जीवित होती हैं तो यह जरूरी नहीं कि वह लड़की पति को चुराने वाली कही जाय क्यों कि आमतौर से इस प्रकार की शादियाँ नाबालिग लड़कियों के संरक्षकों द्वारा होती हैं। इन जातियों में भी सभ्य और पढ़े लिखे लोग एक से अधिक पत्नियाँ रखने की प्रथा को घृणित समझते हैं।

पश्चिम में पत्नीका चुरायाजाना तथा पति का छीना जाना दोनों होते हैं। जिस प्रकार कुछ आदमी तलाक अथवा क़ानूनी विच्छेद कराने के बाद दूसरे आदमियों की पत्नियों से शादी कर लेते हैं इसी प्रकार कुछ स्त्रियाँ विवाहित पुरुषों को अपनी पत्नियों से प्रेम की पूर्ति करने के बाद उनसे शादी कर लेती हैं। इन दोनों दशाओं में पुरुषों का ही दोष होता है।

भारतवर्ष में भी कुछ व्यभिचारिणी स्त्रिया कुछ विवाहित पुरुषों के मन अपनी पत्नियों की ओर से फेर लेती हैं परन्तु यह बदनाम स्त्रियाँ पतियों पर कब्ज़ा करने वाली ठीक २ रीति से नहीं कहीं जासकती हैं। क्योंकि जो आदमी उनके वशमें होते हैं वे उनके पति नहीं बन जाते हैं।

पश्चिम की अर्थात ब्रिटिश, अमेरिकन तथा अन्य युरोपियन देवियों ने ऐसे हिन्दुस्तानियों से शादी की है जिनकी अन्य स्त्रियाँ भी जीवित थीं। पश्चिम की इन देवियों में से कुछ ने यह न जानते हुए ही कि पुरुष की पहले से शादी हुई है ऐसा किया है परन्तु कुछ ने सब कुछ पूछते हुए किया है। ये अन्तिम देवियाँ पतियों को छीनने वाली कही जानी चाहिएं।

यह बड़े दुख की बात है कि पिछले कुछ वर्षों में भारतवर्ष में पढ़ी लिखी और उच्च घरों की स्त्रियों द्वारा पति छीनने की घटनाएँ हो गई हैं। यद्यपि उनकी संख्या बहुत ही नगण्य है तब भी उन घटनाओं का होना मंगल सूचक नहीं है। हम यहाँ कुछ उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

कुछ वर्ष हुए देश और विदेश में शिक्षा प्राप्त एक भद्र महिला ने अपने से भिन्न जाति के एक नवयुवकसे जिसकी पतिपरायणा पत्नी जीवित थी, शादी की थी। यह शादी सिक्खोंके 'आनन्दमैरेज एक्ट के अधीन हुई थी।

कुछ हफ्ते हुए एक विवाहित हिन्दू और एक अविवाहित कैथोलिक भद्र महिला ने आपस मे शादी की है। यह दोनो विवाह के समय ब्रह्म-समाजी बन गए थे।

ब्रह्म-समाज के प्रमुख ने इस मामले का पता लगतेही इस शादी का खण्डन कर दिया और प्रगट कर दिया कि आचारिक और कानूनी दोनों ही दृष्टियों से यह शादी अनुचित थी।

अभी हाल मे एक नवयुवक ने जिसकी भारत तथा विदेश मे शिक्षा हुई है और जिसकी सुयोग्य पत्नी जीवित है एक भद्र नवयुवती से—जिसकी शिक्षा भी देश और विदेश मे हुई है—शादी की है। ये दोनो हिन्दुओं की भिन्न २ जाति के थे इसलिए विवाह कानूनन जायज़ बनाने के लिए उन्हें 'आर्य्य मैरेज ऐक्ट' की शरण लेनी पड़ी।

इस प्रकार की घटनाएँ भयकर हैं और यह विषय भी रुचिकर नहीं है, इन सब घटनाओ मे पुरुष भी दोषी थे।

किसी भी विवाहित भद्र पुरुष को अपने को अविवाहित नहीं प्रगट करना चाहिए, और विशेषत जब वह अविवाहित नवयुवती महिलाओ के बीच मे रहे।

यदि किसी ऐसे व्यक्ति को किसी महिला के आकर्षण का जरा सा भी आभास हो तो तत्काल उसे किसी न किसी प्रकार अपने विवाहित होने का पता देदेना चाहिए।

किसी विवाहित पुरुष के हृदय को चुराना तो दूर, किसी भी अविवाहित स्त्री को जान मे वा अनजान मे किसी पुरुष की ओर आकर्षित नहीं होना चाहिए और न उसे ही अपनी ओर आक र्षित होने देना चाहिए।

टर्की मुस्लिम देश है। इस्लाम बहुपत्नीवाद का निषेध नहीं करता है तौभी टर्की मे बहु पत्नी कानूनन नाजायज़ है। शायद भारत वर्ष मे भी बहु पत्नीवाद हिन्दुओं, मुसलमानों और अन्यों के लिए जिनमे यह अभी तक अवैध नहीं है अवैध बनाया जायगा। इस बीच में हमारी धारा-सभाओं को ऐसा कोई नया कानून नहीं पास करना चाहिए जो बहु पत्नीवाद का निषेध न करता हो। और उन्हे नए कानूनों को जिनका ऊपर उल्लेख किया गया है और जो पास हो चुके हैं इस प्रकार सशोधित करदेना चाहिए, जिससे पतियों को छीनने के कृत्यों को वैध करार दिया जाना बन्द हो जाय।

(माडर्न रिव्यू)

शारदा ऐक्ट

'सार्वदेशिक' के पिछले किसी अङ्क में हम शारदा ऐक्ट दे चुके हैं। फिर भी हमारे प्रेमी पाठकों का आग्रह था कि हम उसे पुन. प्रकाशित करें और इस वर्ष उसमे जो संशोधन केन्द्रीय धारासभा द्वारा हुए हैं वे भी दे दिए जायँ। उस आग्रह की पूर्त्यर्थ हम शारदा ऐक्ट को संशोधित रूप मे प्रस्तुत करते हैं।

छोटा नाम हद्द और आरम्भ

१—(१) यह क़ानून सन् १६२६ का बाल विवाह निषेधक क़ानून कहलाया जावेगा[1]।

(२) यह समस्त ब्रिटिश भारत में ब्रिटिश बिलोचिस्तान और सन्थाल परगना सहित लागू होगा और नीचे लिखे अनुसार भी लागू होगा[2] —

(ए) भारत के किसी भाग की समस्त ब्रिटिश प्रजा और सरकारी नौकर।

(बी) समस्त ब्रिटिश प्रजा जो भारत के किसी भाग में बसी हो और चाहे जहा रहती हो।

(३) यह पहली अप्रैल सन १६३० से जारी होगा।

परिभाषाः—

२—यदि विषय और प्रकरण के प्रतिकूल न हो तो इस क़ानून में—

(ए) "बाल" का अर्थ वह व्यक्ति है जो यदि पुरुष हो तो १८ वर्ष से नीचे की आयु का है और यदि स्त्री हो तो १४ वर्ष से कम आयु की है।

(बी) "बाल-विवाह" का अर्थ वह विवाह होगा जिसमें विवाह करने वाले वर अथवा वधू मे कोई "बाल" हो।

(सी) "विवाह करने वाले फ़रीको" का मतलब यह है कि वर वधू में से कोई एक व्यक्ति जिसका विवाह किया जाने वाला हो या किया गया हो[3]।

(डी) "नाबालिग" शब्द के अर्थ वह व्यक्ति स्त्री या पुरुष होगा जिसकी आयु १८ वर्ष से कम हो।

२१ वर्ष से कम उम्र वाले बालिग पुरुष को १४ वर्ष से कम आयु वाली लड़की से विवाह करने पर दण्ड

३—१८ वर्ष से ऊपर और २१ वर्ष से कम उम्र का कोई पुरुष अगर बाल-विवाह करे तो

फुटनोट १— १६३० के क़ानून नम्बर ८ जिसका कि नाम रीपीलिंग एन्ड एमेंडिङ्ग क़ानून सन् १६३० है, उसकी धारा २ शिड्यूल १ के अनुसार १६२८ के स्थान में संख्या १६२६ की गई।

फुटनोट २—धारा १ की मद न० २ के (ए) और (बी) वर्ग बाल विवाह निषेधक संशोधित क़ानून नं० ७ सन् १६३८ की धारा २ के अनुसार बढ़ाये गये। इसको बड़े लाट साहब ने ता० १२ मार्च सन् १६३८ को मंजूर किया।

फुट नोट ३—"विवाह किया जाने वाला हो" यह शब्द बाल-विवाह निषेधक द्वितीय संशोधित क़ानून सन् १६३८ ऐक्ट नं० १६ सन् १६३८ की

उसको एक हजार १०००) रुपये तक के जुर्माने की सजा हो सकेगी।

२१ वर्ष से अधिक उम्र वाले पुरुष को बाल-विवाह करने पर दंड

४—अगर कोई २१ वर्ष से अधिक उम्र वाला पुरुष बाल-विवाह करेगा तो उसको १महीने तक की सादी कैद या १०००) एक हजार रुपये तक का जुर्माना या दोनों सजाए दी जा सकेंगी।

बालविवाह करने पर दण्ड

५—अगर कोई व्यक्ति बालविवाह करावेगा या विवाह संस्कार रचावेगा या उसको करने की आज्ञा देगा तो उसको एक महीने तक की सादी कैद या एक हजार १०००) रुपये तक के जुर्माने की या दोनों सजाये दी जा सकेगी बशर्ते कि वह यह न साबित कर दे कि उसके पास इस बात पर विश्वास करने का कारण था कि वह विवाह बाल विवाह नहीं है।

बालविवाह से सम्बन्ध रखने वाले माता पिता या वली को दण्ड

६—(१) यदि कोई नाबालिग 'बालविवाह' करेगा तो जिस व्यक्ति की देख रेख मे वह नाबालिग रहता होगा, चाहे वो माता पिता हो, चाहे अभिभावक या और कोई व्यक्ति जो कानूनन या गैर-कानूनन तौर से उस नाबालिग की किसी दूसरी हैसियत से देख रेख रखता हो तो उस व्यक्ति को जो विवाह की सहायता मे कोई काम करे या उस विवाह के करने की आज्ञा दे या उसके रोकने मे अपनी लापरवाही से कासिर रहे तो उसे एक महीने तक की सजा या १०००) रुपये तक का जुर्माना या दोनो सजाए दी जा सकेंगी। परन्तु शर्त यह है कि किसी औरत को कारावास की सजा न दी जावेगी।

(२) इस धारा के सबूत के लिये यह बात पहिले से ही मान ली जावेगी बशर्ते कि इसके विरुद्ध प्रमाण न दिया जाय कि जब नाबालिग ने बालविवाह किया है तो उसकी देख रेख करने वाले व्यक्ति ने उस विवाह का रोकने का कोशिश नहीं की है।

तीसरी दफे के अन्तर्गत कसूर के लिये कारावास न दिया जावे

७—जनरल क्लाजेज ऐक्ट सन् १८९७ की दफा २५ या ताजीरात हिंद की दफा ६४ मे चाहे जो लिखा हो —पर इस कानून की धारा ३ के अनुकूल जो अदालत अपराधी को जुर्माने की सजा देती है, उसको अख्तियार नहीं है कि वह यह आज्ञा दे कि यदि जुर्माना अदा

धारा २ के अनुसार जोड़े गये हैं, जिस को कि बड़े लाट साहब ने १ अप्रैल सन् १९३८ ई० को स्वीकार किया है।

नहीं होगा तो जुर्माना न दे सकने पर उसको किसी समय तक कारावास भुगतना पड़ेगा।

इस एक्ट के नीचे न्यायाधीश को जांच और विचार का अधिकार

८—जाब्ते फौजदारी सन् १८६८ की धारा १६० में चाहे जो लिखा हो—पर कोई भी अदालत जो प्रेसीडेन्सी मजिस्ट्रेट या मजिस्ट्रेट दर्जा अव्वल[4] का नहीं है उसको इस क़ानून के अनुसार किसी अपराध के मुकद्दमे की जाच और विचार करने का अधिकार न होगा।

अपराधों की जाँच और विचार का नियम

६—विवाह[5] होने की उस तारीख से जब कि कसूर होना बतलाया जाता है एक वर्ष बाद कोई भी अदालत इस कानून के अनुसार फ़रियाद नहीं सुनेगी।

इस क़ानून के अनुसार अपराधों की प्रारम्भिक जांच

१०—वह अदालत जो इस क़ानून के अनुसार अपराध की जाँच या विचार करने के लिये नालिश स्वीकार करे, बशर्ते कि वह ज़ाब्ता फौजदारी सन् १८६८ की २०३ धारा के अनुसार नालिश ख़ारिज न करदे या तो स्वयं ज़ाब्ता फौजदारी की धारा २०२ के अनुसार जांच करेगी या अपने नीचे के किसी अव्वल दर्जे के मजिस्ट्रेट को इसकी जाँच के लिये आज्ञा देगी।

फरियादी से जमानत लेने का अधिकार

११—(१)[6] इस क़ानून के अनुमार अपराध की जाँच और विचार के लिये जब न्यायाधीश प्रार्थनापत्र स्वीकार करे, तो फरियादी के बयान लेने के बाद और अभियुक्त के नाम उसको हाजिर होने के लिये समन जारी करने के पहिले चाहे किसी वक्त, यदि न्यायाधीश की इच्छा हो तो वह कारण लिखकर फरियादी से १००) एकसौ रुपये तक का मुचलका जमानत सहित वा रहित लिखा लेगी ताकि जाब्ता फौजदारी

फुटनोट ४—यह शब्द 'मजिस्ट्रट दर्जे अव्वल के पहिले नहीं थे, पहले शब्द 'डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, था परन्तु बाल विवाह निषेधक द्वितीय संशोधित क़ानून नं० १९ सन् १९३८ की धारा ४ के अनुसार शब्द 'डिस्ट्रिक्ट' का उड़ा कर शब्द 'मजिस्ट्रेट दर्जा अव्वल' रख दिया गया।

फुटनोट ५—बालविवाह निषेधक द्वितीय संशोधित क़ानून नं० १९ की धारा ४ के अनुसार यह सारी धारा न० ९ पुरानी धारा ९ को उड़ा कर नई रक्खी गई है।

फुटनोट ६—यह धारा बालविवाह निषेधक द्वितीय संशोधित कानून न० १९ सन् १९३८ की धारा ५ के अनुसार पुरानी धारा ११ के स्थान में नई बनाई गई है।

सन् १८६८ की दफा २५० के अनुसार मुस्तगीस को हरजाने दिलाने का हुक्म हो तो उस जमानत मुचलके से वसूल कर लिया जाय और अगर अदालत की बताई हुई मुनासिब मुद्दत के अन्दर २ वह न दाखिल की जावेगी तो इस्तगासा खारिज कर दिया जावेगा।

ऐक्ट नं० ५ सन् १८६८

(२) इस धारा के अनुसार लिया हुआ मुचलका जाब्ता फ़ौजदारी सन १८६८ के अनुसार लिया हुवा मुचलका माना जावेगा और इस पर जाब्ते फौजदारी का ४२ वा अध्याय लागू होगा।

इस क़ानून के खिलाफ शादी करने वाले के खिलाफ शादी रोकने का हुक्मनामा इम्तनाई निकालने का अधिकार

१०—(१)[7] इस कानून मे कोई भी बात होने के बावजूद, अदालत को इस्तगासे के जरिये या किसी दूसरी तरह से सूचना मिलने पर, यदि यह सन्तोष हो जावे कि इस कानून के विरुद्ध बालविवाह रचाया जाने वाला है, या रचने का प्रबन्ध होगया है, तो अदालत ऐसे आदमियो मे से किसी व्यक्ति के विरुद्ध, जिनका कि इस कानून की ३, ४, ५, व ६ धारा मे जिक्र आगया है, शादी रोकने का हुक्मनामा इम्तनाई निकाल देगी।

(२) कोई भी हुक्मनामा इम्तनाई मद्द नं० १ के अनुसार किसी व्यक्ति के विरुद्ध न निकाला जावेगा जब तक कि अदालत ऐसे व्यक्ति को पहिले से नोटिस न दे दे और उसको इस बात का अवसर न दे दे कि वह आकर वजह जाहिर करे कि उसके विरुद्ध हुक्मनामा इम्तनाई क्यो न निकाला जाय।

(३) अदालत या तो अपनी मर्जी से या किसी दूसरे व्यक्ति की अर्जी पर उस हुक्म को, जो कि उसने मद्द नं० १ के अनुसार निकाला है, मसूख या तबदील कर सकती है।

(४) जब कि ऐसी अर्जी अदालत के पास आवे तो अदालत का यह कर्त्तव्य होगा कि वह प्रार्थी को बहुत जल्दी अपने सामने या तो स्वयं या अपने वकील के मारफत उपस्थित होने का अवसर दे, और यदि अदालत पूरी अर्जी को या उसके कुछ भाग को अस्वीकार करदे तो अदालतको अस्वीकार करने के कारण लिखने पड़ेंगे।

(५) जो कोई यह जानते हुए कि इस धारा की मद्द १ के अनुसार उस पर हुक्मनामा इम्तनाई निकल गया है और फिर भी वह उस हुक्मनामे की अवहेलना करता है तो उसको तीन महीने तक की सख्त या सादी कोई कैद या १०००) एक हजार रुपये तक का जुर्माना या दोनो सजायें दी जा सकेगी।

परन्तु शर्त यह है कि किसी स्त्री को कैद की सजा न दी जावेगी।

फुटनोट ७—बालविवाह निषधक द्वितीय सशोधित कानून न १६ सन् १६३८ की दफा ६ के अनुसार यह दफा १२ नई जोड़ी गई है।

आर्य्य समाज में एक मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता

श्री मिहिरचन्द्र धीमान्, हिन्दीभूषण 'कुसुमाकर' स० मन्त्री, बङ्ग-आसाम आर्य प्रतिनिधि सभा

इस समय अवस्थाएँ ऐसी हैं कि अपना अस्तित्व अक्षुण्य बनाए रखने और अपने कार्य्य की प्रगति को बढ़ाने के लिए आर्य्यसमाज को अपने संगठन में कुछ मौलिक परिवर्तन कर देने चाहिएँ।

मैं यहां अपनी तुच्छ बुद्धि अनुसार एक रास्ता बताना चाहता हूं। वह यह कि हम भारतवर्ष को राजनैतिक, सामाजिक, व धार्मिक समस्या पर विचार करने के लिए Constitutions में कुछ परिवतन करें। अपने Constitutions में कांग्रेस का सा परिवर्तन करें। जैसे अपने प्रधान को कांग्रेस चुनती है उसी तरह ही हम भी चुनें। हम ऐसे प्रधान को चुनें जो रात दिन वर्ष भर कांग्रेस के प्रधान की तरह प्रचार में लगा रहे। हमारे इस आयोजन का नाम All India Aryan Congress (अ० भा० आर्य कांग्रेस) हो—इसी तरह एक बड़ी जबरदस्त वर्किङ्ग-कमेटी हो जो कार्य्य सम्पादन करने के लिए भारत में आर्य्य समाजियों को संकेत करे (Directions) दे। आर्य्य नवयुवकों, आर्य्य कुमारों में नवजीवन फूंकने के लिए आर्य्यवीर सेवादल भारतवर्ष में Organise चालू करें। अपने प्रधान का स्वागत करने के लिए जब All India session हो तो बड़ी ज़ोरदार स्वागत कारिणी समिति बनायें जो आर्य्य-वीरों द्वारा अपने प्रधान का Right Royal Salute से स्वागत करे। यह Military का युग है। ऐसे युग में हम वीर बन कर ही रह सकते हैं। आल इण्डिया आर्य्य-कांग्रेस का उत्सव तो में एक दफा हो और सार्वदेशिक का उत्सव (अधिवेशन) तीन वर्ष के अनन्तर एक दफा हो ताकि अन्य देशों के प्रतिनिधि भी तीन वर्ष में सम्मिलित हो कर अपने अपने देशों की अवस्था से सूचित कर सकेंगे। हमारा ध्येय बहुत ऊँचा है, हमें 'कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्' की ध्वनि गुंजानी है। उसके लिए सामान भी वैसा ही करना होगा। अगर हमारी सार्वदेशिक सभा का चुनाव तीन वर्ष के अन्दर होता है तो हमें All World Aryan Conference तीन वर्ष के अनन्तर ही करना चाहिए तब ही जापान, जर्मनी विलायत, अमरीका से हमारे प्रतिनिधि तीन वर्ष में एक दफा सम्मिलित हो सका करेंगे और All India Aryan Congress का अधिवेशन प्रति वर्ष एक दफा अवश्य हुआ करे। इस ख्याल को कार्य रूप में परिणत करने में हम बंगाल के आर्य्य-समाजी तैयार हैं। अगर हमारे आर्य्य-समाज के कर्णधारों की ऐसी सम्मति हो तो आल इण्डिया आर्य-कान्फ्रेन्स का पहला अधिवेशन बुलाने के लिए हम तैयार हैं, चार पांच मास के समय मिलने से हम आर्य्यवीर दल आदि और कान्फ्रेन्स को कार्य्य में और भली भांति Organise कर सकते हैं। मैं यह समझता हूँ कि हमारी सब बीमारियों का एक मात्र इलाज यह हमारे Constitution Radical change होने से हो सकता है। हम ऐसे ही सगठित होकर अपने अधिकारों की रक्षा कर सकते हैं। अगर इन विचारों में से कुछ कार्य्य रूप में परिणत करने के योग्य हों तो समाज के कर्णधार अपनी सम्मति से सूचित करें ताकि हम लोग इसको कार्य का रूप देने में लग पड़ें।

ARYA SAMAJ & NIZAM GOVERNMENT.

POLICE HIGH-HANDEDNESS.

Need for the Session of All-India Aryan Congress

Mr S Chandra, Secretary, Aryan Defence Committee of the International Aryan League has issued the following to the press —

The International Aryan League is constantly receiving news of the sad plight of Aryas in the Hyderabad State Some of the recent atrocities perpetrated by the police underlings reveal a terrible state of affairs with regard to Arya samaj situation I will mention only a few of them

1 The police officials of Nizamabad arrested four respectable Aryas on 14th March 1938, without serving any warrant and kept them in the lock-up Their sacred threads were forcibly removed and during night they were given brutal beating on their stark-naked bodies They were paraded hand-cuffed through the main bazars and roads of the town On the second day when warrants were served on them, they were forcibly made to give ante-date signatures The charge levelled against them was that they instigated Hindus to fight against the Muslims

2 On the last Holi occasion, at Gulbarga, when some Lingayats were playing Holi, there was a scuffle between them and the Muslims. It is alleged that this resulted in the death of one Muslim Though there was not a single Arya playing Holi, as it is well-known that Aryas do not play Holi like other Hindus, still it was alleged that Aryas participated in the scuffle, and the police, therefore, arrested four Aryas on a false charge of murder On the same day, two innocent Hindu professors of the local Intermediate College were dragged and beaten by the police under the suspicion of throwing stones from their houses on Muslims

3 The Taluqadar of Kalyani forcibly removed 'OM Flag' from Arya Samaj temple The Aryan League lodged a strong protest but to no avail

4 In the month of April last Muslims beat and looted Hindus in Hyderabad city, and this incident afterwards assumed the shape of a Hindu-Muslim riot The Nizam's Government issued a baseless and misleading communique, holding Aryas responsible for this trouble The communique added fuel to the fire It infuriated Muslims, who fully armed, numbering approximately ten

thousands, attacked the house of Pandit Vinayakrao, Barrister, the President of the Arya Pratinidhi Sabha, Nizam State The above communique of the Nizam's Government was strongly refuted in the Press by the Aryan League In connection with the riot, several innocent Aryas have been arrested and charged with murder

5 Recently a circular was issued by the Nizam's Goverment to the effect that Aryas could not instal Havankund without permission This is a case of glaring interference with religious liberties

6 The latest ban, imposed on Mr K F. Nariman, Barrister, who was briefed to defend Hindus and Aryas charged with murder, shows that even legal rights regarding self-defence are denied to our people in the State.

The Nizam's Government have often declared through the Press and correspondence with the Aryan League that Aryas enjoy full freedom in the State, but practically, the situation is the reverse of it, as is clear from the facts given above The policy of the Nizam's Government seems to be directed against the workers of the Arya-samaj and seeks to suppress their activities, as they cause awakening among the general Hindu public who form 85 percent of the population in the State The public can now draw its own conclusion as to the situation which faces us Arya samaj refuses to be cowed down It is determined to face difficulties The Aryan League therefore, decided to convene a Session of the All-India Aryan Congress at some suitable place in Central Provinces or Maharashtra, somewhere on the border of Hyderabad State, to start an extensive agitation against the vagaries of the Nizam's Government and to secure our legitimate rights The entire Hindu Community is with us

Further particulars regarding the Session of the Aryan Congress will be communicated to the Public through the Press from time to time

DECISION OF INTERNATIONAL ARYAN LEAGUE ON ARYASAMAJ SITUATION IN HYDERABAD (Dn.)

The copy of a resolution, passed at the last meeting of the Working Committee of the International Aryan League, held at Delhi —

"Resolved that this meeting of the Working Committee of the International Aryan League strongly condemns the atrocious treatment meted out to the Aryas by the Nizam's Government in Hyderabad State and expresses its sympathy towards all those who have suffered and are still suffering as a result of this oppression

"This League is deeply pained to learn that in spite of the repeated assurances given by the high officials of the Nizam's Government, that justice will be done to the Aryasamaj, those assurances have been flagrantly violated by them, and thereby worsening the situation

"In the opinion of this League, the situation in regard to the Aryasamaj in Hyderabad territory has become so acute that it can no longer be ignored and disregarded. This League, therefore, demands an early settlement on the following points.—

(1) Circular No 54, prohibiting public meeting, should be cancelled

(2) Restrictions, regarding religious ceremonies, should be removed.

(3) Laws, prohibiting the opening of Akharas, should be repealed

(4) Circular, prohibiting the opening of private schools, should be cancelled.

(5) Cases, relating to communal disturbances, should be investigated by an impartial tribunal

(6) Restrictions imposed on religious workers from outside should be removed If any worker acts contrary to the established law of the State, he may be tried in a Court of Law

Bans on religious workers should be lifted.

(7) Books should not be proscribed without scrutiny.

(8) Restrictions on the publication of Aryan Newspapers should be removed

(9) There should be complete freedom for the observance of Hindu and Arya festivals when these coincide with Muslim festivals.

(10) Circular, requiring Aryas to obtain permission for the installation of Havankund should be withdrawn

(11) Hindu prisoners in the State prisons should not be converted to Islam and the Aryas may be allowed to impart religious teachings to such prisoners

(12) No victimization of Aryas in State Service should be allowed

(13) Aryas should have complete freedom for hoisting and flying (OM) Flags on their houses and Aryasamaj temples.

(14) Cases already started against the Aryas in Gulbarga, Nizamabad and Hyderabad should be investigated by an impartial tribunal

"Whereas the assurances given to this League till now, by the Nizam's Government, have not been fulfilled, this League proposes to hold within the next five months in Central Provinces or in Maharashtra at a suitable place on the borders of Hyderabad State an All-India Aryan Congress to consider and discuss particularly the Hyderabad problem in view of the recent developments in respect of Aryasamaj situation in the State

"This League declares that if State officials are not going to alter their policy in respect of Aryasamaj then the entire Aryan Community shall be called upon to undertake all peaceful and legitimate means including Satyagraha to defend their religious rights

"This League also calls upon the Aryan Defence Committee to take early steps to organise the All-India Aryan Congress in compliance with this resolution and also to make stupendous efforts to protect the religious rights of Aryas in the Nizam's State."

Civil Liberties in Hyderabad

Prof. M Sudhakar, M A., Secretary, International Aryan League has issued the following statement to the Press regarding the banning of Mr K F Nariman's entry into Hyderabad State -

"Those who always sing praises of the progressive nature of administration in Hyderabad should learn a lesson from recent happenings in that State. I would content myself with citing of only one glaring case, in which Hindus charged with serious alleged offences such as murder, have been denied the right of availing themselves of the services of a competent criminal lawyer These accused selected Mr. K F Nariman, the well known criminal advocate of Bombay, who has earned reputation as a fearless fighter and an astute lawyer.

"Mr Nariman, it is pleasing to note, was nuturally permitted to undertake his duties by the High Court, i e, the highest Judiciary in the State, as a fit and duly qualified advocate to appear and to conduct the defence But the Executive, by its arbitrary interference, have deprived the accused of the legal rights granted and recognized by the High Court. If this is not an instance of gross injustice and interference with civil liberties of citizens, what else can it be called ?

"To us the banning of entry of Mr. K. F. Nariman in the State is uncalled for and a clear abuse of authority Mr Nariman was coming on a purely, professional business and not on any political mission At most, the Executive could have easily secured an undertaking from him that as long as he was in the State he would not participate in any political activity and this undertaking would have made it possible for him to place his services at the disposal of the accused. But to deny the accused of their legal right of self-defence is repugnant to our sense of justice and contrary to all codes of civilized society.

"The news about the banning of Mr Nariman created a stir both in and out side of Hyderabad State Various protest resolutions were passed and sent to the authorities concerned, but so far as we know the Nizam Government has proved adamant in its reactionary policy The very idea of unfair encroachment upon the fundamental rights of accused persons is revolting and we ask with emphasis, whether Sir Akbar Hydari, the Prime Minister is aware of what is passing under his very eyes, and whether he can still boast of the progressiveness of his administration, in the face of such happenings ? I am sure, all enlightened Muslims, who believe in civil liberties of citizens, are with us in our condemnation of policy adopted by the Nizam Government in respect of banning the entry of Mr K F Nariman"

Nizam's ban Mr. K F. Nariman.

The Secretary International Aryan League sent the following telegram to the Nizam's Government —

"Aryan League strongly condemns the order prohibiting Barrister Nariman entering Hyderabad in defence of Hindus and Aryas charged with murder His visit purely professional, apart from question of civil liberties, ban deprives innocent accused of rights of self-defence and suitable legal help Please withdraw ban and assure Hindu Community of full justice to accused"

हरिजन-विरोधी प्रचार

नारनौल रियासत पटियाला से विश्वस्तसूत्र द्वारा आर्य्य-रक्षा-समिति को निम्न समाचार प्राप्त हुआ है —

"जब से नारायणगढ़ (इन्दौर राज्य) में म० मेघराज जी का पौराणिकों द्वारा वध हुआ है, यहाँ के भी चन्द शरारती पौराणिकों के हौसले बढ़ गये हैं और वह लोग दंगा फ़िसाद पर आमादा हैं, आर्यसमाज को नेस्तनाबूद कर देने का षड्यन्त्र रच रहे हैं। दलितोद्धार के प्रश्न को लेकर यहाँ भी पौराणिकों से २-३ वर्ष से संघर्ष चल रहा है।

"सार्वजनिक तालाब 'जनक सागर' में मुसलमान तो सवर्णों के साथ नहाते थे, किन्तु बेचारे हरिजनों को यह पौराणिक नहीं नहाने देते थे। गत वर्ष आर्यों ने साहस करके हरिजनों को तालाब जनक सागर में स्नान करा दिया था। पौराणिकों ने उनपर मुक़द्दमा चलाया। हाईकोर्ट पटियाला तक उनकी विजय हुई। तब से अभी तक हरिजन आनन्द से तालाब में नहा रहे हैं।

"अब कुछ मास से एक व्यक्ति किशनलाल नामक इन्दौर प्रवासी यहाँ केवल हरिजन विरोधी प्रचार करने आये हुए हैं। इनकी प्रेरणा से यहाँ के कुछेक पौराणिक, ग़रीब हरिजनों को तालाब जनक सागर में नहाने से ज़बरदस्ती रोकने की तैयारी कर रहे हैं।

"तालाब शोभा सागर में चन्द पौराणिकों के एतराज़ करने पर नाज़िम साहब ने हरिजनों को स्नान करने से रोक दिया था। हरिजनों ने हाईकोर्ट पटियाला में नाज़िम साहब के हुक्म के विरुद्ध निगरानी कर दी है।"

आर्य-वीर-दल स्काउट्स, देहली

का

यमुना पर सेवा-कार्य

ज्येष्ठ दशहरे के स्नान के अवसर पर आर्य वीर-दल स्काउट्स, देहली ने ता० ७ तथा ८ जून १९३८ को ५ बजे प्रातःकाल से मध्याह्न १२ बजे तक घाटों, सड़कों तथा जल के अन्दर किश्तियों के द्वारा सेवा-कार्य किया। तीन खोये बच्चों को उनके संरक्षकों के पास पहुँचाया। इन दोनों दिनों में ६० डूबते हुए स्त्रियों, बच्चों तथा पुरुषों की जानें बचाई।

यदि किन्हीं को उक्त दल की सेवाओं की आवश्यकता हो तो वह कृपया दल के कार्यालय मकान नं० २०५५ मुहल्ला आर्यान, गली मन्दिरवाली सब्ज़ीमण्डी को सूचना दे सकते हैं।

चौधरी कुशीसिंह आर्य,

मन्त्री, आर्य-वीर दल स्काउट्स,

देहली।



आर्य नेताओं से अपील

२५ वाँ भारतवर्षीय आर्यकुमार सम्मेलन जो बिजनौर में गत मई मास में होने वाला था अब बिजनौर में ही आगामी सितम्बर मास में होगा। इस अवसर पर भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् अपनी रजत जयन्ती भी मनावेगा।

वैसे तो जयन्ती तथा सम्मेलन करने की एक प्रथा सी चल पड़ी है लेकिन आप में से जिनका गत वर्षों में भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् से कुछ न कुछ सम्बन्ध रहा है वे जानते हैं कि परिषद् उन संस्थाओं मे नहीं है जिनका ध्येय केवल सम्मेलन करना रहा हो। हाँ कुछ वर्षों से देश में राजनैतिक आन्दोलन के जोर पकड़ने से हमारे अधिकांश आर्यकुमारों का ध्यान उस ओर खिंच गया और उन्होंने सामाजिक सुधारों को गौण समझ कर ढीला डाल दिया। आर्यकुमारों के प्रति हमारे आर्यसमाजों की उदासीनता भी इसका कुछ कारण हुई।

लेकिन बड़े हर्ष की बात है कि हमारे आर्य नेताओं का ध्यान फिर आर्यकुमारों की ओर खिंचने लगा है। हमें प्रेरित किया जा रहा है कि हम सामाजिक सुधारों को अपने हाथ में लें और हम से अनेकानेक आशाएँ बाँधी जा रही हैं।

हम भी अपने नेताओं को विश्वास दिलाते हैं कि अब वे हमें जो भी प्रोग्राम देंगे हम उसे पूरा करने में पीछे न रहेंगे। हम नहीं चाहते कि जयन्ती पर तत्सामयिक क्षणिक जोश के साथ अच्छे से अच्छे प्रस्ताव पास कर दिये जायें और फिर उन्हें कार्य रूप में लाते समय आर्य समाजों की ओर से रुकावटें डाली जायें। इसलिये हमारी प्रत्येक आर्य पुरुष से जो आर्य जाति की उन्नति चाहता है, प्रार्थना है कि वह अपने विचार हमें लिख भेजें ताकि हम उन्हें सब आर्य सामाजिक पत्रों में प्रकाशित करके उन पर अधिक से अधिक सज्जनों की सम्मतियाँ लेलें और जयन्ती के अवसर पर उन पर अच्छी प्रकार विचार हो सके।

निवेदक—

मन्त्री.

भारतवर्षीय आर्य्य-कुमार परिषद्।

आर्य संस्थाओं से निवेदन

भारतवर्षीय आर्यकुमार-परिषद् देश की समस्त आर्यकुमार सभाओं की एक मात्र प्रतिनिधि संस्था है। इसकी रजत जयन्ती २५ वें भारतवर्षीय आर्य कुमार सम्मेलन के रूप में बिजनौर में आगामी सितम्बर मास में मनाई जायगी। इस अवसर पर परिषद् की ओर से "उन्नति की ओर" नाम की एक पुस्तक भी प्रकाशित होगी जिस में चार मुख्य प्रकरण होंगे। (१) लेख, (२) परिषद् का इतिहास, (३) आर्यकुमार सभाओं के विवरण तथा (४) अन्य ऐसी आर्य संस्थाओं के विवरण जिनमें आर्यकुमार शिक्षा पाते हैं जैसे गुरुकुल, डी० ए० वी० स्कूल तथा कालेज अनाथालय इत्यादि।

इस लिए आपसे प्रार्थना है कि आप अपनी संस्था का संक्षित विवरण जिसमें अन्य बातों के अलावा निम्न बातें अवश्य हों शीघ्र भेजने की कृपा करें —

१—नाम
२—कब स्थापित हुई ?
३—उद्देश्य तथा कार्य
४—क्या संस्था के अंतर्गत आर्यकुमार सभा भी है ?

मन्त्री

भारतवर्षीय आर्यकुमार-परिषद्

देहली।

वैदिकधर्म विशारद परीक्षा

भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् के परीक्षा-मन्त्री महोदय ने निम्न बातों पर परीक्षा-समिति के सदस्यों से सम्मति माँगी है। अन्य सज्जन भी इन पर अपनी सम्मति परीक्षा-मन्त्री को इस पते पर भेजने की कृपा करें।—

श्री पंडित सूर्यदेव जी शर्मा, एम० ए०, एल० टी०, हेडमास्टर, डी० ए० वी०. हाईस्कूल अजमेर।

(१) 'ईश्वरीय ज्ञान वेद' और 'ब्रह्म विज्ञान' अप्राप्य पुस्तकों के स्थान पर 'धार्मिक शिक्षा' तथा 'विश्व की पहेली' पुस्तकों का रखना जो अत्यन्तोपयोगी है।

(२) आर्य साहित्य मंडल द्वारा प्रकाशित 'धार्मिक शिक्षा' के कुछ भाग प्रथम और द्वितीय खण्डों में रखना।

(३) परीक्षाएँ जनवरी के स्थान में दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में हुआ करें।

परिषद् के सहायक

इस वर्ष परिषद् की सहायतार्थ निम्नलिखित सज्जनों की ओर से आर्यकुमार सभाओं की ओर से धन प्राप्त हुआ है, जिसके लिए उन्हें अनेकानेक धन्यवाद। अन्य सज्जनों से तथा कुमार सभाओं से हमारी प्रार्थना है कि वे भी अपना भाग शीघ्र भेजने की कृपा करें। जयन्ती समीप आरही है और हमें इस समय धन की अत्यन्त आवश्यकता है। आर्यकुमार सभाओं का तो कर्त्तव्य है कि वे अपनी एकमात्र प्रतिनिधि सभा को अपना वार्षिक शुल्क शीघ्र भेजदें और हमे पूरी आशा है वे अपने कर्त्तव्य को अवश्य पूरा करेंगी।

ला० नारायणदत्त जी ठेकेदार, नई दिल्ली	२५)
ला० ज्ञानचन्द् ज ठेकेदार, नई दिल्ली	२५)
ला० हंसराज जी गुप्ता, देहली	२५)
पण्डित रामचन्द्र जी देहलवी	५)
श्रीयुत् कृष्णचन्द्र जी, दिल्ली	५)
,, डाक्टर युद्धवीरसिंह जी, दिल्ली	५)
,, रामदत्त जी ज्ञानी, बुरहानपुर	५)
रायसाहब मदन मोहन जी सेठ, मिर्जापुर	५)
प्रोफेसर तोताराम जी, कानपुर	५)
,, मुन्शीराम जी कानपुर	५)
श्रीयुत विद्याधर जी ,,	५)
,, बी० एम० जवेरिया जी, काशी	५)
,, विष्णु भास्कर जी कलकर काशी	५)
कुँवर कान्तिवीर जी बिजनौर	५)
लाला देशराज जी, दिल्ली	५)
श्रीयुत् जगदीश्वर प्रसाद जी, राँची	
,, जगदीश प्रसाद जी, कानपुर	१)
,, गंगानन्द जी, सिरसा	१)
,, हरिश्चन्द्र जी, मुरादाबाद	१)
,, देवीदयाल जी, गाजियाबाद	
,, हीरालाल जी ,,	१)
,, सुधरलाल जी, कानपुर	
,, ईश्वर दयाल जी, बिजनौर	१)
,, मनुराम जी	५)
आर्य कुमार सभा राँची	२)
,, ,, ,,	४)
आर्य कुमार सभा, गाजियाबाद	५)
,, ,, ,, दीवान हाल, दिल्ली	८)
,, ,, ,, ,, ,,	१०)
,, ,, ,, बोठ	५)
,, ,, ,, ,	१०)
,, ,, ,, बिजनौर	४)
,, ,, , बुरहानपुर	५)
,, ,, ,, मल्हार गञ्ज, इन्दौर	२)
, ,, सिरसा	३)
,, , ,, अजमेर	५)
, , ,, मुरादाबाद	४)
,, ,, ,, कानपुर	५)
	२९०)

कार्यकारिणी सभा

परिषद् की कार्यकारिणी सभा की एक मीटिंग रविवार ता० १९ जून १९३८ को दिल्ली में पंडित

आर्यकुमारों तथा आर्यकुमार-सभाओं के प्रति

१—आर्यकुमार सभाओं के नियम कई वर्षों से संशोधित नहीं हुए हैं इस वर्ष उनमें संशोधन करने का विचार है। इसलिए आर्यकुमार, आर्यकुमार सभाएँ तथा अन्य आर्य पुरुष इन नियमों में जो संशोधन चाहें वे कृपया निम्न पते पर भेजदें।

इसी प्रकार परिषद् के नियमों में जो संशोधन चाहें भेजदें।

२—गत सम्मेलन में जो दिल्ली में फरवरी सन् १९३७ में हुआ था आर्यकुमार सभाओं तथा आर्यकुमारों को दो प्रोग्राम दिए थे। पहला ग्राम-प्रचार और दूसरा व्यायाम शालाएँ खोलने का। अनेक आर्यकुमार सभाओं की रिपोर्टों से पता चला है कि उन्होंने इन दोनों प्रोग्रामों को हाथ में ले रखा है और आर्यकुमार उनमे भाग ले रहे हैं। मुझे विश्वास है कि अन्य आर्यकुमार सभाएँ भी परिषद् के इन प्रोग्रामों को पूरा कर रही होंगी वे भी अपनी रिपोर्टें भेजदें।

३—जयन्ती पर प्रकाशित होने वाली "उन्नति की ओर" नाम की पुस्तक के लिये लेख इत्यादि आरहे हैं। लेकिन अभी बहुत सी आर्यकुमार-सभाओं के विवरण नहीं आए हैं। आर्यकुमार-सभाएँ इस ओर विशेष ध्यान दें और शीघ्र ही अपने विवरण परिषद् को भेजदें।

मन्त्री

भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद्, देहली।

रामचन्द्र जी देहलवी की अध्यक्षता में हुई जिसमें कई आवश्यक विषयों पर विचार किया गया।

अवध का कन्हैया।

कुछ समय हुआ आर्यकुमार सभा राँची की ओर से हमें ज्ञात हुआ कि Ideal Films Ltd, Lucknow एक चल चित्र तैयार कर रही है जिसका नाम उन्होंने "अवध का कन्हैया" उर्फ "वाजिद अली शाह" रक्खा था। परिषद् की ओर से कम्पनी के डायरेक्टर महोदय को लिखा गया कि क्योंकि भगवान् कृष्ण को समस्त हिन्दू जगत आदर की दृष्टि से देखता है यहाँ तक कि हमारा सनातन धर्म तो उन्हें ईश्वर का अवतार मानता है, इस लिए एक मामूली बादशाह का नाम ऐसे महान् आत्मा के नाम के साथ नहीं रखना चाहिए।

हमें यह लिखते हर्ष होता है कि कंपनी के डायरेक्टर महोदय ने हमारी बात को मान लिया और अब फिल्म का नाम केवल "वाजिद अली शाह" रखा गया है।

हम फिल्म के डायरेक्टर महोदय को भी धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने नाम के विषय में किसी प्रकार की टीका टिप्पणी न करते हुए हमारी उचित माँग को स्वीकार कर लिया।

मन्त्री—

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्,

दिल्ली।

महिला-जगत्—

महिलाओं के लिए पंचवर्षीय योजना

(सर हरीसिंह गौड़ के विचार)

—:o—

मैं महिला-कान्फ्रेन्स और महिला-समाज के लिये सिर्फ जबानी सहानुभूति दिखाने का कायल नहीं, मैं तो महिला समाज को तरक्की के रास्ते पर पूरी तेजी के साथ आगे बढते देखना चाहता हूँ, और तरक्की के रास्ते की ओर मैंने यहाँ पहले सकेत भी किया है। उदाहरण के लिए एक बात को ले लीजिये—महिलाओ की कानूनी अयोग्यता और असमानता को। भारतीय महिला-समाज पर हजारो वर्षो से अन्याय होता चला आ रहा है—इतन लम्बे अर्से से इनके ऊपर सामाजिक तथा कानूनी अयोग्यता का बोझ लदा हुआ है। अब उससे छुटकारा पाना ही होगा। जो महिलाएँ कानून पेशा को अपना चुकी हैं, वे मेरी इस बात से पूर्ण सहमत होंगी कि स्मृतियो ने हमारे महिला-समाज के सामने जो कानूनी कठनाइयाँ पेश कर रखी हैं, उनमें सब से बढ़कर पेचीदा प्रश्न है स्त्री-धन का। जीमूत वाहन को भी अपने दायभाग' मे कहना पडा कि 'अब हम निहायत पेचीदा स्त्री-धन के प्रश्न पर विचार करते हैं।" यह प्रश्न अभी तक ज्यों का त्यों पड़ा है और इसकी ओर लोगों का ध्यान ही नहीं जाता। यह कानून आज भी अस्पष्ट और पेचीदा बना हुआ है। अतएव मैं चाहता हूँ कि इस अस्पष्टता और पेचीदगी को जल्दी से जल्दी खत्म कर दिया जाय। इसके लिए सिर्फ प्रस्ताव पास करते जाने से कोई लाभ नहीं, इसके लिए जरूरत इस बात की है कि महिला कान्फ्रेन्स कम से कम उन सात प्रान्तों की सरकार पर तो जबर्दस्त जोर डाले, जहाँ कांग्रेस के हाथ में शासन सूत्र आ गया है, कि स्त्री-धन सम्बन्धी कानून को स्पष्ट कर दिया जाय, क्योंकि इन प्रान्तों की सरकारों की सहानुभूति महिला-समाज के साथ है। क्या ही अच्छा होता, कि क़ानून इस बात की घोषणा कर देता कि महिला के पास जो सम्पत्ति है, उनकी मालकिन वही है—उसे सिर्फ उसका उपयोग करने का अधिकार नहीं, बल्कि उसपर पूरा अधिकार है। यह एक सीधी-सादी बात है, फिर भी आज तक क़ानून ने महिला के अधिकार को इस रूप में स्पष्ट नहीं किया है।

लेकिन अगर किसी ऐसे पुरुष के सामने यह प्रश्न रखें, जो क़ानूनदाँ नहीं है, कि क्या यह सीधी-सी बात नहीं है कि जिस महिला के अधिकार में जो सम्पत्ति हो, उसकी मालकिन उसीको मान लेना चाहिये, तो वह निस्सन्देह ऐसे प्रश्न को मूर्खतापूर्ण समझेगा, क्योंकि उस की तो यही धारणा है कि जिसके पास जो सम्पत्ति हो, उसका मालिक अवश्य वही होगा ही। परन्तु क्या आप यह नहीं जानते कि सम्पत्ति का मालिक

स्त्री नहीं, उसका पति है ? इसलिए मैं एक अर्से से इस कोशिश में लग रहा हूँ कि सम्पत्ति पर महिला के अधिकार को क़ानून बनाकर स्वीकार कर लिया जाय। मेरा यह पक्का विश्वास है कि हमारे कांग्रेसी दोस्त महिला-समाज की उन्नति हृदय से चाहते हैं और इसके लिए वे प्रयत्नशील भी हैं, परन्तु मै ज़ोर देकर यह बता देना चाहता हूँ कि महिलाओं को आप तबतक उन्नत दशा में नहीं पहुँचा पायेंगे, जबतक उन्हें भी सम्पत्ति पर पुरुष की भाँति ही पूरा हक़ न दें। जब तक उन्हें भी पुरुषों की तरह यह अधिकार न मिल जाय कि वे जब चाहें, अपनी सम्पत्ति को बेच सकती हैं। महिला-समाज के उद्धार के लिए चलनेवाले आन्दोलन को सफल बनाने के हेतु यह एक मौलिक काम होगा, और सच पूछा जाय तो महिलाओं को कब का इस प्रश्न को अपने हाथ में लेना चाहिये था। हम पुरुषों ने इसके लिए इतनी कठिनाइयों के रहते हुए भी कोशिशें कीं, महिलाओं को उनके वाजिब हक़ दिलाने के लिए मौजूदा क़ानून मे संशोधन कराने की कोशिश करते रहे हैं, लेकिन अब तो महिला कान्फरेन्स को स्वयं इस काम को अपने हाथ मे लेकर इसे पूरा करना चाहिये।

इस महत्वपूर्ण प्रश्न के अतिरिक्त जो काम पञ्चवर्षीय योजना के अन्दर आने चाहिये, उनमें एक है—महिलाओं के स्टेटस का सवाल। इस बात से तो इनकार नहीं किया जा सकता कि इधर पिछले वर्षों के आन्दोलन और जागृति के फलस्वरूप महिलाओं का 'स्टेटस' ऊँचा उठा है, फिर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि समाज में अभी तक उनको पुरुषों के समकक्ष स्थान नहीं प्राप्त है। आखिर उनको वह स्थान कैसे प्राप्त होगा ? इसका स्पष्ट उत्तर तो यही है कि महिलाओं को समाज में पुरुष के सामाजिक और वैयक्तिक अधिकार क़ानून द्वारा सुरक्षित रहेंगे। वर्तमान समय में उनके ये अधिकार क़ानून द्वारा सुरक्षित नहीं हैं। सभा मंचों से हम लोग महिला-समाज की उन्नति के लिए लम्बी-चौड़ी तक़रीरें करते हैं और कहते हैं कि ये हमारी बहनें हैं। लेकिन घर जाकर हम उनके साथ फिर वैसा ही व्यवहार करते हैं। जैसा कि सैकड़ों वर्षों से करते आ रहे हैं। कहा गया है कि लड़की बचपन में पिता के अधीन रहती है, जवान होने पर पति के अधीन और बुढापा आने पर पुत्र के आदेशाधीन रहती है। वर्तमान महिला-समाज के लिए तो वास्तव में यही बात कही जा सकती है। वर्तमान समाज में महिला की ऐसी ही स्थिति है। ग़र्ज़ यह कि मरण-पर्यन्त उसको किसी न किसी के अधीन ही रहना पड़ता है—स्वाधीनता उसे कभी मयस्सर नहीं होती, क्योंकि मनु महाराज का यही आदेश है।

आज तक जो महिलाओं को तरह-तरह की असुविधा और प्रतिबन्धों मे जकड़े रहना पड़ता है, उसका मुख्य कारण यह है कि लोगों की धारणा है कि स्त्री का अस्तित्व तो पुरुष की कृपा पर निर्भर है। मैं स्त्री-पुरुष की समानता क़ायम करना चाहता हूँ—सिर्फ क़ानून के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि सामाजिक क्षेत्र में भी। परन्तु यह

हिन्दू-स्त्रियाँ और सम्बन्ध-विच्छेद

(लेखक—एक मर्मज्ञ)

इस समय समाचार-पत्रों में इस विषय पर विशेष चर्चा छिड़ गई है कि हिन्दू-स्त्रियों को क़ानून की दृष्टि से सम्बन्ध-विच्छेद की आज्ञा मिलनी चाहिए अथवा नहीं। यह प्रश्न कोई नया नहीं। हिन्दू जगत् मे स्त्रियों की कानूनी असमानता और क़ानूनी अयोग्यता चिरकाल से विचारशील लोगों को अखरती रही है। किसी भी सभ्य जाति में कानून के सामने यदि स्त्री और पुरुष समान स्थिति नहीं रखते तो वहाँ संघर्ष और आन्दोलन का होना एक लाज़मी बात है। आधुनिक काल में शिक्षित समाज के अन्दर स्त्री-पुरुष की समानता के अतिरिक्त कोई दूसरा विचार हम अपने हृदय में धारण नहीं कर सकते।

प्रश्न यह है कि जब हिन्दू-समाज मे एक पुरुष अपनी स्त्री के साथ अमानुषिक व्यवहार करता हुआ एक से अधिक स्त्रियों के साथ विवाह कर सकता है और कानून उसके रास्ते में कोई रुकावट नहीं डालता तो उस दशा मे उन स्त्रियों के लिए, जो बहु पत्नी विवाह को घृणा की दृष्टि से देखती हैं, बचाव की सूरत क्या हो सकती है? हम यह प्रश्न इसलिए उठाते हैं कि पुरुषों को स्त्रियों के अधिकारों के सम्बन्ध में विचार करते हुए सर्वथा यह ध्यान रखना चाहिए कि स्त्रियों के भाग्य का निर्णय हमेशा उनके हाथ में नहीं रह सकता। अब वह जमाना बदल चुका है, जब कि यह विचार बड़े आदर की दृष्टि से देखा जाता था कि स्त्री अबला और रक्षणीय है और उसे हमेशा पुरुष के आश्रय मे ही स्थान मिलना चाहिए। इस ज़माने मे स्त्रियाँ अपनी रक्षा का कार्य अपने हाथों मे लेने के लिए तैयार हैं और अपने भाग्य के सम्बन्ध मे स्वयं स्वतन्त्रतापूर्वक विचार करने को उद्यत हो रही है। अत पुरुषों को

तब तक सम्भव न होगा, जब तक महिलाओं के साथ भी कानून का वैसा ही व्यवहार न हो, जैसा पुरुषों के साथ होता है—जब तक स्त्री पुरुष के अधिकारों का भेदभाव न मिटा दिया जाय। ये प्रश्न निहायत जरूरी हैं, जिनको आज से बहुत पहले ही हल कर लेना था, लेकिन इनके अलावा और भी प्रश्न हैं, जो पंचवर्षीय योजना मे सम्मिलित किये जाने चाहिये। शिक्षा का प्रश्न कम महत्वपूर्ण नहीं, इसके अतिरिक्त विवाह-सम्बन्धी कानून में संशोधन होना भी जरूरी है। बहुविवाह, अनमेल विवाह आदि कुप्रथाओं को कानून द्वारा रोकना होगा। मैंने यहाँ कुछ कामों का ही संक्षेप मे जिक्र किया है, जिनको पंचवर्षीय योजना का अंग बनाया जा सकता है। अगले पाँच वर्षों के अन्दर अगर महिला-समाज इतने काम कर ले, तो इसमें कुछ भी शक नहीं, कि भारतीय महिला-समाज की कायापलट हो जायगी और देश महिला-समाज के उद्धार के लिए बहुत कुछ कर चुका होगा।

—

अब सचेत हो जाना चाहिये और स्त्रियों के अधिकारों के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए स्त्रियों की आकांक्षाओं को दृष्टि से ओझल न करना चाहिये।

विवाह-सम्बन्ध-विच्छेद (Divorce) की चर्चा करते हुए हिन्दू-जनता में पुरुष एक प्रकार की दुहाई देने लग जाते हैं और कहते हैं कि हमारे धर्मशास्त्र हमें कभी आज्ञा नहीं देते कि यह कुत्सित प्रथा जारी की जाय। हम इन भद्रपुरुषों से पूछते हैं कि क़ानून के प्रचलित हो जाने से तुम्हारे धर्मशास्त्रों की आज्ञाओं को पालन करने में क्या बाधा उपस्थित होती है ? तुम कहते हो कि हमारा विवाह-सम्बन्ध अटूट है। मान लिया कि आदर्श की दृष्टि से यह बात सत्य है, परन्तु अटूट सम्बन्ध को मानते हुए एक हिन्दू अपनी स्त्री के होते हुए दूसरा विवाह कैसे कर सकता है ? दूसरा विवाह कर लेने पर वस्तुतः पहली स्त्री के साथ आदर्श की दृष्टि से विवाह-सम्बन्ध का विच्छेद हो जाता है। ऐसी दशा में बहुपत्नी विवाह के माननेवाले हिन्दुओं को अटूट सम्बन्ध की दुहाई देने की बात शोभा नहीं देती।

यदि हम विचारपूर्वक देखें तो कोई भी कानून हमें अपने आदर्शों से हटा नहीं सकता। हमारे व्यावहारिक जीवनमें सहायक तो बन सकता है, परन्तु बाधक नहीं हो सकता। क़ानून वस्तुतः हमें बहुत सी कठिनाइयों से बचाते हैं। सभ्य समाजों में क़ानून जातियों के व्यावहारिक जीवन को उन्नत करने के लिए पग-पग पर सहायता देते हैं। हमें केवल यह देख लेना चाहिये कि क़ानून किस मर्ज़ की दवा है और किन हानियों से बचाने के लिए बनाया गया है।

डा० देशमुख ने हिन्दू-स्त्रियों के लिए विवाह-सम्बन्ध-विच्छेद के जिस क़ानून की आवश्यकता का आन्दोलन किया है उसका वास्तविक स्वरूप समझ लेना चाहिये। डा० देशमुख निम्न अवस्थाओं में विवाह-सम्बन्ध-विच्छेद की आवश्यकता स्वीकार करते हैं —

(१) जब किसी स्त्रीका पति विवाह के पश्चात् नामर्द हो जाय और यह मर्ज़ लाइलाज हो।

(२) जब उसका पति अपना धर्म परिवर्तन कर ले।

(३) जब उसका पति उसके होते दूसरी स्त्री के साथ विवाह कर ले।

(४) जब उसका पति उसको तीन साल तक बराबर छोड़ रखे।

उपरोक्त अवस्थाओं के उपस्थित हो जाने पर यदि स्त्री-पुरुष का पारस्परिक जीवन कलुषित हो जाय और उनका परस्पर सहवास असम्भव बन जाय तो उस दशा में यदि हिन्दू-स्त्री चाहे तो क़ानून की सहायता लेकर वह अपने आपको पृथक् कर सकती है। कानून की शक्ति जबरदस्ती उसके विवाह-सम्बन्ध का विच्छेद नहीं कराती; परन्तु उसके अपने हाथ में यह अधिकार सौंपती है कि यदि वह चाहे तो क़ानून की सहायता ग्रहण करे। "अटूट सम्बन्ध" माननेवाले निःसंकोच अपने आदर्शों पर कटिबद्ध रह सकते हैं, परन्तु प्रश्न फिर उपस्थित होता है कि क्या सचमुच हिन्दू अपने व्यवहार से "अटूट सम्बन्ध" का परिचय

वैदिक आश्रम और साम्यवाद

(लेखक—श्री० अवधबिहारीलाल, एम० ए०)

वेदों ने मनुष्य के जीवन को चार भागों में बाँटा है। वे चार भाग चार आश्रम कहे गये हैं। मनुष्य की औसत आयु सौ वर्ष की मानकर, पहले २५ वर्ष ब्रह्मचर्य, फिर २५ वर्ष गृहस्थ, फिर ५० वर्ष की आयु से ७५ वर्ष की आयु तक वानप्रस्थ, तत्पश्चात् आयु के शेष भाग तक संन्यास आश्रम में बिताने के लिए निर्देश किया गया है।

ब्रह्मचर्य आश्रम में घरबार, माता-पिता को छोड़ बालक को गाँव से दूर जङ्गलों में गुरु के घर रहना पड़ता था। बच्चे माता-पिता के पास से वेद के शब्दों में "आवासस. परिधानात" अर्थात् जब कपड़े पहनने लगे, तभी गुरुकुलमें दाखिल हो जायँ। यह नियम राजा-रंक—सबके लिए एक समान था। घर से बालकों के लिए कोई माहवार रक़म नहीं भेजी जाती थी। चाहे राजकुमार कृष्ण हो, चाहे दरिद्र का लड़का सुदामा हो—दोनों को एक जैसे नियम में रहना पड़ता था। दोनों ही भिक्षाटन और गुरु-सेवा समान रूप से करके विद्योपार्जन किया करते थे। खाना-पीना, सोना-रहना, चलना-फिरना—धनी, निर्धन सब के पुत्रों के लिए एक जैसे थे। यहाँ न किसी को जन्म का अभिमान हो सकता था, और न कोई जन्म के कारण धनी-निर्धन ही हो सकता था। ऊँच-नीच का कोई भेदभाव यहाँ हो ही नहीं सकता था। अपने पुरुषार्थ से, अपने बाहु-बल से, अपनी योग्यता से अपने लिए अपना स्थान संसार में बनाना सीखो, दूसरे के कमाये धन को अपने उप-योग में न लगाओ, ऐसा स्वावलम्बन और सादगी

दे रहे हैं? यदि हिन्दू अपने व्यवहार से इस 'अटूट सम्बन्ध" को प्रति दिन तोड़ रहे हों तो उस दशा मे यदि हिन्दू-महिलाएँ पुरुषों के बला-त्कार से बचने के लिए क़ानून की सहायता लेना चाहे तो हम उनके रास्ते मे क्यों बाधा डालें। स्त्री और पुरुष क जीवन का सच्चा विकास तभी हो सकता है जब उनको एक-दूसरे के प्रति पूर्ण स्वतंत्रता हो। तभी उनका पारस्परिक प्रेम सच्चा और गहरा बन सकता है। जहाँ स्वतन्त्रता है वहाँ ही हमारे परस्पर के सम्बन्ध अधिक दृढ़ और अधिक निश्चित रूप धारण कर सकते हैं।

हम आर्यसमाज के विचारशील व्यक्तियों को यह प्रेरणा करना चाहते हैं कि वे स्त्रियों की स्वा-धीनता की रक्षा करने में किसीसे पीछे न रहें। जब आर्यसमाज ने स्त्रियों के लिए शिक्षा के द्वार खोलकर उनको स्वाधीनता के मार्ग पर डाल दिया है तब उनके मार्ग में व्यर्थ के रोड़े अटकाने से कुछ न बनेगा। हिन्दू साम्प्रदायिक जनता की तरह उन्हें अपनी विचारशैली को संकीर्ण न बनाना चाहिए। उन्हें केवल इस दृष्टि से सोचना चाहिए कि वेद प्रतिपादित स्वाधीनता का उपयोग स्त्री और पुरुषों के लिए समान रूप से विहित है।

तप और त्याग की शिक्षा जीवन के प्रारम्भिक काल में देकर मनुष्य का सच्चे अर्थों में साम्य-वादी बना दिया जाता था।

गृहस्थ आश्रम मे मनुष्य विवाह कर योग्यता और पुरुषार्थ के अनुसार धनादि उपार्जन कर परिवार-पालन कर सकता था। लेकिन यहाँ पर भी उसको विषयासक्त और परिग्रही होने की आज्ञा न थी। वह धन तो कमाये, लेकिन यज्ञ के लिए कमाये, वह आदेश था। यज्ञ क्या है, यज्ञ का मन्त्र हमे बतलाता है—"इदं प्रजापतये इदन्नमम"—यह धनादि भोग्य पदार्थ परमात्मा के लिए हैं, मेरे लिए नहीं। परमात्मा तो वेदोंके शब्दो मे "वसुनः पूर्व्यस्पति" सारे धनादि पदार्थों का स्वामी है, उसे कोई क्या खिलायेगा, इसलिए अपन धनादि को परमात्मा की सन्तान मनुष्य नहीं, प्राणीमात्र के लिए अर्पित कर दे, यह था गृहस्थ-जीवन का उद्देश्य। ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम, गृहस्थों के दानपर ही निर्भर रहते हैं। गृहस्थ के नित्य कर्मो मे से थे—(१) ब्रह्मयज्ञ, जिसमे उसे विद्वानों का सत्कार करना पड़ता था; (२) पितृयज्ञ, जिसमे बूढ़े माता-पिता, पितामहादिकों का अन्नादि से सत्कार किया जाता था, (३) अतिथियज्ञ, जिसमें धार्मिक विद्वान्, सत्योपदेष्य सन्यासि-जनों को भोजनादि से मान्य करना होता था और (४) भूतयज्ञ, जिसमे श्वपच, चाण्डालादि (जिनका कुकर्मादि के कारण सामाजिक बहिष्कार किया गया हो, अतएव जिन की जीविका छिन गयी हो); पापरोगी (अर्थात् भगन्दर, कुष्ठ, यक्ष्मा, अर्श आदि भयकर रोगों से पीड़ित एवं अन्धे, लूले-लंगड़े आदि जीवको-पार्जन में अक्षम), यहाँ तक कि कुत्ते, कौए, कीड़े आदि तक को भोजन देने का विधान है। गृहस्थों के कर्त्तव्यों में गृह्यसूत्रादिकों में बतलाया गया है कि प्रत्येक गृहस्थ के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने भोजन करने के पहले देख ले कि उसके पड़ोस में कोई जीविकोपार्जन मे असमर्थ भूखा तो नहीं है, इत्यादि। ऐसी सुन्दर व्यवस्था मे गरीबों का रक्त-चूसकर बढ़नेवाला पूँजीवाद कहाँ से पनप सकता था? वर्तमान तथाकथित साम्यवाद अथवा समाजवाद के हाहाकार और श्रीमानों को लूटकर पापी पेट की आग बुझाने की पुकार ही क्योंकर सम्भव हो सकती है?

कहा जा सकता है कि वैदिक धर्म की यज्ञ-दान आदि की शिक्षाओं ने भारतवर्ष में निकम्मे भिखमंगे पैदा कर दिये। लेकिन यह कहनेवालों की भूल है। वैदिक धर्म (सनातनधर्म) के नाम पर आज छप्पन लाख सण्डे-मुसण्डे परान्नपुष्ट भारतवर्ष में उत्पन्न हो गये अवश्य, सनातनधर्म के नाम पर उनको हिन्दू-जनता पोस रही है अवश्य, पर ऐसी अवस्था वैदिक धर्म के कारण नहीं हुई, बल्कि वैदिक धर्म की शिक्षाओं को भूल जाने के कारण हुई है। देखिये, वेदार्थतत्वज्ञ महाराज मनु ने कैसा सुन्दर उपदेश इस सम्बन्ध में दिया है—

"पाखण्डिनोविकर्मस्थान् वैडालव्रतिकान्शठान्।
हैतुकान् बकवृत्तींश्च वाङ्मात्रेणापिनार्चयेत्॥"

अर्थात् पाखण्डी, वेदविरुद्ध कर्मों में निरत, बिडाले भगत, व्यर्थ के बकवादी, कुतर्की, बगुला-

भगत लोगों को वचन-मात्र से भी सत्कार न करे।

अतपास्त्वनधीयानः प्रतिग्रहरुचिर्द्विजः।

अम्भस्यश्मप्लवेनेव सह तेनैव मज्जति॥

अर्थात् सत्य, ब्रह्मचर्य आदि तप से रहित बिना पढ़ा-लिखा, दान लेने में शौकीन नामधारी ब्राह्मण दानवता के साथ ही अधोगति को प्राप्त होता है—जैसे पत्थर की नाव में बैठकर तैरने-वाला नाव के साथ ही समुद्र में डूब जाता है।

अतएव देश, काल और सत्पात्र का विचार करके दिया हुआ दान ही सात्विक दान है और वैसा दान देना चाहिये, ऐसी सम्मति भगवान् कृष्ण ने भी गीता में दी है। निकम्मे सण्ड-मुसण्डों को दान देना कदापि कर्तव्य नहीं है। भूखे, पीड़ित आतुरों को भोजनादि देना गृहस्थों का धर्म ही ठहरा, अतएव भिखमंगी रही कहाँ?

तीसरा आश्रम वानप्रस्थ आश्रम है। शास्त्रों में विधान है कि मनुष्य धनादि के लोभ में पड़कर विषयासक्त न हो जाये और उसको सांसारिक वैभव और प्रभुत्वका अभिमान न हो, इसलिए पचीस वर्ष से अधिक अपने जीवन का गृहस्था-श्रम में न बिताये। जब उसके पुत्र का पुत्र हो जाय तो मनुष्य घर छोड़कर जङ्गल में रहे। वहाँ गाँव या नगरभर के गृहस्थों के बालकों को पढ़ाये। तप और स्वाध्याय के योग्य बनाये; घरबार, धन-दौलत से कुछ भी सम्बन्ध न रखे। वृक्ष के नीचे रहकर जङ्गल के फल-फूल आदि खाये। इस आश्रम में फिर भी छोटाई-बड़ाई, गरीब-अमीर का कोई प्रश्न न रहा। राजा भी जङ्गल में रह कर जमीन पर सोकर तथा फल-मूल खाकर परमात्मचिन्तन और परोपकार में समय लगाये, रंक भी वैसा ही करे—सब बराबर! यह हुआ वैदिक साम्यवाद।

चतुर्थ अन्तिम आश्रम है—संन्यास-आश्रम। वित्तैषणा, पुत्रैषणा, लोकैषणा अर्थात् धन की इच्छा, पुत्र का मोह, संसार में नाम कमाने की ख्वाहिश-इन तीन प्रकार की एषणाओं से, जिनसे छुटकारा पाने के लिए वानप्रस्थ आश्रम में तैयारी की गयी थी और जिनपर विजय प्राप्त हो चुकी है, उनसे ऊपर उठकर मनुष्य अब परिव्राजक सन्यासी बने। वह अब किसी स्थान, परिवार या जातिविशेष का नहीं है। वह अब संसार का है, संसार के सभी जीव उसके कुटुम्ब हैं। उसका जीवन अब जगदीश्वर की सेवा में अर्पित है। परमपिता उसका पिता, सभी जीव उसके भाई हैं।

समाजवाद की शिक्षा पाश्चात्य जगत् क्या देगा? वैदिक धर्म मे व्यष्टि से समष्टि की ओर जाना प्रत्येक मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य माना गया है। प्रथम के तीन आश्रमों में धीरे-धीरे, किन्तु ठोस तरीके से तैयारियाँ करते हुए मनुष्य उस ओर पग उठाता हुआ सन्यास आश्रम में वहीं पर पहुँच जाता है।

जीवन की किसी भी परिस्थिति में रहकर हमें धर्मयुक्त पुरुषार्थ करने में कष्ट न हो, इस-लिए ब्रह्मचर्य आश्रम में तप और त्याग का

अभ्यास डालकर हम अपने को योग्य विद्वान् बनाते हैं। यहाँ पर हमें अपने शरीर और आत्मा से ही सम्बन्ध रहता है, अकेले अपने को योग्य बनाते हैं, क्योंकि बिना अपनी तैयारी के दूसरों के लिए कुछ कर सकना असम्भव है। गृहस्थ आश्रम में स्त्री और लड़के रहते हैं। उनका भरणपोषण करना, उनको योग्य बनाना ही हमारा मुख्य ध्येय होता है। इस व्यष्टि-समष्टि की ओर कुछ आगे क़दम रखते हैं। वानप्रस्थ आश्रम में समष्टि की ओर हम और अधिक बढ़ते हैं। हमारा जीवन ग्राम, नगर या राष्ट्र के लिए हो जाता है। इसके बाद चतुर्थाश्रम-संन्यास में हम इस योग्य हो जाते हैं कि हम विश्व-बन्धु बनें। तब हम देश, जाति, राष्ट्र—इन सबके तंग दायरों से निकलकर "मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे" मित्र की दृष्टि से संसार के प्राणीमात्र को देखने लग जाते हैं॥

कांग्रेस-वर्किङ्ग कमेटी और सीमाप्रान्त का अध्यापक

—०:—

जनता फ्रौन्टियर (सीमाप्रान्त) के अध्यापक अब्दुल्लाशाह के मामले को नहीं भूली होगी जिसका रामकौर नामक एक हिन्दू लड़की के अपहरण से सम्बन्ध था और जो सीमाप्रान्त की वर्तमान कांग्रेस-सरकार द्वारा अपनी जगह पर बहाल कर दिया गया है। कांग्रेस की वर्किङ्ग कमेटी की बम्बई की बैठक में इस विषय पर विचार हुआ था। वर्किङ्ग कमेटी ने प्रधान मन्त्री को केवल मामले की क़ानूनी जाँच-पड़ताल करने के लिए कहा है, मानो प्रमाणित अदालतों ने जो दण्ड दिया था और वह भी—पूरी-पूरी लम्बी सुनवाई के बाद—वह नाकाफ़ी था।

बहुत से देशों के पिछले इतिहासों में राजा लोग विजयी राजा के साथ अपनी बहन या पुत्री की शादी करके सुलह किया करते थे। यह सुलह पब्लिक के लिए बहुत अपमानजनक होती था, फिर भी लड़की की शादी की जाती थी और उसका किसी प्रकार अपमान और बेइज़्ज़ती नहीं की जाती थी। यह आशा की जाती है कि स्त्री-जाति के प्रति जो अपमान किया गया है उसकी उपेक्षा करना दो पार्टियों में सन्धि न स्थापित करने का ताज़ा विचार नहीं है।

❀ ❀ ❀

श्रीस्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का

छोटा नागपुर का दौरा

श्रद्धानन्द ट्रस्ट की प्रगतियां

(विशेष संवाददाता द्वारा)

सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि-सभा के कार्यकर्ता प्रधान श्रीस्वामी स्वतन्त्रानन्द जी गत कई मास में श्रद्धानन्द ट्रस्ट की ओर से जिसके स्वामी जी एक प्रतिष्ठित सदस्य हैं, कार्य का निरीक्षण करने के लिए इस प्रान्त में पधारे थे। ट्रस्ट के कार्य के अतिरिक्त उन्होंने प्रान्त मे आर्यसमाज के कार्य का निरीक्षण तथा प्रचार भी किया। उनका यह दौरा बडा सफल रहा। स्थान-स्थान पर उनका स्वागत किया गया। रांची, लोहरदगा, डाल्टन गंज में उन्हें अभिनन्दन-पत्र भेंट किये गये। रांची के मेन्टल अस्पताल में तो उनके व्याख्यान का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। अस्पताल के अध्यक्ष मेजर धान जी आई० आई० ऐस० ने स्वामी जी का बडा उपकार माना था।

इधर छोटा नागपुर मे श्रद्धानन्द ट्रस्ट की बड़ी उपयोगी प्रगतियाँ हैं और वे दिन पर दिन बढ़ रही हैं। रांची इस प्रगतियों का मुख्य केन्द्र है। यहाँ ट्रस्ट की श्रद्धानन्द हिन्दू अनाथ आश्रम, नामक एक उपयोगी संस्था काम कर रही है। स्थान बड़ी रमणीक जगह पर है। इस समय इस में आदि जातियों के १४ बालकों क रक्षा होती है। इसमें बुनना और सीना सिखाया जाता है। बाजा क्लास भी है।

रांची से २२ मील की दूरी पर खूंटी नामक स्थान में ट्रस्ट का आश्रम है। इसमे २३ विद्यार्थी रहते हैं जो अन्य स्कूलों में पढ़ते हैं।

लोहरदगा से दो मील की दूरी पर जुरिया में ट्रस्ट का एक प्राइमरी स्कूल है। इसमे ५१ विद्यार्थी पढ़ते हैं।

ट्रस्ट की ओर से इस समय ८ उपदेशक श्री० पं० धर्मवीर जी वेदालंकार की अध्यक्षता में काम रहे हैं। इनका प्रचार-क्षेत्र विशेषतया आदि जातियाँ हैं तथा ये सब उपदेशक एक दो को छोड़कर आदि जातियों के ही हैं, जिन्हें ट्रस्ट ने स्वयं तैयार किया है।

सन् ३६ में १९८०, सन् ३७ में ८००, तथा इस वर्ष इस समय तक ३००, कुल २३०० व्यक्तियों की शुद्धि हुई है।

वस्तुत. यहाँ ट्रस्ट की ओर से बहुत उत्तम कार्य हो रहा है और ईसाइयों से आदि जातियों की रक्षा हो रही है। इस कार्य का बड़ा श्रेय श्री० पं० धर्मवीर जी को है। इनके मिशन तथा उनसे यहाँ के सामाजिक जीवन मे बड़ी प्रेरणा प्राप्त हुई है। इसलिए श्रद्धानन्द ट्रस्ट धन्यवाद का पात्र है।

विदेश-वार्ता

फ़ीजी

वैसे तो फ़ीजी द्वीप लगभग दो सौ पचास टापुओं में विभक्त है किन्तु भारतवासी अधिकतर दो ही टापुओं में रहते हैं और उनमें भी वीटालेवू नामक द्वीप में ही उनकी संख्या अधिक है। फ़ीजी की राजधानी सूवा में भी बहुत से भारतीय रहते हैं। दूसरा टापू वनुआलेवू है, वहाँ भी भारतीयों की संख्या कुछ कम नहीं है। फ़ीजी के सम्बन्ध में पूज्य पं० तोताराम जी सनाढ्य, श्री० सी० एफ० ऐन्ड्रूज़, पं० बनारसीदासजी चतुर्वेदी, आर्यमिशनरी जैमिनि महता तथा अन्य विद्वानों द्वारा पुस्तकों व समाचार-पत्रों में काफ़ी हलचल हो चुकी और हो रही है, इसलिए यह विषय तो मैं उन विद्वानों पर ही छोड़ता हूँ। मैं तो आर्यसमाज के विषय में ही अपने विचार प्रकट करना चाहता हूँ। आशा है, आर्य-जनता मेरे इन विचारों पर अपनी राय प्रकट कर कृतार्थ करेगी।

फ़ीजी ने आर्यसमाज का प्रचार करने के लिए पहले-पहल स्वामी राममनोहरानन्द जी गये थे। उन्होंने खूब लगन के साथ २ वैदिकधर्म का प्रचार किया और आर्यसमाज के स्थापना के बाद ही आर्य-प्रतिनिधि-सभा की भी स्थापना की गयी। फिर उनके विचारों में परिवर्त्तन होने लगा और उन्होंने अपनी शादी करली। इसपर आर्य-जनता बिगड़ गयी और उक्त स्वामी जी ने आर्यसमाज से अपना सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया। तब आर्य-प्रतिनिधि-सभा फ़ीजी ने संयुक्त प्रांतीय आर्य-प्रतिनिधि-सभा को लिखा और वहाँ से पं० योगेन्द्रनारायण जी पथिक, जो अजीतमल जि० इटावा के रहनेवाले हैं, फ़ीजी में प्रचारार्थ भेजे गये। उन्होंने गुरुकुल का संचालन अपने हाथों में लिया और खूब लगन से

छोटा नागपुर में आर्यसमाज और श्रद्धानन्द ट्रस्ट पारस्परिक सहयोग से कार्य करते हैं। ईसाइयों का वहाँ कितना अधिक प्रभाव है यह लिखने की जरूरत नहीं। इतना ही लिख देना पर्याप्त है कि ईसाइयों की प्रवृत्तियों की तुलना में समाज का यह प्रचार समुद्र में बिन्दु के समान है, इसमें हमारा अभिप्राय कार्य को घटाकर प्रस्तुत करना नहीं; वरन् इस कार्य को बढ़ाये जाने की आवश्यकता अंकित करना है। यहाँ ईसाई लोग सन् १८४५ से काम कर रहे हैं। रोमन-कैथोलिक मिशन के ३ लाख से ऊपर तथा जर्मन-मिशन के १ लाख से ऊपर अनुयायी हैं। इंगलिश तथा अमेरिकन मिशन के अनुयायियों की संख्या भी बढ़ी चढ़ी है। छोटा नागपुर में राँची, झरिया, जमशेदपुर (रायनगढ़), डाल्टनगंज की आर्यसमाजें उत्तम अवस्था में हैं। लोहरदगा समाज का अभीतक अपना मन्दिर भी नहीं है।

राँची में आर्यसमाज और आर्यकुमार सभा में कुछ मतभेद था। जिसके सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा को प्रेरणा की गयी थी। वह झगड़ा भी श्री स्वामी जी के आने से शान्त हो गया।

—रघुनाथप्रसाद पाठक, मन्त्री।

कार्य किया। उन्हीं की प्रेरणा से श्री० पं० श्रीकृष्ण शर्मा जी आर्यमिशनरी फीजी गये, आपने नौ वर्ष तक द्वीप में रहकर वैदिक धर्म का प्रचार किया। फिर आप भारत लौट आये और फिर फीजी जानेवाले थे, परन्तु वहाँ की सरकार ने आप को दुबारा फीजी आने से रोक दिया, और ऐसा करने का कारण पूछे जाने पर भी सरकार ने कोई उत्तर नहीं दिया। इसलिए प्रचार की कमी के कारण लोगों में शिथिलता आगयी है। आजकल भी फीजी में पं० योगेन्द्रनारायण जी, पं० अमीचन्द्र जी विद्यालंकार तथा ठा० कुन्दनसिंह जी विद्यालयों मे अध्यापन कार्य कर रहे हैं और उस कारण उन्हें प्रचार करने का अवकाश नहीं मिलता।

आर्य-प्रतिनिधि-सभा के प्रधान मन्त्री पं० विष्णुदत्त जी खूब लगन से कार्य कर रहे हैं। परन्तु वहाँ की व्यवस्थापिका सभा के सदस्य होने के कारण आप को राजनैतिक विषयों पर काफी वादविवाद करना पड़ता है, अतः आपको पूरा समय नहीं मिलता।

मैं जब भारतवर्ष आनेवाला था तो वहाँ की आर्य जनता ने कहा था कि यदि सार्वदेशिक सभा कोई उपदेशक भेजदे तो अति उत्तम हो और उसके लिए एक पत्र श्री नारायण स्वामी जी महाराज के लिए भी दिया था, उनसे मिलकर भी मुझे इस बारे में कुछ परामर्श करना है, किन्हीं कारणवश मैं अभी तक उनके दर्शन न कर सका मैं अभी देहरादून में हूँ, और वहाँ की आर्य-समाज में भी मैंने अपने विचार प्रकट किये थे। प्रो० महेन्द्रप्रताप जी, शास्त्री, एम० ए०, एम० ओ० एल० ने मुझे विश्वास दिलाया था कि सार्वदेशिक सभा के एक प्रचारक जो सिंगापुर गये हुए हैं, सम्भवतः वे वहाँ का कार्य पूरा कर फीजी भेज दिये जायें। जब उन्होंने यह आश्वासन दिलाया तो मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं तो आर्यसमाज की उन्नति में खुश हूँ। परन्तु फीजी में दो साल रह कर कोई प्रचारक महाशय अपना समय दे सकें तो बड़ी दया हो। यदि कोई योग्य संन्यासी जायँ तो फीजी का बड़ा भारी उपकार हो सकता है, क्योंकि संन्यासी ही निर्द्वन्द्वतापूर्वक प्रचार-कार्य कर सकते हैं। जब आर्यसमाज का दावा है कि वह सारी दुनिया में आर्य विचारों का प्रचार करना चाहता है, तब उसी दुनिया में फीजीद्वीप भी तो है। साधु संन्यासियों को चाहिये कि दो-चार मास का समय फीजी द्वीप के लिए दें। यदि कोई महाशय आने जानेका मार्गव्यय लेकर फीजी आने को तैयार हो तो मुझे लिखने की कृपा करें। फीजी आ० प्र० सभा को लिखूँगा। जानेवाले महाशय अपने विचार आर्यमित्र, आगरा या अन्य आर्य-समाचार-पत्रों मे भी प्रकाशित कर दें तो अच्छा हो।

मैंने अपने विचार प्रकट कर दिये हैं और इस समय फीजी द्वीप में प्रचारक की विशेष आवश्यकता है। आशा है, आर्य-विद्वान् मेरी तुच्छ सम्मति-पर विचारकर फीजी में वैदिकधर्म प्रचार की कोई योजना तैयार करेंगे।

हरदयाल शर्मा,
प्रधान आर्य-प्रतिनिधि सभा, फीजी
c/o प्रो० महेन्द्रप्रताप शास्त्री जी,
डी० ए० वी० कालेज,
देहरादून,

मद्रास-प्रचार

(जून)

प्र० स्ना० धर्मदेव विद्यावाचस्पति ने इस मास बंगलौर शहर, बंगलौर छावनी, कंगेरी, श्रीरामपुर, चुंचन् कट्टे, होनगहल्ली ग्राम होनगोन् हल्ली ग्राम (मण्ड्या), मावल्ली ग्राम इत्यादि में प्रचार तथा दलितोद्धार कार्य किया। यह प्रसन्नता की बात है कि जनता में वैदिक संस्कारों के प्रति प्रेम बढ़ता जारहा है और दूर दूर स्थानों से प्रतिष्ठित सज्जन सभा के प्रचारक महोदय को संस्कारार्थ निमन्त्रित करने लगे हैं। इस मास १ नामकरण-संस्कार, १ मुण्डन-संस्कार, १ गृहप्रवेश और ३ विवाह-संस्कार स्नातक जी ने वैदिक रीति से व्याख्या-सहित कराये जिन का जनता पर विशेष प्रभाव पड़ा। तीनों विवाह-संस्कार, जिनमें से एक बंगलौर छावनी और २ बंगलौर से लगभग ४०-५० मील दूरस्थ होनगहल तथा गोनाहल्ली नामक ग्रामों में कराये गये, विशेष महत्वपूर्ण थे। ६ जून को बंगलौर छावनी में हैदराबाद के श्रीयुत धनुष्कोटि वर्मा की शिक्षिता पुत्री श्रीमती सरस्वती देवी का डा० गोपालन् B. A, M B. B S. के साथ विवाह संस्कार स्नातक जी ने कर्नाटकी भाषा में व्याख्यासहित कराया। वर के माता-पिता तथा प्रायः अन्य सब सम्बन्धी कट्टर पौराणिक थे, किन्तु उन सबने वैदिक-विवाह-पद्धति को बहुत ही पसन्द किया। १६ जून को होनगहल्ली नामक ग्राम में बक्कलिगर जाति के गुरु श्री गुरु महालिङ्गानन्द की शिक्षिता पुत्री का, जो अध्यापिका थी, विवाह स्नातक जी ने व्याख्या सहित कराया, जिसे देखने के लिए लिङ्गायत् सम्प्रदाय के पुरोहित आदि भी सम्मिलित हुए थे। वैदिक विवाह-पद्धति को देख तथा उसकी व्याख्या को सुनकर उन सबने मुक्तकण्ठ से उसकी प्रशंसा की। गुरु महालिङ्गानन्द जी पर तो इसका इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने संस्कार-विधि के कर्नाटकी भाषानुवाद के प्रकाशनार्थ उदार आर्थिक सहायता का वचन दिया है, जिसे शीघ्र समाप्त करने का प्रयत्न हो रहा है।

तीसरा विवाह चुंचन कट्टे नामक तीर्थस्थल मे बक्कलिगर जाति के प्रसिद्ध नेता गुरुकुल अनाथालय के संस्थापक श्रीयुत् पुट्टय्या जी की सुपुत्री श्रीमती शारदा देवी (आयु १९ वर्ष) का जिन्होंने इस वर्ष (Intermediate) की परीक्षा दी है श्रीयुत रामप्पा B. A (Hons) के साथ होनगोनहल्ली नामक ग्राम में २० ता० को बड़ी धूमधाम से हुआ। सैकड़ों लोग दूर-दूर से इस आदर्श वैदिक विवाह को देखने के लिए आये थे और बक्कलिगर जाति के गुरु स्वामी शिवानन्द जी आदि भी पधारे थे। विवाह संस्कार तथा उसकी व्याख्या को सुनकर सब बड़े प्रभावित हुए और स्वामी शिवा-

नन्द जी ने अपनी अत्यन्त प्रसन्नता प्रकट करते हुए जनता से इन वैदिक संस्कारों के अपनाने की प्रबल प्रेरणा की। रात को स्नातक जी तथा पत्तपट्टण आर्यसमाज के मन्त्री श्रीयुत आर्यमुनि जी के वैदिक विवाह पद्धति, गृहस्थधर्म आदि विषयपर प्रभावशाली भाषण हुए। १० जून को श्रीराम पुर में (मैसूर से लगभग ४० मील की दूरी पर) वक्कालिगर सम्मेलन हुआ जिसमे स्नातक जी ने सम्मिलित होकर प्रार्थना सहित ओ३म् ध्वजारोहण कराया और वैदिक संस्कार वैदिक धर्म, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली आदि को अपनाने के लिए जनता को विशेष रूप से प्रेरित किया। सम्मेलन के अध्यक्ष श्रीयुत शामल्ला गौड़ ने भी अपने अध्यक्ष भाषण मे वैदिक धर्म तथा आर्यसमाज को अधिकाधिक अपनाने के लिए जनताको प्रेरित किया, जिस के कारण ही उन्होंने कहा कि समाज का उद्धार हो सकता है, अन्यथा नहीं।

"वैदिक धर्म आर्यसमाज प्रश्नोत्तरी" नामक स्नातक जी का पुस्तक का कर्नाटकी अनुवाद इस मास प्रकाशित हुआ है, जिससे विद्यार्थियों में वैदिक धर्म प्रचारार्थ विशेष सहायता मिलेगी। बंगलौर मे निवास के दिनों में स्नातक जी अनेक सज्जनों को संस्कृत, वेद, उपनिषद् संस्कार-विधि आदि पढाते तथा मावल्ली आदि ग्रामों में जा कर हरिजनोद्धार कार्य करते रहे।

साहित्य-समीक्षा

आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म

लेखक—श्री० रघुनाथप्रसाद पाठक

प्रकाशक—आर्य साहित्य मण्डल लिमिटेड, अजमेर। मूल्य ।≈)

यह पुस्तक मण्डल ने आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्तप्रान्त की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष में प्रकाशित की है। पुस्तक में आर्य जीवन तथा गृहस्थोपयोगी प्रचुर सामग्री प्रस्तुत की गई है। विषय के स्पष्टीकरण के लिए विविध शिक्षाप्रद आख्यायिकाएँ और उदाहरण भी दिये गये हैं। यह पुस्तक लेखक के शब्दों में मुख्यतया श्री पूज्य महात्मा नारायणस्वामीजी महाराज के प्रवचनों के आधार पर लिखी गई है। अन्य भी महानुभावों तथा महात्मा गाँधी प्रभृति महानुभावों के विचारों से पुस्तक के सपादन में सहायता ली गई है। सहयोगी हिन्दू' के शब्दों में यह पुस्तक प्रत्येक आर्य के लिए उपहार योग्य है। यह पुस्तक इस योग्य है कि प्रत्येक आर्य घर, नारी युवक और युवती के हाथ में पहुँचे। गृहस्थ धर्म सम्बन्धी शायद ही कोई विषय हो जिस पर इस पुस्तक में विचार न किया गया हो। वर्तमान में विवाह इत्यादि के सम्बन्ध में नई रोशनी की नव युवतियों और नवयुवकों की जो भ्रमपूर्ण धारणाएँ हैं उनका तो इसमें बड़ा ही उत्तम खण्डन प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक शारदा मन्दिर लिमिटेड, नई सडक तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली से भी मिल सकती है।

शारदा ऐक्ट

लेखक—देशभक्त श्री कुँ० चाँदकरण शारदा वकील अजमेर

मिलने का पता—'शारदा भवन" दौलतबाग, अजमेर। मूल्य ।)

इस पुस्तकमें शारदा ऐक्ट, उसका संक्षिप्त इतिहास

और अदालतों की उसपर कतिपय व्यवस्थाएँ (Rulings) दी गई हैं। अभी हाल में इस ऐक्ट में जो संशोधन हुए हैं वे भी हिन्दी-अनुवाद-सहित देकर ऐक्ट पूर्व तथा वर्तमान रूपमें प्रस्तुत किया गया है। ऐक्ट के प्रचलन के क़ायदे और तरीक़ों का भी निर्देश किया गया है। सारांश, ऐक्ट-सम्बन्धी ज़रूरी ज़रूरी लगभग सभी बातें पुस्तक में मिल जाती हैं। ऐक्ट से लाभ उठानेवालों को इससे काफ़ी मदद मिल सकती है। बाल-विवाह की हानियों पर भी विचार किया गया है। ऐक्ट के निर्माता श्री दीवान बहादुर हरबिलास जी शारदा ने पुस्तक का भूमिका लिखी है।

"शारदा मन्दिर" लिमिटेड नई सड़क, देहली के नये उपयोगी प्रकाशन

(१) "बच्चों के नाटक" इस पुस्तक मे ११-१२ वर्ष की आयु के बच्चों को उभारने के लिए छोटे-छोटे नाटक, जिनको वह घरों में तथा पाठशालाओं मे खेल सकते हैं, दिये गये हैं। इन नाटकों में विषय "साधारण जीवन' से लिए गए हैं और उनको इतना रोचक तथा शिक्षाप्रद बनाया गया है कि बच्चे उनको चाव से पढ़ते हैं। मूल्य ॥)

(२) सहेली—लड़कियों के लिए अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। लड़कियों के जानने योग्य सभी बातों को सरल भाषा में समझाया गया है। यह पाठ्य-पुस्तक बनने योग्य है इस पुस्तक को कन्या पाठशालाओं में स्थान मिलना चाहिये। मूल्य ॥=)

(३) सखा की सीख, सखी की सीख — यह दो परमोपयोगी पुस्तकें लड़के-लड़कियों के लिए लिखी गई हैं ॥), ॥-)

———



आर्य-कांग्रेस की आवश्यकता

—+—

जब से हैदराबाद की समस्या हमारे सामने उपस्थित हुई है, हमे दिनों-दिन आर्य-कांग्रेस के अधिवेशन की आवश्यकता अनुभव होने लगी है। हम यह महसूस करने लगे है कि किसी निश्चित स्थान पर आर्यसमाज की सामूहिक शक्ति का प्रदर्शन किया जाय और हम आर्य-जनता के सम्मुख एक ऐसा अवसर उपस्थित करें, जहाँ उसे हैदराबाद की समस्या का वास्तविक स्वरूप देखने को मिल सके। इस समय हैदराबाद मे आर्यसमाज पर जो कुछ बीत रही है उसका रोमाञ्चकारी वर्णन समाचार-पत्रों मे पाठकों का समय समय पर मिल रहा है। हैदराबाद और गुलबर्गा मे भयानक क़त्ल के अभियोग आर्यों के विरुद्ध चलाए जा रहे हैं। स्थान-स्थान पर साधारण सी बातों पर आर्यों को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया जाता है और बिना वारण्ट के उनको बन्दीगृह मे रखकर उनके साथ घोरतम अत्याचार किया जाता है। आर्यसमाजियों को अपने साधारण साप्ताहिक अधिवेशन करने अथवा वार्षिक

उत्सव मनाने अथवा हवन-कुण्ड आदि की स्थापना करने या ओ३म् का झण्डा अपने मन्दिरों पर फहराने के मार्ग में निज़ाम-सरकार की तरफ़ से रुकावटें डाली जाती हैं। ८५ प्रतिशत हिन्दुओं की आबादी होते हुए भी हिन्दुओं की करुणाजनक दशा आर्यसमाजियों से नहीं देखी जाती। आर्य-समाज केवल इसीलिए निज़ाम-सरकार की आँखों में काँटा सिद्ध हो रहा है, क्योंकि उसे अपने धार्मिक स्वत्वों का सदा ख्याल रहता है।

जो क़त्ल के अभियोग हैदराबाद तथा गुलबर्गा में चल रहे हैं, उनमें मुलज़िमों की कानूनी सहायता के लिए बम्बई के प्रसिद्ध वकील श्रीमान नरीमैन को बुलाया गया था, परन्तु निज़ाम-सरकार ने उनका दाखिला बन्द करके वहाँ के आर्य और हिन्दुओं को अत्यन्त निस्सहाय बना दिया है। हमारे कर्मवीर भाई बसीलाल जी वकील तथा उनके सहकारी दूसरे आर्य-सज्जन दिन-रात इस यत्न मे हैं कि अभियोग में पीड़ित भाइयों की पूरी सहायता की जाय। सार्वदेशिक सभा ने उनको अपने सहयोग का पूरा आश्वासन दे दिया है। उनकी सहायता के लिए बड़े से बड़े फौजदारी वकीलों का प्रबन्ध किया जा रहा है। हमे आर्य-जनता से इस बात का विश्वास है कि वह इस नाजुक समय मे हैदराबाद के आर्य-भाइयों को निस्सहाय न रहने देगी और धन, जन से जो भी सहायता सम्भव हो सके उनको देने के लिए हर समय तैयार रहेगी।

सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान श्री० घनश्यामसिंह जी गुप्त आर्य-रक्षा-समिति के सहायक मन्त्री शिवचन्द्र जी गुप्त को साथ लेकर हैदराबाद की स्थिति को अपनी आँखों से अवलोकन करने के लिए वहाँ पहुँच गये हैं। उनकी उपस्थिति से आर्यवीरों को अवश्य ढाढ़स बँधेगा। श्री प्रधान जी का यह विचार है कि निज़ाम गवर्नमेन्ट के उच्चतम कर्मचारियों से मिलकर वे उन्हें यह स्पष्ट बतला दें कि आर्यसमाज अपने धार्मिक स्वत्वो की रक्षा करने के लिए हर प्रकार के बलिदान के लिए तैयार है। अच्छा होगा, यदि निज़ाम-सरकार आर्यसमाज को सम्मानपूर्वक जीने दे।

परन्तु यदि निज़ाम-गवर्नमेन्ट को आर्यसमाज की परीक्षा ही करनी अभीष्ट है तो उसके लिए आर्य जनता को तैयार रहना चाहिये। इसके निमित्त सार्वदेशिक सभा ने यह आयोजना तय्यार की है कि मध्यप्रान्त या महाराष्ट्र के किसी ऐसे स्थान पर, जो हैदराबाद के राज्य की सीमा पर हो, एक बृहद् आर्य-सम्मेलन अथवा कांग्रेस की जाय, जहाँ भारतवर्ष के सभी प्रान्तों के आर्यसमाजियों को बुलाकर उनके सम्मुख हैदराबाद-राज्य मे आर्यसमाज पर होते हुए अत्याचारों का नग्न स्वरूप पेश किया जाय और एक ऐसा ज़बरदस्त आन्दोलन खड़ा किया जाय जो आर्यसमाज के धार्मिक स्वत्वों को छीननेवालों के लिए हमेशा के लिए एक भारी शिक्षा का काम दे सके।

आर्य-कांग्रेस का स्थान तथा तिथि अभी तक निश्चित नहीं हुई है। इसके लिए म० शिवचन्द्रजी को विशेष रूप से भेजा गया है कि वह हैदराबाद

के आर्य-भाइयों से मिलकर उपयुक्त स्थान का निर्णय करें और उसके पश्चात् तिथि का निर्णय करके कांग्रेस की प्रारम्भिक तैयारी मे लग जायें। सार्वदेशिक सभा आर्य-जनताको कांग्रेस के सम्बन्ध में सर्व वृत्तान्त गश्ती चिट्ठियों तथा समाचार-पत्रों द्वारा पहुँचाती रहेगी। आर्य-जनता से हमारा केवल इतना निवेदन है कि वह समय आने पर कांग्रेस के स्थान की ओर धर्म-यात्रा करने के लिए तैयार रहें।

सार्वभौम उपदेशक महामंडल

कुछ दिन हुए श्री प० सुरेन्द्र जी शर्मा गौड़ त्रिशास्त्रतीर्थ के उद्योग से देहली नगर में 'सार्वभौम महामण्डल' तथा सार्वभौम धर्मार्थ महासभा' की नींव रखी गई। दीवान हाल के विशाल भवन में बाहर से आये हुए १०-५ उपदेशकों ने २-३ दिवस निरन्तर बैठकर बड़े-बड़े गम्भीर प्रश्नों पर गम्भीर दृष्टि से विचार करके इन दो भारी-भरकम नामवाली सभाओं की स्थापना करके जनता का जो उपकार किया है उसको आनेवाली नस्लें याद करेंगी। अभी तक हमारे देश में सार्वभौम संस्थाओं की स्थापना नहीं थी, यद्यपि संस्थाओं की कोई कमी नहीं थी। अब सार्वभौम संस्थाओं के उपस्थित हो जाने पर कोई यह न कह सकेगा कि हम लोग संकुचित दायरे में रहनेवाले हैं। सार्वभौम उपदेशक महामण्डल की स्थापना में एक युक्ति यह भी दी जाती है कि वर्तमान युग संगठन का युग है। जब धोबी, नाई, चमार, भंगी, ताँगेवाले और मोटरवाले सभी अपनी अपनी यूनीयन (संघ) बनाकर अपने-अपने स्वत्वों की रक्षा कर रहे हैं, तब क्या उपदेशक ही ऐसे गए-गुज़रे हैं, जो अपने हितों और स्वत्वों की रक्षा नहीं कर सकते। इसी गम्भीर विचार को लेकर हमारे १०५ उपदेशक महानुभावों ने कमर कसकर ऐसी विशाल सार्वभौम आयोजना को ३ दिन के निरन्तर परिश्रम से हमारे सम्मुख उपस्थित कर दिया है। ईश्वर करे इस आयोजना को सफलता प्राप्त हो, परन्तु क्या हम यह पूछने की धृष्टता कर सकते हैं कि उपदेशक महोदयों को धोबी, नाई, चमार, भंगी की सीमा पर उतरने की क्या आवश्यकता है? सच्चा उपदेशक तो वह है, जो अपने हितों को छोड़कर जनता के हितों की रक्षा के लिए उतारू होता है। वह आत्म-समर्पण के भाव को लेकर अपने आपको भूलकर दूसरों की सेवा में तल्लीन हो जाता है। ऐसे उपदेशकों के लिए जनसाधारण के समान लौकिक संघों की स्थापना करना क्या अर्थ रखता है?

स्वाध्याय योग्य उत्तम साहित्य

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी कृत

कतिपय ग्रन्थ

(१) मृत्यु और परलोक

शरीर, अन्त करण तथा जीव का स्वरूप और भेद, जीव और सृष्टि की उत्पत्ति का प्रकार, मृत्यु का स्वरूप तथा बाद की गति, मुक्ति और स्वर्ग, नर्क इत्यादि लोको का स्वरूप मुक्तिके साधन आदि आदि विषयो पर अद्भुत पुस्तक। मूल्य ।)

(२) योग रहस्य

इस पुस्तक मे योग के अनेक रहस्यो को उद्-घाटित करते हुए उन विधिया को भी बतलाया गया है जिससे कोई आदमी जिसे रुचि हो—योग के अभ्यासों को कर सकता है। मूल्य ।–)

(३) विद्यार्थी जीवन रहस्य

विद्यार्थियों के लिए उनके मार्ग का सच्चा पथ प्रदर्शक उनके जीवन के प्रत्येक पहलू पर श्रृङ्खलाबद्ध प्रकाश डालने वाले उपदेश । द्वितीय संस्करण ≡)

(४) उपनिषद् रहस्य

ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक माण्ड्यूक उपनिषदों की बहुत सुन्दर खोजपूर्ण और वैज्ञानिक व्याख्यायें मूल्य क्रमश =) =)॥ =)॥ =)॥ =)॥ –)॥

अन्य ग्रन्थ कर्त्ताओं का

स्वाध्याय योग्य बहुमूल्य साहित्य

(१) इज़हारे हक़ीकत ।।।=) सत्य-निर्णय १।)

(उर्दू) (हिन्दी)

श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य्य,

महात्मा गाधी ने आर्य्य समाज और ऋषि दयानन्द के मिशन और ग्रन्थों के सम्बन्ध में जो आक्षेप किए थे इस पुस्तक मे प्रामाणिक रीति से उनका खण्डन किया गया है। पुस्तक की अन्यान्य विशेषताओ मे से एक विशेषता यह है कि लेखक ने आलोचना करते हुए उस मान और लोक-प्रियता का पूरा ध्यान रक्खा है जिसके महात्मा जी अधिकारी हैं। पुस्तक मे कोई भी स्थल ऐसा नहीं है जिससे महात्मा जी के प्रति अवज्ञा का आभास होता हो। पुस्तक स्थिर साहित्य मे स्थान पाने योग्य है।

(२) धर्म और उसकी आवश्यकता ।=)

लेखक श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य

इस पुस्तक मे धर्म का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। नई रोशनी के उन नव युवक और नवयुवतियों के हाथमे रखे जाने योग्य

है जो धर्म और ईश्वर म न केवल विश्वास ही नहीं रखते वल्कि उनका मखौल भी उडाते हैं। मूल्य।-)

(3 आर्य्य पर्व्व पद्धति

आर्य्य जगत मे एक स ही त्यौहार मनाने तथा त्यौहारो के सम्बन्ध म पूर्ण ज्ञान प्राप्त करा देने के लिये इस पुस्तक की रचना की गइ है। इस का प्रत्येक आर्य परिवार मे रखना आवश्यक है। संशोधित सस्करण ॥-)

४) कर्त्तव्य दर्पण

आर्यो का नित्य कर्म विधि इत्यादि की यह बहुत उत्तम पुस्तक है। आर्य्यसमाज सम्बन्धी आवश्यक ज्ञातव्य बात भी इसमे दी गई है। मूल्य ≈)॥

(५) कथामाला

इस पुस्तक मे स्वामी जी महाराज की वक्तृता पूर्ण और अत्यन्त उपयोगी कथाओं का सग्रह किया गया है। आर्य्य नर नारी मात्र के स्वाध्याय के योग्य है। मूल्य।≈)

६। आर्य्य जीवन और गृहस्थाश्रम

लेखक—प० रघुनाथप्रसाद पाठक

आर्य्य जीवन किस प्रकार बनाया जाता है और गृहस्थ किस प्रकार श्रेष्ठ बनाए जा सकते है इन सब बातों का इस पुस्तक म वर्णन किया गया है। पुस्तक मुख्यतया श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के प्रवचनो और व्याख्यानो के आधार पर लिखी गई है। मूल्य।≈

(७) आर्य्यवर्त की वाणी

अनुवादक प० रघुनाथ प्रसाद पाठक

यह पुस्तक श्रीयुत साधु टी० एल० वास्वानी की वायस आफ आर्य्यवर्त का हिन्दी अनुवाद है। इसमे ऋषि दयानन्द का जीवन सक्षेप मे बहुत ओजस्वनी भाषा मे प्रस्तुत किया गया है। अन्य भी बहुत सी नवयुवकोपयोगी सामग्री इस पुस्तक में प्रस्तुत की गई है। मूल्य ≈

(8) Ecclesia Divina

W ll - b i i b l

S ia t u M A -

(9) Fountain Head of Religion

By Pt (u _ i l l M i

( )

Well l i n i 1 l

l n b m l • 1

(१०) अमृत वर्षा ।॥)

लेखक म० नारायण स्वामी जी

(११) गृहस्थ जीवन रहस्य

सजिल्द १)

(१२) आत्म दर्शन १

(१३ वेद तत्त्व प्रकाश सजिल्द

स० श्री सुखदेव विद्यावाचस्पति २)

मिलने का पता —

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा, श्रद्धानन्द बाजार, देहली

कमीशन रेट्स

पुस्तकालय सार्वदेशिक सभा।

अन्य ग्रन्थ कर्ताओं की पुस्तकों को छोड़ कर शेष सभा तथा सभा द्वारा प्रकाशित [illegible] महात्मा नारायण स्वामी जी की पुस्तकों के [illegible] मूल्य पर पुस्तक विक्रेताओं को निम्न प्रकार कमीशन दिया जायगा।

५ से [illegible]) तक	[illegible]) प्रति सैकड़ा
[illegible]) से ५ [illegible]) तक	[illegible]०) प्रति सैकड़ा
५[illegible] से [illegible]०) तक	[illegible]५ प्रति सैकड़ा

नोट—( ) संस्कृत में ग्रन्थ प्रकाश तथा ( ) दयानन्द ग्रन्थ माला पर कुछ कमीशन नहीं दिया जायगा

—— ✻ ——

सार्वदेशिक में विज्ञापन छपाई

के

रेट्स

स्थान	मासिक	[illegible] मासका	६ मासका	वर्ष का
पूरा पृष्ठ	[illegible]	२[illegible]	४०)	७५
एक कालम	[illegible]	१५)	२५)	४०
आधा ,,	३॥	८)	१५	२५
चौथाई	२)	[illegible]	८)	[illegible]

उजरत का धन नियमानुसार पेशगी आना चाहिए।

आर्य समाज के नियमोपनियम — १) प्रति सैकड़ा, [illegible] प्रति

मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली

केन्द्रीय अनाथालय, रावी रोड, लाहौर की आवश्यकताएँ

(ले० श्री ला० बोमाराम, रिटायर्ड स्टोर कीपर, N W R)
(मन्त्री केन्द्रीय अनाथालय)

(१) इस समय इस अनाथालय में १०? बालक बालिकाएं हैं जिनका न केवल पालन पोषण किया जाता है बल्कि उनको धार्मिक तथा सामाजिक शिक्षा देकर अच्छा नागरिक बनाया जाता है। उनके लिए वस्त्रों की आवश्यकता है। दानी सज्जन जहां अपने बालकों के लिये वस्त्र बनवाएं वहां इन बालकों का भी अवश्य ध्यान रखें।

(२) वस्त्रों के अतिरिक्त भोजन के लिये सर्व प्रकार के खाद्यपदार्थ घृतादि की आवश्यकता है। दानी सज्जन घृतादि भेजें अथवा उसके लिये दान देकर कृतार्थ करें।

(३) अनाथालय का व्यय (१५००) रु० मासिक है। वह दानी महाशयों की कृपा से पूरा होगा इस लिये प्रत्येक नर नारी दान देकर इस व्यय को पूरा करें।

(४) बालकों के रहने के लिये स्थान पर्य्याप्त है परन्तु रोगी गृह कोई नहीं है इन में से किसी न किसी का किसी समय रोगी होना स्वाभाविक है अत यदि कोई दानी कमरा बनवाना चाहे तो वह बनवाने की कृपा करें ताकि वह कमी दूर हो जावे।

(५) इस अनाथालय के प्रबन्ध के विषय में यह लिखना पर्याप्त होगा कि सरकार ने जो भगाए गए बालक पकड़े थे और जिनके सम्बन्धियों का पता नहीं लगा वे सब बालक इसी अनाथालय में रखे हैं वा जो अन्य असहाय बालक सरकार के पास आते हैं वे भी इस अनाथालय में भेजे जाते हैं। यह अनाथालय सरकार की तरफ से Registered भी है इसके हिसाब किताब बराबर रखे और Audit किए जाते हैं।

(६) अनाथालय के बालक कभी बाहर मांगने के लिए नहीं भेजे जाते हैं। उनके पढ़ाने के लिये टैकनीकल स्कूल भी है जो सरकार से स्वीकृत है। इसमें बाहर के बालक भी मुफ्त पढ़ाये जाते हैं।

(७) इसके अधिकारी इस समय निम्न सज्जन हैं —

प्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

उप प्रधान श्री प० विश्वम्भरनाथ जी, उप प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

,, श्री प० ठाकुरदत्त शास्त्री मुलतानी, लाहौर

,, श्री डाक्टर गणेशीलाल जी M B, B S

कोषाध्यक्ष लाला विज्ञानशील जी B A, लाहौर।

अन्त में नम्र निवेदन है कि प्रत्येक धर्मप्रेमी सज्जन अपनी शक्त्यनुसार कुछ न कुछ दान देकर सभा का हाथ बटावें और पुण्य के भागी बनें। जो धन इस अनाथालय में आता है उस की रसीद तत्काल भेजी जाती है।

बिना मूल्य उपहार-शीघ्र मँगाइये

सजाने योग्य उपदेश पूर्णधामिक वाक्यो के चित्र ओ३म्, नमस्ते स्वागतम् वन्देमातरम्, गायत्रीमन्त्र विश्वानिदेव, अहिंसापरमोधर्म. त्वमेवमाता नमः शम्भवायच धृतिक्षमा, सहनाववतु, नैनछिन्दन्ति शस्त्राणि आदि चित्र निम्न पुस्तकों के प्रत्येक २ (दो रुपयों) के आर्डर पर उपरोक्त १२ प्रकार के १२-१२ चित्र बिना मूल्य मे मगाइये ।

वेदतत्वप्रकाश

यह ग्रन्थ महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का विस्तृत भाषा भाष्य और टीका टिप्पणियों सहित संशोधित संस्करण है । अजमेर के अनुवादों मे जहां जहां त्रुटियां एवं सिद्धान्त विरुद्ध भाषा है उन सब स्थलों को अविकृत संस्कृत के अनुकूल भाषा शुद्धकरदी गई हैं जगह २ फुटनोटों में टिप्पणियां देकर विषय को स्पष्ट कर दिया गया है । वैदिक सिद्धान्त सम्बन्धी ६० विषयों के निबन्धों का अविकृत इस पुस्तक का प्रत्येक वैदिक मतानुयायी को नित्य स्वाध्याय करना चाहिये । ५५० पृष्ठोंके सजिल्दग्रन्थ का मूल्य मात्र २) (दो रुपया) है ।

श्री मद्दयानन्दप्रकाश

(बड़े अक्षर, बड़ा साइज, सचित्र मूल्य में कमी)

यह स्वामी सत्यानन्दकृत ऋषिदयानन्द का जीवन-चरित्र है । स्वामी सत्यानन्द की कलम में उनकी वाणी की तरह जो रस है वह वाणी से बयान करने योग्य नहीं । वह तो सुनने और पढ़ने योग्य है । यह मोटे टाइप मे, बड़े साइज तथा ऋषि दयानन्द के अनेक चित्रों से युक्त सर्व साधारण के पढ़ने व कथा करने योग्य संस्करण है । मूल्य ३।।) से २।।=) लागत मात्र कर दिये हैं ।

सत्यार्थप्रकाश

(उपयोगी बढ़िया संस्करण, पृष्ठ संख्या ८४७)

सत्यार्थप्रकाश सस्ते अवश्य छपे मगर उनकी सुन्दरता व उपयोगिता घटा दी गई है । इस संस्करण मे कई विशेषताएं हैं । टाइप, छपाई सफ़ाई, कागज़ सब अच्छे प्रत्येक विषय व प्रश्नोत्तर सब का पैराग्राफ़ अलग २ प्रत्येक पृष्ठ पर विषय शीर्षक सत्यार्थ प्रकाश के शङ्कास्पद स्थलो पर अन्त मे टिप्पणियां, विषय एवं प्रमाणो की अकारादि क्रम से सूचियों पृष्ठ संख्या ८४७ मूल्य ।।=) बढ़िया कागज़ १) राज संस्करण १।) मात्र ।

सत्यार्थ प्रकाश बङ्गाली में	१)
श्री देवेन्द्रनाथ मुकुर जी कृत	
दयानन्द चरित बङ्गली में	१।)
दयानन्द चरित हिंदी में	१।।)
आदर्श सुधारक दयानन्द	।)
आर्यपथिक लेखराम	१।)
वीर सन्यासी श्रद्धानन्द	१=)
विधवा विवाह मीमांसा	१।।)
वैदिक सि० व्याख्यान माला	१।।)
आर्य चित्रावली	=)
चित्रमय दयानन्द	१)
आर्य ग्रन्थमाला	१)
दूसरा भाग	१)
हम वीर बच्चा की कहानियॉ	।।।)
तर्क इस्लाम ।), पादरी साहब =।।	
शारदाबिल ।) पुराण परीक्षा	।)
पारालिफ पोल प्रकाश दो भाग	१)
आर्यसमाज किस ओर ?	१)
वेद और संसार के मत	=)
चार धर्मों की तुलना	=)
प्राणायामविधि	-)।।
गोकरुणानिधि	)।।
पञ्चमहायज्ञ विधि	-)।।
वैदिक सत्सङ्ग १५ बार छपी	-)।।
ऐतिहासिक भजनावली	।-)
१६ संस्कार सङ्गीत	।)
अङ्ग्रेजी शिक्षा से हानि	)।।
मांस भक्षण से हानि	)।।
तम्बाकू से हानि	)।।
चाय से हानि	)।।

पता —

गोविन्दराम हासानन्द अध्यक्ष—वैदिक पुस्तकालय, नई सड़क, देहली ।

प० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिए 'चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस' देहली मे मुद्रित

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों के प्रचारार्थ बहु संख्या में ये ग्रन्थ एकत्र किये गये हैं और निश्चय किया गया है कि पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन भी कुछ अधिक दिया जावे। छोटे बड़े सभी ग्रन्थ अच्छे कागज पर बड़े आकार में हैं। उनका मूल्य सहित विवरण इस प्रकार है। इनके मँगाने के लिये शीघ्र आर्डर भेजने चाहियें —

	असली मू०	घटाहुआ मू०
(१) दयानन्द ग्रन्थमाला दो जिल्दों में	५)	२॥)
(२) ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका बढ़िया	१॥)	१।)
(३) आर्याभिविनय	।–)	।)
(४) महर्षि का संक्षिप्त जीवन चरित्र मय रंगीन चित्रों के	।)	=)
(५) वेद विरुद्ध मत खण्डनम्	=)॥	=)
(६) गो करुणानिधि	=)	–)॥
(७) शिक्षापत्री	=)	–)॥
(८) भ्रान्ति निवारणम्	=)	–)॥
(९) सत्यधर्म विचार	–)॥	–)
(१०) काशी शास्त्रार्थ	–)	)॥
(११) भ्रमोच्छेदन	–)	)॥
(१२) आर्योद्देश्य रत्न माला	)॥	)॥
(१३) स्वीकार पत्रम्	)॥	)॥

सार्वदेशिक सभा के पुस्तकालय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

(१) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश—

यह महर्षि दयानन्द कृत हिन्दी सत्यार्थप्रकाश का संस्कृतानुवाद है। अनुवादक गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) के संस्कृत विभाग के मुख्याध्यापक श्री पण्डित शङ्करदेव पाठक हैं। अनुवाद की भाषा मधुर एवं सरल है। महर्षि का आशय ज्यों का त्यों प्रगट किया गया है। मूल्य २।) सजिल्द २॥)

मूल्य प्रचारार्थ ।)

(२) प्राणायाम विधि—

यह पुस्तक जिसमें प्राणायाम सम्बन्धी कठिन से कठिन विधियों को सुगम बनाया गया है श्री पूज्यपाद १०८ श्री नारायण स्वामी जी महाराज द्वारा लिखी गई है। प्राणायाम के प्रेमियों की एक बड़ी खोज तथा आवश्यकता इसके द्वारा पूरी हो सकती है। मूल्य –) घटा हुआ मूल्य)॥

(३) दयानन्द लहरी—

इसमें भगवान दयानन्द का स्तवन शिखरणी आदि सुन्दर छन्दों में किया गया है। प्रत्येक छन्द के साथ भाषानुवाद भी दिया गया है। पुस्तक के लेखक श्री पं० मेधाव्रत जी कविरत्न हैं। मूल्य –)॥, घटा हुआ मूल्य –)

(४) दश नियम व्याख्याः—

श्री पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति द्वारा यह "दश नियम व्याख्या" नाम की पुस्तक लिखी गई है । इसमें आर्यसमाज के दश नियमों की विस्तृत तथा गवेषणापूर्ण व्याख्या की गई है । मूल्य ।), घटा हुआ मूल्य ≡)

(५) ओम्प्रत्ययः—

यह पुस्तक श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति की लेखनी से लिखी गई है । ओ३म् परमात्मा की विस्तृत व्याख्या विद्यमान है । मूल्य ॥।), घटा हुआ मूल्य ।≈)

(६) वैदिक सिद्धान्तः—

यह पुस्तक भिन्न भिन्न वैदिक सिद्धान्तों पर आर्य्य विद्वानों द्वारा लिखित निबन्धों का अत्युत्तम संग्रह है । मूल्य १।) सजिल्द १॥), घटा हुआ मूल्य ।॥) सजिल्द १)

(७) वैदिक विवाहादर्शः—

इस पुस्तक में वैदिक विवाह का आदर्श प्रस्तुत किया गया है और विवाह सम्बन्धी लगभग सभी आवश्यक बातों पर प्रकाश डाला गया है । मुख्यतया पश्चिमी थ्योरियों के विवेचन पूर्वक विवाह सम्बन्धी वैदिक आदर्शों और शिक्षाओं की श्रेष्ठता प्रतिपादित की गई है । मूल्य १।), घटा हुआ १)

(८) विदेशों में आर्य समाज का इतिहासः—

जिस पुस्तक को छपाने की मथुरा शताब्दी पर घोषणा की गई थी और जिसके पढ़ने के लिये पिछले आठ वर्षों से देश और विदेशों के आर्य्य-नर नारी बेचैन हो रहे थे वह सार्वदेशिक सभा की ओर से तैयार हो कर छप गई है । पुस्तक में आर्य्य प्रचारकों तथा विदेश की आर्य्य-संस्था आदिकों के लग-भग ११ चित्र हैं । पुस्तक पढ़ने योग्य है । छपाई, सफ़ाई, कागज आकार प्रकार बढ़िया । मूल्य ॥), घटा हुआ ।≈)

(९) यमपितृ परिचय—लेखक श्री पं० प्रियरत्न जी 'आर्ष' मूल्य २), घटा हुआ १)

इस पुस्तक में 'यम और पितृ' प्रकरण वाले वेद मन्त्रों की विद्वत्ता पूर्ण व्याख्या की गई है । स्वाध्याय शील सज्जनों के पढ़ने और सग्रह करने योग्य अनुपम ग्रन्थ है ।

(१०) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर—सम्पादक—श्री कृष्णचन्द्र जी विरमानी, मूल्य १।)

पुस्तक की विशेषता यह है कि भिन्न भिन्न महत्व पूर्ण विषयों पर स्वामी जी महाराज की भिन्न भिन्न पुस्तकों व पत्र व्यवहार तक में वर्णित मत को एक जगह संग्रह किया गया है । यह पुस्तक सम्पादक के लगभग ११ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल है । जिस किसी विषय में भी ऋषि दयानन्द की सम्मति जानना चाहो वही प्रकरण इस पुस्तक में देखोगे । पुस्तक बहुत उपयोगी है ।

(११) आर्य्य सिद्धान्त विमर्श— प्रथम आर्य्य विद्वत् सम्मेलन के निबन्धों का संग्रह। कतिपय आर्य्य विद्वानों ने गम्भीर विषयों पर अपनी लेखनी द्वारा प्रकाश डाला है। स्वाध्याय शील व्यक्तियों के लिए यह पुस्तक अमूल्य ग्रन्थ का काम देगी। पृष्ठ संख्या लग भग ५०० मूल्य १

(१२) भजन-भास्कर— (दूसरा संस्करण) यह पुस्तक भाव, भाषा, संगीत, छन्द वैदिक सिद्धान्त शिक्षण इत्यादि की दृष्टि से उत्तम भजनो और कविताओं का संग्रह है। इसमें देश के और आर्य समाज के प्रसिद्ध २ सगीतज्ञो कवियो और भजनोपदेशकों की उत्कृष्ट रचनाएँ हैं इसमे देश, धर्म, ईश्वर, समाजसुधार, बाल-शिक्षण शुद्धि, ऋषि-महिमा, आर्य्यसमाज महिमा इत्यादि अनेकानेक धार्मिक, सामाजिक और जातीय विषयों पर भजन मौजूद हैं सग्रहकर्त्ता श्री प० हरिशकर शर्मा कविरत्न (भूत पूर्व सम्पादक आर्य मित्र) हैं। आर्य्यसमाज मे तुकबन्दों की बढ़ती हुई तुकबन्दी को निरुत्साहित करने तथा आर्य्यसमाजों और परिवार मे श्रेष्ठ सगीत को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ही मथुरा की दयानन्द शताब्दी महोत्सव के अवसर पर यह सग्रह तैयार कराया गया था। अब जनता की बढ़ती हुई माग को पूरा करने के उद्देश्य से ही इस सग्रह का दूसरा संस्करण बढ़िया आकार प्रकार इत्यादि मे छपाया गया है। मूल्य ॥)

(१३) सत्यार्थ प्रकाश— (सस्ता संस्करण)—महर्षि दयानन्द सरस्वती की अमर कृति। २० × ३० सोलह पेजी साइज के ८०० से अधिक पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल ।)॥ प्रान्त १०० प्रति या इससे अधिक लेने पर ।) (चार आना) प्रति।

	अ० मू०	घ० मू०		अ० मू०	घ० मू०
(१४) वेद में असित शब्द	–)।	–)	(१६) विरजानन्द विजय	।)	=)
२५ प्रति का	१।)	१।)	(१७) हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद बद्दू	।)	=
(१५) वैदिक सूर्य विज्ञान	=)	=)			

18 Agnihotra—

By Dr Satya Prakash D Sc Lecturer in Chemistry [illegible]
Well Bound Price R 2 [illegible]

The Author has described in details the process of Agnihotra [illegible] during the process of this fumigation such products are given out which are [illegible] vermifugal and this ancient practice of the Aryans is very healthy [illegible] productive of physical and spiritual results

The writer is a **Doctor of Science** He has brought to bear upon the subject [illegible] the scientific lore that he has acquired at the University and environments

Gan [illegible]

"As the book deals with the ancient practice in a systematic manner, I believe, it will be found interesting and useful to readers in the East and in the West, and hence I have a great pleasure in recommending it to the public"

—*N. R. Dhar*

19 **Crucifixion by an eye witness—**
This valuable book contains a detailed account of the crucifixion of Jesus Christ, given by one who witnessed it with his own eyes—price As 6, Reduced price As 5

20 **Truth and Vedas—**
It is an excellent exposition and translation of 'Vibhrat.'—price As 8 Reduced price A 6

21 **Truth Bed Rocks of Aryan culture—**
The Subject dealt with in this book is the ideal of truth stating candidly by means of Vedic Mantras and fine stories to what extent the Aryan race has lived to this ideal—price As 10 Reduced price As 8

22 **Torch Bearer—**
A biographical sketch of Swami Dayanand—price Rs. 1/8/- Reduced price Re 1/-

23 **Vedic Teachings—**
This book contains the most authentic replies to the objections raised about the Vedas by Dr Bhandarkar The learned author has besides, brought forth the superiority, the Vedic Teachings contain—price Rs, 1/12/ Reduced price Rs 1/4/-

24 **Voice of Aryavarta—**
This little book comes from the pen of Mr T L Vaswani and contains most lucid reflections on Rishi Dayanand and his life and teaching—price As 8. Reduced price As 2

25 **The daily Prayer of an Arya—**
This booklet contains an ethical exposition in the light of Modern Thought of our daily Sandhya—price As 4, bound and As 3/- unbound

26 **The Light of the Vedas—**
It contains lucid translation of 500 Vedic Mantras A book worth presenting to people of alien faiths price Rs 1/4/-

27 **Commentary on Ishopanishat—**
Translated by the late Pt Ghasi Ram M A L L B—price As. 4.

पुस्तक मिलने का पता:—

कार्यालय—सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा,

श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष १२	श्रावण १९९५ अगस्त १९३८ ई०] [दयानन्दाब्द ११४	अङ्क ६

* वेद की शिक्षाएँ *

यत्र सोमः सदमित् तत्र भद्रम् । अथर्व० ७-१८-२

जहाँ परमेश्वर की ज्योति है वहाँ सदा कल्याण ही है ।

Peace and Prosperity reign over there where God—our Lord shed His Light and Love

महे चन त्वामद्रिवः परा शुल्काय देयाम् । ऋग० ८-१-५

हे ईश्वर ! मैं तुझे किसी क़ीमत पर भी न छोड़ूँ ।

May we ever stick to Thee O Lord ! and never desert Thee at any cost !

अध्यात्म धारा

क्षमा धर्म

दैनिक जीवन में व्यवहार योग्य श्रेष्ठ बातें

—※—

मनुष्य का स्वभाव भूल करने का है। मनुष्य में मानवी और दैवी—दोनों ही प्रकार के गुण होते हैं। यह होते हुए भी उसका मार्ग भूलों और ठोकरों में से होकर गुजरता है। संसार में कोई भी व्यक्ति पूर्ण नहीं है।

संसार के बड़े-से-बड़े और पूज्य मनुष्य भी त्रुटियों से खाली नहीं होते हैं। कहावत है कि 'हाथी का पैर भी फिसलता है।' पूर्ण पुरुष तो केवल एक परमात्मा है।

हम सब गलतियाँ करते हैं, परन्तु सचमुच बड़ा वही होता है जो अपनी गलतियों को स्वीकार करता और दूसरों के प्रति विनम्र होता है। हम आत्म-प्रवंचना के वशीभूत हो दूसरों की गलतियों को क्षमा नहीं करते हैं। हम भूल जाते हैं कि यदि हम भी उन्हीं अवस्थाओं में ग्रस्त होते तो हम भी वैसी ही ग़लती करते।

मनुष्य कभी-कभी अज्ञान-वश ग़लती करते हैं। उन्हें पता नहीं होता कि क्या सही है और क्या ग़लत है? निष्पक्ष भाव से देखने से उनके कार्य अनैतिक की अपेक्षा नैतिकता-शून्य होते हैं। वे पागलों और मूर्खों की श्रेणी के व्यक्ति होते हैं; परन्तु बुद्धिमान लोग सही और ग़लत बात को जानते होते हैं। नैतिक दृष्टि से वे सचेत होते हैं, इसलिए वे अपने कार्यों के लिए जिम्मेवार होते हैं; क्योंकि पसन्दगी या ना-पसन्दगी की उन्हें आज़ादी होती है।

परन्तु कभी-कभी अवाञ्छनीय पुराने अभ्यास या आदत के कारण मनुष्य फिसल जाता है। उसका हृदय उसे रोकता है, परन्तु शरीर नहीं मानता है। आदतों की ताकत का मुक़ाबला बड़ा कठिन होता है। पवित्र उद्देश्यों और इरादों के होते हुए भी वह मनुष्य हवा के झोंके के सामने तिनके के समान होता है।

इस सब पर विचार करते हुए हमें दूसरों के प्रति धैर्यवान् होना चाहिये। गिरा देना आसान है, परन्तु खड़ा करना बड़ा कठिन है। हमारे जीवन का नियम क्षमा करना ही होना चाहिये; क्योंकि ग़लती करना मानवी तथा क्षमा करना दैवी होता है। क्षमा के आचरण से संसार अच्छा और सुखी बनेगा और असहिष्णुता और अधैर्य कम होगा।

महर्षि दयानन्द की जीवनी को पढ़ने पर उनके जीवन में क्षमाशीलता के अनेक उत्तम उदाहरण मिलते हैं। अपने हत्यारे को क्षमा कर देना क्या ऋषि के जीवन में कम दिव्य बात थी? इसी प्रकार संसार के अन्य महापुरुषों में

हम इस गुण को मूर्तिमान देखते हैं। बाइबिल में एक स्त्री की कहानी है। व्यभिचार के दोष में वह पकड़ी जाकर दण्ड के लिए ईसा के सामने प्रस्तुत की गयी। ईसा ने अपने असीम प्रेम और दयाभाव से उसे क्षमा कर दिया और आगे से ग़लती न करने का प्रायश्चित का वचन लेकर उसे मुक्त कर दिया। जो लोग उसे पत्थरों से मार डालना चाहते थे, उन्हें ईसा ने कहा, "जिस व्यक्ति ने कोई ग़लती न की हो वह पहले इस स्त्री को पत्थर मारे।" इसपर वे सब बगलें झांकने लग गए और कोई भी पत्थर मारने के लिए तैयार न हुआ।

गिराने अथवा मिटाने से काम नहीं बनता है। यह तो हानि करके अपमान करने जैसी बात है। यह अपराधी और आरोपी दोनों को ही गिरानेवाली होती है। भूल करनेवालों को गिराने या मिटाने की अपेक्षा सहानुभूति और सदुपदेश से ऊँचा उठाना चाहिये।

क्षमाशीलता एक बहुमूल्य गुण है, जिसका आचरण हमें प्रति दिन के व्यवहार में करना चाहिये। यदि हम दूसरों को क्षमा करना नहीं जानते हैं तो हम कैसे अपनी भूलों के लिए दूसरों से क्षमा की आशा कर सकते हैं?

क्षमा न करने की प्रवृत्ति घृणा से पैदा होती है और घृणा एक प्रकार का जहर होता है, जो घृणा करनेवाले को उस व्यक्ति से ज्यादा हानि पहुँचाता है, जिसके प्रति घृणा की जाती है। प्रेम और घृणा दोनों लौटकर उसी आदमी के पास पहुँच जाते हैं जिससे ये प्रवाहित होते हैं। यह एक मनोवैज्ञानिक नियम है।

यदि हम प्रेम करेंगे तो बदले में हमें प्रेम मिलेगा। यदि हम घृणा और द्वेष से भरे हुए हैं तो जिस किसीके सम्पर्क में हम आयेंगे वही हम से घृणा करेगा। महामुनि पतञ्जलि का कथन है, "जीवन में अहिंसा धारण कर लेने पर मनुष्य के शत्रु नष्ट हो जाते हैं।"

जितना ही हम जीवन में क्षमाशीलता और प्रेम धारण करेंगे उतने ही हम अहिंसक और दिव्य बनेंगे।

यदि आदमी हमसे द्वेष करते हैं तो कोई वजह नहीं हम भी उनसे द्वेष करने लग जायँ। बदला या प्रतिशोध तो जाहिलों और बर्बरों की चीज होती है—सभ्यों की नहीं। सभ्यता का तक़ाज़ा यही है कि मनुष्य ऊंचे आध्यात्मिक नियमों और धर्मों का आचरण करे। इसीलिए कहा गया है—प्रेम और क्षमा से घृणा को और सज्जनता से दुष्टता को जीतो।

एक बार एक महात्मा एक नदी के किनारे जा रहे थे। उन्होंने नदी की धारा में एक बिच्छू को बहते हुए देखा। उन्हें उसकी दशापर दया आयी और उसे पानी में से निकाल लिया। बिच्छू ने महात्मा को काटा। इस प्रकार महात्माने तीन बार उसे बचाने की कोशिश की और तीनों ही बार बिच्छू ने उन्हें काटा और पानी में चला गया। अन्त में तंग आकर महात्मा ने उस दुष्ट बिच्छू को उसके भाग्य पर छोड़ देने का इरादा किया। ज्योंही उन्होंने यह इरादा किया त्योंही उनके हृदय

में प्रेरणा हुई, "बिच्छू का स्वभाव काटना है। तुम्हारा कर्तव्य उसे प्रेम तथा क्षमा करना ही है।"

प्रेम और क्षमाशीलता साधु, महात्माओं और विद्वानो के मुख्य गुण होते हैं। भक्ति की एक पुस्तक मे एक बडी उत्तम शिक्षा आती है। हम सबको उस शिक्षा को अपने दैनिक व्यवहार मे चरितार्थ करना चाहिये। शिक्षा यह है कि मनुष्य को घास के डण्ठल के समान नम्र और वृक्ष के समान धैर्यवान् और क्षमाशील होना चाहिये। जो आदमी हमारे मान और सेवा के पात्र हैं उनका हमें मान करना चाहिये और इस बात का ढिंढोरा नहीं पीटना चाहिये। परमात्मा की सेवा और उसे प्रसन्न करने का यही सर्वोत्तम मार्ग है। यह शिक्षा नम्रता, धैर्य, क्षमा और निष्काम सेवा की मनुष्य से माँग करती है। यदि हम इस शिक्षा पर आचरण करें तो हम से पवित्रता बढ़ सकती है।

प्रश्न होसकता है कि न्याय और दण्ड का क्षमा के सामने क्या अर्थ रहता है। न्याय और दण्ड का स्थान है, परन्तु वह क्षमा के स्थान से बिलकुल अलग है। न्याय, दण्ड और क्षमा का निर्णय अपराध के अनुसार भिन्न-भिन्न रूपों मे होता है। उनके लिए एक जैसा नियम नहीं होता है और न हो सकता है।

HIGH THOUGHTS

(उच्च विचार)

ACTION (कर्म)

Heaven never helps the man who will not act

अकर्मण्य व्यक्ति की परमात्मा कभी मदद नही करता है।

❀ ❀ ❀

Action may not always bring happiness but there is no happiness without Action

यह निश्चित नहीं कि कर्म से सदैव सुख की प्राप्ति हो, परन्तु कर्म के बिना सुख कभी नहीं मिलता, यह निश्चित है।

❀ ❀ ❀

Our grand business is not to see what lies dimly at a distance but to do what lies clearly at hand

हमारा बडा कार्य्य यह देखना नही है कि फासले पर क्या धुधली चीज पड़ी हुई है बरन् जो साफ तौर पर हमारे पास पडी हुई है, उसका करना हमारा बडा कार्य है।

❀ ❀ ❀

Only actions give to life its strength as only moderation gives it its charm

केवल कर्म ही जीवन को उसका बल प्रदान करते है, जैसे केवल सयम उसे उसका सौन्दर्य प्रदान करता है।

❀ ❀ ❀

Every noble activity makes room for itself

प्रत्येक उच्च कार्य अपने लिए स्थान बना लेता है।

❀ ❀ ❀

The actions of men are like the index of a book, they point out what is most remarkable in them

मनुष्यों के कर्म, पुस्तक की विषय-सूची के समान होते हैं। वे बतलाते है कि मनुष्यो मे सबसे मुख्य चीज क्या है।

❀ ❀ ❀

Happiness is in action and every power is intended for action Human happiness, therefore, can only be complete as all the powers have their full and legitimate play

कर्म मे ही प्रसन्नता होती है और प्रत्येक शक्ति कर्म के लिए ही होती है। मनुष्य का सुख केवल तभी पूरा हो सकता है जब उसकी तमाम शक्तियों को कार्य करने का पूरा पूरा और उचित अवसर मिले।

❀ ❀ ❀

वैदिक वर्णव्यवस्था और साम्यवाद

[ले० श्री अवध बिहारीलाल एम० ए०]

*

योरोप की देखादेखी भारत में साम्यवाद के प्रचार करने की कोशिश की जा रही है और लोग लाठी के हाथ सब को एक सतह में लाने की सोच रहे हैं। इसी विचार से वैदिक वर्ण-व्यवस्था को मिटाने की सोची जा रही है और चोटी-जनेऊ आदि चिह्नों को भी असमानता के द्योतक समझकर हटाने की धुन में बहुतेरे नौनिहाल लगे हैं। अब विचारणीय यह है कि जैसी समानता लाने का विचार किया जा रहा है वह त्रिकाल मे भी कभी सम्भव है या नहीं। एक मनुष्य अध्यवसायशील और परमपुरुषार्थी है वह परिश्रम करके अत्यधिक धन पैदा करेगा ही; दूसरा निकम्मा-आलसी अवश्य निर्धन रहेगा। यह परमात्मा का अटल विधान है। एक मनुष्य संयम-व्यायाम आदि करेगा तो अपने शरीर को अवश्य बलवान् कर लेगा, दूसरा कुसंयमी-व्यभिचारी होगा तो रोगी और दुर्बल अवश्य होगा। इन दोनों को बराबर करने की क्षमता किसमें है ? एक मनुष्य परिश्रमशीलता से विद्योपार्जन करेगा विद्वान् बन ही जायगा। पुरुषार्थहीन अतएव विद्याविरहित मनुष्य उसको विद्या-प्राप्ति से रोक अपने समान मूर्ख बनाकर समानता स्थापित कैसे कर सकेगा, यह बात समझ सकना कठिन है। प्रत्येक कर्म का फल होता ही है—कर्म-फल यथायोग्य देना ही परमात्मा की न्यायकारिता है और इस विधि-विधान में कर्मशीलता और अकर्मण्यता के कारण धनी, निर्धन, सबल, दुर्बल, विद्वान्, मूर्ख आदि का होना नितान्त अनिवार्य है। ऐसे सब प्रकार के लोगों को अपनी योग्यता के अनुसार श्रेणियों में विभक्त करना ही वर्णव्यवस्था है और यह स्वाभाविक और सृष्टि-नियम के सर्वथा अनुकूल है, और यदि किसी चिह्न विशेष से हम उनको आसानी से पहचान सकें तो ऐसे चिह्न बुरे किंवा निरर्थक नहीं है।

हाँ, यदि इस प्रकार की व्यवस्था प्रचलित हो जाय कि पुरुषार्थ और कर्म सिद्धान्त का कुछ भी विचार न किया जाय, बल्कि ऐसा नियम हो कि विद्वान् का लड़का ही पढ़ने का अधिकारी हो, मूर्ख का नहीं; धनी का पुत्र ही धन कमा सके, निर्धन के पुत्र को धन प्राप्त करने का हक हासिल न हो, और कोई मनुष्य अपने नाम ही के कारण धन, बल विद्या आदि की प्राप्ति से वञ्चित समझा जाय, तो वह समाज जिसमें ये बुराइयाँ हो सर्वथा अन्यायी समझा जायगा। मूर्ख के पुरुषार्थी लड़के के लिए विद्या का द्वार बन्द होने से और विद्वान् के लड़के के पुरुषार्थहीन होकर मूर्ख हो जाने से समाज में मूर्खों की भरमार हो जायगी। उसी प्रकार समाज में निर्बल और निर्धन भरकर समाज का सत्यानाश कर देंगे। उसी प्रकार यदि विद्वान् और धनी ही समाज में बड़े समझे जायें

और लोग छोटे समझे जाकर मानवता के साधारण अधिकार से वञ्चितकर घृणा या उपेक्षा से देखे जायँ, यदि बलवान् कमज़ोरों को मारकर खा जाने की सोचें और उसमें कृतकार्य हो सकें तो भी समाज में अशान्ति का घोर साम्राज्य हो जाय। ये दोनों ही अवस्थाएँ जाति या राष्ट्र की उन्नति के बाधक हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि ये बातें पौराणिक वर्तमान वर्ण-व्यवस्था में प्रचलित हैं। यहाँ कुल विशेष में जन्म लेने से मनुष्य अधिकार विशेष से वञ्चित होता है, यहाँ एक जाति दूसरी जाति से छोटी समझी जाकर पददलित और तिरस्कृत होती है अवश्य, पर यह दोष वर्ण-व्यवस्था के कारण नहीं है; क्योंकि यथार्थ में वैदिक वर्ण-व्यवस्था इन दोषों से सर्वथा खाली है। भोजन न मिलने पर किसी के बालू खाने पर भोजन मात्र का निषेध करना बुद्धिमानी नहीं है, बल्कि अच्छे भोजन का प्रबन्ध करना बुद्धिमानी है। उसी प्रकार वर्ण-व्यवस्था की प्रचलित बुराइयों के कारण वर्ण-व्यवस्थाको मिटाना बुद्धिमानी नहीं है। कर्तव्य है वैदिक वर्ण-व्यवस्था की पुनः संस्थापना करना।

वेद की शिक्षा विशुद्ध साम्यवाद की शिक्षा है। ऋग्वेद कहता है—

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सम्भ्रातरो
वावृधुः सौभगाय। युवा पिता स्वपा
रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः॥

अर्थात् मनुष्य मात्र एक ही माता-पिता की सन्तान जैसे भाई-भाई हैं; न कोई बड़ा है, न कोई छोटा। सबको उन्नति करने की पूरी स्वतन्त्रता है। यह बात वैदिक वर्ण व्यवस्था में पूरी तरह घटती है।

वैदिक वर्ण-व्यवस्था गुण, कर्म, स्वभाव पर अवलम्बित है, जन्म पर नहीं। वृणोतेः ऐसी व्युत्पत्ति बतलाकर निरुक्तकार ने स्पष्ट किया कि वर्ण वही कि जो अपनी योग्यतानुसार मनुष्य अपने लिए चुने (वरण करे)। गीता में श्री कृष्ण की भी यही सम्मति है। इसी कारण तो यहाँ मछुआइन के पुत्र महर्षि वेदव्यास, जन्म का व्याध रत्नाकर आदिकवि वाल्मीकि चाण्डाल कुलोत्पन्न मातङ्ग ब्रह्मर्षि गणिका-गर्भ-सम्भूत वशिष्ठ राम के कुलगुरु दासीपुत्र नारद देवर्षि हो सकते हैं। यह है पक्का साम्यवाद।

चारों वर्णस्थ पुरुष वर्णानुसार अपनी व्यवस्था का पालन करते हुए एक-दूसरे से छोटे या बड़े नहीं कहे जासकते। कारण दरजों (Degree) का भेद एक प्रकार (Kind) के वस्तुओं में होता है। उन पदार्थों में नहीं जिनके प्रकार भिन्न हैं। एक स्थान पर पचास बढ़ई काम करते हैं तो उनमें एक को हम अव्वल कहते हैं। लेकिन जहाँ एक बढ़ई, एक जिल्दसाज़, एक कृषक और एक सिपाही हो तो हम किसको प्रथम या अव्वल कहेंगे? किसी को नहीं। तीन गज कपड़ा और पाँच सेर अन्न में हम किसको बड़ा कहें? हाँ, तीन गज कपड़े को हम एक गज कपड़े से तो बड़ा कह सकते हैं, एक सेर अन्न से पाँच सेर अन्न को बड़ा कह सकते हैं। यहाँ बड़ा छोटा इसलिए कहते हैं कि बड़े से बड़ा और छोटे से छोटा प्रयोजन

सिद्ध होता है। एक सेर अन्न से यदि दो मनुष्यों के पेट भरते तो पाँच सेर से दस मनुष्यों की तृप्ति होती है। जो काम एक सेर अन्न से हो सकता है वह हजार गज कपड़े से नहीं हो सकता है। इसलिए हजार गज कपड़े को हम एक सेर चावल से बड़ा नहीं कह सकते। उसी प्रकार एक शूद्र यदि दस घड़े पानी भर सकता है तो वैश्य यदि बीस घड़े, क्षत्रिय चालीस घड़े और ब्राह्मण सौ घड़े पानी ला सकते तब हम वैश्य, क्षत्रिय और ब्राह्मण को शूद्र से बड़ा कहते, लेकिन बात वैसी नहीं है। ब्राह्मण मे शूद्र के समतुल्य शारीरिक श्रम की योग्यता नहीं है वैश्यके समतुल्य व्यापार की दक्षता और क्षत्रिय के समान युद्ध निपुणता नही है। अतएव वर्णों में प्रकार भेद है। वे एक प्रकार के नहीं, इसलिए छोटे-बड़े नहीं।

जिसका जो क्षेत्र है, उस क्षेत्र में वही बड़ा है। सिर पर लाठी से प्रहार होता है तो हाथ सिर के ऊपर जाकर सिरकी रक्षा करता है। सिर यदि अभिमान से हाथ को ऊपर न उठने दे तो सिर चूर-चूर ही हो जाय। उसी प्रकार ब्राह्मण की रक्षा के समय क्षत्रिय ही बड़ा है। उसी प्रकार सिर मे कितनी ही बुद्धि क्यों न भरी हो, बाहुओं में बल कितना ही क्यों न हो, योद्धा के पाँवों में यदि बल न हो तो वह योद्धा लड़ाई में मारा जाता है, क्योंकि विजय उसी योद्धा की होती है जो पैंतरे अच्छी तरह बदल सकता है। इसलिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र—सबकी साथ साथ उन्नति होने से ही समाज फलता-फूलता है और इस प्रकार वैदिक वर्ण-व्यवस्था हमको सच्चे अर्थों में Socialism या समाजवाद की शिक्षा देता है।

वैदिक वर्ण-व्यवस्था का साम्यवाद हम एक और प्रकार से देख सकते हैं। यहाँ किसी एक वर्ण का एकाधिपत्य नहीं है, चूंकि वैदिक धर्म में मान लेने और ईमान लाने की जरूरत नहीं है, क्योंकि यहाँ बुद्धिवाद की प्रधानता है और धर्म के मामलों में तर्क से अनुसन्धान करने की स्पष्ट आज्ञा है। इसलिए यहा मुल्ले, पादरी, महन्त, मठधारियों की तरह जन-साधारण को ब्राह्मण, धर्माचार्यों की धार्मिक (मजहबी) गुलामी करने की आवश्यकता नहीं है।

राजनीतिक मामलों मे क्षत्रियों का एकाधिपत्य भी नहीं चल सकता। वेदों मे पूर्ण प्रजातन्त्रवाद का उपदेश है। राजा को धार्मिक वेदज्ञ विद्वानों की सभा के अधीन रहने की स्पष्ट आज्ञा है। शतपथ ब्राह्मण कहता है—

राष्ट्रमेव विश्याहन्ति तस्माद्राष्ट्री विश घातुक.।
विशमेव राष्ट्रायाद्यां करोति तस्माद्राष्ट्री विशमत्ति
न पुष्टं पशुं मन्यते इति।

अर्थात् राष्ट्र का एकाधिपत्य राजा (Autocrat Monarch) प्रजा का नाश कर देता है, जैसे मृगराज सिंह जङ्गल के पशुओं को खा जाता है।

वैदिक वर्ण-व्यवस्था में धनपतियों (वैश्यों) का भी प्रभुत्व नहीं हो सकता, क्योंकि भौतिकवाद का उपदेश ऋषियों ने दिया ही नहीं। महर्षि कपिल ने कहा 'नदृष्टात्तत्सिद्धिर्निवृत्तेऽप्यनुवृत्ति दर्शनात्।' अर्थात् तीनों प्रकार के दुखो की अत्यन्त निवृत्ति जिसके लिए जीव का परम पुरुषार्थ होना चाहिये भौतिक पदार्थों से नहीं हो सकती। इसलिए वैदिक धर्म में धनादि परम लक्ष्य नहीं हो सकते। समाज में शूद्रों के कर्मों को नीची निगाह से देखने का स्पष्ट निषेध है। यजुर्वेद ने "तपसे शूद्रं" कह कर शूद्र के कर्मों को तप बतलाया। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ मे श्रीकृष्ण ने अतिथियों के पाव धोने का काम लिया। उस समय के सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी महात्मा भीष्म ने कृष्ण को ही पूजा का अधिकारी बतलाया। इसलिए शूद्र के सेवाकार्य को परम पवित्र दृष्टि से देखना वैदिक आदर्श है।

क्या धर्म के बिना मनुष्य का काम चल सकता है ?

सर राधाकृष्णन के विचारों का सार

*

ऐसे भी मूर्ख मनुष्य हैं जो यह पूछते हैं कि धर्म की मनुष्य को आवश्यकता है या नहीं और बिना धर्म के मनुष्य सुख और शान्ति से रह सकता है या नहीं। इस प्रकार के प्रश्न करना ऐसी ही मूर्खता है जैसी यह पूछना मूर्खता है कि मनुष्य भोजन, वायु और जल के बिना जिन्दा रह सकता है या नहीं। यह प्रश्न प्रायः इसलिए किया जाता है कि हमारे दिमाग जीवन की रोजाना की चख-चख और फिक-फिक से आगे जीवन का अर्थ समझने के योग्य नहीं रह गये हैं तथा स्वार्थी लोगों ने रूढियों और निर्जीव क्रिया-कलापों का अडङ्गा डालकर गडबड़ पैदा करदी है। मनुष्य धर्म से दूर नहीं भाग सकता है, क्योंकि उसकी जड़ें मनुष्य के सच्चे व्यक्तित्व में गहरी पैठी होती है।

गत वर्ष कलकत्ता विश्वविद्यालय मे अपने एक भाषण में श्री सर राधाकृष्णन ने इस बात पर बहुत बल दिया था। उन्होने कहा था कि "जबतक मनुष्य में बुद्धि रहेगी तबतक धर्म की समस्या रहेगी। केवल पशु ही सन्तोषी जीवन बिता सकता है, परन्तु मनुष्य पशु जैसा कभी पूर्ण सन्तुष्ट नहीं हो सकता। उसमें पूर्णता की प्राप्ति की कामनाएँ हैं। वह पशु जैसा स्वाभाविक और खुदबखुद चलनेवाला जीवन नहीं बिता सकता। जहाँ तक पशु-जीवन का सम्बन्ध है पशु कभी यह प्रश्न नहीं करता कि मैं क्या हूँ, मै कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। मनुष्य मे बुद्धि का सङ्घर्ष चलता रहता है।

इस सङ्घर्ष पर विजय कैसे प्राप्त की जाय? जीवन के इस सङ्घर्ष का इलाज करने में साइंस असमर्थ है। जीवन अज्ञात स्थान से आता है और अज्ञात स्थान को चला जाता है। आदि और अन्त दोनों जगह अँधेरा है। साइंस तो इन दोनों के बीच की प्रकाशमान जगह से ही सरोकार रखती है। यह सङ्घर्ष केवल मुक्तावस्था को पहुँचने से दूर हो सकता है, जो बुद्धि की पहुँच से परे होती है और मुक्तावस्था धर्म के आचरण से प्राप्त होती है, अर्थात् मन को इन्द्रियो से हटाकर बुद्धि की ओर चलाने से, बुद्धि को आत्मा की ओर लगाने से और आत्मा को परमात्मा, पवित्रता और पूर्णता की ओर लगाने से मुक्तावस्था प्राप्त होती है।

आर्यसमाज एक्ट की आवश्यकता

[श्री० रामकृष्ण एम० ए० एल० एल० बी० लखीमपुर खेरी]

जिस समय मनुष्य मनमानी करना चाहता है या अच्छे-बुरे का ज्ञान उसको नहीं रहता या उच्छृङ्खल होकर स्वार्थ की अवधि का उल्लङ्घन करता है उस समय उसको नियन्त्रित अथवा शान्त करना आवश्यक होता है, जिससे कि वह शान्त हो सके तथा बुरे-भले को ज्ञात कर सके। ठीक इसी प्रकार की व्यवस्था राष्ट्रों की अथवा संस्थाओं व सभाओं की है—आर्यसमाजें—संयुक्त-प्रान्त आगरा व अवध के लिए मैं लिख रहा हूँ—आधुनिक समय में उच्छृङ्खल हो रही है, जो स्थानीय आर्यसमाज के मन्त्री या प्रधान महोदय के मस्तिष्क में आता है वे वही करते हैं। वह आर्य-प्रतिनिधि सभाकी विज्ञप्तियों पर ध्यान ही नहीं देते, कारण कि समाजें यह समझने लगी है कि प्रतिनिधि सभा उनको किसी प्रकार लाभ नहीं पहुँचाती है। समाज के मन्त्री महोदयों की यह धारणा है कि यदि हम वार्षिकोत्सवों पर सभा से प्रचारक व उपदेशक बुलायें तो उन लोगों को दक्षिणा व मार्ग-व्यय देना पड़ता है, कोटिधन दशांश, प्रतिनिधि फीस, वेद-प्रचार-फण्ड का रुपया इत्यादि २ तो प्रतिवर्ष देना ही पड़ता है, परन्तु समाजों के मन्त्री महोदय एक बहुत बडी बात भूलते हैं—वह यह है कि प्रतिनिधि सभा तो प्रान्तकी समाजों की एक संगठित संस्था है। जिस प्रकार सूत का एक धागा फूँक से उड़ जाया करता है, उसी प्रकार यदि समाजें सगठित न होतीं तो आज तक कई समाजों का नीलाम तक हो गया होता !! परन्तु कई सूत के धागे मिलकर रस्सी के रूप मे जिस समय परिवर्तित हो जाते है उस समय बड़े-बड़े हाथियों को भी छठी का दूध याद आता है। सगठित संस्था पर आक्रमण करना सुगम नहीं। प्रतिनिधि सभा अपनी अधीनस्थ समाज की प्रत्येक रूप से रक्षा करती है। अत यदि इस संगठन के लिए हमे १००) वार्षिक भी देना पड़े तो कोई अधिक नहीं और वह भी वेद प्रचार आदि ही मे व्यय होता है। सभा के वार्षिक वृत्तान्त मे स्पष्ट हो जाता है कि कितनी आय हुई और कितना किस किस मद मे व्यय हुआ।

परन्तु इतना सब कुछ होते हुए भी समाजें सभा के नाम रजिस्टर्ड नहीं !! संयुक्त प्रान्त की प्रमुख समाजें अभी सभा के नाम रजिस्टर्ड नहीं है !! क्या इसे उच्छृङ्खलता नहीं कह सकते !!

अत मेरी सम्मति में आर्यसमाज ऐक्ट का निर्माण कराना आवश्यक है। उससे समाजों का सगठन होगा, उच्छृङ्खलता दूर होगी, समाजें सभा की रहेंगी, समाजों तथा सभा के अन्तर्गत सुव्यवस्था रहेगी और परिणाम स्वरूप प्रतिनिधि-सभा भी इस समय की अपेक्षा कहीं अधिक शक्तिशाली हो जायेगी। मुझे पूरी आशा है कि आर्य विद्वज्जन इस गम्भीर विषय पर विचार प्रकट करने का कष्ट करेंगे।

जर्मनी में बच्चों की शिक्षा

जर्मन देश में बच्चे की इज़्ज़त की जाती है। अध्यापक उसे बड़े प्रेम से पढ़ाता है तथा माता-पिता अपने बच्चे को विचार की पूर्ण स्वतन्त्रता देते हैं। स्कूल में बच्चा प्रतिदिन सुबह को १५ मिनिट उच्च संगीतज्ञों के गाने तथा मानवी विचारों की ऊँची से ऊँची उड़ान की पुस्तकों के पाठ सुनता है। इस उद्देश्य के लिए भगवद्गीता, उपनिषद्, गांधी, टैगोर, स्वामी विवेकानन्द और रामकृष्ण परमहंस के ग्रन्थों का खूब प्रयोग किया जाता है। इन पाठों के बाद शान्ति में बैठकर उन पर विचार और मनन करने का उन्हें समय और अवसर दिया जाता है।

जर्मन अध्यापक अपने विषय का न केवल पण्डित ही होता है, वरन् जो बच्चे उसके चार्ज में रखे जाते हैं उनका वह मित्र और मार्ग-प्रदर्शक भी होता है।

जर्मन देशवासियों की यह धारणा है कि रटाने से बच्चे की सृजनी शक्तियां दब जाती हैं और यह उसे रद्दी ग्रामोफोन मशीन बना देता है। जर्मन के अध्यापक को अपने विषय में खूब स्वतन्त्रता दी जाती है। रूखे करीक्यूलम अथवा नियत टाइम-टेबिल पर चलने के लिए जर्मनी का अध्यापक बाध्य नहीं किया जाता है। विपरीत इसके अपने बच्चे में जो विषय वह पढ़ाता है उसमें स्वतन्त्र विचार की योग्यता पैदा करने की अध्यापक से आशा की जाती है। बहुधा अपनी पसन्द के चित्रों अथवा ड्राइंग इत्यादि के द्वारा अपने मनोवैज्ञानिक विकास का प्रकाश करने के लिए बच्चे को प्रेरणा की जाती है। इन चित्रों इत्यादि से अध्यापक को बच्चे के रुझान का पता लग जाता है और इससे बच्चे की कठिनाइयों के हल करने के प्रयत्नों में उसे सहायता मिल जाती है।

उच्च शिक्षा

[ले०—मो० क० गांधी]

*

उच्च शिक्षा के विषय में जो मेरे विचार हैं उन्हे मैं पहले से भी अधिक पूर्णता से व्यक्त कर दूँ, ताकि पाठक मेरे विचारो को भली भाँति समझ लें।

मैं अपने उन निष्कर्षों को बता दूँ जिनपर कि मैं कई वर्षों से पहुँचा हुआ हूँ और जब भी कभी मौक़ा मिला है उनको अमल मे लाने की कोशिश की है।

(१) दुनिया में प्राप्त हो सकनेवाली ऊँची से ऊँची शिक्षा का भी मैं विरोधी नही हूँ।

(२) राज्य को जहाँ भी निश्चित रूप से इसकी ज़रूरत हो वहाँ इसका ख़र्च उठाना चाहिये।

(३) साधारण आमदनी द्वारा सारी उच्च शिक्षा का ख़र्च चलाने के मैं ख़िलाफ़ हूँ।

(४) मेरा यह निश्चित विश्वास है कि हमारे कालिजों में साहित्य की जो इतनी सारी तथाकथित शिक्षा दी जाती है वह सब बिलकुल व्यर्थ है और उसका परिणाम शिक्षित वर्गों की बेकारी के रूप मे हमारे सामने आया है। यही नहीं, बल्कि जिन लड़के-लड़कियों को हमारे कालिजों की चक्की में पिसने का दुर्भाग्य प्राप्त हुआ है उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को भी इसने चौपट कर दिया है।

(५) विदेशी भाषा के माध्यम मे, जिसके ज़रिए कि भारत में उच्च शिक्षा दी जाती है, हमारे राष्ट्र को हद से ज्यादा बौद्धिक और नैतिक आघात पहुँचाया है। अभी हम अपने इस ज़माने के इतने नज़दीक हैं कि इस नुक़सान का निर्णय नही कर सकते। और फिर ऐसी शिक्षा पानेवाले हमीं को इसका शिकार और न्यायाधीश दोनों बनना है, जो कि लगभग असम्भव काम है।

अब मेरे लिए यह बतलाना आवश्यक है कि मैं इन निष्कर्षों पर क्यो पहुँचा। यह शायद अपने कुछ अनुभवो के द्वारा ही मै सब से अच्छी तरह बतला सकता हूं।

१२ बरस की उम्र तक मैंने जो भी शिक्षा पायी वह मातृभाषा गुजरातीमें पायी थी। उस वक्त गणित, इतिहास और भूगोल का मुझे थोड़ा-थोड़ा ज्ञान था। इसके बाद मैं एक हाईस्कूल में दाखिल हुआ। इसमें भी पहले तीन सा.. तक तो मातृभाषा ही शिक्षा का माध्यम रही, लेकिन स्कूल-मास्टर का काम तो विद्यार्थियों के दिमागमें जबरदस्ती अँगरेज़ी ठूँसना था इसलिए हमारा आधे से अधिक समय अँगरेज़ी और उसके मनमाने हिज्जों तथा उच्चारण पर क़ाबू पाने में लगाया जाता था। ऐसी भाषा का पढ़ना हमारे लिए एक कष्टपूर्ण अनुभव था, जिसका उच्चारण ठीक उसी तरह नहीं होता जैसी कि वह लिखी जाती है। हिज्जों को कण्ठस्थ करना एक अजीब सा अनुभव था, लेकिन यह तो मैं प्रसंगवश कह गया, वस्तुत. मेरी दलील से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। मगर पहले तीन साल तो तुलनात्मक रूप में ठीक ही निकल गये।

ज़िल्लत तो चौथे साल से शुरू हुई। अलजबरा, (बीजगणित), केमिस्ट्री (रसायन-शास्त्र) एस्ट्रोनामी

(ज्योतिष), हिस्ट्री (इतिहास), ज्याग्राफ़ी (भूगोल)- हरेक विषय मातृभाषा के बजाय अङ्गरेज़ी में ही पढ़ना पड़ा। कक्षा में अगर कोई विद्यार्थी गुजराती, जिसे कि वह समझता था, बोलता तो उसे सज़ा दी जाती थी। हाँ, अङ्गरेज़ी को, जिसे न तो वह पूरी तरह समझ सकता था और न शुद्ध बोल सकता था, अगर वह बुरी तरह बोलता तो भी शिक्षक को कोई आपत्ति नही होती थी। शिक्षक भला इस बात की फ़िक्र क्यो करे ? क्योंकि खुद उसकी ही अङ्गरेज़ी उसके लिए भी उसी तरह विदेशी भाषा थी जिस तरह कि उसके विद्यार्थियो के लिए थी। इससे बड़ी गड़बड़ होती। हम विद्यार्थियों को अनेक बातें कण्ठस्थ करनी पड़तीं हालाँकि हम उन्हे पूरी तरह नही समझ सकते थे और कभी कभी तो बिलकुल ही नही समझते थे। शिक्षक के हमें ज्यामेटरी (रेखा गणित) समझाने की भरपूर कोशिश करने पर मेरा सिर घूमने लगता। सच तो यह है कि युक्लिड (रेखा गणित) की पहली पुस्तक के १३वे साध्य तक हम न पहुँच गये मेरी समझ मे ज्यामेटरी बिलकुल नहीं आयी। और पाठकों के सामने मुझे यह मन्जूर करना ही चाहिये कि मातृभाषा के अपने सारे प्रेम के बावजूद आज भी मै यह नहीं जानता कि ज्यामेटरी, आलजबरा आदि की पारिभाषिक बातों को गुजराती में क्या कहते है। हाँ, यह अब मै ज़रूर देखता हूँ कि जितना गणित, रेखागणित, बीजगणित, रसायन शास्त्र और ज्योतिष सीखने मे मुझे चार साल लगे अगर अङ्गरेज़ी के बजाय गुजराती में मैंने उन्हें पढ़ा होता तो उतना मैंनें एक साल में आसानी से सीख लिया होता। उस हालत में मैं आसानी और स्पष्टता के साथ इन विषयों को समझ लेता। गुजराती का मेरा शब्द ज्ञान कहीं अधिक समृद्ध होगया होता और उस ज्ञानका मैंनें अपने घरमें उपयोग किया होता। लेकिन इस अङ्गरेज़ी के माध्यम ने तो मेरे और कुटुम्बियों के बीच, जोकि अङ्गरेज़ी स्कूलो में नही पढ़े थे एक अगम्य खाई खड़ी कर दी। मेरे पिता को यह कुछ पता न था कि मैं क्या कर रहा हूँ। मै चाहता तो भी अपने पिता की इस बात मे दिलचस्पी पैदा नहीं कर सकता था कि मैं क्या पढ़ रहा हूँ। क्योकि यद्यपि बुद्धि की उनमे कोई कमी न थी, मगर वह अङ्गरेजी नहीं जानते थे। इस प्रकार अपने ही घर मे मै बड़ी तेज़ी के साथ अजनबी बनता जारहा था। निश्चय ही औरो से ऊँचा आदमी बन गया था। यहाँ तक कि मेरी पोशाक भी अपने आप बदलने लगी। लेकिन मेरा जो हाल हुआ वह कोई असाधारण अनुभव नहीं था, बल्कि अधिकांश का यही हाल होता है।

हाईस्कूल के प्रथम तीन वर्षों मे मेरे सामान्य ज्ञान में बहुत कम वृद्धि हुई। वह समय तो लड़कों को हरएक चीज़ अङ्गरेजी के ज़रिये सीखने की तैयारी का था। हाईस्कूल तो अङ्गरेज़ो की सांस्कृतिक विजय के लिए थे। मेरे हाईस्कूल के तीन सौ विद्यार्थियों ने जो ज्ञान प्राप्त किया वह तो हमीं तक सीमित रहा, वह सर्वसाधारण तक पहुँचाने के लिए नही था।

एक दो शब्द साहित्य के बारे मे भी। अङ्गरेजी गद्य और पद्य की हमें कई किताबें पढ़नी थीं। इसमे शक नहीं कि वह सब बढ़िया साहित्य था। लेकिन सर्वसाधारण की सेवा या उसके सम्पर्क मे आने में उस ज्ञान का मेरे लिए कोई उपयोग नहीं हुआ है। मै यह कहनें में असमर्थ हू कि मैने अङ्गरेज़ी गद्य और

पथ न पढ़ा होता तो मैं एक बेशक़ीमत ख़ज़ाने से वञ्चित रह जाता। इसके बजाय, सच तो यह है कि अगर वह सात-सात साल मैंने गुजराती पर प्रभुत्व प्राप्त करने में लगाये होते और गणित, विज्ञान तथा संस्कृत आदि विषयों को गुजराती में पढ़ा होता तो इस तरह प्राप्त किये हुए ज्ञान में मैंने अपने अड़ोसी-पड़ोसियों को आसानी से हिस्सेदार बनाया होता। उस हालत में मैंने गुजराती साहित्य को समृद्ध किया होता, और कौन कह सकता है कि अमल में उतारने की अपनी आदत तथा देश और मातृभाषा के प्रति अपने बेहद प्रेम के कारण सर्वसाधारण की सेवा में और भी अधिक अपनी देन क्यों न दे सकता।

यह हर्गिज़ नहीं समझना चाहिये कि अङ्गरेजी या उसके श्रेष्ठ साहित्य का मैं विरोधी हूँ। 'हरिजन' मेरे अङ्गरेज़ी प्रेम का पर्याप्त प्रमाण है। लेकिन उसके साहित्य की महत्ता भारतीय राष्ट्र के लिए उससे अधिक उपयोगी नहीं जितना कि इङ्गलैण्ड के लिए उसका समशीतोष्ण जल वायु या वहाँ के सुन्दर दृश्य हैं। भारत को तो अपने ही जल-वायु, दृश्यों और साहित्य में तरक्क़ी करनी होगी, फिर चाहे ये अङ्गरेजी जल-वायु, दृश्यों और साहित्य से घटिया दर्जे के ही क्यों नहीं। हमें और हमारे बच्चों को तो अपनी खुद की ही विरासत बनानी चाहिये। अगर हम दूसरों की विरासत लेंगे, तो अपनी नष्ट हो जायगी। सच तो यह है कि विदेशी सामग्री पर हम कभी उन्नति नहीं कर सकते। मैं तो चाहता हूँ कि राष्ट्र अपनी ही भाषा का कोष भरे और इसके लिए संसार की अन्य भाषाओं का कोष भी अपनी ही देशी भाषाओं में संचित करे। रवीन्द्रनाथ की अनुपम कृतियों का सौन्दर्य जानने के लिए मुझे बङ्गाली पढ़ने की कोई ज़रूरत नहीं, क्योंकि सुन्दर अनुवादों के द्वारा मैं उसे पालेता हूँ। इसी तरह टाल्सटाय की सङ्क्षिप्त कहानियों की क़द्र करनेके लिए गुजराती लड़के-लड़कियों को रूसी भाषा पढ़ने की कोई ज़रूरत नहीं, क्योंकि अच्छे अनुवादकों के ज़रिये वे उन्हें पढ़ लेते हैं। अँगरेजों को इस बात का गर्व है कि संसार की सर्वोत्तम साहित्यिक रचनाएँ प्रकाशित होने के एक सप्ताह के अन्दर-अन्दर सरल अँगरेज़ी में उनके हाथों में आ पहुँचती हैं। ऐसी हालत में शेक्सपीयर और मिल्टन के सर्वोत्तम विचारों और रचनाओं के लिए मुझे अँगरेज़ी पढ़ने की ज़रूरत क्यों हो ?

यह एक तरह की अच्छी मितव्ययता होगी कि ऐसे विद्यार्थियों का अलग ही एक वर्ग कर दिया जाय, जिनका काम यह हो कि संसार की विभिन्न भाषाओं में पढ़ने लायक़ जो सर्वोत्तम सामग्री हो उसको पढ़ें और देशी भाषाओं मे उसका अनुवाद करें। हमारे प्रभुओं ने तो हमारे लिए गलत ही रास्ता चुना है, और आदत पड़ जाने के कारण गलती ही हमें ठीक मालूम पड़ने लगी है।

हमारी इस झूठी अभारतीय शिक्षा से लाखों आदमियों का दिन-दिन जो लगातार नुक़सान हो रहा है, उसके तो रोज़ ही मैं प्रमाण पारहा हूँ। जो ग्रेजुएट मेरे आदरणीय साथी हैं उन्हें जब अपने आन्तरिक विचारोंको व्यक्त करना पड़ता है तो वही ख़ुद परेशान हो जाते हैं। वे तो अपने ही घरों में अजनबी हैं। अपनी मातृभाषा के शब्दों का उनका ज्ञान इतना सीमित है कि अँगरेज़ी शब्दों और वाक्यों तक का सहारा लिए बग़ैर वे अपने भाषण को समाप्त नहीं कर सकते।

न अ गरेजी किताबों के बगैर वे रह सकते हैं। आपस में भी वे अक्सर अ गरेज़ी में लिखा पढ़ी करते हैं। अपने साथियों का उदाहरण मैं यह बताने के लिए दे रहा हूँ कि इस बुराई ने कितनी गहरी जड़ जमा ली है, क्योंकि हम लोगों ने अपने को सुधारने का खुद जान बूझकर प्रयत्न किया है।

हमारे कालिजों में समय की जो यह बर्बादी होती है उसके पक्ष में दलील यह दी जाती है कि कालजों में पढ़ने के कारण इतने विद्यार्थियों में से अगर एक जगदीश बोस भी पैदा हो सके तो हमे इस बर्बादी की चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं। अगर यह बर्बादी अनिवार्य होती तो मैं भी ज़रूर इस दलील का समर्थन करता, लेकिन मैं आशा करता हूँ कि मैंने यह बतला दिया है कि यह न तो अनिवार्य थी और न अभी ही अनिवार्य है, क्योंकि जगदीश बोस कोई वर्तमान शिक्षा की उपज नहीं थे वह तो भयंकर कठिनाइयों और बाधाओं के बावजूद अपने परिश्रम की बदौलत ऊँचे उठें, और उनका ज्ञान लगभग ऐसा बन गया जो सर्वसाधारण तक नहीं पहुँच सका। बल्कि मालूम पड़ता है कि हम यह सोचने लगे हैं कि जब तक कोई अङ्गरेज़ी न जाने तब तक वह बोस के सदृश महान् वैज्ञानिक होने की आशा नहीं कर सकता। यह ऐसी मिथ्या धारणा है जिससे अधिक की मैं कल्पना ही नहीं कर सकता। जिस तरह हम अपने को लाचार समझते मालूम पड़ते हैं, उस तरह एक भी जापानी अपने को नहीं समझता।

यह बुराई, जिसका कि मैंने वर्णन करने की कोशिश की है, इतनी गहरी पैठी हुई है कि कोई साहस पूर्ण उपाय ग्रहण किये बिना काम नहीं चल सकता। हाँ कांग्रेसी मन्त्री चाहें तो इस बुराई को दूर न भी कर सकें तो इसे कम तो कर ही सकते हैं।

विश्वविद्यालयों को स्वावलम्बी ज़रूर बनाना चाहिये। राज्य को तो साधारणतः उन्हीं को शिक्षा देनी चाहिये जिनकी सेवाओं की उसे आवश्यकता हो। अन्य सब दिशाओं के अध्ययन के लिए उसे खानगी प्रयत्न को प्रोत्साहन देना चाहिये। शिक्षा का माध्यम तो एक दम और हर हालत में बदला जाना चाहिये, और प्रान्तीय भाषाओंको उनका वाजिब स्थान मिलना चाहिये। यह जो क़ाबिले सज़ा बर्बादी रोज़ ब-रोज़ हो रही है इसके बजाय तो स्थायी रूप से अव्यवस्था हो जाना भी मैं पसन्द करूँगा।

प्रान्तीय भाषाओं का दरजा और व्यावहारिक मूल्य बढ़ाने के लिए मैं चाहूँगा कि अदालतों की कार्रवाही अपने अपने प्रांत की ही भाषा में हो। प्रान्तीय धारासभाओं की कार्रवाही भी प्रान्तीय भाषा या, जहाँ एक से अधिक भाषाएँ प्रचलित हों, उनमें होना चाहिये। धाराओं के सदस्यों को मैं कहना चाहता हू कि वे चाहें तो एक महीने के अन्दर-अन्दर अपने प्रान्तों की भाषाएँ भली भाँति समझ सकते हैं। तामिल भाषी के लिए ऐसी कोई रुकावट नहीं, जो वह तेलगू मलयालम और कन्नड के जो कि सब तामिल से मिलती जुलती हुई है, मामूली व्याकरण और कुछ सौ शब्दों को आसानी से न सीख सकें।

मेरी सम्मति में यह कोई ऐसा प्रश्न नहीं है, जिसका निर्णय साहित्यज्ञों के द्वारा हो, वे इस बात का निर्णय नहीं कर सकते कि किस स्थान के लड़के लड़कियों की पढ़ाई किस भाषा में हो, क्योंकि इस प्रश्न का निर्णय तो हरएक स्वतन्त्र देशमें पहले ही हो

चुका है। न वे यही निर्णय कर सकते हैं कि किन विषयों की पढ़ाई हो, क्योंकि यह उस देश की आवश्यकताओं पर निर्भर करता है, जिस देश के बालकों की पढ़ाई होती है। उन्हें तो बस यही सुविधा प्राप्त है कि राष्ट्र की इच्छा को यथा सम्भव सर्वोत्तम रूप में अमल में लायें। अतः जब हमारा देश वस्तुतः स्वतन्त्र होगा, तब शिक्षा के माध्यम का प्रश्न केवल एक ही तरह से हल होगा। साहित्यिक लोग पाठ्य-क्रम बनायेंगे और फिर उसके अनुसार पाठ्य-पुस्तकें तैयार करेंगे, और स्वतन्त्र भारत की शिक्षा पानेवाले विदेशी शासकों को करारा जवाब देंगे। जब तक हम शिक्षित वर्ग इस प्रश्न के साथ खिलवाड़ करते रहेंगे, मुझे इस बात का बहुत भय है कि, हम जिस स्वतन्त्र और स्वस्थ भारत का स्वप्न देखते हैं उसका निर्माण नहीं कर पायेंगे। हमें तो सतत प्रयत्नपूर्वक अपनी गुलामी से मुक्त होना है, फिर वह चाहे शिक्षणात्मक हो या आर्थिक अथवा सामाजिक या राजनीतिक। तीन चौथाई लड़ाई तो वही प्रयत्न होगा जो कि इसके लिए किया जायगा।

इस प्रकार मैं इस बात का दावा करता हूं कि मैं उच्च शिक्षा का विरोधी नहीं हूं। लेकिन उस उच्च शिक्षा का मैं ज़रूर विरोधी हूं जोकि इस देश में दी जारही है। मेरी योजना के अन्दर तो अब से अधिक और अच्छे पुस्तकालय होंगे, अधिक संख्या में और अच्छी रसायनशालाएं और प्रयोगशालाएं होंगी। उसके अन्तर्गत हमारे पास ऐसे रसायन शास्त्रियों, इञ्जीनियरों तथा अन्य विशेषज्ञों की फ़ौज-की फ़ौज होनी चाहिये जो राष्ट्र के सच्चे सेवक हों और और उस प्रजा की बढ़ती हुई, विविध आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें जो अपने अधिकारों और अपनी आवश्यकताओं को दिन दिन अधिकाधिक अनुभव करती जारही है और ये सब विशेषज्ञ विदेशी भाषा नहीं बल्कि जनता की ही भाषा बोलेंगे। ये लोग जो ज्ञान प्राप्त करेंगे वह सब की संयुक्त सम्पत्ति होगी। तब खाली नकल की जगह सच्चा असली काम होगा, और उसका खर्च न्यायपूर्वक समान रूप से विभाजित होगा। (हरिजन)

वेद और आर्य समाज

[श्री० प्रो० परमात्माशरण जी, एम० ए०, पी-एच डी० हिन्दू यूनि० बनारस]

**

वेद के प्रति आर्यसमाज के उत्तरदायित्व के मुख्यतया दो विभाग हैं। एक तो पूर्णतया शुद्ध मूल-संहिता का प्राप्त करना और प्रकाशित करना, दूसरे वेद-भाष्य करना। यह तो दोहराने की आवश्यकता ही नहीं है कि वेद पर आर्यसमाज को कितनी श्रद्धा है। यों तो वेद हिन्दूमात्र का ही मूल धर्म ग्रन्थ एवं सब विद्याओं का स्रोत हैं पर जो महत्व वेद को क्रियात्मक रूप से आर्य-समाज के प्रवर्त्तक ने दिया है वह किसी आधुनिक सुधारक अथवा महात्मा ने नहीं दिया। उन्हीं ऋषि दयानन्द की शिक्षा के अनुसार आर्यसमाज वेद का दम भरता है। फलत: आर्यसमाज की समस्त संस्थाएं वेद प्रचार के उद्देश्य को लेकर ही खोली और चलाई जाती हैं। वेद की शिक्षा और संस्कृति का प्रचार व प्रसार करना ही आर्यसमाज का एक मात्र उद्देश्य है। अब प्रश्न यह उठता है कि दयानन्द के पीछे आर्यसमाज ने अपने इस एकमात्र उद्देश्य को पूरा करने के लिए क्या कार्य किया। क्या वेद का प्रचार करने के लिए यह अत्यावश्यक नहीं कि वेद का एक प्रामाणिक मूल-पाठ तो हमारे पास हो? परन्तु हम देखते हैं कि आर्यसमाज ने आज अपने लगभग ७० वर्ष के जीवन में सर्वथा शुद्ध वेद-संहिता के प्राप्त या तयार करने की ओर ध्यान तक नहीं दिया, उसे प्रकाशित करके जनता तक पहुँचाने की तो बात ही क्या! विचारपूर्वक देखा जाय तो यह बात आर्य-समाज के लिए कुछ कम खेद और लज्जा की नहीं है। जिस पुस्तक को हम समस्त ज्ञान का पुञ्ज और धर्म का स्रोत एवं मूल आधार मानते हैं उसके प्रति क्रियात्मक दृष्टि से हम इतने उदासीन हों कि आज ७० वर्ष तक बराबर मौखिक रूप से वेद का डङ्का बजाने के बाद उसकी मूल संहिता का शुद्ध पाठ (text) भी हमारे पास न हो और ना हम उसे प्राप्त करने के लिए चिन्तित अथवा उत्सुक हों! इस अवस्था पर टीका करने की आवश्यकता नहीं। तनिक सा विचार करने से ही हम अनुभव कर लेंगे कि यह कितनी शोचनीय और लज्जाजनक अवस्था है! अगर कोई बाहरी विद्वान् हमसे वेद की प्रति माँगने लगे (और ऐसा हो भी चुका है) तो कौनसा संस्करण है जिसे हम प्रामाणिक कहकर किसी को दे सकें। क्या ऐसा दशा किसी और धर्म-ग्रन्थ की भी है? जिन्द-अवस्ता और तोरेत, कुरान और बाइबिल इत्यादि अनेक धर्म-पुस्तकों के सैकड़ों एक से एक उत्तम संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। वेद के प्रामाणिक मूल का अभाव हमारे मानसिक प्रमाद और शिथिलता का द्योतक है।

मैक्समूलर तथा ग्रिफिथ आदि पाश्चात्य विद्वानों ने वेदों को बड़े परिश्रम से संग्रह करके और यथा-शक्ति शुद्ध करके प्रकाशित कराया और उस का

में लाखों रुपया व्यय हुआ। परन्तु न तो यह संस्करण सर्वथा प्रामाणित तथा शुद्ध हैं और न इतने सस्ते कि कोई व्यक्ति तो क्या साधारण पुस्तकालय भी इनको खरीद सके। इन संस्करणों के एक एक मूल वेद का मूल्य कई सौ रुपया है परन्तु हमारा आदर्श तो यह होना चाहिये (और हमें आशा है) कि वेद की प्रतियाँ मनुष्य मात्र के पास पहुँचा दी जायें। इतना भी न हो तो कम से कम हिन्दू मात्र के तो हर घराने मे वेद की प्रति होनी चाहिये।

कुछ काल से कतिपय विद्वानों मे वेद-भाष्य के विषय पर वाद-विवाद चल रहा है। इस वाद-विवाद से तब ही कुछ लाभ निकल सकता है जब दोनों मतो के पोषक व्यक्तिगत भावों से पूर्णतया मुक्त होकर, शुद्ध भाव से और केवल सत्यान्वेषण के उद्देश्य से प्रेरित होकर कार्य करें। और यदि किसी का उनसे मतभेद है तो उसे भी अपना मत प्रकट करने की स्वतन्त्रता दें। नाराज़ न हो और न अपने व्यवहार में अशिष्टता का परिचय ही दें।

परन्तु जैसा हम ऊपर कह चुके हैं वेद के प्रति हमारा सर्वोपरि कर्त्तव्य यह है कि हम मूल संहिता की प्रामाणिक लिपि को हस्तगत करके उसे प्रकाशित करें। वेद भाष्य मे अथवा वैदिक देवताओं आदि विषयों के सम्बन्ध में जिन महानुभावों को किन्हीं विद्वानों से मतभेद भी है उनको भी इस बात से इनकार नहीं हो सकता कि यदि अन्य बातों को भुला भी दें तो भी आर्यसमाज को केवल अपने मान तथा प्रतिष्ठा की रक्षा करने के लिए वेद के एक प्रामाणिक और सर्वाङ्ग सुन्दर संस्करण का तैयार कराना अत्यावश्यक है। यह संस्करण ऐसा होना चाहिये जिसे हम गौरव के साथ संसार के विद्वन्मण्डल के सम्मुख प्रस्तुत कर सकें और जिसे सब लोग प्रामाणिक मानकर अपने अन्वेषण व स्वाध्याय मे उसी प्रकार आधार मानने लगें, जिस प्रकार आजकल मैक्समूलर-सम्पादित संस्करण माना जाता है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि यह बात समस्त आर्य-महानुभावों एवं आर्य संस्कृति के प्रेमियों को मान्य होगी। परन्तु विस्मय यह है कि ऐसा अनुभव करते हुए भी अबतक किसी आर्य-संस्था ने इस कार्य को पूरा करने का यत्न नहीं किया। गत १५ वर्षों के अन्दर आर्यसमाज के चार पाँच सार्वदेशिक तथा प्रान्तीय बड़े-बड़े सम्मेलन हो चुके हैं। लेखक की तुच्छ बुद्धि मे इन सम्मेलनों का मुख्य कार्य यह होना चाहिये था कि आर्यसमाज के अबतक के काम का सिंहावलोकन करके परिवर्तित परिस्थिति तथा नवीन सामाजिक समस्याओं को दृष्टि में रखकर भावी कार्य-क्रम निर्णय किया जाता और उसको क्रियात्मक रूप दिया जाता। इस सम्बन्ध में कुछ विचार अवश्य हुआ, परन्तु इने-गिने लोगों को छोड़कर किसी के हृदय में इस कार्य के लिए उत्साह पैदा न हुआ अथवा कार्यक्षेत्र की परिस्थिति कुछ ऐसी हो गयी कि कोई विचारशील या उन्नतिशील काम करने का अवसर न रहा। परिणाम वही हुआ जो आज हमारे सामने हैं। इस थोड़े से वास्तविक उन्नतिशील व उदारचित्त विचार के

अतिरिक्त कोई ठोस काम न हो पाया। सम्मेलनों और शताब्दियों का रूप वही रहा जो किसी स्थानीय आर्यसमाज के एक बहुत बड़े उत्सव का हो सकता है। उनमें कोई नई बात न हुई। उनसे जनता की विकल मानसिक अवस्था और आजकल की अशान्ति का लेशमात्र भी समाधान अथवा सतोष न हो पाया। आधुनिक संसार की अनेक जटिल समस्याओं का जिनके चङ्गुल में जकड़ा हुआ आज मनुष्य समाज तड़प रहा है, इन समारोहों से किसी अंश में भी समाधान न हुआ। कहने को हम चाहे जितना गर्व किये जायं और अपना ढोल पीटे जायं कि ससार के तापों को दूर करने की कुञ्जी हमारे पास है, पर यह ध्रुव सत्य है कि ससार के तापों की तो क्या अपने तापों को हरने की दवा भी हमारे पास नहीं है, या यों कहिये कि हम उसे खो बैठे हैं। हम दुनिया भर का पथ प्रदर्शन करने का दावा तो करते हैं पर स्वयं अंधेरे में हैं और स्वयं यह नहीं जानते कि सन्मार्ग किस ओर है। यह तो ठीक है कि सन्मार्ग की कुञ्जी तो हमारे पास है, पर वे आँखें तो नहीं जो देख सके। ऋषि ने यही विवेक-रूप चक्षु हमको प्रदान किये थे और उन्हीं को हम फिर खो बैठे। प्रत्येक आर्यसमाज के उत्सव पर "वेदों का डङ्का बजाये जायँगे" की ध्वनि तो हमारे कानों में सतत सुनाई पड़ती है; पर इन शब्दों की जिम्मेवारी कितनी बड़ी है, इसका ध्यान शायद हमें कभी नहीं आता। आर्य-प्रतिनिधि सभा संयुक्तप्रान्त की जयन्ती के अवसर पर भी लेखक ने आर्यसमाजके सम्मानित नेताओं से यह विनम्र अपील की थी कि आर्य-संस्कृति की रक्षा एवं उन्नति के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि जहाँ एक ओर हम अपने भावी कार्य-क्रम तथा कर्त्तव्य पर पूर्ण रूप से विचार करके उसका निर्णय करें, वहाँ वेद का एक शुद्ध और प्रामाणिक सम्करण तैयार कराने की जल्द से जल्द योजना करें परन्तु इस कार्य की ओर पूर्ववत् उदासीनता ही बनी रही। नक्कारखाने में तूती की कौन सुनता ?

अब अजमेर आर्य-प्रतिनिधि-सभाकी जयन्ती होनेवाली है। इसलिए मैंने सोचा कि एक बार और याद दिलादू। शायद कुछ असर हो जाय। अजमेर आर्य प्रतिनिधि-सभा के लिए वेद के शुद्ध सस्करण प्रकाशित करने की योजना करना एक विशेष महत्त्व रखता है। अजमेर में ही महर्षि दयानन्द का जीवनोत्सर्ग हुआ और वही पर वैदिक यन्त्रालय स्थापित हुआ। इस बात के मानने में किसी को भी आपत्ति नहीं है और न बुरा मानना चाहिये कि चाहे जिस कारण से हो, वैदिक यन्त्रालय द्वारा प्रकाशित वेदों के संस्करण मे छापे की अनेक अशुद्धियाँ हैं। ऐसे संस्करण से बजाय लाभ के हानि है। इसलिए राजस्थान आर्य-प्रतिनिधि-सभा अपनी जयन्ती के उपलक्ष में यदि कोई स्मरणीय कार्य कर सकती हैं तो यह कि मूल वेद-सहिता का शुद्ध संस्करण जिस प्रकार हो और जहाँ से मिल सके, उपलब्ध करके प्रकाशित करे। इस सम्बन्ध में मेरा इतना वक्तव्य और है कि श्री० पं० सातवलेकर जी वेद के अनन्य भक्त हैं और उन्होंने अपना जीवन वैदिक साहित्य की

जापान की बर्बरता की वीभत्स लीलाएँ

[लेखक—एक अमेरिकन प्रत्यक्षदर्शी]

—=—

[जापानियों ने जिस समय चीन की राजधानी नानकिंग पर अधिकार किया था उस समय जापानियों ने जिस बर्बरता का परिचय दिया था, वह संसार के इतिहास में अद्वितीय है। एक अमेरिकन, ने जिसने २० वर्ष तक चीन में नौकरी की, नानकिंग की लूट-पाट का आँखों देखा वर्णन किया है। लेख का हिन्दी अनुवाद यहाँ दिया जाता है।]

—सम्पादक

जापानियो ने नानकिंग पर अधिकार करते समय जिस प्रकार खून की नदियाँ बहायीं वह वर्तमान संसार के इतिहास मे अद्वितीय है। नानकिंग की लूट-पाटमें २० हजार स्त्री-पुरुष और बच्चे मौत के घाट उतार दिये गये। चार सप्ताह तक नानकिंग की गलियों मे रक्त की नदियाँ बहती रहीं। जापान की फौज ने इस भीषण हत्याकाण्ड को ससार के कानों तक नहीं पहुँचने दिया। यातायात के मार्ग जापानी फौजो ने बन्द कर दिये। कहीं किसी तरह की खबर न जा सकती थी और न आ सकती थी, इस कारण समाचार-पत्रों के जो प्रतिनिधि नानकिंग मे थे उन्हे वहाँ रहना बेकार मालूम दिया, इसीलिए वे अपने-अपने देश को लौट गये। जापानी तो यह चाहते ही थे। उन्होने पत्रकारों को स्वदेश के लिए लौटने मे सहायता दी। मिशनरी भविष्य की आशा मे चुपचाप बने रहे।

जापान की ओर से पहले ही चेतावनी दे दी गयी थी कि नानकिंग को लोग खाली कर दें, पर १८ अमेरिकनों ने नगर को न छोड़ने का निश्चय किया, क्योंकि शान्ति के दिनों मे हमने चीनियों के यहाँ नौकरी कर आनन्द से दिन बिताये थे, फिर मुसीबत के समय हम उन्हें छोड़ कर कैसे जा सकते थे? बेतार के तार द्वारा हम लोगों ने चीन तथा जापान, दोनों के मिलटरी कमाण्डरों से इस आशय का आश्वासन ले लिया था कि वे अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों की रक्षा करेंगे। इस

सेवा के ही अर्पण कर दिया है। वेद का सर्वाङ्ग शुद्ध मूल पाठ तैयार करने और छापने के लिये उन्होने पूरा पूरा प्रयास किया है और मूल संहिता के शुद्ध करने के जितने भी प्रमाण उपलब्ध हैं उन सबका प्रयोग उन्होंने किया है। यदि उनके तयार किये मूल को ही अपनाकर वेद के कई प्रकार के संस्करण छापे जायँ तो एक महान् कार्य हो जायगा और आर्यसमाज अपने ऐसे कर्त्तव्य से उऋण होगा जिसके पूरा न होने से आर्यसमाज को लज्जा से सिर नीचा करना पड़ता है। दूसरा प्रश्न वेद भाष्य का है। इस विषयमे मैं अपने विचार कभी फिर प्रकट करूँगा।

क्षेत्र में हम लोगों ने काफी चावल, आटा एकत्रित कर लिया। शान्ति-रक्षा के लिए ४५० चीनी पुलिसमैन भी नियुक्त थे। इस क्षेत्र मे नानकिंग विश्वविद्यालय तथा गिनलिंग कालेज मे पढ़नेवाले अमेरिकन छात्र थे और १८ आदमी हम थे।

जिस समय नानकिंग मे लूटपाट आरम्भ हुई उस समय लोग अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र आदि सब भूल गये और बिना किसी प्रकार के भेदभाव के लूट-पाट आरम्भ हो गयी। १२ दिसम्बर को चीन की सेनाएँ नानकिंग छोड़कर भाग खड़ी हुई। बस इसके बाद ही नानकिंग मे आतङ्क छा गया। नानकिंग की एक सड़क यागसी नदी की ओर गयी है। इस सड़क पर एक फाटक है। इस फाटक को तोड़कर जापानी सेना ने नगर मे प्रवेश किया। तीन मील तक जापानी सेना ही सेना दिखाई देती थी। जापान की एक अस्त्र-शस्त्रों से भरी हुई लौरी मे आग लग गयी। इसके बाद रिक्सा, मोटर तथा अन्य प्रकार की गाड़ियोमे आग लगायी जाने लगी। जापान के हवाई जहाजो ने बहुत समीप आकर मशीनगनों से आदमियों को भूनना आरम्भ कर दिया। चीनी और अन्य देशवासियो का बिल्कुल ध्यान नही रखा गया। स्त्री-बच्चे, वृद्ध लूले लॅंगड़े, अपाहिज, जो कोई सामने आया उसे मशीनगनों से भून डाला गया। कमजोर और वृद्ध, जो कहीं आ-जा न सकते थे, मौत के शिकार हो गये।

दूसरे दिन मैंने उस सड़क पर निगाह डाली, जो पहले नानकिंग की एक प्रमुख सड़क समझी जाती थी। चारों ओर लाशों के अम्बार लगे हुए थे। अधकटी लाशो के रुण्ड-मुण्ड स्थान-स्थान पर लोट रहे थे। सड़कें रक्तरञ्जित हो रही थी। इस प्रकार की बर्बरता दिखलानेवाले जापान की ओर से हैण्डबिल बाँटे गये थे, जिनमे लिखा था—"अपने घर मे ही रहिये, आपका पड़ोसी जापान आपकी मदद करना चाहता है, शान्ति-स्थापित करना चाहता है।" एक ओर तो इस प्रकार के हैण्डबिल बाटे जारहे थे और दूसरी ओर भयभीत छात्रों तक को गोली के घाट उतार दिया जाता था।

चीन की महिलाओ की भी जापानी सैनिको ने बड़ी दुर्गति की। जापानी सैनिक चीन की महिलाओ के सतीत्वको लूट रहे थे। यदि कोई महिला उनके इस कार्य का प्रतिवाद करती थी तो सङ्गीन की नोक उसके सामने कर दी जाती थी। ६० वर्ष की वृद्धाओ से लेकर ११ वर्ष की बालिकाओं तक पर जापानी सैनिकों ने बलात्कार किया। उन्हें दिन-दहाड़े सडकपर पटक दिया गया और जापानी सैनिकों ने उनके साथ मुँह काला किया। बन्द दरवाजो के अन्दर जापानी सैनिकों द्वारा सतायी जानेवाली चीनी महिलाओं का चीत्कार सुनकर रोमाञ्च हो आता था।

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे एक दिन तो जापानियों का प्रवेश नहीं हुआ, पर दूसरे दिन वे जबरदस्ती घुस आये और जो लोग शरीर से अशक्त नहीं थे उन्हे पकड़कर ले गये। कुछ ही देर बाद हम लोगों ने मशीनगनो की आवाज सुनी। इन लोगो को ४० और ५०-५० के झुण्ड बनाकर खड़ा कर दिया गया और बाद मे उन्हें मशीनगनो से भून

दिया गया। हम लोगों ने जिन युवक छात्रों के साथ काम करते हुए कई वर्ष बिताये थे। वे इस प्रकार बेरहमी से मौत के घाट उतार दिये गये!

१६ दिसम्बरको जापानी सैनिकों की पैशाचिकता ने और भी अधिक उग्र रूप धारण किया। लगभग सौ से अधिक महिलाओं को जापानी सैनिक पकड़ कर अपने बेरिकों मे ले गये। इनमें सात महिलाए तो विश्वविद्यालय मे लाइब्रेरियन का कार्य करती थीं। जापानी सैनिको का ऐसा आतङ्क छा गया था कि नानकिंग के मकानों के द्वार हर समय बन्द रहते थे। हम लोगों ने एक हजार स्त्रियों को एक मकान मे छिपा दिया था, जिससे उनके सम्मान की रक्षा हो सके। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र के ५० पुलिसमैनो को भी जापानी बहकाकर ले गये और उन्हें गोली से उडा दिया। जब एक अमेरिकन ने एक जापानी अफ़सर से इसका प्रतिवाद किया तो उसके मुँह पर उस अफ़सर ने थप्पड़ मार दिया।

दो दिनो तक जापानी सिपाहियों ने चीन की महिलाओं पर बलात्कार करने में व्यतीत किया, इसके बाद उन्होने लूटपाट शुरू की। जापानी सैनिकों ने जहा जो पाया, वह लूट लिया और घरों मे आग लगा दी। जिस अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे अमेरिकनों ने शरण ली थी उसे जापानियों ने लूट लिया। और तो और थोडा बहुत चावल तक लूट लिया गया। किसी का विरोध करने का साहस न होता था, क्योंकि विरोध का अर्थ था मृत्यु को निमन्त्रण देना। हम लोग उच्च अधिकारियों के पास प्रार्थनापत्र भेजना चाहते थे, पर कारपोरल से ऊँचा कोई सैनिक अफ़सर वहा था नहीं, और वह अँगरेजी नहीं जानता था। फिर प्रार्थना की जाती तो किस तरह? दिन मे एक एक मकान पर दस-दस बार जापानी सैनिकों का धावा होता था और लूटमार की जाती थी। हमारे सामने अमेरिका के झण्डे को पैरो तले कुचला जाता था, पर हम इसका प्रतिकार करने मे असमर्थ थे।

सडकों पर लाशें पड़ी हुई थीं, जिन्हे कुत्ते चाट रहे थे। चायनीज रैडक्रॉस सोसाइटी ने जब इन लाशो को उठाने का प्रयत्न किया और उसकी लॉरियॉ लकडी के कफनबक्स लेकर पहुँचीं तो जापानी सैनिको ने उनसे वे बक्स छीन लिए और और उनमें आग लगाकर अपनी विजय की खुशी मनायी। बडे दिन मे नानकिंग की प्रसिद्ध सडक टैदिंग रोड पर आग की लपटें ही लपटें दिखाई दे रहीं थीं। जापानी हाथ मे टॉर्च लिए हुए आग लगाते फिर रहे थे।

सङ्गीनों से छेदे हुए कुछ चीनियों को अस्पताल लाया गया। इनमें अधिकांश का एक दूसरे की पीठ से बॉध दिया गया था और इसके बाद उन्हें सङ्गीनो से छेद डाला गया था। अस्पताल मे इन लोगो मे बहुत कम जीवित बचे। अस्पताल मे आने के पहले ही बहुतो के प्राण पखेरू उड गये थे। एक ओर तो जापानी सैनिकों की यह पैशाचिकता जारी थी, और दूसरी ओर जापानियों की ओर से इस आशय के पर्चे हवाई जहाजों से बॉटे जा रहे थे कि—जो चीनी शाति के साथ अपने घरोंमें चले आयगे उन्हें जापान की ओर से

भोजन और वस्त्र दिये जायंगे। जो चीनी चाग काइशक के सैनिकों की बातों में न आकर जापान के पक्ष में रहेंगे, जापान उनका सच्चा पड़ोसी बनेगा।' इस हैण्डबिल में एक जापानी सैनिक की तस्वीर बनी हुई थी, जिसके हाथ में एक चीनी बालक था। उसके पैरों के पास एक चीनी माता इस प्रकार दिखलायी गयी थी कि मानो वह उक्त सैनिक को धन्यवाद दे रही हो! महिला के पास चावलों के बोरे पड़े थे, पर हुआ इसके सर्वथा विपरीत। माताओं के सतीत्व का अपहरण किया जा रहा था और उनके पास भयभीत बालक त्राहि त्राहि कर चिल्ला रहे थे।

मैने अपनी आँखों से तीन-तीन और चार-चार वर्ष के बच्चों को संगीन की नोंक का शिकार होते देखा। मेरी जान-पहचान के कई परिवार घरों में बन्द कर जीते जी जला दिये गये। क्रिसमस के तीन दिन बाद शंघाई से जापानी सौदागरों के जहाज आये। उस समय तक नानकिंग की सड़कों पर से लाशें हट गयी थीं। इन व्यापारियों ने चीनी बालकों की पीठ पर हाथ फेरा और उन्हें ढाढ़स दिया।

इसके बाद नया वर्ष आया। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में रहनेवाले लोगों को जापानी अधिकारियों ने आदेश दिया कि वे जापानी झण्डे को लेकर जुलूस निकालें। इस आज्ञा का पालन किया गया और ऐसे ही समय उनके फिल्म भी उतारे गये जिनका विदेशों मे प्रदर्शन करके यह दिखाने की कोशिश की गयी है कि चीननिवासी जापान की विजय से प्रसन्न हैं! नानकिंग में जापानियों की बर्बरता चरम सीमा पर पहुँच गयी, पर मार्च मे टोकियो से रेडियो द्वारा समाचार प्रचारित किया गया—"नानकिंग में हत्या तथा सम्पत्ति के नाश के लिये चाग काइशक की सेना के जो सिपाही जिम्मेवार थे वे गिरफ्तार कर लिए गये और उन्हें फांसी पर लटका दिया गया। अब नानकिंग में पूर्ण शान्ति है। जापानी सेना ३ लाख निराश्रयों के भोजन की व्यवस्था कर रही है।"

नानकिंग में जापान की काली करतूतोंका यह कच्चा चिट्ठा है।

हिन्दुस्तानी शिष्टाचार

[लेखक—श्री पं० रामनारायण मिश्र काशी]

(मार्च ३८ के अंक से आगे)

(५१)—प्रातःकाल उठते ही एक बार शौच अवश्य जाना चाहिये। मल-मूत्र को कभी भी रोकना नहीं चाहिए। शाम को भी एक बार शौच होआना अच्छा है। शौच से लौटने मे जल्दी मत करो।

(५२) शौचादि के बाद कम से कम तीन बार सूखी मिट्टी से बायाँ हाथ धो डालो और तब दोनों हाथ। जिस बरतन से आबदस्त लो उसको माँज डालो। इसी काम के लिए यदि वह अलग रक्खा हो तब भी उसको कभी कभी माँजते रहना चाहिये। अपना हाथ पहिले धोकर तब उस बरतन को माँजो।

(५३) हर जगह लघुशंका करने मत बैठ जाओ। इसके लिए कहीं आड़ में उचित स्थान ढूँढ़लो। घर लौटकर, लघुशंका करने की आदत डालो तब साधारणतः बाहर ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी।

(५४) जहाँ तक हो सके आबदस्त नदी, तालाब आदि में मत लो। पानी साथ ले जाओ। नदी, नाले या तालाब मे आबदस्त लेकर उसके पानी को गंदा मत करो। आबदस्त बाँए हाथ से लेना चाहिये।

(५५) झूठे पानी का छींटा किसी आदमी या बरतन पर नहीं पड़ना चाहिये।

(५६) बंद दर्वाजो के अंदर रहना और सोना अच्छा नहीं। खुले बरामदे या खिड़कीदार कमरे में रहना या सोना चाहिये। कमरों की खिड़कियाँ या दूसरे सूराख हमेशा बंद मत रखो।

(५७) मुँह ढाककर मत सोओ।

(५८) मोज़े पहनकर मत सोओ।

(५९) सोनेवाली जगह को असबाब से मत भर दो और न उसमें जलता हुआ लप रखो। ताज़ी हवा आने के लिए उसको खुला रखो।

(६०) तन्दुरुस्ती के लिए साधारणतः सात आठ घण्टा सोना चाहिये। बच्चों को ज्यादः सोना चाहिये। प्रातःकाल बहुत सबेरे उठ जाना चाहिये और उसी हिसाब से रात को जल्दी सो जाना चाहिये।

(६१) सोये हुए आदमी को कुसमय बिना मतलब न जगा दो, जहाँ कोई सोया हो वहाँ धीरे से आओ।

(६२) लेटकर मत पढ़ो। पढ़ते समय सीधे बैठो। खाना खाकर तुरन्त पढ़ने मत लगो।

(६३) शामके समय मत पढ़ो। अंधेरा होने पर और कम रोशनी में मत पढ़ो।

(६४) पढ़ने के समय रोशनी तुम्हारे बाएँ या पीछे से आनी चाहिये। यदि रोशनी सामने हो तो काग़ज़ या कपड़े से उसकी चमक कम करलो।

(६५) बच्चों को मत रुलाओ। उनको हरवक़ गोद मे न लिए रहो। जितनी जल्दी हो सके, उनको अपने बल पर खड़ा होना सिखलाओ। उनको अपने हाथ-पैर हिलाने दो। वे कभी गिर भी जायँ तो तुरत उठाने मत दौड़ो। उठाओ भी तो उनका मन किसी दूसरी तरफ़ फेरदो। बच्चोंको चूमना अच्छा नहीं।

(६६) भूत प्रेत या दूसरी डरानेवाली कहानियाँ बच्चों को मत सुनाओ।

(६७) रहने का मकान बहुत साफ रखना चाहिए। उसमें रोज़ झाड़ू लगानी चाहिये, कहीं जाला लगाहो तो छुड़ादेना चाहिये। उसका फ़र्श कभी कभी धुलाना चाहिये। मकान कच्चा हो तो उसको लिपवाते रहना चाहिये। चौकी, बक्स, आलमारी, मेज़, कुर्सी कभी कभी अपनी जगह से हटाकर ऊपर नीचे से अच्छी तरह साफ करनी चाहिये। मेज़ में दराज़ हो तो उसको भी अन्दर से साफ़ करना चाहिये। याद रखो, गर्द से बचना तन्दुरुस्ती के लिए बहुत ज़रूरी है। मकान की सजावट में विलासिता का भाव नहीं होना चाहिये। मकान मे महापुरुषो के चित्र होने चाहियें।

(६८) जिस प्रकार हो खटमल पिस्सू, जूआँ (जूँ) मक्खी, मच्छरों को दूर रक्खो।

(क्रमशः)

Muslim Dissolution of Marriage Bill

Sjt, Vinayak Savarkar, President of the All-India Hindu Mahasabha has issued the following statement on the Bill, introduced in the Central Legislative Assembly —

"I feel it my duty to voice forth the opinion of the Hindu public in general as evinced in a number of resolutions passed at their meetings and institutions throughout the country and enter in a strong protest against the Bill entitled "Moslem Dissolution of Marriage Bill" and introduced in the Central Legislature by Mr Kazimi The Bill is detrimental to the interests of the Nation in general and Hindu Society in particular.

'It is detrimental to the Hindus in more than one ways, firstly it is an unwarranted encroachment by a non-Hindu member on the Personal Law of the Hindus Secondly, although the Bill professes to enable Moslem women to secure a divorce and thus liberate them from the shackles which hold them bound to a marital tie against their free will according to the present Mohammedan law and practice still, inconsistently enough, it seeks to chain them down to share the bed and board of a Moslem husband whom they may hate and wish to divorce by imposing on them new fetters under clause 5 despite the Muhammedan religious and legal injunctions to the contrary

"The clause lays down "the conversion of the married Moslem woman to a faith other than Islam shall not by itself operate to dissolve her marriage" But according to the Mohammadan Law and Shariyat in force till now, the conversion of Moslem woman to any other religion secured for her an automatic dissolution of marriage with her Moslem husband

"Now, it is a matter of common knowledge which has been substantiated in hundreds of cases in courts of Justice that organised and stay attempts on the part of the Moslem fanatics have been continously going on to kidnap, capture or abduct unguarded Hindu women to make them embrace Islam per force and hustle them through a sort of marriage with Muslims, the records of which could easily be fabricated in a fanatical Kazi's register Whenever some of these women were either rescued or escaped and were reconverted to Hinduism they were up to this time automatically free from the enforced Moslem marriage as according to the Moslem Low a woman's conversion to any non-Moslem religion amounted by itself to a dissolution of her marriage with her former Moslem husband But if under this Bill the Hindus are made to lose this valuable right which they have secured through court decisions, these unfortunate Hindu women who fall victims to Mohammendan fanaticism canaot be freed from the clutches of even such forced marriage with Moslem even though they are

secured or ascaped and got reconverted to Hinduism of their own free will That will clearly show that this Bill is not so much a genuine attempt to liberate Moslem woman from the tie of marriage with Moslem husbands, they hate, as it is a deliberate attack against the rescue work of the Hindu Sanghatanist and the Suddhi Movement

"For the same reasons Christians and other non-Moslem communities other than Hindus will also suffer as Moslem women embracing any such non-Moslem faith of free will, will be unable to shake off their chains of a former Moslem wedlock under this new Bill

The Bill is also anti-national for the clause 6 runs as follows—

"Subject to the provisions etc" a suit for the dissolution of the marriage by a married Moslem woman shall be filed in the proper court provided that the presiding officer of that court is a Moslem And again "appeals from the decision of the trying courts shall lie to the High Court and shall be heard and decided by a Moslem judge of that court"

"Now this innovation is bound to be detrimental to the unity and cohesion of the National State, as the attempt amounts to nothing short of introducing the communal virus in the judicial administration of the state Are we to have as many courts as there are creeds and religions in the land?—each competent only to try the cases of those to whose creed or religion the trying judge belongs? The distrust that the Bill shows towards non-Moslem judges amounts to a covered condemnation against that class who have ever been known to deal even-handed justice without any distinction of creed or religion

"For these and other objections against this Bill it is the duty of every Nationalist member in general and Hindus and Christians in particular to oppose it as it stands. Even in the interest of civil liberty alone the Bill ought also to be condemned by every member who is a free thinker and follows no religious persuasion."

Suicidal Policy of Nizam's Government.

Venue for Aryan Congress selected

Mr. S Chandra, Secretary of the Aryan Defence Committee, has returned to Delhi after his tour of Hyderabad State, which was undertaken in company of the Hon'ble Mr G S, Gupta, Speaker of C P. Assembly and President of the International Aryan League. The visit was in connection with the ill-treatment meted out to the Aryasamajists in the State. Hon'ble Mr Gupta had interviews with Sir Akbar Hydari and other high officials in that connection Mr Chandra saw the Hyderabad Arya Samajists and Hindus under-trial prisoners at the Central Jail.

From Hyderabad, Mr Chandra proceeded to Sholapur and Barsi to select the place and site for holding the Session of All-India Aryan Congress. The place and the site have been selected by him, which, together with the dates for the ensuing Session

will be duly announced after the final approval of the Working Committee of the Aryan League, which is meeting shortly

On his way back, Mr Chandra interviewed Mr V D Savarkar, President of the Hindu Mahasabha at Bombay and His Holiness Jagatguru Shankaracharya (Dr Kurtkoti) at Nasik and explained to them the existing condition of Hindus in the Nizam's State and discussed the situation arising out of it. He also addressed public meetings at both the places and visited the Bhonsla Military Collage at Nasik

In the course of a statement to the press, Mr. Chandra says, ' Let us hope that after the interviews which the Hon Mr Gupta had with Sir Akbar Hydari and other ministers of the Nizam's Government, the police and other district officials will treat the Aryas and their religious activities in such way as to regain their lost confidence The Aryan League have been trying for the last several years to create good relations between the Arya Samaj and the Nizam's Government by conciliation and good-will, but it is really very deplorable that alike response had never been forth-coming from the other side. If the Nizam's Government do not change their communal attitude towards Aryas and Hindus and respect their religious activities, they (Nizam's Government) will be following a suicidal policy and will be held responsible for any future unfortunate consequences.'

"Let the Nizam's Government and our Muslim friends clearly understand that Arya Samaj is neither anti-Nizam nor anti-Islam, but it is anti-evil, wherever evil is, even be it among its own kith and kin"

Sad demise of Rajratana Master Atma Ram ji

Professor Sudhakar, Secretary, International Aryan League has issued the following statement to the Press on the sad demise of Pandit Atma Ram —

Rao Bahadur Rajyaratna Rajyamitra Pandit Atmaram was a great figure in the circles of Arya Samaj In his early days, his leadership was undisputed. As a scholar, writer, speaker and debater he had few rivals He profoundly influenced the Arya Samaj policy in regard to its prachar work Later on, he migrated to Baroda, where he founded the great institution, known as Kanya Mahavidyalaya Apart from his educational work in the State, he did yeoman's service to the cause of Depressed Classes. His popularity in the State won him many titles and profound personal regard from His Highness Gaekwar of Baroda himself With his passing away, has passed away the great solitary figure of one of the oldest and the most popular workers of Arya Samaj. It is a great consolation to learn that the late Pandit, popularly known as Master Atmaram Amritsari, leaves behind him great social workers in the person of his sons

आर्य-प्रतिनिधि-सभा की स्वर्णजयन्ती की तय्यारियाँ

महर्षि दयानन्द ने अपना अन्तिम जीवन राजस्थान के सुधार मे लगाया था और उनका बलिदान भी राजस्थान के केन्द्र अजमेर नगर में हुआ था। सारे प्रान्त में उनके वेद-प्रचार के कार्य को सचालन करने के लिए आर्य-पुरुषों ने श्रीमती आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान व मालवा आज से ५० वर्ष पूर्व स्थापित की थी। इन ५० वर्षों की स्मृति स्वर्णजयन्ती के रूप में इस वर्ष कार्तिक सुदी १३ से मार्गशीर्ष कृष्णा २ तदनुसार ता० ५ नवम्बर से ता० ६ नवम्बर सन् १६३८ तक श्री स्वामीजी के बागमे बडे ही समारोह से मनायी जायेगी। इस सुअवसर पर अनेक सम्मेलन होंगे। टूर्नामेण्ट होंगी और भारत के प्रसिद्ध देशभक्त तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान् पधारेंगे। इतना ही नहीं, राजस्थान व मालवा के सहस्रों नर-नारी "भविष्य मे हमारे प्रान्त में वैदिकधर्म प्रचार किस प्रकार करना चाहिये ?" इस विषय पर विचार कर बडा ही उत्तम कार्यक्रम बनारेंगे, जिससे प्रान्त में धर्मनिष्ठ, कर्तव्य-परायण वीर योद्धा उत्पन्न होकर "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का झण्डा लेकर समग्र संसार को सुखी बनाने की सफल योजना करेंगे। यह स्वर्णजयन्ती कोरी व्याख्यानबाजी और प्रदर्शिनी का मेला न होगा, बल्कि इसके लिए ठोस और रचनात्मक कार्य अभी से आरम्भ हो गया है। २५ हजार की लागत से सरस्वतीभवन महर्षि की निर्वाण स्थली मे बन रहा है। १५ हजार रुपयों का चन्दा लिखा जा चुका है, बाकी १० हजार रुपयों के लिए प्रयत्न हो रहा है।

५० हजार रुपये स्थायी कोष मे जमा करके वेद प्रचार के कार्य को स्थायी बनाने का आयोजन आरम्भ हो गया है। इस सुअवसर पर एक बडे काम की आयोजना हो रही है। गत ५० वर्षों मे हमने क्या क्या कार्य किया है, उसके लिए आर्य-प्रतिनिधि सभा राजस्थान व मालवा का इतिहास लिखने का आयोजन हो रहा है। इस इतिहास में आर्यप्रतिनिधि सभा की स्थापना, इसके साथ सम्मिलित समाजों का संक्षिप्त इतिहास होगा।

आर्य-बहिनों और भाइयो ! यह स्वर्णजयन्ती का अवसर ५० वर्ष मे आया है। अत हम आपको सादर सस्नेह अजमेर पधारने के लिए निमन्त्रित करते हैं और प्रार्थना करते है कि आप इस महायज्ञ में तन-मन-धन से सहायता देकर इसको सफल बनायें।

जैसी कि आर्य नरनारियों से आशा थी प्रान्त भर के आर्यों ने स्वर्णजयन्ती के कार्य को अपने कन्धों पर उठा लिया है, स्वर्णजयन्ती का कार्य सारे प्रान्त में बड़े उत्साह से चल रहा है। पचीस

सहस्र की लागतवाले सरस्वती भवन के निर्माण कार्य के अलावा वैदिक सिद्धान्तों पर ग्रन्थ लिखाये जाने का आयोजन हो रहा है, सार्वदेशिक सभा के प्रसिद्ध नेता श्रीमान् नाराय ण स्वामीजी महाराज इस शुभ अवसर पर एक बहुत ही उपयोगी पुस्तक 'कर्मरहस्य' लिख रहे हैं। श्रीमान् डा० सत्यप्रकाश जो प्रयागवालों से अङ्गरेजी में "A critical study of Daya Nand's Philosophy" नामक पुस्तक लिखने का आयोजन हो रहा है।

संस्कारोपसभा, संन्यासी मण्डल आदि सभी अपने-अपने कार्य मे जुट हुए हैं और स्वर्ण-जयन्ती को हर प्रकार स सफल बनाने के लिए तन, मन व धन से प्रयत्नशील हैं। स्थान स्थान स न केवल वैदिकधर्म का सन्देश सुनाते हुए आर्यवीरों के जत्थे पैदल ही आवेंगे, बल्कि इस स्वर्ण अवसर पर आर्य पुरुष अपनी सन्तानों के यज्ञोपवीत संस्कार कराने के लिए भारी संख्या मे पधारने की सूचना दे रहे है। वास्तव मे यज्ञोपवीत आदि संस्कार सबसे अधिक आर्य नर-नारियों की उपस्थिति मे कराने का दूसरा अवसर है आगामी ५० साल मे मिलना अति कठिन है।

श्रीमान् प्रो० जगदीश जी इस अवसर पर अनेक खेलकूदों का आयोजन कर रहे है। राजस्थान के प्रत्येक आर्य स्कूल के बालक-बालिकाएँ उन टूर्नामेंटों मे भाग ले सकें, ऐसा प्रबन्ध व लिखा-पढ़ी चालू है।

गत सप्ताह की "स्वर्णजयन्ती की तैयारियाँ" शीर्षक लेखमें आर्यसमाजों से अपील की गयी थी कि वे अपनी-अपनी समाजो के गत ५० वर्षों के विवरण भेजें, ताकि इतिहास के निर्माण कार्य मे सुगमता मिले।

प्रिय आर्य-भाइयो और बहिनो! स्वर्णजयन्ती का स्वर्णमय अवसर परमात्मा की असीम कृपा से वैदिकधर्म का सन्देश प्रान्त के कोने कोने मे फैलाने के लिए हमे मिला है। इससे लाभ उठाइये और इस जयन्ती को सफल बनाने के लिए कटिबद्ध होकर ऋषिऋण उतारिये और महर्षि दयानन्द की सच्ची जय अजमेर नगर मे ता० ५ से ६ नवम्बर तक पधारकर बोलिये।

चाँदकरण शारदा,
प्रचार-मन्त्री।





काम और नाम

[लेखक—श्री डॉक्टर युद्धवीरसिंह जी, उपमन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा उपप्रधान भारतवर्षीय आर्यकुमार-परिषद्]

आर्यसमाज में और अन्य सार्वजनिक संस्थाओं में काम करनेवालों में नाम की इच्छा बड़ी जल्दी उत्पन्न हो जाती है। वास्तव में यह एक ऐसी कमज़ोरी है जिसमें साधारण पुरुष तो तुरन्त ही फँस जाते हैं; परन्तु महापुरुष भी शायद अन्त तक मुश्किल से ही इससे पीछा छुड़ाने में समर्थ होते हैं। काम करने से यश होता है—नाम होता है, यह तो स्वाभाविक ही है, मगर उस यश या नाम की इच्छा करने से न सिर्फ काम में बाधा पड़ती है, बल्कि यश की इच्छा करनेवाला काम की अपेक्षा यश को ज्यादा चाहने लगता है और उसका स्वाभाविक नतीजा यह होता है कि वह काम को छोड़कर यश के पीछे भागता है—पथ भ्रष्ट हो जाता है और कभी-कभी यश और काम दोनों ही से हाथ धो बैठता है। हर काम करने से नाम नहीं होता, इसलिए ऐसे लोग केवल उन्हीं कामों को पसंद करते हैं जिनसे नाम हो।

आजकल प्रायः देखने में आता है कि हमारे समाज में काम की अपेक्षा लोगों को नाम की इच्छा अधिक है। दान है तो नाम के लिए; सभाओं का काम है तो नाम के लिए, धार्मिक, राजनैतिक और सामाजिक सेवा तक नाम के लिए होती है। पर यह बात है बुरी। नाम चाहनेवाले लोग काम की तरफ़ ध्यान नहीं दे सकते। इसलिए महापुरुषों ने यह बतलाया है कि नाम की इच्छा को छोड़कर ही काम करना चाहिये। जिस समाज और जिस जाति में जब नाम को छोड़कर काम को करनेवाले पैदा होते हैं तब वह जाति या समाज उन्नति कर जाता है। जातियों के इतिहास में तो उन लोगों के नाम का पता भी नहीं लगता, जिन्होंने जातियों को निर्माण किया। सुन्दर-सुन्दर मकानों की नीवों के पत्थर और ईंटें तो कभी दिखाई भी नहीं देतीं। ताजमहल जैसी सुन्दर और खूबसूरत इमारत

को देखकर उसकी नींव और ईंटों की कौन प्रशंसा कर सकता है? मगर क्या किसी भी सुन्दर विशाल भवन की नींव में पड़े हुए पत्थरों की क़ीमत उसके ऊपर लगे हुए पत्थरों से कम है? हरगिज़ नहीं, बल्कि ज्यादा है। नींव के पत्थर तो आधार हैं। उनके बिना तो सुन्दर भवन खड़े हो ही नहीं सकते।

ठीक इसी प्रकार वह हज़ारों युवक कार्यकर्त्ता होते हैं जो देश और धर्म के प्रेम से प्रवाहित होकर नाम की इच्छा को बिल्कुल छोड़कर काम में जुटकर जातियों का निर्माण करते हैं। आज आर्यसमाज में तो ऐसे कार्यकर्त्ताओं का ह्रास सा हुआ मालूम होता है। अपने नाम की इच्छा से समाजों में जगह जगह झगड़े पैदा होगये हैं। झगड़ों का मूल कारण काम पर से दृष्टि हटाकर नाम की कामना करना है। आर्यसमाज के गौरव की जो हानि होती हमें दीखती है उसका मूल कारण है—आर्यसमाज के आपस के झगड़े और इन झगड़ों का कारण अपने-अपने नाम की इच्छा रखना है। मेरा नाम हो—यह अहंकार का भाव ही हमको नीचे गिराता है। आज आर्यकुमारों से यही नम्र निवेदन है कि यदि वे ऋषि दयानन्द के द्वारा आरम्भ किये हुए इस आर्यसमाज रूपी महायज्ञ द्वारा अपने देश और संसार का कुछ कल्याण करना चाहते हैं तो उन्हें यह पाठ पढ़ लेना चाहिये कि काम करना और नाम की इच्छा बिल्कुल न करना। यदि आर्यकुमारों ने यह पाठ न पढ़ा तो यह महान् यज्ञ नष्ट-भ्रष्ट हो जायगा और जो लड़ाई झगड़ों की आग आज आर्यसमाज में सुलगी हुई है वह इस दयानन्द की लहराती हुई खेती को भस्म कर देगी। क्यों, क्या आर्यकुमार नाम की इच्छा को न छोड़ सकेंगे।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि आज अपने बड़ों को हम ज़रासा भी काम करके उसका सब जगह ढोल पीटते देखते हैं। ऐसा भी देखते हैं कि काम बहुत थोड़ा और उसका प्रोपैगैण्डा (नाम) बहुत ज्यादा। आर्यसमाज में ख़ास कर यह दोष बहुत दिखाई देगा। मगर यह सब होते हुए भी आज अपने और अपने समाज के कल्याण के लिए आर्यकुमारों को ऐसे लोगों की नक़ल न करके उन्हें अज्ञात महापुरुषों का ध्यान करना चाहिये जो बिना किसी नाम के अपना काम कर गये हैं। हमें अपने काम का ढोल पीटने—अपने काम के एवज़ में पुरस्कार या प्रशंसा प्राप्त करने की भावना को बिल्कुल छोड़ देना चाहिये। बस यही मन्त्र याद रखिए—काम करना है नाम नहीं चाहना।"

परिषद् की जयन्ती की तिथियाँ

परिषद् की जयन्ती २४वें भारतवर्षीय आर्य कुमार सम्मेलन के रूप में बिजनौर में ३० सितम्बर तथा १ और २ अक्तूबर १९३८ को मनाई जावगी। आर्यसमाज के प्रमुख प्रमुख नेता जयन्ती पर पधारेंगे और आर्यकुमारों के लिए इनके सुन्दर और बहुमूल्य उपदेशों से लाभ उठाने का यह अवसर होगा। इसलिए उन्हे चाहिये कि अधिक से अधिक संख्या में जयन्ती पर पधारें और उसे सफल बनाये।

आर्यकुमार सभाओं को स्वागतकारणी की निम्न बातोंका उत्तर भी अब शीघ्र ही देदेना चाहिये।

१—सभा के प्रतिनिधियों के नाम तथा शुल्क?

२ निम्न विषयों में से किसी एक पर अपनी सभा के आर्यकुमारों के लेख—

पुरुष-स्त्री में भेद और उनकी वास्तविक उन्नति

[लेखक—श्री मास्टर आत्माराम जी]

पुरुष और स्त्री में भेद

सृष्टि में एक भी परमाणु बिना विशेष उद्देश्य के नहीं है। स्त्री और पुरुष की मुख्य बनावट बिना किसी उद्देश्य के नहीं है। सबसे बढ़कर बात यह हैं कि एक-दूसरे की मुख्य बनावट एक-दूसरे को आकर्षण अथवा प्रेम करती है और यही प्रेम का अटूट सम्बन्ध है जो स्त्री पुरुष के मेल (विवाह) की नींव है। यदि पुरुष और स्त्री के शरीर की बनावट में भेद न होता तो उनमें अटूट प्रेम कैसे उत्पन्न हो सकता। इस हेतु सृष्टिकर्ता ने इस मनोहर रचना से परस्पर प्रेम की अटट शिक्षा भरदी है। इस विशेष बनावट का कारण पू जन्म के कर्म हैं। इसलिए मुख्य प्रकार के कर्मों को मुख्य बनावट ही उत्तमता से कर सकती है। सन्तानोत्पत्ति गृह का प्रबन्ध इत्यादि कर्म स्वभावतया स्त्री ही कर सकती है और श्रम तथा शत्रुओं से परिवार की रक्षा करना पुरुष का ही काम है।

वास्तविक उन्नति

वास्तविक उन्नति वह है जिससे स्त्री उन्नति करके पूर्ण उन्नत स्त्री बने।

वे मनुष्य बड़ी गलती पर हैं जो स्त्रियों की की उन्नति चाहते हुए उनके स्त्रीत्व के गुणों और कार्यों को नष्ट करके उन्हें पुरुष बनाने के वृथा यत्न में हैं। स्त्रियों को स्वत्व मिलने चाहिए, इसका अभिप्राय यह है कि वे स्वत्व जो पुरुष समाज ने उनके छीन रखे हैं वे उन्हें देने चाहिए, परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि स्त्रियों को पुरुष बनाने का यत्न किया जाय और जो लोग पुरुष का पुरुषत्व नष्ट करके उसकी उन्नति करना चाहते हैं, वे भी कम गलती पर नहीं हैं। इसलिए सच्ची शिक्षा यह है कि जिसके द्वारा स्त्री उन्नति करती हुई पूर्ण स्त्री और पुरुष उन्नति करता हुआ पूर्ण पुरुष बन सके तथा स्त्री-पुरुष परस्पर एक दूसरे की सहायता करने की योग्यता प्राप्त कर सकें और गृहस्थाश्रम में एक दूसरे का हाथ बँटाते हुए मोक्ष-मार्ग में पग बढ़ाते हुए चले जायें।

—

१—क्या आर्यकुमारों को राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेना आवश्यक है?

२—भारत की आधुनिक उन्नति में ऋषि दयानन्द का स्थान।

३—भारत में स्वदेशी का प्रचार किस प्रकार हो?

४—भारतीय युवकों के लिए वायुयान तथा सैनिक शिक्षा अनिवार्य्य हो।

५—भारत के लिए देवनागरी ही राष्ट्रीय भाषा होना क्यों आवश्यक है?

जयन्ती पर आर्यकुमारों की एक डिबेट भी होगी जिसका नियम होगा:—

क्या पश्चिमीय सभ्यता का अनुकरण भारतीय नवयुवकों के लिए हितकारी है?

लेखों में तथा डिबेट में प्रथम तथा द्वितीय आनेवाले छोट तथा बड़े कुमारोंको पृथक् पृथक् पारितोषिक मिलेंगे।



हैदराबाद और आर्यसमाज

हमे यह जानकर प्रसन्नता होती है कि आर्य-जगत् ने इस समय अपनी आँखों को हैदराबाद रियासत के मजलूम आर्य-भाइयों की ओर लगाया है। हम कई मास से निरन्तर इस पत्र में उनकी दयनीय दशा की ओर ध्यान दिलाते रहे हैं। अब जब कि आर्य-जगत् जागृत हो चुका है, हमे तनिक भी सन्देह नहीं कि हैदराबाद मे रियासत की ओर से जो अत्याचार आर्यसमाज तथा हिन्दू-समाज पर किये जारहे हैं उनका शीघ्र अन्त होने वाला है। पञ्जाब के प्रसिद्ध आर्य पत्रों ने इस विषय पर घोर आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया है। स्थान-स्थान के आर्यसमाजों से, संस्थाओं तथा व्यक्तियों की ओर से जो पत्र सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे आ रहे हैं, उनसे प्रतीत होता है कि आर्यों का आत्माभिमान जाग उठा है और वे अपने धन-जन से हर प्रकार की सेवा, सहायता तथा कुर्बानी के लिए तैयार हैं।

आर्यसमाज ने अपने जीवन-काल के अन्दर अनेक अत्याचारों का मुकाबिला किया है और कभी भी अपने सिर को अत्याचारियों के सामने नहीं झुकाया। अब भी हैदराबाद रियासत मे कई आर्य-भाइयों ने अपने बलिदान द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि वे अपने धार्मिक स्वत्वों की रक्षा के लिए सदा अपनी जान की बाजी लगाने को तैयार हैं। जिस निर्भयता से इन भाइयों का वध किया गया है उसको जानकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं, परन्तु जिस धैर्य से इन भाइयो ने अपनी इस घोर परीक्षा में अपने आर्यत्व का परिचय दिया है उसको जानकर हृदय गद्गद् हो जाता है और हमारा मस्तिष्क अभिमान से ऊँचा उठ जाता है।

हैदराबाद रियासत मे हमारे धार्मिक स्वत्वों को बहुत अर्से से कुचला जा रहा है और उनके सम्बन्ध मे जब कभी हमने समाचार-पत्रों मे आवाज उठायी तो कतिपय कांग्रेसी समाचार-पत्र यही कह देते थे कि ये बातें साम्प्रदायिक हैं और इन बातों की ओर ध्यान देना केवल साम्प्रदायिक उलझनो मे पड़ना है। हमे इस बात का अत्यन्त दुःख है कि यह लोग धार्मिक स्वत्वो को नागरिक स्वत्व नहीं समझते। वस्तुतः धार्मिक स्वत्व भी नागरिक स्वत्व ही हैं। अब जब कि श्री नरीमान के प्रवेश तथा श्री भूलाभाई देसाई के व्याख्यान पर हैदराबाद मे प्रतिबन्ध लगाये गये तो कांग्रेस जगत् मे हलचल मच गयी कि यह नागरिक स्वत्वों का घोर अपमान है। इन प्रतिबन्धों का आवश्यक परिणाम यह होगा कि कांग्रेस भी अपने दल बल सहित नागरिक अधिकारों के प्रश्न के आधार पर हैदराबाद में आन्दोलन शुरू करेगी। परन्तु हमे इस बात की प्रतीक्षा की कोई आवश्यकता नहीं। हमारा मार्ग साफ है। हम

अपने अधिकारों को सुरक्षित रखना स्वयं जानते हैं। हमने पटियाला रियासत के अन्दर जिस प्रकार अपने अधिकारों की रक्षा की थी उसको सारा जगत् जानता है। आर्यसमाज ने अपने इस छोटे से जीवन-काल के अन्दर इस बात का पर्याप्त सबूत दे दिया है कि संसार की कोई शक्ति आर्यसमाज को अपने जन्मसिद्ध अधिकारों से वञ्चित नहीं कर सकती।

आर्य-जनता को विदित हो चुका है कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान माननीय श्रीयुत घनश्यामसिंह जी गुप्त हैदराबाद तशरीफ ले गये थे और वहाँ उन्होंने कई रोज रहकर आर्य-समाज की वर्तमान स्थिति का अच्छी तरह अध्ययन किया। उन्होंने हैदराबाद के प्राइम मिनिस्टर सर अकबर हैदरी तथा अन्यसभी मिनिस्टरों से मिल-कर आर्यसमाज की स्थिति के सम्बन्ध में विचार-विनिमय किया और उनपर साफ-साफ प्रकट किया कि यदि आर्यसमाज पर मुसलमानों तथा रियासत के कर्मचारियों की इसी प्रकार ज्यादतियाँ जारी रहेंगी तो आर्यसमाज को अपनी रक्षा के लिए स्वयं जुट जाना पड़ेगा और उसकी सारी जिम्मे-वारी स्वय निज़ाम-सरकार पर आयद होगी।

हमने पिछले अङ्क में इस बात की सूचना दे दी थी कि हम एक बृहद् आर्य-कांग्रेस की आयोजना कर रहे हैं। श्रीयुत शिवचन्द्र जी को हैदराबाद का दौरा लगाने तथा कांग्रेस के लिए उपयुक्त स्थान के चुनाव के लिए भेजा गया था। वह इस समय वहाँ से लौट आये हैं और सार्व-देशिक सभा की आगामी अन्तरङ्ग सभा में वे अपनी रिपोर्ट पेश करेंगे। हमें आशा है कि हमारे पाठक कांग्रेस की तिथियों के निश्चित हो जाने के पश्चात् उसके अधिवेशन को सफल बनाने के लिए हमे पूरी सहायता देंगे। यह हर्ष की बात है कि अब भी कई समाजों ने धन-राशि द्वारा सभा को इस बात की प्रेरणा की है कि धन की कमी के कारण इस अधिवेशन की सफलता मे कोई कमी न आनी चाहिए। हैदराबाद की सीमा पर एक बृहद् अधिवेशन को सफलतापूर्वक निभाने के लिए पर्याप्त व्यय होगा और इस व्यय-भार को आर्य जनता को ही अपने कन्धों पर उठाना है।

इस समय एक नई कठिनाई हमारे सामने उपस्थित हो गयी है। श्री भूलाभाई देसाई ने जो हैदराबाद के आर्य तथा हिन्दू-भाइयों पर लगाये गये कत्ल के अभियोग मे उनकी पैरवी कर रहे थे, इस आधार पर इस अभियोग की पैरवी छोड़ दी है कि हैदराबाद में उन्हें नागरिक अधिकारों की स्वतन्त्रता नहीं दी गयी। उनके इस प्रकार अभियोग की पैरवी छोड़ देने पर अब हमारे भाइयों को कुछ और प्रबन्ध करना होगा। इसके लिए भी यदि आर्य जगत अपने अन्दर से किसी प्रसिद्ध फौजदारी वकील को हैदराबाद भेज सके तो यह बड़े गौरव की बात होगी अथवा यदि वह सार्वदेशिक सभा के हाथों मे इतनी धन-राशि सौंप दे कि वह किसी प्रसिद्ध वकील को वहाँ उजरत देकर भेज सकें तो भी हैदराबाद के आर्यसमाजियों की पर्याप्त सहायता हो जायेगी। गुलबर्गा में भी इसी प्रकार एक क़त्ल का अभियोग चल रहा है,

जिसमें कई निरपराध आर्य भाई पकड़े गये हैं। उनकी सहायता के लिए सार्वदेशिक सभा ने श्रीयुत मलिक रामचन्द्र खन्ना, बी० ए०, एल-एल० बी० वकील, मुल्तान-निवासी को भेजा है। जो समाचार वहाँ से प्राप्त हुए हैं उनसे विदित होता है कि उनके कार्य से वहाँ के भाइयों को पर्याप्त सहायता मिल रही है। आर्य भाइयों को यह जान कर भी प्रसन्नता होगी कि खन्ना जी अपने भाइयों की निःशुल्क सेवा कर रहे हैं।

हमें आशा है कि आर्य-भाई आनेवाली कॉंग्रेस के लिए अभी से तैयारियाँ शुरू कर देंगे।

स्वर्गीय मास्टर आत्माराम जी

श्री राजरत्न मास्टर आत्माराम जी की मृत्यु का समाचार आर्य-जगत में बड़े दुःख के साथ सुना जायेगा। श्री मास्टर जी की गत कई वर्षों से शारीरिक अवस्था ठीक न थी और वे गत कई मास से रोग शय्या पर पड़े थे। उनकी रुग्णावस्था आर्य जगत् में बड़ी चिन्ता का विषय बन रही थी। गत २५ जुलाई को बड़ोदा के एक तार ने सहसा ही हम सबको शोक और नैराश्य में विलीन कर दिया।

यद्यपि माननीय मास्टर जी अब हमारे मध्य में नहीं हैं और उनका हम लोगों से पार्थिव सम्बन्ध टूट गया है, फिर भी उनका आत्मिक सम्बन्ध हमसे बना ही रहेगा। उनका व्यक्तित्व और उनकी सेवाएँ वस्तुतः ऐसी ही थीं। रोग-शय्या पर पड़ जाने और आर्यसमाज की सक्रिय प्रगतियों से बलात् पृथक् हो जाने पर भी राज्य-रत्न को आर्यसमाज और उसकी सेवा का ख्याल रहता था और उस अशक्तावस्था में भी अधिक-से-अधिक जो सेवा बन पड़ती थी, वे करने में नहीं चूकते थे। वस्तुतः उनकी मृत्यु में आर्यसमाज का एक अनन्य सेवक उठ गया है और उनकी मृत्यु आर्य समाज की एक बड़ी हानि है।

श्री मास्टर जी पंजाब प्रान्त के अमृतसर नगर के निवासी थे। आर्य जगत् में वे 'मास्टर जी' और 'अमृतसरी' के नाम से ही अधिक प्रख्यात थे। उनका सेवा-कार्य अमृतसर या उत्तर भारत से शुरू हुआ था और उसका अन्त उनके जीवन के साथ बड़ौदा अथवा मध्य-दक्षिण भारत में हुआ। जैसा प्रारम्भ शानदार था वैसा ही अन्त शानदार रहा। वे आर्यसमाज के उस काल के प्रतिनिधि थे जो बहुत उज्ज्वल समझा जाता है और अब जिसकी स्मृति ही बाक़ी रह गयी है। वे आर्यसमाज के चुने हुए सेवकों यथा स्व० पं० लेखराम जी, पं० गुरुदत्त जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी में से थे और इनमें से कई के सहकर्मी भी थे। वे आर्यसमाज के सौर मण्डल के एक नक्षत्र थे। उनकी मृत्यु में मंडल का एक नक्षत्र टूट गया है इसपर जितना दुःख और सन्ताप हो उतना ही कम है।

श्री मास्टर जी लेखक, विद्वान्, वक्ता और शास्त्रार्थ-महारथी के रूप में सेवा का उत्तम रिकॉर्ड छोड़ गये हैं। सेवा के प्रारम्भिक युग में वे एक उत्तम वक्ता और शास्त्रार्थी के रूप में हमारे सामने आते हैं। उन्होंने आर्यसमाज का काफी और उल्लेखनीय प्रचार किया। अनेक मार्के के शास्त्रार्थ किये। ईसाई और मुसलमानों के शास्त्रार्थी मास्टर

ओं का लोहा मानते थे। मौलाना सनाउल्ला साहब से तो, जो उनके समय के मुसलमानों के प्रसिद्ध शास्त्रार्थी थे, मास्टर जी की प्राय टक्कर रहा करती थी और वे इन्हें बड़ी उत्तमता से पछाड़ा करते थे।

श्री मास्टर जी ने लेखनी से तो अन्त समय तक आर्यसमाज की सेवा की है और बड़ा उत्तम साहित्य समाज को अर्पण किया है। वह साहित्य आर्यसमाज की अमूल्य सम्पत्ति है जिसपर वर्तमान और आनेवाली सन्तति बहुत कुछ निर्भर करेगी और लाभ उठायेगी। वैदिक विवाहादर्श सृष्टि विज्ञान, दिग् विजय संस्कारचन्द्रिका इत्यादि उस साहित्यके अमर रत्न हैं। उनके पढ़ने से पाठक के बहुत कुछ पल्ले पड़ता है। उनको पढ़कर मास्टर जी के विज्ञान और गहरे स्वाध्याय पर मुग्ध होना ही पड़ता है। स्व० लेखराम जी द्वारा संकलित स्वामी जी महाराज के जीवन की सामग्री को व्यव स्थित करने में श्री मास्टर जी ने बड़ा परिश्रम और उत्तमकार्य किया था।

आर्यसमाज के रचनात्मक कार्य मे भी उनका योग कम महत्वपूर्ण नहीं है। व पजाब की महात्मा पार्टी के एक स्तम्भ समझे जाते थे। वर्षों तक वे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के मन्त्री इत्यादि पदों पर कार्य करते रहे थे। गुरुकुल-वृन्दावन में भी कुछ समय पर्यन्त उन्हो ने मुख्याधिष्ठाता पद पर रहकर कार्य किया था। बड़ौदा में आर्य कन्या महा विद्यालय उनके रचनात्मक कार्यों का एक एक ज्वलन्त उदाहरण है।

वे शिक्षा विभाग के इन्सपेक्टर होकर बड़ौदा गये थे। शिक्षा विभाग की सेवा करते हुए उन्होंने आर्यसमाज की जो सेवा की इसका परिचय बड़ौदा की विभिन्न आर्य संस्थाएँ उनके परिवारकी वहां लोकप्रियता और राज्य की उदार धार्मिक नीति दे रही हैं। बड़ौदा में जिन लोगों ने आर्यसमाज की संस्थाएँ आर्य कन्या विद्यालय, आर्य आश्रम आर्यसमाज मन्दिर तथा आत्मपुर देखा हैं उन्हें ही मास्टर जी तथा उनके परिवार के बड़ौदे में कार्य का सही परिचय मिल सकता है। वहा के विशुद्ध आयसामाजिक वातावरण में चित्त बड़ा प्रफुल्लित होता है। आर्य समाज के प्रचार की दृष्टि से गुजरात के उर्वर प्रान्त में मास्टर जी तथा उनकी संस्थाओं और कार्यों ने आर्यसमाज के इतिहास मे एक अध्याय बना लिया है।

आर्यसमाज के जिन सेवको ने भारतीय नरशो के व्यक्तित्व और उनके राजकीय जीवन पर गहरी छाप डाली है उनमें मास्टर जी का स्थान बड़ा ऊँचा है। बड़ौदा नरेश पर मास्टर जी का बड़ा प्रभाव पड़ा था। वे राजमहलो में अपन रानियों और परिवार के सदस्यों के साथ मास्टर जी के उपदेश और प्रवचन सुना करते थे। बड़ौदा नरेश ने उन्हे राज्यरत्न और राजमित्र की उपाधियो से विभूषित करके उनकी सेवाओं का आदर किया था। बड़ौदा राज्य में समाज सुधार के जो उत्तमोत्तम कानून पास हुए हैं और वह समाज सुधार में सब रियासतो का जो अग्रणी बना हुआ है उसका श्रेय उदारचेता बड़ौदा नरेश, वहां की उदार सामाजिक नीति और उन सब पर मास्टर जी की छाप है।

श्री मास्टर जी अपने पीछे विधवा पत्नी ५ पुत्र, १ कन्या, पुत्र वधुएँ पौत्र, नाती, इत्यादि भरा पुरा

परिवार छोड़ गये हैं। वे सब ही योग्य और आर्य-समाज के प्रेमी हैं। श्री आनन्दप्रिय जी के रूप में उन्होंने अपना अच्छा और सुयोग्य उत्तराधिकारी छोड़ा है। वे कन्या महाविद्यालय इत्यादि के सफल सञ्चालन के साथ गुजरात प्रान्त मे आर्यसमाज को एक शक्ति बनाने के श्रेष्ठ कार्य में सलग्न हैं। हम समस्त आर्य जगत् की ओरसे उनके दुखी परिवार के इस महान् दुःख मे समवेदना प्रकट करते और श्री मास्टरजी के प्रति उपयुक्त विनीत श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए उनकी आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते है।

संस्कार-विधि का आन्दोलन

जब से धर्मार्य सभा ने सस्कार विधि के सम्बन्ध मे अपना प्रस्ताव स्वीकार किया है तभी से समाचार पत्रों में एक विशेष आन्दोलन छिड गया है सार्वदेशिक सभा की ओर से इस विषय के सम्बन्ध में एक विज्ञप्ति भी प्रकाशित की गयी थी। हम इस आन्दोलन को बुरा नहीं समझते। आर्य जनता का पूर्ण अधिकार है कि वह धर्मार्य सभा अथवा सार्वदेशिक सभा के निर्णयों के सम्बन्ध में अपनी सम्मति प्रगट करे। सभाओं को भी जनता की सम्मति के प्रकट होजाने पर अपने आगामी विचारों में तथा निश्चयो के करने मे उससे सहायता मिलती है परन्तु हमें यह अवश्य देखना चाहिये कि आन्दोलन कब और किस आधार पर होना चाहिए अन्यथा उस आन्दोलन का मूल्य 'कम्ब अज़ मौत वावैला' से बढकर कुछ न होगा।

दूसरी बात जिसकी ओर हम आन्दोलन करनेवालों का ध्यान खींचना चाहते है वह यह है कि वह अपने आन्दोलन के सम्बन्ध मे युक्तियुक्त वक्तव्य धर्मार्य सभा के मन्त्री के पास भज दें ताकि उनका आन्दोलन केवल सोडे की बोतल के फुलफुल के समान न रहकर सभा को अपने अन्तिम निर्णयों तक पहुँचने मे प्रकाश का काम दे सके।

तीसरी बात जिसकी ओर हम ध्यान खींचना चाहते हैं वह आन्दोलन करनेवालों के रवैये के सम्बन्ध मे है। इन्हीं दिनों हुनकी जो सभा देहली में हुई उसकी कार्यवाही को देखकर किसी भी गम्भीर आर्य भाई को प्रसन्नता नहीं हुई। सभा में आन्दोलन करनेवालो ने अपने प्रति पक्षियो के प्रति जो व्यवहार किया उसको देखकर बडी निराशा होती थी। आर्य भाइयों-को साधारण मुसलमान भाइयो की भाँति "इस्लाम खतरे मे है" ऐसी दुहाई मचाना और साधारण जनता के भावों को उकसाना शोभा नहीं देता। बात तो केवल इतनी है कि वर्तमान सस्कार-विधि के विधि भाग में कोई उचित परिवर्तन होना चाहिये अथवा नही। इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार हो सकता है और होना चाहिये। हमे इस बात का दुःख है कि आर्य समाज में भी मुल्ला प्रवृत्ति बढ रही है। यह प्रवृत्ति आर्य समाज की उन्नति को रोक देगी, क्योंकि यह ऋषि दयानन्द की स्प्रिट के सर्वथा विरुद्ध है। दयानन्द ने हमे 'दयानन्दी' बनने का उपदेश नहीं दिया है। वे हमेशा इस बात का प्रचार करते रहे कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी बुद्धि और विचार-शक्ति से काम लेना चाहिये और कभी लकीर का फकीर न बनना चाहिये।

हम आर्य्य-भाइयों से यह निवेदन करेंगे कि वे व्यर्थ के आन्दोलनों को न खडा करके अपने वक्तव्यों

को सीधा धर्मार्य सभा में भेजें, उन वक्तव्यों पर उनके भेजे हुए अनेक प्रतिनिधि, विद्वान्, पण्डित विचार करेंगे और किसी निश्चित परिणाम पर पहुँचेंगे। यदि उन निर्णयों से फिर भी उनको विरोध हो तो उनको उस समय आन्दोलन करने की पूरी आज़ादी होगी।

देवतावाद

देवतावाद, के विषय में आर्य-पत्रों में अर्से से काफ़ी आन्दोलन चल रहा है। हमारे पास भी पक्ष और विपक्ष के बहुत से लेख प्रकाशनार्थ आये हैं। हमने उन्हें सार्वदेशिक में प्रकाशित नहीं किया है इसलिए नहीं कि यह विवाद फ़िज़ूल है, बरन् इसलिए कि अख़बारों में इस प्रकार के आन्दोलन के हो जाने में हमें कोई लाभ नहीं देख पड़ता है। इस प्रकार के विचार और वाद विवाद के निर्णय का उपयुक्त स्थान हमारी सम्मति में समाचार-पत्र नहीं हैं बरन् इस प्रकार के मामलों पर विद्वानों को एक स्थान पर बैठकर शांतिपूर्वक विचार-विनिमय करना चाहिये और अपने सर्वसम्मत निर्णयों को प्रकाशित कर देना चाहिये।

देवृकामा या देवकामा

श्री० प० सातवलेकर जी ने एक पत्र हमारे पास प्रकाशनार्थ भेजा है। पत्र ऋग्वेद के म० १० सूक्त ८५ मन्त्र ४४ में आये 'देवृकामा' शब्द के स्पष्टकरण के सम्बन्ध में है। श्री० स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के ग्रन्थोंमें प्राय 'देवृकामा' शब्द लिखा गया है। प०जी ने अपने ऋग्वेद के ताजे संस्करण में 'देवकामा' शब्द व्यवहृत किया है। आर्य सज्जनों का पक्ष है कि पण्डित सातवलेकर जी ने इस शब्द का अशुद्ध प्रयोग किया है वह शब्द देवृकामा' होना चाहिये। पं० जी का पक्ष इस शब्द का 'देवकामा' प्रयोग शुद्ध है और उन्होंने मोक्षमूलर इत्यादि क ऋग्वेद में देवकामा' शब्द के प्रयोग के आधार पर अपने पक्ष का समर्थन किया है। इस विषय में भी हमारी यही सम्मति है कि आर्य विद्वानों को शांत चित्त होकर इस पर विचार करना चाहिये।

सराहनीय कार्य्य

आर्य-प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रांत की रिपोर्ट के अनुसार सभा के सुयोग्य प्रचारक श्री० प० सत्यव्रतजी शास्त्री के उद्योग से अलीगढ़ ज़िले में १२ ग्रामों के आठव क्षत्रिय विधर्मी (मुसलमान) होने से बचे। कहा जाता है कि मुसलमानों ने उन्हें ज़मीन की मुआफ़ी इत्यादि के तुच्छ प्रलोभन दिये थे।

श्री प्रधान जी और मुसलिम पत्र

कलकत्ते से निकलनेवाले स्टार पत्र ने मध्य-प्रान्तीय कांग्रेस सरकार पर कतिपय कट्टर सांप्रदायिकता के आक्षेप किये हैं जिन में से एक यह भी है कि मध्यप्रांत का लेजिस्लेटिव असेम्बली के अध्यक्ष (माननीय श्री० घनश्यामसिंह जी प्रधान सार्वदेशिक सभा) आर्यसमाजी हैं जिसका उत्तर भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री खरे ने यह दिया था कि अध्यक्ष पूर्णतया कांग्रेस सदस्य हैं और प्रत्येक कांग्रेस सदस्य व्यक्तिगत रूप में किसी भी धर्म्म का अनुयायी होने का अधिकारी है।

टर्की और धर्म

World Dominion News 'संसार के राज्यों की ख़बरें' नामक अख़बार में निम्न नोट प्रकाशित हुआ है —

'पिछली ९ फ़र्वरी को ग्रैंड नेशनल असेम्बली

ने टर्की के शासन के विधान (कॉंस्टिट्यूशन) में कुछ संशोधन किये हैं। विशेष रूप से धारा सं० २ संशोधित की गई है और उसका एक अंश इस प्रकार है—

"The Turkish State is Republican, Nationalistic Populish, Laic, Etatist and Revolutionary" अर्थात् टर्की का साम्राज्य लोकतन्त्रवादियों राष्ट्रवादियों दुनियादारों फौजियों और क्रान्तिकारियों का साम्राज्य है।

विशेष महत्व की बात यह है कि 'साम्राज्य' दुनियादारों अर्थात् Laics का घोषित होगया है। इस शब्द का अर्थ यह है कि राज्य किसी सरकारी धर्म को स्वीकार नहीं करता है और न किसी ख़ास धर्म का समर्थन करता है। पुराने विधान में एक धारा यह थी कि The Religion of the State is Islam अर्थात् राज्य का धर्म इस्लाम (मुसलमानी मज़हब) है। अब यह बात नहीं है। अब कोई भी किसी के धर्म-में हस्ताक्षेप नहीं करता है। प्रत्येक दूसरे के धर्म का आदर करता है। धार्मिक, बौद्धिक और राजनैतिक मामलों में 'मज़हबी पागलपन' का स्थान पारस्परिक प्रेम और सहिष्णुता ने ले लिया है।

ख़लीफ़ा का पद

टर्की के सुल्तान के पदच्युत हो जाने के बाद से इस समय तक मुस्लिम जगत् में ख़लीफ़ा नहीं है। मिश्र में ख़लीफ़ा की समस्या का पुनर्जीवन हुआ है। उस देश का राजा फ़ारूख़ इस ऊँचे पद का इच्छुक है। कहा जाता है कि टर्की, ईरान, यमन और अरब के दूसरे देशों को राजा फ़ारूख़ के ख़लीफ़ा बनाए जाने पर कोई आपत्ति नहीं है और अफ़ग़ानिस्तान तथा कुछ दूसरी मुसलिम रियासतों से भी शीघ्र ही परामर्श किया जायगा हमारी यह धारणा है कि पूर्ण स्वतन्त्र और शक्तिशाली राजा ही ख़लीफ़ा बन सकता है। यदि यह धारणा ठीक है तो प्रश्न होता है कि क्या राजा फ़ारूख़ ख़लीफ़ा के पद की इस कसौटी पर पूरे उतरते हैं?

दहेज-विरोधी बिहार का बिल

बिहार लेजिस्लेटिव असेम्बली में दहेज़ विरोधी एक बिल पेश हुआ है। अमर्य्यादित दहेज के उपद्रवों के यहाँ गिनाए जाने की आवश्यकता नहीं है। वे प्रायः सब पर प्रकट हैं। वस्तुतः विवाह प्रथा पर यह एक भयङ्कर अभिशाप है। क़ानून के द्वारा यह प्रथा मर्य्यादित या निर्मूल हो जायगी, यह निश्चित नहीं है। यह तो विवाह प्रथामें सुधार करके उसे अधिक से अधिक सस्ता बनाए जाने से संभव है। फिर भी चारों ओर से इस प्रथा पर प्रहार किए जाने की ज़रूरत है और इस दृष्टि से बिहार प्रांत का क़दम स्वागत योग्य है।

शरियत बिल

मि० काज़मी के शरीयत बिल पर कोकोनाडा का 'साधना' पत्र लिखता है—

'विवाहित मुस्लिम देवियों द्वारा विवाह विच्छेद के मुक़द्दमों से सम्बन्धित मुस्लिम क़ानून की धाराओं को व्यवस्थित करने तथा विवाहित मुस्लिम स्त्री के विवाह पर धर्म परिवर्तन के प्रभावों के सम्बन्ध में संदेहों को दूर करने विषयक बिल पर केन्द्रीय धारासभा में बहस हुई थी और सरकार ने बिल के निर्माता मि० काज़मी के इस प्रस्ताव का समर्थन किया था कि

यह सम्मति के लिए प्रचारित किया जाय। परन्तु गवर्नमेंट आफ़ इण्डिया के भ्रा मेम्बर श्रीयुत् ऐन ऐम सरकार ने सम्मति के लिए प्रचारित करनेके प्रस्ताव का समर्थन करते हुए बिल के कई विचारणीय पहलुओं की ओर संकेत किया था।

उन्होंने कहा था "यदि बिल क़ानून बन जाय तो स्थिति यह होगी कि मुस्लिम स्त्री अपने पति के साथ विवाह स्थिर रखने में समर्थ हो जायँगी। हाईकोर्टों की यह मान्यता है कि यदि हिन्दू पत्नी मुसलमान हो जाय तो वह अपने पति को मुसलमान बनने का निमन्त्रण देने का अधिकार रखती है और यदि पति निषेध कर दे तो वह अपने विवाह का विच्छेद करा सकती है। परन्तु यदि वह मुस्लिम पति से शादी करले और इसके बाद हिन्दू धर्म में शुद्ध हो जाय तो शरीयत बिल के अनुसार अपने मुसलमान पति से विवाह विच्छेद का उसे अधिकार नहीं रहता है। इस रीति से मुसलमानों के दोनों हाथों में लड्डू होंगे और दूसरी जातियों केलोग इस बिल को एक बड़ी कठिनाई समझेंगे। हमें आशा है यदि बिल को क़ानून का रूप देने ही दिया गया तो इसमें से आपत्तिजनक अंश निकाल दिए जायँगे।"

—

स्वाध्याय योग्य उत्तम साहित्य

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी कृत

कतिपय ग्रन्थ

(१) मृत्यु और परलोक

शरीर, अन्तःकरण तथा जीव का स्वरूप और भेद, जीव और सृष्टि की उत्पत्ति का प्रकार, मृत्यु का स्वरूप तथा बाद की गति, मुक्ति और स्वर्ग, नर्क इत्यादि लोकों का स्वरूप, मुक्तिके साधन आदि आदि विषयों पर अद्भुत पुस्तक। मूल्य।)

(२) योग रहस्य

इस पुस्तक में योग के अनेक रहस्यों को उद्घाटित करते हुए उन विधियो को भी बतलाया गया है जिससे कोई आदमी जिसे रुचि हो—योग के अभ्यासों को कर सकता है। मूल्य।–)

(३) विद्यार्थी जीवन रहस्य

विद्यार्थियों के लिए उनके मार्ग का सच्चा पथ प्रदर्शक, उनके जीवन के प्रत्येक पहलू पर श्रृङ्खलाबद्ध प्रकाश डालने वाले उपदेश। द्वितीय संस्करण ≡)

(४) उपनिषद् रहस्य

ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य उपनिषदों की बहुत सुन्दर खोजपूर्ण और वैज्ञानिक व्याख्यायें मूल्य क्रमशः =), =)॥ =)॥, =)॥ =)॥, –)।

अन्य ग्रन्थ कर्त्ताओं का

स्वाध्याय योग्य बहुमूल्य साहित्य

(१) इज़हारे हक़ीकत ॥।≈) सत्य-निर्णय १।)

(उर्दू) (हिन्दी)

श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य्य,

महात्मा गांधी ने आर्य्य समाज और ऋषि दयानन्द के मिशन और ग्रन्थों के सम्बन्ध में जो आक्षेप किए थे इस पुस्तक में प्रामाणिक रीति से उनका खण्डन किया गया है। पुस्तक की अन्यान्य विशेषताओं में से एक विशेषता यह है कि लेखक ने आलोचना करते हुए उस मान और लोक-प्रियता का पूरा ध्यान रक्खा है जिसके महात्मा जी अधिकारी हैं। पुस्तक में कोई भी स्थल ऐसा नहीं है जिससे महात्मा जी के प्रति अवज्ञा का आभास होता हो। पुस्तक स्थिर साहित्य में स्थान पाने योग्य है।

(२) धर्म और उसकी आवश्यकता ।≈)

लेखक श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य

इस पुस्तक में धर्म का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। नई रोशनी के उन नव युवक और नवयुवतियों के हाथमें रखे जाने योग्य

है जो धर्म और ईश्वर में न केवल विश्वास ही नहीं रखते बल्कि उनका मखौल भी उड़ाते हैं। मूल्य।-)

(३) आर्य्य-पर्व्व पद्धति

आर्य्य जगत में एक से ही त्यौहार मनाने तथा त्यौहारों के सम्बन्ध मे पूर्ण ज्ञान प्राप्त करा देने के लिये इस पुस्तक की रचना की गई है। इस का प्रत्येक आर्य-परिवार में रखना आवश्यक है। संशोधित संस्करण ॥≈)

(४) कर्त्तव्य दर्पण

आर्यों की नित्य कर्म विधि-इत्यादि की यह बहुत उत्तम पुस्तक है। आर्य्यसमाज सम्बन्धी आवश्यक ज्ञातव्य बातें भी इसमे दी गई हैं। मूल्य ≈)॥

(५) कथामाला

इस पुस्तक में स्वामी जी महाराज की विद्वत्ता-पूर्ण और अत्यन्त उपयोगी कथाओं का संग्रह किया गया है। आर्य्य नर नारी मात्रके स्वाध्याय के योग्य है। मूल्य।≈)

(६) आर्य्य जीवन और गृहस्थधर्म

लेखक—पं० रघुनाथप्रसाद पाठक

आर्य्य जीवन किस प्रकार बनाया जाता है और गृहस्थ किस प्रकार श्रेष्ठ बनाए जा सकते है इन सब बातों का इस पुस्तक मे वर्णन किया गया है। पुस्तक मुख्यतया श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के प्रवचनों और व्याख्यानों के आधार पर लिखी गई है। मूल्य।≈)

(७) आर्य्यवर्त की वाणी

अनुवादक पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक

यह पुस्तक श्रीयुत साधु टी० एल० वास्वानी की वायस आफ आर्य्यवर्त का हिन्दी अनुवाद है। इसमें ऋषि दयानन्द का जीवन संक्षेप में बहुत ओजस्वनी भाषा मे प्रस्तुत किया गया है। अन्य भी बहुत सी नवयुवकोपयोगी सामग्री इस पुस्तक में प्रस्तुत की गई है। मूल्य ≈)

(8) Ecclesia Divina

Well – Bound – By Bhumanand Saraswati M A 5/-

(9) Fountain Head of Religion

By Pt Ganga Prasad M A,

Chief Judge

Well-bound	1/4/
Un-bound	-/12 -

(१०) अमृत वर्षा ॥)

लेखक म० नारायण स्वामी जी

(११) गृहस्थ जीवन रहस्य

सजिल्द १)

(१२) आत्म दर्शन १)

(१३) वेद तत्व प्रकाश सजिल्द

स० श्री सुखदेव विद्यावाचस्पति २)

मिलने का पता :—

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा, श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

कमीशन रेट्स

पुस्तकालय सार्वदेशिक सभा ।

अन्य ग्रन्थ कर्त्ताओं की पुस्तकों को छोड़ कर शेष सभा तथा सभा द्वारा प्रकाशित श्री महात्मा नारायण स्वामी जी की पुस्तकों के घटे हुए मूल्य पर पुस्तक विक्रेताओं को निम्न प्रकार कमीशन दिया जायगा।

५) से २५) तक	१५) प्रति सैकड़ा
२६) से ५०) तक	२०) प्रति सैकड़ा
५१) से १००) तक	२५) प्रति सैकड़ा

नोट—(१) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश तथा (२) दयानन्द ग्रन्थ माला पर कुछ कमीशन नहीं दिया जायगा।

—.❀.—

सार्वदेशिक में विज्ञापन छपाई के

रेट्स

स्थान	१ मासका	३ मासका	६ मासका	१ वर्ष का
पूरा पृष्ठ	१०)	२५)	४०)	७५)
एक कालम	६)	१५)	२५)	४०)
आधा ,,	३॥)	८)	१५)	२५)
चौथाई ,,	२)	४)	८)	१५)

उजरत का धन नियमानुसार पेशगी आना चाहिए।

"मनुष्य मात्र से प्रार्थना"

(लेखक—श्री ला० वोसाराम जी रिटायर्ड स्टोरकीपर, N. W. R, आनरेरी मन्त्री, पंजाब केन्द्रीय अनाथालय, रावीरोड, लाहौर)

— —

"देह धरे का नाम है दे सके तो देह,
फिर पीछे पछताएगा जब देह हो जावेगी खेह।"

आपको मालूम है कि रावीरोड पर एक अनाथालय बनाम पञ्जाब केन्द्रीय अनाथालय लाहौर में खुला हुआ है, जो पञ्जाब भर में अपनी श्रेणी की एक ही संस्था है। जहाँ सारे देश से बालक-बालिकाएँ आकर दाखिल होते हैं इसमें न सिर्फ उनका पालन-पोषण किया जाता है, परन्तु उनको आश्रय देकर विद्या अध्ययन कराया जाता है और इनको अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए कोई न कोई कार्य सिखाया जाता है। इस अनाथालय के अधीन एक इण्डस्ट्रीयल मिडिल स्कूल है, जिसमें विद्या पढाने के अतिरिक्त कटिंग और दर्जी का कार्य भले प्रकार सिखाया जाता है। यह स्कूल सरकार की ओर से स्वीकृत है, इसमें बाहर के बालक भी लिए जाते हैं।

इस अनाथालय में न सिर्फ पब्लिक के बालक आते हैं, बल्कि पुलिस डिपार्टमेण्ट भी ऐसे बच्चो को जो कभी भगाये जाते रहे हैं, उनको गुण्डों से बरामद करके यहाँ दाखिल कराया करता है और जो अनाथ बच्चे उसको शहर, हस्पताल या जेल से मिलते रहते हैं, उनको भी यहाँ लाकर दाखिल कराया जाता है गर्ज कि इस अनाथालय मे हर प्रकार के लड़के और लड़कियाँ जिनकी आयु १६ वर्ष से नीचे हो दाखिल किये जाते हैं। आज कल हालत ऐसी है कि जिन नवजात बच्चों की माता का स्वर्गवास होजाता है और उनके पालने का प्रबन्ध उनके संरक्षकों से नही हो सकता, वह उनको यहाँ लाकर दाखिल कर देते हैं। ऐसे बच्चो की देख भाल के लिए एक दानी रायसाहिब ने जो अपना नाम देना नही चाहते, एक ट्रेण्ड नर्स अपने व्यय पर रखी हुई है, आजकल हमारे पास एक सौ के लगभग लडके और ६० के लगभग लडकियाँ हैं। उनके व्यय के लिए आप सोच सकते हैं कि कितनी वस्तुओं की आवश्यकता होती होगी। यह सब आप दानी वीरों से इकट्ठा होकर आता है और इससे इनका खर्च चलाया जाता है। अब शीतऋतु आ रहा है, इन सबके लिए गर्म वस्त्रों की आवश्यकता होगी। इसलिए आप से प्रार्थना है कि जहाँ आप अपने बच्चोंके लिए कपडे सिलवायेंगे वहाँ इन यतीम बच्चों का भी ध्यान रखेंगे और इनके खाने-पीने के लिए आटा, दाल, चावल, घी, सब्जी इत्यादि जो भाई जिस प्रकार हमारी सहायता करना चाहें, धन्यवाद सहित स्वीकार की जायेगी। आशा है कि आप इस अपील पर ध्यान देंगे और जैसे पहले हमारी सहायता करते रहे हैं वैसे ही अब हमारी सहायता करके पुण्य के भागी बनेंगे।

विषय-सूची

—*—

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों के प्रचारार्थ बहु संख्या में ये ग्रन्थ एकत्र किये गये हैं और निश्चय किया गया है कि पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन भी कुछ अधिक दिया जावे। छोटे बड़े सभी ग्रन्थ अच्छे कागज पर बड़े आकार में हैं। उनका मूल्य सहित विवरण इस प्रकार है। इनके मँगाने के लिये शीघ्र आर्डर भेजने चाहियें:—

	असली मू०	घटाहुआ मू०
(१) दयानन्द ग्रन्थमाला दो जिल्दों में	५)	२॥)
(२) ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका बढ़िया	१॥)	१)
(३) आर्याभिविनय	।-)	।)
(४) महर्षि का संक्षिप्त जीवन चरित्र मय रंगीन चित्रों के	।)	≡)
(५) वेद विरुद्ध मत खण्डनम्	=)॥	=)
(६) गो करुणानिधि	=)	-)॥
(७) शिक्षापत्री	=)	-)॥
(८) भ्रान्ति निवारणम्	=)	-)॥
(९) सत्यधर्म विचार	-)॥	-)
(१०) काशी शास्त्रार्थ	-)	)॥
(११) भ्रमोच्छेदन	-)	)॥
(१२) आर्योद्देश्य रत्न माला	)॥	)॥
(१३) स्वीकार पत्रम्	)॥	)॥

सार्वदेशिक सभा के पुस्तकालय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

(१) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश—

यह महर्षि दयानन्द कृत हिन्दी सत्यार्थप्रकाश का संस्कृतानुवाद है। अनुवादक गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) के संस्कृत विभाग के मुख्याध्यापक श्री पण्डित शङ्करदेव पाठक हैं। अनुवाद की भाषा मधुर एवं सरल है। महर्षि का आशय ज्यों का त्यों प्रगट किया गया है। मूल्य २।) सजिल्द २॥)

मूल्य प्रचारार्थ ।)

(२) प्राणायाम विधि—

यह पुस्तक जिसमें प्राणायाम सम्बन्धी कठिन से कठिन विधियों को सुगम बनाया गया है श्री पूज्यपाद १०८ श्री नारायण स्वामी जी महाराज द्वारा लिखी गई है। प्राणायाम के प्रेमियों की एक बड़ी खोज तथा आवश्यकता इसके द्वारा पूरी हो सकती है। मूल्य -) घटा हुआ मूल्य)॥

(३) दयानन्द लहरी—

इसमें भगवान दयानन्द का स्तवन शिखरणी आदि सुन्दर छन्दों में किया गया है। प्रत्येक छन्द के साथ भावानुवाद भी दिया गया है। पुस्तक के लेखक श्री पं० मेधाव्रत जी कविरत्न हैं। मूल्य -)॥, घटा हुआ मूल्य -)

(४) दश नियम व्याख्याः—

श्री पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति द्वारा यह "दश नियम व्याख्या" नाम की पुस्तक लिखी गई है। इसमें आर्यसमाज के दश नियमों की विस्तृत तथा गवेषणापूर्ण व्याख्या की गई है। मूल्य ।), घटा हुआ मूल्य ≡)

(५) ओम्प्रत्ययः—

यह पुस्तक श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति की लेखनी से लिखी गई है। ओ३म् परमात्मा की विस्तृत व्याख्या विद्यमान है। मूल्य ॥।), घटा हुआ मूल्य ।=)

(६) वैदिक सिद्धान्तः—

यह पुस्तक भिन्न भिन्न वैदिक सिद्धान्तों पर आर्य्य विद्वानों द्वारा लिखित निबन्धों का अत्युत्तम संग्रह है। मूल्य १।) सजिल्द १॥), घटा हुआ मूल्य ।॥) सजिल्द १)

(७) वैदिक विवाहादर्शः—

इस पुस्तक मे वैदिक विवाह का आदर्श प्रस्तुत किया गया है और विवाह सम्बन्धी लगभग सभी आवश्यक बातों पर प्रकाश डाला गया है। मुख्यतया पश्चिमी थ्योरियों के विवेचन पूर्वक विवाह सम्बन्धी वैदिक आदर्शों और शिक्षाओं की श्रेष्ठता प्रतिपादित की गई है। मूल्य १।), घटा हुआ १)

(८) विदेशों में आर्यसमाज का इतिहासः—

जिस पुस्तक को छपाने की मथुरा शताब्दी पर घोषणा की गई थी और जिसके पढने के लिये पिछले आठ वर्षों से देश और विदेशों के आर्य्य-नर नारी बेचैन हो रहे थे वह सार्वदेशिक सभा की ओर से तैयार हो कर छप गई है। पुस्तक मे आर्य्य प्रचारकों तथा विदेश की आर्य्य-संस्था आदिकों के लग-भग ११ चित्र हैं। पुस्तक पढने योग्य है। छपाई, सफाई, कागज आकार प्रकार बढ़िया। मूल्य ॥), घटा हुआ ।=)

(९) यमपितृ परिचय—लेखक श्री पं० प्रियरत्न जी 'आर्ष' मूल्य २), घटा हुआ १)

इस पुस्तक में 'यम और पितृ' प्रकरण वाले वेद मन्त्रों की विद्वत्ता पूर्ण व्याख्या की गई है। स्वाध्याय शील सज्जनों के पढ़ने और संग्रह करने योग्य अनुपम ग्रन्थ है।

(१०) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर—सम्पादक—श्री कृष्णचन्द्र जी विरमानी, मूल्य १।)

पुस्तक की विशेषता यह है कि भिन्न भिन्न महत्व पूर्ण विषयों पर स्वामी जी महाराज को भिन्न भिन्न पुस्तकों व पत्र व्यवहार तक मे वर्णित मत को एक जगह संग्रह किया गया है। यह पुस्तक सम्पादक के लगभग ११ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल है। जिस किसी विषय में भी ऋषि दयानन्द की सम्मति जानना चाहो वही प्रकरण इस पुस्तक में देखोगे। पुस्तक बहुत उपयोगी है।

(११) आर्य्य सिद्धान्त विमर्श— प्रथम आर्य्य विद्वत् सम्मेलन के निबन्धों का संग्रह। कतिपय आर्य्य विद्वानों ने गम्भीर विषयों पर अपनी लेखनी द्वारा प्रकाश डाला है। स्वाध्याय शील व्यक्तियों के लिए यह पुस्तक अमूल्य ग्रन्थ का काम देगी। पृष्ठ संख्या लग भग ५०० मूल्य १॥)

(१२) भजन-भास्कर— (दूसरा संस्करण) यह पुस्तक भाव, भाषा, संगीत, छन्द, वैदिक सिद्धान्त शिक्षण इत्यादि की दृष्टि से उत्तम भजनो और कविताओं का संग्रह है। इसमे देश के और आर्य समाज के प्रसिद्ध २ संगीतज्ञो कवियो और भजनोपदेशकों की उत्कृष्ट रचनाएँ हैं। इसमें देश, धर्म, ईश्वर, समाजसुधार, बाल-शिक्षण शुद्धि, ऋषि महिमा, आर्य्यसमाज महिमा इत्यादि अनेकानेक धार्मिक, सामाजिक और जातीय विषयो पर भजन मौजूद है संग्रहकर्त्ता श्री पं० हरिशंकर शर्मा कविरत्न (भूत पूर्व सम्पादक आर्य मित्र) हैं। आर्य्यसमाज मे तुकबन्दो की बढ़ती हुई तुकबन्दी को निरुत्साहित करने तथा आर्य्यसमाजों और परिवारो मे श्रेष्ठ संगीत को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ही मथुरा की दयानन्द शताब्दी महोत्सव के अवसर पर यह संग्रह तैयार कराया गया था। अब जनता की बढ़ती हुई माग को पूरा करने के उद्देश्य से ही इस संग्रह का दूसरा संस्करण बढ़िया आकार प्रकार इत्यादि मे छपाया गया है। मूल्य ॥)

(१३) सत्यार्थ प्रकाश— (सस्ता संस्करण) - महर्षि दयानन्द सरस्वती की अमर कृति। २० ३० सोलह पेजी साइज के ८०० से अधिक पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल ।)॥ प्रति १०० प्रति या इससे अधिक लेने पर ।) (चार आना) प्रति।

	अ० मू०	घ० मू०		अ० मू०	घ० मू०
(१४) वेद में असित शब्द	—)।	—)	(१६) विरजानन्द विजय	।)	≈)
२५ प्रति का	१।)	१।)	(१७) हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद उर्दू	।)	≈)
(१५) वैदिक सूर्य विज्ञान	≈)	≈)			

18 Agnihotra—

By Dr Satya Prakash D Sc Lecturer in Chemistry University of Allahabad
Well Bound Price Rs 2 8 0

The Author has described in details the process of Agnihotra and has shown that during the process of this fumigation such products are given out which are bactericidal and vermifugal, and this ancient practice of the Aryans is very healthy hygienic and productive of physical and spiritual results

'The writer is a **Doctor of Science** He has brought to bear upon his subject all the scientific lore that he has acquired at the University and environments'

Gangamitr ...

"As the book deals with the ancient practice in a systematic manner, I believe, it will be found interesting and useful to readers in the East and in the West, and hence I have a great pleasure in recommending it to the public"

—*N. R. Dhar*

19 Crucifixion by an eye witness—

This valuable book cantains a detailed account of the crucifixion of Jesus Christ, given by one who witnessed it with his own eyes—price As 6, Reduced price As 5.

20 Truth and Vedas—

It is an excellent exposition and translation of "Vibhrat."—price As. 8 Reduced price A 6

21 Truth Bed Rocks of Aryan culture—

The Subject dealt with in this book is the ideal of truth stating candidly by means of Vedic Mantras and fine stories to what extent the Aryan race has lived to this ideal—price As 10, Reduced price As. 8

22 Torch Bearer—

A biographical sketch of Swami Dayanand.—price Rs. 1/8/- Reduced price Re 1/-

23 Vedic Teachings—

This book contains the most authentic replies to the objections raised about the Vedas by Dr Bhandarkar The learned author has, besides, brought forth the superiority, the Vedic Teachings contain—price Rs, 1/12/-, Reduced price Rs. 1/4/-

24 Voice of Aryavarta—

This little book comes from the pen of Mr T L Vaswani and contains most lucid reflections on Rishi Dayanand and his life and teaching,—price As. 8. Reduced price As 2

25 The daily Prayer of an Arya—

This booklet contains an ethical exposition in the light of Modern Thought of our daily Sandhya—price As 4, bound and As 3/- unbound.

26 The Light of the Vedas—

It contains lucid translation of 500 Vedic Mantras. A book worth presenting to people of alien faiths price Rs 1/4/-

27 Commentary on Ishopanishat—

Translated by the late Pt Ghasi Ram M. A. L. L. B.—price As. 4.

पुस्तक मिलने का पता:—

कार्यालय—सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा,

श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष १२ — भाद्रपद १९९५ — अङ्क ७

सितम्बर १९३८ ई०] [दयानन्दाब्द ११४

* वेद की शिक्षाएँ *

श्रद्धित ते महत् इन्द्रवाय । ऋग० १-१०३-६

हे प्रभो ! तेरी शक्ति मे हमे श्रद्धा है ।

We have perfect Faith in Thy power O God

मा भूम निष्ठ्या इव । अथर्व० २०-११६-१

हम तुमसे बेगाना की तरह न रहें ।

May we not behave towards Thee as aliens and strangers



आर्य कुमार परिषद् का रजत-जयन्ती महोत्सव

भारतवर्षीय आर्य्य-कुमार परिषद का रजत-जयन्ती महोत्सव आगामि ३० सितम्बर तथा १ अक्टूबर को बिजनौर में होगा। महोत्सव के संचालक महोत्सव को सफल बनाने के लिए पूरा पूरा यत्नकर रहे हैं। जैसा कि इसी अङ्क में प्रकाशित सूचनाओं और विज्ञप्तियों से स्पष्ट है महोत्सव का प्रोग्राम रोचक और शिक्षाप्रद बनाया गया है। प्रोग्राम रोचक और शिक्षाप्रद क्यों न बनता, जबकि आर्य्यकुमारों के प्राण और परिषद् के अनन्य तथा पुराने सेवक श्री० डा० युद्धवीरसिंह जी के तत्वावधान में ये सब कार्य होरहे हों।

इस अवसर पर आर्य्यसमाज तथा देश के गण्यमान्य सज्जनों के काफी संख्या में पधारने की पूरी-पूरी आशा है, ताकि वे देश और समाज के भावी कर्णधारों के इस मेले में उनका उचित मार्ग-प्रदर्शन करके अपने एक महान और पवित्र कर्त्तव्य का पालन कर सकें। आर्य्यकुमारों तथा उनके अभिभावकों को भी बहु संख्या में पहुँचकर उत्सव को सफल बनाने में योग देना चाहिये।

आर्य्यकुमारों को शिक्षित और संगठित करके समाज की सेवा के लिए योग्य, सदाचारी और सुपरीक्षित सेवकोंके निर्माणके उद्देश्यसे भारतवर्षीय आर्यकुमार-परिषद्का जन्म हुआ था। स्वर्गीय श्री० डा० केशवदेव जी शास्त्री, महामना श्री० पं० रामनारायण जी मिश्र, श्री० प्रो० सिद्धेश्वर जी तथा श्री० प्रो० सुधाकर जी, एम० ए० प्रभृति सज्जनों की काशी की प्रसिद्ध आर्य्य-मण्डली कुमार-परिषद की जन्मदात्री है। काशी में आर्य्य-कुमारों और आर्य्यसमाज के इन शुभ चिन्तकों और दीवानों के हृदय में यह पवित्र विचार अङ्कुरित हुआ तथा फला-फूला था। वस्तुत. यह विचार और यह योजना बड़ी शुभ और उपादेय थी। इसके लिए ये सब महानुभाव धन्यवाद के पात्र हैं। इस विचार और योजना के पीछे इन महानुभावों के आकर्षक और जादू के समान असर करनेवाले व्यक्तित्व थे। यही इस संस्था की सम्पत्ति थी और यही जान थी। वस्तुतः संस्थाओं की यही सम्पत्ति और आत्मा होती है। इस संस्था ने आर्य्यसमाज को कई दीवाने अर्पण किये हैं। विज्ञापन और प्रदर्शन के इस युग में भले ही उनमें से कई जनसाधारण की आँखों से ओझल हो, परन्तु वे चुपचाप अपने कर्त्तव्य का उत्तमता से पालन कर रहे हैं।

कुमार-परिषद् को जन्म ग्रहण किये २५ वर्ष से अधिक का समय हो गया है। आर्य्यकुमारों में जागृति उत्पन्न करने के लिए अधिक से अधिक जो वह कर सकी उसने किया है। बिजनौर में

बैठकर आर्यकुमारों और उनके शुभचिन्तकों को सोचना चाहिए कि आर्य्यकुमार-परिषद् किस प्रकार आर्य्यकुमारों में अधिक से अधिक जीवन संचार का कारण बन सकती है और इसके लिए उपाय भी निर्धारित करने चाहिये। जहां तक परिषद् के संगठन और विस्तार का सम्बन्ध है वह आर्य-जगत् में कोने में पड़ी हुई संस्था देख पड़ती है। कहा जाता है कि आर्य्यसमाजों का परिषद् तथा नवयुवकों के प्रति उपेक्षा तथा उदासीनता का रवैया है तथा रहा है। कुछ लोग ये कहते हैं कि आर्य्यसमाज के सार्वजनिक जीवन में आकर्षण नहीं है। राजनैतिक जीवन में इन दिनों बहुत आकर्षण है तथा बेकारी और रोटी की समस्याएँ बड़ी उग्र और जटिल हैं, इसलिए नवयुवक आर्य-समाज की ओर आकर्षित नहीं होते हैं। बिजनौर में आर्य्यकुमारों और नेताओं को एक जगह बैठकर गम्भीर विचार करना चाहिये और आकर्षण के उपाय सोचने तथा निर्धारित करने चाहिये। आर्य्यसमाजों का परिषद् के प्रति उपेक्षा का रुख है यह एक सचाई है। इस रुख के लिए आर्य्यसमाजों को बुरा-भला कहने से काम नहीं चलेगा। इसकी तह मे बैठकर मूल कारण जानने का यत्न करना होगा। हमें सोचना होगा कि आर्य्यसमाजों का सम्बन्ध आर्य्यकुमार-सभाओं के साथ किस प्रकार का होना चाहिये। वे समाजों के सीधे कण्ट्रोल में रहें या संरक्षण में।

इस २५ वर्ष के काल में परिषद् के कई रचनात्मक और उल्लेखनीय कार्य्य हुए हैं। इसकी सबसे बड़ी रचनात्मक योजना वैदिक-धर्म की परीक्षाएँ हैं। इसके द्वारा आर्य्यकुमारों में वैदिक-ग्रन्थों के स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ी है। यह परिषद् का एक बड़ा अच्छा रचनात्मक कार्य्य रहा है। परिषद् इस जयन्ती के उपलक्ष में 'उन्नति की ओर' नामक एक पुस्तक प्रकाशित कर रही है। परिषद् की यह योजना बड़ी उत्तम है। निश्चय ही इस जयन्ती की एक अच्छी यादगार रहेगी। इसमें आर्य्यसमाज तथा देश के बड़े २ नेताओं और विद्वानों तथा लेखकों की रचनाएँ होंगी। नवयुवकों के लिए यह पुस्तक एक स्थिर साहित्य का काम देगी।

एक बात बिजनौर के आर्य-भाइयों से भी। उन्होंने परिषद् के इस महत्वपूर्ण सम्मेलन को बिजनौर में बुलाकर बड़ा उत्तम कार्य्य किया है। उन्होंने एक बड़ी जिम्मेवारी अपने ऊपर ली है। इस जिम्मेवारी को खूबसूरती से निबाहने के लिए आशा है वे कोई यत्न उठा न रखेंगे तथा उत्सव के प्रबन्ध, अतिथियों की सेवा सत्कार और स्वागत में कोई त्रुटि न होने देंगे।

भूल-सुधार

श्री० आचार्य्य विश्वश्रवा जी ने जो गुरुकुल वृन्दावन के रजिस्ट्रार हैं २५ अगस्त ३८ के 'आर्य्यमित्र' में गुरुकुल वृन्दावन का कोष भर दो शीर्षक एक लेख लिखा है। उस लेख में आर्य्य-समाजके उपनियमों के सम्बन्धमें एक बात अशुद्ध लिखी गयी है। आचार्य्यजी ने गुरुकुल की प्रबन्ध-व्यवस्था के सिलसिले में लिखा है:—

आर्य्यसमाज के उपनियमों में एक बात विशेषरूप से बताई गई है कि जितनी भी उपसभाएं विशेष कार्य्यों के लिए बनाई जावें

उन सबका प्रधान वही हो जो समाज का प्रधान हो।'

आर्यसमाज के उपनियमों की धारा सं० २३ में सभाओं और उपसभाओं से प्रधान का सम्बन्ध निम्न भाँति वर्णन किया गया है—

(१) प्रधान अन्तरंग सभा और सब सभाओं का सभा पति समझा जायगा।

(२) प्रधान अपने प्रधानत्व के कारण सब उपसभाओं का जिन्हें कि अन्तरंग सभा संस्थापित करे सभासद् होगा।

स्पष्ट है कि अपने पदाधिकार के कारण प्रधान का उपसभाओं का सदस्य होना तो अनिवार्य्य है परन्तु प्रधान होना अनिवार्य्य नहीं है।

आशा है पाठक आचार्य्य जी के स्पष्टीकरण को शुद्ध करके पढ़ेंगे।

परोपकारिणी-सभा

परोकारिणी-सभा ने अपनी ३१-७-३८ की मीटिंग मे कई महत्वपूर्ण निश्चय किये हैं। उनका साराश यह है कि उक्त सभा श्री० स्वामी दयानन्द सरस्वती-कृत प्रन्थों को श्री० स्वामी जी की सशोधित पाण्डु-लिपियों के अनुसार छापती है तथा उन पाण्डु लिपियों में यदि कोई सज्जन अशुद्धि समझे या कहे तो उसमे वह न्यूनाधिक करने के लिए तय्यार नहीं है। पं० सातवलेकर जी ने स्वामी जी कृत वेद-भाष्य में जो अशुद्धियाँ बतलायी हैं, उसे यह सभा स्वामी जी के मत के विरुद्ध पं० जी का अपना मत बतलाती है।

देवतावाद के सम्बन्ध में इस निर्णय के लिए कि पं० सातवलेकर जी का मत ठीक है या नहीं है पं० जी को इस सभा ने सभा-द्वारा नियुक्त विद्वानों से शास्त्रार्थ का निमन्त्रण दिया है तथा ५ से ६ नवम्बर तक आर्य-प्रतिनिधि-सभा राजस्थान के स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव के अवसर पर यह शास्त्रार्थ रखने का फैसला किया है।

एक प्रस्ताव में संस्कार-विधि के काट-छाँट के निर्णय को अनुचित तथा अनधिकार चेष्टा बतलाया है।

हम इन निश्चयों के सम्बन्ध में विशेष न कहकर यह अवश्य कहेंगे कि परोपकारिणी-सभा ने ऋषि-कृतग्रन्थों के स्वामी जी की पाण्डु-लिपिके अनुसार शुद्ध प्रकाशन के सम्बन्धमें अबतक बडी लापरवाही और अकर्मण्यता दिखलाई है। आर्य जनता इस बात को देर से बहुत ज्यादा अनुभव करती रही है तथा उसमें घोर असन्तोष रहा है। यदि स्वामी जी के ग्रन्थो मे छापे की भयंकर भूलें न होती, तो यह असन्तोष न होता। सभा ने अपने एक निश्चय मे इस बात की सफाई निम्न शब्दो में देने का यत्न किया है —

"हाँ, यदि उक्त पाण्डु-लिपि से छापते समय जो भेद रह गया हो, उसको शुद्ध कराना इस सभा को सदैव स्वीकार है और इस प्रकार की अशुद्धि बताई जाने पर धन्यवाद-सहित स्वीकार की जायगी।' देर से असन्तुष्ट जनता के लिए यह सफ़ाई पर्य्याप्त है इसमें सन्देह है। उसको तो सन्तोष तभी होगा, जब स्वामी जी कृत ग्रन्थों मे छापे की एक भी भूल न रहेगी।

श्री० प्रधान जी पर वज्रपात

यह लिखते हुए अत्यन्त दु ख होता है कि गत २५ अगस्त को जामाता की मृत्यु के रूप मे सभा के माननीय प्रधान श्री० बा० घनश्यामसिंह जी पर घोर वज्रपात हुआ है। श्री० प्रधान जी तथा उनके परिवार के इस महान् दु ख में हम समस्त आर्य्य जगत की ओर से समवेदना प्रकट करते तथा श्री० प्रधान जी को उस दु ख के सहन करने में समर्थ बनाने तथा दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

श्री० प्रधान जी के जामाता एम० एस० सी० थे, तथा डो० यस सी के लिए विलायत गये थे। उनकी पुत्री शकुन्तला देवी बी० एस-सी तथा गर्ल-स्कूलों की इन्सपेक्टर हैं। यह एक योग्य और सुशिक्षित दम्पति थे। जामाताकी अवस्था अभी २६-२७ की ही थी। पुत्री की अवस्था २३ वर्ष की है। विवाह को हुए २-३ वर्ष हुए हैं। जामाता लगभग १-१॥ वर्ष से बीमार थे। किसी को क्या पता था कि इस योग्य और तरुण दम्पत्ति के सुख-सौभाग्य पर दुर्भाग्य मुँह निकाले झाँक रहा था।

श्री० प्रधान जी ने जामाता के इलाज में कोई त्रुटि नही की। देश मे तथा इङ्गलैण्ड मे अच्छे-से-अच्छे योग्य डाक्टरों की जो एक धनी परिवार करा सकता है, चिकित्सा कराई गई। शकुन्तला देवी ने अपने पतिदेव की परिचर्य्या और सेवा में एक प्रकार से अपने को मिटा दिया, प्रभु की इच्छा के सामने मनुष्य का क्या चारा! फिर भी श्री० प्रधानजी तथा उनकी पुत्री को सेवा, परिचर्य्या और चिकित्सा में अपने कर्तव्य उचित रीति से पालन करने का सन्तोष होगा और निश्चय ही यह सन्तोष बहुत हदतक उनके शोक को कम करेगा।

शाबास ! आर्य-समाज पेशावर !!

आर्य-समाज पेशावर छावनी ने हैदराबाद के मामले मे सावदेशिक सभा की क्रियात्मक सहायता के सम्बन्ध मे कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किये हैं। इतना ही नहीं उनपर उसने कार्यवाही भी आरम्भ करदी है। उस समाज ने एक प्रस्ताव यह पास किया है कि समाज का प्रत्येक सदस्य अपनी एक मास की आयका दशांश सभा को देवे तथा अधिक धनके लिए सभा की आज्ञानुसार कार्य किया जाय। एक दूसरा प्रस्ताव सत्याग्रह के लिए स्वयं-सेवकों की भरती करने का है।

एक अन्य प्रस्ताव मे उक्त आर्यसमाज ने हैदराबाद की समस्या को अपनी प्रगतियों का एक मुख्य अंग बनाया है।

इन प्रस्तावों की यहाँ चर्चा करने का हमारा उद्देश्य केवल यह दिखाना है कि हैदराबाद की समस्या के प्रति आर्य-जनता काफी सजग होगयी है। हैदराबाद मे आर्य-समाजों की कठिनाइयों तथा आर्य-समाजियों पर होनेवाले अत्याचारों से आर्य-जनता अत्यन्त व्याकुल हो उठी है साथही उनके निराकरण के लिए अपनी शिरोमणि सभा के हर प्रकार से हाथ मजबूत करने मे कटिबद्ध हो गई है। हम आर्य-जगत की इस चिन्ता, प्रेम तथा उत्साह का आदर करते हैं और उसे विश्वास दिला देना चाहते हैं

कि इस प्रेम और उत्साह से पूरा २ लाभ उठाने में सार्वदेशिक-सभा पीछे न रहेगी।

जयन्ती अंक

सार्वदेशिक के आगामी अङ्क को कुमार-परिषद् के रजतजयन्ती महोत्सव अङ्क के रूप में निकालने का हमारा विचार है। आशा है पाठक इस अंक से पूरा २ लाभ उठायेंगे तथा अभी से अन्य लोगों को लाभ उठाने की प्रेरणा करदेंगे।

इस अंक मे महोत्सव की सचित्र कार्यवाही, प्रधान का भाषण, आर्यकुमारों तथा परिषद् की उन्नति के लिए महोत्सव मे जो निश्चय होंगे तथा योजनाएँ निर्धारित होंगी दी जायगी।

१२००) का पुरस्कार

श्री अर्जुनदेव जी मन्त्री आर्यसमाज ढकी, नाल बंदी पेशावर शहर ने एक विज्ञापन इस आशय का हमारे पास भेजा है कि जो विद्वान पाणिनीय व्याकरण पर वैदिक उदाहरणों से अलंकृत संस्कृत मे सरल भाष्य रचेंगे उनको १२००) इनाम दिया जायगा। वे प्रथम पाद का भाष्य रचकर उसकी तीन प्रतियाँ बतौर नमूने के भेजें। इसी प्रकार सन्धि विषय, शब्द रूपावलि, धातु रूपावलि आदि प्रकरणों को भी ऐसा ही लिखाना चाहते हैं जिस से विद्यार्थी को वेद के अध्ययन में सुविधा हो।

आर्य नगर

वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर ने आश्रम के पास एक आर्य-नगर बसाने की योजना की है।

इस योजना का उद्देश्य उन लोगों के लिए सुविधा उपस्थित करना है जो शहरी विषाक्त वायुमण्डल से अलग पवित्र वायुमंडल में परिवार सहित रह कर आत्मिक शान्ति उपलब्ध करना चाहते हों। इस नगर में लोग अपना मकान नियत भूमि मे बनावेंगे तथा मकान बनानेवालों तथा उनके उत्तराधिकारियों का उन मकानों पर पूर्ण स्वत्व होगा। एक मकानके लिए भूमि ३०×६० फीट मिल सकेगी। नगर के निवासियोंके बच्चों की शिक्षा के लिए पाठशालादि की योजना का भी नगरवासियों के सहयोग और सहायता से प्रबन्ध किया जायगा। नगरवासियों मे पूर्ण सद्भाव का आदर्श रखा जायगा। इस योजना का, जैसी कि यह स्वागत योग्य है, स्वागत हो रहा है। लोग अपनी २ कुटियों के लिए भूमि खरीद तथा रिजर्व करा रहे हैं। हमे आशा है शीघ्र ही आर्य-नगर बस जायगा। आर्य-नगर की पवित्रता की रक्षा के लिए मद्य-मासादि के सेवन तथा भक्षण इत्यादि के प्रतिबन्ध उचित ही रखे गये हैं। इन प्रतिबन्धों के होते हुए भी आश्रम की पवित्रता की रक्षा वानप्रस्थाश्रम के पवित्र वातावरण तथा उसके ऊँचे व्यक्तित्वों के चमत्कारी प्रभाव से ही हो सकेगी, ऐसा हमारा मत है। आर्य-जगत् देर से इस प्रकार के नगर की आवश्यकता अनुभव करता रहा है। इस आवश्यकता की पूर्ति का श्रेय वानप्रस्थाश्रम तथा उसके संस्थापक श्री पूज्य नारायणस्वामी जी को है। आश्रम के पुराने अधिवासी तथा उसके एक स्तम्भ श्री भक्त सुंदरदास जी इस योजना को

सर्वात्मना क्रियान्वित करा रहे हैं। इस सम्बन्ध में आवश्यक पूछताछ उनसे वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर (सहारनपुर) के पते से की जा सकती है या नियमादि मँगाए जा सकते हैं।

लण्डन के मुसलमानों का एक अँगरेजी पुस्तक के विरुद्ध जिहाद

प्रसिद्ध इङ्गलिश इतिहास-लेखक श्रीयुत एच जी. वैल ने संसार का संक्षिप्त इतिहास Short History of the World लिखी है। मुहम्मद साहब सम्बन्धी पुस्तक के किसी लेखसे मुसलमानों में बहुत क्षोभ और असन्तोष फैल गया है। लण्डन में लगभग २०० मुसलमान गत १३ अगस्त को एक जलूस की शक्ल में हाई-कमिश्नर सर फीरोजखा नून के पास यह प्रार्थना करने गये कि वे इतिहासकार के विरुद्ध ब्रिटिश सरकार के सामने उनका विचार रखें। लण्डन का यह भी समाचार है कि उस पुस्तक को मुसलमानों ने जलाया है और इस प्रकार अपने घोर असन्तोष को प्रकट किया है।

लोगों की सम्मति है कि धार्मिक सहिष्णुता दो प्रकार से अमल में लाई जा सकती है। एक प्रकार तो यह है कि किसी को दूसरी जातियों के पवित्र धर्म पुस्तकों, व्यक्तियों और धामिक स्थलों पर आक्रमण नहीं करना चाहिये। दूसरा प्रकार यह है कि किसी के धर्म पर किये गये इस प्रकार के हमलों को सहन करना चाहिये और इस प्रकार के मामलों में विभिन्न धार्मिक जातियों में आपस में भाई चोर का व्यवहार होना चाहिये। युक्ति पूर्ण आलोचना आक्रमण नहीं होती है, परन्तु किसी धर्म पर उचित आलोचना आक्रमण ही समझा जाय तो वह धैर्य पूर्वक सहन किया जाना चाहिये तथा युक्तियों और प्रमाणों से उस आक्रमण का उत्तर दिया जाना चाहिये। हम इस सम्मति से सहमत हैं। हमें पता नहीं कि उपर्युक्त पुस्तकमें क्या वाक्य आपत्तिजनक हैं। हम तो यहाँ केवल धार्मिक आलोचना इत्यादि के सम्बन्ध में एक सुसंगत मत पर प्रकाश डाल रहे हैं।

चुनाव और सरकारी कर्मचारी

बङ्गाल गवर्नमेंन्ट ने ट्रिब्यूनल की रिपोर्ट पर जिसमें मौलवी हबीबुर्रहमान की इलेक्शन पिटीशन (चुनाव के आवेदन पत्र) पर, जो उन्होंने सर के० जी०, ममझास्त्री के बङ्गाल की धारा सभा के चुनाव के विरुद्ध थी आर्डर दे दिए हैं। के० जी महोदय बङ्गाल-सरकार के एक मन्त्री थे। उन्होंने अपने पद का दुरुपयोग करके चुनाव जीता था और सरकार के कुछ ऊँचे अफसरों से उन्होने अपने चुनाव के पक्ष में आन्दोलन कराया था। इस अपराध पर मन्त्री महोदय को तो अपनी सीट खोने और कुछ वर्षों तक चुनाव के लिए अयोग्य घोषित होजाने का दण्ड मिला, परन्तु ट्रिब्यूनल सरकारी अफसरों के विरुद्ध कोई कार्यवाही न कर सका। उसने बङ्गाल-सरकार को उचित कार्यवाही करने की सिफारिश मात्र ही कर दी। उसने विशेष रूप से सिफारिश की कि भविष्य में सरकारी अफसरों के इस प्रकार के अनुचित

कार्य को रोकने के लिए अवश्य ही उचित उपाय किये जाने चाहियें। बङ्गाल सरकार ने घोषणा की है कि भविष्य में सरकारी अफसरों की इस प्रकार की कार्यवाहियों पर कड़ा नोटिस लिया जायगा। सरकारी कर्मचारियों को चुनाव से क्यों पृथक रहना वा रखना चाहिये इस पर हिन्दुस्तान टाइम्स निम्न प्रकाश डालता है:—

जब ट्रिब्यूनल की मालूमात पहली बार प्रकाश में आई, तो भारतवर्ष में लोकमत बहुत उत्तेजित हो गया। यदि उत्तरदायी प्रजातन्त्र शासन के संचालन के लिए राजनैतिक दलों का, उन दलोंसे बाहर सदस्यों के निकलने और उनमें आने की प्रणाली के साथ अस्तित्व जरूरी है तो इसका स्वाभाविक परिणाम यह है कि प्रबन्ध की मैशनरी को राजनैतिक हस्तक्षेप से पृथक् रखा जाय। यदि पदों पर आरूढ पार्टी के मन्त्री लोग अपनी शक्ति और प्रभाव को चुनावों में अपने पक्ष के समर्थन में लगायें तो हम एकतन्त्र प्रथा के लिए कार्य्य करेंगे जिसमें पदारूढ दल सदैव अपने को शक्तिशाली बनाये रक्खेगा या उसके लिए हर सम्भव उपाय से यत्न करेगा। सदैव बड़े उपाय से यत्न करेगा। इसके अतिरिक्त सरकारी कर्मचारियों की स्थिति बड़ी ख़राब होगी, जब वे उस पार्टी के अधीन कार्य्य करेंगे, जिसके विरुद्ध उन्होंने चुनाव में भाग लिया है। यही कारण है कि समस्त प्रजातन्त्र शासनों में कर्मचारियों को चुनावों में सक्रिय भाग लेने से वंचित किया जाता है। मतदाताओं के रूप में किसी भी व्यक्ति या पार्टी के पक्ष में अपना वोट देने में वे स्वतन्त्र होते हैं।

बधाई ?

जोधपुर शहर महर्षि दयानन्द के जीवन से एक विशेष सम्बन्ध रखता है। कोई समय था, जब जोधपुर आर्य्य-समाज के प्रधान वहाँ के महाराजा साहब स्वयं तथा समाज के मन्त्री राज्य के प्रधान मन्त्री थे और आर्य्य-समाज राज्य के एक डिपार्टमेण्ट के रूप में था। समय ने पलटा खाया और कालान्तर में आर्य्य-समाजको मिली हुई समस्त सुविधाएँ बन्द होगई। सन् १८८५ में श्रीमान् स्वर्गीय स्वामी भास्करानन्द जी ने फिर प्रयत्न करके श्रीमान् स्वर्गीय महाराजा कर्नल सर प्रतापसिंह जी की सहायता से जोधपुर में एक आर्य्य-समाज-मन्दिर बनवाया। स्वामी भास्करानन्द जी की मृत्यु के पश्चात् यह मन्दिर वहाँ के कुछ स्वार्थी लोगों के हाथ में आ गया जिन्होंने उसे सन १९१९मे बावजूद वहाँ की आर्य-जनता तथा राजस्थानकी आर्य-प्रतिनिधि सभा के विरोध के ६११०) में बेच दिया। बेचने का कारण यह बताया गया कि जिस ठेकेदार ने यह मन्दिर बनाया था, उसके २०७३।) देने शेष थे और यह रक़म अदा न हो सकने के कारण मन्दिर बेच दिया गया। यह मन्दिर जोधपुर की एक प्रमुख सड़कपर विद्यमान् है और मन्दिर तथा उसके साथ लगी हुई भूमि आदि सब मिलाकर मन्दिर इस समय लगभग ४००००) मालियत का है।

सन १९२७ में सिटी आर्य्य-समाज के नवीन अधिकारियों ने मन्दिरके बेचने व खरीदनेवालों के

विरुद्ध वहाँ के न्यायालय में एक मुक़दमा दायर कर दिया, जिसमें उन्होंने यह दावा किया कि यह मन्दिर एक धार्मिक सम्पत्ति है और इसके बेचने ख़रीदने तथा अन्यथा काम में लाने का किसी को अधिकार नहीं है। १० वर्ष के अथक परिश्रम के पश्चात् इस मुक़दमे का फैसला जोधपुर के उच्चतम न्यायालय से सिटी आर्य्य-समाज के पक्ष में हो गया। इस फैसले में यह करार दिया गया है कि आर्य्य-समाज-मन्दिर कानून की दृष्टि में उसी प्रकार एक पवित्र, धर्मिक संस्था एवं रक्षणीय सम्पत्ति है, जिस प्रकार अन्य मन्दिर व मसजिद आदि होते हैं और यह किसी सूरत में किसी भी प्रकार अन्यथा उपयोग में नहीं लाया जा सकता है।

आर्य्य-समाज के पक्ष में फैसला देते हुये माननीय न्यायाधीश ने यह भी डिग्री दी है कि आर्य्य-समाज ठेकेदार के २०७३) व इस रकम के ऊपर १०४८॥≈) ब्याज के तथा १०००) ख़रीदार-द्वारा बनाये गये अन्य मकान के ४२५) कोर्ट फीस के इस प्रकार कुल ४५३६॥≈) अदा करे। इस रकम के अदा होने पर मन्दिर का कब्जा सिटी आर्य्य-समाज को दे दिया जाय।

यह फैसला आर्य्य-जगत् में बड़ी प्रसन्नता के साथ सुनाया जायेगा। आर्य्य-समाज के प्रति न्याय करने के लिए जोधपुर-राज्य तथा न्याय प्राप्ति के पूरे-पूरे यत्न के लिए सिटी आर्य्य-समाज धन्यवाद के पात्र हैं। अब यत्न करके न्यायालय-द्वारा नियत क़र्जे को ४५३६) की राशि अदा करके समाज-मन्दिर का क़ब्जा प्राप्त करना चाहिए। राजस्थान की सभा को इस सम्बन्ध में विशेष ध्यान देना चाहिये। उसे देखना चाहिये कि यह राशि समय पर अदा कर दी जाय। कहने की आवश्यकता नहीं यदि समय पर धन अदा न होने के कारण समाज-मन्दिर का कब्जा प्राप्त न हो सका, तो यह आर्य्य-समाजके लिए बड़ी लज्जा की बात होगी और अबतक के सब-कुछ करे कराये पर पानी फिर जायगा आर्य्य-समाजों की जायदादों को क़ानूनन सुरक्षित बनाये जाने का यत्न किया जा रहा है। इस प्रकार के उदाहरणों से इस प्रकार की व्यवस्था की आवश्यकता स्पष्ट हो जाती है। जितनी जल्दी यह व्यवस्था हो, जाय, उतना ही अच्छा है।

बहु-विवाह की बलि-वेदि पर

कुछ दिन हुए देहली-रेल्वे-स्टेशन पर ट्रेन में एक बक्समें बन्द एक हिन्दू-स्त्री की लाश के मिलने की सूचना समाचार-पत्रोंमें छपी थी। इस क़त्लके सम्बन्ध में पुलीस की तहक़ीक़ात के फलस्वरूप निम्न सनसनीपूर्ण विवरण पत्रों में छपा था.—

"कानपुर शहर में थाना अनवरगंज के इलाके में गयाप्रसाद का पहला विवाह मुसम्मात दुलारा से हुआ था और उसके बाद उसने दूसरी शादी लीलावती से कर ली थी। इस पर पहली स्त्री दुलारा से अनबन रहने लगी। ता० २२ जुलाई की रात को ९ बजे जब गयाप्रसाद घर पहुँचा, तो दुलारा से झगड़ा हुआ। कहते हैं कि इस पर गयाप्रसाद ने दुलारा से कहा कि तू घर से निकल

जा। दुलारा बोली कि बताइये मैं तो आपके पल्ले बँध चुकी हूँ, कहाँ जाऊँ ? आप जहाँ चाहें भेज दीजिये। गयाप्रसाद बोला कि अगर कहीं जगह नहीं है, तो अफीम खाकर मर जा। इस पर दुलारा ने कहा कि अच्छा अफीम ला दो, मैं खाकर मर जाऊँगी।

दुलारा के यह कहते ही गयाप्रसाद ने जेब से अफीम निकालकर दे दी, जिसे दुलारा ने फ़ौरन पति के हाथ से लेकर खा लिया। कुछ देर बाद दुलारा बेहोश हो गई।

दुलारी के पेट मे ५॥ माह का बालक था और वह गर्भवती थी। उसके बेहोश होते ही गयाप्रसाद और उसकी दूसरी स्त्री लीलावती ने तीन वटाबा आठ इंचवाली मोटी सूत की रस्सी ली और उसे दुलारा के गले में बाँधकर दोनों ने आमने-सामने बैठकर उस रस्सी का एक-एक सिरा पकड़कर उसे खींच लिया, जिससे दुलारा के गले मे फाँसी लगते ही फ़ौरन मर गई। उसी वक्त उन्होंने उसी रोज़ का खरीदा एक नया चौबी लकड़ी का सन्दूक जिस पर टीन चढ़ा हुआ था लिया और दुलारा की लाश को इस तरह मोड़ा, जिस प्रकार माँ क पेट मे बच्चा रहता है और उसे जबर्दस्ती दबाकर उस सन्दूक मे ठूँस दिया, और फिर सन्दूक को ताला लगा दिया। और फिर नत्थामल व हीरालाल पड़ोसियो की मदद से २३ न० का इक्का मँगवाकर उसे इक्के मे रख दिया।

स्टेशन पर पहुँचकर रात को १२ बजे के लगभग कुली न०५२ की मदद से इस सन्दूक को नं० ४७ हावड़ा अप एक्सप्रेस ट्रेन पर ले जाकर एक तीसरे दर्जे के डब्बे में रख दिया। अगले दिन प्रातःकाल दिल्ली-रेल्वे-स्टेशन पर जब गाड़ी पहुँची, तो एक सिपाही ने उसे लावारिस सन्दूक समझ कर खोये हुये मालवाले गोदाम मे जमा करा दिया। अगले दिन जब उसमे से बदबू आने लगी, तो हकीम मजरूलहक सब-इन्सपैक्टर इन्चार्ज रेल्वे स्टेशन ने जाकर उस सन्दूक को तुड़वाया, तो उसमे से एक औरत की लाश बरामद हुई।"

यदि यह विवरण सत्य है, तो प्रश्न होता है कि क्या एक पत्नी के होते हुए दूसरी शादी करने की प्रथा एक क्षण क लिए भी जीवित रखने या बर्दाश्त करन योग्य है? प्रसन्नता है, इस प्रकार की घटनाओ और हमारी निर्दोष बहनों के कत्ल और उन पर होनेवाले भीषण अत्याचारों का लम्बा सिलसिला अपना रंग ले आया है और समाज की निद्रा उनके रौरव चीत्कार से भङ्ग हो गई है। समाज इन प्रथाओ के अन्त के लिए अधीर देख पड़ने लग गया है। एक स्वर से आवाज आने लगी है कि नैतिक व कानूनी किसी भी आधार पर इस प्रकार की प्रथाओ का एक मिनिट क लिए भी समर्थन नहीं किया जासकता है और ये तत्काल निर्दयतापूर्वक मिटा देने योग्य हैं।

अभी हाल मे धारा-सभाओं मे 'बहु-विवाह निषेधक बिल' पेश किये गये हैं। हम उनका स्वागत करते हैं। अवश्य इन कानूनो और उपायों से बुराई का सामना करने मे मदद मिलेगी, परन्तु हमे इतने पर ही निर्भर न होना होगा। हमे

तो प्रत्येक अन्य उपाय से भी जनता को शिक्षित करना होगा। तभी कुछ सफलता मिल सकेगी। शताब्दियों से जमी हुई कालिमा के धोने के लिए विविध उपायों और उग्र परिश्रम की आवश्यकता होती ही है।

आर्य-समाज मँसूरी का नगर-कीर्त्तन

आर्य-जनता को यह जानकर प्रसन्नता और सन्तोष होगा कि आर्य-समाज मॅसूरी (संयुक्त-प्रान्त) के नगर-कीर्त्तन की, जो वर्षों से बन्द था, सरकार की ओर से आज्ञा मिल गयी है। इस नगर-कीर्त्तन की बन्दिश के इतिहास मे न जाकर हम केवल इतना ही कहेंगे कि अधिकारियों ने नगर-कीर्त्तन की आज्ञा देकर बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता का परिचय दिया है।

बाइबिल-प्रचार के आश्चर्यजनक आँकड़े

ब्रिटिश एण्ड फारेन बाइबिल सोसाइटीज की १३ वी रिपोर्ट से मालूम हुआ है कि बाइबिल का अनुवाद अबतक ७०० भाषाओं और बोलियों मे हो चुका है। १६३५-३६ में १३ भाषाओं में अनुवाद हुए जिन्हें मिलाकर यह सख्या पूरी हुई है। इस वर्ष में बाइबिल की कुल १, १६, ८६, १३१ प्रतियाँ एशिया में खपीं—७२, ४०, ००० चीन में ४२, २७,००० भारत मे सिंहल में ११, ८२,००० जापान में ५, ६ ००० और वर्मा मे १,१२,६०० प्रतिया वितरित हुई जिनमें १७ ६०० अबीसीनियों का हिस्सा था।

इस साल में कमेटी को करीब ३ लाख रुपये का घाटा रहा। अपने जीवन के कुल १३२ वर्षों मे वह ४७,६०,००,००० प्रतियाँ बाइबिल की वितरण और ३२, ३३ करोड़ रुपया खर्च कर चुकी है।

विवाहित स्त्रियों का विद्रोह

इन दिनों सिंध प्रान्त में एक धार्मिक सस्था ओ३म् मण्डल की बड़ी चर्चा हो रही है। इसमे दीक्षित विवाहित स्त्रियों और उनके पतियों में बड़ा सघर्ष हो रहा है। उन स्त्रियों ने अपने पतियों को नोटिस दिया बतलाते हैं कि वे ब्रह्मचारिणी रहेंगी। उन्हों ने अपने पतियों को दूसरी शादी करने की भी सिफ़ारिश की बतलाते हैं। सुनते हैं अपनी पत्नियों को मण्डल मे जाने से रोकने के लिए पतियों ने सत्याग्रह का आश्रय लिया है। अखबारों में मण्डल के उद्देश्य और कार्य के सम्बन्ध में बड़े मनोरञ्जक समाचार प्रकाशित हुए हैं। ऐसा ही एक समाचार पाठक अन्यत्र पढ़ेंगे।

इस प्रकार के आश्रमों और मण्डलों की लोगों के सामाजिक और धार्मिक उत्थान के लिए हम कोई उपयोगिता स्वीकार नहीं करते हैं। हाँ, उनका एक ही मूल्य समझते हैं वह यह कि ये लोगों की आँखें खोल देते हैं। यद्यपि ही वे अल्प काल के लिए ही खुलती हैं।

लेखकों तथा संवाददाताओं के प्रति

हमारे पास ऐसी बहुत-सी सूचनाएँ और लेख प्रकाशनार्थ आते हैं, जिन्हें हम प्रकाशित न करने के लिए विवश हो जाते हैं। संवाददाताओं

को अपनी सूचनाएँ भेजते समय यह देख लेना चाहिये कि जो सूचना वह हमारे पास भेज रहे हैं वह साप्ताहिक वा दैनिक पत्रों में छपने योग्य है व मासिक पत्रों में। यदि वे यह देख लिया करें तो न तो हमें उन्हें न छापने के लिए विवश होना पड़ा करे और न उन्हें न छपने के कारण निराश ही होना पड़ा करे। उदाहरणार्थ एक संवाददाता ने हमारे पास अपने समाज का निर्वाचन छपने भेजा है। एक दूसरे सज्जन ने अपने यहाँ के उत्सव की सूचना छपने भेजी है। ये सूचनाएँ साप्ताहिक और दैनिक पत्रों के योग्य ही हैं उन्हीं में छपने से उनके प्रकाशन का लाभ है। हमारे ऐसे कृपालु लेखक भी हैं जो अपने वे लेख "सार्वदेशिक" में छपने के लिए भेजते हैं, जो अन्य साप्ताहिक वा दैनिक पत्रों में छप चुके होते हैं। उन लेखकों को भी अनिच्छापूर्वक हमें निराश करना पड़ जाता है। उनसे भी विनीत निवेदन है कि वे कृपया "सार्वदेशिक" को अपने वे ही लेख भेजने की कृपा किया करें, जो "सार्वदेशिक" के लिए लिखा करें। इसी में पत्र का गौरव है, पाठकों का लाभ है तथा पत्र-कला के गौरव की रक्षा है। महत्वपूर्ण लेख और आवश्यक संवाद के छापने वा उस पर यथेष्ट नोटिस लेने के अपने उत्तरदायित्व के प्रति हम स्वयं सजग रहते हैं, यह हम अपने लेखकों और संवाददाताओं को विश्वास दिला देना चाहते हैं।

अनाथालयों का शासन

कानपुर का समाचार है कि अनाथालयों और विधवाश्रमों के निरीक्षण के लिए डाक्टर जवाहरलाल यू० पी० की धारा सभा के आगामी अधिवेशन मे एक बिल पेश करेंगे। इसमें सन्देह नहीं कि प्रान्तो में अनाथालयों इत्यादि के नाम बोगस संस्थाएँ चल रही हैं। बहुत से लड़के और लड़कियाँ इन संस्थाओं को चलानेवाले धूर्तों का शिकार बन जाते हैं। इस प्रकार के उपाय तभी बहुमूल्य हो सकते है, जब वे इस ढंग से बनाये जाँय कि वास्तविक और उपयोगी संस्थाओं मे हस्तक्षेप का कोई खतरा न रहे। इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण लोकमत का जागृत होना है जो लोक-हितैषियों के बाने में स्वार्थियों के हथकंडों को न चलने दे। यदि इस प्रकार के लोग जाति या समाज के नेता के नाम में आश्रय न पायें तो आशा नहीं उन्हें व्यक्तिगत स्वार्थों की अपनी स्कीमों में दूसरों से सहायता मिल जाय।

—*—

अध्यात्म-धारा

वास्तविक आध्यात्मिक जीवन आत्मा और परमात्मा के बीच के सम्बन्ध के जीवन को कहते हैं। आध्यात्मिक जीवन की वास्तविकता की सब से पहली शर्त परमात्मा के अस्तित्व को स्वीकार करना है। वास्तविक आध्यात्मिक जीवन के जिज्ञासुओं को परमात्मा की सत्ता के सम्बन्ध मे कोई सन्देह नही होना चाहिये। उनकी निरन्तर इच्छा और यत्न परमात्मा के अधिक से अधिक सामीप्य म आने का होना चाहिये। उ हे यह भी जान लेना चाहिये कि परमात्मा का सामीप्य निष्काम लोक-सेवा से प्राप्त होता है। उनके लिए जीवन का उद्देश्य लोक सेवा और उसके द्वारा परमात्मा की प्राप्ति होती है। इस यत्न के परिणाम-स्वरूप उ के लिए ससार एक आनन्द वाटिका होती है और ससार के लिए वे उस वाटिका के मनोहर और सुगन्धित पुष्प होते हैं।

ऐसे भी व्यक्ति होते है, जिन्हे आध्यात्मिक जीवन की खोज और उसके अनुसरण के लिए न तो इच्छा होती है और न समय होता है। वे खाने-पीने और दुनियादारी से सन्तुष्ट रहते है। वे अपने लिए सम्पत्ति, यश और शक्ति के उपार्जन में लगे रहते है। कुछ व्यक्ति यश और सामाजिक कीर्ति को धनोपार्जन का साधन बना लेते हैं। कुछ ऐसे भी होते है जो अपने भाइयों पर हुकूमत करने मे समर्थ होने के उद्देश्य से शक्ति का संग्रह करते हैं। बहुधा इन संग्रहों के मूल में आत्म सवर्द्धन की भावना होती है। ये लोग विशुद्ध भौतिक जीवन व्यतीत करनेवाले कहे जा सकते हैं। इन लोगों के लिए आध्यात्मिक जीवन कोई अर्थ नही रखता है।

उनमें से कुछ तो साफ तौर पर कहते-सुने जाते है कि धर्म धोखा और ढकोसला है। उनके लिए महा पुरुष, ऋषि लोग और धर्मों के प्रवर्त्तक, जिन्होंने पवित्रता और सेवा का जीवन व्यतीत किया था केवल काल्पनिक चीज हैं, जिनका इतिहास में पता नहीं है।

मनुष्यों की एक दूसरी महत्वपूर्ण श्रेणी है, जिनका बाह्य जीवन धनोपार्जन और संसार में लिप्त देख पड़ता है, परन्तु जो आन्तरिक जीवन मे अध्यात्म मार्ग के पथिक होते हैं। उनके लिए चुपचाप परमात्मा की सेवा ही सब कुछ होती है। परमात्माकी सेवाका ढोल पीटना उन्हें पसन्द नहीं होता है। ये अपने सब कर्मों और यत्नोंको परमात्मा के अर्पण समझते हैं। दिन के कामों मे लगने से पूर्व उसका स्मरण करते है और शाम को उसे अपने सामने उपस्थित समझकर दिनभर के अपने कार्यों पर दृष्टि डालते हैं। बुरे कामों के लिए पश्चात्ताप करके आगे न करने मे समर्थ बनाने की प्रेरणा के लिए उसका आह्वान करते हैं और उनसे बचने के लिए परमात्मा को हर जगह मौजूद समझते है। वे अपने आध्यात्मिक जीवन का परिचय अपनी बातों की अपेक्षा अपने कर्मों से देते हैं। उनका पवित्र जीवन उनका सेवा-भाव उनकी सहानुभूति और प्रेम स्वय उनका परिचय दे देते हैं।

हिन्दू-समाज के पतन के कारण

[ले०—श्री महात्मा नारायणस्वामी जी महाराज]

एक ब्राह्मण ग्रन्थ मे एक जगह कहा गया है—

आस्ते भग आसीनस्य ऊर्ध्वस्तिष्ठति तिष्ठत ।
शेते निपद्यमानस्य चराति चरतोभग ॥

भाव इसका स्पष्ट है कि जाति का ऐश्वर्य, जाति के उद्यमहीन होकर बैठने से बैठ जाता है ठहरने से ठहर जाता है, और पुरुषार्थ करने से उदय होने लगता है। इस पुरुषार्थ की महिमा को न समझकर बेसमझो ने ऐसी बाते जाति मे प्रचलित कर दीं, जिनसे जाति का मुख पुरुषार्थ करने से फिर गया है। उदाहरण के लिए देखो—

(१) भाग्यवाद के प्रचलित होजाने से यह विचार फैल गया है कि

'हुइहै वही जो राम रच राखा ।
को करि तर्क बढावे शाखा ॥"

दैववाद, प्रारब्ध होनी, तकदीर शुदनी आदि अनेक रूप इसी भाग्यवाद के हैं। इसने पुरुषार्थ करने का व्यर्थ की वस्तु ठहरा कर उससे जाति का मुँह फेर दिया।

(२) जगत् के मिथ्यात्व के विचार ने भी, कुछ कम बदसलूकी हिन्दू जाति मे नहीं की। भला जब जगत् कुछ है ही नहीं, केवल स्वप्न है, मृगतृष्णा है—धोखे का टट्टी माया का जाल

हममे से बहुतो को अनुभव हुआ होगा कि ऐसा समय आता है जब हमारा प्यारा हमसे जुदा होता है या कोई विपत्ति हमपर आती है या हम अपने को निस्सहाय पाते है। ऐसी अवस्थाओ मे वह महान् सत्ता हमे याद आती है। उन अवस्थाओ मे ग्रस्त होने पर उपरोक्त प्रथम श्रेणी के लोग तथा बडे से बडे पक्के नास्तिक भी परमात्मा का स्मरण तथा आध्यात्मिक जीवन की महत्ता को स्वीकार करते देखे गये है। फ्रास का प्रसिद्ध वैज्ञानिक लाप्लास परमात्मा की सत्ता को स्वीकार नही करता था। वह कहा करता था कि विज्ञान के बडे-से बडे परीक्षण मे मुझे ईश्वर की कहीं जरूरत नहीं पडी। परन्तु जब उसका अन्त समय आया तो लोगों ने उसे बडा भयभीत पाया और यह कहते सुना 'वह है, वह है, अर्थात् ईश्वर है।

सक्षेप मे आध्यात्मिक जीवन परमात्मा की प्राप्ति का एक साधन है। परमात्मा की प्राप्ति का अर्थ अपने जीवन को पवित्र और सेवा मय बनाना है। परमात्मा की प्राप्ति इस ससार मे से गुजरे बिना नहीं होती। ससार मे गुजरने का प्रकार श्रेष्ठ होना चाहिये, तब ही हम अन्तिम ध्येय पर पहुँच सकते हैं। वह प्रकार यह है कि ससार मे लिप्त न हो अर्थात् दुनिया ही सब-कुछ है यह मत समझो, वरन् दुनिया को एक ध्येय की सिद्धि का साधन समझते हुए उसका उचित उपयोग करो। ससार के उचित उपयोग से ससार के लोगों का भी कल्याण होगा और हम अपने ध्येय की प्राप्ति मे समर्थ होंगे।

मात्र है, तब ऐसी निकम्मी वस्तु के प्राप्त करने का कौन यत्न करे।

(३) फलित ज्योतिष—इसके बदौलत किसी के सिर पर शनैश्चर सवार है, तो किसी को मङ्गल ने जकड़ रक्खा है। किसी के पाँव में शुक्र ने बेड़ी डाल रक्खी है तो कोई बृहस्पति का शिकार बना हुआ है। जब सब कुछ इन आसमान के तारों के हाथ में है तो फिर पुरुषार्थ किस मरज की दवा हो सकता है? आज दिशा-शूल है इधर ना जाओ! आज मुहूर्त नहीं है इसलिए यह काम न करो। विवाह बन्द, सस्कार बन्द, आना बन्द, जाना बन्द सम्बन्धियों से मिलना बन्द, यदि शत्रु सिर पर सवार हो तो भी उसके विरुद्ध कुछ नहीं करना चाहिये, इसलिये कि मुहूर्त नहीं है। पृथ्वीराज, ढाके का राजा और टीपू सुल्तान आदि अनेक महापुरुष अपना-अपना राज्य खोकर इस मुहूर्त के बलि-वेदी पर भेंट चढ चुके हैं। अब भी यह बात नहीं है कि उपयुक्त, नाशकारी प्रथाओं ने हिन्दू-जाति का पीछा छोड़ दिया हो। अब भी बहुधा हिन्दू-परिवार इनका शिकार बन रहे हैं।

(४) दान का दुरुपयोग—इस देशमें १५०० के लगभग तीर्थ हैं। इन तीर्थों में प्रति वर्ष औसतन ५ करोड़ यात्री पहुँचते हैं। डेढ अरब रुपया यात्रा और दान में इन यात्रियों का खर्च होता है। इसमें से कूतागया है कि ६० लाख रुपये मन्दिरों, महन्तों और पुजारियों के हिस्से मे जाते हैं। इन ६० लाख रुपये के अधिकांश का क्या होता है, यह अब छिपी हुई बात नहीं है। शराबखाने, वेश्यागृह, कसाइयों की दुकाने आदि इस सपत्ति के नादहन्द बैंक है। इन्हीं जगहों मे इस धन का अधिकाश पहुँचा करता है। इसके साथ, यदि उन यात्रियों और उनसे भिन्न अन्य देशवासियों की दशा पर विचार करें तो हृदय काँप उठता है। पिछले ४० वर्षों मे १७ अकाल पडे। डेढ करोड आदमी उन मे भूख के मारे तड़प-तड़पकर मर गये। इस के सिवा, साधारण अवस्था में, इस देश मे प्रति वर्ष १० लाख, प्रति मास ८६ हजार प्रति-दिन २८८०, प्रति घंटे १२० और प्रति मिनट २ मनुष्य भूख से मरते हैं। १० करोड किसान केवल एक समय दिन मे भोजन पाते है। ४० लाख भिखारी भीख माँगते हैं। इधर देश की यह हालत, उधर ६० लाख रुपयो का महन्त और पुजारी दुरुपयोग करें, कितने अन्धेर की बात है!

हिन्दू-जाति के विचारशाली स्त्री-पुरुषों का काम है कि इन पक्तियों पर ठंडे दिल से विचार करें और यत्न करें कि जाति के स्त्री-पुरुष सन्मार्ग ग्रहण करें।

सत्यार्थ प्रकाश लेख माला

ब्रह्मचर्य

[लेखक—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज]

विद्या-अध्ययन का समय आश्रम-धर्म मे ब्रह्मचर्याश्रम नाम से पुकारा जाता है। इसलिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र गृहस्थाश्रम के भेद है। अन्य तीनों आश्रमो मे इस प्रकार का कोई भेद नहीं है। जिस समय बालक गुरु के समीप शिक्षा-ग्रहणार्थ जाता था उस समय गुरु उसे यज्ञोपवीत देता था और वेदारम्भ संस्कार करवाता था। वेदारम्भ संस्कार मे अन्य क्रियाओ के साथ-साथ शिष्य को गायत्री मन्त्र-का पाठ भी पढ़ाया जाता था। शिक्षा के लिए गुरु-आज्ञा का पालन करना और भिक्षादि व्रतों का पालन करना आवश्यक था। समय का विधान क्रम से १२, २४, ३६, ४८ वर्ष का था। उसके पश्चात् भी यदि कोई आजीवन ब्रह्मचारी रहना चाहे तो रह सकता था, उसे नैष्ठिक ब्रह्मचारी कहते थे। जो नैष्ठिक न रहना चाहे वह विवाह कर लेता था। यज्ञोपवीत के लिए अंतिम अवधि १६, २०, २२, २४ वर्ष थी। इसके पश्चात् पतित सावित्रीय समझा जाता था। यदि उस अवस्था मे कोई यज्ञोपवीत लेना चाहे तो उससे कुछ प्रायश्चित करवा लिया जाता था। उस प्रायश्चित के पीछे यज्ञोपवीत दिया जाता था। यज्ञोपवीत देने का अधिकार केवल ब्राह्मण को न था। द्विज मात्र यज्ञोपवीत दे सकता था। कहीं २ माता पितादि को भी देने की व्यवस्था मिलती है। महर्षि जी ने सत्यार्थप्रकाश मे कई स्थानो पर इस बात को लिखा है, उनमे से मै यहाँ चार स्थल लिखना पर्याप्त समझता हूँ।

जन्म से पाँचवे वर्ष तक बालको को माता, छठे से आठवे वर्ष तक पिता शिक्षा करे और नवें वर्ष के आरम्भ मे द्विज अपनी सतानो का उपनयन करके आचार्य कुल अर्थात् जहाँ पूर्ण विद्वान् और पूर्ण विदुषा स्त्री शिक्षा और विद्या दान करनेवाली हो वहाँ लडके और लडकियो को भेज दे और शूद्रादि वर्ण उपनयन किये बिना विद्याभ्यास के लिए गुरुकुल मे भेज दे। सत्यार्थप्रकाश समुल्लास २ पृष्ठ ३६, ३७ (कलकत्ता)

द्विज अपने घर मे लड़को का यज्ञोपवीत और कन्याओं का भी यथायोग्य संस्कार करके यथोक्त आचार्य कुल अर्थात् अपनी अपनी पाठशाला मे भेज दे। सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ३ पृष्ठ ४१।

ब्राह्मण तीनो वर्ण अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य क्षत्रिय, क्षत्रिय और वैश्य तथा वैश्य एक वैश्य वर्ण का यज्ञोपवीत करा के पढ़ा सकता है और जो कुलीन शुभ लक्षणयुक्त शूद्र हो तो उसको मंत्र संहिता छोड़ के सब शास्त्र पढ़ावे शूद्र पढ़े, परन्तु उसका उपनयन न करे, यह मत अनेक आचार्यो का है। सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ३ पृष्ठ ४६, ५०।

"सब स्त्री और पुरुष अर्थात् मनुष्य मात्र को पढ़ने का अधिकार है और तुम कुँआ में पड़ो और श्रुति तुम्हारी कपोल-कल्पनासे हुई है। किसी प्रामाणिक ग्रंथ की नहीं। और सब मनुष्यों को वेदादि शास्त्र पढ़ने सुनने के अधिकार का प्रमाण यजुर्वेद के छब्बीसवें अध्याय मे दूसरा मन्त्र है।"
सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ३ पृष्ठ ८८।

इन स्थलों में महर्षि ने यज्ञोपवीत देकर वा बिना दिये पढने के लिए बालकों को भेजना और मनुष्य मात्र को पढने का अधिकार दिया है। इस समय इनके अतिरिक्त आर्यसमाज मे जो यज्ञोपवीत का प्रचार है बाल्यावस्था के साथ साथ युवावस्था मे भी है। जो बालक गुरुकुल म जाते हैं उनका यज्ञोपवीत सस्कार तो गुरुकुल वा घर पर होता है और जो स्कूलो मे जाते है उनका घर पर यज्ञोपवीत हो जाता है। उनका गुरुकुल वास नही है और गुरुकुल मे जाकर अनेक बालक बाल्यावस्था मे ही लौट आते है उनका और न जानेवालों का अन्तर किंचन्मात्र ही है, परन्तु जो गृहस्थम प्रवेश करके, वह भी कई-कई सन्तानों के पिता यज्ञोपवीत लेते हैं उनका गणना किस मे की जाय। यदि उनको पतित सावित्रीक मान लिया जाय तो प्रथम गायत्री मन्त्र तीन बार पढ़वाकर इसे प्रायश्चित्त माना जाय, तब प्रायश्चित और उपनयन एक समय मे हो जाने से कुछ व्यवस्था बन जायगी। इसके पश्चात् यह प्रश्न होगा कि जिनको यज्ञोपवीत देकर गुरु वा पुरोहित वा कोई अन्य विद्वान् पृथक हो जाते हैं उनकी गणना किसमें करें, वह ब्रह्मचर्य व्रत का पालन तो करते नही हैं। उनकी कोई व्यवस्था तो होनी चाहिये।

वैखानस धर्म प्रश्न और वैखानस गृह मत्र दो पुस्तक हैं। उन दोनों मे ब्रह्मचारी के चार भेद किये हैं। उन मे से जो प्रथम ब्रह्मचारी है यदि इसको उसमे मानलिया जाय तो कुछ न कुछ व्यवस्था हो जाती है। धर्मसूत्र का पाठ निम्न प्रकार है।

ब्रह्मचारिणश्चतुर्विधा। गायत्रो, ब्रह्म। प्राजापत्यो, नैष्ठिक इति।१। गायत्र, उपनयनादूर्ध्वं त्रिरात्रमक्षार लवणाशी गायत्रीमधीत्या-सावित्र सम्यग्गरम ब्रह्मचारी ।।२।।

ब्राह्म। सावित्र व्रतादूर्ध्वमनभिशस्तापतितानां गृहस्थानां गृहेषु भैक्ष चरणवेदव्रत चरण चरित्वा द्वादशसमा विंशति समा वा गुरुकुले स्थित्वा वदात् वेदां वेदवा सूत्रसहितमध्ययन कृत्वा गार्हस्थानुसरणं कुर्यात। ३

प्राजापत्य, स्नात्वा नित्य कर्म ब्रह्मचर्य शाला नारायण परायणो वेदवेदागार्थान विचार दार सग्रहण करोति।४। प्राजापत्यस्त्रिसवत्सरादूर्ध्वं न तिष्ठेदिति ऋषयो वदन्ति। ५

नैष्ठिक। काषाय धातुवस्त्रमाजिन वल्कलवा परिधाय जटा, शिखी वा मेखली दण्डी सूत्राजिन धारी ब्रह्मचारी शुचिरसारलवणाशी यावदात्मना विप्रयागस्तावद् गुरुकुले स्थित्वान्नादि भैक्षभोजी-भवति।६। वखानसधर्म प्रश्न १ खण्ड ३

भावार्थ—ब्रह्मचारी चार प्रकार के हैं। गायत्र, ब्रह्म, प्राजापत्य, नैष्ठिक।

(१) गायत्र वह है जो यज्ञोपवीत धारण करके तीन रात नियम से वास करता हुआ गायत्री याद करने पर्यंत व्रतचारी रहे।

(२) ब्रह्म—उपवीत लेकर गायत्री याद करके

निकट सम्बन्धियों में विवाह-परित्याग का कारण

[लेखक—स्व० श्री० मास्टर आत्माराम जी]

डेविस महोदय लिखते हैं "जिस प्रकार प्राण-विद्युत, प्राण विद्युत को हटाती है—आकर्षण नहीं करती उसी प्रकार निकट सम्बन्ध में विवाह हो जाने पर जैसा आकर्षण होना चाहिये, वैसा स्त्री-पुरुषों में नहीं होता। यह नियम है कि प्राण-विद्युत रयि (मन की) विद्युत आकर्षण करती है अथवा यों कहो कि विरुद्ध प्रकार की बिजलियों में जिस प्रकार आपस में मेल होता है ठीक उसी प्रकार दूर के विवाह सम्बन्धों में परस्पर प्रेम बढ़ता है परित्याग नहीं होता। अतएव निकट सम्बन्ध में कदापि विवाह नहीं होना चाहिये।"

एक दूसरे सज्जन की सम्मति है "यदि रक्त-सम्बन्ध में विवाह किया जायगा तो सन्तान भद्दी और प्रतिभा-शून्य होगी। खाने-पीने और सोने में तो वह चतुर होगी। परन्तु बौद्धिक और आत्मिक कार्यों के अयोग्य होगी। साथ ही अधिक स्वार्थी होगी। यदि रक्त-सम्बन्ध में विवाह करने की प्रथा बन्द न हुई तो मनुष्य जाति का विनाश अवश्यम्भावी है। संसार में आज ज्यादा विषय-वासना पायी जाती है। रक्त-सम्बन्धी विवाहों की सन्तान बहुत विषयी सिद्ध हुई है। अमेरिका इत्यादि देशों में कई बार शोर मच चुका है कि इस प्रकार के विवाहों का सरकारों को त्याज्य और दण्डनीय ठहराना चाहिये, ताकि अयोग्य सन्तान पैदा न हो।"

पश्चिमी समीक्षकों के उपर्युक्त प्रमाणों से यह बात भली भाँति सिद्ध हो गयी कि सगोत्र विवाह अर्थात् निकट वा रक्त-सम्बन्धों में विवाहों का होना शरीर और मन दोनों के लिए हानिकारक है, अतएव ऐसे विवाह सम्बन्ध कदापि नहीं होने चाहिये।

—*—

अच्छे गृहों से भिक्षा माँगकर नियमपूर्वक १२ वा बीस वर्ष गुरुकुल में रहकर तीन, दो वा एक वेद को सूत्र-सहित पढ़कर गृहस्थी बने।

(३) प्राजापत्य—समावर्तन के पश्चात् नित्य कर्म करता हुआ ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता हुआ ईश्वर-परायण रहकर वेद वेदाग का विचार कर गृहस्थी हो। यह समावर्तन के पश्चात् तीन वर्ष से अधिक ब्रह्मचारी न रहे अर्थात् तीन वर्ष में विवाह करले ऐसा ऋषि कहते हैं।

(४) नैष्ठिक—काषाय वस्त्र, मृगचर्म वा वल्कल पहने, केश वा शिखा रखे। मेखला, दण्ड, सूत्र धारण कर शुद्ध भोजन करता हुआ। जब तक जीवे तब तक गुरुकुल में वास करके भिक्षा भोजी हो।

जो यज्ञोपवीत धारण करके उसी समय अपने कार्य में लग जाते हैं वा गुरु से पृथक् हो जाते हैं वह प्रथम गायत्र ब्रह्मचर्य के अन्तरभूत हो सकते हैं, क्योंकि इसमें सावित्री कंठस्थ करने की अवधि तीन रात मानी है। जिस प्रकार आजकल आत्रैन धारण करना भिक्षा भोजी होना नहीं है उसी प्रकार गायत्री कंठस्थ के समय को मानकर उनको यज्ञोपवीत देना ठीक ही प्रतीत होता है।

साइन्स और सच्चा धर्म

[श्रीयुत् पं० जवाहरलाल जी के एक लेख का सार]

पिछले कई वर्षों में मैं साइन्स और शिक्षा मन्दिरों से दूर रहा हूँ। भाग्य और परिस्थितियों ने मुझे इन चीजों से हटाकर गली-कूचों, खेतों और फैक्ट्रियों की धुन्ध और गर्द में फेंक दिया। हाल के कुछ वर्षों में जिन महान मानवी विप्लवों ने हमारे इस देश को हिला दिया है, मैं उनमें ग्रस्त हो गया।

इस संघर्ष और आन्दोलन के बावजूद भी, जिन्होंने मुझे घेर रखा था, मैं साइन्स और शिक्षा मंदिरों से सर्वथा पृथक् रहा हूँ, यह नहीं कह सकता हूँ। मैंने भी विज्ञान-मन्दिर में उपासना की है और मैं अपने को साइन्सका एक भक्त मानता हूँ।

साइन्स ने महान परिवर्तन उपस्थित किये हैं और इसमें सन्देह नहीं कि वे सब मानव-समाज के लिए कल्याणप्रद सिद्ध नहीं हुए हैं। परन्तु सबसे मुख्य और आशाजनक परिवर्तन जो साइंस ने उपस्थित किया है वह मनुष्य में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास है।

साइन्स के प्रारम्भिक युग में धर्म और साइन्स के मध्य संघर्ष की बहुत चर्चा रहती थी। उन दिनों साइन्स भौतिकवादी और धर्म आध्यात्मिक समझा जाता था। आज यह संघर्ष मुश्किल से ही वास्तविक दीख पड़ता है। आज साइन्स ने अपने पङ्ख फैला दिये हैं और उसने तमाम विश्व को अपना कार्यक्षेत्र बनाने की हिम्मत की है। यह सब होते हुए भी संघर्ष वास्तविक था। यह संघर्ष धर्म्म समझी जानेवाली चीज़ की आड़ में होनेवाले बौद्धिक अत्याचार और मनुष्य की स्वतन्त्र-भावना के मध्य था।

इन दोनों के बीच में कभी भी समझौता नहीं हो सकता। दिमाग की खिड़कियों का बन्द किया जाना साइन्स कभी स्वीकार नहीं कर सकती। सच्चे वैज्ञानिक को न जीवन की ममता होती है और न सेवा के फल की। जहाँ से भी सत्य प्राप्त होता है वहाँ से ही पर प्राप्त करने के सदैव यत्न में लगा रहता है।

शायद सच्चे धर्म और साइन्स में वास्तविक संघर्ष नहीं है। यदि है तो धर्म को साइन्स का वेष धारण करके साइन्स की स्प्रिट में ही अपनी सब समस्याओं को हल करना चाहिये। जीवन की विशुद्ध सांसारिक फिलासफी ही पर्य्याप्त है ऐसा हममें से बहुत से सोच सकते हैं। वे कह सकते हैं जब संसार की समस्याएँ दृढतापूर्वक हल का तक़ाज़ा कर रही हैं तब हमें अपने क्षेत्र के बाहर के मामलों में क्यों परेशान होना चाहिये। परन्तु उस सांसारिक फिलासफी का भी भौतिक समृद्धि के अतिरिक्त कोई आधार और उद्देश्य होना चाहिये। उस आधार में आध्यात्मक विशेषताएँ होनी चाहिये तथा व्यवहार के कुछ नियम और आदर्श होने चाहिएँ और ज्योंही हम उनपर विचार करते हैं त्योंही हम सच्चे धर्म के क्षेत्र में प्रविष्ट हो जाते हैं।

धार्मिक सोसाइटियों और सत्संगों के प्रति उदासीनता क्यों बढ़ रही है ?

[लेखक—श्री० रघुनाथप्रसाद जी पाठक]

विभिन्न क्षेत्रों से यह शिकायत आरही है कि धार्मिक सोसाइटियों के अनुयायियों मे उन सोसाइटियों के प्रति उदासीनता छा गयी है। धार्मिक सोसाइटियों के सदस्यों की संख्या कम हो गयी हैं तथा वे बन्द होती जा रही हैं या वीरान देख पड़ती है।

इस अवस्था के कई कारण प्रकट किये जाते हैं। कहा जाता है कि भोगवाद का लोगो पर जादू चल गया है तथा लोग रोटी की परेशानियों मे आजकल इतने अधिक व्यस्त हो गये हैं कि उन्हें धर्म-कर्म की चर्चा नहीं सुहाती है।

कुछ लोगों की धारणा है कि धर्म, सघों के उपदेश पुराने, लम्बे और अत्यन्त साधारण बातों से भरे होते है और श्रोता उन्हे सुनना पसन्द नहीं करते है। ऐसे लोगो का मत है कि धर्म-सघो की कायवाही को अधिक से अधिक नवीन, आकर्षक और सक्षिप्त बनाना चाहिये।

एक मत यह भी है कि सघो को परम्परागत धर्मों का स्थान न रहने दिया जाय, वरन् वे जनोपकारक और सामाजिक कार्यों के केन्द्र बना दिये जायें। यह मत उन लोगों का है जो धर्म्म और समाज को पृथक् २ समझते है।

इस प्रकार के विविध निदान और उन निदानो के अनुसार विविध उपाय किये जा रहे हैं, परन्तु समस्या का हल नही होता है। अवश्य समस्या के हल मे कही त्रुटि है।

आज धर्म के प्रति लोगों की रुचि बढ़ रही है। संसार के लोग भोगवाद से दुखी और अशान्त होकर धर्म की शीतल छाया में आश्रय के लिए आतुर देख पड़ते हैं। विनाश की ओर दौड़ती हुई संस्कृति को रोकने के लिए धर्म ही एक मात्र प्रभावशाली उपाय समझा जारहा है। प्रश्न होता है कि फिर धार्मिक संघों और सोसाइटियों के प्रति लोग उदासीन क्यों है ?

हमारी सम्मति मे इसके कई कारण हैं। एक तो यह कि सच्चे धर्म से कोसों दूर हृदयों और दिमागों को अपील न करनेवाले तथा अन्यान्य हानिकर प्रभावों के साथ अनिच्छुक जनता के सामने मजहब प्रस्तुत किये जा रहे हैं। दूसरा यह है कि सच्चे धर्म के ठीक-ठीक रूप मे रखे जाने का पर्याप्त यत्न नहीं होरहा है। जो थोड़ा-बहुत यत्न होरहा है उसके प्रति उदासीनता का सबसे बड़ा कारण यह प्रतीत होता है कि इसके प्रचार का कार्य ऐसे बहुत थोड़े से प्रचारकों के हाथ मे है जो सुगन्धित गुलाब के फूल की तरह अपनी सुगन्धि का प्रसार करके बिना ढाल पीटे जनता को अपनी ओर खींच लेते हों। यह प्रचार मुख्यतया उन लोगों के हाथ मे देख पड़ रहा है जो अपने ऊँचे पद से बहुत नीचे पर है। जिनमे सजीवता की कमी है तथा जो अपनी वाक्पटुता, बढिया वेष-भूषा तथा लच्छेदार बातों से अपनी सजीवता की कमी की पूर्ति के यत्न मे लगे होते हैं।

एक तीसरा कारण यह है कि धर्म-मन्दिर कार्यालय बन गये हैं जिसके कारण उनकी पवित्रता और विशुद्ध धार्मिक वातावरण नष्ट हो गये हैं।

हमें देखना चाहिये कि आर्यसमाज पर उपर्युक्त बातें कहाँ तक घटती हैं तथा त्रुटियों के सुधार में वे कहाँ तक सहायक होती हैं।

मुसलमानों की समस्या

अकेले भारतवर्ष में ही नहीं, दुनिया के जिस किसी भी देश मे मुसल्मान बसे हुए हैं, वहीं वे अपने मज़हबी दिवानेपन के कारण एक राजनीतिक समस्या बने हुए है। ससार की साम्राज्य लोलुप शक्तियाँ मुसलमानों के इस गुण या दोष का पूरा लाभ उठा रही और उठाती रही है। भारतवर्ष मे तो ब्रिटिश शासकों ने साम्प्रदायिक मुसलमानों को देश के राष्ट्रीय आन्दोलन के विरुद्ध खड़ा किया ही था, जापान भी अब चीन मे वहाँ के मुसलमानों की धर्मान्धता को देशद्रोह के रूप मे परिणत करने का यत्न कर रहा है। सुनते है कि वह उत्तर-पश्चिमी चीन के मुसलमानों की धर्मान्धता भडका कर, अपनी सरक्षता मे, उनका एक अलग राज्य कायम करना चाहता है। और इस काम मे उसने अपना गुरु इटली को बनाया है, जिसने कि हाल में यही खेल अबीसीनिया मे खेला था। अबीसीनिया का राजा ईसाई था और वहाँ की आबादी भी अधिकतर ईसाई है। बस इटली ने अबीसीनियन मुसलमानों को अपनी तरफ फोड़ लिया। अब यही जापान करना चाह रहा है।

यह समस्या केवल उन देशों की नहीं है, जिनमें मुसलमानों की आबादी अल्पसंख्यक है। जिन देशों की आबादी मुस्लिम-प्रधान है, उनमें भी इस्लामी धर्मान्धता ने कुछ कम उग्र समस्याएँ पेश नहीं कीं। अफगानिस्तान का उदाहरण तो इस पीढ़ी की भारतीय जनता ने अपनी ही आँखों देखा है। बेचारा अमीर अमानुल्ला राजगद्दी छोड़ने को केवल इस कारण विवश हुआ कि वह धर्मान्धता के नेता मुल्लाओं की उपेक्षा करके नवीन उन्नतिशाली मार्ग पर चलना चाहता था। अमानुल्ला के पश्चात नादिरखाँ की सरकार ने भी उन्नतिशाली मार्ग पर चलने का यत्न किया, परन्तु धर्मान्धता के नेताओं का लिहाज करते हुए। फलत उसकी तथा उसके उत्तराधिकारियों की प्रगति का कदम भी स्वभावत सुस्त रहा।

फारस मे रजाशाह पहलवी को, अरब में इब्नसऊद को, और टर्की मे कमाल अतातुर्क को भी इस्लामी धर्मान्धता की शक्तियों का जबरदस्त मुकाबला करना पड़ा था, परन्तु ये तीनों देशभक्त सज्जन अपनी चतुरता, दृढता, व्यवहार-कुशलता और परिस्थितियों की अनुकूलता आदि के कारण इन अन्धकारमय शक्तियों पर विजय पाने मे सफल होगये।

यद्यपि मुसलमानों की धर्मान्धता अब स्वतन्त्र मुस्लिम देशों मे कम होती जा रही है, तथापि परतन्त्र देशों को उसका अभिशाप अब भी भुगतना ही पड रहा है। भारतवर्ष, चीन, अबीसीनिया, मरक्को आदि देश इसके उदाहरण हैं। इन देशों मे वर्तमान युग की शिक्षा पाये हुए मुसलमान तक इस दीवानेपन के शिकार हैं और जिस चाल से मुस्लिम जगत पर नयी लहरों का असर पड रहा है उसे देखते हुए यह आशा नहीं होती कि उक्त पराधीन देशों के गले को यह फाँसी दो पीढियों से पहले छोड़ देगी। (दैनिक अर्जुन से)

विवाहित स्त्रियों का विद्रोह

कुछ समय हुआ यह घोषणा हुई थी कि हैदराबाद (सिंध) में कुछ विवाहित स्त्रियों ने अपने पतियों को अपने इस निश्चय की सूचना दी है कि वे ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करेंगी। साथ ही उन्होंने अपने पतियो से सिफ़ारिश की थी कि वे लोग दूसरी स्त्रियो से शादी कर सकते हैं। पहले यह ख़बर मज़ाक़ समझी गयी थी। ख़याल था कि किसी मनचले ने योंही लिख मारा है, परन्तु बाद की ख़बरों से इस खबर की पुष्टि हो गयी थी। यह भी मालूम हुआ था कि वे स्त्रियाँ ओ३म् मण्डल में दीक्षित हो गयी हैं। इस मण्डल मे हिन्दू, बौद्ध और जैन—इन तीनों धर्मों के व्यक्ति प्रविष्ट हो सकते हैं।

"सिंध ऑब्ज़रवर" नामक सिंध के प्रमुख अँगरेज़ी पत्र में मण्डल के सम्बन्ध मे विस्तृत रिपोर्ट छपा है। संवाददाता ने कराची में मण्डल के संस्थापक से भेंट करके अपनी विस्तृत रिपोर्ट अख़बार को भेजी थी। संवाददाता के सवाल से उक्त मण्डल हिन्दू अध्यात्मविद्या के बृहत् भण्डार में से ऊट-पटांग ढग से लिए हुए विचारों का खिचड़ी मालूम होता है। हमें बतलाया गया है कि मण्डल का विश्वास है कि स्त्रियाँ मनुष्यों की अपेक्षा आध्यात्मिक विषयों को ग्रहण करने में ज्यादा समर्थ होती हैं। हमें यह भी बतलाया गया है कि इस मण्डल की भक्त स्त्रियां अपने को कृष्ण की गोपियाँ कहती हैं। संवाददाता के कथनानुसार एक और विचित्र बात प्रकाश में आयी है और वह यह कि 'गीता' मण्डल में प्रवेश की एक शर्त रक्खी गयी है। प्रत्येक प्रार्थी से पूछा जाता है कि उसने गीता का कितना अध्ययन किया है। सिंध अर्से से हिन्दू धर्मशास्त्रों के अध्ययन का बड़ा केन्द्र नहीं रहा है। मण्डल की १५० भक्तिनियों ने गीता का ज्ञान किस प्रकार प्राप्त किया यह एक पहेली है। गीता के पाठ से उन्होंने जो कुछ समझा है वह एक और भी बड़ी पहेली है। गीता का कृष्ण और पुराणों का कृष्ण, जो गोपियों के साथ क्रीड़ा करता था, एक ही है यह बात बड़ी सदेहजनक है। गीता का कृष्ण स्त्रियों की उपासना नहीं करता था।

"सिंध ऑब्ज़रवर" के संवाददाता को सुनी सुनाई बातों पर विश्वास नहीं हुआ। गुरु जी के आगमन की प्रतीक्षा में बैठे २ उसने देखा कि कमरे में बढ़िया २ फलों का ढेर लगा था। कोमल गद्दे और तकिए रखे हुए थे। गरज़ कि राजसी ठाठ और ऐश-आराम के वहाँ सबही लक्षण देख पड़ते थे। उसे आश्चर्य था कि त्यागवाद की फ़िलासफी में ये बातें कैसे फ़िट होसकती हैं। गीता त्यागवाद की शिक्षा देती है। गीता इस बात की सिफारिश नहीं करती है कि अपने ब्रह्मचर्य की विशुद्धता की परीक्षा के लिए मनुष्य को जान-बूझकर अपने को भोग-विलास और राजसी ठाठ बाट के वातावरण में रखना चाहिये। संवाददाता को थियोसोफिस्टों के अवतार मि० कृष्णमूर्ति तथा दादा (संस्थापक) मे सादृश्य देख पड़ता है। मि० कृष्णमूर्ति अमेरिका के श्रोताओं के सामने ताजे से ताजे फैशन और बनाव शृङ्गार में उपस्थित होते हैं। साधारण धर्म जीवी व्यक्ति के

संन्यास और क्षात्र धर्म

[ले०—श्री प्रिंसिपल दीवानचन्द जी एम. ए कानपुर]

उमर खयाम ने कहा है 'आसमान की गर्दिश से केवल दो प्रकार के व्यक्तियों को लाभ पहुँच सकता है या तो उन लोगों को जो सज्जनता और असज्जनता से पूर्ण परिचित होते है या उनको, जिन्हे अपने या दुनिया के मामलों की बाबत बिल्कुल सुध-बुध नहीं।

साधारण लोग पूर्ण ज्ञान और पूर्ण अज्ञान के बीच टिके होते हैं, इसलिए उनकी जिन्दगी सघर्ष की जिन्दगी होती है। या यों कह सकते है कि ज्ञान का जीवन एक ऐसा सफर है जिसे शुरू करते ही हम कठिनाइयो का सामना करना पडता है और ये कठिनाइयाँ यात्रा की समाप्ति तक भी हमारा पीछा नही छोडती है। इस मजिल के दोनो सिरों पर आराम और चैन है। शुरू में जब अज्ञान छाया हुआ था जीवन मुसीबतों से मुक्त था। अन्त मे जब पूर्ण ज्ञान प्राप्त होजायगा मुसीबतो का अन्त हो जायगा। बीच की अवस्था में, जब कि हम न इधर के है न उधर के, चैन और आराम

लिए उनका रहन-सहन बडा कलामय, आकर्षक और खर्चीला है। ओ३म् मण्डल क दादा विवाहित व्यक्ति है। सवाददाता का कथन है कि वह अब भी वानप्रस्थाश्रम मे अपनी स्त्री के साथ रहते है। उनके एक पुत्र और दो पुत्रियाँ है और इन सब की शादियाँ हो चुकी है। पुत्र-वधू और दामाद उनके सर्व प्रथम चेले हैं। वस्तुत पुत्र-वधू जिसकी अवस्था १६ वर्ष की है उसकी मुख्य शिष्या है। मण्डल में 'दादा'' के बाद उसी का स्थान है। गुरु ने सवाददाता को इसी के पास मण्डल की पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए भेजा था।

सबसे अन्तिम सूचना यह है कि भक्त स्त्रियो के पतियो ने ओ३म्-मण्डल में शान्त सत्याग्रह के ढग में मण्डल पर धरना दे दिया है। अपनी स्त्रियो के आने से पूर्व ही वे प्रतिदिन सुबह को मण्डल मे पहुँच जाते है ताकि उसमे प्रवेश करने से वे अपनी स्त्रियो को रोक सके। उनमें सघर्ष हो रहा है। इस घरेलू नाटक मे हस्तक्षेप करने से पुलिस ने इन्कार कर दिया है। ये घटनाएँ हैदराबाद में हो रही है जो मण्डल का मुख्य केन्द्र है। दादा अबभी कराची मे है।

बुद्ध के समय म भी विवाहित स्त्रियो का ऐसा ही विद्रोह हुआ था पारिवारिक जीवन के प्रति उत्पन्न हुए आम विरोध के कारण ही बौद्ध-धर्म का शीघ्र पतन हुआ था।

ओ३म् मण्डल के सस्थापक के कथनानुसार मण्डल तपस्या की लाइनो पर चलाया जा सकता है इस तपस्यावाद के भी सुखवाद से कम खतरे नही है।

—

की तरफ़ मन भागता है। चैन और आराम की इच्छा स्वाभाविक है। मनुष्य उनकी प्राप्ति के लिए दोनों तरीके इस्तेमाल करता है। कभी अज्ञान की तरफ़ भागता है, कभी ज्ञान की तरफ।

यात्रा तो प्रारम्भ हो चुकी। अब वापस लौटने का क्या काम? चलो आगे बढो। निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच ही जाओगे। हाँ, शर्त यह है कि हिम्मत न हारो, वे हमें विश्वास दिलाते हैं कि परिमित ज्ञान दुःख देता है। जब यह बढता २ पूर्ण ज्ञान हो जाता है तो सब दुःख दूर हो जाते हैं और पूर्ण शान्ति मिल जाती है। यह शान्ति उस आराम से, जो मुसाफ़िर को यात्रा आरम्भ करने से पूर्व प्राप्त थी, बहुत ज्यादा क़ीमती है। सफ़र मुश्किल जरूर है और आनन्द यह है कि जितना हिस्सा हम तय कर चुके हैं उससे बाक़ी का हिस्सा बहुत ज्यादा लम्बा है, परन्तु यह कष्ट सहन करने योग्य है। कवियों की लोरी हमें कुछ समय के लिए सुला सकती है—हमारी कठिनाइयों को हल नहीं कर सकती।

मुसाफ़िरों में कोई-कोई कवियों के पीछे चल पड़े हैं। कोई २ दार्शनिकों को अपना मार्ग-दर्शक बनाते हैं। यह बहुत कुछ प्रत्येक की तबीयत पर निर्भर होता है, मैं इस लेख मे उन लोगों को कुछ निवेदन करना चाहता हूँ जिनका स्वभाव दूसरे प्रकार का है। जो इस बात को स्वीकार कर लेते हैं कि जीवन मे सफलता प्राप्त करने के लिए नेकी-बदी का ज्ञान जरूरी है, जो पीछे नहीं बरन आगे चलना चाहते हैं। नेकी क्या है? बदी क्या है? धर्म और अधर्म में क्या फ़र्क है? इस प्रश्न के तीन उत्तर दिये गये हैं।

कुछ लोगों की सम्मति में धर्म अपनी रक्षा करना, आगे बढ़ना और जीवन-संग्राम मे विजयी होना है। अधर्म इसके विरुद्ध है। मै किसी को निमंत्रण नहीं देता कि वह मेरे रास्ते में आकर रुकावट बने, परन्तु यदि वह अपनी मर्जी से या परिस्थितियों से मजबूर होकर मेरे रास्ते मे आ खड़ा होता है तो मेरा काम यह है कि मैं अपना रास्ता साफ करदूँ। यदि इसमे उसे तकलीफ़ होती है—वह चीखता-चिल्लाता है तो उसके लिए मै जिम्मेवार नहीं। यदि जिम्मेवार हूँ भी तो मुझे इसमे शर्म की कोई बात दिखाई नही देती। इस विचार को बहुत जोर से नये रूप में जर्मनी के फिलासफर फ्रेडारक निटशेने पेश किया है। इसकी शिक्षा ने जर्मनी की मनोवृत्ति को बदल दिया।

दूसरा ख्याल जो धर्म अधर्म के सम्बन्ध में दिया है वह भगवान् बुद्ध और ईसा ने दिया गया है। ये दोनों फ़क़ीर थे और उन्होंने सबको फक़ीर बनने का उपदेश दिया। उनकी सम्मति में धर्म का तत्व प्रेम या सेवा है। यदि कोई व्यक्ति तुम्हारे साथ ज्यादती करता है तो उसे सहन करलो। वह तो मूर्ख है, तुम क्यों मूर्ख बनते हो। तुम इस बात को मत भूलो कि जो कुछभी वह करता है वह तुम्हारा भाई तो है। यदि कोई तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारता है तो दूसरा उसके सामने करदो। यदि तुम्हारा कोई कोट उतार लेता है कमीज स्वयं उतार कर उसके हवाले करदो। दोनों के लिए उसे ही कष्ट न करना पड़े। महात्मा गाँधी बडी हद तक

इस विचार के प्रभाव में हैं। कुछ समय हुआ प्रयाग में हिन्दू-मुस्लिम झगड़ा हुआ। बाज कर्मचारियों ने होशियारी और हिम्मत से उसे जल्द ही दबा दिया। इसके लिए पुलिस और फौज की जरूरत पड़ी। साधारण व्यक्ति कांग्रेस-सरकार को बधाई दे रहे थे कि उन्होंने समय पर सावधान होकर हत्याओं और खून-खराबी को रोक दिया। महात्मा गाँधी ने लिखा कि पुलिस और फौज का प्रयोग जाहिर करता है कि कांग्रेस अभी शासन करने योग्य नही। उनके विचार मे विद्रोह और झगडे को शान्त करने के लिए ऐसे व्यक्तियो की जरूरत नही जो गोली चला सके, बल्कि ऐसे व्यक्तियो की जरूरत है जो झगडो के बीच काम कर स्वय मर जायं और अपनी मृत्यु के प्रभाव से दगाइयों की मानसिक अवस्था मे अच्छा परिवर्तन करदे। साधारण आदमी को यह पता नहीं चलता कि पुलिस और फौज रहनी भी चाहिये या नही। यदि देश सन्यासियो से ही भरा हो तो पुलिस और फौज अनावश्यक होजाते है। परन्तु यह बात सदेहो से खाली नही कि यदि बहु सख्या दूसरे लोगो की हो तो हुकूमत का कार्य सन्यासियो की मदद से ही चल सकता है। इस दूसरे ख्याल के अनुसार सब से ऊँचा आदर्श योद्धा नहीं, बल्कि सन्यासी या सेवक पेश करता है।

तीसरा विचार इन दोनो ख्यालों को अधूरा और इसलिए समाधान समझता है कि जीवन इतनी साधारण चीज नही कि इसकी हिदायतके लिये 'ताकत' या 'सेवा' एक ही असूल काफी हो। जीवन बहुत पेचीदा चीज है। कहीं शक्ति की जरूरत होती है कहीं सेवा की, कहीं दोनों की। जीवन की नींव बुद्धि या ज्ञान पर रखनी चाहिये। दूसरों के साथ व्यवहार करने मे हमे यह देखना होता हैकि यह दूसरे कौन है। प्रत्येक से देश, काल और पात्र को समझकर यथा-योग्य बर्ताव करना चाहिये। यह ख्याल श्रीकृष्ण जी ने गीता म दिया है। यही ख्याल वर्तमान काल मे महर्षि दयानन्द ने हमारे सामने रक्खा है। समाज मे केवल क्षत्रियो के लिये ही स्थान नहीं। उनके लिए भी स्थान होना चाहिये। समाज-कार्य केवल सन्यासी हो नहीं चला सकते है, फिर भी सन्यासी भाव की जरूरत है। जीवन एक निरन्तर सघर्ष है। इसमे कभी एक हथियार काम आता है, कभी दूसरा। सफल जीवन के लिए मौके का समझना, आवश्यकता के अनुसार अमल करना तथा बुद्धि के चिराग को हाथ मे रखना जरूरी है।



परिषद् की रजत-जयन्ती

*

अब तक सब आर्यकुमारो को यह बात मालूम हो चुकी है कि ३० सितम्बर और १ली अक्तूबर को भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् की रजत-जयन्ती बडी धूमधाम से बिजनौर मे मनायी जा रही है। बिजनौर की स्वागत-कारिणी सभा के कार्यकर्त्ता बडे उत्साह और प्रेम से इस महान् यज्ञ का आयोजन कर रहे हैं।

आर्यकुमार यह बात सुनकर बड़े प्रसन्न होंगे कि उनके परम सौभाग्य से इस विशेष सम्मेलन के सभापति-पद को सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्रीयुत् प्रोफेसर सुधाकर जी, M A ने स्वीकार कर लिया है। आर्य-कुमार यह बात भूले नही होंगे कि सन् १९०१ में प्रशसनीय प्रोफेसर साहब ने ही स्व० डाक्टर केशवदेव जी शास्त्री तथा अन्य मित्रो की सहायता व सहयोग से इस भारतवर्षीय आर्य-कुमार परिषद् को स्थापित किया था। इस सस्था को आप क्या बनाना चाहते थे और आपके क्या उद्देश्य थे वे सब अभी तक पूरे नहीं हो सके है। हमें पूर्ण आशा है कि इस वर्ष प्रोफेसर साहब की अध्यक्षता में आर्य-कुमारों को न केवल उचित नेतृत्व मिलेगा, बल्कि परिषद् क्रियात्मक रूप से कुछ आगे बढ सकेगा। प्रोफेसर साहब के सभापति चुने जाने में परिषद् का आशापूर्ण भविष्य नज़र आ रहा है।

निःसदेह हम यह आशा कर सकते है कि इस बार बिजनौर में बैठकर कुमारो के शुभचिन्तक आर्य नेता और आर्य-कुमार मिलकर कुछ ऐसा रचनात्मक कार्य-क्रम तैयार करेंगे कि जिससे न केवल आर्य-कुमारो मे ही जीवन का सचार होगा बल्कि कुमारो से बढ़कर आगे आर्यसमाज मे भी स्फूर्ति उत्पन्न होगी।

बिजनौर की स्वागत कारिणी सभा के उत्साही कार्यकर्त्ता रजत-जयन्ती की बडे ज़ोर से तैयारी कर रहे है और उनकी इच्छा है कि यह सम्मेलन न केवल बाहरी शान-शौकत और धूमधाम से हो, बल्कि इस से आर्य कुमारों को वास्तविक जीवन मे उत्साह और

स्फूर्ति प्राप्त हो।

आर्यसमाज के चुने हुए नेताओं को निमंत्रण भेजे जा चुके हैं जिनमें से अधिकांश ने आने की स्वीकृति दे दी है। सम्मेलन का ऐसा

मनोरंजक प्रोग्राम

बनाया गया है कि जिसमें छोटे और बड़े सब कुमारों के भाग लेने की सुविधा रखी गयी है। वॉली-बॉल का टूर्नामेण्ट रखा गया है। खेलों में बहुत से पारितोषिक रखे गये हैं।

क्या पाश्चमीय सभ्यता का अनुकरण भारतीय नवयुवकों के लिए हितकारी है' विषय पर वाद-विवाद रखा गया है जिसमें अच्छे वक्ता को इनाम की घोषणा की गयी है। निम्नलिखित विषयो पर उत्तम लेख लिखनेवालों के लिए पारितोषिक रखे गये हैं—

(१) क्या आर्यकुमारों को राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेना आवश्यक है ?

(२) भारत की आधुनिक उन्नति मे ऋषि दयानन्द का स्थान।

(३) भारत में स्वदेशी का प्रचार किस प्रकार हो।

(४) भारतीय युवकों के लिए वायुयान तथा सैनिक शिक्षण अनिवार्य हो।

(५) भारत के लिए हिन्दी ही राष्ट्रभाषा होना आवश्यक है।

एक आर्य-पार्लिमेंट के बृहत् अधिवेशन का आयोजन किया गया है। जिसमें अत्यन्त मनोरंजक रूप से प्रश्नोत्तर होंगे और निम्नलिखित विषयों पर पार्लिमेंटरी ढङ्ग से बहस होगी—

१ कोई आर्यसमाजी किसी अन्य संस्था का मेम्बर न बन सके (सरकार की ओर से)।

२ भारत से ज़मीदारी प्रथा हटा दी जाय।

(Opposition विरोधी दल की ओर से)

गम्भीर विषयों पर प्रस्ताव बनाये जा रहे हैं और उनपर गम्भीर विचार और नेताओं के उपदेश और भाषणों का प्रबन्ध किया जा रहा है। परिषद् के पुराने कार्यकर्त्ताओं को एकत्रित करने का प्रयत्न किया जा रहा है। तात्पर्य यह है कि बिजनौर के युवक भरसक अपने प्यारे आर्यकुमार भाइयों के स्वागत की तैयारी कर रहे हैं। अब आपका कर्त्तव्य है कि आप भी

बिजनौर चलिये

अपनी कुमार-सभा की तरफ़ से अधिक से अधिक प्रतिनिधि बिजनौर भेजिये और वहाँ के पूरे कार्यक्रम में समुचित रूप से भाग लीजिये। दशहरे की छुट्टियाँ तो हैं ही। रेल के किराये में भी रिआयत की सुविधा है। इसलिए आशा की जा रही है कि इस शुभ अवसर पर अधिक से अधिक आर्यकुमार बिजनौर मे इकट्ठे होंगे।

"उन्नति की ओर"

इधर भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् की तरफ़ से 'उन्नति की ओर" नामी पुस्तक इस रजत जयन्ती के स्मारक रूप छप रही है। इसमें आर्यकुमार सभाओ के परिचय और परिषद् के संक्षिप्त इतिहास के अतिरिक्त आर्यकुमारों के जीवन को ऊँचा उठानेवाले

आचार-निर्माण सम्बन्धी नेताओं के सन्देश और उपदेश एकत्रित किये गये हैं। यह पुस्तक एक स्थायी साहित्य होगा, जिसको हरएक आर्यकुमार अपने पास रखकर जीवन सग्राम में विजय प्राप्ति के लिए उत्साह और पथ-प्रदर्शन प्राप्त कर सकेगा। सम्मेलन पर यह पुस्तक लागत मात्र मूल्य पर आर्यकुमारों को प्राप्त होगी। इसमे चित्र भी होंगे।

मन्त्री, भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद्,
दिल्ली।

आर्य-कुमारों से

आर्य-कुमार परिषद् की रजत-जयन्ती अर्थात् २५ वाँ सम्मेलन दशहरे की छुट्टियों में ३० सितम्बर तथा १ अक्तूबर सन् १९३८ ई० को बिजनौर में होगा।

इस महा पवित्र सम्मेलन के लिए मैं अपने देश के आर्य-कुमारों को सप्रेम निमन्त्रण देता हूँ और अपील करता हूँ कि वह इस परम पुनीत अवसर पर इकट्ठा होकर अपने को सुसङ्गठित करें। हमारी कुमार-सभाओं का सङ्गठन गत कई वर्षों से शिथिल पड़ गया था, परन्तु गतवर्ष से देहली में स्थायी कार्यालय के बन जाने से तथा कार्य-कर्त्ताओं के परिश्रम से कई वर्षों की छाई हुई लम्बी शिथिलता को दूर करने में बहुत कुछ सफल हो चुके हैं अन्त में अपने आर्य-कुमार भाइयों से इस बात की प्रार्थना करूँगा कि वह जयन्ती के इस परम पुनीत अवसर पर इकट्ठा होकर किसी क्रियात्मक प्रोग्राम की रचना करें, जिससे आर्य-कुमारो में एक नवीन जागृति पैदा हो सके।

आर्य-कुमार सभा के मंत्रियों से नम्र निवेदन

आर्य कुमार सभाओं के मन्त्री महोदयों की सेवा में निवेदन है कि आर्य-कुमार सम्मेलन के लिए जो सरकुलर भेजे गये थे उनके उत्तर तथा प्रतिनिधियों की नामावलि शीघ्र भेजने की कृपा करें, ताकि स्वागत-कारिणी समिति के सदस्यों को सुविधा हो सके।

बिजनौर — ईश्वरीदयाल आर्य
३१-८-३८ — स्वागत मन्त्री

परिषद् की रजत जयन्ती

२५ वाँ अखिल भारतवर्षीय आर्यकुमार सम्मेलन, बिजनौर

शुक्रवार ता० ३० सितम्बर तथा शनिवार ता० १ अक्तूबर १६३८

प्रोग्राम की कुछ विशेषताएँ

जयन्ती का विस्तृत प्रोग्राम जो ३० सितम्बर को प्रात ६॥ बजे यज्ञ से आरम्भ होकर १ ली अक्तूबर को रात्रि के १२ बजे तक रहेगा—सब कुमार सभाओं को अलग भेजा जा रहा है।

प्रोग्राम मे निम्नलिखित विशेषताएँ होंगी —

१—शुक्रवार ३० सितम्बर को सम्मेलन के सभापति तथा बाहर से पधारे हुए नेताओं तथा प्रतिनिधियो का नगर में जलूस निकलेगा। जिसके लिए बिजनौर की आर्य-जनता बड़ी उत्सुकता से बाट देख रही है।

प्रतिनिधियों को चाहिए कि वे पूरी सख्या मे ३० सितम्बर के पूर्व ही बिजनौर अवश्य पधारें।

२—सम्मेलन पर 'क्या पश्चिमीय सभ्यता का अनुकरण भारतीय नवयुवको के लिए हितकारी है विषय पर कुमार सभाओ क प्रतिनिधियों का वाद विवाद (Debate) होगा। सर्व प्रथम आनेवाली कुमार सभा को एक चाँदी का प्याला (Cup) इनाम मे दिया जायगा तथा सर्वोत्तम वक्ता को एक स्वर्ण पदक अन्य उत्तम वक्ताओ को भी पुरस्कार मिलेंगे।

देखना है कौन आर्यकुमार सभा बाज़ी जीतती है।

३—उत्तम लेख लिखनेवाले आर्यकुमारों को भी पुरस्कार दिये जायेंगे। लेखों की सूची ऊपर दी जा चुकी है।

४ वॉली बॉल का एक टूर्नामेण्ट होगा जिसमें विजेता आर्यकुमार सभा को तथा खिलाड़ियों को क्रम से प्याला तथा पदक मिलेंगे।

५—टूर्नामेण्ट के अतिरिक्त अन्य खेल (Sports) भी होंगे जिनमे पुरस्कार मिलेंगे।

६—एक मानसिक परीक्षा (Mental Test) भी होगी। जो प्रतिनिधि गत सम्मेलन पर दिल्ली पधारे थे उन्हें इसकी उपयोगिता भली प्रकार विदित है।

७—आर्यकुमारो के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए उत्तम उत्तम प्रस्ताव बनाये जारहे हैं जिन पर देश के अग्रगण्य आर्य नेता अपने विचार प्रकट करेंगे।

८ दो गम्भीर विषयों पर जिनसे आर्यकुमारो के भावी जीवन का घनिष्ट सम्बन्ध है पार्लियामेण्टरी ढग से विचार करने के लिए एक आर्य पर्लियामेण्ट का आयोजन किया गया है। इन विषयो पर लेजिस्लेटिव असेम्बलियों के सदस्य तथा अन्य नेता अपने विचार प्रकट करेंगे। विषय यह है,

(१) कोई आर्य-समाजी किसी अन्य सस्था मे भाग न ले सके (सरकार की ओर से इस सम्बन्ध मे क़ानून बनाने का प्रस्ताव पेश होगा)

(२)—भारतवर्ष से ज़मींदारी प्रथा हटा दी जाय। (इस पर विपक्ष की ओर से क़ानून बनाने का प्रस्ताव पेश होगा) प्रोग्राम अत्यन्त रोचक है। अत आप अधिक से अधिक सख्या में

बिजनौर पधारें

और कार्य-क्रम मे पूरा भाग ले।

High Thoughts
उच्च विचार

Good thoughts, though God accepts them, yet toward men are little better than good dreams except they be put into action

अच्छे विचारों को यद्यपि परमात्मा स्वीकार करता है, परन्तु यदि वे कार्य में परिणत न किये जायँ तो मनुष्य के लिए अच्छे स्वप्नों से अधिक उनकी उपयोगिता नहीं होती है।

* * * *

Doing is the great thing, for if resolutely people do what is right, in time they come to like doing it

कर्म बड़ी चीज है। यदि मनुष्य दृढ़ता पूर्वक ठीक काम करे तो समय आने पर वे उस काम को करना पसन्द करने लग जाते हैं।

* * * *

The actions of men are the best interpreters of their thoughts

मनुष्यों के कर्म ही उनके विचारोंको सर्वश्रेष्ठ रीति से प्रकट करते हैं।

* * * *

A holy act strengthens the inward holiness It is a seed of life growing into more life

पवित्र कर्म आन्तरिक पवित्रता को दृढ़ करता है। यह जीवन का तत्व होता है और उसे सजीव बनाता है।

* * * *

All our actions take their hue from the complexion of the heart as landscapes do their variety from light.

हमारे सब कर्म हमारे हृदय के रङ्ग से रँगे जाते हैं जिस प्रकार जगत की हरियाली रोशनी से विविध रूप धारण करती है।

* * * *

A good action is never lost, it is a treasure laid up and guarded for the doer's need

अच्छा कर्म कभी नष्ट नहीं होता है। यह तो कर्त्ता की आवश्यकता के लिए बना बनाया सुरक्षित कोष होता है।

* * * *

Existence was given to us for action, our worth is determined by the good deeds we do rather than by the fine emotions we feel

कर्म करने के लिए हमें जिन्दगी मिलती है। हमारे कोमल भावों की अपेक्षा हमारे शुभ कार्य्यों से ही हमारी क़ीमत का सही अन्दाजा लगाया जाता है।

ARYA-SAMAJ and HYDERABAD STATE

An open Letter to Rt Hon'ble Sir Akbar Hydari from the Secretary Inter National Aryan League

Dear Sir Akbar Hydari,

Disquieting news of the murders of Arya-Samajists by Muslim fanatics have created sensation all over Hindu-India. Ved-Prakash was martyred at Gunjauti, Dharam Prakash at Kalyani and Maha Deva at village Akolaga.

These martyrs have cheerfully faced death believing the contention of their opponents that they can silence a good cause by irrational fury and fire.

You have recently delivered your convocational sermon to Dacca University students, preaching against Communalism. But have not the news of these murders—the result of Muslim Communalism and Fanaticism thriving at your doors and under your regime—reached your ears? If you have heard of them, what have you done to stop this daily increasing danger to public peace and racial harmony? I venture to point out that connivance on the part of your Government, of such murders will create a chaos between

A MESSAGE

FROM

Sir Dr G C Narang, M A, Ph D, Bar-at-Law

❋

Of late so many atrocities have been perpetrated by the Muslims on the Hindus and so many murders have taken place in Hyderabad State that it has become absolutely necessary to bring to the notice of the public and the higher authorities such instances of intolerance shown by the Mohammadans against their neighbours—the Hindus and the indifference displayed by the State Authorities.

It seems that there is no life in the Hindus of Hyderabad State, otherwise it is very difficult to understand how forming an overwhelming majority as they do, they can put up with such acts of violence and injustice. The first thing to do is to make them concious of their miserable condition and of their power as community if they care to stand together

the two communities which will become impossible to bridge in the near future.

Arya Samaj workers in your State are strictly enjoined not to do anything embarrassing and on their behalf this League has so often addressed your Government, praying for the redress of their grivences, but I regret very much to say that our petitions representations and deputations have not moved even slightly the intransigent machinery of your administration The latest news that have reached us from Hyderabad are to the effect that Arya-Samajists have to meet almost everyday, at some place or other the nacked bravado on the part of Muslim mob Can you imagine that things like this can go on for a very long time? An astute administrtor like yourself is hardly expected to allow things to drift in the manner they are drifting. Please take staps to stop this drift, so that it may not become too late Persecutions and prosecutions of innocent persons lead only to one result, and that is that they shake irretrievably all faith in administration and drive agitation into channels hardly to be desired

I would, therefore, humbly request you to lose no time and to divert your attention earnestly to the problems facing the Arya-Samajists in your State and to redress their grievanees at an early date This League is still willing to co-operate with you in your efforts and to render any possible help that it can through its wide-spread moral influence and prestige.

I do hope that this appeal will rouse in you the desire of doing full justice to the aggrieved Arya-Samajists, whose long sufferings and trials have now become too patent for anybody to ignore

HAPPY RECOLLECTION
OF
GURUKULA KANGRI

(*Rev*—**C F. Andrews**)

My mind atonce goes back to the golden days when I first went to the Gurukula at Kangri, Hardwar Mahatma Munshi Ramis was there as Governor; Dr Sukh Deva was the one who looked after the health of every one, myself included, and Master Ram Deva, was then (if I mistake not) in charge of the College Department What a happy family we were What a happy time we had together. I can never forget it Every year between 1907 and 1912 I used to come once or twice whenever I could get free from my duties at St Stephen's College, Delhi and when Principal Rudra would give me leave of absence

Once I came with Willie Pearson, who afterwards went out with me to South Africa and also to Fiji, and who lived with me for many years at Shantiniketan I can well remember his intense enthusiasm and his immense admiration for Mahatma Munshi Ram To the great sorrow of all, he met his death in a railway accident later, in Italy, when he was on his way back to India It was a terrible blow to me that made all the difference in my life, for he was the dearest English friendI had and everyone loved him for his goodness. But I must return to my experiences of the Gurukula itself

I can remember how once I was unfortunate enough to have fever at the very time when I visited the Gurukula, but I was also **fortunate** enough to have Mahatma Munshi Ram,for my nurse and to receive his tender treatment Also Dr Sukhdeva was with me until the fever broke It was almost a joy to have Malaria and receive such tender nursing

At another time, we had to cross the Ganges when it was in full flood after the melting of the snows We sat on a triangular raft (made of kerosine tins) which was guided with wonderfull skill down stream We seemed every moment to be about to be carried away by the rushing waters, but we reached safely Then on our return journey, we had to go a long distance by road through the jungle in the Gurukula bullock cart, up stream, in order to get to a point where we could be steered across, down-stream to the other side Those were days full of fun and delight

At another time I was able to bring Sir James Meston to visit the Gurukula during a very critical time in its history He was shown everything with his wife and his A D C's in waiting, There was, if I am not mistaken, some peculiar form of tea made out of certain herbs which the

Governor's party sipped. But I don't think they really liked it, although they had to try, for politeness sake, to drink it. What a laugh we had about this little incident after all was over.

Then there was the great annual gathering. Only once was I able to be present, but I shall never forget the huge crowds of men and women and children that came, and their wonderful contribution to the expenses of the Gurukula. The enthusiasm was enormous, and some how or other all this huge multitude of people were daily supplied with food. It was a standing wonder to me how it was all accomplished.

What I have been relating was nearly thirty years ago. Yet it is vivid before my eyes today, and I would like to send my wishes and blessings from these Hills in the South to the workers of the Gurukula in the North.

Time will not permit me to add more than one line to what I have already written but I must speak of the **second** Gurukula, at Brindaban, which became dear to me later in my life. Fortunately I have been able to visit it once more during the past year. Far away in the Fiji Islands I had made a promise to do so, because such good workers have gone out from it to Fiji and such splendid work has been done. Though I was far from well at the time, I enjoyed exceedingly the day I was able to spend there, and I promised to do all that I could to obtain the return of Raja Mahendra Pratap who had both founded the Prem Mahavidayalaya and given the land for the Gurukula at Brindaban. In that desire of mine to obtain his release from exile I have not succeeded' but I still have hope that so noble a man may soon be allowed to return, and also that Lala Har Dayal, whom I have been interceding also, may be allowed to come back.

There are some of my wondering thoughts as the year has gone by and again I would end with my wishes and blessings for the coming year.

हिन्दुस्तानी शिष्टाचार

[ले०—श्री पं० रामनारायण जी मिश्र, काशी]

(गताङ्क से आगे)

(६९) मकान जो नये बनाये जायँ उन में कम से कम एक फुट ऊँची कुर्सी होनी चाहिये और हवा और रोशनी आनेके लिए दरवाजे और खिड़कियाँ होनी चाहिये ।

(७०) जहाँ कोई झाड़ू दे रहा हो वहाँ नहीं बैठना चाहिय। अगर हो सके तो कोठरी मे पानी छिड़ककर तब झाड़ू दी जाये।

(७१) प्रति दिन सवेरे और हो सके तो शाम को भी साफ पानी से नहाना चाहिये। नहाते समय बदन को खूब रगड़ना चाहिये। टब मे नहाना पड़े तो उसका पानी जल्दी जल्दी निकालते चलो। कभी-कभी सिर को बचाकर धूप मे भी बैठना चाहिये। आवश्यकता पडने पर धूप की तरफ पीठ करके या आग की तरफ मुँह करके बैठना अच्छा है।

(७२) चिराग, जहाँ तक हो सके, मुँह से मत बुझाओ और न आग मुँह से सुलगाओ।

(७३) लँगोट बाँधने की आदत अच्छी है।

(७४) बासी रोटी आदि, विशेषकर रात की रक्खी हुई मत खाओ। गर्मी के दिनों मे ऐसा करना बुरा है।

(७५) कोई आदमी भोजन कर रहा हो तो उससे खाना छुड़वाकर दूसरा काम मत करवाओ।

(७६) भोजन के बाद लघुशङ्का कर लेना अच्छा है।

(७७) खानाखानेसे पहले हाथ-मुँह धोना चाहिये और पीछे भी हाथ धोकर कुल्ला करना चाहिये। जरूरत हो तो खरके से भी दाँत साफ कर लेना चाहिये। खरके की जगह आलपीन आदि से काम नहीं लेना चाहिये। इसके लिए नीम की सींक बहुत अच्छी है। फर्श पर हाथ मुँह धोना हो तो नीचे चिलमची रखलो। गरम चीज खाकर या गरम दूध पीकर गरम पानी से कुल्ला करना चाहिये या थोड़ी देर ठहर कर ठंढे पानी से कुल्ला करना चाहिये।

(७८) सड़ा हुआ और कच्चा फल मत खाओ। खाने से पहले फलों को धो लो। किशमिश को खूब धो लेना चाहिए।

(७९) मशक का पानी मत पियो।

(८०) हर एक तालाब या कुएँ का पानी मत पियो। पानी उबालकर और छानकर पीना अच्छा है।

(८१) बरफ का पानी या सोडावाटर लेमोनेड पीने की आदत मत डालो। बरफ पीनी ही पड़े तो इस बात की जाँच कर लेनी चाहिये कि वह गन्दे और खराब पानी से तो नहीं जमाई गयी है।

(८२) महीने मे दो-तीन बार बिना खाये

या कम खाकर रह जाना अच्छा है।

(८३) जो आदमी दूध दुहे उसका हाथ, बरतन, कपड़ा साफ होना चाहिए। दूहकर दूध छान लेना चाहिये।

दूध उबालने से पहले छान लो और ध्यान रक्खो कि उबालते समय उसमे राख और गर्दा न पड़े।

(८४) भोजन धीरे धीरे दहने हाथसे करना चाहिये। दूध या पानी भी ठहर-ठहर कर पीना चाहिये। भोजन इस प्रकार मत करा या पानी, दूध इस प्रकार मत पीओ कि मुँह से आवाज निकले। धीरे धीरे खूब चबाकर खाना खाओ। छोटा-छोटा ग्रास मुँह में डालना चाहिये। भोजन मुँह भर नहीं लेना चाहिये। खाने के साथ पानी बहुत कम पीना चाहिये, बिलकुल न पिये तो और अच्छा है।

(८५) भोजन या आग के ऊपर से जाना या उसको लाँघना ठीक नहीं।

(८६) राह चलते या हर जगह खाने लगना ठीक नहीं।

(८७) किसी को जबरदस्ती, मन के विरुद्ध नहीं खिलाना चाहिये। जितनी भूख हो उससे कम ही खाना चाहिये। (क्रमश)

— ० —

विचार-वाटिका

देवृकामा या देवकामा

'सार्वदेशिक' अगस्त १६३८ के अङ्क में पृष्ठ २४० पर देवृकामा या देवकामा शीर्षक से एक टिप्पणी लिखी गयी है, और अन्त मे लिखा है 'इस विषयमे भी हमारा यही सम्मति है कि आर्य-विद्वानों को शान्त चित होकर इसपर विचार करना चाहिये।' इसी बात को ध्यान मे रखकर मैं आर्य विद्वानों के विचार के लिए कुछ पुस्तकों के वह स्थल, जहा देवृकामा वा देवकामा शब्द प्रयुक्त हुआ है, लिखता हूँ, ताकि उनको निश्चय करने मे सहायता मिल। यदि कोई विद्वान् इनके अतिरिक्त और स्थल भी, जो उनको ज्ञात हों, लिखदें तो उनपर भी साथ ही विचार कर लेना चाहिये।

यह शब्द मुख्यतया ३ स्थलों पर वेद मे आया है। ऋग्वेद मडल १० सूक्त ८५ मन्त्र ४४ और अथर्ववेद खड १४ सूक्त २ मन्त्र १७।१८ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थप्रकाश और सस्कार विधि मे ऋग्वेद और अथर्ववेद के नाम से ही लिखा है। यह दोनों स्थल वेद मे विवाद परक माने जाते हैं, इसलिए सूत्रकारों ने विवाद लिखते समय इसी स्थल से मन्त्र प्रयुक्त किये है इसलिये वहाँ भी विचार कर लेना अच्छा ही होगा।

मेरा अपना पक्ष क्या है, अभी मैं यह लिखना नहीं चाहता। अभी तो विद्वानों के सामने इस विषय के निश्चय करने मैं सहायक सामग्री उपस्थित ही पर्याप्त मानता हूँ। ताकि उनको कुछ सहायता मिलजाय और वह सब स्थलों पर अच्छी तरह विचार करके निश्चय करें पीछे कोई यह न कहे अमुक स्थान को देखा या अमुक का न देखा था।

आशा है, ऋषि-भक्त सम्पादक महाशय को बात को ध्यान में रखकर शान्त चित से विचार करेंगे और मेरी तुच्छ सेवासे लाभ उठायेंगे और मैं भी इसपर पुनः विचार करके किसी समय अपना पक्ष फिर कभी लिखूंगा।

वह स्थल जहाँ पाठ आया है इस प्रकार है—

अघोरचक्षुरपतिघ्नी स्योना शग्मा सुशेवा सुयमा गृहेभ्य। वीरसूर्देवृकामा सन्त्वैधिषीमहि सुमनस्यमाना॥ अथर्व वेद १४ २. १७ ऋग्वेद

देवृकामा अथर्व वेद प्रयाग मे छपा, प० क्षेमकरण दास त्रिवेदि कृत भाष्य

देवृकामा ,, मुबई मे छपा, सायणाचार्य भाष्य सहित

देवृकामा ,, पद सूची स्वामी विश्वेश्वरा नन्द नित्यानन्द जी कृत

अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्य सुमना सुवर्चा। वीरसूर्देवृकामा स्योना शनोभवद्विपदे शंचतुष्पदे॥ ऋग्वेद मूल (अजमेर १० ८५ ४४)

देवकामा ऋग्वेद पद पाठ (मोक्षमूलर)

देवकामा ,, मूल, औध, पं. श्री० दा० सात वलेकर जी

देवकामा ,, मुंबई (सायणाचार्य भाष्य)

देवकामा ,, पद सूची स्वामी विश्वेश्वरानन्द नित्यानन्द जी कृत

देवकामा बोधायन गृह्य सूत्र १. १.२५

देवकामा मानव गृह्य सूत्र १. १०. ६ (पं० भीमसेन जी)

देवकामा वाराह ,, ,, खण्ड १४

देवकामा जैमिनि ,, ,, १. २१

देवकामा पाराकर , ,, १. ४. १६

अदेवृघ्न्यपतिघ्नी हैधि शिवा पशुभ्यः सुयमा सुवर्चा । प्रजावती वीरसूर्देवृकामा स्योने ममाग्नि गार्हपत्यं सपर्य ॥ अथर्व० १४ २. १८

देवृकामा प्रयाग या क्षेमकरण दास जी

देवृकामा अथर्व, मुंबई सायणाचार्य

देवृकामा ,, पद सूची स्वामी विश्वेश्वरानन्द नित्यानन्द जी

देवृकामा सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ४ वियोग प्रकरण

अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्य· सुमनाः सुवर्चाः। वीरसूर्देवृकामा स्योना शन्नो भव द्विपदे शंचतुष्पदे। सस्कार विधि (ऋग्वेद १० ८५

अथर्ववेद मे सब ने देवृकामा पाठ माना है ऋग्वेद मे अजमेर वैदिक यन्त्रालय और संस्कार-विधि में देवृकामा और मुंबई आदि स्थानों में छपे ऋग्वेद और गृह्य-सूत्रों म देवकामा पाठ माना है।

अब आर्य-विद्वानों से नम्र निवेदन है वह शान्त चित होकर सब स्थल देकर जो उचित समझें निश्चय करलें।

२५-८-३८   —स्वतन्त्रानन्द

विज्ञापन

यह विज्ञापन ऋग्वेद भाष्य अङ्क १, जो टाइटिल की दूसरी ओर दिया गया था। निर्णयसागर प्रेस बम्बई में सम्वत् १९३५ में छपा था, इसके अव-लोकन से संस्कार-विधि के सम्बन्ध में चर्चा चलाने-वाले सज्जनों को मनन करने योग्य विचार मिलेंगे।

—सम्पादक]

"सब को विदित हो कि जो जो बातें वेदों की और उनके अनुकूल हैं उनको मैं मानता हूँ विरुद्ध बातों को नहीं। इसमे जो जो मेरे बनाये सत्यार्थ-प्रकाश वा संस्कार-विधि आदि ग्रन्थों में गृह्य सूत्र वा मनुस्मृति आदि पुस्तकों के वचन बहुत से लिखे हैं, वे उन उन ग्रन्थों के मतों को जनाने के लिए हैं। उनमें से वेदार्थ के अनुकूल का साक्षिवत प्रमाण और विरुद्धका अप्रमाण मानता हूँ। जो जो बातें वेदार्थ से निकलती हैं उन सब को प्रमाण करता हूँ; क्योंकि वेद ईश्वर वाक्य होने से सर्वदा मुझको मान्य हैं। और जो जो ब्रह्मा जी से लेकर जैमिनि मुनिपर्यन्त महात्माओं के बनाये वेदानुकूल ग्रन्थ हैं उनको भी मैं साक्षी के समान मानता हूँ और जो सत्यार्थ-प्रकाश के पृष्ठ ४२ और पक्ति २५ मे पित्रादिकों में से जो कोई जीता हो उसका तर्पण न करे और जितने मर गये हैं उनका तो अवश्य करे। तथा पंक्ति ४७ २१ में मरे हुए पित्रादिकों को तर्पण और श्राद्ध करता है इत्यादि तर्पण और श्राद्ध के विषय में जो छापा गया है सो लिखने और शोधने वालों को भूल से छापा गया है। इसके स्थान में ऐसा

समझना चाहिये कि जीवितों को श्रद्धासे करके नित्य तृप्त करते रहना यह पुत्रादि का परम धर्म है और जो जो मर गये हों उनका नहीं करना ? क्योंकि न तो कोई मनुष्य मरे हुए जीव के पास किसी पदार्थ को पहुँचा सकता और न मरा हुआ जीव पुत्रादि के दिये पदार्थों को ग्रहण कर सकता है। इससे यह सिद्ध हुआ कि जीते पिता आदि की प्रीति से सेवा करने का नाम तर्पण और श्राद्ध है अन्य नहीं। इस विषय मे वेद मन्त्रादि का प्रमाण भूमिका के ११ अङ्क के पृष्ठ २५१ से लेके १२ अङ्क के २६७ पृष्ठ तक छपा है वहाँ देख लें।"

ऋग्वेद भाष्य अङ्क १ जो निर्णयसागर मुंबई में १६३५ मे छपा था। मुख्य पत्र की दूसरी ओर छपा है। पुन अङ्क २ के उसी स्थान पर फिर वही पाठ छापा गया था।

इसमें महर्षि जी ने मृतक श्राद्ध का निषेध किया है और सत्यार्थप्रकाश में छपने को भूल से छपना माना है। श्राद्ध के अतिरिक्त सत्यार्थप्रकाश और संस्कार-विधि में गृह्य सूत्र और मनुस्मृति आदि ग्रन्थों के प्रमाणों को वेदानुकूल होने पर प्रमाण अथवा अप्रमाण लिखा है और लिखने का कारण उन उन ग्रन्थों के मत को जानने के लिए ही लिखे हैं यह भी लिख दिया है। इस विज्ञापन को पढ़कर महर्षि के भाव समझने में सुविधा होजाती है। इसलिए मैंने इसे "सार्वदेशिक" में छपने के लिए भेजा है। क्योंकि इस समय कोई विरले ही विद्वान् हैं जो महर्षि के इस विज्ञापन को जानते हैं अधिक का इसका पता ही नहीं है।

—स्वतन्त्रानन्द

मद्रास-प्रचार

जुलाई मास के प्रचार-कार्यका संक्षिप्त विवरण

इस मास प्र० स्ना० धर्मदेव विद्यावाचस्पति प्रचारक सार्वदेशिक सभाने बंगलौर शहर, बंगलौर छावनी, मावल्ली ग्राम धर्मावरम् कंगेरी चन्नपट्टन, शेषाद्रिपुर, नीलकण्ठन् हल्ली मंगलवार पेठ, मैसूर, शूले इत्यादि में प्रचार तथा हरिजनोद्धार कार्य किया। धर्मावरम् में यज्ञ में पशुहिंसा निवारणार्थ किये शास्त्रार्थ तथा वैदिक धर्म प्रचार और उसके जनता पर प्रभाव का वृत्तान्त पृथक दिया जाता है। बंगलौर छावनी में इस मास स्नातक जी ने ३ सुशिक्षित हरिजनों के विवाह संस्कार ३, ४ और १४ जुलाई को सैकड़ों की उपस्थिति में व्याख्या सहित वैदिक रीति से कराये। इन वैदिक संस्कारों का जनता और विशेषतः हरिजनों का अपनाना धार्मिक जागृति का विशेष चिह्न है जो बड़ा आशाजनक है। बंगलौर छावनी में भी आर्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशन नियमपूर्वक होते रहे। कंगेरी ग्राम तथा गुरुकुल में दलितोद्धार और प्रचार कार्य २१ ता० को किया गया। अनेक नये ब्रह्मचारी कंगेरी गुरुकुल में हाल में मैसूर के अनेक भागों से प्रविष्ट हुए हैं जिन्हें गुरुकुल के कार्यकर्ताओं के इच्छानुसार स्नातकजी ने ब्रह्मचारियों के कर्तव्यों पर उपदेश दिया और स्वरचित वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी कर्णाटक संस्करण) की प्रति सब विद्यार्थियों को बाँटी जिस से वे वैदिक धर्म के तत्त्वों को ठीक तौर पर समझ सकें। यहाँ भी गुरुकुल आर्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशन नियमपूर्वक होते रहते हैं। बंगलौर शहर (कैलास पाळयम्) में आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों के अतिरिक्त समाज भवन में दो हरिजन बालकों का नामकरण और एक युवक का यज्ञोपवीत संस्कार इस मास कराया गया। चन्नपट्टन आर्यसमाज के मन्त्री श्रीयुत आर्यमूर्ती जी को साथ लेकर जो संस्कारविधि का कर्णाटक भाषानुवाद स्नातक जी के निरीक्षण में कर रहे हैं स्नातक जी ने २५ और २६ जुलाई को नीलकण्ठनहल्ली और मंगलवार पेठ के हरिजनों उपनिवेशों में जाकर विशेष रूप से प्रचार और दलितोद्धार कार्य किया। इन उपनिवेशों में विशेषतः नीलकण्ठम्हल्ली में एक ईसाई मिश्नरी महिला हरिजनों को कभी कभी मिठाई वस्त्र शाकभाजी आदि देकर ईसाई बनाने का प्रयत्न कर रही है। अतः विशेष रूपसे उन्हें ईसाई मत में न जाने के लिए सचेत किया गया। शिक्षित सब लोगों और विद्यार्थियों को वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी' की प्रतियाँ मुफ्त बाँटी गईं। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि वे कभी ईसाई मत में न जायँगे। शिक्षित विद्यार्थियों और अन्यों के लाभार्थ उस ग्राम में ६ अगस्त को एक आर्यकुमार सभा की स्थापना की जायगी। उसी दिन आर्यसमाज का नया चुनाव आदि भी स्नातक जी की उपस्थिति में होगा।

मैसूर में २१ ता० की रात को स्नातक जी की उपस्थिति और श्रीयुत वेंकटराज अर्स (भूतपूर्व प्राइवेट् सेक्रेटरी हिज हाइनेस युवराज मैसूर) प्रधान आर्यसमाज मैसूर की अध्यक्षता में आर्यसमाज की अन्तरङ्ग सभा का अधिवेशन हुआ जिस में मैसूर

आर्यसमाज के सार्वदेशिक सभा के साथ सम्बन्ध जोड़ने (Affiliation) विषयक कार्यवाही को अति शीघ्र करने के अतिरिक्त यह निश्चय किया गया कि यथासंभव दशहरे के अवसर पर एक आर्यन् कान्फ्रेन्स कर्णाटक आर्य-प्रतिनिधि की स्थापनार्थ मैसूर नगर में की जाय। इसकी आयोजना बड़े उत्साह के साथ की जारही है। आशा है ईश्वर की कृपा से इसमें सफलता होगी। २० ता० को स्नातक जी की अध्यक्षता में नरेन्द्र डिबेटिङ्ग सोसाइटी (जिस का अधिवेशन प्रति बुधवारको सदस्योंको भाषणाभ्यास कराने के उद्देश्य से होता है) का अधिवेशन हुआ जिसमें उन्हों ने भाषणकला विषयक उचित निर्देश देने के अतिरिक्त प्रसङ्गवश मूर्ति पूजादि विवादास्पद विषयों पर प्रकाश डाला। २८ जुलाई की शाम को बंगलौर के कर्णाटक साहित्य परिषन्मन्दिर में स्नातक जी ने Universal Buddha Society या विश्व बौद्ध सङ्घ की अधीनता में और प्रो० श्री कण्ठैय्याजी M. A. B.L (सेन्ट्रल कालेजके अंग्रेजी के प्रोफेसर) के सभापतित्व मे ११ घण्टे तक "वैदिक धर्म और बौद्ध मत" पर व्याख्यान दिया, जिस मे महात्मा बुद्ध का चतुरार्यसत्य, आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग आदि नैतिक शिक्षाओं का आधार वेद-उपनिषद्, योग, दर्शनादि पर बताते हुए सिद्ध किया गया कि बुद्ध भगवान् नास्तिक न थे तथा वर्णव्यवस्था वैदिक यज्ञादि पर भी पूर्ण प्रकाश डालते हुए बताया गया था कि उन्होने जन्मसिद्ध जाति-भेद और यज्ञो मे पशुहिंसादि जिन बातों का प्रबल विरोध किया वे वेदादि सत्यशास्त्र विरुद्ध बातें न थीं। बुद्ध भगवान् के ईश्वरवादी होने के अनेक प्रमाण बौद्ध ग्रन्थों से दिये गये। (इस भाषण का सारांश समय मिलने पर 'सार्वदेशिकार्थ' देने का विचार है)। प्रो० श्री कण्ठैय्या जी ने जिनकी गणना इधर के सुप्रसिद्ध विद्वच्छिरोमणियों में से है, अपने प्रारम्भिक भाषण मे स्नातक जी की योग्यता की अत्यधिक प्रशंसा करते हुए कहा कि उनका परिचय देने की किसी कर्णाटक प्रान्तवासी को सुप्रसिद्ध होने के कारण आवश्यकता ही नहीं। उनके गत वर्ष कंगेरी में International Fellowship के अधिवेशन में The Vedic Approach to God पर दिये गये अत्यन्त प्रभावशाली और स्फूर्तिदायक भाषण के शब्द अभीतक हम लोगों के कानों में गूंज रहे हैं। हाल में ही १६ अक्टूबर से बंगलौर शहर से Mysore Times नामक अंग्रेजी दैनिक पत्र निकलना शुरू हुआ है जिसकी सम्पादिका श्रीमती राजबाई जी (धर्मपत्नी डा० कर्मचन्द्र जी M A P h D,) हैं जो बंगलौर आर्यसमाज की सदस्या हैं। इस पत्र में जो अत्यधिक लोकप्रिय बनरहा है और जिसकी अभी से २ हज़ार से ज्यादा प्रतियाँ छपती हैं स्नातक जी के सामाजिक धार्मिक विषयों पर लेख सप्ताह में २-३ बार प्रकाशित हो रहे हैं, जिनसे प्रचार कार्य में बड़ी सहायता मिल रही है। सम्पादिका जी ने स्नातक जी को लिखितरूप से वचन दिया है कि आप जो कुछ भी प्रकाशनार्थ भेजेंगे उसे एक दम प्रकाशित किया जायगा। वे अपने इस वचन का पालन कर के समाज के प्रचार-कार्य मे सहायता दे रही हैं जिसके कारण वे धन्यवाद की पात्र हैं। स्नातक जी की लिखी जातिभेद विचार नामक (कर्णाटक) पुस्तक का अनुवाद द्वितीय संस्करण हाल ही मे बंगलौर की वैदिकधर्म ग्रन्थ माला ने प्रकाशित किया है वहां से "ईश्वर विचार" नामक कर्णाटक पुस्तक भी प्रकाशित हुई है।

इस मास आर्य-विद्याशाला शेषाद्रिपुर में श्रीयुत रामचन्द्रराव Inspector of Schools की अध्यक्षतामें २३ ता० को और National Highschool में २० और २१ ता० को स्नातकजी के व्याख्यान हुए १६ ता० को हिन्दुस्तानी महासभा के वार्षिकाधिवेशन में सदस्य रूपसे सम्मिलित होकर स्नातक जी ने अपने भाषण में सदस्यों को विशेष प्रेरणा की।

हैदराबाद (निज़ाम राज्य) में

वैदिकधर्म की वेदी पर एक

और आर्य बलि

समाचार मिला है कि मौजे अकोलगा सच्यदान ताल्लु के बोरी जागीर में महादेव नाम का एक व्यक्ति सत्यार्थप्रकाश आदि आर्यसमाज की पुस्तकों को आर्यसमाज साकोल से लाकर पढ़ा करता था और उनका प्रचार अन्य लोगों मे करता था। स्थानीय मुसलमानों ने उससे सत्यार्थप्रकाश छीन कर सब इन्सपेक्टर पुलिस को दे दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य के मन्त्री जी को पता लगा तो उन्होंने एक प्रार्थनापत्र सब इन्सपेक्टर पुलिस को भेजा। चुनाचे किताब वापस दे दी गई। मुसलमानों ने महादेव से कहा कि हमारे ग्राम मे आर्यसमाज की हवा भी किसी को मत लगाना। कथित ग्राम का पटेल भी मुसलमान है, परन्तु महादेव तो सत्यार्थप्रकाश, स्वामी दयानन्द जी का चरित्र तथा स्वामी जी के अन्य ग्रन्थ पढ़ा ही करता और उनकी बातें अपने भाइयों को भी सुनाता। मुसलमानों ने कई बार उसे मारने का प्रयत्न किया, परन्तु बहुत बार असफल रहे। आखिरकार १७ जुलाई रविवार प्रातःकाल सात बजे मिहर अली नाम के एक मुसलमान ने उसके पेट में छुरा भोंक कर अतिनिर्दयता से मार डाला। कातिल अभी तक नहीं पकड़ा गया है। अभा पता नहीं स्टेट में कितने बलिदान आर्यों को देने पड़ें।

गुलबर्गे के मुकद्दमे का परिणाम

आर्यों के साथ न्याय!

होली के दंगे के सिलसिले में पकड़े गए निर्दोषी आर्यों के बयान संसार ने पढ़ लिए होंगे। बयानात से ही पता चलता है कि आर्य अभियुक्तों का अपराध कितना है परन्तु ऐसी परिस्थिति होते हुए भी कोर्ट ने लालाजी मन्त्री आर्यसमाज को दस वर्ष की कैद का कड़ा दण्ड दिया। और श्री हनुमन्तराव बहोरीलाल, तिपन्ना, नागप्पा, दत्तुसिंह को दो वर्षकी सजा हुई है। इस परिणाम के सम्बन्ध मे हम अधिक न लिखते हुए इतना ही कहना चाहते हैं कि अब आर्यों को न्याय नहीं मिल सकता। अबतो लालाजी के साथ ही जेल में जाने के लिए प्रत्येक आर्य को तय्यार हो जाना चाहिए।

(वैदिक सदेश)

निजाम राज्य में पत्रों की बंदी।

हैदराबाद दक्षिण:—ता० २२।८।३८

स्थानीय समाचार पत्रो में निजाम सरकार के पब्लिक इनफर्मेशन ब्यूरोने जनता की सूचनार्थ निम्नांकित पत्रो को निजाम राज्य में जब्त करार देने की घोषणा करदी है। १ हिन्दू देहली (हिन्दी) २ हिन्दू आउटलुक देहली अंग्रेजी ३ हिन्दू लाहौर (उर्दू) ४ वैदिक सन्देश सोलापुर (हिन्दी) ५ मराठा बम्बई

(उर्दू) ६ मसावात बम्बई (उर्दू) ७ मराठवाड़ा पूना (मराठी) ८ अमरज्योति नागपूर (मराठी) ६ त्रिकाल पुना (मराठी) १० आर्य गजट लाहौर (उर्दू) ११ प्रकाश लाहौर (उर्दू) १२ आर्यवीर लाहौर (उर्दू) १३ मिलाप लाहौर १४ महाराष्ट्र नागपुर १५ उर्दू बम्बई ।

आर्य-प्रतिनिधि सभा राजस्थान के स्वर्ण जयन्ती उत्सव की विज्ञप्ति

श्रीमती आर्य-प्रतिनिधि सभा राजस्थान की स्वर्णजयन्ती ता० ९ नवम्बर से ६ नवम्बर सन् १६३८ तक महर्षि श्री स्वामी दयानन्दजी की निर्वाणस्थली अजमेर नगर में बड़े समारोह से मनायी जायगी। इस सुअवसर पर कई रचनात्मक कार्य होंगे। सरस्वती-भवन के दो मंजिल महर्षि की निर्वाणस्थली में बन गये हैं। आर्य-प्रतिनिधि सभा राजस्थान का इतिहास पूर्ण तत्परता से लिखा जा रहा है। गुजरात का आर्यसमाजों ने, जिनका सम्बन्ध सन् १६०७ तक श्रीमती आर्य-प्रतिनिधि सभा राजस्थान व मालवा से रहा है, स्वर्णजयन्ती में सम्मिलित होने का उत्साह दरसाया है। श्री पूज्यपाद नारायण स्वामी जी महाराज की उपयोगी पुस्तक 'कर्मरहस्य" हिन्दी में तथा श्रीमान् डाक्टर सत्यप्रकाशजी की पुस्तक "A Critical Study of Dayananda's Philosophy" अंग्रेज़ी में छपनी आरम्भ हो गई हैं। सभा के पचास हज़ार रुपये के स्थायी कोष की योजना होरही है। श्रीमान् पं० रामसहाय जी ने सभा के इतिहास के शास्त्रार्थ विषयक अध्याय का सम्पादन भी अपने ज़िम्मे ले लिया है। इसके लिये सभा उनकी आभारी है। श्रीमती परोपकारिणी सभा ने स्वर्ण-जयन्ती के अवसर पर आर्य-विद्वानों को वैदिक देवतावाद के विषय में सत्यासत्य का निर्णय करने के लिए अवसर दिया है और श्रीमान् पं० सातवलेकरजी को निमन्त्रित किया है कि वह महर्षि दयानन्द सरस्वती के देवतावाद विषय में अपनी शकाएँ निवारण करले, स्वर्णजयन्ती के अवसर पर आर्य-विद्वानों का काफ़ी जमाव रहेगा और आर्य-समाज के सिद्धान्तों के विषय में शंका करनेवालों को विचार-विनिमय करने का पूरा अवसर मिलेगा। मैं आर्य भाइयों और बहिनों से सादर सप्रेम आग्रह करता हूँ कि वे स्वर्णजयन्ती के स्वर्णमय अवसर पर अजमेर अपने इष्टमित्रों व परिवार सहित पधार कर धर्म-लाभ उठावें और स्वर्णजयन्ती को सफल बनावें।

—चाँदकरण शारदा

ग्राहकों से आवश्यक निवेदन

'सार्वदेशिक' के स्वदेश के निम्न ग्राहकों का चन्दा सितम्बर ३८ में समाप्त होता है। प्रार्थना है कि ये ग्राहक महोदय अपना-अपना चन्दा १५ अक्टूबर तक भेज देवें। इसके बाद जिन ग्राहकों का चन्दा प्राप्त न होगा या कोई सूचना न मिलेगी उनकी सेवा में पत्र वी पी द्वारा भेज दिया जायगा और आशा है वे उसे स्वीकार करेंगे।

७६, ८२, ८३, ८७, ८८, २८२, ४६७, ४७३, ४७४, ४७६, ४६०, ६२८, ८२३, ८२४, ८२५, ८६८, ८६६, ६००,

साहित्य-समीक्षा

विश्व की पहेली

लेखक—श्री० बाबू पूर्णचन्द जी वकील, आगरा

प्रकाशक—आर्यसाहित्य मण्डल, अजमेर

मूल्य ॥)

इस पुस्तकमें ईश्वर, जीव और प्रकृति का वैदिक-स्वरूप प्रस्तुत करने का यत्न किया गया है, तथा उन सत्ताओं के सम्बन्ध में नए और पुराने विविध वादों पर विचार करते हुए वैदिक-स्वरूप का महत्व प्रतिपादित किया गया है।

आर्यसमाज के विद्वानों ने पृथक-पृथक सत्ताओं पर उच्चकोटि के ग्रन्थ प्रस्तुत किये हैं, परन्तु ऐसे ग्रन्थ का जिसमें तीनों सत्ताओं पर एक जगह विचार किया गया हो, अभाव था और वस्तुत: वह खटकनेवाला अभाव था। विद्वान् लेखक ने इस पुस्तक के द्वारा उस कमी की पूर्ति करके एक श्लाघनीय सेवा की है। वैदिक त्रैतवाद (ईश्वर जीव प्रकृति) की महत्ता तथा पुस्तक का परिचय लेखक के अपने शब्दों में इस प्रकार है:—

"इस पुस्तक के पढ़ने से पाठकों को विदित होगा कि वैदिक त्रैत वाद के प्रचलित न होने के कारण फिलासफरों को कैसी अड़चन पड़ी और कैसे मन गढ़न्त वादों की स्थापना करनी पड़ी। वैदिक त्रैतवाद का प्रचार महाभारत के समय तक बराबर रहा जब वाममार्ग प्रचलित हुआ तो उसके वैज्ञानिकरूप चार्वाक ने केवल प्रकृति की सत्ता मान कर अपना काम चलाना चाहा, क्योंकि जीव और ईश्वर की पृथक् सत्ता मानने से उनके भोग-विलास में बाधा पड़ती थी। वाम मार्ग का प्रतिकार जैन और बौद्ध मतों के संचालक और अनुयायियों ने किया और त्याग-वाद के सहारे उनको प्रकृति की सत्ता का अत्यन्त निषेध करना पड़ा। जब इन मतों से भी नास्तिकता फैलने लगी तो श्री शंकराचार्य जी को जीवात्मा की सत्ता के महत्व को जनता के सम्मुख बलपूर्वक प्रकट करना पड़ा और जीव की सत्ता को यहाँ तक बढ़ाया कि ईश्वर और जीव की सत्ता में अभेद-सा हो गया और उससे नवीन वेदान्त के विचार प्रचलित हुए। पूर्वीय फिलासफी जब इस दशा में थी उस समय यूनान और मिश्र के द्वारा इसकी झलक योरोप तक पहुँची और वहाँ भी भ्रममूलक विचार फैल गये। यदि हम वैदिक त्रैतवाद के स्वच्छ स्वरूप को संसार के सम्मुख प्रचलित व सिद्ध करना चाहते हैं तो हमें इस ४००० वर्ष की पुरानी खाई को पार कर के प्राचीन युग की ओर अपनी दृष्टि फेरनी होगी और केवल वेदों का सहारा लेकर विश्व की पहेली को सुलझाना होगा और महर्षि का यही संदेश था। महर्षि के इस संदेश को पहचाने के लिए ही यह छोटी-सी पुस्तक लिखी गयी है।"

—:o:—

स्वाध्याय योग्य उत्तम साहित्य

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी कृत

कतिपय ग्रन्थ

(१) मृत्यु और परलोक

शरीर, अन्त करण तथा जीव का स्वरूप और भेद, जीव और सृष्टि की उत्पत्ति का प्रकार, मृत्यु का स्वरूप तथा बाद की गति, मुक्ति और स्वर्ग, नर्क इत्यादि लोकों का स्वरूप, मुक्तिके साधन आदि आदि विषयों पर अद्भुत पुस्तक। मूल्य ।-)

(२) योग रहस्य

इस पुस्तक में योग के अनेक रहस्यों को उद्घाटित करते हुए उन विधियो को भी बतलाया गया है जिससे कोई आदमी जिसे रुचि हो—योग के अभ्यासों को कर सकता है। मूल्य ।-)

(३) विद्यार्थी जीवन रहस्य

विद्यार्थियों के लिए उनके मार्ग का सच्च पथ प्रदर्शक, उनके जीवन के प्रत्येक पहलू पर श्रृङ्खलाबद्ध प्रकाश डालने वाले उपदेश । द्वितीय संस्करण ≈)

(४) उपनिषद् रहस्य

ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य उपनिषदों की बहुत सुन्दर, खोजपूर्ण और वैज्ञानिक व्याख्यायें मूल्य क्रमश: ≈), ≈)॥ ≈)॥, ≈)॥ ≈)॥, -)।

अन्य ग्रन्थ कर्त्ताओं का

स्वाध्याय योग्य बहुमूल्य साहित्य

(१) इजहारे हक़ीकत ॥।=) सत्य-निर्णय १।)

(उर्दू) (हिन्दी)

श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य्य,

महात्मा गांधी ने आर्य्य समाज और ऋषि दयानन्द के मिशन और ग्रन्थों के सम्बन्ध में जो आक्षेप किए थे इस पुस्तक में प्रामाणिक रीति से उनका खण्डन किया गया है। पुस्तक की अन्यान्य विशेषताओं में से एक विशेषता यह है कि लेखक ने आलोचना करते हुए उस मान और लोक-प्रियता का पूरा ध्यान रक्खा है जिसके महात्मा जी अधिकारी हैं। पुस्तक मे कोई भी स्थल ऐसा नहीं है जिससे महात्मा जी के प्रति अवज्ञा का आभास होता हो। पुस्तक स्थिर साहित्य में स्थान पाने योग्य है।

(२) धर्म और उसकी आवश्यकता ।=)

लेखक श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य

इस पुस्तक में धर्म का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। नई रोशनी के उन नव युवक और नवयुवतियों के हाथमें रखे जाने योग्य

है जो धर्म और ईश्वर में न केवल विश्वास ही नहीं रखते बल्कि उनका मखौल भी उड़ाते हैं। मूल्य ।—)

(३) आर्य्य-पर्व्व पद्धति

आर्य्य जगत में एक से ही त्यौहार मनाने तथा त्यौहारों के सम्बन्ध मे पूर्ण ज्ञान प्राप्त करा देने के लिये इस पुस्तक की रचना की गई है। इस का प्रत्येक आर्य-परिवार में रखना आवश्यक है। यशोचित संस्करण ॥=)

(४) कर्त्तव्य दर्पण

आर्यों की नित्य कर्म विधि-इत्यादि की यह बहुत उत्तम पुस्तक है। आर्य्यसमाज सम्बन्धी आवश्यक ज्ञातव्य बातें भी इसमे दी गई हैं। मूल्य =)॥

(५) कथामाला

इस पुस्तक में स्वामी जी महाराज की विद्वत्ता-पूर्ण और अत्यन्त उपयोगी कथाओं का संग्रह किया गया है। आर्य्य नर नारी मात्रके स्वाध्याय के योग्य है। मूल्य ।=)

(६) आर्य्य जीवन और गृहस्थधर्म

लेखक—पं० रघुनाथप्रसाद पाठक

आर्य्य जीवन किस प्रकार बनाया जाता है और गृहस्थ किस प्रकार श्रेष्ठ बनाए जा सकते हैं इन सब बातों का इस पुस्तक में वर्णन किया गया है। पुस्तक मुख्यतया श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के प्रवचनों और व्याख्यानों के आधार पर लिखी गई है। मूल्य ।=)

(७) आर्य्यवर्त की वाणी

अनुवादक पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक

यह पुस्तक श्रीयुत साधु टी० एल० वास्वानी की वायस आफ आर्य्यवर्त का हिन्दी अनुवाद है। इसमे ऋषि दयानन्द का जीवन संक्षेप में बहुत ओजस्वनी भाषा में प्रस्तुत किया गया है। अन्य भी बहुत सी नवयुवकोपयोगी सामग्री इस पुस्तक में प्रस्तुत की गई है। मूल्य =)

(8) Ecclesia Divina

Well - Bound—By Bhumanand Saraswati M A, 5/-

(9) Fountain Head of Religion

By Pt Ganga Prasad M A, Chief Judge

Well-bound	1 4
Un-bound	-/12/-

(१०) अमृत वर्षा ।॥)

लेखक म० नारायण स्वामी जी

(११) गृहस्थ जीवन रहस्य

सजिल्द १।)

(१२) आत्म दर्शन १।)

(१३) वेद तत्व प्रकाश सजिल्द

सं० श्री सुखदेव विद्यावाचस्पति २)

मिलने का पता :—

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा, श्रद्धानन्द बाज़ार, देहली

कमीशन रेट्स

पुस्तकालय सार्वदेशिक सभा ।

अन्य ग्रन्थ कर्त्ताओं की पुस्तकों को छोड़ कर शेष सभा तथा सभा द्वारा प्रकाशित श्री महात्मा नारायण स्वामी जी की पुस्तकों के घटे हुए मूल्य पर पुस्तक विक्रेताओं को निम्न प्रकार कमीशन दिया जायगा।

५) से २५) तक	१५) प्रति सैकड़ा
२६) से ५०) तक	२०) प्रति सैकड़ा
५१) से १००) तक	२५) प्रति सैकड़ा

नोट—(१) स्थूलकृत सत्यार्थ प्रकाश तथा (२) दयानन्द ग्रन्थ माला पर कुछ कमीशन नहीं दिया जायगा।

—❀—

सार्वदेशिक में विज्ञापन छपाई के रेट्स

स्थान	१ मासका	३ मासका	६ मासका	१ वर्ष का
पूरा पृष्ठ	१०)	२५)	४०)	७५)
एक कालम	६)	१५)	२५)	४०)
आधा ,,	३॥)	८)	१५)	२५)
चौथाई ,,	२)	४)	८)	१५)

उजरत का धन नियमानुसार पेशगी आना चाहिए।

आर्य्य समाज के नियमोपनियम — १।) प्रति सैकड़ा,)॥ प्रति

मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली

"मनुष्य मात्र से प्रार्थना"

(लेखक—श्री ला० बोमाराम जी रिटायर्ड स्टोरकीपर, N. W. R, आनरेरी मन्त्री,
पंजाब केन्द्रीय अनाथालय, रावीरोड, लाहौर)

—:o:—

"देह धरे का नाम है दे सके तो देह,
फिर पीछे पछताएगा जब देह हो जावेगी खेह।"

आपको मालूम है कि रावीरोड पर एक अनाथालय बनाम पंजाब केन्द्रीय अनाथालय लाहौर में खुला हुआ है, जो पंजाब भर में अपनी श्रेणी की एक ही संस्था है। जहाँ सारे देश से बालक-बालिकाएं आकर दाखिल होते हैं इसमें न सिर्फ उनका पालन-पोषण किया जाता है; परन्तु उनको आश्रय देकर विद्या अध्ययन कराया जाता है और इनको अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए कोई न कोई कार्य सिखाया जाता है। इस अनाथालय के अधीन एक इण्डस्ट्रीयल मिडिल स्कूल है, जिस में विद्या पढ़ाने के अतिरिक्त कटिंग और दर्जी का कार्य भले प्रकार सिखाया जाता है। यह स्कूल सरकार की ओर से स्वीकृत है, इसमें बाहर के बालक भी लिए जाते हैं।

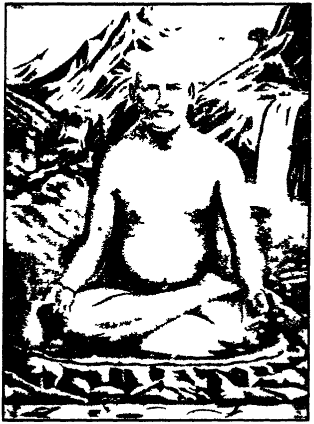
इस अनाथालय में न सिर्फ पब्लिक के बालक आते हैं, बल्कि पुलिस डिपार्टमेण्ट भी ऐसे बच्चों को जो कभी भगाये जाते रहे हैं, उनको गुण्डों से बरामद करके यहाँ दाखिल कराया करता है और जो अनाथ बच्चे उसको शहर, हस्पताल या जेल से मिलते रहते हैं, उनको भी यहाँ लाकर दाखिल कराया जाता है गर्ज कि इस अनाथालय में हर प्रकार के लड़के और लड़कियाँ जिनकी आयु १६ वर्ष से नीचे हो दाखिल किये जाते हैं। आज कल हालत ऐसी है कि जिन नवजात बच्चों की माता का स्वर्गवास होजाता है और उनके पालने का प्रबन्ध करके संरक्षकों से नहीं हो सकता, वह उनको यहाँ लाकर दाखिल कर देते हैं। ऐसे बच्चों की देख-भाल के लिए एक दानी रायसाहिब ने जो अपना नाम देना नहीं चाहते, एक ट्रेण्ड नर्स अपने व्यय पर रखी हुई है' आजकल हमारे पास एक सौ के लगभग लड़के और ६० के लगभग लड़कियाँ हैं। उनके व्यय के लिये आप सोच सकते हैं कि कितनी वस्तुओं की आवश्यकता होती होगी। यह सब आप दानी वीरों से इकट्ठा होकर आता है और इससे इनका खर्च चलाया जाता है। अब शीत ऋतु आरहा है, इन सब के लिए गर्म वस्त्रों की आवश्यकता होगी। इसलिए आप से प्रार्थना है कि जहाँ आप अपने बच्चों के लिए कपड़े सिलवायेंगे वहाँ इन यतीम बच्चों का भी ध्यान रखेंगे और इनके खाने पीने के लिए आटा, दाल, चावल, घी, सब्जी इत्यादि जो भाई जिस प्रकार हमारी सहायता करना चाहें, धन्यवाद सहित स्वीकार की जायेगी। आशा है कि आप इस अपील पर ध्यान देंगे और जैसे पहले हमारी सहायता करते रहे हैं वैसे ही अब हमारी सहायता करके पुण्य के भागी बनेंगे।

प० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये 'चन्द्र प्रिण्टिङ्ग प्रेस' देहली मे मुद्रित

अक्टोबर १९३८ Reg. No L, 2121.

ऋग्वेद यजुर्वेद

सार्वदेशिक



सम्पादक— प्रो० सुधाकर, एम० ए०,

स० सम्पादक— श्री रघुनाथप्रसाद पाठक

वार्षिक मूल्य स्वदेश ३) एक प्रति का ≡) विदेश से ६ शि० वार्षिक

अथर्ववेद सामवेद

विषय-सूची

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों के प्रचारार्थ बहु संख्या में ये ग्रन्थ एकत्र किये गये हैं और निश्चय किया गया है कि पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन भी कुछ अधिक दिया जावे। छोटे बड़े सभी ग्रन्थ अच्छे कागज पर बड़े आकार में हैं। उनका मूल्य सहित विवरण इस प्रकार है। इनके मँगाने के लिये शीघ्र आर्डर भेजने चाहियें —

	असली मू०	घटाहुआ मू०
(१) दयानन्द ग्रन्थमाला दो जिल्दों में	५)	२।।)
(२) ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका बढ़िया	१।।)	१।)
(३) आर्याभिविनय	।-)	।)
(४) महर्षि का संक्षिप्त जीवन चरित्र मय रंगीन चित्रों के	।)	=)
(५) वेद विरुद्ध मत खण्डनम्	=)।।	=)
(६) गो करुणानिधि	=)	-)।।
(७) शिक्षापत्री	=)	-)।।
(८) भ्रान्ति निवारणम्	=)	-)।।
(९) सत्यधर्म विचार	-)।।	-)
(१०) काशी शास्त्रार्थ	-)	)।।
(११) भ्रमोच्छेदन	-)	)।।
(१२) आर्योद्देश्य रत्न माला	)।।	)।।
(१३) स्वीकार पत्रम्	)।।	)।।

सार्वदेशिक सभा के पुस्तकालय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

(१) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश—

यह महर्षि दयानन्द कृत हिन्दी सत्यार्थप्रकाश का संस्कृतानुवाद है। अनुवादक गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) के संस्कृत विभाग के मुख्याध्यापक श्री पण्डित शङ्करदेव पाठक हैं। अनुवाद की भाषा मधुर एवं सरल है। महर्षि का आशय ज्यों का त्यों प्रगट किया गया है। मूल्य २।) सजिल्द २।।)

मूल्य प्रचारार्थ ।)

(२) प्राणायाम विधि—

यह पुस्तक जिसमें प्राणायाम सम्बन्धी कठिन से कठिन विधियों को सुगम बनाया गया है श्री पूज्यपाद १०८ श्री नारायण स्वामी जी महाराज द्वारा लिखी गई है। प्राणायाम के प्रेमियों की एक बड़ी खोज तथा आवश्यकता इसके द्वारा पूरी हो सकती है। मूल्य -) घटा हुआ मूल्य)।।

(३) दयानन्द लहरी—

इसमें भगवान दयानन्द का स्तवन शिखरणी आदि सुन्दर छन्दों में किया गया है। प्रत्येक छन्द के साथ भाषानुवाद भी दिया गया है। पुस्तक के लेखक श्री पं० मेधाव्रत जी कविरत्न हैं। मूल्य -)।।, घटा हुआ मूल्य -)

(४) दश नियम व्याख्याः—

श्री पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति द्वारा यह "दश नियम व्याख्या" नाम की पुस्तक लिखी गई है। इसमें आर्यसमाज के दश नियमों की विस्तृत तथा गवेषणापूर्ण व्याख्या की गई है। मूल्य ।), घटा हुआ मूल्य ≈)

(५) ओम्प्रत्ययः—

यह पुस्तक श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति की लेखनी से लिखी गई है। ओ३म् परमात्मा की विस्तृत व्याख्या विद्यमान है। मूल्य ॥।), घटा हुआ मूल्य ।≈)

(६) वैदिक सिद्धान्तः—

यह पुस्तक भिन्न भिन्न वैदिक सिद्धान्तों पर आर्य्य विद्वानों द्वारा लिखित निबन्धों का अत्युत्तम सग्रह है। मूल्य १।) सजिल्द १॥), घटा हुआ मूल्य ॥।) सजिल्द १)

(७) वैदिक विवाहादर्शः—

इस पुस्तक में वैदिक विवाह का आदर्श प्रस्तुत किया गया है और विवाह सम्बन्धी लगभग सभी आवश्यक बातों पर प्रकाश डाला गया है। मुख्यतया पश्चिमी थ्योरियों के विवेचन पूर्वक विवाह सम्बन्धी वैदिक आदर्शों और शिक्षाओं की श्रेष्ठता प्रतिपादित की गई है। मूल्य १।), घटा हुआ १)

(८) विदेशों में आर्यसमाज का इतिहासः—

जिस पुस्तक को छपाने की मथुरा शताब्दी पर घोषणा की गई थी और जिसके पढ़ने के लिये पिछले आठ वर्षों से देश और विदेशों के आर्य्य-नर नारी बेचैन हो रहे थे वह सार्वदेशिक सभा की ओर से तैयार हो कर छप गई है। पुस्तक में आर्य्य प्रचारकों तथा विदेश की आर्य्य-संस्था आदिकों के लग-भग ११ चित्र हैं। पुस्तक पढ़ने योग्य है। छपाई, सफ़ाई, काग़ज आकार प्रकार बढ़िया। मूल्य ॥), घटा हुआ ।≈)

(९) यमपितृ परिचय—लेखक श्री पं० प्रियरत्न जी 'आर्ष' मूल्य २), घटा हुआ १)

इस पुस्तक में 'यम और पितृ' प्रकरण वाले वेद मन्त्रों की विद्वत्ता पूर्ण व्याख्या की गई है। स्वाध्याय शील सज्जनों के पढ़ने और सग्रह करने योग्य अनुपम ग्रन्थ है।

(१०) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर—सम्पादक—श्री कृष्णचन्द्र जी विरमानी, मूल्य १।)

पुस्तक की विशेषता यह है कि भिन्न भिन्न महत्व पूर्ण विषयों पर स्वामी जी महाराज की भिन्न भिन्न पुस्तकों व पत्र व्यवहार तक में वर्णित मत को एक जगह संग्रह किया गया है। यह पुस्तक सम्पादक के लगभग ११ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल है। जिस किसी विषय में भी ऋषि दयानन्द की सम्मति जानना चाहो वही प्रकरण इस पुस्तक में देखोगे। पुस्तक बहुत उपयोगी है।

(११) **आर्य्य सिद्धान्त विमर्श—** प्रथम आर्य्य विद्वत् सम्मेलन के निबन्धों का संग्रह। कतिपय आर्य्य विद्वानो ने गम्भीर विषयों पर अपनी लेखनी द्वारा प्रकाश डाला है। स्वाध्याय शील व्यक्तियों के लिए यह पुस्तक अमूल्य ग्रन्थ का काम देगी। पृष्ठ संख्या लग भग ४०० मूल्य १॥)

(१२) **भजन-भास्कर—** (दूसरा संस्करण) यह पुस्तक भाव, भाषा, संगीत, छन्द, वैदिक सिद्धान्त शिक्षण इत्यादि की दृष्टि से उत्तम भजनो और कविताओं का संग्रह है। इसमें देश के और आर्य समाज के प्रसिद्ध २ संगीतज्ञों कवियो और भजनोपदेशकों की उत्कृष्ट रचनाएँ हैं इसमे देश, धर्म, ईश्वर, समाजसुधार, बाल-शिक्षण शुद्धि, ऋषि-महिमा, आर्य्यसमाज महिमा इत्यादि अनेकानेक धार्मिक, सामाजिक और जातीय विषयों पर भजन मौजूद हैं संग्रहकर्त्ता श्री पं० हरिशंकर शर्मा कविरत्न (भुत पूर्व सम्पादक आर्य मित्र) हैं। आर्य्यसमाज मे तुकबन्दो की बढ़ती हुई तुकबन्दी को निरुत्साहित करने तथा आर्य्यसमाजों और परिवारो में श्रेष्ठ संगीत को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ही मथुरा की दयानन्द शताब्दी महोत्सव के अवसर पर यह संग्रह तैयार कराया गया था। अब जनता की बढ़ती हुई माग को पूरा करने के उद्देश्य से ही इस संग्रह का दूसरा संस्करण बढ़िया आकार प्रकार इत्यादि मे छपाया गया है। मूल्य ॥)

(१३) **सत्यार्थ प्रकाश—** (सस्ता संस्करण)—महर्षि दयानन्द सरस्वती की अमर कृति। २० × ३० सोलह पेजी साइज के ८०० से अधिक पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल ।)॥ प्रति १०० प्रति या इससे अधिक लेने पर ।) (चार आना) प्रति।

		अ० मू०	घ० मू०
(१४)	वेद में असित शब्द	–)।	–)
	२५ प्रति का	१।)	१।)
(१५)	वैदिक सूर्य विज्ञान	=)	=)
(१६)	विरजानन्द विजय	।)	=)
(१७)	हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद उर्दू	।)	=)

18 Agnihotra—

By Dr Satya Prakash D Sc Lecturer in Chemistry University of Allahabad
Well Bound—Price Rs 2 8 0

The Author has described in details the process of Agnihotra and has shown that during the process of this fumigation such products are given out which are bactericidal and vermifugal and this ancient practice of the Aryans is very healthy hygienic and productive of physical and spiritual results

"The writer is a **Doctor of Science** He has brought to bear upon the subject all the scientific lore that he has acquired at the University and environments"

Ganganath Jha

"As the book deals with the ancient practice in a systematic manner, I believe, it will be found interesting and useful to readers in the East and in the West, and hence I have a great pleasure in recommending it to the public"

—*N R. Dhar*

19 Crucifixion by an eye witness—

This valuable book contains a detailed account of the crucifixion of Jesus Christ, given by one who witnessed it with his own eyes—price As. 6, Reduced price As 5

20 Truth and Vedas—

It is an excellent exposition and translation of Vibhrat"—price As 8. Reduced price A 6

21 Truth Bed Rocks of Aryan culture—

The Subject dealt with in this book is the ideal of truth stating candidly by means of Vedic Mantras and fine stories to what extent the Aryan race has lived to this ideal—price As 10 Reduced price As 8

22 Torch Bearer—

A biographical sketch of Swami Dayanand—price Rs. 1/8/- Reduced price Re 1/-

23 Vedic Teachings—

This book contains the most authentic replies to the objections raised about the Vedas by Dr Bhandarkar The learned author has besides brought forth the superiority the Vedic Teachings contain—price Rs, 1/12/ Reduced price Rs 1/4/-

24 Voice of Aryavarta—

This little book comes from the pen of Mr T L Vaswani and contains most lucid reflections on Rishi Dayanand and his life and teaching—price As 8 Reduced price As 2

25 The daily Prayer of an Arya—

This booklet contains an ethical exposition in the light of Modern Thought of our daily Sandhya—price As 4, bound and As 3/- unbound.

26 The Light of the Vedas—

It contains lucid translation of 500 Vedic Mantras A book worth presenting to people of alien faiths price Rs 1/4/-

27 Commentary on Ishopanishat—

Translated by the late Pt. Ghasi Ram M A L L B—price As 4.

श्र स्वामी सत्यानंददयालु जी सन्यासी द्वारा संस्थापित



[illegible]

[illegible]

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष १२ — आश्विन १९९५ — अक्टूबर १९३८ ई०] [दयानन्दाब्द ११४ — अङ्क ८

* वेद की शिक्षाएँ *

इमे त इन्द्र ते वयम् । ऋग० १–५७–४

हे प्रभो ! हम तो तेरे हैं ।

We are Thine—Thine own, O Lord !

सहस्रं साकमर्चत । ऋग० १–८०–९

प्रभु के राज्य को पाने के लिए सहस्रों की संख्या में उसकी पूजा करो ।

May we all congregate in Work and Worship to attain the Kingdom of God !



निज़ाम-सरकार का काला क़ानून

पाठक अन्यत्र निज़ाम सरकार द्वारा प्रचरित काले क़ानून का परिचय प्राप्त करेंगे। प्रजा में पारस्परिक मन-मुटाव को रोककर राज्य में शान्ति स्थापित करना इस कानून का उद्देश्य बतलाया जाता है।

इस कानून की एक धारा मे 'बाहर के अवाञ्छनीय लोगों को दण्ड देने का विधान है' जिन्हें बिना वारन्ट भी पकड़ा जा सकता है, निर्वासित किया जा सकता है तथा राज्य में उनके पुन प्रवेश करने पर उन्हें १ वर्ष की जेल भी हो सकती है। उनको आश्रय देने वा उन्हें काम मे लेनेवालो तथा उनकी सेवा-शुश्रूषा करनेवालों को भी इसी प्रकार दण्डित करके राज्य से बाहर निकाला अथवा जेल मे डाला जा सकता है। यह कानून बाहरवालों पर ही नहीं वरन् राज्य की प्रजा पर भी लागू होगा। सभा-संस्थाए अवैध क़रार दी जा सकती हैं। उन की जायदादें ज़ब्त हो सकती हैं। सदस्य लोग जेल मे ठूँसे जा सकते हैं। सेना की भरती को रोकना, सरकारी नौकरों का बायकाट करना, निषिद्ध जलूस निकालना, सेना में झूठी खबरें फैलाना आदि भी क़ानून में जुर्म है। यदि अपराधी नाबालिग हों तो उनके माँ बाप और संरक्षक भी दण्डित हो सकते हैं।

रियासतों की प्रजा मे राजनैतिक जागृति की जो लहर इन दिनों दौड़ रही है उसके प्रभाव से राज्य को बचाने के पूर्ण प्रयत्न के रूप मे ही 'सार्वजनिक सुरक्षा' का यह कानून बनाया गया प्रतीत होता है। ब्रिटिश भारत मे तथा अन्यत्र कई स्थानों पर सार्वजनिक जागृति को रोकने के लिए सरकारों ने इसी प्रकार के कठोर और दमनकारी उपाय किये थे, परन्तु उनके उपयोग से जागृति दबने के बजाय कई गुना बढ़ गई थी। जिन सरकारों का अब भी इस प्रकार के उपायों की सफलता में आस्था है, हमें उनके अज्ञान और अदूरदर्शिता पर तरस आता है।

जहाँ तक हमें विदित है हैदराबाद राज्य में आर्यसमाज ही एक मात्र संस्था है जिसकी प्रगतियाँ जनता में धार्मिक और सामाजिक जागृति फैला रही हैं। राज्य का आर्यसमाज के प्रति जो अवाञ्छनीय रुख रहा है तथा अब भी है वह किसी से छुपा नहीं है। यह क़ानून आर्यसमाज की प्रगति को कुचलने के लिए बनाया गया है, अथवा आर्यसमाज को कुचलने में ही इसका उपयोग होगा जैसा कि अन्य क़ानून का होता रहा है। यदि आर्यसमाजी ऐसा सन्देह करें तो इसमें कोई आश्चर्य न होगा। श्री प० व्यासदेव जी शास्त्री तथा श्री शिवचन्द्र जी सहायक मन्त्री आर्य्य रक्षा समिति को राज्य से

प्रवेश को तथा आर्य रक्षा समिति को गैरकानूनी उद्घोषित कर देने की ताजा बन्दिश से इस सन्देह की और भी पुष्टि हो जाना स्वाभाविक है।

हमें आशा है, निजाम की सरकार इस प्रकार के उपायों की निस्सारता का अनुभव करेगी और ऐसे उपाय करेगी, जिससे प्रजा में वास्तविक सन्तोष स्थापित हो। कहने की जरूरत नहीं, इस प्रकार के उपायों से पैदा हुई शान्ति राख से ढकी हुई आग होती है।

आर्यसमाज और नवयुवक

श्री० प०भीमसेन जी मन्त्री आर्य्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब ने २ अक्टोबर के 'आर्य्य-मुसाफिर' में अपने एक लेख में इस प्रश्न का उत्तर देने का यत्न किया है कि आर्य्यसमाज की ओर आजकल नवयुवक क्यों नहीं आकर्षित होते हैं। वे लिखते हैं—

"आर्य्य-समाज की ओर नवयुवकों के आकर्षित न होने का मुख्य कारण यह है कि आर्य्य-समाज की संस्थाओं और व्यक्तियों के सार्वजनिक जीवन में आदर्श वाद के स्थान पर व्यावहारिक वाद ने मुख्यता प्राप्त कर ली है। हम प्रत्येक संस्था और व्यक्ति की योग्यता इस बात से देखते हैं कि उसके कारण आर्य्य-समाज को व्यावहारिक लोक-प्रियता तथा उपयोगिता की दृष्टि से क्या लाभ होगा। शुद्ध आदर्श-वाद जनता की आँखों से ओझल हो रहा है।"

नवयुवकों के आर्य्य-समाज की ओर आकर्षित न होने के कई कारण प्रकाश में आये हैं। एक कारण यह भी हो सकता है, जो प० भीमसेन जी ने प्रकट किया है। परन्तु जहाँ तक हमने इस प्रश्न पर विचार किया है, और जिसका हम प्रायः इन स्तम्भों में जिक्र करते रहे हैं वह यह है कि हमारे यहाँ ऐसे लोगों की कमी है, जो नवयुवकों का ठीक-ठीक अध्ययन करना और उन्हें अपनाना जानते हों।

* * *

काँग्रेस और गोवध

'नेशनल वेल्थ' नामक पत्र के सम्पादक के अनुसार गौओं के वध का कानूनन बन्द हो जाना नितान्त आवश्यक है। इसका कारण धार्मिक मतभेद वा स्वार्थ नहीं, वरन् राष्ट्रीय-सम्पत्ति और स्वास्थ्य ही है। सम्पादक महोदय लिखते हैं—

"इस अवांछनीय संघर्ष को, जो पिछले दिनों कॉंग्रेस के हिन्दू मुस्लिम समझौते के प्रयत्नों में मुस्लिम लीग की अड़ङ्गा नीति तथा मुसलमानों की नई-नई विचित्र माँगों के कारण जो, पैदा हुआ था, रोकने के लिए काँग्रेस कार्य-समिति ने वर्धा हाइट हाल की आवश्यक स्वीकृति से मुसलमानों को बहुत-सी ऐसी सुविधाएँ देना पसन्द किया था, हिन्दुओं का भी प्रतिनिधित्व करने की हैसियत में जिनके देने की वह अधिकारिणी नहीं थी। इस प्रकार की एक भयंकर छूट गो-हत्या का अधिकार था। पण्डित जवाहरलाल नेहरू अपने ६ अप्रैल १९३८ के पत्र में श्रीयुत जिन्नाह को लिखते हैं—

'गो-वध के सम्बन्ध में कॉंग्रेस के विरुद्ध बड़ा ग़लत और निराधार आन्दोलन होता रहा है। मुसलमानों के क़दीमी अधिकारों पर रोक-थाम करने के लिए कॉंग्रेस कोई क़ानून नहीं बनाना चाहती है।'

"हमें यह जानकर आश्चर्य है कि गो-वध एक अधिकार में परिवर्तित हो रहा है और वह भी 'क़दीमी अधिकार में'। मानों विधान के अनुसार गो-हत्या एक मुख्य अधिकार है। हमें मुस्लिम लीग के लीडरों की मनोवृत्ति पर दुःख होता है, सार्वजनिक नीति तथा राष्ट्रीय स्वास्थ्य के विरुद्ध जानेवाली चीज़ को वे एक अधिकार के रूप में माँगते हैं।

"यदि कांग्रेस गो-वध के ख़िलाफ़ कोई क़ानून बनाने का कार्य स्वयं नहीं कर सकती है, तो उसे कम-से-कम इस आशय के उपाय का समर्थन तो करना चाहिये, तब ही कांग्रेस राष्ट्र के हित में ठीक-ठीक कार्यवाही करेगी।"

* * *

जर्मनी और ईसाइयत

जर्मनी के सरकारी शिक्षणालयों में इन दिनों जो पाठ्य पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं उनमें ईसाइयत के विरुद्ध बड़ा ज़बरदस्त प्रचार किया जाता है। जर्मन देश के निवासी अपने देश से ईसाइयत के पूर्ण बहिष्कार पर तुले हुए हैं, समय २ पर यह समाचार हमें मिलते रहे हैं, पाठ्य-पुस्तकों के जो अवतरण हमारे सामने हैं उनसे उन समाचारों की सत्यता में कोई सन्देह नहीं रह जाता है। उनमें से ३–४ अवतरण इस प्रकार है—

(१) ईसाइयत ग़ुलामों और मूर्खों के लिए है।

Christianity for slaves and fools

(२) ईसाई सभ्यता कोई चीज़ नहीं है। ईसाइयत ने व्यभिचार और चोरी जैसी चीज़ों की शिक्षा देकर, जिन्हें वे लोग पहले नहीं जानते थे, जर्मन लोगों का बिगाड़ दिया है।

There is no Christian Culture, Christianity has corrupted Germans by teaching them things like adultery and theft which they never knew before

(३) यहूदियों ने सच्चे धर्म का स्थान ईसाइयत को दे दिया था।

Christianity is a Jewish substitute for true religion

* * *

महात्मा जी का प्रस्तावित स्वयंसेवक-दल

महात्मा गाँधी ने 'हरिजन' में एक लेख लिखा है, उसमें उन्होंने शान्ति-रक्षार्थ एक स्वयं-सेवक-दल के निर्माण की आवश्यकता प्रकट की है। दंगों—मुख्यतया साम्प्रदायिक दंगों के समय शान्ति-रक्षा के लिए प्राण तक को ख़तरे में डालने की दल के सदस्यों से आशा की गई है। महात्मा जी का विचार यह है कि इस दल को पुलिस और यहाँ तक कि फ़ौज का स्थान ले लेना चाहिये। वे लिखते हैं—यह योजना भले ही असंभव सिद्ध हो जाय तो भी यदि कांग्रेस को अपने अहिंसा आन्दोलन में सफल होना है तो उसे इस प्रकार की स्थितियों का शान्तिपूर्वक मुक़ाबिला करने के लिए शक्ति का विकास करना चाहिये।

आर्य-पत्र तथा आर्यसमाज का नियम

म० लेखरामजी नामक किन्हीं आर्य सज्जन ने सहयोगी 'विजय' मे प्रकाशित 'आर्य-पत्र का विचित्र पाडित्य' शीर्षक अपने लेख के केटिंग्स हमारे पास भेजे हैं। उनका लेख उक्त पत्र के दो अङ्कों में समाप्त हुआ है। उसमे उन्होंने आर्यसमाज के तीसरे नियम को अशुद्ध छापने पर 'आर्य-पत्र' की आलोचना की है। ३८ वें 'आर्य' में पृष्ठ १४७ पर आर्यसमाज का तीसरा नियम इस प्रकार छपा है।

"वेद को पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों (हिन्दुओं) का परम धर्म है।

—ऋषि दयानन्द

वास्तविक नियम इस प्रकार है—

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है" वेद का सब आर्यों का परम धर्म है। यह नियम 'आर्य' मे किसी प्रसङ्गवश नहीं छपा है वरन स्थान पूर्ति के लिए छापा गया प्रतीत होता है। फिर भी जिस रूप मे नियम छपा है वह वास्तव मे बड़ा भ्रमोत्पादक और आपत्तिजनक है। 'आर्य' सम्पादक को इस प्रकार के प्रकाशनों में बहुत सावधान होना चाहिये और इस अशुद्धि का प्रतिवाद कर देना चाहिये। नियम मे जो अशुद्धि है उसके विस्तार में न जाकर हम केवल यही कहेंगे कि वह ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की स्पिरिट तथा भाव के सर्वथा विरुद्ध है।

हमारा विचार है कि म० लेखराज जी का कार्य 'आर्य' सम्पादक का ध्यान इस भूल की ओर आकर्षित करने मात्र से ही चल जाता और शायद उन्हें इतना लम्बा लेख लिखने की आवश्यकता न पड़ती।

* * *

सहशिक्षा का दुष्परिणाम

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की दो विदुषी महिलाओं के हृदय में यह भावना उत्पन्न हुई कि सह-शिक्षण की सफलता तथा असफलता पर विचार किया जाय। इनका नाम डोरोथी ब्रोमले तथा फ्लोरेन्स ब्रीटन है। इन्होने जब जाँच आरम्भ की, तब शिक्षणालयों के अधिकारियों ने इसका प्रबल विरोध किया और इनके सामने बहुत सी आपत्तियाँ उपस्थित कीं। पर इन वीर स्त्रियों ने उसका साहसपूर्वक सामना किया और वे लगभग ४६ विद्यालयों के १३३४ बालक तथा बालिकाओं के बयानों को संगृहीत कर सकीं। इसके बाद इन महिलाओं ने एक पुस्तक प्रकाशित की, जिसका नाम Youth and Sex है।

इस ग्रन्थ में विदुषी महिलाएँ लिखती हैं कि संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के विद्यालयों के आधे बालक और एक तिहाई बालिकाएँ विवाह से पूर्व ही मैथुन में प्रवृत्त हो जाती हैं और इन में से दो तिहाई बालक तथा एक तिहाई बालिकाएँ अपनी हाईस्कूल की पढ़ाई समाप्त करने के पूर्व ही चरित्र-भ्रष्ट हो जाती हैं। इन महिलाओं का कहना है कि बहुत-सी बालिकाओं ने लज्जा से उत्तर ही नहीं दिया, पर हमने उनकी गणना सच्चरित्रों में की है। यदि सब बालक तथा बालिकाएँ स्पष्टता से उत्तर देती, तो यह संख्या निश्चय ही बहुत अधिक होती। इन विदुषी महिलाओं ने और

हिन्दू-धर्म का पतन

अभी हाल में अङ्गरेज़ी-पत्रों में श्री० डॉ० भगवानदासजी की 'हिन्दू-धर्म का पतन' (The Dealine of Hinducism) शीर्षक एक लेख-माला प्रकाशित हुई है। पिछले बारह सौ वर्षों में हिन्दुस्तान के हिन्दुओं की आबादी १०० प्रतिशतक से घटकर ६५ प्रतिशतक रह गई है, तथा अहिन्दुओं की आबादी शून्य से ३५ प्रतिशतक हो गई है। माननीय डॉक्टर जी ने अपनी लेख-माला के हिन्दू-धर्म के पतन के कारण तथा पतन को रोकने के उपाय बतलाये हैं। लेखमाला का सार इस प्रकार है। —सम्पादक]

"पिछले ७० वर्षों से मैं हिन्दू-धर्म का अनुयायी हूँ। बहुधा मेरी इच्छा हुआ करती है कि अधिक सहानुभूति-पूर्ण और दृढ सामाजिक-जीवन का फ़ायदा उठाने के लिए मैं अन्य धर्मों में चला जाऊँ। दुर्भाग्य से दूसरे बड़े-बड़े धर्मों में आध्यात्मिकता बहुत कम रह गई है और हिन्दू-धर्म की अपेक्षा उनमें अधिक पशुता और खूँरेजी व्याप्त हो गई है। उनमें भी हिन्दू-धर्म जैसे अन्ध-विश्वास और पाखण्ड पाये जाते हैं। परन्तु उनमें, पूर्ण न सही, अधिक पारस्परिक भाईचारा, प्रेम, मुहब्बत और सगठन पाया जाता है।

मैं बड़ी अनिच्छा के साथ कठोर भाषा का प्रयोग कर रहा हूँ। निराशा के भावों के एकदम उबाल के कारण मैं ऐसा कर रहा हूँ। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि इस प्रकार की निराशा प्राय मनुष्यों को हुआ करती है। मै यह भी जानता हूँ कि कोमल-भाषा पर प्राय लोग ध्यान नहीं देते हैं। लोग प्राय हिन्दू-बहुमत और 'मुस्लिम अल्प-मत' की चर्चा किया करते हैं। हिन्दू-लोग इस विश्वास में कि वे बहु संख्यक हैं, इस चर्चा से बड़े आनन्दित होते है। अहिन्दू-लोग (हिन्दू-बहुत) की जब-तब चर्चा इसलिए किया करते हैं कि उन्हें हिन्दुओं के मुकाबले में विशेष सरक्षणों की प्राप्ति का आधार मिल जाता है। कुछ दिन हुए संयुक्त-प्रान्त की धारा-सभा म प्रश्नोत्तर के दौरान में विदित हुआ था कि मुख्य मुख्य सरकारी-महकमों में गैर-हिन्दू कर्मचारियों की

भी बहुत भी आवश्यक बातों पर प्रकाश डाला है।

कहती हैं कि बहुत-सी कन्याओं ने तो यह ... मैथुन से बची रहीं, इसका कारण गर्भ स्थिति का डर था और हमें गर्भ-निवारक प्रयोगों तथा औषधियों का ज्ञान नहीं था। बहुतसी कन्याओं ने तो यहाँ तक बयान दिया कि दो वर्ष में हम लोगों ने कम-से-कम २० बार सहवास किया होगा। एक लड़की ने साहसपूर्वक यहाँ तक कहा कि मेरे सहपाठियों का ये प्रबल आग्रह होता था कि मेरे लिये इन्कार करना असम्भव होजाता था।

सहशिक्षण के पक्षपातियों को अमेरिका की इन विदुषी महिलाओं के अनुसन्धान के फलों को आँखें खोलकर पढ़ना चाहिये।

प्रतिनिधित्व बहुत ज्यादा है। वे जानते है कि हिन्दुओं का कोई बहुमत नहीं है। वे लोग २५०० के लगभग बेहूदा अल्पमतों का ढेर है, जो एक-दूसरे के लिए अछूत, त्याज्य और भक्षक है।

जब तक हिन्दू धर्म की यह दशा रहेगी, जो अब है, तबतक वह प्रत्येक धक्के का अधिकारी है, जो धक्के इसे भूतकाल म मिले है इस समय मिल रहे है और बहुत से जो आगे मिलेंगे। हिन्दू-विरोधी शक्तियों का, जो आज हिन्दू-धर्म को भूमण्डल से मिटा देने की कोशिश कर रही हैं, यत्न ठीक ही है। इस प्रकार का पतित और निकम्मा धर्म जिन्दा रहने का अधिकारी नहीं है। यह तो बड़ी तेजी के साथ अपनी कब्र स्वयं खोद रहा है।

सन् १९२३ मे हिन्दू महासभा के उत्सव के अवसर पर बनारस मे मैंने श्री० स्व० स्वामी श्रद्धानन्द जी से निवेदन किया था कि शुद्धि-आन्दोलन' हिन्दुओं की रक्षा नहीं कर सकता है। यही सम्मति मैंने एकता-सम्मेलन के अवसर पर प्रयाग मे श्री० स्वामी जी के सम्मुख उपस्थित की थी। मेरा विश्वास है, जबतक हिन्दुओं मे से जातपात छुआ छूत और सामाजिक त्रुटियां दूर नहीं होती है, हिन्दुओं के लिए शुद्धि-आन्दोलन का उपयोगी होना असम्भव है। यदि वीर सावरकर तथा हिन्दू समाज के अन्य नेता सामाजिक त्रुटियों को दूर करने में सफल हो जाँय, तो सचमुच वे हिन्दू समाज की बड़ी भारी सेवा करेंगे। ऐसा हो जाने से हिन्दू-समाज के दर्वाजे गैर हिन्दुओं के लिए स्वतः खुल जायगे। हम शुद्धि के प्रचार की जरूरत न रहेगी। यह जरूरी नहीं है कि गैर-हिन्दू लोग अपनी मजहबी विलक्षणताओं को छोड़कर हिन्दू-धर्म मे आयेंगे। हिन्दू धर्म सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक रीति-नीति और व्यवस्था का समूह और समस्त मानव समाज का मानवी धर्म है। यह धर्म गिरते-गिरते वर्त्तमान हिन्दू-धर्म के रूप मे आगया है। प्राचीन-काल मे यह सनातन वैदिक आर्य बुद्ध मानव-धर्म कहलाता था, अर्थात् अनादि वैज्ञानिक, बुद्धि-सगत और मानवी कर्तव्य समझा जाता था। हिन्दू-धर्म के सुधार की वास्तविक कुञ्जी जात-पात को जन्म के स्थान म 'कर्म' और योग्यता' पर प्रतिष्ठित करना है।

HIGH THOUGHTS

(उच्च विचार)

ACTION (कर्म)

Unselfish and noble actions are the most radiant pages in the biography of souls

निष्काम और उच्च कार्य मनुष्यों के जीवन में सबसे उज्ज्वल पृष्ठ होते हैं।

* * *

Only the actions of the just smell sweet and blossom in the dust

केवल न्याय करनेवाले व्यक्ति के कर्मों से सुगन्धि निकलती है और वे कार्य धूल में फलते-फूलते हैं।

* * *

Be great in act as you have been in thought Suit the action to the word and the word to the action

जैसे महान् तुम विचारों में रहे हो ऐसे ही महान् कर्मों में भी रहो। अपने कर्म को अपने वचन के अनुसार और वचन को अपने कर्म के अनुसार बनाओ।

* * *

The acts of this life are the destiny of the next.

इस जीवन के कर्म दूसरे जीवन का प्रारब्ध होते हैं।

* * *

Thought and Theory must precede all salutary actions, yet action is nobler in itself either thought or theory

समस्त हितकारी कार्यों का श्रीगणेश विचार और सिद्धान्त के साथ होना चाहिये, परन्तु विचार और सिद्धान्त दोनों से कार्य उच्च होता है।

* * *

Action is eloquence The eyes of the ignorant are more learned than their ears

कर्म वाक्पटुता होता है। अज्ञानी के कानों की अपेक्षा उसकी आँखें ज्यादा होशियार होती हैं।

* * *

Nothing, says Goethe, is so terrible as activity without insight—look before you leap is a maxim for the world

गोथे का कहना है कि विवेकरहित कार्य के समान कोई भयङ्कर चीज नहीं होती है। संसार के लिए शिक्षा है कि कूदने से पहिले विचार कर लेना चाहिये।

* * *

२५वें भारतवर्षीय आर्यकुमार-सम्मेलन, बिजनौर

के

स्वागताध्यक्ष श्रीयुत रामचन्द्र गुप्त का

भाषण

ओ३म्-यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥

—यजु० अ० ३२ । मं० १४ ।

आदरणीय सज्जनो तथा प्यारे आर्य कुमारो !

मैं अपनी तथा बिजनौर-निवासियों की ओर से आपका प्रेम और सम्मानपूर्ण स्वागत करना अपना सर्व-प्रथम कर्त्तव्य समझता हूं । यद्यपि शक्ति और साधन पर्याप्त न होने पर भी इस अखिल भारतर्वीय सम्मेलन को निमंत्रित कर देने की धृष्टता हमने की है और हमे खेद है कि हम आपकी सेवा-शुश्रूषा के लिए यथोचित सुप्रबन्ध नहीं कर पाये हैं, तथापि आपकी सौजन्यता एवं सहृदयता से हमे आशा है कि आप हमारी त्रुटियों पर क्षमा की दृष्टि रक्खेंगे । आत्मीयता (अपनत्व) के नाते ही हमने अपनी असमर्थता मे भी आप से यहा पधारने का अनुरोध किया था और हमे विश्वास है कि आप हमारे आतिथ्य की कमियो की अपेक्षा हमारी हार्दिक सद्भावनाओं तथा प्रगाढ़ प्रेम की श्रद्धांजली को अपनी उदारता से अधिक महत्व प्रदान करेंगे । इस मौसम मे यात्रा की कठिनाइयाँ उठाकर आप जिस मनोरथ की सिद्धि के लिए पधारे हैं, उसमें आपकी सफलता के लिए हम सब परम पिता परमात्मा से प्रार्थी हैं और चाहते हैं कि आप परिषद् के पवित्र उद्देश्यों की पूर्ति मे अधिकाधिक प्रभावशालिनी शक्ति प्राप्त करें ।

यद्यपि बिजनौर एक साधारण नगर है, परन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से इसे विशेष महत्व दिया जा सकता है । प्राचीन काल में विदुर विश्वामित्र आदि ऋषियों की तपोभूमि रहने के प्रमाण रूप दारानगर में विदुर कुटी आज भी हमारी याद को ताजा कर रही है और मालिनी नदी का प्रवाह शकुन्तला और कण्व की याद दिलाता रहता है । इसी जिले में सीतावनी ग्राम प्राचीन किंवदती के अनुसार महाराज रामचन्द्र तथा महारानी सीता का निवास स्थान रहा है । अस्तु, राजा बैन की राजधानी यह विजय नगर एक पुनीत और धार्मिक स्थान समझा गया है । मुग़ल-ज़माने मे शहशाह अकबर के दरबार मे उच्च और आदरणीय स्थान पानेवाले अबुलफ़ज़ल और फ़ैजी इसी जिले के आज़मपुर बास्टा ग्राम के पालित थे ।

आधुनिक समय में भी बिजनौर प्रतिभाशाली नागरिक एवं समृद्धिशाली व्यक्ति पैदा करने मे

पीछे नहीं रहा। राइट ऑनरेबिल डॉक्टर सर तेजबहादुर सप्रू, राजा ज्वालाप्रसाद जी, आई० एस० ई०, रिटायर्ड चीफ इञ्जिनियर प्रोवाइस चान्सलर हिन्दू युनिवर्सिटी बनारस, तथा मु० शाहामतअली खान, सी० आई० ई०, सिवारे हिन्द की जन्मभूमि होने का सौभाग्य हमारे जिले को है। साहित्याचार्य पंडितवर स्व० श्री० पद्मसिंह शर्मा नायकनगला-निवासी से कौन साहित्य-प्रेमी है जो परिचित न हो। उपरोक्त सभी महानुभावों ने इस जिले की कीर्ति और महत्व को बढ़ाया है।

वैदिक धर्म-प्रचार में तो यह जिला आर्य समाज की स्थापना काल से ही अग्रतम रहा है और जितने प्रचारक और व्याख्याता इसने बनाये हैं, कदाचित् किसी दूसरे स्थान में तैयार हुए हों। स्वर्गीय स्वामी दर्शनानन्द जी महराज का विशेष प्रेम इससे रहा और, उनसे अपने जीवन-काल में अनेकों बार यहाँ तत्कालीन कार्य कर्ताओं को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। आर्य-समाजिक जगत् में बिजनौर सदैव प्रशंसित रहा है। आज भी स्वामी केवलानन्द जी महाराज जिस सलग्नता और तत्परता से वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं, वह किसी आर्य से छिपा नहीं है। यहाँ का आर्य-समाज सन् १८७८ ई० में स्वर्गीय पं० लेखरामजी आर्य-मुसाफिर तथा स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी के उत्साह-वर्धक सहयोग और प्रयत्न से स्थापित हुआ था। शनैः २ जिले भर में अनेकों स्थानों में आर्यसमाज स्थापित हुए आज भी उनकी संख्या प्रान्त के दूसरे जिलों की अपेक्षा बहुत है। जिले भर की प्रचार-व्यवस्था को ठीक रखने के लिए एक आर्योपप्रतिनिधि सभा भी काम कर रही है। आर्य-कुमार सभाएँ यद्यपि अभी तक पर्याप्त संख्या में नहीं हैं परन्तु आशा है कि इस सम्मेलन से जिले के आर्य-कुमारों का उत्साह बढ़ेगा और भविष्य में इनकी सख्या-वृद्धि हो सकेगी।

परन्तु सज्जनों यह न समझियेगा कि हमारा जिला समस्त भारतीय आर्य-समाजों को शिथिल कर देनेवाली लहर से कुछ अधिक सुरक्षित रहा है। हमें दुःख है कि हम भी उसके भयकर परिणाम से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। यह कहना सर्वथा सत्य न होगा कि केवल स्थानीय कारणों से ही ऐसा हुआ, अपितु देश भर में ही कुछ ऐसी परिस्थिति और वातावरण फैल गया जिसके कारण जनता नये आन्दोलनों की ओर आकर्षित हुई और आर्यसमाज को तरफ से उदासीन हो गई। हमारा कदापि यह आशय नहीं कि राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के आन्दोलन में आर्य-समाजियों को भाग लेना न चाहिये था। वस्तुतः यह हमारे लिये गर्व की बात है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए आर्यसमाज ने सतोष पूर्ण योग दिया है और विश्वास है कि आगे भी देता रहेगा। परन्तु हमें जानना चाहिये कि आर्य-समाज को जीवित और सुव्यवस्थित रखना भी हमारे लिए उतना ही आवश्यक है। आर्य समाज को तो एक प्रकार से इस संग्राम के लिये उत्तम चरित्र और आत्मिक बल रखनेवाले सैनिक तैयार करना अभीष्ट है जो निर्भयता और साहस के साथ नागरिक अधिकारों को सुरक्षित रख

सकें। चरित्र-गठन और आत्मिक बल प्राप्त करने के लिए आर्यसमाज से बढ़कर अन्य कोई संस्था नहीं हो सकती।

स्वयं महात्मा गाँधी जी ने भी अपने वक्तव्य द्वारा स्पष्ट कर दिया है कि हमारी शक्ति जन-बल पर नहीं बल्कि चरित्र-बल पर निर्भर है। अतः उन्होंने राष्ट्रसभा कांग्रेस के संचालकों को आदेश किया है कि वह चरित्र बल पर अधिक बल दें। और केवल फार्म पूर्ति और।) चंदे पर ही बस न करें। भले ही निर्वाचनों के लिए ऐसी नीति उचित समझी जाय, परन्तु वास्तव में वह आगे चलकर कांग्रेस के लिए अहितकर सिद्ध होगी और उसके मनोवाँछित ध्येय की प्राप्ति में बाधक बन जायेगी।

आर्यसमाज में इसी प्रकार की नीति ने बहुत कुछ त्रुटियाँ पैदा की हैं और फल-स्वरूप आज प्रायः सभी स्थानों में पारस्परिक मनोमालिन्य पदलोलुपता, द्वेषपूर्ण वातावरण देखने में आता है। वास्तविक और आवश्यक कार्यक्रम को पीछे डालकर आज आपसी लड़ाइयों और वादविवाद और पदों के लिए संघर्षों में हमारी सारी शक्ति व्यय हो रही है। यदि इसका सदुपयोग होता तो कितना बहुमूल्य और ठोस काम हम कर सकते!

स्वागताध्यक्ष की हैसियत से आपको उपदेश देना मेरा कर्त्तव्य नहीं और न मैं योग्यता ही रखता हूं परन्तु मैं नम्रतापूर्वक इतना निवेदन अवश्य करूँगा कि आप जब परिषद् के भावी कार्यक्रम पर विचार करें तो यह अवश्य ही ध्यान रखें कि आपकी संस्था उन उपरोक्त दोषों से मुक्त रहे जिनके कारण अन्य संस्थाएँ हानि उठा चुकी हैं।

हमें आर्यकुमारों से बड़ी आशाएँ हैं और हमारा भावी सामूहिक जीवन वास्तव में उन्हीं पर अवलम्बित है। सदाचारी, साहसी, बलवान् और सत्यनिष्ठ युवक ही वैदिक धर्म के प्रचार द्वारा आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के पुनीत मिशन की पूर्ति कर सकेंगे और अपने उच्च और अनुकरणीय जीवन से संस्था के गौरव और प्रतिष्ठा को बढ़ा सकेंगे। भारतवर्ष को ऐसे युवकोंकी आज बड़ी आवश्यकता है, क्योंकि चंचल, स्वार्थी, चरित्रहीन, कायर और कपटी युवक कदापि भारतमाता को पराधीनता से मुक्त कराने में सफल नहीं हो सकते। यह लड़ाई अस्त्रशस्त्रों की नहीं, जिन्हें कोई भी प्रयोग में ला सकता है। इस लड़ाई के लिए सत्य, अहिंसा और आत्मिक बल ही मुख्य शस्त्र हैं जिनको सफलतापूर्वक चलाने के लिए तपोनुष्ठान की आवश्यकता है। आर्यकुमारो! क्या तुम अपने जीवन को इस साँचे में ढालने का प्रयत्न करोगे? क्या तुम अपने व्यावहारिक जीवन और विचारों को ऐसा बनाओगे कि तुम्हें भारतमाता के सच्चे सपूत कहा जा सके और तुम अन्य भारतीय नवयुवकों के लिए अनुकरणीय आदर्श के तौर पर पेश किये जा सको? यदि तुम ऐसा करोगे तो परिषद् के उद्देश्यों की पूर्ति होगी और "तुम ईश्वर, वैदिक धर्म और देश के क्रियाशील उपासक बन

सकोगे।" परमात्मा करें कि तुम अपने प्रयत्न में सफल हो और भारत ही नहीं अपितु विश्व भर में कीर्ति और यश के भागी बनो। तुम्हारी इस सफलता में ही हम 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का सुख स्वप्न देख सकते हैं, अन्यथा नहीं।

एक और बात जिसकी ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं वह यह है कि आर्य-कुमारों को आत्म-निरीक्षण, चरित्र-गठन और स्वाध्याय ही में अपना अधिक समय लगाना चाहिये। अवकाश के समय सामाजिक और देश सेवा के कार्यों मे भी यथाशक्ति योग दे सकते हैं, परन्तु जहाँ तक हो सके उन्हें ऐसी बातों से पृथक् ही रहना चाहिये, जिनके कारण उनपर साम्प्रदायिक संकीर्णता का आक्षेप लगाया जा सके। इसका यह अर्थ नहीं कि उन्हें अपने धर्मके प्रति प्रेम नहीं रखना चाहिये, जैसाकि मैं ऊपर कह आया हूँ, धर्म के प्रति प्रगाढ़ प्रेम होना उनके लिए अनिवार्य है। परन्तु उनको चाहिये कि वे अन्य मतावलम्बियों से शत्रुता और घृणा के भाव न रक्खें। विचार भेद हो सकता है, परन्तु फिर भी हमे याद रखना चाहिये कि हम सभी चाहे सनातनी हों या आर्यसमाजी, सिक्ख हों या जैनी,मुस्लिम हों या ईसाई, पारसी हों या बहाई, सामूहिक हैसियत से भारतीय हैं और राष्ट्रीयता के नाते भाई हैं। एक दूसरे के प्रति प्रेम और आदर की भावनाएँ जहा राष्ट्रीय एकता में सहायक होंगी वहाँ अनुचित, संकुचित और संकीर्णतापूर्ण बर्ताव इसमें बाधक होगा।

पुन एक बार आपके अनुग्रहपूर्वक आगमन के लिए हार्दिक धन्यवाद और आतिथ्य में जो त्रुटियाँ रह गई हों उनके लिए क्षमा-याचना करता हूँ। यहाँ मैं अपने उन भाइयों का जिन्होंने स्वागतकारिणी कमेटी के कार्य-सम्पादन में योग दिया है और जिला बिजनौर निवासियों का जिन्होंने तन मन धन से सहायता प्रदान की है, धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता। यदि उनका सहयोग और सहायता हमे प्राप्त न होती तो कदापि हम इस कार्य को न कर पाते। विशेषतया मैं चि०ईश्वरदयाल जी मन्त्री स्वागतकारिणी कमेटी तथा म० ध्यानसिंह जी मन्त्री आर्यसमाज बिजनौर का अनुगृहीत हूँ, जिन्होंने बड़ी संलग्नता और उत्साह के साथ सहायता की है। वास्तव मे सम्मेलन की सफलता का श्रेय बहुत कुछ इन महानुभावों को ही प्राप्त होगा।

अन्त में मैं आर्यकुमारों और प्रतिनिधियों को जो यहाँ उपस्थित हैं बधाई देता हूँ कि उन्होंने अगामी वर्ष के लिए श्रीमान् प्रोफेसर सुधाकरजी एम० ए० जैसे योग्य, विद्वान् और अनुभवी आर्य पुरुष को जो परिषद् के संस्थापकों मे से हैं परिषद् का प्रधान निर्वाचित किया है। आशा है कि उनकी अध्यक्षतामे परिषद् सुदृढ़ और सुसंगठित होकर वैदिक धर्म के प्रसार और भारतवर्ष की सच्ची सेवाके लिए अनुकरणीय युवक पैदा करेगा।

अब मैं आदरणीय प्रोफेसर साहब से सभा-पति का आसन ग्रहण करने के लिए विनम्र प्रार्थना करता हूँ।

२५वें भारतवर्षीय आर्यकुमार-सम्मेलन, बिजनौर

के

सभापति

प्रोफेसर सुधाकर, एम० ए०

का

अभिभाषण

मानतीय स्वागताध्यक्ष तथा आर्यकुमार भाइयो !

मैं इस समय भारतवर्षीय आर्यकुमार-सम्मेलन के सभापति की हैसियत में अपने आपको किंकर्त्तव्य-विमूढ़ पाता हूँ। मुझे इस बात की स्वप्न में भी आशा न थी कि मेरे प्रिय भाई डॉ० युद्धवीरसिंह जी बलात् मुझे मेरे एकान्त-सेवन से निकालकर इस पद पर बैठा देंगे। मेरा चुनाव अच्छा है या बुरा, इसकी सारी ज़िम्मेदारी डॉक्टर साहब पर ही है। मैं जहाँ तक समझ सका हूँ, मेरे इस आसन पर बैठाने का कारण यही हो सकता है कि मैं इस परिषद् के जन्मदाताओं में से एक हूँ। जिन महानुभावों के दिमाग में इस परिषद् की स्थापना का विचार आया था, उनमें से एक महान् आत्मा मेरे स्वर्गीय भाई डॉ० केशवदेव जी शास्त्री थे। दूसरे डॉ० सिद्धेश्वर शास्त्री डी-लिट. हैं, जो इस समय आर्यसमाज से विरक्त होकर प्राचीन संस्कृत-साहित्य के अन्वेषण (Research) का काम कर रहे हैं। तीसरा व्यक्ति इस समय आपके सम्मुख आपकी सेवा मे उपस्थित है।

मुझसे यह आशा की गयी है कि मैं आप पर यह प्रकट करूँ कि किन आकांक्षाओं को लेकर भारतवर्षीय आर्यकुमार-परिषद् की स्थापना की गयी थी। मैं उस आशा की पूर्ति के लिए तैयार हूँ। यदि केवल इतने मात्र से मेरा छुटकारा हो सकता हो कि मैं आपको यह बतला दूँ कि किन आकांक्षाओं को लेकर इस परिषद् की स्थापना की गयी, तो यह कोई बड़ी बात नहीं। परन्तु मैं यह अनुभव करता हूँ कि इतने मात्र से छुटकारा नहीं। मुझे यह भी बतलाना होगा कि उन आकांक्षाओं की पूर्ति हुई अथवा नहीं, यदि नहीं हुई तो उसकी ज़िम्मेदारी किस पर है? यदि नहीं हुई तो आगे हम उसके लिए क्या करने को तैयार हैं? अतः "जो बोले सो दरवाजा

खोले" वाली कहावत के अनुसार मैं अपनी आगामी वर्ष भर की जिम्मेदारी से बच नहीं सकता। परन्तु मैं उस जिम्मेदारी को अपने वर्त्तमान स्वास्थ्य को दृष्टि में रखता हुआ तब तक न निभा सकूँगा, जब तक कि वे भाई, जो मुझे इस सम्मानित आसन पर घसीट लाये हैं, मेरी पूरी सहायता न करेंगे, तथा मेरे साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर आर्यकुमारों की सेवा मे जुट न जायेंगे।

इस देश मे जिस प्रकार बच्चे पैदा होजाते हैं और शैशवावस्था में वे उचित देखरेख न होते हुए भी येनकेन प्रकारेण बालिग होजाते हैं, उसी प्रकार इस परिषद् को भी अपने जन्मकाल से किसी विशेष लाड़-चाव तथा लालन-पालन का कोई मीठा संस्मरण नहीं है। यह भी इस समय २५ वर्ष की बालिग अवस्था को पहुँच गयी है और इस सम्मेलन के साथ अपनी जयन्ती मनाने चली है। जिन भाइयों के यत्किंचित् परिश्रम, उत्साह तथा लगन से यह अब तक जीवित रहा है, उन सब भाइयों को मै हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। इस परिषद् के जन्मकाल के कुछ वर्षों के बाद इसके प्रति मैंने जो उदासीनता दिखलाई है, उसके लिए मैं स्वयं लज्जित हूँ। इस समय मुझे केवल इस बात का हर्ष है कि मुझे आप भाइयों की कृपा से पुनः यह अवसर प्राप्त हुआ है कि मैं उस लापरवाही तथा उदासीनता का किंचित् प्रतिकार कर सकूँ।

इस परिषद् को जन्म देने का विचार कब और कैसे उत्पन्न हुआ, इसका उल्लेख करने के लिए मुझे आपके सम्मुख एक घटना का वर्णन करना होगा। एक बार स्वर्गीय डॉक्टर केशवदेव जी शास्त्री की अध्यक्षता में मैं और मेरे कतिपय सहपाठी आर्यसमाज की ओर से 'ब्रह्मचर्य' का सन्देश लेकर कलकत्ता-नगर पहुँचे। वहाँ हम लोग लगभग १ मास तक कॉलेजों में 'ब्रह्मचर्य' की महिमा पर बातचीत तथा भाषणों द्वारा विद्यार्थियों में उसका प्रचार करते रहे। यह बात आज से लगभग ३० वर्ष पहले की है। उस समय कलकत्ता के कॉलेजों में अविवाहित विद्यार्थी मिलना कठिन था। हमारे इस प्रचार से वहाँ के विद्यार्थियों में हलचल मच गयी, और अनेकों विद्यार्थियों ने यह प्रतिज्ञा की वे 'ब्रह्मचर्य के संदेश' का प्रचार अपने घरों में करेंगे। इन्हीं दिनों मुझे कलकत्ता के नवयुवक-क्रिश्चियन-संघ (Y M. C. A.) के एक अधिवेशन में जाने का अवसर मिला। वहाँ जाकर हॉल के दरवाजे पर मैंने एक अंग्रेज पादरी को खड़ा देखा। उसके हाथ में छोटे छोटे ट्रैक्ट थे। जो नवयुवक हॉल में प्रवेश करते थे, उनको हाथ मिलाकर बारी-बारी वह ट्रैक्ट देता जाता था तथा सबके साथ हँस-हँसकर बातचीत करता हुआ उनसे स्वास्थ्य-समाचार भी पूछता जाता था। जब मैं अन्दर जाने लगा और उस पादरी से हाथ मिलाया और उससे ट्रैक्ट लिया, तब मेरी आवाज को सुनकर वह कहने लगा, "महाशय, आपकी आवाज अपरिचित है। आप कहाँ से आये, कब आये ? यहाँ कहाँ ठहरे हैं ? कितने रोज ठहरेंगे ?" इत्यादि। थोड़े-से समय में उसने मुझसे

कई बातें पूछ लीं और अन्त में यह निवेदन किया कि दूसरे दिन मैं उससे अवश्य मिलूँ। जब दूसरे दिन उससे मेरी भेंट हुई, तो पादरी साहब ने बहुत-से ट्रैक्ट, जिनमें ईसा मसीह के चरित्र का ओजस्विनी भाषा में वर्णन था, मुझे दिये और प्रार्थना की कि मैं आद्योपान्त उन्हें पढ़ जाऊँ और यदि मुझे उनके पाठ से कुछ प्रकाश प्राप्त हो, तो उनको पुनः मिलूँ, ताकि वे इसी प्रकार का और साहित्य मेरे हाथों सौंप सकें। मेरे आश्चर्य की कोई सीमा न रही, जब मुझे यह मालूम हुआ कि वह पादरी साहब चक्षुहीन हैं और चक्षुहीन होते हुए अपने धर्म के प्रचार में इस तल्लीनता से कार्य कर रहे हैं। इस घटना का उल्लेख मैंने स्वर्गीय डॉक्टर शास्त्री जी से किया। उन्होंने हमें यह आदेश दिया कि 'नवयुवक-क्रिश्चियन-संघ' (Y M C A) की लाइन पर हमें भी एक ऐसे संघ की स्थापना करनी चाहिये, जो भारतवर्ष के आर्यकुमारों को एक संगठन में बाँध दे और उनकी असीम शक्तियों को आर्यसमाज तथा वैदिक-धर्म की सेवा में लगा सके। इसी विचार-अंकुर का परिणाम भारतवर्षीय आर्यकुमार-परिषद् के रूप मे आपके सम्मुख उपस्थित है।

नवयुवक-क्रिश्चियन-सघ इस समय सारे संसार में फैल रहा है। जिस देश में आप जाये यदि आप-अपने को वहाँ अकेला पायें तो आप इस संघ की शरण में जा सकते हैं। हमें बतलाया गया है कि Y. M. C A के यहाँ यात्रियों को रहने-सहने, खाने-पीने तथा अन्य सब प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त हो सकती हैं, जिनके कारण विदेश-यात्रा सुगम और सफल होजाती है। यह 'नवयुवक-क्रिश्चियन-संघ' बाइबिल की साम्प्रदायिक शिक्षा पर जोर नहीं देता। वह केवल चरित्र-बल से अन्य धर्मावलम्बियों को ईसा के सन्देश के निकट लाने की चेष्टा करता है। मानों यह संघ ईसाई-धर्म तथा अन्य धर्मावलम्बियों के बीच में अर्द्ध-विश्राम गृह (Half-way House) का कम देता है।

ठीक इसी प्रकार हम लोगों की उस समय यही आकांक्षा थी कि आर्यकुमार सभाएँ, आर्यसमाज के गहरे दार्शनिक सिद्धान्तों की रट न लगाते हुए, आर्यकुमारों को वेद-प्रतिपादित चरित्र के आदर्शों तथा वैदिक संस्कृति के निकट लाने का यत्न करें तथा आर्यसमाज के लिए सुदृढ़ और सुपरीक्षित भावी कार्यकर्ता पैदा करें। इसीलिए परिषद् के प्रारम्भिक जीवन में हम लोगों का यह उद्योग रहा कि आर्यकुमारों के जीवन में वे विशेषताएँ लायी जाएँ, जो उन्हें अन्य कुमारों से पृथक् कर सकें। कुमार-अवस्था मे नवयुवकों का हृदय विशाल और उदार होता है और साम्प्रदायिक सङ्कीर्णता से रहित होता है। उस समय यदि हम चाहें तो उनमें सार्वभौम सेवा के अकुर बो सकते हैं। सार्वभौम सेवा की प्रवृत्ति से हम अपने जीवन की छाप अपने से भिन्न मत-मतान्तरों के अनुयायियों पर अच्छी तरह लगा सकते हैं, और जिस तेजी से हम उनको अपने निकट ला सकते हैं, वह अन्य किसी भी प्रकार के उपचार से सम्भव नहीं।

सच्चरित्रता में बड़ी शक्ति निहित है। केवल सैद्धान्तिक प्रचार से हम अपने शत्रु पैदा करते हैं। चरित्र के प्रभाव से हम अपने शत्रुओं को मित्र बना लेते हैं और मित्रों को भक्त बना लेते हैं। इसी विचार ने हमें बाधित किया कि हम अपने समय के आर्यकुमारों को अस्पतालों में रोगियों की सेवा के लिए, स्कूलों में कमजोर विद्यार्थियों की शिक्षा-सम्बन्धी सहायता देने के लिए तथा रात्रि-पाठशालाओं द्वारा निरक्षरता निवारण के लिए नियत करें। इस प्रकार की क्रियात्मक सेवा से हम हिन्दू, मुस्लिम तथा ईसाई कुमारों को अपनी ओर खींच लेते थे। उसी समय हमने यह भी अनुभव किया कि यदि हम भारतवर्ष की सारी कुमार-सभाओं को एक सूत्र में बाँधकर आर्य-कुमारों को चरित्र की सुदृढ़ नींव पर खड़ा कर सकें तो इससे आर्यसमाज की अपूर्व सेवा हो सकेगी। कुमारों को शक्तियाँ न्याग्रा-प्रपात (Niagra Falls) के समान असीम और महान् होती हैं। केवल ऐसे इंजीनियर्स की जरूरत है, जो न्याग्रा-प्रपात को विद्युत-शक्ति में बदल सकें और कुमारों की शक्ति को सेवा के रूप में बदल सकें।

अब यहाँ पर यह प्रश्न उपस्थित हो सकता है कि जिन आकाक्षाओंसे प्रेरित होकर इस परिषद् की योजना की गयी थी, वे कहाँ तक पूर्ण हुई हैं। मैं निःसकोच यह कह सकता हूँ कि वे आकाक्षाएँ पूर्ण नहीं हुई। इसके कई कारण हैं—पहला कारण तो यह है कि स्व. डा. केशवदेव जी शास्त्री के पीछे इस सम्मेलन को किसी आर्य-नेता ने हृदय से नहीं अपनाया। प्रत्येक वार्षिक अधिवेशन पर किसी-न-किसी आर्य-नेता को वर्षभर के लिए इस परिषद् की अध्यक्षता सौंपी जाती रही है, परन्तु वार्षिक अभिभाषण के पीछे उन महानुभावों ने आर्यकुमारों के संगठन मे कितनी सहायता दी, इसे आप लोग जानते हैं या वे महानुभाव। हमें जरूरत इस बात की है कि कुमारों के मानसिक झुकाव को एक लक्ष्य की ओर ले जाने का निरन्तर उद्योग किया जाय। आर्यसमाज के बहुत से कार्य-कर्ता अपना यह जीवन-ध्येय ही बनालें कि उन्हें कुमारों में ही काम करना है। ऐसे कार्य-कर्त्ताओं को जीवन-निर्वाह के लिए आर्यसमाज को व्यवस्था करनी चाहिये, और वह इस प्रकार हो सकती है, कि प्रान्तिक सभाएँ तथा सार्वदेशिक सभा अपनी ओर से वार्षिक सहायता भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् को प्रदान किया करें।

आपको यह बात याद रखनी चाहिये कि नवयुवक क्रिश्चियन-संघ(Y M C. A.) में काम करनेवाले सभी कार्यकर्त्ता उच्चकोटि के व्यक्ति हैं। उनमें से केवल एक का नाम और स्थिति आपके सामने पेश करना चाहता हूँ। कुछ दिनपूर्व आपने समाचार-पत्रों में डॉक्टर मौट (Dr. Mott)के भारत-भ्रमण का वृत्तान्त पढ़ा होगा। यह महाशय अमेरिका से नवयुवक क्रिश्चियन-संघ के कार्य-कर्ता के रूप में प्रचारार्थ भारतवर्ष आये थे। इनकी वक्तृत्व शक्ति की धूम भारत के कोने-कोने

में मच गई थी। मुझे स्वयं उनके भाषण सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, और मैं यह कह सकता हूँ कि ४५ मिनिट का ऐसा सुन्दर भाषण मैंने अपने जीवन में कभी नहीं सुना। मौट महाशय को अमेरिकन सरकार ने जापान में अपना दूत नियत करके भेजने के लिए प्रेरणा की थी परन्तु उन्होंने उत्तर दिया, "मुझे राष्ट्र का दूत बनकर दूसरे देशों में जाना अभीष्ट नहीं, मैं अपने जीवन का ध्येय यह बना चुका हूँ कि संसार के नवयुवकों को ईसा के निकट लाऊँ।" क्या आर्य-समाज में इस प्रवृत्तिवाले लोग मौजूद हैं? यदि होते तो आज हमारी यह दशा क्यों होती!!

इसी भारतवर्षीय आर्यकुमार-परिषद् के बारहवें अधिवेशन के सभापति की हैसियत हमारे पूज्य श्रीनारायण स्वामी जी महाराज ने अपने अभिभाषण के अन्तमें एक प्रश्न उठाया था और वह मैं उन्हीं के शब्दों में यहाँ अङ्कित करता हूँ—

"परमहंस रामकृष्ण की मृत्यु के बाद दो सप्ताहके भीतर ही १ दर्जन ग्रेजुएटों ने अपने आपको रामकृष्ण-मिशन के अर्पण कर दिया था, परन्तु ऋषि दयानन्द के शिष्यों में से कितने ग्रेजुएट हैं जिन्होंने वैदिकधर्म के प्रचारार्थ देश-देशान्तरों में जाने के लिए—दयानन्द-मिशन के लिए अपने आपको अर्पण किया है? आर्यकुमारो! यह बात है, जिससे हमें सदैव अपना शिर नीचा करना पड़ता है! *क्या दयानन्द का त्याग अधूरा था, जो हमको त्यागी नहीं बना सका? क्या दयानन्द में कार्य-प्रचार की लगन कम थी?"* पूज्य स्वामी जी के इस प्रश्न पर मैंने बार-बार विचार किया है और अब यही प्रश्न आपके सम्मुख उपस्थित है। पूज्य स्वामीजी इस समय आर्य-समाज के उच्चतम कोटि के नेता हैं। अत. मैं उनके प्रश्न का आदर करता हूँ, परन्तु विनयपूर्वक यह उत्तर देता हूँ कि ऋषि दयानन्द के त्याग और तप में कोई कमी न थी। यदि आजकल के ग्रेजुएट आर्यसमाज के निकट नहीं आते, तो उसका कारण यह है कि आर्यसमाज के नेता आर्यकुमारों के भीतर काम करना कसरे-शान समझते हैं। मैं यह पूछता हूँ कि इस समय आर्यसमाज के कितने कार्यकर्त्ता आर्यकुमारों में काम कर रहे हैं? यदि ऐसा नहीं है, तो हम किस मुँह से कुमारों से यह आशा कर सकते हैं कि वे हमारे बोझ को *हल्का करें और वैदिक संस्कृति के प्रचार मे हमारी* सहायता करें।

मैं तो इस समय आर्यसमाज के भीतर कुमारों के प्रति घोर उदासीनता पाता हूँ। इस सर्व-व्यापी उदासीनता के होते हुए हम आर्य-समाज के लिए भावी कार्यकर्त्ता तैयार नहीं कर सकते।

कोई समय था—आर्यकुमार भिक्षा के लिए जब आर्य-धनिकों के पास पहुँचते थे, तब वे उन कुमारों की माँग को आदर की दृष्टि से देखते थे और उन्हें मुँहमाँगी धनराशि दान देते थे, परन्तु आज कुमारों के प्रति वह उदारता देखने में नहीं आती, जिसके कारण उनका उत्साह भंग होरहा है और वे अपनी उमङ्गों को अपने हृदय में ही दफ़ना रहे हैं।

इस समय आर्यसमाज की ओर नवयुवकों के आकर्षण की कमी का एक दूसरा कारण और भी है, जिसपर आर्य-समाज के नेताओं को विचार करना चाहिये। वह कारण आर्य-समाज का घरेलू-झगड़ा है। यह झगड़ा इतना भयानक-रूप धारण कर चुका है कि इसके होते हुए कुमारों को अपनी तरफ़ खींचना दुस्तर हो रहा है। आर्यसमाज को अपने धार्मिक दृष्टिकोण में एक भारी परिवर्तन करने की जरूरत है। धार्मिक जीवन का प्रचार करनेवाले व्यक्ति छोटी-छोटी बात के ऊपर लड़ते-झगड़ते रहें, यह बात समझ में नहीं आती। लौकिक जीवन के अन्दर जहाँ एक व्यक्ति को अपने लौकिक पदार्थों की वृद्धि का ख्याल रहता है, वहाँ तो झगड़े-रगड़ेकी सम्भावना बनी रहती है। परन्तु धार्मिक-जीवन में जहाँ आत्म-समर्पण ही, ध्येय होता है, वहाँ लड़ाई-झगड़े की सम्भावना नहीं होसकती। आर्य-पुरुषोंने या तो अपने भीतर धार्मिक जीवन धारण नहीं किया या उस मार्ग पर चलने को तैयार ही नहीं हैं, अन्यथा धार्मिक जीवन के साथ लौकिक झगड़ोंकी सम्भावना हो ही नहीं सकती। धर्म हमें यह सिखाता है कि हम दूसरों के काम आयें, दूसरों के लिए सहायक सिद्ध हों, और दूसरों को अपनी सेवा से ऊँचा उठायें, आगे बढ़ायें, न कि उसको अपनी स्वार्थ-सिद्धि का साधन बनायें।

आर्यकुमारो! मुझे जो कुछ तथ्य की बात कहनी थी कह चुका। न मुझे लम्बे भाषण देने की आदत है, और न सुनने की। यह जो कुछ मैंने निवेदन किया है वह उन भाइयों की इस कृपा से जिन्होंने बलात् आसन पर बिठाया है। अन्त में मैं इतना कहना आवश्यक समझता हूँ कि आगामी वर्ष के लिए आप जो भी कार्य-क्रम निश्चित करें, उसमें लम्बे प्रस्तावों को स्थान देने की आवश्यकता नहीं। आप जो कुछ अगले वर्ष में करना चाहते हैं, केवल उसी को प्रस्ताव के रूप मे लायें और उस कार्यक्रम की पूर्ति के लिए एक ऐसी संगठित कार्य-समिति बनायें, जो वर्षभर आपकी सेवा कर सके। यह युग कार्य करनेवालों का युग है। शब्दाडम्बर तथा चर्चा का युग बीत चुका, अब तो निरन्तर कार्य करनेवाले तथा नियन्त्रण में रहने-वाले लोग ही सफलता का मुँह देखते हैं। वैदिक सस्कृति का संदेश आप लोगों को देश-देशान्तरों में ले जाना है। मेरी आपसे यह विनयपूर्वक प्रार्थना है कि आप अपनी भुजाओं को विशाल। अपने हृदयों को उदार, अपने दिमाग़ों को स्वच्छ और अपनी आकांक्षाओं को निर्मल बनाइये। ऐसे ही जीवन रखनेवाले कार्यकर्ताओं के द्वारा वैदिक संस्कृति का सन्देश भूतकाल में फैला है, वर्त-मान और भविष्य में भी इन्हें के द्वारा फैलेगा, चरित्र का कवच पहनकर जीवन के संघर्ष में उतरो और नम्रता के आभूषण से विभूषित होकर अपने कार्यक्षेत्र में जुट जाओ और 'तुलसी' के इस पद का बार-बार जाप करो—

"लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूर।
चींटी शक्कर खात है, कुञ्जर के मुख धूर॥"

संस्कार-विधि का संशोधन

संस्कार-विधि का संशोधन विषयक इतिहास इस प्रकार है :—२१ मार्च १९३२ ई० की धर्मार्य-सभा की बैठक में यह विषय पेश किया गया कि ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों सत्यार्थ प्रकाश आदि में छापेआदि की गलतियों के कारण आर्य विद्वानों को शास्त्रार्थके समय बड़ी दिक्कतें उठानी पड़ती हैं, इसलिए उन्हें ठीक कराने का प्रबन्ध किया जाय। इस पर प्रशंसित सभा ने निश्चय किया कि आर्य विद्वानों से प्रार्थना की जाय कि जिन-जिन स्थलों पर ग्रंथों में कठिनता पड़ी हो या पड़ने की सम्भावना हो उनकी सूची बनाकर भेज देवें और श्री स्वामी वेदानन्दजी, इन उत्तरों के आजाने पर एक सूची बनाकर पेश करें।

(२) २१ अक्टूबर १९३२ को प्रशंसित सभा की अन्तरङ्ग सभा ने, जिसके अधीन, उपर्युक्त कार्य हुआ था, श्री स्वामी वेदानन्द जी की रिपोर्ट पर, निश्चय किया कि संस्कार विधि के सम्बन्ध में निम्न सदस्यों की उपसमिति बनाई जावे—(१) श्री० पं लोकनाथ जी (२) श्री स्वामी वेदानन्द जी (संयोजक) (३) श्री०पं बुद्धदेवजी, और अन्तरङ्ग सभा ने यह भी निश्चय किया कि वही उपसमिति सामान्य प्रकरण के सम्बन्ध में भी विचार करे।

(३) उपसमिति का निश्चय संयोजक महोदय की रिपोर्ट के साथ २८ मार्च १९३४ की धर्मार्य सभा की बैठक में पेश हुआ और निम्न निश्चय हुए —

(१) श्री स्वामी वेदानन्दजी ने, निजी स्थिति में जो प्रस्ताव किया है कि सूत्र आदि के वाक्यों के स्थान पर वेद-मन्त्र कर दिये जावें, उसे यह सभा स्वीकार नहीं करती है।

(२) जो भाषा तथा प्रतीक-सम्बन्धी अशुद्धियाँ हैं, उन्हें दूर कर दिया जावे।

(३) जहाँ पते आदि की अशुद्धियाँ हों वे ठीक करदी जायें।

(४) जिन विद्वानों को, संस्कार विधि के सम्बन्ध में संशोधन करना अभीष्ट हो वे उन स्थलों को प्रस्तावित संशोधनों के साथ लिख कर सभा के कार्यालय में भेज देवें और उसके बाद यहाँ से आधे कागज (Half Margin) पर छपवाकर सभासदों में सम्मति के लिए गश्त कर दिया जावे।

(५) इसके बाद संस्कार-विधि में निम्न संशोधन स्वीकार हुए—

(१) पृष्ठ सं० ४ (संस्कार-विधि, शताब्दी संस्करण) सब संस्कारों के आदिमें, तथा "निम्न लिखित" वाक्यों के बीचमें, ब्रेकट में 'पृष्ठ १९ मे लिखे अनुसार आचमन और' शब्द बढ़ा दिये जायँ

(२) पृष्ठ सं० २१ में—"एक एक नीचे

लिखे मन्त्र से" के आगे ब्रेकिट मे "दूसरे-तीसरे मन्त्र को एक गिनकर", शब्द बढ़ा दिये जायें।

(३) "ओं समिधाग्नि" मन्त्र में से "स्वाहा और इदमग्ने इदन्नमम्, शब्द निकाल दिये जावें।

सशोधन सम्बन्धी इस कार्यवाही के बाद सर्व सम्मति से, धर्मार्य सभा ने संशोधन के इस विषय का अन्तरङ्ग सभा के सुपुर्द कर दिया—

इस धर्मार्य सभा की बैठक मे निम्न विद्वान उपस्थित थे

१ श्री महात्मा नारायणस्वामी जी
२ ,, प० देवेन्द्रनाथ जी शास्त्री
३ ,, ,, धुरेन्द्र जी शास्त्री
४ ,, ,, रामदत्त जी
५ ,, स्वामी ब्रह्मानन्द जी
६ ,, प्रो० सुधाकर जी
७ ,, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी
८ ,, प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति
९ ,, ,, ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु
१० ,, स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी
११ ,, प० बुद्धदेवजी विद्यालङ्कार
१२ ,, आचार्य रामदेवजी
१३ ,, प० लोकनाथ जी शास्त्री
१४ ,, प० द्विजेन्द्रनाथ जी शास्त्री
१५ ,, प० देव शर्माजी 'अभय'

(४) १९३४ ई० की उपयुक्त धर्मार्य सभा में, साफ़ जाहिर है कि उपस्थित विद्वानों ने, सर्व सम्मति से दो सिद्धान्त स्वीकार कर लिये थे—

[१] भाषा तथा पते आदि की अशुद्धि ठीक कर दी जावें, तथा

[२] जो विद्वान, इन पते आदि के सिवा, संस्कार विधि मे अन्य संशोधन चाहते हैं, उन्हें वे करके इस सभा मे भेजें और वे आने पर धर्मार्य सभा के सदस्यों में सम्मति के लिए गश्त किये जायें और स्वयं धर्मार्य सभा ने भाषा और पते का नहीं अपितु संस्कार-विधि मे अङ्कित विधियो का संशोधन-कार्य प्रारम्भ करके दो जगह कुछ बढ़ाया और एक जगह से कुछ शब्द निकालने का निश्चय भी स्वीकार किया और यह सब कार्य उपर्युक्त विद्वानों की सर्व सम्मति ही से, प्रशंसित सभा ने, किया और आगे इस संशोधन कार्य के करने के लिए अन्तरङ्ग सभा को हिदायत भी की थी।

धर्मार्य सभा की यह कार्यवाही, नियमपूर्वक, 'सार्वदेशिक' मे उचित समय पर प्रकाशित हो गई थी।

(५) इसके बाद धर्मार्य सभा के सदस्यों की अवधि समाप्त हो गई और नये सभासदों की सूची आने आदि मे, जैसा हुआ करता है, काफ़ी देर लग गई और सन् १९३४ ई०के बाद पहली बैठक सन् १९३८ ई० मे हुई।

(६) इस बैठक के संगठित होने से पूर्व, विद्वानों से संशोधन के सम्बन्ध में सम्मतियाँ माँगी गई थी। १७ विद्वानों ने सम्मतियाँ दीं थीं जिनका विवरण इस प्रकार है—

[क] संशोधन नहीं होना चाहिये—

[१] प० नरदेव जी शास्त्री ज्वालापुर।

[२] कु० जालिमसिंहजी अजमेर।

[ख] केवल भाषा आदि का संशोधन होना चाहिये—

[१] स्वामी केवलानन्द जी (राजस्थान)

[२] प० भद्रसेन जी अजमेर

(ग) भाषा आदि के सिवाय और भी संशोधन होने चाहिये।

(१) पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, प्रयाग।

(२) स्नातक सत्यव्रत जी, बम्बई।

(३) पं० श्रीधर जी, मध्यप्रान्त

(४) पं० धुरेन्द्र जी शास्त्री राजगुरु

(५) प० देवशर्मा जी आचार्य गुरुकुल कागड़ी।

(६) स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

(८) श्री० पं० चमूपति जी।

(९) श्रीमान व्रजनन्दनसिंह, पटना (विहार)।

(घ) निम्न सज्जनों ने इस प्रकार सम्मिति दी है —

१. पं० देवेन्द्रनाथ शास्त्री गुरुकुल सिकन्दराबाद

भाषा, पाठ तथा सूत्र ग्रन्थों के उद्धरणों का भी सशोधन होना चाहिये, विधियों की केवल अशुद्धि ठीक कर दी जावें।

२. आचार्य रामदेव जी संस्कार-विधि में संशोधन नहीं होना चाहिये, यदि दूसरी संस्कार-विधि छापना चाहें तो उसमें प्रचलित विधि लिखकर अपनी सम्मति फुट-नोट में देकर लिख सकते हैं।

३. पं० जयदेव जी शर्मा मीमांसातीर्थ

संस्कार-विधि को ५-७ विद्वानों को, उचित टिप्पणियों सहित संशोधन करने के लिए देना चाहिये। संस्कार-विधि में लिखी प्रत्येक बात की सप्रमाण प्रतीक फुटनोट में हो। फिर किन्हीं ३ या ५ व्यक्तियों की सम्मति से उन के संशोधनों व फुट नोटों पर विचार होकर उसका प्रकाशन होना चाहिये।

४. पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति

भाषा, मन्त्र, पाठादि विषयक संशोधन होना चाहिये। विधियों में मौलिक परिवर्तन करने का हमें अधिकार नहीं है।

स्पष्ट है कि इन विद्वानों की सम्मतियों का बहुपक्ष सन् १९३४ ई० की धर्मार्य सभा के निश्चयों का समर्थन करता है और संस्कार-विधि के संशोधन का समर्थक है।

(७) इतने कार्य हो जाने के बाद, आगे संस्कार-विधि का संशोधन किस प्रकार किया जावे, यह विषय मई १९३८ ई० को धर्मार्य सभा मे पेश हुआ और उसमे पर्याप्त वादविवाद के बाद श्री० पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने प्रस्ताव किया कि १९३४ ई० की धर्मार्य सभा की नीति के अनुसार कार्य किया जावे। और इसमे श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने एक संशोधन के द्वारा यह चाहा कि विधि मात्र का आवश्यक सशोधनों के साथ, एक पृथक् संस्करण तैयार किया जावे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का असल में संशोधन नहीं, अपितु परिवर्द्धन था।

अर्थात् प० ब्रह्मदत्त जी जो चाहते थे वह सब किया जावे, उसके सिवाय यह काम, पृथक् विधि बनाने का और किया जावे। इस समय इसी परिवर्द्धन के विरुद्ध आन्दोलन है। परन्तु आन्दोलन करनेवाले, इस वक्तव्य के पढने के बाद, अपनी भूल का अनुभव करेंगे। १६३८ की इस बैठक मे केवल ११ विद्वान् उपस्थित थे, जिनमे से सभापति को छोड़कर, परिवर्द्धन के अनुकूल और प्रतिकूल ५-५ विद्वान् सम्मति लेने पर, निकले। अब सभापति की सम्मति पर परिवर्द्धन की स्वीकारी अथवा अस्वीकारी निर्भर थी। सभापति यदि परिवर्द्धन के विरुद्ध सम्मति देता तो उसका फल यह होता कि परिवर्द्धन गिर कर असल प्रस्ताव १६३४ वाला ज्यों-का-त्यों रह जाता और इसके अनुसार (देखो इस वक्तव्य के धारा ३ की उपधारा ४) समस्त संस्कार-विधि के जिस स्थल के लिए भी कोई विद्वान् चाहता संशोधन पेश कर सकता था और यदि संशोधन स्वीकार हो जाता तो इसी प्रचलित संस्कार विधि मे संशोधन होजाता और यह संशोधित संस्कार-विधि ऋषिदयानन्द के नाम ही से प्रचलित रहती। परन्तु परिवर्द्धनके हकमेसभापति के सम्मति देने का फल यह हुआ कि सन् १६३४ ई० वाला उपधारा ४ मे अङ्कित प्रस्ताव रद्द होगया और केवल विधि मात्र बनाने का काम जारी रह गया और यह जो विद्वान् बनाता उसी के नाम से छपती। ऋषि दयानन्द की जिम्मेवारी उसके सम्बन्ध में कुछ न होती। इसलिए सभापति ने उचित रीति से, अधिकाश विद्वानो की सम्मति का मान करते हुए, जिसका ऊपर उल्लेख हो चुका है, और जो संशोधन के हक मे थी, अपनी सम्मति परिवर्द्धन के अनुकूल दी।

जो विद्वान संस्कार-विधि में अङ्कित विधि का, किसी प्रकार से भी, परिवर्तन नहीं चाहते थे उन्हें चाहिये था कि १६३८ की इस बैठक मे यही प्रस्ताव पेश करके १६३४ के प्रस्ताव को रद्द कराते, परन्तु उन्होंने ऐसा न करके उसी के समर्थन और कार्य में लाने का प्रस्ताव किया, जिसका मतलब यह हुआ कि वे स्वयं संस्कार-विधि के विधि आदि का संशोधन चाहते हैं। अब मैं ऐसे विद्वानों को सलाह देता हूँ कि वे ध्यानपूर्वक इस वक्तव्य को पढ़ें और जो आन्दोलन, उन्होंने इस परिवर्द्धन के विरुद्ध, समस्त हालात की जानकारी न होने, से उठा रखा है, उसे बन्द करें और साफ शब्दों मे धर्मार्य सभा मे यह प्रस्ताव भेजें कि वे किसी प्रकार का संशोधन संस्कार-विधि में नहीं चाहते, इसलिए प्रशंसित सभा इससे संबन्धित १६३४ और १६३८ के समस्त प्रस्तावों को रद्द करदे। इस प्रकार का प्रस्ताव आने पर वह धर्मार्य सभा के भावी अधिवेशन मे पेश किया जावेगा, और सभी विद्वानों को एक बार फिर इस विषय पर विचार करने का अवसर मिलेगा।

नारायण स्वामी
प्रधान—धर्म्मार्य्य सभा

ऋषि दयानन्द और वेद भाष्य शैली

लेखक—आचार्य प० चन्द्रकान्त जी , तथा :—श्रीमती सुशीलादेवी विद्यालङ्कृता त्रिवेदी

(अप्रैल के अङ्क के आगे)

प्रथम विशेषता—(१) स्वामी दयानन्दजी के भाष्य मे यौगिक शैली को प्रमुखता दी गई है। यद्यपि सायण, उव्वट, महीधर आदि भाष्यकारों ने भी कहीं-कहीं यौगिक अर्थ करडाले हैं, तथापि इस शैली का इन्होंने इतना निर्वाह नहीं किया है जितना प्राचीन काल के ऋषियों ने और आधुनिक समय में महर्षि दयानन्द ने। इस विषय में महर्षि की शैली पूर्ण रूप में निरुक्तकार यास्क के अनुसार है। इस शैली का ब्राह्मण-ग्रन्थों, उपनिषद्, आरण्यक ग्रन्थ-तथा प्रायः समस्त भाष्यकारों ने आदर दिया है। इसलिए हमें स्वामि-भाष्य को समझने के लिए यौगिक अर्थ पर विशेष मनन करना चाहिये।

वैदिक शब्द यौगिक होते हैं (शब्द प्रकार)

आख्यात या नाम जिनसे कि प्रत्यय किया जाता है, वैयाकरण उसे प्रकृति कहा करते हैं। जो शब्द प्रकृति और प्रत्यय* की उपेक्षा करके केवल समुदाय शक्ति से अपने वाच्य पदार्थ को सूचित करता है उसे रूढ़ कहते हैं। तथा जो

---

*उपयु'क्त विषय की पुष्टि में कारिकावली का निम्न सन्दर्भ देखने योग्य है—

(१)शक्त पद चतुर्विधम्। क्वचिद्यौगिक क्वचिद्योगरूढं क्वचिद्यौगिकरूढम्। तथा हि यत्रावयवार्थ एव बुध्यते तद्यौगिकम्, यथा पाचकादिपदम्। यत्रावयवशक्ति नैर पेक्ष्येण समुदाय शक्ति मात्रेण बुध्यते तद्रूढम्। यथा गोमण्डलादिपदम्। यत्र स्वावयवशक्तिविषये समुदायशक्तिरप्यस्ति तद्योगरूढम्। यथा पङ्कजादिपदम्। तथा हि पङ्कजमवयवशक्त्या पङ्कजनिकर्तृत्व रूपमर्थं बोधयति। समुदायशक्त्या च पद्मत्वेन रूपेंण पद्म बोधयति। यत्रावयवार्थ रूढयर्थयोः स्वातन्त्र्येण बोधस्तद्यौगिकरूढम्। यथोद्भिदादिपदम्। तत्र ह्युद्भेदकर्ता तरुगुल्मादिरपि बुध्यते यागविशेषोऽपीति।

(२) शब्दशक्ति प्रकाशिका में—"योगलभ्यार्थमात्रस्य बोधक नाम यौगिकम्।

समासस्तद्धितानाम्ना कृदन्तश्चेति तद्विधा।

रूढं संकेतवन्नाम सैव सञ्ज्ञेति कीर्त्यते।

तथा च यन्नाम स्वावयववृत्तिलभ्यर्थेन सम स्वार्थस्यान्व पवाधकृत् तन्नाम योगरूढम् यथा पङ्कजकृष्णसर्पाधर्मादि तद्धि स्वान्तर्निविष्टाना पकादिशब्दानां वृत्तिलभ्येन पङ्कजनिकर्त्रादिना सम स्वशब्दस्य पद्मादेरन्वयानुभावभावकम् पङ्कजनिकर्तृ पद्ममित्यनुभवस्य सर्वसिद्धत्वात्।

शब्द यौगिक होते हैं (भाषा-विज्ञान)

(३) वैयाकरण लघुमञ्जूषा में भी इस विषय पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।

भाषा शास्त्रियों का कथन है कि हरएक भाषा

शब्द प्रकृति और प्रत्यय इन दोनों अर्थों की अपेक्षा करता हुआ समुदाय शक्ति से वाच्य अर्थ को बताता है उसे योगरूढ़ कहते हैं। दार्शनिक लोग शब्द का एक स्वभाव बताया करते हैं कि शब्द पहले-पहले अपने वाच्य अर्थको योगवृत्तिसे कहता है फिर धीरे-धीरे जब उसका वह अर्थ स्थिर सा हो जाता है तब दोनों वृत्तियों से योगरूढ़ कहा जाता है फिर चिरकाल के अनन्तर अति प्रख्यात होने पर योगवृत्ति को छोड़ कर केवल रूढ़ वृत्ति से वाच्य अर्थ को सूचित करता है

इस प्रकार जो शब्द अपने वाच्य अर्थ को योगवृत्ति से कहे वह यौगिक, जो योग और रूढ़ दोनों वृत्तियों से कहे वह योगरूढ़ और जो कि योगरूढ़ मध्यम तथा यौगिकवृत्ति उत्तम तथा ज्येष्ठ केवल रूढ़वृत्ति से अपने अर्थ को बताने उसे रूढ़ समझना चाहिए। तीनों वृत्तियों मे रूढ़ वृत्ति अन्तिम और जघन्य है। है अत: यह यौगिकवृत्ति विशेष आदरणीय है।

वैदिक शब्द यौगिक वा योगरूढ़ होते हैं इस बात को यास्क, गार्ग्य आदि अनेक विद्वान् स्वीकार करते हैं। यास्क और शाकटायन तो रूढ़ शब्दों को भी यौगिक मानने मे तुले हुए हैं।

प्रारम्भ में धातु-अवस्था में होती है। प्रारम्भ में भाषाओं के शब्द प्राकृत तथा प्रत्यय के योग से नहीं बनते हैं, वे प्रकृति रूप ही होते है। इन प्रकृतियों में से कुछ दूसरी प्रकृतियों के साथ मिलकर ह्रास होते-होते प्रत्यय बन जाते हैं। फिर इन प्रत्ययों की अलग-अलग कल्पना कर ली जाती है। वास्तव मे शब्द-मात्र ही धातु रूप होते हैं। धातु गुणो का द्योतन करती है क्योंकि प्रत्येक शब्द किन्हीं गुणों के कारण प्रवृत्त होता है। अतः उन गुणो के आधार भूत द्रव्य की धातुरूप मे कल्पना कर ली जाती है। गुणवाचक शब्द में से कुछ शब्द बहुधा विशेषकर पदार्थों के लिए प्रयुक्त होने से योग रूढ़ि हो जाते हैं। कुछ सदैव यौगिक ही बने रहते हैं। परन्तु भाष्य में जब यौगिक अर्थ को द्योतन करनेवाला प्रयोग छूट जाता है तब शब्द सर्वथा रूढ़ि बन जाता है। इस रूढ़ि अवस्था का विहत रूप तब हो जाता है जब कि उसके घटक अवयव चिन्तन से भी समझ में नहीं आते। जैसे अंग्रेज़ी के ज्यॉर्ज (George) आदि शब्द। परन्तु यह बात ठीक है कि शब्द आरम्भ २ मे धातुओ से ही बनता है। धातुओ का अर्थ ही उसका वास्तविक अर्थ होता है। यही यौगिक अर्थ कहाता है यहा पर पाश्चात्य तथा कुछ पौरस्त्य विचारकों का कहना है कि (रूडियागोद् बली-यसी) शब्द का रूढ़ि अर्थ ही आवश्यक होता है। धुनी नदी शब्द जब बने थे तब इनके आधार मे 'नदन' (अथवा) काम कर रहा था परन्तु ये नाम इतने परिचित हो गये हैं कि प्रारम्भिक यौगिक अर्थ का ख्याल किये बिना ही काम चल सकता है। धातु-अर्थ (Root-meaning) पर बल नहीं देना चाहिये। परन्तु हमारा यहाँ पर यह कथन है कि रूढ़ि अर्थ लेने से इन्कार हम भी नही करते, परन्तु रूढ़ि वेद की अपनी ही होनी चाहिये। प्रवाही यौगिक अर्थ को घनीभूत करने के लिए वेद मन्त्रों का ही आश्रय लेना चाहिये। जब तक वह आश्रय पूर्ण रूप से नहीं लिया जाता है, तब तक यौगिक अर्थ करना ही उचित है।

गार्ग्य इतनी दूर तक नहीं जाते वे वैदिक शब्दों को यौगिक मानते हैं। इस विषय पर अधिक प्रकाश के लिये पं० गुरुदत्तजी विद्यार्थी को १'Terminology of the Vedas' का एक उद्धरण हम नोट में देते हैं ताकि पाठक इस विषय का महत्व समझ सकें।

अन्य विद्वानों वा शास्त्रों की सहमति

इस विषय में यास्क आदि आचार्यों के कुछ उद्धरण भी यहाँ प्रस्तुत करते हैं—

(क) यास्क और शाकटायन—तत्र नामान्याख्यातजानीति शाकटायनो नैरुक्त समयश्च न सर्वाणीति गार्ग्यो वैयाकरणानाञ्चैके।" यह लिखते हुए यास्क ने शब्दों को यौगिक स्वीकार किया है। इसके अग्रिम लेख से यौगिक-मत-विरोधी गार्ग्य की सात युक्तियों का 'तदेतन्नोपपद्यते' (नि० १।१२) इस उपष्टंभ से खण्डन करते हुए यौगिक मत को ही पुष्ट करते हैं। उन युक्तियों में यौगिक अर्थ पर किये जाने वाले समस्त आक्षेपों का सुन्दर समाधान हैं।

(ख) महाभाष्यकार पतञ्जलि मुनि-अष्टाध्यायी ३।३।१ "उणादयो बहुलम्" सूत्र पर निम्न कारिकायें आती हैं—

"बाहुलकं प्रकृतेस्तनुदृष्टेः प्रायसमुच्चयनादपि तेषाम्
कार्यसशेष विधेश्च तदुक्तं नैगमरूढिभवं हि सुसाधु
नाम च धातुजमाह निरुक्तेव्याकरणेशकटस्य च तोकम्
यन्न विशेष पदार्थ समुत्थं प्रत्ययत प्रकृतेश्च तदूह्यम्।
संज्ञासु धातुरूपाणि प्रत्ययाश्च ततः परे,
कार्याद्वि द्यादनुबन्ध मेतच्छास्त्रमुणादिषु ॥

इन श्लोकों से निम्न आशय निकलते हैं—

(१) "उणादयो बहुलम्" में बहुल शब्द इस लिये कहा है कि इसके द्वारा

(क) जिन धातुओं से उणादि प्रत्यय नहीं किये गये उनसे भी प्रत्यय हो सकते हैं। जैसे 'दृष्' धातु से उलष् प्रत्यय तो उणादि पठित है लेकिन 'शक्' धातुसे 'उसका विधान नहीं है। "बहुलम्" के द्वारा इस स्थान पर भी 'उलच्' हो जाता है।

(ख) जो प्रत्यय किसी धातु से नहीं कहे गये वे 'बहुल' ग्रहण से हो जाते हैं।

(द) से इष्णुच् प्रत्यय तो होता है पर 'देष्ण' में 'इष्णच्' भी किया गया है।

(ग) सूत्रों से आप्राप्त कार्य भी हो जाते हैं। अप्+वन्=अप्वा यहाँ पर सूत्र के बिना भी ह्रस्व अकार निष्पन्न होता है।

उपयुक्त स्थलों पर यह जिज्ञासा पैदा हो सकती है कि 'बहुल' शब्द के ये परिवर्तन क्यों करें? भाष्यकार का कथन है कि वैदिक और लौकिक शब्द भली भाँति सिद्ध हो सकें। अपर्याप्त उणादिगण को 'बहुलम्' कह कर पूर्ण किया गया है।

(२) भाष्यकार 'नैगम' शब्द को लौकिक से पृथक् करके उन्हें भी यौगिक मानते हैं। अन

१—इनकी पुस्तक में से देखा जा सकता है।

A yogik word is one that has a derivative meaning ...

यदि वैदिक शब्द उणादिगण से न बनें तो बहुल ग्रहण से प्रकृति प्रत्यय लगा कर बना लेने चाहिये।

(३) सब निरुक्तकार और वैयाकरणों में शाकटायन नामों को यौगिक या योगरूढ़ मानते हैं। जहा न पता चले वहा प्रत्यय से धातु की ओर धातु से प्रत्यय की कल्पना करने की इजाजत अनुमति देते हैं।

उपर्युक्त लेख से स्पष्ट है कि शब्द शास्त्र के आचार्य महर्षि पतंजलि भी वैदिक शब्दों को यौगिक ही मानते हैं। और लीजिये—

ब्राह्मण ग्रन्थ

ब्राह्मण ग्रन्थ भी वैदिक शब्दों को यौगिक ही मानते है—

(१) श० प० ब्रा० १४।८।४।१ "तदेतत् त्र्यक्षरं हृदयमिति—'हृ' इत्येक मक्षरम् 'द' इत्येकमक्षरम् यहां पर 'हृदय' को 'हृञ्' हरणे (लहू का ग्रहण करने से) 'दा दाने' (खून को शरीर में देने से), "इण् गतौ" (लहू का संचार करने से) इन धातुओं से बनाते हुए 'हृदय' शब्द की यौगिक व्याख्या की है।

(२) ऐ० ब्रा० ६।२।६ में "अग्निर्वै परिक्षित्—अग्निर्हीयाः प्रजाः परिक्षेति अग्निनिमाः प्रजाः परिक्षियन्ति""...संवत्सरो वै परिक्षित् संवत्सरो हीयाः प्रजा परिक्षेति, संवत्सरं हीमाः प्रजाः परिक्षियन्ति"

इस उदाहरण में 'अग्नि' और 'संवत्सर' को ब्राह्मणकार ने स्पष्ट यौगिक आधार पर (परित. विश्वतः क्षियति निवसति तथा परित. क्षियन्त्येनम्) "परिक्षित्" कहा गया है।

इस प्रकार के अनेक उदाहरण ब्राह्मण ग्रन्थों में मिल सकते हैं (स्वयं वेद की अन्तः साक्षी से भी बताया जा सकता है कि वैदिक शब्द यौगिक ही है)

सायण आदि

(घ) इसके अतिरिक्त आचार्य (१)सायण, (२)महीधर तथा उव्वट आदि भी शब्दों को यौगिक स्वीकार करते हैं। यह बात हमने इनकी भाष्यशैलियोंका विवेचन करते हुए स्पष्ट करदी है।

आधुनिक विद्वान

(ङ) इस विषय में आधुनिक विद्वानों की सहमति प्राप्त की जा सकती है—

(१) योगी अरविन्द घोष की बहुमूल्य सम्मति 'Dayanand the man and his Work'नामक पुस्तक के १६वें पृष्ठ में देखी जा सकती है। समयाभाव से उद्धृत नहीं कर सके हैं। —क्रमशः

---

(१) ऋ० १।१०५।१७ में 'त्रित' को एक ऋषि का नाम बतलाया है परन्तु ऋ० १।१६३।२ में 'त्रितः' का अर्थ 'पृथिव्यादिषु त्रिषु स्थानेषु वर्तमानाः' 'तीव्रतमो वा वायुः' किया गया है।

(२) ऋ० ८।८'१८ में'प्रियमेधा' का अर्थ 'एतत् संज्ञा ऋषयः' किया गया है पर ऋ०१०।७४।१ प्रियमेधाः' का अर्थ किया गया है जो कि सूर्य-रश्मियों का विशेषण है।

हमारी संस्कृति और जीवन की फिलासफी

(श्री० डाक्टर प्रभुदत्त जी शास्त्री आई० ई० एस०)

हम बहुधा सांसारिक सफलताओं तथा धन-वैभव इत्यादि को सभ्यता समझ बैठते हैं। सभ्यता के मूल्य की कसौटी यह नहीं है कि प्रकृति पर हमारा बहुत ज्यादा आधिपत्य है तथा भोग-विलास की हमारे पास प्रचुर सामग्री है। आज भले ही संसार इस बात की शेखी बघारे कि हमने विज्ञान के द्वारा प्रकृति पर बहुत ज्यादा विजय प्राप्त की हुई है और हम सभ्य और उन्नत हैं। परन्तु यह सब संस्कृति नहीं है। बाह्य संसार की शान्ति भले ही हमारी सभ्यता की सूचक हो परन्तु इस सभ्यता को संस्कृति नहीं कह सकते हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से हम बहुत अवनत हैं। हमारे आध्यात्मिक जीवन के विकास से ही हमारी संस्कृति का परिचय दिया जा सकता है। आज की तथाकथित सभ्यता मनुष्य के केवल बाह्य जीवन से सम्बन्ध रखती है।

आज हम अपने सिद्धान्तों की बहुत डींग मारना सीख गये हैं। यह हानिकारक है। यदि हम अपने सामने उज्ज्वल भविष्य लाना चाहते हैं तो, हमें अपने सिद्धान्तों को क्रिया में लाकर उन्हें जीवित बनाना होगा।

हमारी संस्कृति की स्पिट क्या है? क्या यह सम्भव नहीं है कि इसकी स्पिट को हम पुनर्जीवित करके संसार की संस्कृति और शान्ति में अधिक से अधिक योग देवें। अवश्य ही हम ऐसा कर सकते हैं परन्तु हमें जीवन की अपनी फिलासफी को नहीं भुलाना होगा। हमारी संस्कृति ने आत्मिक जीवन की माँगों को सदैव सबसे अगली पंक्ति में स्थान दिया है। आत्मिक जीवन भीतर से हमारा निर्माण करता है और हमारे तमाम जीवन को बदल देता है। इस परिवर्तन के द्वारा हम भेद-भावों और लड़ाई-कलहों से ऊपर उठकर अपनी हस्ती की गहराई को अनुभव कर लेते हैं। हम में से प्रत्येक मे दिव्य शक्तियाँ हैं। हमें केवल उन्हें अनुभव करना और अपने जीवन में चरितार्थ करना होता है। हमारी संस्कृति का यही वास्तविक कार्य है।

हम अपने सिद्धान्तों के सम्बन्ध मे कितनी ही लम्बी-चौड़ी बातें कर सकते हैं, परन्तु जब तक हम उन्हें क्रिया में नहीं लायेंगे और अपने व्यवहार में अपने आत्मिक जीवन की गहराई को प्रकट नहीं करेंगे तबतक उन्नति सम्भव नहीं। वेदों, उपनिषदों तथा अन्यान्य आर्षग्रन्थों में आत्मिक उन्नति और जीवन की फिलासफी के बहुमूल्य कोष भरे हुए हैं। हममें से प्रत्येक धार्मिक सिद्धान्तों का विद्यार्थी बन सकता है। उस पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया जा सकता है, परन्तु उन सिद्धान्तों के शिक्षण का कार्य उन्हीं

को मिलना चाहिये जो गम्भीर हों तथा जो स्वयं उन सिद्धान्तों को क्रिया में लाते हों। जब तक यह नहीं होता है तब तक आशा नहीं कि शान्ति की रक्षा के सम्बन्ध में राजनीति के पंडित फिलास-फरों और विद्वानों से परामर्श करेंगे। आज संसार शान्ति के लिए तरस रहा है, परन्तु जब तक पाखंड, सन्देह, नैतिक माहिर्रों, घृणा, ईर्ष्या और स्वार्थपरता से स्वतन्त्रता जकडी हुई है, तब तक शान्ति स्थापित नहीं हो सकती है। आत्मिक-जीवन सत्य, ईमानदारी, सचाई और सद्भाव का तकाज़ा करता है। इन बातों की पूर्ति हो रही है क्या यह कहा जा सकता है?

हम सबको स्वाध्याय और आत्म-सयम को विकसित करके निष्काम लोक-सेवा के महान् आदर्श की पूर्ति का यत्न करना चाहिये और अपने वचनों और कर्मों मे सादृश्य रखना चाहिये। यही उन्नति का मार्ग है और यही शान्ति का मार्ग है।

सन्थाल परगने में प्रचार तथा पहाड़ियों की समस्या

[श्री स्वामी शिवानन्द जी तीर्थ, मुंगेर]

संथाल परगना मे विशेषत: दो प्रकार की जंगली जातियें पाई जाती हैं। एक पहाड़िया और दूसरी सन्थाल। सन्थाल लोग पहाड़ की तराई में रहते हैं और पहाड़िया लोग पहाड़ पर। पहाड़िया लोग पहाड़ पर ही खेती-बारी आदि सब कुछ करते हैं। पहाड़पर आम, कटहल, केला, शरीफा, अमरूद, पपीता, बांस, सावे, ककोरी आदि बहुतायत से पाये जाते हैं।

पहाड़ियों में दो भेद हैं। एक सौर्य पहाड़िया, और दूसरा माल पहाड़िया। अत्रिपुत्र सोम (चन्द्र) से सम्बन्ध होने के कारण जिससे महाराज युधिष्ठिरने जन्म लिया वे अपने को माल पहाड़िया कहते हैं। इससे ज्ञात होता है कि कालान्तर मे सूर्य वंश और चन्द्र वश के क्षत्रिय लोग इधर पहाड़ों में वास करते थे। पुरुष लोग शिर पर सिक्खों की तरह केश रखते हैं। इन केशों का वे लोग शिर के मध्य में खोपा बना लेते हैं। कुछ लोग शिर पर चोटी रखते है, थोड़ेसे लोग बंगाली हिन्दुओं की तरह बिना शिखा के हैं। ये लोग धोती, कुर्ता, मुरेठा, पगड़ी आदि धारण करते हैं। पहाड़िया स्त्रिया केवल दो वस्त्र एक साड़ी और दूसरा उत्तरीय (उपरना) रखती हैं। कोई २ चोली कुर्त्ती भी पहनती हैं। मुसलमानी शासन काल का चिन्ह कुछ स्त्रियों के कानों में बाली (कर्णभूषण भेद) भी दिखलाई देती है। पहाड़िया लोग सन्थालों से अधिक हिन्दी समझते हैं और खूब बोलते हैं। इनकी भी एक भाषा है जो सन्थाली से भिन्न है, जिसको पहाड़िया कहा जाता है, इसमे संस्कृत के शब्द बहुत पाये जाते हैं। ये लोग सन्थाली भी बोल तथा समझ लेते हैं। वर्ष के अन्त में भैंसे के द्वारा ये लोग काली की पूजा और कहीं चर्ख तथा ध्वजा की भी पूजा करते हैं। चर्ख की पूजा में आदमी को बास पर लटका कर नचाते हैं। बाकी बातें सन्थालों के समान ही हैं।

सन्थालों में वासुकि, तक्षक वेशरा इन्सदा, किष्कु आदि बारह गोत्र भेद हैं। इसी तरह की एक महुली जाति भी है, जो बास से सूप दौरी आदि बना कर जीविका करती है। इन सबो के गोत्र भी सन्थालों से बिलकुल मिलते हैं। ये सभी लोग गोत्र बचाकर विवाह करते हैं और मुर्दों को जलाते हैं। पहाड़ियामें से कोई २ गाड़ भी देते हैं। इसके अलावा और भी धागर, खरवार कोड़ा कोल आदि जातिया बहुत ही अल्प संख्या में हैं। सबों की अपेक्षा पहाड़िया लोग बहुत कम ईसाई हुए हैं।

कुछ को छोड़कर प्रायः ये लोग गरीब बहुत हैं। इन लोगों में शराब का व्यसन अधिक पाया

जाता है। जगह २ शराब की भट्टियें खुली हुई हैं जिनमे ये लोग अपने पैसे को पानीकी तरह बहाकर और भी गरीबी बुला रहे हैं। बिहार सरकार के स्वास्थ्य तथा आबकारी विभाग के मन्त्री श्रीजगलाल चौधरीजी को इधर ध्यान देना चाहिए। इस वष के अन्दर, नहीं तो आगामा १६३६ ई० मे तो अवश्य ही इस सथाल परगना जिलामे शराब बन्दी कानून लागू हो जाना चाहिए और जहाँ कहीं भी सन्थाल आदि जगली जातियों की आबादी मु गेर, भागलपुर, पुर्णिया आदिमे है शराब सर्वथा बहुत शीघ्रही बन्द होजानी चाहिये। जिसके पीछे ये लोग और तबाह न हों। एक तो ये लोग यों ही गरीब हैं इस पर शराब की भट्टियो ने इनको और भी पायमाल कर दिया है।

पहाड़िया लोगों को पढने की चाह बहुत किन्तु पहाड पर कहीं कोई स्कूल नहीं है, जो कुछ भी बोर्ड तथा ईसाई मिशन का स्कूल है, वह पहाड के नीचे और बहुत दूर है, जहाँ पर उनके बालकों का जाना ही मु श्कल है। शिक्षा मन्त्री तथा शिक्षा विभाग के अधिकारियों को इधर विशेष ध्यान देना चाहिये। सुनने में आया है कि इसके लिये सरकार से रुपये मिले हैं किन्तु कुछ परिणाम देखने में नहीं आता है। ये रुपये उन स्कूलों खर्च होते हैं, जिनमें पहाड़िया लोगों को कुछ लाभ नहीं होता। सरकारने इस ज़िले को दामिनीइकोह (अबदी) बनाकर अन्य लोगों का प्रवेश रोककर ईसाई मिशनरियों को छूट देकर इन लोगोंको सब सुधारों से वचित कर रखा था तथा रखा है। इधर कॉग्रेसी मन्त्रिमडल हो जाने से कुछ सुविधा मिल गई है, अन्यथा पहले अबदी इलाके में पैर रखना ही कठिन था, तो भी अभी बहुत सुधार की जरूरत है। अभी भी यहा अविद्या देवी तथा अत्याचार और अनाचार का ही साम्राज्य है जिसके दूर करने के लिये वर्तमान सरकार को बहुत शीघ्र ही प्रयास करना चाहिये नहीं तो दीपक तले अन्धेरा वाली लोकोक्ति चरितार्थ होगी।

इस जिले मे ईसाई मिशनरियों का जाल सा बिछा हुआ है। इस समय चार मिशनरियों का काम ज़ोरों पर है, सीएम्स और दीप्तमिशन, अमेरिकन और जर्मनमिशन। इनमे से सीएम्स और दीप्तिमिशन पोटेस्टेंटों का और शेष रोमन कैथोलिक ईसाइयों का है। इनमें सबसे बड़ा सीएम्स है और इस पर वृ० सरकार की कृपा दृष्टि भी है। इसका मुख्य केन्द्र बडहरवा धर्मपुर में है, जहा पर १६० सथाल बालिकाओं को भोजनादि के साथ एम० बी० तक शिक्षा दीक्षा दी जाती है। इसके अतिरिक्त तालझरी, पथरा, हिरण्यपूर, भगेया, बरियो बढैत आदि स्थानों में भी केन्द्र हैं। इन सारे स्थानों मे स्कूल दवाखाना आश्रम और गिर्जा घर बने हुए हैं। पथरा मे जगला कन्याओंका अपर तक तथा बालकों का यहा और तालझरी में एस० ई० तक पढने का प्रबन्ध है। अन्य स्थानोंमें छोटे २ स्कूल हैं। दीप्ति

विवाह में माता की छः पीढ़ियाँ क्यों छोड़ी जाती हैं ?

[लेखक—स्व० श्री मा० आत्माराम जी अमृतसरी]

मनु महाराज का कथन है कि 'जो लड़की माता की छः पीढ़ी और पिता के गोत्र की न हों वही द्विजों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) के लिये विवाह करने मे श्रेष्ठ है।

अनेक मनुष्य शङ्का करते हैं कि जिस प्रकार पिता का गोत्र छोड़ा जाता है उसी प्रकार माता का कुल छोड़ देना चाहिये। केवल छः पीढ़ी छोड़ने की आज्ञा मनु ने क्यों दी ? यदि माता की छः पीढ़ी छोड़नी हैं तो पिता की भी छः पीढ़ी ही छोड़नी चाहिए थीं।

इस तर्क के उत्तर में हम कहेंगे कि यदि पिता के गोत्र की नाईं माता का कुल छोड़ा जाय तो सब से उत्तम होगा, परन्तु माता की छः पीढ़ियों को छोड़ देने से वे दोष जो रक्त में आते हैं दूर हो जाते हैं, इसलिए न्यून-से-न्यून छः पीढ़ियाँ छोड़ देना ही पर्याप्त है। पिता का गोत्र सर्वथा छोड़ना आवश्यक है, क्योंकि माता-पिता के रक्त का एक सा प्रभाव नहीं होता है जो कि वीर्य की प्रधानता है। इसीलिए पिता के गोत्र को सर्वथा छोड़ने की मनु ने शिक्षा दी है। बड़े-बड़े डाक्टरों की सम्मति है कि माता की प्रकृति रक्षा करने की है और पिता की प्रकृति मुख्य प्रभाव पहुँचाती हुई योग्यता तक मे परिवर्त्तन करदेती है। डाक्टरी की यह सम्मति मनु जी की शिक्षा का सम्यकतय समर्थन करती है।

मिशन का मिर्जा चौकी और साहबगंज में अनाथ विधवाश्रम और दवाखाना है। एक छोटा सा आश्रम पहाड़िया ग्राम पचरुखी में है जहा एक पादरी रह कर पहाड़िया में घूम घूम कर प्रचार करता है। रोमन कैथोलिकों का गोकुला में एक वृहद आश्रम है जहा २५० संथाल बालक बालिकाओं को भोजन वस्त्रादि के साथ एम० ई० तक पढ़ने पढ़ाने का प्रबन्ध है यहां इसकी जमीन्दारी भी है, इसके अलावे तोरोई दुमका, गुआजोड़ी आदि स्थानों में भी इसके केन्द्र हैं जहां पर भी स्कूल, दवाखाना, आश्रम, गिर्जाघर बने हुए हैं। ये सारे के सारे जंगली हिन्दुओं को मटियामेट करने के लिये दिन रात संलग्न हैं। इस जिले में बड़हरवा, साहबगंज और पथरगामा आर्य समाज स्थापित है जिसके द्वारा उन जगली जातियों में सुधार कार्य हो रहा है। कुछ दिनों से इन लोगों में सुधार सम्बन्धी कार्य के लिये आर्य उपप्रतिनिधि सभा भागलपुर कमिश्नरी का सगठन हुआ है ? जिसमें सभी स्थानों के संथाल सेवाश्रम सन्थाल सुधार समिति और आर्य समाज सम्मिलित है। हिन्दू मिशन के द्वारा भी इन जंगली जातियों में काम होता है।

रियासत हैदराबाद की धारासभा में

हिज एक्सिलेन्सी रा० आ० नवाब हैदरनवाजजंग
प्रधान शासन सभा रियासत हैद्राबाद का
भाषण

धारा सभा के सज्जनो !

गतवर्ष मैंने यह आशा दिलाई थी कि "भविष्य में ऐसे बहुत से अवसर आयेंगे, जब कि मैं आप के साथ विचार परिवर्तन तथा वादविवाद मे भाग ले सकूंगा", मुझे अब इस बात की खुशी है कि मै आज आपके साथ हूँ और आप का स्वागत कर रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि आपका यह अधिवेशन बहुत सफल सिद्ध होगा।

प्रस्तुत अधिवेशन मे आपको कई कानून के मसवदों पर विचारना होगा, जिन मे से कुछ गैर सरकारी सभासदों ने पेश किये हैं। दूसरे सरकार द्वारा पेश किये गये हैं। उन में से तीन को हिज एक्जालटेड हाइनेस को अनुमति प्राप्त हो गई है। और अब वे रेगुलेशन (Regulation) के रूप में स्वीकृति प्राप्त कर चुके हैं। जैसा कि मैंने गतवर्ष वायदा किया था यह तीनों रेगुलेशन जो उनकी शीघ्र आवश्यकता के कारण घोषित कर दिये गये हैं वे निश्चित काल तक प्रचलित रहेंगे और इस काल के पहले तीन महीनो में ही वे *आप के विचारार्थ पेश कर दिये गये हैं।*

यह तीनों रेगुलेशन विस्तारपूर्वक किये गये अनुसंधान का परिणाम हैं।

पिछली बार जब हम यहाँ एकत्रित हुए थे उस समय से हैदराबाद शहर तथा रियासत के जिलों में साम्प्रदायिक दंगे हुए हैं, जो उस बाढ़ की केवल एक लहर थे, जिस मे कुछ प्रात भी कम प्रभावित न हुए उनके पीछे जो स्पिरिट काम कर रही हैं वह हमारी परम्परागत रूढियों के के लिये एक अनोखी चीज है और यद्यपि मैं उन कुछ व्यक्तियों को जो इस रियासत के रहने वाले हैं, और जिन मे इस विष का संचार हो गया है। उन्हें इस को फैलाने की जुम्मेवारी से बिल्कुल अलग नहीं समझ सकता। मुझे इस में सदेह नहीं कि यह विष न तो पूर्णतया और अधिकतया स्थानीय जनता का उत्पन्न किया हुआ है निःसंदेह यह उन की उस भ्रातिमूलक धारणा पर निरधारित है कि अपने सम्प्रदाय की सेवा का यही सर्वोत्तम उपाय है। साथ ही वे धर्म तथा राजनीति में सम्प्रदायिकता का समावेश करके वह समस्याओं को और भी पेचीदा कर रहे हैं और उन्नति के मार्ग में रोड़े अटका रहे हैं।

आप मेरी इस बात से सहमत होंगे कि साम्प्रदायिकता तथा धर्म, साम्प्रदायिकता तथा राजनीति में भली प्रकार भेद करने का समय आ गया है। इस रियासत के सब धर्मों की व्यावहारिक स्वतन्त्रता को बनी रखने के लिए और उसकी जनता की वैधानिक उन्नति के हितार्थ इस प्रकार का भेद करना आवश्यक है यद्यपि वह धार्मिक स्वातन्त्र्य जिसका एक के पश्चात् दूसरे आसफिया शासकों ने अपनी राजघोषणाओं (फरमान) द्वारा विश्वास दिलाया है अवश्य ही उसी प्रकार वास्तविक तथा जीवित अवस्था में रहेगा जैसा कि सदा रहा है। कोई भी सरकार इन लोगों की कार्यवाहियों से तटस्थ न रह सकती जिन्होंने जानबूझ कर धर्म का प्रचार तथा उसके आचरण को साम्प्रदायिक विषारी विचारों को फैलाने का केवल एक बहाना बना लिया है। अत. धार्मिक स्वतन्त्रताके अपसरण (हरण) का यदि कोई अवसर उत्पन्न हो तो उस का उत्तरदायित्व पूर्णतया उन्हीं पर होगा, जो उसका दुरुपयोग करने के दोषी हैं, और जब तक वे यह न दिखला दें कि प्रचार तथा आचरण दोनों मे वे उन अनेक अन्य लोगों की तरह जो शांतप्रिय रीति से प्रचार तथा आचरण करते हैं और उनकी दृष्टि में भी केवल धार्मिक उद्देश हैं, तब तक सरकार अवश्य ही ऐसे अंतिम उपायों का अवलम्बन करने पर बाध्य होगी जो वह सार्वजनिक हितार्थ आवश्यक समझती है।

इसी प्रकार, यद्यपि निज़ाम सरकार वैधानिक उन्नति के विरुद्ध नहीं है, अपितु गतवर्ष उसने सुधारणा कमेटी की घोषणा से अपने आप को ऐसी उन्नति का पाबन्द कर लिया है और सिविल स्वातंत्र्य जो नि.संदेह किसी ऐसी उन्नति में है, इस पर भी निज़ाम सरकार ऐसी उन्नति के विरुद्ध है जो साम्प्रदायिकता के नियमों पर की जाय। वह किसी ऐसी उन्नति का उत्साह बढ़ाना अपना कर्तव्य नहीं समझती जिस का यह मन्शा हो कि विशेष अधिकार किसी एक सम्प्रदाय वा वर्ग ही को समर्पित कर दिये जाय और न वह सिविल स्वतन्त्रता को दो तरफा दस्तदराज़ियों तथा दोषारोपण की अमर्यादित स्वतन्त्रता के समान होने की आज्ञा दे सकती है। यह बात स्पष्ट है कि हम 'मुसलिम स्वतन्त्रता' और 'हिंदू स्वतन्त्रता' वा 'हिन्दू वैधानिक उन्नति' 'मुसलिम वैधानिक उन्नति' के सम्बन्ध में विचार नहीं कर सकते। यह कि विचार की प्रवृत्ति उसी ओर है इस बात की सत्यता इससे प्रकट होती है कि उन्नति वा स्वतन्त्रता के लिये आवाज उठाने वालों में उन्हीं लोगों की आवाज सब से ऊँची जान पड़ती है जिन में से अनेकों ने साम्प्रदायिक वैमनस्य के बढ़ाने में अनेक बार भाग लिया है और अब भी ले रहे हैं और जो वास्तव मे ऐसे संघ तथा आन्दोलनों से प्रत्यक्ष सम्बन्ध रखते है जो निःसंदेह साम्प्रदायिक है। अपने देश बाधवों से घृणा की नींव पर राष्ट्रीयता का निर्माण तो क्या बल्कि कोई इस का विचार भी नहीं कर सकता और न दूसरों के अधिकारों

का नाश कर के स्वतन्त्रता की स्थापना का प्रयत्न कर सकता है। इन व्यक्तियों का ऐसे आन्दोलन में शरीक होना, जो उनके व्यवहार से बिलकुल विपरीत हैं, उस आन्दोलन को केवल बदनाम कर देगा, जिस का ऊपरीरूप से समर्थन करते हैं। और सिद्धान्त के अनुसार कि जैसी संगत वैसा आदमी इस संमिश्रित बिरादरी की नीयतों पर संदेह किया जाना आवश्यक है जो लोग सारे राष्ट्र की वैधानिक उन्नति और स्वतन्त्रता के वास्तविक समर्थक हैं उन का सर्व प्रथम कर्तव्य यह है कि वे पहले अपने गौरव को साफ करें और एक ऐसे राष्ट्र के सच्चे नेता बनें जो आपस में स्नेह रखता है और उसी प्रकार एक सम्मिलित राष्ट्रीय प्लेटफार्म को नींव डालें, उनका यह व्यवहार आपसे आप सरकार के लिये एक ऐसा मार्ग बना देगा कि वह उन की मांगा पर पूर्ण विचार करेगी ऐसी हालत में वह वास्तव में राष्ट्रीय मांगें होंगी जिन से कोई सम्प्रदाय पृथक् न होगा और जो असाम्प्रदायिक होने के कारण अत्यन्त आदर के पात्र होंगे, अन्यथा साम्प्रदायिकता तथा राजनीति में वास्तविक भेद न करने से किसी भी प्रकार की उन्नति के अवसर पर अवश्य ही जोखम में पड़ जायगे।

वर्तमान अधिकार पद पर मेरे नियुक्त होने के कुछ ही दिनों के पश्चात् एक सम्प्रदाय के कुछ लोग सूचित की हुई कुछ शिकायतों के बारे में मुझ से मिलने के लिए आये थे। शिकायतें अधिकतया धर्म से संबंधित न थीं। इन में से शायद ही कोई ऐसी शिकायतें थीं जिन को सब सम्प्रदायों के उत्तरदायी व्यक्ति सम्मिलित रूप से आपसी समझौते के आधार पर पेश न कर सकते थे। मैं ने उनसे कहा कि क्या ही अच्छा होता यदि वे अपने साथ कुछ ऐसे दोस्तों को भी लाते जिनका सम्बन्ध दूसरे विविध सम्प्रदायों से है। और उन शिकायतों को साम्प्रदायिक रूप के बदले किसी और रूप में पेश करते। मैं ने दूसरे सम्प्रदाय के उन सज्जनों से भी अपना यही अभिप्राय बतलाया, जो उसी तरह मुझ से मिलने के लिए आए थे और आज मैं अपनी उस राय पर पहले से अधिक दृढ़ हूँ। उस समय मैंने नौकरियों तथा नियुक्ति के सम्बन्ध में वही उदाहरण दिया था जैसा कि मैं आज दे रहा हूँ। यदि कोई यह समझे कि नियुक्ति का आधार किसी और चीज पर नहीं बल्कि केवल साम्प्रदायिक परिमाण पर हो हो और इस के अनुसार कार्य करने से सकारी नौकरी तथा राजव्यवस्था के प्रमाण में उन्नति हो सकती है उसके इस प्रकार के विचार को मैं भ्रममूलक समझता हूँ। इस सिद्धान्तानुसार कार्य करने से विविध संम्प्रदाय तथा वर्गों में अर्थविभाजन तथा इसी प्रकार अन्य समस्याओं पर वादविवाद करना अनिवार्य हो जायगा और इसके जवाब में दूसरी ओर से भी नौकरियों को एक ठेका समझकर उनकी प्राप्ति के लिये अत्यन्त कठोर मार्गे होगी। यदि विविध संप्रदायों तथा उपसंप्रदायों के परिमाण का विचार सरकारी नौकरियों पर भरती करने में किया जाय तो कार्य की खराबी तथा रिश्वत

खाने से राजव्यवस्था का दिवाला निकल जायगा। उत्तम रचनात्मक पद्धति जिसका सब लोग स्वागत करेंगे यह हो सकती है कि नौकरियों पर भरती करने के नियमों की सुधारणा तथा नियुक्ति के वैयक्तिक सम्बन्धों के बदले संस्थाओं की स्थापना की इच्छा की जाय। इस पद्धति से जनता तथा राजव्यवस्था दोनों के हितों की उत्तम प्रकार से पूर्ति होगी और इन से भरती, नौकरी तथा चुनाव में अनुचित पक्षपात, संबंधियों से रियायत नहीं बल्कि केवल कार्य करने की योग्यता, निपुणता के सिवाय अन्य किसी भी बात को महत्व देना असंभव हो जायगा। सरकार भी इसी पद्धति के अनुसार कार्य कर रही है और उस समस्या के अनुसंधान(खोज)का कार्य एक कमेटी कर रही है। मैं ने इसका जिक्र इसलिये केवल उदाहरणार्थ किया है जिस से यह बात साफ कर दूं कि ऐसी शिकायतों पर विचारते समय जो अधिकारों में धर्म सम्बन्धित न हो संघठित उद्देशों के लिये विविध हितोंमें समझौता न केवल ऐसी शिकायतों को पेश करने का वास्तविक मार्ग होगा बल्कि इससे किसी उन्नति पथ के भी निकल आने की सम्भावना होगी। इस प्रकार सरकार को भी शिकायतें दूर करने के उपाय सोचने में कोई हिचकचाहट वा विलम्ब न होगा, क्योंकि उसकी भी वही अभिलाषा तथा कामना है जो आपस के समझौते पर निर्धारित सब सम्प्रदायों के किसी सगठित संस्था की अभिलाषा तथा कामना हो सकती है।

—※—

निज़ाम स्टेट में नवीन काले कानून

—❀—❀—

निज़ाम-सरकार ने एक नवीन क़ानून "दस्तूरुल अमल तहफ्फजे अमन आमा "सार्वजनिक शान्तता रक्षण कानून" का मसविदा तैयार किया है, जिसके तीन भाग है—पहले भाग द्वारा बाहर के लोगो का स्टेट मे दाखिला और उनके कार्य-व्यवहार तथा उनको स्टेट से बाहर कर देने के सुप्रबन्ध के लिए निजाम-सरकार के ओहदेदारों को एख्त्यारात दिये गये हैं, दूसरा भाग रियासत मे कार्य कर रही संस्थाओ को कानून विरुद्ध ठहराने से सम्बन्ध रखता है, तीसरा भाग जुर्म और उन की सजाओं के विषय मे है।

प्रथम भाग—बाहर के लोगों के लिए इस प्रकार है यह कि निजाम-सरकार नापसंदीदा अजनबी को स्टेटसे निकल जाने की आज्ञा देगी। यदि वह निश्चित समय के अन्दर स्टेट से बाहर न चला जाय तो बिना हुक्म गिरफ्तार कर के स्टेटके बाहर मुन्तकिल कर दिया जाएगा। इस पर भी यदि वह वापिस आये तो नाज़िम फौजदारी के इजलास पर पेश किया जायगा जो उसको सरकारी आज्ञा की प्रतीक्षा से मजलिस में रखे जाने का हुक्म देगा, और सरकार ऐसी अवस्था मे उसकी मुन्तकिली की कार्यवाही करेगी या मुकदमा चलाने की आज्ञा देगी। दूसरी अवस्था में एक साल कैद श्रमसहित या जुर्माना या दोनों सजाएं दी जायगी। दूसरा उत्तरदायित्व स्टेट की प्रजा पर है यह कि वह किसी भी नापसन्दीदा अजनबी को जब तक तालुकदार बलदा से लिखी आज्ञा प्राप्त न कर ले अपने स्वत्व या जायदाद की रक्षा के लिये नौकर नहीं रख सकती और न ही उन्हे शस्त्र दे सकती है। यदि इस नियम के विरुद्ध कार्य किया गया तो उसका दण्ड सश्रम कैद जिसकी अवधि छः मास से अधिक न होगी या उसको जुर्माना का दण्ड दिया जायगा, जिस का अन्तिम परिणाम एक सहस्र रुपया से अधिक न होगा या दोनों सजाए दी जायगीं। स्थानीय हाकिम को नापसंदीद। अजनबी की तलाशी के लिए किसी मकान या इमारत मे तलाशी का हुक्म देने का अधिकार होगा। होटलो वा सरायो के मालिको या सरक्षकों पर यह पाबन्दी लगाई गई है कि वे एक नियमानुसार रजिस्टर नमूना की रीति से रखे जिसमे ठहरनेवालों के नाम दर्ज किये जायें। खिलाफवर्जी की अवस्था मे सश्रम कैद जिसकी अवधि तीन मास होगी या जुर्माना की जिसका परिमाण २५० रुपये होगा या दोनों सजाएँ दी जायँगी। किसी नापसन्दीदा अजनबी को आश्रय देने का भी यही दण्ड है।

दूसरा भाग—जो संस्थाओं को कानून-विरुद्ध ठहराने के विषय मे है इस प्रकार है—

निज़ाम-सरकार ऐलान द्वारा किसी भी संस्था को जो उसकी सम्मति में क़ानूनी नियमों के

खिलाफ होगी या उसके अस्तित्व से राज्य के विभिन्न सम्प्रदायों में पारस्परिक विरोध बढ़ने का सरकार को भय हो खिलाफ कानून करार देगी। ऐसी कानून विरुद्ध संस्था का नाम बदलने से कोई प्रभाव न पड़ेगा। किसी ऐसी संस्था से जो खिलाफ कानून सिद्ध की गई हो सम्बन्ध रखने की सजा छ मास कैद सश्रम या जुर्माना या दोनों सजाएँ होंगी। किसी व्यक्ति को जो ऐसी कानून विरुद्ध संस्था का प्रबन्ध करे या उसमे सहायता दे या उसके कार्यकर्त्ताओं का जलसा करने में सहायता दे सश्रम कैद का दण्ड दिया जायगा। जिसकी अवधि तीन वर्ष तक हो सकेगी या जुर्माने की या दोनों सजाएँ दी जायेंगी। निज़ाम सरकार को अधिकार होगा कि उन स्थानों के लिए जो खिलाफ क़ानून संस्था से सम्बन्धित हों, ऐलान करे और उनपर क़ब्ज़ा कर ले. और जो व्यक्ति वहाँ पाया जाये उसे उस स्थान से निकाल दे। और यह कार्य अज-लाह में अव्वल तालुक़दार और बलदा मे कोत-वाल बलदा या कोई ऐसा ओहदेदार जिसको तहरीर-द्वारा तालुक़दार या कोतवाल बलदा नियत करें, करेगा। उस स्थान में कोई चीज जो खिलाफ क़ानून संस्था से सम्बन्धित या उसके प्रयोग के लिए होगी ज़ब्त कर ली जायेगी। ऐलान हुए स्थान पर बिना आज्ञा यदि कोई ठहरे, तो वह "मदाखलत बेजा" का मुर्तकिब समझा जायगा। इस नियम के अनुसार खिलाफ क़ानून संस्था के स्थान को भी ज़ब्त करने का अधिकार सरकार को है। सरकार के इस अमल के विरुद्ध कोई अदालती कार्यवाही न होगी।

इस क़ानून का तीसरा भाग कुछ अपराध और उन की सज़ाओं से सम्बन्ध रखता है। सैनिक भर्ती का निषेध करना सरकारी मुलाज़मों को भगाना प्रेत-यात्रा निकालना, निषिद्ध दस्तावेज़ का प्रका-शन, झूठी अफवाहों को फैलाना, फौजी हवाई या कोतवाली समुदाय के लिए हानिकर अफवाहों का फैलाना तथा वे कार्य जिन से किसी सम्प्रदाय के मज़हबी जज़बात को उत्तेजना देने का प्रयत्न किया जाये, ये सब जुर्म करार दिये गये हैं, जिन की भिन्न-भिन्न सजाएँ हैं। कुछ नाक़ाबिल दस्त-अन्दाज़ी जरायम को क़ाबिल दस्तन्दाज़ी वा नाक़ाबिल जमानत का अधिकार भी सरकार को होगा। जलसा आम की रिपोर्ट हासिल करने का अधिकार कोतवाल बलदा या अव्वल तालुक़दार या उन-द्वारा नियत किये किसी दूसरे व्यक्ति को दिया गया है। इन आज्ञाओं की तक़मील कराने का तरीक़ा भी बताया गया है और खिलाफवर्ज़ी की अवस्था में सज़ा भी निश्चित की गई है। क़ानून के तीसरे भाग के अधीन सोलहवर्ष से कम आयु के बच्चे का कोई कार्य जिससे इस कानून की खिलाफवर्जी होतीहो, क़ाबिल जुर्माना होगा और यह जुर्माना उसके बाप या माता या संरक्षक से वसूल किया जायेगा।

हैदराबाद और आर्यसमाज

—*—*—

सार्वदेशिक सभा की आर्य रक्षा समिति के मन्त्री श्रीयुत शिवचन्द्र जी ने निम्न वक्तव्य समाचार पत्रों को दिया है:—

"अचानक १७ सितम्बर १९३८ को देहली की सी० आई० डी० द्वारा निजाम-सरकार की एक्जीक्यूटिव कौंसिल के प्रधान का मुझे राज्य से निर्वासन का आर्डर प्राप्त हुआ। मैंने सी० आई० डी० के अफसर को, जो उपर्युक्त आर्डर देने आए थे, आर्डरकी प्रतिलिपि देने को कहा, परन्तु उन्होंने ऐसा करने में इस आधार पर अपनी असमर्थता प्रकट की, कि निज़ाम-सरकार ऐसा नहीं चाहती है। वस्तुतः यह आश्चर्यजनक बात थी। इसके बाद आर्डर का अङ्गरेज़ी अनुवाद पढ़ने के लिए मुझे कहा गया। यह अनुवाद मूल का, जो उर्दू में था, शाब्दिक अनुवाद किया गया प्रतीत होता था। मुझे उन आर्डरों पर हस्ताक्षर करने के लिए भी कहा गया था। आर्डर के प्रथम ही वाक्य को पढ़कर जो निम्न प्रकार अशुद्ध लिखा गया था मेरे आश्चर्य की सीमा न रही।

"आपको इस आज्ञा द्वारा आज्ञा दी जाती है कि निज़ाम राज्य से आपके निर्वासन के सम्बन्ध में आज्ञाएँ जारी हो गई हैं।"

पाठकों को यह जानकर मेरे जैसाही आश्चर्य होगा कि निर्वासन की यह आज्ञाएँ देहली में बैठे हुए ही मुझे प्राप्त हुई हैं। इन आज्ञाओं में सौजन्य और मर्य्यादा का भी अभाव है, क्योंकि उनमें मेरे निर्वासन का कोई कारण नहीं प्रकट किया गया है।

हैदराबाद की अपनी एक यात्रा के अवसर पर मुझे श्री ऐस० टी० होलेन्स, सी० आई० ई०, आई० पी० ऐस०, डाइरेक्टर जनरल पुलिस से भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था और निज़ाम की पुलिस के वहां के आर्य्यों के प्रति व्यवहार के सम्बन्ध मे कई बातों पर उनसे विचार-विनिमय भी हुआ था। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई थी कि उन्हें, जो राज्य के सी० आई० डी० विभाग के भी अध्यक्ष हैं मेरे प्रति जरा सी शिकायत नहीं थीं। पिछली दफ़ा जब सभा के प्रधान माननीय श्रीयुत घनश्यामसिंह जी, स्पीकर, सी० पी० ऐसेम्बली के साथ मैं हैदराबाद गया था, तब भी हैदराबाद मे मेरे निवास पर कोई आपत्ति नहीं कीगई थी। हैदराबाद राज्य से, मेरी अनुपस्थिति मे, निज़ाम-सरकार को इन आज्ञाओं के देने की आवश्यकता क्यों हुई, इसका मुझे आश्चर्य है।"

HYDERABAD & ARYASAMAJ

Delhi Advocate to defend Hyderabad Aryas and Hindus accused

Mr B B Tawakley, a leading criminal advocate of Delhi, who was engaged by the International Aryan League to defend the Aryas and Hindus involved in the Hyderabad Riot Murder case has reached Hyderabad on 17th September, 1938

It may be recalled that Mr K F Nariman was prevented from entering the State for the purpose of defending the Aryas and Hindus by an order of the Nizam's Government Mr Bhulabhai Desai, who was next briefed for the same case, went there, but he was prevented from addressing the Bar Association As a protest against this prohibition, Mr Desai also left Hyderabad

Mr S. Chandra Secretary, Aryan Defence Committee of the International Aryan League has issued the following statement to the Press —

All of a sudden, on the 17th September, 1938, I was served through the Delhi C I D with "externment orders" issued by the orders of Rt Hon'ble the President of the Executive Council of H E H.the Nizam's Government. I requested the C I D officer, who came to me to serve with the above orders, to supply me with a copy of these, but he expressed his inability to do so, as the Nizam's Government did not desire it. This was really amazing I was then asked to go through the English version of the orders, which seemed to have been literally translated from theo riginal, which were in

Urdu, and I was further asked to sign it. What increased my amazement was to find the very first sentence of the orders, wrongly written as follows —

"You are hereby 'ordered' that orders have been passed regarding 'your externment from' H E H 's Dominions" The reader will share my amazement when he learns that these orders of externment were served on me when I was sitting in Delhi The orders also lack grace and dignity, because no reason was mentioned for my 'externment'

During one of my visits to Hyderabad, I had the honour of interviewing Mr S T Hollins, C I. E I., P. S, the Director-General of Police and discussed with him several things regarding the treatment meted out to the Aryasamajists by the Nizam's Police, and I was glad to find that he too, who is also the head of the C I D Department of the State, had not the slightest ground for any complaint against me Last time when I visited Hyderabad in company with Hon'ble Mr G S. Gupta, President of Aryan League and speaker of C P Assembly, even then no objection was taken to my stay in the Nizam's Dominions I wonder what necessitated the Nizam's Government to issue these 'externment orders' in my absence from Hyderabad State

ग्राहकों से आवश्यक निवेदन

—**—

'सार्वदेशिक' के स्वदेश के निम्न ग्राहकों का चन्दा अक्टोबर ३८ में समाप्त होता है। प्रार्थना है कि ये ग्राहक महोदय अपना-अपना चन्दा १५ नवम्बर तक भेज देवें। इसके बाद जिन ग्राहकों का चन्दा प्राप्त न होगा या कोई सूचना न मिलेगी, उनकी सेवा में पत्र वी पी द्वारा भेज दिया जायगा और आशा है वे उसे स्वीकार करेंगे।

९०, ९४, २८३, २८४, २८८, २९०, २९७, ३०१, ३०२, ३०४, ४७६, ४९४, ५०१, ६०७, ६३६, ६३७, ६३९, ६४०, ६७३, ८१३, ८३०, ८३२, ८३४, ८५०, ८९५, ९०२, ९०३, ९०५, ९०६, ९०७,

स्वाध्याय योग्य उत्तम साहित्य

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी कृत

कतिपय ग्रन्थ

(१) मृत्यु और परलोक

शरीर, अन्त करण तथा जीव का स्वरूप और भेद, जीव और सृष्टि की उत्पत्ति का प्रकार, मृत्यु का स्वरूप तथा बाद की गति, मुक्ति और स्वर्ग, नर्क इत्यादि लोकों का स्वरूप मुक्तिके साधन आदि आदि विषयों पर अद्भुत पुस्तक। मूल्य ।)

(२) योग रहस्य

इस पुस्तक में योग के अनेक रहस्यों को उद्घाटित करते हुए उन विधियों को भी बतलाया गया है जिससे कोई आदमी जिसे रुचि हो—योग के अभ्यासों को कर सकता है। मूल्य ।-)

(३) विद्यार्थी जीवन रहस्य

विद्यार्थियों के लिए उनके मार्ग का सच्चा पथ प्रदर्शक उनके जीवन क प्रत्येक पहलू पर श्रृंखलाबद्ध प्रकाश डालने वाले उपदेश । द्वितीय संस्करण ≡)

(४) उपनिषद् रहस्य

ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, उपनिषदों की बहुत सुन्दर खोजपूर्ण और वैज्ञानिक व्याख्यायें मूल्य क्रमश =) =)॥ =)॥ =)॥, =)॥, -)।

अन्य ग्रन्थ कर्त्ताओं का

स्वाध्याय योग्य बहुमूल्य साहित्य

(१) इजहारे हक़ीकत ।॥=) सत्य-निर्णय १।)

(उर्दू) (हिन्दी)

श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य्य,

महात्मा गांधी ने आर्य्य समाज और ऋषि दयानन्द के मिशन और ग्रन्थो के सम्बन्ध में जो आक्षेप किए थे इस पुस्तक मे प्रामाणिक रीति से उनका खण्डन किया गया है। पुस्तक की अन्यान्य विशेषताओं मे से एक विशेषता यह है कि लेखक ने आलोचना करते हुए उस मान और लोक-प्रियता का पूरा ध्यान रक्खा है जिसके महात्मा जी अधिकारी हैं। पुस्तक म कोई भी स्थल ऐसा नहीं है जिससे महात्मा जी के प्रति अवज्ञा का आभास होता हो। पुस्तक स्थिर साहित्य में स्थान पाने योग्य है।

(२) धर्म और उसकी आवश्यकता ।)

लेखक श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य

इस पुस्तक में धर्म का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। नई रोशनी के उन नव युवक और नवयुवतियों के हाथमे रखे जाने या य

है जो धर्म और ईश्वर में न केवल विश्वास ही नहीं रखते बल्कि उनका मखौल भी उड़ाते हैं। मूल्य ।-)

(३) आर्य्य-पर्व्व पद्धति

आर्य्य जगत में एक से ही त्योहार मनाने तथा त्योहारों के सम्बन्ध मे पूर्ण ज्ञान प्राप्त करा देने के लिये इस पुस्तक की रचना की गई है। इस का प्रत्येक आर्य-परिवार मे रखना आवश्यक है। संशोधित संस्करण ॥≈)

(४) कर्त्तव्य दर्पण

आर्यो की नित्य कर्म विधि-इत्यादि की यह बहुत उत्तम पुस्तक है। आर्य्यसमाज सम्बन्धी आवश्यक ज्ञातव्य बातें भी इसमें दी गई हैं। मूल्य ≈)॥

(५) कथामाला

इस पुस्तक में स्वामी जी महाराज की विद्वत्ता-पूर्ण और अत्यन्त उपयोगी कथाओं का संग्रह किया गया है। आर्य्य नर नारी मात्रके स्वाध्याय के योग्य है। मूल्य ।≈)

(६) आर्य्य जीवन और गृहस्थधर्म

लेखक—पं० रघुनाथप्रसाद पाठक

आर्य्य जीवन किस प्रकार बनाया जाता है और गृहस्थ किस प्रकार श्रेष्ठ बनाए जा सकते है इन सब बातों का इस पुस्तक में वर्णन किया गया है। पुस्तक मुख्यतया श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के प्रवचनों और व्याख्यानों के आधार पर लिखी गई है। मूल्य ।≈)

(७) आर्य्यवर्त की वाणी

अनुवादक पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक

यह पुस्तक श्रीयुत साधु टी० एल० वास्वानी की वायस आफ आर्य्यवर्त का हिन्दी अनुवाद है। इसमे ऋषि दयानन्द का जीवन सक्षेप में बहुत ओजस्वनी भाषा मे प्रस्तुत किया गया है। अन्य भी बहुत सी नवयुवकोपयोगी सामग्री इस पुस्तक में प्रस्तुत की गई है। मूल्य ≈)

(8) Ecclesia Divina

Well - Bound—By Bhumanand Saraswati M A, 5/-

(9) Fountain Head of Religion

By Pt Ganga Prasad M A,

Chief Judge

Well-bound	1 4
Un-bound	-/12 -

(१०) अमृत वर्षा ॥।)

लेखक म० नारायण स्वामी जी

(११) गृहस्थ जीवन रहस्य

सजिल्द १।)

(१२) आत्म दर्शन १।)

(१३) वेद तत्व प्रकाश सजिल्द

सं० श्री सुखदेव विद्यावाचस्पति २)

मिलने का पता :—

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा, श्रद्धानन्द बाज़ार, देहली।

कमीशन रेट्स

पुस्तकालय सार्वदेशिक सभा।

अन्य ग्रन्थ कर्त्ताओं की पुस्तको को छोड कर शेष सभा तथा सभा द्वारा प्रकाशित श्री महात्म नारायण स्वामी जी की पुस्तकों के घटे हुए मूल्य पर पुस्तक विक्रेताओं को निम्न प्रकार कमीशन दिया जायगा।

५) से २५) तक	१५) प्रति सैकड़ा
२६) से ५०) तक	२०) प्रति सैकड़ा
५१) से १००) तक	२५) प्रति सैकड़ा

नोट—(१) स स्कुल सत्यार्थ प्रकाश तथा (२) दयानन्द ग्रन्थ माला पर कुछ कमीशन नहीं दिया जायगा।

—*—

सार्वदेशिक में विज्ञापन छपाई

के

रेट्स

स्थाने	१ मासका	३ मासका	६ मासका	१ वर्ष का
पूरा पृष्ठ	१०)	२५)	४०)	७५)
एक कालम	६)	१५)	२५)	४०)
आधा ,,	३॥)	८)	१५)	२५)
चौथाई ,,	२)	४)	८)	१५)

उजरत का धन नियमानुसार पेशगी आना चाहिए।

आर्य्य समाज के नियमोपनियम — १।) प्रति सैकड़ा,)। प्रति

मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली

आर्य जाति को नवीन सन्देश

त्याग ! तप !! बलिदान !!!

सार्वदेशिक मासिक—पत्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित, विविध विषय विभूषित

सचित्र मासिक पत्र

(सम्पादक—प्रो० सुधाकर, एम० ए०)

यदि आप

(१) वैदिक सभ्यता के मर्मज्ञ, कर्मनिष्ठ, सात्विक, प्रेम के उपासक । प्रतिष्ठित आर्य महानुभावों के सात्विक, प्रौढ़ और जीवनप्रद लेख पढ़ना चाहते हैं ।

(२) देश के भिन्न भिन्न धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक नेताओं के मार्मिक समयानुकूल परिस्थिति द्योतक विचारों से लाभ उठाना चाहते हैं ।

(३) भूमण्डल की धार्मिक, सामाजिक घटनाओं का ठीक ठीक वर्णन जानना चाहते हैं ।

(४) देश देशान्तर, द्वीप द्वीपान्तरो मे वैदिक पुण्य-पीयूष प्रवाहित कर देने वाले आर्यसमाज की शिक्षा सम्बन्धिनी सामाजिक, शुद्धि, सङ्गठन, दलितोद्धार विषयक उथल-पुथल मचा देने वाली क्रान्तिकारी सस्थाओं का परिचय प्राप्त करना चाहते हैं ।

तो

आज ही, हाँ आज ही एक पत्र डाल कर सचित्र "सार्वदेशिक" के ग्राहक बन जाइये ।

वार्षिक मूल्य २)

यह 'पत्र' विज्ञापन का सर्वोत्तम साधन है ।

प्रबन्धकर्त्ता—"सार्वदेशिक" देहली ।

पं० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये 'चन्द्र प्रिण्टिङ्ग प्रेस' देहली में मुद्रित।

गु पुस्तकालय 22-11-38

नवम्बर १९३८ Reg No L 2121

ऋग्वेद ॐ यजुर्वेद

सार्वदेशिक



सम्पादक— प्रो० सुधाकर, एम० ए०,

स० सम्पादक— श्री रघुनाथप्रसाद पाठक

वार्षिक मूल्य स्वदेश २) एक प्रति का ≡) विदेश में ५ शि० वार्षिक

अथर्ववेद सामवेद

लेख-सूची

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों के प्रचारार्थ बहु संख्या में ये ग्रन्थ एकत्र किये गये हैं और निश्चय किया गया है कि पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन भी कुछ अधिक दिया जावे। छोटे बड़े सभी ग्रन्थ अच्छे कागज पर बड़े आकार में हैं। उनका मूल्य सहित विवरण इस प्रकार है। इनके मँगाने के लिये शीघ्र आर्डर भेजने चाहियें—

	असली मू०	घटाहुआ मू०
(१) दयानन्द ग्रन्थमाला दो जिल्दों में	५)	२॥)
(२) ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका बढ़िया	१॥)	१)
(३) आर्याभिविनय	।=)	।)
(४) महर्षि का संक्षिप्त जीवन चरित्र मय रंगीन चित्रों के	।)	≡)
(५) वेद विरुद्ध मत खण्डनम्	=)॥	=)
(६) गो करुणानिधि	=)	-)॥
(७) शिक्षापत्री	=)	-)॥
(८) भ्रान्ति निवारणम्	=)	-)॥
(९) सत्यधर्म विचार	-)॥	-)
(१०) काशी शास्त्रार्थ	-)	)॥
(११) भ्रमोच्छेदन	-)	)॥
(१२) आर्योद्देश्य रत्न माला	)॥	)॥
(१३) स्वीकार पत्रम्	)॥	)॥

सार्वदेशिक सभा के पुस्तकालय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

(१) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश—

यह महर्षि दयानन्द कृत हिन्दी सत्यार्थप्रकाश का संस्कृतानुवाद है। अनुवादक गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) के संस्कृत विभाग के मुख्याध्यापक श्री पण्डित शङ्करदेव पाठक हैं। अनुवाद की भाषा मधुर एवं सरल है। महर्षि का आशय ज्यों का त्यों प्रगट किया गया है। मूल्य २।) सजिल्द २॥)

मूल्य प्रचारार्थ ।)

(२) प्राणायाम विधि—

यह पुस्तक जिसमें प्राणायाम सम्बन्धी कठिन से कठिन विधियों को सुगम बनाया गया है श्री पूज्यपाद १०८ श्री नारायण स्वामी जी महाराज द्वारा लिखी गई है। प्राणायाम के प्रेमियों की एक बड़ी खोज तथा आवश्यकता इसके द्वारा पूरी हो सकती है। मूल्य -) घटा हुआ मूल्य)॥

(३) दयानन्द लहरी—

इसमें भगवान दयानन्द का स्तवन शिखरणी आदि सुन्दर छन्दों में किया गया है। प्रत्येक छन्द के साथ भावानुवाद भी दिया गया है। पुस्तक के लेखक श्री पं० मेधाव्रत जी कविरत्न हैं। मूल्य -)॥, घटा हुआ मूल्य -)

(४) दश नियम व्याख्याः—

श्री पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति द्वारा यह "दश नियम व्याख्या" नाम की पुस्तक लिखी गई है। इसमे आर्यसमाज के दश नियमो की विस्तृत तथा गवेषणापूर्ण व्याख्या की गई है। मूल्य ।), घटा हुआ मूल्य ≡)

(५) ओम्प्रत्यक्षः—

यह पुस्तक श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति की लेखनी से लिखी गई है। ओ३म परमात्मा की विस्तृत व्याख्या विद्यमान है। मूल्य ॥।), घटा हुआ मूल्य ।≈)

(६) वैदिक सिद्धान्तः—

यह पुस्तक भिन्न भिन्न वैदिक सिद्धान्तों पर आर्य्य विद्वानों द्वारा लिखित निबन्धों का अत्युत्तम संग्रह है। मूल्य १।) सजिल्द १॥), घटा हुआ मूल्य ॥।) सजिल्द १)

(७) वैदिक विवाहादर्शः—

इस पुस्तक में वैदिक विवाह का आदर्श प्रस्तुत किया गया है और विवाह सम्बन्धी लगभग सभी आवश्यक बातो पर प्रकाश डाला गया है। मुख्यतया पश्चिमी थ्योरियों के विवेचन पूर्वक विवाह सम्बन्धी वैदिक आदर्शों और शिक्षाओं की श्रेष्ठता प्रतिपादित की गई है। मूल्य १।), घटा हुआ १)

(८) विदेशों में आर्य समाज का इतिहासः—

जिस पुस्तक को छपाने की मथुरा शताब्दी पर घोषणा की गई थी और जिसके पढ़ने के लिये पिछले आठ वर्षो से देश और विदेशो के आर्य्य-नर नारी बेचैन हो रहे थे वह सार्वदेशिक सभा की ओर से तैयार हो कर छप गई है। पुस्तक मे आर्य्य प्रचारको तथा विदेश की आर्य्य-संस्था आदिको के लग-भग ११ चित्र है। पुस्तक पढने योग्य है। छपाई, सफाई, कागज आकार प्रकार बढ़िया। मूल्य १), घटा हुआ ।≈)

(९) यमपितृ परिचय—लेखक श्री पं० प्रियरत्न जी 'आर्ष' मूल्य २), घटा हुआ १)

इस पुस्तक में 'यम और पितृ' प्रकरण वाले वेद मन्त्रों की विद्वत्ता पूर्ण व्याख्या की गई है। स्वाध्याय शील सज्जनों के पढ़ने और संग्रह करने योग्य अनुपम ग्रन्थ है।

(१०) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर—सम्पादक—श्री कृष्णचन्द्र जी विरमानी, मूल्य १।)

पुस्तक की विशेषता यह है कि भिन्न भिन्न महत्त्व पूर्ण विषयो पर स्वामी जी महाराज की भिन्न भिन्न पुस्तकों व पत्र व्यवहार तक मे वर्णित मत को एक जगह संग्रह किया गया है। यह पुस्तक सम्पादक के लगभग ११ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल है। जिस किसी विषय में भी ऋषि दयानन्द की सम्मति जानना चाहो वही प्रकरण इस पुस्तक में देखोगे। पुस्तक बहुत उपयोगी है।

(११) **आर्य्य सिद्धान्त विमर्श—** प्रथम आर्य्य विद्वत् सम्मेलन के निबन्धों का संग्रह। कतिप आर्य्य विद्वानों ने गम्भीर विषयों पर अपनी लेखनी द्वारा प्रकाश डाला है। स्वाध्याय प्रे व्यक्तियों के लिए यह पुस्तक अमूल्य ग्रन्थ का काम देगी। पृष्ठ संख्या लग भग ४०० मूल्य १

(१२) **भजन-भास्कर—** (दूसरा संस्करण) यह पुस्तक भाव, भाषा, संगीत, छन्द वैदिक सिद्धान्त शिक्षण इत्यादि की दृष्टि से उत्तम भजनों और कविताओं का संग्रह है। इसमें देश के औ आर्य समाज के प्रसिद्ध २ संगीतज्ञो कवियों और भजनोपदेशकों की उत्कृष्ट रचनाएँ है इसमें देश, धर्म, ईश्वर, समाजसुधार, बाल-शिक्षण शुद्धि, ऋषि महिमा, आर्य्यसमाज महिमा इत्यादि अनेकानेक धार्मिक, सामाजिक और जातीय विषयो पर भजन मौजूद है संग्रहकर्त्ता श्री पं० हरिशंकर शर्मा कविरत्न (भूत पूर्व सम्पादक आर्य मित्र) हैं। आर्य्यसमाज मे तुकबन्दो की बढती हुई तुकबन्दी को निरुत्साहित करने तथा आर्य्यसमाजो और परिवारं मे श्रेष्ठ संगीत को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ही मथुरा की दयानन्द शताब्दी महोत्सव के अवसर पर यह संग्रह तैयार कराया गया था। अब जनता की बढती हुई मांग को पूरा करने के उद्देश्य से ही इस संग्रह का दूसरा संस्करण बढ़िया आकार प्रकार इत्यादि मे छपाया गया है। मूल्य ॥)

(१३) **सत्यार्थ प्रकाश—** (सस्ता संस्करण) - महर्षि दयानन्द सरस्वती की अमर कृति। २० ३० सोलह पेजी साइज के ८०० से अधिक पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल ।)॥ प्रति १०० प्रति या इससे अधिक लेने पर ।) (चार आना) प्रति।

		अ० मू०	घ० मू०		अ० मू०	घ० मू०
(१४)	वेद में असित शब्द	-)।	-)	(१६) विरजानन्द विजय	।)	-)
	,, २५ प्रति का	१।)	१।)	(१७) हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद उर्दू	)	-
(१५)	वैदिक सूर्य विज्ञान	=)	=)			

18 Agnihotra—

By Dr Satya Prakash D Sc Lecturer in Chemistry University of Allahabad
Well Bound Price Rs 2 8-0

The Author has described in details the process of Agnihotra and has shown that during the process of this fumigation, such products are given out which are bactericidal, vermifugal and this ancient practice of the Aryans is very healthy, hygienic and productive of physical and spiritual results

"The writer is a **Doctor of Science** He has brought to bear upon the subject the scientific lore that he has acquired at the University and environments

"As the book deals with the ancient practice in a systematic manner, I believe, it will be found interesting and useful to readers in the East and in the West, and hence I have a great pleasure in recommending it to the public"

—*N. R. Dhar*

19 Crucifixion by an eye witness—
This valuable book contains a detailed account of the crucifixion of Jesus Christ, given by one who witnessed it with his own eyes—price As 6, Reduced price As 5

20 Truth and Vedas—
It is an excellent exposition and translation of "Vibhrat."—price As 8. Reduced price A 6

21 Truth Bed Rocks of Aryan culture—
The Subject dealt with in this book is the ideal of truth stating candidly by means of Vedic Mantras and fine stories to what extent the Aryan race has lived to this ideal—price As. 10, Reduced price As 8

22 Torch Bearer—
A biographical sketch of Swami Dayanand--price Rs. 1/8/- Reduced price Re 1/-

23 Vedic Teachings—
This book contains the most authentic replies to the objections raised about the Vedas by Dr Bhandarkar The learned author has, besides, brought forth the superiority, the Vedic Teachings contain—price Rs, 1/12/-, Reduced price Rs. 1/4/

24 Voice of Aryavarta—
This little book comes from the pen of Mr T L Vaswani and contains most lucid reflections on Rishi Dayanand and his life and teaching,—price As 8. Reduced price As 2

25 The daily Prayer of an Arya—
This booklet contains an ethical exposition in the light of Modern Thought of our daily Sandhya—price As 4, bound and As 3/- unbound.

26 The Light of the Vedas—
It contains lucid translation of 500 Vedic Mantras. A book worth presenting to people of alien faiths price Rs 1/4/-

27 Commentary on Ishopanishat—
Translated by the late Pt Ghasi Ram M A L L B—price As 4.

पुस्तक मिलने का पता:—

कार्यालय—सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा,

श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

कार्तिक १९९५

वर्ष १२ | नवम्बर १९३८ ई०] [दयानन्दाब्द ११४ | अङ्क ९

* वेद की शिक्षाएँ *

अस्माकं सन्त्वाशिषः सत्याः । यजु० २—१०

हमारी कामनायें सच्ची ही हो ।

May our longings and aspirations, our ideas and ideals be genuine and generous!

मात्र तिष्ठः पराङ् मनाः । यजु० ८—१—९

संसार मे मन को उदास करके मत रह ।

Do not make thy life a continual Sadness and Sorrow.



हैद्राबाद में धर्म-युद्ध

हैद्राबाद मे आर्य्य समाजियों पर होने वाले अत्याचारों और आर्य्य समाज की प्रगति को निर्मूल करने की राज्य की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कोशिशों का सिलसिला बहुत देर से चला आ रहा है। इस सिलसिले को रुकवाने के लिए सार्वदेशिक सभा प्रारम्भ से ही पूर्ण प्रयत्न करती रही है। कदाचित् ही कोई वैध उपाय हो जिसका सार्वदेशिक सभा ने आश्रय न लिया हो। आर्य्यसमाज के प्रति राज्य के दमन-चक्र का सिलसिला गत ६ वर्ष से उग्र रूप धारण किए हुए है जब उसने श्री० प० रामचन्द्र जी देहलवी का राज्य में प्रवेश निषिद्ध करार दिया था।

इस समस्या के हल के लिए हैद्राबाद दरबार को सार्वदेशिक सभा की ओर से ६ वर्ष का जो समय मिला वह काफी से अधिक था और आर्य्य समाज के एक अंग के लिए यह आपत्ति जनक था। परन्तु इस काल में आर्य्यसमाज के प्रति निजाम सरकार की रीति-नीति और रुख में न केवल सन्तोषजनक परिवर्तन ही न हुआ वरन् उसका रवैया कठोर से कठोर तम होता चला गया जिसका परिणाम हम आज यह देखते हैं कि हैद्राबाद मे आर्य्य समाज का नाम लेना भी अपराध की कोटि में गिना जाता है। आर्य्य समाज के प्रचार की तो बात ही क्या ? हमारे ४-५ दीवाने राज्य की इस रीति-नीति के फल स्वरूप धर्म्मान्ध मुसलमानों द्वारा हम से सदैव क लिए पृथक् कर दिए गए। हमारे प्रचारकों को थोथे अपराधों और निर्मूल बहानों के आधार पर जेल की चहारदीवारी के भीतर डाल दिया गया अथवा उन्हें राज्य से निर्वासित कर दिया गया। श्री० पं० रामचन्द्रजी जैसे शान्त और सुमधुर तर्कशील प्रचारक के राज्य मे प्रवेश पर से पर्याप्त लिखा पढ़ी और प्रार्थनाओं के बावजूद भी प्रतिबंध नहीं हटाया गया। हवन-कुण्ड की स्थापना और आर्य्य समाज मन्दिर तथा आर्य्य-गृहों में प्रचार करने तक पर भी प्रतिबन्ध लगा कर प्रचार को रोकने का यत्न किया गया। इन अत्याचारो और असुविधाओं से आर्य्यसमाज के सब्र के प्याले का भर जाना स्वाभाविक था। उसने सभा को प्रेरणा की कि वह प्रार्थनाओं, आवेदन-पत्रों और डेपुटेशनो की नीति का परित्याग करके जिसके प्रति ६ वर्ष के लम्बे अर्से मे उसकी कोई आस्था नहीं रही थी, इस समस्या के अन्तिम और स्थिर हल के लिए उग्र क़दम का आश्रय ले।

यह माग इतनी प्रबल हो गई थी कि सभा को इस पर विचार करने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं रह गया था। फलत: गत ६-१०-३८ को सभा तथा आर्य्य रक्षा समिति की सम्मिलित

बैठक में इस पर घटों तक काफी विचार और विवाद हुआ और इसका जो फल निकला वह इस समय तक आर्य्य जगत् में काफी विदित हो चुका है। सभा ने अपने भूतपूर्व प्रधान और आर्य्य जगत् के सम्मान्य नेता श्री पूज्य नारायण स्वामी जी महाराज को इस सम्बन्ध में कार्यवाहि करने का सम्पूर्ण अधिकार दे दिया है। दूसरे शब्दों मे उन्हें उस यज्ञ का सर्वप्रथम ब्रह्मा नियत किया है जो हैद्राबाद में आर्य्य समाज के धामिक अधिकारों की रक्षा के लिए रचा जाने वाला है। दूसरे शब्दों में युद्ध की रणभेरी बज गई है।

श्री० स्वामी जी महाराज श्री० स्वामी स्वतन्त्रानन्द 'जी महाराज उप प्रधान सभा को साथ लेकर शोलापुर पहुँच गए हैं। सम्प्रति यहीं से वे इस यज्ञ की आयोजना करेंगे। उनका सर्व प्रथम कार्य क्रम शोलापुर में 'सावदेशिक-आर्य्य-महा-सम्मेलन' करना होगा जिसकी तिथिया २५, २६ और २७ दिसम्बर सन् ३८ नियत की गई हैं।

दूसरी ओर आर्य्य भाई आर्य्यसमाज के अधिकारों की रक्षा के लिए शान्त और अहिंसामय व्यक्तिगत सत्याग्रह एक मात्र अपनी जिम्मेवारी पर चला रहे हैं। सामूहिक सत्याग्रह की यदि आवश्यकता हुई, कार्य्यक्रम आर्य्य सम्मेलन में निश्चित किया जायगा।

सार्वदेशिक सभा के निश्चय का आर्य्य जगत् में जो स्वागत हुआ है वह श्री स्वामी जी महाराज के उस प्रेस वक्तव्य से स्पष्ट है जो उन्होंने देहली से हैद्राबाद को प्रस्थान करते समय दिया था, जो आर्य्य पत्रों में छप चुका है और अन्यत्र इस पत्र मे भी छपा है। इस समय भी सभा के कार्यालय में उत्साह वर्द्धक पत्र और सन्देश आ रहे हैं। उन पत्रो और सन्देशों के आधार पर आर्य्य जगत् के भावो का हमने जो अध्ययन किया है उससे विदित होता है कि इस समस्या को वह बड़े गंभीर भाव मे ले रहा है और इसके सन्तोषजनक हल के लिए वह वास्तव में अत्यन्त आतुर है।

उन सदेशों से यह भी विदित हुआ है कि वह धन-जन की बड़ी से बड़ी कुर्बानी के लिए सन्नद्ध है। श्री स्वामी जी महाराज ने अपने वक्तव्य मे ठीक ही कहा है कि ऐसे कार्य्यों में धन जन की बहुत बड़ी आवश्यकता होती है। वहा की आवश्यकताएँ तो वे स्वयं शोलापुर से बतलायेंगे फिर भी हैद्राबाद से उत्तर भारत की दूरी जिसकी सहायता इस यज्ञ की सफलता में एक विशेष स्थान रखती है तथा देशी रजवाड़ों में इस यज्ञ का होना, ये दो बातें धन-जन का अंदाजा लगाते तथा सहायता देते दिलाते समय हमे अपने सामने रखनी होंगी। पता नहीं इस यज्ञ की तय्यारी और संचालन मे कितना समय लगे, यह बात भी नजर अन्दाज नहीं करनी होगी। इन सब बातों को दृष्टि में रखते हुये हम समझते हैं लाखों रुपयों और सहस्रों जनोंकी आवश्यकता होगी 'जिसे आर्य्य जगत को पूरा करना होगा। सार्वदेशिक सभा ने जो रक्षा निधि का २५ हजार रुपया इस निमित्त श्री स्वामी जी के

निर्णय पर रख दिया है। आर्य्य जनता को अभी से धन-जन की पूर्ति में लग जाना चाहिए। धन की सहायता सीधे श्री स्वामी जी को शोलापुर या सार्वदेशिक सभा के कार्य्यालय में भेजनी चाहिए तथा जन की सहायता से नियमानुकूल सूचियां बना कर सूचित कर देना चाहिए।

इस समय कॉंग्रेस ने भी हैदराबाद राज्य में नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिये धर्म-युद्ध छेड़ा हुआ है। आर्यसमाज के लिये यह बड़ा अच्छा अवसर प्राप्त है। इससे लाभ उठाने में पीछे नहीं रहना चाहिये। कहने को आवश्यकता नहीं जो व्यक्तियाँ और जातियाँ अवसर से लाभ नहीं उठाती हैं वे सदैव अवनति के गर्त में पड़ी हुई अत्याचारों का शिकार बनी रहती हैं।

श्री० स्वामी जी महाराज ने चलते समय आदेश दिया है कि वे प्रान्तिक सभाओं, आर्य-समाजों और आर्य-नर-नारियों को जिसे जिस प्रकार की आज्ञा देंगे उसे बिना किसी हिचक के पालन करनी होगी। कौन आर्यसमाज, आर्य-नर-नारी और प्रांतिक सभा होगी जो आर्यसमाज के इस जीवन-मरण के आड़े समय में अपने सम्मानीय नेताके आदेश की अवहेलना करेगा? हमें पूर्ण विश्वास है कि उनकी आज्ञाओं का पालन करना प्रत्येक आर्य और संस्था न केवल अपना कर्तव्य समझेगी वरन् उसमें गौरव अनुभव करेगी। प्रान्तिक सभाओं ने अपने अपने आर्य-समाजों को धन-जन की सहायता देने तथा अधिक से अधिक और बड़ी से बड़ी कुर्बानी करने के लिये तैयार रहने के आदेश जारी कर दिये हैं यह बड़ी प्रसन्नता और उत्साह की बात है। इस परीक्षा के काल में आर्य्य जगत् को बाहरी संसार के सामने अपनी कुर्बानी और संगठन शक्ति का बहुत उज्जवल परिचय देना है; ऐसा परिचय देना है जो आर्य्य समाज की शान और प्रथा के अनुरूप हो और जिसे देख और सुनकर लोग अवाक् रहजायं। यह बात हममें से प्रत्येक को हृदयङ्गम कर लेनी चाहिए।

निज़ाम सरकार से तो निवेदन करते करते हम थक गए हैं। हमारा उत्साह नहीं होता है कि हम उससे कुछ कहें। फिर भी एक बात हम उससे अवश्य कहेंगे। अब भी समय है कि वह आर्य्य समाज के केस को सही रूप में अध्ययन करे और उसकी शिकायतों को दूर करने की दूरदर्शिता करे। ऐसा करने में उसका गौरव बढ़ेगा ही, घटेगा नहीं। ऐसी रीति नीति की घोषणा से कि "राज्य में सर्व धर्म वालों को समान स्वतन्त्रता प्राप्त है न केवल आर्य्य समाजी ही वरन् मुसलमान तथा सब धर्म के अनुयायी एक जैसे नियमों से शासित होते हैं" काम नहीं चलेगा। इस प्रकार की घोषणाओं और भाषाओं के तथ्य से आर्य समाज काफी परिचित हो गया है। उसका अनुभव है और सही अनुभव है कि व्यवहार में उन सब कायदे कानूनों का आर्य्य समाज को कुचलने में ही प्रयोग होता है।

अब तक आर्य्य समाज के इस प्रकार का कदम न उठाने में जो उसकी कमजोरी समझते रहे हैं आशा है वे आर्य समाज

के सत्याग्रह के निश्चय से किसी भ्रम में नहीं रहेंगे। जहाँ तक हम समझते हैं यह आर्य समाज की कमजोरी नहीं थी वरन् वैध उपायों की आजमाइश में अधिक से अधिक जितना संभव हो जाने की अपनी परम्परा की रक्षा की दिशा में उसका एक मात्र प्रयत्न था।

हैदराबाद में धर्म-युद्ध

श्री० म० कृष्ण जी 'प्रकाश' के ताजे अङ्क में 'हैदराबाद में धर्म युद्ध' शीर्षक में हैदराबाद में आर्य-समाज की कठिनाइयों तथा सार्वदेशिक सभा की ६-१०-३८ की अन्तरङ्ग सभा के निश्चय के प्रकाश में 'सत्याग्रह' के सूत्रपात की चर्चा करते हुये आर्य-जनता के कर्त्तव्य की ओर निम्न प्रकार संकेत करते हैं:—

"उचित रीति से कहा जा सकता है कि रणभेरी बज गई। इसलिये प्रत्येक आर्य को सिपाही बनकर मैदान में आने के लिए तैयार रहना चाहिए। किसी को बड़ी से बड़ी आर्थिक कुरबानी से पीछे नहीं हटना चाहिए। स्वामी जी (श्री नारायण स्वामी जी) जिसे भी जो हुक्म दें उसे पूरा करने के लिये तैयार रहना चाहिए। प्रत्येक सूबे की प्रान्तिक सभा को चाहिये कि अपने यहाँ की आर्य समाजों को इस धर्म-युद्ध में भाग लेने के लिये तैयार करें।

इसके आगे काँग्रेस के सत्याग्रह का जिक्र करते हुए आर्य समाज के सत्याग्रह के उद्देश्य के सम्बन्ध में लिखते हैं:—

हैदराबाद में नागरिक अधिकारों के लिए काँग्रेस लड़ रही है। मानों दरबार पर २ तरफ से हमला होगा। आर्य समाज ६० प्रतिशतक जनता के धार्मिक अधिकारों के लिए लड़ेगा और उन धार्मिक अधिकारों की माँग करेगा जो वहाँ की मुस्लिम प्रजा को प्राप्त हैं। वह कहेगा कि आर्यों और हिन्दुओं को लिखने और बोलने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए। उन्हें जलसों की आज्ञा होनी चाहिये ताकि वे खुले-खजाने अपने धर्म का प्रचार कर सकें और सब से बढ़कर दरबार को इस बात की जिम्मेवारी लेनी होगी कि अपने विचारों के लिये किसी आर्य को कष्ट न मिले।"

इसके आगे निज़ाम सरकार की नीति की आलोचना करते हुए उसे सद् परामर्श देते हैं।

"यदि अब भी दरबार अपनी पालिसी में परिवर्तन करे और कठोर नियमों से सहायता लेने के बजाय प्रजा के हृदयों को ढाढ़स दे तो अब भी मैं समझता हूँ युद्ध रुक सकता है। देखें कि निजाम साहब राज्य के कमजोर और अदूरदर्शी अधिकारियों की तरह दमन की नीति का आश्रय लेते हैं या प्रजा के दिलों को अपने हाथ में लेने का यत्न करते हैं।

धर्म और प्रथा के नाम पर

अभी हाल में नाहन के एक हत्या के अभियोग का सेशन जज का फैसला समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुआ है। इस अभियोग में ६ व्यक्ति अभियुक्त थे जिनमें से ३ छोड़ दिए गए हैं और ३ को मृत्यु दण्ड दिया गया है।

अभियोग के अनुसार अभियुक्त एक पहाड़ी जाति के हैं। गत जून में उन्होंने अपनी जाति के एक व्यक्ति

को सुधारवादी होने के कारण भालों से बींधकर मार डाला था। पारिवारिक जीवन में पिता का स्थान अत्यन्त आवश्यक है बहुत-सी बातों में से वह इस बात का भी प्रचार किया करता था। बिरादरी के लोगों ने उसके इस प्रचार से बहुत अप्रसन्न होकर पंचायत बुलाई और पंचायत ने एक गुप्त सभा में भालों से बींधकर उसे मार डालने का निर्णय किया। निर्णय के अनुसार वह व्यक्ति हाथ पाँव बाँधकर एक वृक्ष से बाँध दिया गया और भालों से मार डाला गया।

अपने को निर्दोष बतलाते हुए अभियुक्तों ने कहा कि हमारा जाति का धर्म आज्ञा नहीं देता है कि हम पारिवारिक जीवन में पिता के स्थान में कोई विश्वास रक्खें। हमारे जीवन के कार्यक्रम में स्त्री का ही मुख्य स्थान है। वह स्वतन्त्र है। वह जिससे जितनी बार चाहे शादी करे और जब चाहे उसे तोड़ देवे। इस प्रकार की शादियों की सन्तान अपना कोई पिता स्वीकार नहीं करती है और यह बात उनके धर्म के विरुद्ध समझी जाती है। अभियुक्तों ने यह भी कहा कि उस व्यक्ति को भालों से मारने में उन्होंने अपनी बिरादरी की मुख्य सभा की आज्ञा का पालन किया है, जिसमें बड़े २ धर्माचार्य सम्मिलित हैं।

माननीय जज ने अपने फैसले के दौरान में कहा कि कोई धर्म या प्रथा भले ही इस प्रकार के अधम्य अपराध की आज्ञा देवे, क़ानून इस प्रकार के धर्म व प्रथा को स्वीकार नहीं करता है। धर्म और प्रथाओं के नाम पर होनेवाले अत्याचारों का यह एक बड़ा रोमांचकारी उदाहरण है। प्रकाश के इस युग में इस प्रकार के धर्म और प्रथा की रक्षा हो सकती है जो लोग ऐसा सोचते हैं वे अँधेरे में हैं। पहाड़ी और जङ्गली जातियों में प्रकाश पहुँचाने की कितनी बड़ी आवश्यकता है यह बात इस घटना से बहुत ज्यादा स्पष्ट हो जाती है।

आर्य परिवार संघ

पाठक अन्यत्र आर्य परिवारसंघ की योजना औरउसके नियम पढ़ेंगे। उनके पढ़ने से विदित होगा कि आर्यों में मुख्यतया पारस्परिक खान-पान और विवाह को प्रोत्साहित करने की दिशा में उपर्युक्त योजना एक क्रियात्मक और व्यवस्थित् क़दम है जिसकी आवश्यकता देर से आर्य जगत में अनुभव की जा रही थी। आर्यों को अपने बच्चों के विवाह के लिये उपयुक्त आर्य लड़कों और लड़कियों के मिलने में जो कठिनाई उपस्थित होती है उसे भुक्तभोगी ही जानते हैं। यह संघ इस कठिनाई को हल करने में एक बड़ी सीमा तक सहायक हो सकता है। हम इस योजना का स्वागत करते हैं तथा सफलता की कामना करते हैं।

हैदराबाद दक्षिण

आवश्यक सूचना

— —

सार्वदेशिक-सभा ने, हैद्राबाद दक्षिण में, जो अत्याचार आर्य्यों पर हो रहे हैं, उस सम्बन्ध में आवश्यक कार्य करने के लिए मुझे नियुक्त किया था। इसकी सूचना सभा के कार्यालय से समाचार पत्रों मे भेजी गई। उस सूचना को पाकर जो पत्र आर्य्य भाइयों ने मेरे पास भेजे, वे बड़े उत्साह वर्द्धक हैं। अजमेर और देहरादून दोनों स्थानों के उत्साही आर्य्य-युवकों ने लिखा है कि सत्याग्रह मे सबसे पहले उनका जत्था जाना चाहिये।

मऊनाथ भंजन के सेठ रामगोपाल ने धन, जन प्रत्येक प्रकार की सहायता देने का वचन दिया है और यह भी लिखा है कि आवश्यकता होने पर वे अभी मेरे पास आने के लिए तय्यार हैं। इसी प्रकार की उत्साहपूर्ण बातें अनेक भा यों ने लिखी हैं। ऐसे कार्यों में धन, जन की कितनी आवश्यकता होती या हो सकती है, इसका सभी अंदाजा कर सकते है। मैं इस सम्बन्ध में शोलापुर पहुँच-कर वहाँ की आवश्यकतायें लिखूँगा। मैं आज २७ अक्तूबर की रात में श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के साथ शोलापुर जा रहा हूँ। जाते हुए एक बात मैं सभी आर्य्य-भाइयों और आर्य्य-समाजों से कहना चाहता हूँ कि जब आर्य्य-समाज की सबसे बड़ी सभा ने अपने प्रतिनिधि के रूप में मुझे इस कार्य की पूर्ति के लिए नियुक्त किया है, तो सभी प्रान्तिक सभाओं, आर्य्य-समाजों और आर्य्यभाइयों से मैं उचित रीति से यह आशा करता हूँ कि वे इस कार्य में मुझे पूरी सहायता देंगे और जिन्हें भी मैं अपनी वहाँ की जिस जरूरत के पूरा करने को लिखूँगा, वे बिना अगर-मगर किये उसके पूरा करने का पूरा-पूरा यत्न करेंगे। यह बात अभी से सबको अपने जहन में रखनी चाहिये—

नारायण स्वामी

बलिदान भवन,
देहली

ता० २७-१०-३८

हैदराबाद राज्य और आर्यसमाज

(लेखक श्री नारायणस्वामी जी)

—※—

इस राज्य के कुछेक अदूरदर्शी और ठीक बातों से अनभिज्ञ राज्य कर्मचारियों ने समझ रक्खा है कि आर्यसमाज की संस्था, जो उनके यहाँ काम कर रही है, एक सचित्त-सी रियासत के बाह्य-जगत् से असंबन्धित संस्था है और सुगमता से कुचली जासकती है। उन्होंने अपने इसी अज्ञान और क्षुद्र विचारों से वहाँ के आर्यों पर, तरह २ के अत्याचार कर रक्खे हैं। उनमें से कुछेक का विवरण इस प्रकार है—

(१) पाँच नवयुवक और उत्साही आर्य मुसलमानों द्वारा वध किए जा चुके हैं।

(२) ४०० आर्य इस समय रियासत की जेलों में हैं।

(३) ७०० के लगभग आर्यों पर तरह तरह के मुकद्दमात चल रहे हैं।

(४) आर्यसमाज का कोई पत्र रियासत में नहीं निकल सकता। जो एक निकलता था, वह बन्द कर दिया गया।

(५) आर्यसमाज के मन्दिरों में, कोई उपदेशक बिना आज्ञा प्राप्त किए उपदेश नहीं कर सकता और माँगने पर इजाज़त, प्राय: नहीं मिलती:

(६) कोई आर्य अपने निजी मकान में भी, आर्यसमाज का काम नहीं कर सकता, यदि करे तो उस पर अभियोग चलाये जाते हैं।

(७) यहाँ [राज्य] की पुलिस की मनोवृत्ति समझने के लिए एक घटना का उल्लेख कर देना काफ़ी है। एक बार मैंने स्वयं अपने कानोंसे सुना कि पुलिस के सिपाहियों की एक पार्टी जो वरदी में थी, खुले-ख़जाने सड़कों पर, यह गाती हुई आरही थी कि वह दुनियाँ में इस्लाम का प्रचार करेगी—स्पष्ट है कि वहाँ की पुलिस जनता की सेवक नहीं, अपितु इस्लाम की प्रचारक है।

(८) जेलख़ानों में, रियासत के मुसलमान जेल कर्मचारी हिन्दू क़ैदियों को मुसलमान बनाया करते हैं।

इन उपर्युक्त पंक्तियों में, असंख्य अत्याचारों में से केवल कुछेक का, नमूने के तौर पर, उल्लेख किया गया है। इनसे प्रकट है कि वहाँ आम तौर से हिंदुओं और विशेष कर आर्यों की अवस्था दयनीय है। अब प्रश्न यह है कि रियासत से बाहर के आर्यसमाजों और आर्यों का, इस सम्बन्ध में कर्तव्य क्या है ? क्या यही कि देखते रहें और कुछ न करें अथवा इस से कुछ अधिक। यदि अधिक तो उसके पूरा करने का समय कब आवेगा ?

—:०:—

अध्यात्म-धारा

ईश्वर का भय

श्री० स्व० स्वामी दर्शनानन्द जी के प्रवचन के आधार पर

***

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।

यजु० अ० ४० मं० १

अर्थ—हे जीव! यह सम्पूर्ण संसार जो दृष्टिगोचर हो रहा है या उसके जो भिन्न २ अवयव दिखाई देते हैं वे सब ईश्वर के निवास स्थान हैं। जो मनुष्य परमात्मा की आज्ञाओं को भूल जाते हैं, वे दुःखों को भोगते हैं, इसलिये तू किसी का धन लेने की इच्छा मत कर।

यह कैसा उत्तम उपदेश है, जिसके समझने से मनुष्य सर्वदा पापों से बचकर सुख और शान्ति को प्राप्त कर सकता है। मनुष्य में डरने की स्वाभाविक टेव है। जब मनुष्य कोई पाप करने लगता है तो उस समय उसके चित्त में भय उत्पन्न होता है और वह उस पाप को छिपा कर करने का प्रयत्न करता है। कोई मनुष्य ऐसा नहीं, जिसके हृदय में पाप करते समय भय न उपजता हो। इसी भय के कारण वह घर के भीतर जाकर, किवाड़ बन्द करके और द्वार पर सहयोगियों को खड़ा करके पाप करता है। यदि मनुष्य को यह ज्ञान होता, कि मैं पाप करके किसी प्रकार भी दण्ड से नहीं बच सकता, तो वह कदापि पाप न करता, परन्तु मनुष्यों के हृदय में धार्मिक-शिक्षा न होने के कारण उनको परमात्मा की सत्ता एवं सर्व-व्यापकता का ज्ञान तो होता ही नहीं, इससे वे परमात्मा से न डरकर केवल मनुष्यों के भय से बचने का प्रयत्न करते हैं। वर्त्तमान समय में सबसे प्रथम तो मानुषिक भय गवर्नमेंट का है। वे जिसको इस प्रकार निवृत्त कर लेते हैं, कि इस बन्द घर में कोई देखता ही नहीं है। यदि कोई मनुष्य देख भी लेगा और वह गवर्नमेंट का कर्मचारी होगा, तो उसे कुछ घूंस दे दी जायगी। इससे भी काम न चलेगा, तो झूँठे साक्षी उपस्थित कर दिये जावेंगे, जिन से कि न्यायालय से अवश्यमेव छुटकारा हो जावेगा। यदि इसमें भी सफलता न हुई, तो वकील (प्राड्विवाक) करके मुक़द्दमे को क़ानूनी कमजोरियों (राजकीय नियमों की त्रुटियों) से जीत जाऊँगा और यदि इन बातों से भी काम न चला, तो न्यायाधीशों को पूरी घूंस देकर बच जाऊँगा। यह विचार हैं जिनके कारण मनुष्य गवर्नमेंट का भय होते हुवे भी पाप करना नहीं छोड़ते। दूसरा भय जाति का है, वह तो आजकल जाता ही रहा। जिसका कारण यह है कि जाति में ऐसे मनुष्य बहुत थोड़े देखने में आवेंगे जो स्वय

किसी-न-किसी पाप के अपराधी न हों। जब कोई मनुष्य किसी पापी को जाति-सभा के समक्ष मे उपस्थित करने लगता है, तो यह विचार तुरन्त ही उसके मनमें आ पहुँचता है कि यह भी मेरे दोष अवश्य प्रकट करेगा बस ? वह अपने विचार को छोड़ देता है। तीसरा भय लोक लाज का है, सो इसका तो आजकल चिह्न भी नही दिखाई देता। जब देश की यह दशा है, तो पापों का बढ़ना आवश्यक ही है। जब पाप अधिक होने लगेगा तो दुर्भिक्ष, प्लेग, भूकम्प तथा लड़ाई-झगड़े आपत्तियों का आना अत्यावश्यकीय है, जिसका उपचार (इलाज) किसी मनुष्य के हाथ में नहीं, न गवर्नमेंट इसको रोक सकती है और न जाति ही उसका कोई रोक थाम कर सकती है, ऐसी अवस्था मे मस्तिष्क पर धार्मिक शिक्षा का प्रभाव किये बिना मनुष्यों का पापों को छोड़ना बहुत कठिन है। प्राचीन काल मे जब मनुष्य ईश्वर से डरते थे, तो उस समय संसार मे पाप बहुत ही थोड़ा दिखाई देता था, परन्तु जब से वेदों की शिक्षा बन्द हो गई और जनता या तो नास्तिक हो गई या ईश्वर को एक-देशी मानने लगी, तो उनको पाप करते समय ईश्वर का भय न रहा। वेदों की पवित्र शिक्षा के समय मे पाप करना, अति दुष्कर जान पड़ता था, क्योकि जब मनुष्य यह जानता है कि मेरे पापों का दण्ड देनेवाला मेरे सम्मुख विद्यमान है, जिसको मै किसी प्रकार की घूंस से प्रसन्न नहीं कर सकता। न झूठे साक्षियो से छुटकारा होगा, क्योंकि वह स्वयं देख रहा है, न वकील से काम चलेगा, क्योंकि वह सर्वज्ञ है, अत. वह किसी प्रकार धोखे मे नहीं आ सकता है। न उसके राज्य से भाग कर कहीं जाया जा सकता है, अत. वह इससे भयभीत हो तुरन्त पापों को छोड़ देता है, परन्तु ईश्वर को नहीं मानना एक ऐसी बुराई है, जो मनुष्य को साहस दिलाती है और जिसके कारण वह पाप से नहीं बचता। वह जानता है कि जब पुलिस पकड़ने आवेगी, तो उसके मुक़ाबले में सफलता की आशा है। बहुधा राजा, महाराजा और नवाब आदिक तो अपने को पुलिस के भय से रहित ही समझते हैं। जब मनुष्य को यह विश्वास हो जावे कि जिस शक्ति के हाथ मे मेरे पापों का फल देना है, वह इतनी बलशाली है कि ससार के बडे-से बडे महाराजा, लाखों सेना, हाथी, घोडे, खड्ग, भुशुण्डी [बन्दूक] तोप और डिनामेट के गोले आदि रखते हुये भी उसके वारेन्ट मौत (मृत्यु-संदेश) को एक मिनिट के लिए भी कोई नहीं रोक सकता, क्योंकि यह समस्त अस्त्र शस्त्रादि तो बाह्य-आक्रमण के रोकने के निमित्त है, परन्तु पापों का दण्ड देनेवाली शक्ति तो भीतर विद्यमान है। कितना ही बड़ा दुर्ग बना लिया जाय, वह केवल बाह्य शक्तियों से बचाने के लिए लाभकारी होगा, आन्तरिक शक्ति से बचाने के लिए तो वह बिल्कुल निकम्मा है। जितने सहायक हों, वे भी देह-धारियों से बचा सकते है, परन्तु देह रहित निराकार ईश्वर पर इनका कोई प्रयोग नहीं हो सकता है। जितने शस्त्रास्त्र है, वे सब भी देह-धारी पर ही चलाये जा सकते हैं।

जिस शक्ति से पाप करके हम किसी प्रकार नहीं बच सकते और न कोई सांसारिक साधन उसको रोक सकते हैं, ऐसी शक्ति से विमुख होना मानो अपने को दु.ख के समुद्र में डुबोना है। मनुष्य दु.ख का कारण जानकर किसी काम को नहीं करता। उसकी इच्छा तो सुख प्राप्त करने एवं दु.ख से बचने की है, अतः वह पाप को दु ख का कारण जानते हुये कभी नहीं कर सकता। यदि संसार में दु ख से बचानेवाली कोई शक्ति है—तो वह ईश्वर का भय है, जिसका दृढ़ विश्वास होना चाहिये। यदि मनुष्य को यह विश्वास हो जावे, कि ईश्वर, संसार के प्रत्येक खण्ड में विद्यमान है, मेरे भीतर भी है, मैं किसी प्रकार उसकी दृष्टि से अपने पापों को नहीं छिपा सकता हूँ और न ईश्वर का पुत्र मुझे पाप करने पर दण्ड से बचा सकता है और न किसी की शफ़ाअत [सुफारिश] से पापों से बचना हो सकता है और न किसी प्रकार के छापे तिलक तथा भेष-धारण करके पापों के फल से बचा सकता हूँ, तो वह कभी पाप न करेगा, जितने मतमतान्तर हैं, ये सब पाप बढ़ने के कारण हैं, क्योंकि ये ईश्वर को एकदेशी मानते हैं, जिससे मनुष्य के हृदय मे उसका भय तनिक भी नहीं रहता है।

कतिपय मनुष्य तो यह विचार लेते हैं, कि पाप करके "तोबा"-कर लेंगे, तो परमात्मा हमारे पापों को क्षमा कर देगा परन्तु जब तनिक "तोबा" करने से ही पाप क्षमा हो जावेंगे, तो पापों से कोई क्यों बचेगा। किसी ने कहा कि पापों का भार मसीह उठाकर ले गया। भला? फिर ईसाई पाप करने से क्यों बचेंगे। किसी ने समझा कि गगा स्नान से मुक्ति होगी और सहस्त्रों जन्म के पाप छूट जावेंगे। अब बताइए यह मानने वाला पाप से क्या डरेगा। आज कल तो गंगा जाने के लिये दो तीन रुपये से अधिक की आवश्यकता ही नहीं है। बस ? जब तीन रुपये में ही पाप छूटने लगे-तो फिर धनी क्यों पाप से डरेंगे। इस प्रकार इन मतमतान्तर वालों ने ईश्वर को एकदेशी मान कर उसको सासारिक गवर्नमैंट की भाति पापों के हटाने में अशक्त बना दिया है।

बहुधा मनुष्य कहेंगे कि हम तो ईश्वर को एकदेशी नहीं मानते, परन्तु उनसे पूछें कि जब तुम्हारा ईश्वर एकदेशी ही नहीं-तो फिर उसके पैग़म्बर (दूत) किस प्रकार हो सकते हैं, क्योंकि पैग़म्बर का अर्थ पैग़ाम [संदेशा] लाने वाले के हैं और पैग़ाम सर्वदा दूर से आया करता है। दूरी सर्वदा एकदेशी पदार्थों के बीच में होती है। बस ? पैग़म्बर मानना ईश्वर को एकदेशी मान कर उसके भय से ससार को हटा उसे (ससार को) पापी बनाना है। जो मनुष्य कफ्फारा (ईसा-द्वारा गुनाहों से छूटने) से मोक्ष मानते हैं, वे मानों घूँस देकर परमेश्वर के दण्ड से बचना चाहते हैं।

इसी भाति जो लोग अवतार मानते हैं, वे भी ईश्वर को एकदेशी मानते हैं, नहीं, तो वह पहिले किस शरीर में नहीं था, जहा उसने अवतार लिया।

इसी प्रकार किसी ने उसको सातवें आस्मान पर जा बैठाया और किसी ने चौथे आस्मान पर उसका स्थान ठहराया। कोई वैकुण्ठ में बताने लगा और कोई क्षीर-सागर में गोता खाने लगा। किसीने गोलोक को उसका निवासस्थान बनाया और किसी ने कैलासवासी जा ठहराया। साराश यह है, कि इन मतमतान्तरों के दीपकों ने अपने परिमित प्रकाश के कारण अपने प्रकाश के बाहर उसे न देख कर इतना ही बताया, जिससे यह समय आगया कि चारों ओर पापों का समुद्र वेग से बहने लगा। लोग एक आने के लिये झूठ बोलने के लिए तय्यार हैं। अपनी आयु ईश्वर भक्ति, धन के लिए गँवा देते हैं। कतिपय मनुष्यों ने तो धन को परमेश्वर की मूर्ति भी बना दिया। भला ? उन्हें वैराग्य किस प्रकार हो सकता है। वे समझते हैं कि यदि और किसी की सिफारिश न सुनी जायगी, तो उसकी श्री जिसके संचय करने में हमारा समस्त जीवन व्यतीत हुआ है, जिसकी भक्ति हमने धर्म, कर्म और सत् असत् का विचार छोड़ कर की है, जिस के लिए हमने लाखों पाप किए हैं, सहस्रों मनुष्यों को धोखे दिए, उसकी सिफारिश (अनुरोध) से तो अवश्य ही काम निकल आवेगा। ऐसे विचारों ने ही तो मनुष्य जाति के मस्तिष्क को हानि पहुंचाई है। नहीं-नहीं ? उनको मनुष्य से पशु बना दिया है, क्योंकि पशु आगामी का विचार न करके केवल वर्तमान स्थिति के लिये ही प्रयत्न करता है, इसी प्रकार वर्तमान समय के मनुष्य, धर्म के द्वारा होने वाले भविष्य के प्रबन्ध को छोड़ कर धन से पूर्ण हो जाने वाले वर्तमान के प्रबन्ध में लग गये हैं। उनको यह ध्यान नहीं कि यह धन हमारे मरने पर हमारे संग नहीं जायगा। इस बात का ध्यान उन्हें हो भी कैसे सकता है ? क्योंकि मृत्यु तो आगे होगी और उन्होंने पशुओं से यह पाठ पढ़ लिया है कि आगामी की चिन्ता ही नहीं करनी है, केवल वर्तमान के लिए ही प्रबन्ध करना चाहिए—यही कारण है, कि सम्पूर्ण देश का धन अपने अधिकार में लाना चाहते हैं।

यदि धर्म-दृष्टि से कोई ऐसा काम करे-तब तो कोई शिकायत का स्थान नहीं परन्तु यह तो अपने साथियों की हानि पहुँचाकर और उनको अपने वश मे लाकर अपना दास बनाना चाहते हैं। उन्हें यह पता नहीं कि प्राकृतिक नियमानुकूल मनुष्य इस बात मे असमर्थ है, कि बिना परोपकार किए अपना भला नहीं कर सकता। क्योंकि कुदरत (ईश्वरीय नियमों) ने मनुष्य के शरीर में भिन्न २ अवयव रख कर यह शिक्षा दी है, कि जिस प्रकार मनुष्य के शरीर का कोई अ ग अपनी सहायता से आप ही लाभ नहीं उठा सकता, जब तक वह अन्य अवयवों को उस मे सम्मिलित न कर लेवे।

इस प्राकृतिक शिक्षा से विदित होता है, कि यदि एक अवयव दूसरे अवयव से विरोध करके अपना काम छोड़ दे अथवा उससे भी जो फल प्राप्त हो, उसे भी अपने पास रख ले, तो परिणाम यह होगा कि वह अवयव अवश्य नष्ट हो जायगा, क्योंकि उस वस्तु से जो भोजन उसे मिलता था, वह न मिलेगा। कुदरत बतला रही है कि जिस

प्रकार शरीर के सम्पूर्ण अवयव एक दूसरे के लिये काम कर रहे हैं, इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य को दूसरों के लिए काम करना चाहिए, जिससे उसका अस्तित्व बना रहे अन्यथा अपने लिए काम करने में तो अपने जीवन को बनाये रखना निरा असम्भव होगा। साराश यह कि स्वार्थ का नाश ही उन्नति का पहिला भाग है-इसीलिए नीतिकार ने कहा है :—

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

अर्थ— यह मेरा और यह दूसरों का है-थोड़ी बुद्धि वालों का ऐसा विचार होता है, परन्तु जो बुद्धिमान् हैं, वे तो समस्त संसार को ही अपना कुटुम्ब समझते हैं। जब तक सम्पूर्ण जीवों को अपना न समझा जावेगा, तब तक मनुष्य को कुदरती तौर पर उत्तम कर्म करने की योग्यता ही नहीं होगी।

कुछ मनुष्य यह कहेंगे कि हमें अपनी जाति में दूसरी जाति से स्वत्व प्राप्त करने की जागृति उत्पन्न करनी चाहिए और अपनी जाति की ही सहायता करना उचित है, परन्तु यह विचार (प्राकृतिक) नियम के नितान्त विरुद्ध और नाश करने वाला है, क्योंकि हमारे शरीर में कई जातिया विद्यमान हैं, जैसे एक जाति तो ज्ञानेन्द्रियों की दूसरी कर्मेन्द्रियों की और तीसरी नाड़ियों की है। अब यदि ज्ञानेन्द्रिया कुदरती यह विचार करलें, कि हमें कर्मेन्द्रियों की सहायता न करनी चाहिये तो आंख, हाथ को मार्ग न दिखा कर अपने सजाति नाक, कान, रसना तथा त्वचा को मार्ग दिखावेगी और अपनी वस्तुओं की माहियत (आन्तरिकदशा) बतावेगी, जिसको उठाने की शक्ति इनमें से एक भी नहीं रखती। परिणाम यह होगा कि आंख न तो स्वयं भोजन प्राप्त कर सकेगी और न अपने सजाति ज्ञानेन्द्रियोंको भोजन मिलने देगी। इससे यह स्पष्ट प्रकट होता है कि आंख का काम है कि कर्मेन्द्रिय हाथ पांव की सहायता करे और हाथ भी ज्ञानेन्द्रिय अर्थात् रसना को सौंप देवें। यह ऐसा उत्तम पाठ मिल रहा है कि कौमी ख़याल (जाति का भाव) मनुष्य जाति के लिये हानिकारक है। जब तक मनुष्य प्रत्येक को अपना भाई समझ कर उसके स्वत्व छीनने से न हटेंगे और अपने हृदय में शत्रु-मित्र का भेद रखेंगे-तब तक उन्नति का स्वप्न में भी दर्शन न होगा। इसलिये आवश्यक है कि प्रत्येक मनुष्य बिना जाति-भेद-भाव के प्राणी मात्र की सहायता का प्रयत्न करे, जिससे स्वयं उसका अस्तित्व भी बना रहे।

यहां से एक और पाठ भी मिलता है, कि यदि पेट अपने काम को भली भांति न करे और उस भोजन को दूसरों को बांटने की जगह अपने ही पास इकट्ठा करले तो पेट में दर्द आरम्भ हो जाता है और महान् क्लेश होने लगता है। यह सब कुछ तभी होता है जब जो प्राण-वायु, प्रत्येक को उसका भाग पहुँचाता है, पेट की सहायता नहीं करता है। जिस प्रकार प्राण-वायु, शरीर के प्रत्येक अवयव में रह कर उनसे काम कराता है तथा पेट की सहायता करके उनको

बलिष्ठ करने के लिये आहार पहुंचाता है, इसी प्रकार संसार में धर्म है, जो प्रत्येक मनुष्य से काम तथा उससे दूसरों की सहायता कराना चाहता है। जहां समाज में धन इकट्ठा करने का विचार उत्पन्न हो जाता है तो यहीं से उसको कब्ज की शिकायत (मलावरोध का कष्ट) हो जाती है और तुरन्त ही उसके हाथ-पॉव ढीले हो जाते हैं। जिस प्रकार पेट मे अधिक समय तक वस्तु के रहने से शरीर के अवयवों को हानि पहुँचती है, इसी प्रकार समाज के धनी होने से प्रत्येक मनुष्य शिथिल हो जाता है और चाहता है कि वह स्वयं काम न करे, क्योंकि जिस सोसाइटी (समाज) की सहायतार्थ वह काम करना चाहता था,अब उस समाज ने धन एकत्रित करके अपनी आवश्य-कताओं को काम पर नहीं निर्भर रक्खा—वरन् मजमूआ (इकट्ठा करने) पर रक्खा है। चूँकि पेट मे आहार के इकट्ठा पड़े रहने से सिवा हानि के किसी को लाभ नहीं होता इसी प्रकार समाज के पास अधिक धन रहने से उसके अङ्ग मनुष्यों में शिथिलता होकर अति-हानि पहुँचती है और आपस में स्वार्थ फैल जाता है। पहले मनुष्य, समाज से पाठ लेते थे—अब समाज उनको धन एकत्रित करने का पाठ पढ़ाता है, जो स्वार्थ के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार हो नहीं सकता। इसलिए परमात्मा ने बताया कि तुम किसी का धन लेने की इच्छा न करो। जब हम किसी का धन न लेंगे, तो हमे स्वयं अपने श्रम से पैदा करना होगा। जब समाज का प्रत्येक मुहसन (नेक) अङ्ग अपने में धर्म रखनेवाला होगा, तो समाज भी इसी प्रकार का हो जायेगा। जब समाज इस प्रकार का होगा, तब तो अवश्य ही ससार मे सुख-ही-सुख दृष्टि-गोचर होगा। जब तक मनुष्य ईश्वर को सर्वव्यापक न मानेगा, तब तक प्राण अर्थात् धर्म रह नहीं सकता। अब जिस प्रकार प्राण वायु को सहायता अग्नि से होती है—उसी प्रकार धर्म की सहायता परमात्मा से होती है। जहाँ अग्नि मन्द हुई वहीं से वायु का बिगड़ना आरम्भ हो जाता है, इसी प्रकार जहाँ ईश्वर का विश्वास और उसके सर्वव्यापी होने का विचार दूर हुआ कि वहीं से धर्म भी बिगड़ने लगता है। इस समय मनुष्य पाप से डरना छोड़ देते हैं।

क्या ऋषि दयानन्द 'ऋषि' नहीं कहे जा सकते हैं ?

(लेखक—श्री० पं० शिवशर्मा जी)

❀ ❀

कुछ महानुभाव ऐसे भी हैं जो बिना सोचे विचारे ही ऋषि दयानन्द जी पर व्यर्थ ही आक्षेप किया करते हैं। उन आक्षेपों में से एक आक्षेप यह भी है कि श्री स्वामी दयानन्द जी ऋषि नहीं कहाये जा सकते, क्योंकि ऋषि उस को कहते हैं जो मन्त्र का द्रष्टा हो। श्री स्वामी दयानन्द जी किसी मन्त्र के द्रष्टा नहीं हैं अत: वे ऋषि नहीं कहाये जा सकते? परन्तु यह विचार नितान्त ही अशुद्ध है—केवल उनक भ्रान्ति मात्र है। यह बात सत्य है कि मन्त्र द्रष्टा ऋषि होते हैं परन्तु यह सिद्धान्त भी ठीक है कि वेदोद्धारक, वेद प्रचारक और किसी विशेष विद्या के प्रचारक को भी ऋषि कहते हैं।

ऋषि शब्द ऋष् गतौ धातु से उणादि प्रत्यय से बनता है, जिसके अर्थ हैं—ज्ञानी। जिन पर सृष्टि के आदि मे वेदों का प्रकाश हुआ हो वह ज्ञानी—ऋषि हैं। जिन्होंने तदुपरान्त वेदों के अर्थों का समाधिस्थ होकर विशेष अनुसन्धान किया हो, वे भी ऋषि कहाये। परन्तु स्मरण रहे कि उनके पश्चात् सदैव कालके लिये ऋषित्व का द्वार बन्द नहीं हो गया। ऋषि शब्द अनेक अर्थों का वाचक है—इसके वाच्य बहुत हैं।

१—"ऋषिर्हिपूर्वजा अस्येक ईशान ओजसा"

ऋ० ८।६।४१॥

भावार्थ— ऋषि) द्रष्टा (हि) निश्चय (पूर्वजा) पहला—सर्वोत्कृष्ट (असि) है (एक) अकेला (ईशान) स्वामी (ओजसा) बल से।

Griffith—Thou art a Rishi born of old, sole Ruler over all by might.

यहाँ पर ईश्वर को ही ऋषि कहा गया है।

२—व्यास जी ऋषि, महर्षि और परमर्षि थे—

(१) कामोपभोगेन रहस्तस्या तुष्टि मगाद् ऋषि। महा० आदिपर्व अ० १०६।२६

(२) अध्यायाना शत प्रोक्तं षडशीतिमहर्षिणा आदि पर्व अ० २।४२

(३) अध्यायानां शतं द्वेतु संख्याते परमर्षिणा। आदि पर्व अ० २ श्लोक १३० प्रति नपम पी

३—वेदमन्त्रों को भी ऋषि कहते हैं—

कर्त्तरिचर्षि देवतयो। अष्टाध्यायी ३।२।१८६

इस पर महोत्रि दीक्षित—'ऋषिर्वेदमन्त्र"।

पितृयाण वापिहि न ऋर्षेर्वच. श्रुतम्—

"द्वेसृती अशृणव पितृणामहं देवानाम्।

बृह० उप० ६।२।२॥

४—तस्मादियं वाक् इदानीमपि पाणिन्यादि महर्षिभिव्याकृता सर्वैःपठ्यते। इत्यर्थः।

निरुक्तालोचनम् पृ० २

यहाँ पर पाणिनि को ऋषि कहा है।

५—प्राप्तराज्यस्य रामस्य वाल्मीकिर्भगवान् ऋषि। बाल्मी० रा० बालकाण्ड सर्ग ४ श्लोक १॥

यहाँ पर बाल्मीकि जी को ऋषि कहा है।

ऋषेर्धर्मात्मनस्तस्य कारुण्य समपद्यत।

वा० रा० का० १ स० २ श्लोक १३

चतुर्विंश सहस्राणि श्लोकानामुक्तवान् ऋषि

बा० रा० बालकांड स० ४।२

एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं, परं कौतूहलंहिमे। महर्षेत्वं समर्थोऽसि ज्ञातुमेवंविधं नरम्।

बा० रा० बाल० स० १।५

ये सब ही श्लोक बाल्मीकि जी को ऋषि महर्षि कह रहे हैं।

६—प्राणो वै वसिष्ठ ऋषि। मनोवै भरद्वाज ऋषिः। चक्षुर्वै जमदग्नि ऋषिः।

शतपथ ८।१।६॥ ८।१।८॥ ८।२।३॥

यहां पर प्राणों को ऋषि कहा है।

७—"तस्मैश्वाश्वेत प्रादुर्बभूव तमन्येश्वान उपसमेत्योचुरन्नं नो भगवानागायत्वशयाम वा इति"। छा० उ० प्रपा० १ खं० १२ प्रवाक् २॥

मुख्यप्राणा वागादयो वा प्राणमन्वन्नभुञ्जः। स्वाध्याय परितोषितः सन्तः अनुगृह्णीयुरेन श्वरूपं मादायेति।

इस पर शङ्कर स्वामी—

स्वाध्यायेन तोषिता देवता ऋषिर्वागृहीत्वा-श्वावेतः सन् तस्मै तस्मैऋषये प्रादुर्बभूव"।

इस पर आनन्दगिरि—

"श्वेतश्वाकश्चिद् ऋषिर्देवता" अन्येच—श्वानो देवता ऋषयोवा। यहाँ पर कुत्ते को ऋषि कहा है।

श्रवण वर्णसङ्कर और शूद्र था वह भी ऋषि कहाया—

८—(१) ब्रह्महत्यादिकं पापंहृदयादपनीयताम नद्विजातिरहं राजन्! माभूत्तेमनसोन्यथा। ५०। शूद्रायामस्मि वैश्येन जातो नर नराधिप! बाल० रा० अयो० स० ६३। ६४।

अर्थात् श्रवण कहता है—हे राजन्! ब्रह्महत्या के पाप को हृदय से दूर करदे। मैं द्विज नहीं हूँ। तेरे मन को दु.ख न हो मैं वैश्य द्वारा शूद्रा में उत्पन्न हुआ हूँ।

परन्तु गुण से दशरथ ने इसको ऋषि कहा—

(२) ऋषिर्हिन्यस्त दण्डस्य वने वन्येन जीवितः
कथंनुशस्त्रेण वधोमद्विधानस्य धीमत.।

(३)तस्याहं करुणंश्रुत्वा ऋषेर्विलपतो निशि।३८
संभ्रान्तः शोकवेगेन भृशमासं विचेतनः। ३५

(४) वधमप्रतिरूपत्वं महर्षेस्तस्य राघवः।
विलपन्नेव धर्मात्मा कौसल्यामिदमब्रवीत्।

अयो० स० ३३।३४।३५

अब विचारिये, जो यह कहते हैं कि "मन्त्र-दर्शनात् खलु, ऋषीणां ऋषित्वम्।" अर्थात्—केवल ऋषि वही है, जिसने मन्त्रों को देखा हो। कहाँ तक सत्यता पर है? "अथवा ऋषियोमन्त्र द्रष्टारः" की रटना लगाकर महर्षि स्वामी दयानन्द के ऋषित्व पर सन्देह करते हैं? क्या व्यासदेव जी, बालमीक जी, पाणिनि जी, श्रवण और

बौद्ध धर्म में स्त्री का स्थान

(श्री० डा० अलटेकर एम०एल०एल०बी०डी०लिट्)

नारदादि देवर्षि किसी मन्त्र के द्रष्टा ऋषि हैं ? यदि नहीं, तो इनको ऋषित्व, परमर्षित्व और महर्षित्व किस योग्यता से मिला ? फिर यह नियम कहाँ रहा कि मन्त्र द्रष्टा ही ऋषि कहावे अन्य विद्वान् नहीं ? जिसने किसी एक मन्त्र का भी विशेषार्थ परक अनुसन्धान किया वह ऋषि कहाया; परन्तु चारों वेदों का परमोद्धारक श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वती परिव्राजकाचार्य ऋषि तक न कहावे ? किमाश्चर्यमत परम् ? इन सब बातों के अतिरिक्त जो-जो आर्ष-ग्रन्थ कहाते हैं, वे सब ऋषियों के बनाये हैं। आर्ष शब्द ही ऋषि शब्द से बना है। अर्थात् जो ऋषिप्रोक्त हो वह आर्ष। यदि हम आर्ष-ग्रन्थों की नामावलि लिखकर यह पूँछने लगें कि यह ग्रन्थकर्त्ता 'ऋषि' किस योग्यता से कहाये, तो विरोधियों को चुप ही रहना पड़ेगा।

अपने संघ मे स्त्रियों को प्रविष्ट करनेकी बुद्ध भगवान की इच्छा नहीं थी। अपनी माता के अत्यन्त आग्रह पर बड़ी अनिच्छा से भिक्षुणियों को संघ में प्रवेश को आज्ञा दी थी। इन भिक्षुणियों को भिक्षुओं की अपेक्षा बहुत कड़े नियन्त्रण और प्रतिबन्धों मे रहना होता था। कुछ प्रतिबन्ध सचमुच बडे युक्तियुक्त थे। यह नियम बना दिया गया था कि भिक्षुओं के संरक्षण के बिना भिक्षुणियों को अकेले कहीं नहीं ठहरना चाहिए। बुरे आदमियो की सगति से उन्हें दूर रहना चाहिए। जिनकी पवित्रता और सचाई मे जरा भी सदेह नहीं है ऐसे ही भिक्षुओं को उनके सामने उपदेश देना चाहिए। भिक्षुणियों को सदैव दो-दो, तीन-तीन के समूह मे रहना चाहिए। दूसरे कुछ नियम स्त्रियो के आचार और योग्यता मे अविश्वास के सूचक हैं। नवीन भिक्षुणी के सघ मे प्रवेश की आज्ञा भिक्षु और भिक्षुणियों की सम्मिलित मीटिंग देती थी जब कि नए भिक्षु भिक्षुणियों से परामर्श लिए बगैर प्रविष्ट हो सकते थे। जब अनुभवी सरक्षिका साथ मे होती थी तब ही भिक्षुणियों को भिक्षा के लिये बाहर भेजा जाता था। बौद्ध संघ में स्त्रियों के प्रति विषम व्यवहार की पराकाष्ठा एक विचित्र नियम से हो गई थी। वह नियम यह था कि भिक्षुणी को भले ही वह १०० वर्ष की उम्र की क्यों न हो बौद्ध भिक्षु के सामने सम्मानार्थ खड़ा होना चाहिए। वह भिक्षु भले ही संघमें नया ही क्यों न प्रविष्ट हुआ हो। पाठकों को अब यह जान कर आश्चर्य न होगा कि कोई भी भिक्षुणी-भिक्षुओं के सत्संघ में उपदेश नहीं देसकती थी हाँ खास २ चुने हुए भिक्षु उनके सत्संगों में उपदेश दे सकते

थे। यहां यह भी कह दिया जाता है कि प्रारंभिक काल के ईसाई गुरुओं के भी ऐसे ही विचार थे। उनकी धारणा थी कि स्त्रियों को उपदेशाधिकार देना कुदरत के विरुद्ध है। लोडोशिया की कौंसिल ने ३६५ई० में स्त्रियों के लिये उपदेश का द्वार बन्द कर दिया था और उन द्वारों को खुलवाने में स्त्रियों के समस्त आन्दोलन आजतक भी सफल नहीं हुए हैं। इस्लाम स्त्रियों को कुरान के पढ़ने की आज्ञा तो देता है परन्तु इनमें से उपदेश करनेकी नहीं।

ऊपर के नियमों में मनुष्य के बड़प्पन का भाव पाया जाता है और जहाँ तक स्त्रियों का सम्बन्ध है जिसका परित्याग करना प्रायः मनुष्य के लिए कठिन होता है। ये सब नियम सदैव व्यवहार में नहीं आते थे। किसी दशा में भी भिक्षुओं को उपदेश न देने का सिद्धान्त नेमीनाथ की पत्नी राजमती के मार्ग में बाधक नहीं हुआ। उसने अपने बहनोई को जिसका आत्म-संयम जाता रहा था उपदेश दिया था।

इन सब पक्षपात-पूर्ण नियमों के होते हुये भी संघ में स्त्रियों के प्रवेश की आज्ञा ने उनके सम्मुख एक आकर्षक भविष्य प्रस्तुत कर दिया था। बुद्ध धर्म से पूर्व सुलभा गार्गी इत्यादि उत्कृष्ट प्रचारिकाएँ हो गई थीं परन्तु बौद्ध क्षेत्रों में इन प्रचारिकाओं की संख्या बहुत बढ़ गई थी। बौद्ध धर्म का मत था कि स्त्रीत्व मोक्ष में बाधक नहीं है। स्त्रियों के लिए विवाह आवश्यक नहीं है वरन् यह एक जंजीर या बेड़ी है जिससे स्त्रियों को बचना चाहिए।

थेरी गाथा की भिक्षुणियों में बहु संख्या उन स्त्रियों की है जिन्होंने अपनी कौमार्य्य अवस्था में सँसार का परित्याग कर दिया था। बौद्ध धर्म ने प्रचार और लोक-सेवा का जो द्वार खोल दिया था उससे बहुत सी योग्य देवियाँ आकर्षित हुई थीं और वे बहुत अच्छी प्रचारिका सिद्ध हुई थीं। हम बहुत सी राजकुमारियों को विवाह के प्रलोभनों को लात मारते और बौद्ध धर्म की प्रचार मण्डलियों में प्रवेश करते हुए देखते हैं। कौशाम्बी की राजकुमारी जिस क्षण जीव और जीवन के आदर्श के सम्बन्ध में उसकी शंकाओं का समाधान हो गया था राज वेष का परित्याग करके भिक्षुणी बन गई थी। सुमन बाला और अभिरूपा जैसी कुछ देवियाँ गृहस्थ के अत्याचारों से तंग आकर संघ में प्रविष्ट हो गई थीं परन्तु उनकी संख्या बहुत बड़ी नहीं देख पड़ती है।

जब नियन्त्रण मे ढिलाई आई और अयोग्य आदमी भिक्षु संघों में प्रविष्ट हो गए तो संघों के सदाचार का पतन हो गया और साथ ही बौद्ध धर्म के पतन की गति भी तीव्र हो गई। इसके बाद हिन्दू धर्म ने बौद्ध संघों और विहारों में जो कुछ देखा था उससे पाठ ग्रहण किया और और स्त्रियों को संसार परित्याग और भिक्षुणी बनने से इन्कार कर दिया। हिन्दू धर्म ने बतलाया कि गृहस्थ धर्म का उचित रीति से पालन करना ही स्त्रियों का परम पवित्र कर्त्तव्य है और इसका परिणाम यह हुआ कि गत १५० वर्ष में हिन्दू धर्म से भिक्षुणियों का लग भग लोप हो गया।

सत्यार्थ-प्रकाश लेख-माला

ब्राह्मण ग्रंथ ही पुराण हैं

(श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी)

सत्यार्थ-प्रकाश में तृतीय और एकादश समुल्लास में महर्षि जी ने निम्न पाठ उद्धृत किया है:—'ब्राह्मणानीतिहासान् पुराणानि कल्पान् गाथा नाराशसीरिति। समुल्लास ३। यह गृह्य सूत्रादि (आश्वलायन) का वचन है। जो एतरेय, शतपथादि ब्राह्मण लिख आये उन्हीं के इतिहास, पुराण, कल्प, गाथा और नाराशंसी पांच नाम हैं श्रीमद्भागवतादि का नाम पुराण नहीं।' एकादश समुल्लास मे यही पाठ उद्धृत करके लिखा है।

'यह ब्राह्मण और सूत्रों का वचन है। एतरेय शतपथ, साम और गोपथ ब्राह्मण ग्रन्थों ही के इतिहास, पुराण, कल्प, गाथा और नाराशसी ये पाच नाम हैं ।'

सत्यार्थ-प्रकाश के लेख से यह सिद्धांत सिद्ध होता है कि जो १८ पुराण माने जाते हैं प्रथम यह पुराण न थे और संस्कृत में वैदिक साहित्य में जो ब्राह्मण हैं जिनको आर्यसमाज परतः प्रमाण मानता है और सनातन धर्मावलम्बी वेद ही लिखते हैं उनके ही किसी भाग को पुराण कहा जाता था। महर्षि जी ने उपरिलिखित प्रतीक में यही बात लिखी है।

सत्याषाढ़ श्रौत सूत्र में एक स्थान पर इस विषय पर विचार किया गया है। उसमें वेद, ब्राह्मण का चरचा भी है। वह एक लम्बा उद्धरण है, पाठक उसे पढ़कर देखें कि वहा यही भाव है या नहीं। मेरी सम्मति मे उन्होंने भी सत्यार्थ-प्रकाशवत साफ २ लिखा है कि ब्राह्मण का कुछ भाग पुराण भी होता है।

अथैतेषा प्रस्थानाना स्वरूपभेदहेतु प्रयोजन-भेदस्तावत्किंचिदुच्यते। तत्र धर्म प्रतिपादकमपौरुषेयं वाक्यं वेद.। स च मन्त्र ब्राह्मणात्मक·। 'मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्' (आप० श्रौ० परि०) इति तत्स्वरूपस्यान्यत्रोक्ते.। तत्र मन्त्रा अनुष्ठान-कारकभूतद्रव्यदेवताप्रकाशक·। ते चर्ग्यजु.सम-भेदेन त्रिविधा.। अथर्वणवेदस्य एतेषु त्रिष्वेवान्त-र्भूतत्त्वेन प्रथक्त्वयानभिधानम्। तदेवं निरूपिता मन्त्रा। मन्त्र व्याख्यानरूपं ब्राह्मणमपि त्रिविधम्। विधिरूपमर्थवादरूपं तदुभय विलक्षणं चेति। तत्र विध्यादीना लक्षणभेदादिविस्तरोऽन्यतोऽवसेयः। तदेतद् ब्राह्मणं च पुनरष्टविधम्। तदुक्तं बृहदारण्यके—'इतिहास.पुराणं विद्या उपनिषद: श्लोकाः सूत्राणि व्याख्यानान्यनुव्याख्यानान्यस्यैव नि.श्वसितानि' इति।

तत्र कथा प्रतिपादक इतिहास.। विश्वस्य पूर्वावस्थानिरूपकं पुराणम्। उपासनात्मविद्या प्रतिपादिका विद्याः। याचोपास्यदेवरहस्य प्रतिपादिका सोपनिषद्। ये मन्त्राःश्लोकवत्पठ्यन्ते ते श्लोकाः। संक्षिप्तार्थ प्रतिपादकं सूत्रम्।

विस्तृतार्थप्रतिपादकं व्याख्यानम्। व्याख्यानस्यापि स्फुटतापादकमनुव्याख्यानम्। एतान्यष्टब्राह्मणानि।

भावार्थ—इन प्रस्थानों के स्वरूप भेद हेतु प्रयोजन भेद के विषय में कुछ कहते हैं। धर्म प्रतिपादक अपौरुषेय वाक्य वेद है। वह मन्त्र ब्राह्मण रूप है। 'मंत्र ब्राह्मण दोनों को वेद कहते हैं यह आपस्तम्ब श्रौत सूत्र की परिभाषा मे लिखा है। इसमें मन्त्र अनुष्ठान के मुख्य साधन देवता और द्रव्य के प्रकाशक हैं। वह ऋक्, यजुः साम भेद से तीन हैं। (यह भेद भाषा की दृष्टि से है। पद्यरूप ऋक् है। गद्यरूप यजुः है और गीतिरूप साम है) अथर्ववेद को इनके अन्तरभूत होने से उसका पृथक् वर्णन नहीं किया। मन्त्र का व्याख्यानरूप ब्राह्मण है वह भी तीन प्रकार का है—विधि रूप, अर्थवाद रूप, उभय विलक्षण रूप। इनमे से विधि आदि को लक्षण और भेद अन्य स्थान पर विस्तार से लिखे हैं और ब्राह्मण पुनः आठ प्रकार का है। यह बृहदारण्यक में कथन किया है। 'इतिहास, पुराण, विद्या उपनिषद् श्लोक, सूत्र, व्याख्यान, अनुव्याख्यान, रूप आठ प्रकार के हैं। जो कथा भाग है वह इतिहास है। विश्व की पूर्वावस्था का जो वर्णन हैं अर्थात् जगत् उत्पत्ति आदि का वर्णन वह पुराण है। उपासना रूप विद्या का वर्णन करने वाला भाग विद्या कहलाता है। जो उपास्यदेव का रहस्य है उसका प्रतिपादक उपनिषद् है। जो मन्त्र श्लोकवत् पढ़े जाते हैं वह श्लोक है। संक्षेप से अर्थ प्रतिपादक वाक्य सूत्र है। विस्तार से प्रतिपादन करने वाले वाक्य व्याख्यान रूप कहलाते हैं। व्याख्यान को और स्पष्ट करके कहने वाले वाक्य अनुव्याख्यान हैं। यह आठ भेद ब्राह्मण के ही हैं।

यह सत्याषाढ़ श्रौत सूत्र पर जो महादेव शास्त्री जी प्रयोग चन्द्रिका व्याख्या आनन्दाश्रम पूना मे छपी है, उसके ११-१४ प्रश्न का पाचवां भाग है। उसकी प्रस्तावना मे यह पाठ लिखा हुआ है। जो शतपथ के आधार पर ब्राह्मण के आठ स्थल मानकर उनमें ही पुराण बतलाता है। इस प्रकार यह पाठ महर्षि जी के सत्यार्थ प्रकाश में वर्णित सिद्धान्त का पोषक है।

सत्यार्थ-प्रकाश मे यह वाक्य ब्राह्मण में है। ऐसा भी लिखा है एतरेय ब्राह्मण १०१ मे सायणाचार्यजी टीका करते हुए निम्न पाठ लिखकर महर्षि की सम्मति का पोषण कर गये हैं। यथा—

ननु ब्रह्मयज्ञप्रकरणे मन्त्रब्राह्मणव्यतिरिक्ता इतिहासादयो भागा आम्नायन्ते यद् ब्राह्मणानितिहासान्पुराणानि कल्पान्गाथा नाराशंसीरिति। मैवम्। विप्रपरिव्राजकन्यायेन ब्राह्मणावान्तरभेदानामेवेतिहासादीनां पृथगभिधानात्। देवासुराः संयत्ता आसन्नित्यादय इतिहासः। इदं वा अग्रे नैव किंचनासीन्न द्यौरासीदित्यादिकं जगतः प्रागवस्थानमुपक्रम्य सर्गप्रतिपादकं वाक्यजातं पुराणम्। कल्पास्तु, कश्चिदेतुकचयनप्रकरणे समाम्नायेते। इति मन्त्राः कल्पा अत ऊर्ध्वं यदि बलि हरेत्, इति। अग्निचयनप्रकरणेयज्ञगाथाभि. परिगायतीति विहिता मन्त्रविशेषा गाथाः। मनुष्यवृत्तान्तप्रतिपादिका ऋचो नाराशंस्यः। तस्मान्मन्त्रब्राह्मणव्यतिरिक्तवेदभागाभावान्मंत्रव्यतिरिक्तं ब्राह्मणमित्येतल्लक्षणं सुस्थितम्।

धर्मार्य सभा और संस्कार-विधि

(लेखक—श्री० पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय)

**

पूज्यवर श्री नारायण स्वामी जी ने धर्मार्य सभा के प्रधान के पद से जो विज्ञप्ति संस्कार-विधि शोधने के सम्बन्ध में निकाली है उसको देखकर मेरे मन में कई प्रकार के विचार उठे। पहले लोगों को यह शिकायत थी कि आर्यसमाज के विद्वानों में मतभेद हो जाने से प्रचार मे बाधा पड़ती है। उसको निर्णायक एक समिति होनी चाहिये जिसके निर्णय को सब मानले। इसी उद्देश्य से धर्मार्य सभा बनाई गई थी। परन्तु धर्मार्य सभा के निर्णय को मानने के लिए जनता भी तैयार नहीं और न एक धर्मार्य सभा अपने पहले की धर्मार्य सभा के निर्णय को मानने के लिये तैयार है। यह तो असंभव है कि सर्वदा धर्मार्य सभा के वही सदस्य रहें और न यही सम्भव है कि धर्मार्य सभा के सभी सदस्य एक स्वर हो जायँ। मतभेद तो रहेगा ही और निर्णय बहुमत से करना पड़ेगा। परन्तु यदि अल्प-मत वाले अपने पक्ष को उपेक्षित पाकर जनता मे आन्दोलन करने लगें तो धर्मार्य सभा का मूल्य क्या? जनता में आन्दोलन तो पहले भी होता था और अब भी हो रहा है। यदि यह मान लिया गया है कि सर्वसाधारण का पक्ष ही माननीय है थोड़े से निर्वाचित विद्वानों का नही तो विद्यार्य और धर्मार्य सभा के तमाशे को बन्द करना चाहिये। जो अधिक गला फाड़ सके, जो अधिक वेदों और स्वामी दयानन्द के नाम की दुहाई दे सके वह जीत जायगा, चलो छुट्टी हुई। यदि जनता समझती है कि वेदों, स्वामी दयानन्द तथा आर्यसमाज के सिद्धान्तों मे कोई ऐसी गूढ बात है जिसमें निर्णय करने के लिये कुछ विशेष विद्वानों की जरूरत है तो उन विद्वानों को खोजने

भावार्थ—शंका—ब्रह्म यज्ञ प्रकरण मे मन्त्र, ब्राह्मण से भिन्न इतिहासादि भाग पढ़े हैं, जो ब्राह्मण, इतिहास, पुराण, कल्प, गाथा, नाराशसी है, यह ठीक नहीं है। विप्र परिव्राजक न्याय से यह सब ब्राह्मण के ही अवातर भेद है।

देवासुर लड़ाई करते थे यह इतिहास है।

यह पहले कुछ न था, न आकाश था न पृथ्वी ही इस प्रकार जगत् की पूर्वावस्था से आरम्भ करके जगतोत्पत्ति का वर्णन पुराण।

अरुणकेतु चयन में जो पढ़ा जाता है वह कल्प।

अग्नि चयन प्रकरण में जो यज्ञ गाथा गाई जाती है, वह गाथा नाम से प्रसिद्ध है।

मनुष्य वृतान्त प्रतिपादक भाग ब्राह्मण नाराशंसी है। इसलिए मन्त्र, ब्राह्मण से भिन्न, इतिहास, पुराण, गाथा कल्प, नाराशंसी नहीं है, अपितु ब्राह्मण के ही भाग हैं।

और फिर उनके निर्णय को मानने का प्रयास होना चाहिये। यदि विद्वानों की सम्मति को पहले मांगना, फिर उनके मत की खिल्ली उड़ाना अथवा उनका अपमान करना इष्ट हो तो इसके कई और भी उपाय हो सकते है। सङ्गठन के नाम को क्यों बदनाम किया जाय। अब तक मैंने तो यह देखा है कि यदि बहुमत मेरा है तो मैं अल्प-मत वालों से सङ्गठन के नाम पर अपील करता हूँ और यदि मेरा मत अल्प मत है तो मैं बहुमत वालों के विरुद्ध आन्दोलन करता त्याग-पत्र देता, जनता मे झूठी सच्ची बातें फैलाने में संकोच नहीं करता तथा अपने विरोधियों को ऋषि का अभक्त, वेदों का अविश्वासी, अनार्य तथा अन्यान्य उपाधियों से विभूषित करता हूँ। हमने आर्यसमाज मे प्राय: यही किया है। अन्य सभा वाले भी ऐसा ही करते हैं। ईसाई और मुसलमान, बौद्ध तथा जैनियों के इतिहास मे भी ऐसी ही घटनाएँ पाई जाती हैं। इसको आप स्वाभाविक कह सकते हैं या अस्वाभाविक। परन्तु इसमे सन्देह नहीं कि इससे अन्यों को भी भूतकाल मे हानि पहुँची है और हम भी उस अटल प्राकृतिक नियम का अपवाद नहीं हो सकते।

अब आइये संस्कार-विधि पर। संस्कार-विधि एक विधि है। यह दैनिक कार्य की चीज़ है। इसका सिद्धान्त पक्ष कुछ भी हो। परन्तु विधि भाग से तो छोटे-बड़े, शिक्षित-अशिक्षित सभी को आँखें मीच कर काम करना है। सभी पुरोहित वेदज्ञ या शास्त्रज्ञ नहीं होते। कभी-कभी तो मुझ जैसे या मुझ से भी कम जानने वाले संस्कार कराने के लिये बाधित हो जाते हैं। अत: यह पहली आवश्यकता है कि संस्कार विधि की क्रियायें स्पष्ट होनी चाहियें। कम से कम विधि भाग। मैं तो नि संकोच कह सकता हूँ कि संस्कार-विधि अनेकों स्थलों पर स्पष्ट नहीं है। कई बार पत्रों में कुछ पंडितों ने मुझ जैसे स्पष्ट न बताने वालों को अनेक नामों से पुकारा है। मैं यह नहीं कहता कि उनको भी यह स्पष्ट नहीं है। परन्तु प्रश्न तो मुझ जैसे अल्पज्ञों का है। मैं यह नहीं मानता कि मैं समस्त आर्यसमाज में सब से मूर्ख हूँ। यदि मुझे एक बात स्पष्ट नहीं है तो मुझ से कम जानने वालों को तो और भी कम स्पष्ट होगी। जब संस्कार कराने बैठते हैं तो मैंने कई पण्डितों को असमञ्जस में पड़ते देखा है कि यह करें या वह करें। मैं संस्कार विधि को प्राय: पढ़ा करता हूं। मुझे कई स्थलों पर छूटा हुआ, कई पर पीछे से मिला हुआ, कई पर मन्त्र इधर-उधर हुये प्रतीत हुये हैं। गृह्य सूत्रों से मिलाने पर भी स्पष्टता प्राप्त नहीं हुई। ऋषि दयानन्द का सिद्धान्त तो इस सम्बन्ध मे, स्पष्ट है और उनकी मनोवृत्ति भी छिपी नहीं है। मैं जहाँ तक समझ सका हूँ ऋषि दयानन्द की मनोवृत्ति यह है कि जहाँ तक हो सके वही विधि रक्खी जाय जो गृह्य सूत्रों या अन्य प्राचीन आर्ष ग्रन्थों मे मिलती है। परन्तु यदि इस विधि में मूर्ति पूजा, देवतावाद या पौराणिकता मिल गई हो तो उसको अलग कर दिया जाय। उन्होंने इस सम्बन्ध में सबसे कम परिवर्तन किया है और इसी बात को दृष्टि मे रख कर।

अन्तिम बात यह है कि क्या किसी को ऋषि के ग्रन्थों में घटाने बढ़ाने का अधिकार है ? परिस्थिति ऐसी है कि चाहे अधिकार हो या न हो कुछ ने तो इस अधिकार को बलात्कार ही हस्तगत कर रखा है। ऋषि के जीवन-काल में ही पुराने सत्यार्थप्रकाश और संस्कार-विधि में मिलाने का अधिकार कुछ पण्डितों ने लिया। इस सम्बन्ध में वेद भाष्य के ऊपरी पृष्ठों पर जो विज्ञप्तियाँ ऋषि की ओर से दी गई थी वह लगभग इसी प्रकार की थीं कि अमुक पुस्तक के अमुक पृष्ठ पर ऐसा छप गया है यह वेद विरुद्ध होने से मेरा सिद्धान्त नहीं है। प्रेसों के कम्पोज़ीटरों को खुला अधिकार है कि वह जहाँ तहाँ मात्रायें छोड़ दें। अशुद्ध कर दें एक मन्त्र को दो बार छाप दें। शब्दों का विपर्यय करदें। लेखकों को प्रत्येक समय में मिलावट करने का अधिकार रहा है। परन्तु सशोधकों को अधिकार नहीं है। दूध की खुली बाल्टी में तिनके को पड़ने का अधिकार है, धूल को गिरने का अधिकार है, चिड़ियों को चोंच में भरकर ले जाने का अधिकार है। चींटियों को गिरने का अधिकार है, मक्खियों को दूध के दूषित करने का अधिकार है परन्तु दूध को छानने का किसी को अधिकार नहीं। क्या इस तरह से ऋषि दयानन्द का उद्देश्य पूरा हो सकेगा ? क्या भविष्य में लोग इन बुराइयों को ऋषि के सिर न मढ़ेंगे ? समय प्रत्येक वस्तु को जो शुद्ध से शुद्ध हो दूषित करता रहता है, परन्तु जो लोग उस वस्तु को चिरस्थायी रखना चाहते वह दोषों का प्रतिकार या परिशोधन करते रहते हैं। मेरी समझ में तो जो इस परिशोधन के विरोधी हैं वह कभी सिद्धान्त की रक्षा नहीं कर सकते।

मै यह नहीं कहता कि ऋषि की पुस्तकों में किस प्रकार संशोधन हो। कोई भी उचित रीति काम में लाई जा सकती है। टिप्पणियाँ दे दी जायँ। या नया संस्करण निकालकर उसके ऊपरी पृष्ठ पर सार्वदेशिक सभा द्वारा सशोधित लिख दिया जाय। या पुस्तक को वैसा ही छोड़कर विधि भाग अलग छांट दिया जाय और ऐसी भाषा में कि किसी को कार्य करने में अड़चन न पड़े।

परन्तु अन्त में फिर वही प्रश्न है कि करे कौन ? जो करे वही बुरा बने। चाहे सार्वदेशिक की अन्तरङ्ग करे चाहे धर्म-आर्य-सभा। कौन-सी गारंटी है कि जनता में आन्दोलन न होगा और पंडित लोग अपण्डित बनकर दूसरों को अपमानित न करेंगे, यदि यही होना है तो एक बात है, या तो

सर्वथा व्यवहर्तव्य कुतो ह्यवचनीयता।
यथा स्त्रीणां तथा वाचा साधुत्वे दुर्जनो जन ॥

या

किस-किस की फिक्र कीजिये किस-किस को रोइये।
सबसे भली यह बात कि मुँह ढक के सोइये ॥

भारतवर्ष और पश्चिमी जगत

श्रीयुत के० नटराजन, सम्पादक 'इण्डियन सोशल रिफार्मर' के लेख का सार

— —

प्रोफेसर नारमन ब्राउन ने जो अमेरिका के संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् हैं अक्टूबर के प्रबुद्ध भारत मे 'अमेरिका मे भारतवर्ष का अध्ययन' शीर्षक एक लेख लिखा है। वे लिखते है —

"यद्यपि हम सब भारतवर्ष के सांस्कृतिक-वैभव से परिचित हैं तथापि अपनी यूनिवर्सिटियों और कालेजो के शिक्षा-सम्बन्धी प्रोगाम पर एक दृष्टि डालने से हम कल्पना कर सकते है कि भारतवर्ष महान् नहीं रहा है और न उसकी संस्कृति महत्वपूर्ण है। सच्चाई यह है कि भारतवर्ष का अध्ययन प्राय नही के बराबर है। जब हम इतिहास और फिलासफी को लेते हैं और पश्चिमी और पूर्वीय संस्कृतियों और परम्पराओं के संघर्ष को लेते हैं, तो हम उन कारणों को जानने की चिन्ता नहीं करते है, जिनसे यह संघर्ष उत्पन्न होता है।'

अमेरिकन यूनिवर्सिटियों मे पूर्वीय वस्तुओं के प्रति उपेक्षा भाव के कारणों को प्रोफेसर ब्राउन स्पष्ट नहीं करते हैं। सबसे स्पष्ट कारण तो यह है कि पूर्व मे अमेरिका का स्वार्थ चाहे वह बौद्धिक हो वा आर्थिक, देश की आवश्यकता से अधिक चीज के निकास के लिए है, उसको मुख्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नहीं है। ग्रेट ब्रिटेन के सम्बन्ध में इससे भिन्न बात है। यदि भारतवर्ष के साथ व्यापार से या राजनैतिक प्रभुत्व से जिसके द्वारा वह व्यापार चलाया जाता है ब्रिटेन वञ्चित हो जाय, तो ससार की शक्तियो मे उसका स्थान नहीं रहेगा। अमेरिका क सम्बन्ध मे ऐसी बात न होगी। प्राय समस्त यूनिवर्सिटियाँ और अमेरिका की अधिकाश यूनिवर्सिटियाँ अपने सफल सचालन के लिए धनवान् व्यापारियों और पैसेवालों के ऊपर निर्भर है। ये लोग उन यूनिवर्सिटियो स बदले मे ऐसे उपायों का आविष्कार कराते हैं, जिनसे वे धन कमा सकें। कभी-कभी वे लोग उन विषयों मे अपने धन के उपयोग का सहन कर लेते हैं, जो सीधे उपयुक्त कार्य मे सहायक नहीं होते हैं। परन्तु सांस्कृतिक प्रचार, लोक सेवा और मिशनरी कार्य के उनके व्यापार मे अप्रत्यक्ष रूप मे सहायक होने की सभावना उनके मस्तिष्क में सदैव बनी रहती है। अमेरिका और पश्चिम एशिया की आमतौर पर उपेक्षा कर सकते है, भले ही धर्म, संस्कृति और फिलासफी के प्रति उसका महत्वपूर्ण योग रहा हो। इसका कारण यह है कि एशिया के निवासी अर्से तक उनके व्यापार और सुविधा के लिए खतरा नहीं रहे हैं। जब से जापान ने व्यापार और सैन्यबल में पश्चिम से बाजी मारना शुरू किया है तभी से पश्चिम की उदासीनता भग हो

गई है और पिछले दस वर्ष से उसके विरुद्ध साहित्य में वृद्धि हो रही है। यही बात मुख्यतया टर्की और फिलस्तीन तथा साधारणतया मुस्लिम जगत के सम्बन्ध मे चरितार्थ हो रही है। ऐंग्लो सेक्शन के अतिरिक्त अन्य यूरोपियन जातियों के सम्बन्ध में यह बात पूर्णतया सच्ची नहीं है। जब ग्रेट ब्रिटेन ने अपनी यूनिवर्सिटियों में पूर्वीय संस्कृति के अध्ययन का प्रबन्ध किया था तब जर्मन, फ्रांस और रूस ने इस दिशा में उल्लेखनीय उन्नति कर ली थी, आनन्द यह है कि राजनैतिक और आर्थिक हितों के द्वारा भारतवर्ष इंगलैण्ड के साथ मिला हुआ था।

भारतवर्ष की सभ्यता संसार की सब से पुरानी सभ्यता है। इस्लाम, ईसाइयत और योरोपियन ईसाइयत यह तीन प्रबल विरोधी प्रभाव भी हिन्दू संस्कृति को निर्मूल करने में समर्थ नहीं हुये हैं। प्रोफेसर महोदय कहते हैं, "हिन्दू-संस्कृति अब उन्नति कर रही है।" प्रोफेसर साहब चाहते हैं कि भारतीय सभ्यता पश्चिम की यूनिवर्सिटियों में अधिक उन्नत स्थान प्राप्त करे और इसका कारण उसका विशाल सहिष्णुता का भाव और उसकी अहिंसाकी शिक्षा बतलाते हैं। जब एक मित्र ने मैक्समूलर से जिसने पश्चिम को भारतीय ज्ञान-विज्ञान से परिचित कराने के लिए बहुत-कुछ कार्य किया था, पूछा कि वह भारतवर्ष क्यों नहीं गये, तो उन्होंने यह उत्तर दिया था कि भारतवर्ष के प्रति मेरा जो अनुराग है, मुझे भय है वह व्यक्तिगत निरीक्षण से कहीं कम न हो जाय। प्रोफेसर महोदय भारतवर्ष में आ चुके हैं। वर्तमान भारतवर्ष में सहिष्णुता और अहिंसा दोनों बहुत कम हो गये हैं इस बात को उन्होंने नहीं देखा, इसे केवल हम उनको उदारता ही कह सकते हैं। सहिष्णुता की कमी की जिम्मेवारी अधिकतर ईसाई मिश्नरियों पर है। वे न केवल हिन्दुओं की सहिष्णुता का आदर ही न कर सके वरन्, उन्होंने इसका कारण यह प्रगट किया है कि हिन्दू लोग सत्य और झूठ की पहचान करने के प्रति उदासीन हैं। हमें भय है कि हिन्दू लोग अपनी परम्परागत सहिष्णुता को खोते जा रहे हैं। हिन्दुओं के नेताओं ने अपने इस विश्वास को दूर करने में असमर्थ होने के कारण कि तमाम धर्म एक ही उद्देश्य के विभिन्न मार्ग हैं जाति का नेतृत्व, आर्य समाजियों को सौंप दिया है जिनका तबलीगी मजहबों से लड़ने के लिये अपने निजू हथियारों में विश्वास है। अहिंसा के सम्बन्ध में पश्चिम ने गांधीजी से प्रकाश ग्रहण करके इसका वह अर्थ लिया है जिसका प्राय भारत वासी नहीं लेते हैं। अहिंसा का अर्थ पूर्ण अहिंसा नहीं। धर्मयुद्ध मे शत्रु को बध करना हिंसा नहीं समझा जाता है।

यदि पश्चिम के लोग यह धारणा बना लेंगे कि अपनी परम प्रिय वस्तु के लिये किसी दशा में भी भारतवासी नहीं लड़ेंगे तो निश्चय ही उनका यह बड़ा भारी भ्रम होगा। अब यह स्पष्ट हो गया है कि योरोप और अमेरिका के कुछ क्षेत्रों में गांधी जी के अहिंसा धर्म के प्रति जो उत्साह प्रगट किया जाता था वह शायद अनजान में इस आशा के द्वारा उत्पन्न हुआ था कि भारतवर्ष में

साहित्य-समीक्षा

उन्नति की ओर (हिन्दी)

सम्पादक—श्री० डा० युद्धवीरसिंह जी

प्रकाशक—भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद्, देहली

मूल्य ॥)

भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् के रजत-जयन्ती के स्मारक के रूप मे यह पुस्तक प्रकाशित की गई है। पुस्तक मे नवयुवकों और आर्यकुमारों के जीवनों को उन्नत बनानेवाली पर्याप्त सामग्री उपलब्ध होती है। उन्नति के विभिन्न अङ्गों पर आर्यसमाज और उससे बाहर के लेखकों, कवियों, विद्वानों और नेताओं के लेख, कविताएँ और सन्देश पुस्तक मे दिये गये हैं। आर्यकुमार परिषद् का संक्षिप्त इतिहास और उसकी परीक्षाओं के नियमादि भी दिये गये हैं। महर्षि दयानन्द, महा० गाधी, परिषद् के संस्थापक श्री डा०केशवदेव जी शास्त्री और परिषद् के सभापतियों एवं अन्यान्य निर्माताओं के लगभग १६ के चित्र भी प्रकाशित किये गये हैं। संक्षेप मे, पुस्तक को अधिक से अधिक उपयोगी और आकर्षक बनाने का यत्न किया गया है।

यदि भावात्मक लेखो के साथ-साथ नैतिक-शिक्षण सम्बन्धी आख्यायिकाओं की भी पुस्तक में पर्याप्त व्यवस्था हुई होती तो पुस्तक की उपयोगिता और भी अधिक बढ़ जाती।

—*—

इसके व्यापक अङ्गीकरण से पूर्व के पाश्चात्य आधिपत्य और शासन के लिये बाधक बनने का खतरा टल जायगा। यदि अहिंसा धर्म के प्रति प्रगट किया हुआ उनका प्रेम कुछ हद तक भी वास्तविक होता तो यह असम्भव था कि पश्चिम के देशों के शस्त्रीकरण के विशाल प्रोग्राम के विरुद्ध उग्र शान्तिवादी चुप न बैठ जाते। पूर्व और भारतवर्ष ने यह अच्छी तरह अनुभव कर लिया है कि पश्चिम को अपना अभिप्राय ठीक ठीक समझाने के एक प्रारम्भिक उपाय के रूप मे उन्हे उसी भाषामे बोलना सीखना चाहिये जिसको पश्चिम समझता है। भले ही हम हवाई बम और जहरीली गैसें प्रयोग मे न लाएँ फिर भी हमें पर्याप्त परिमाण मे उनका संग्रह रखना तथा अच्छी तरह उनका प्रयोग करना सीखना चाहिये और उच्च स्वर से इसकी घोषणा कर देनी चाहिये जिससे हमारे विरुद्ध लड़ाई करने के इरादों से दूसरे लोग बाज आ जायं। जापान ने उदाहरण प्रस्तुत कर दिया है। चीन को वह वही पाठ पढ़ा रहा है।



भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् का रजत जयन्ती महोत्सव बिजनौर में प्रोफ़ेसर सुधाकर जी के सभापतित्व मे ३० सितम्बर व १ अक्तूबर १९३८ को बड़े समारोह के साथ मनाया गया। स्वागतकारिणी की ओर से प्रतिनिधियों तथा बाहर से पधारे हुए अन्य सज्जनों के ठहराने तथा भोजन इत्यादि का समुचित प्रबंध था जिससे किसी प्रकार का कष्ट नहीं हुआ। प्रतिनिधि संख्या लगभग १२५ थी।

३० तारीख को प्रात: ६॥ बजे से हवन हुआ। ८ बजे से वौलीबौल टूर्नामेण्ट हुई, जिसमें आर्य कुमार सभा पटौदी हाऊस, दिल्ली जीती। मध्याह्न १ बजे से विषय निर्वाचनी का अधिवेशन हुआ, जिसमें अनेकों प्रस्तावों पर विचार हुआ। सायकाल ५ बजे नगर में सभापति का जलूस निकला।

रात्रि को ८ बजे सम्मेलन का खुला अधिवेशन आरंभ हुआ। स्वागताध्यक्ष बाबू रामचन्द्र जी गुप्ता के भाषण के पश्चात् प्रो० सुधाकर जी ने सभापति पद ग्रहण किया और अपना भाषण पढ़ा। भाषण के पश्चात् महाराजाधिराज सर उम्मेदसिंह जी महाराज शाहपुराधीश, राय साहब मदनमोहन जी सेठ, इत्यादि नेताओंके सदेश पढे गये और परिषद् की गत वर्ष की रिपोर्ट सुनाई गई।

सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान् पं० चमूपति जी, राज्यरत्न मास्टर आत्माराम जी अमृतसरी, सर जगदीश चन्द्र वसु, माता स्वरूप रानी नेहरू, कविवर जय शकर प्रसाद तथा प्रोफ़ेसर रामदास गौड़ की मृत्युओं पर दो शोक प्रस्ताव पास हुए।

श्रीयुत शिवचंद्र जी, मत्री आर्य रक्षा समिति, दिल्ली का निम्न लिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुआ :—

यह सम्मेलन रियासत हैदराबाद में मुसलमान धर्मान्धों द्वारा महाशय वेदप्रकाश जी, धर्मप्रकाश जी तथा महादेव जी के नृशस एंव कायरतापूर्ण वधों को घोर घृणा की दृष्टि से देखता है और उनकी आत्माओं के लिये पूर्ण शान्ति की प्रार्थना करता है तथा उनके सम्बन्धियों के साथ पूर्ण सहानुभूति प्रगट करता है।

यह सम्मेलन हैदराबाद सरकार को चेतावनी

देखा है कि यदि इस प्रकार की घटनाओं को शीघ्रातिशीघ्र न रोका गया तो उससे उत्पन्न दुष्परिणामों की पूरी जिम्मेदारी निजाम सरकार पर होगी।

इसके पश्चात् ज्वालापुर महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों ने तलवार इत्यादि के व्यायाम का उत्तम प्रदर्शन किया। डा० युद्धवीर सिंह जी ने परिषद् द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'उन्नति की ओर' का ऐलान करते हुए आर्य कुमारों को प्रेरित किया कि वे इस पुस्तक का स्वाध्याय अवश्य किया करें।

१ ली अक्तूबर को प्रात ६।। से हवन हुआ, भजन इत्यादि के पश्चात् मानसिक परीक्षा हुई। जिसमें सब प्रतिनिधियों ने भाग लिया। १० बजे

कुमार सभाओं के प्रति

आर्य्य कुमार परिषद् के भार को उठाते समय, पिछले बिजनौर के वार्षिक अधिवेशन पर मैंने आर्य कुमारों से विशेष रूप से यह निवेदन किया था कि उन्हें अब चेतना चाहिए और अपनी शक्तियों का संगठन करके उन्हें आर्य समाज की प्रगति में विशेष भाग लेना चाहिए। एतदर्थ अब मेरा भारतवर्ष की समस्त आर्य कुमार सभाओं से निवेदन है कि वे शीघ्र से शीघ्र अपना सबन्ध परिषद् से जोड़ लेवें।

दूसरा निवेदन यह है कि परिषद् ने जो पुस्तक 'उन्नति की ओर' नाम वाली आर्य कुमारों के दैनिक स्वाध्याय के लिए तय्यार की है उसको बड़ी संख्या में परिषद् के कार्यालय से मंगाकर कुमारों में बाँटा जाय। यह कार्य कुमार सभाएं भी कर सकती हैं तथा वे धनी सज्जन भी जिन्हें आर्य कुमारों से विशेष प्रेम है। इसमें देरी न होनी चाहिए। परिषद् की ओर से हम किसी महानुभाव को कुमार सभाओं मे दौरा लगाने के लिए शीघ्र भेजने का विचार रखते हैं जो कुमार सभाओं को संगठित करने तथा उनके कार्य को सुचारु रूप से चलाने में सहायक हो सकेंगे।

सुधाकर एम० ए०
प्रधान
भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् देहली।

से प्रो० सुधाकर जी के सभापतित्व मे कुमारों का "क्या पश्चिमीय सभ्यता का अनुकरण भारतीय नवयुवकों के लिए हितकारी है" विषय पर वाद विवाद हुआ। आ० कु० सभा, दीवान भवन, दिल्ली के प्रतिनिधि गुलाब राय जी प्रथम रहे।

दोपहर को ३ बजे से परिषद् का साधारण अधिवेशन हुआ।

[१] वार्षिक निर्वाचन इस प्रकार हुआ:—
प्रधान—प्रो० सुधाकर जी (पूर्व निर्वाचित)
उपप्रधान—डा० युद्धवीर सिंह जी, प्रो० तोताराम जी, पं० सूर्यदेवजी, श्रीयुत विश्वंभर सहाय जी प्रेमी, कुँवर कान्तिवीर

जी, महाराज कुमार सुदर्शन देवजी, बाबू रामचन्द्र जी गुप्ता

मन्त्री—मनुराम

उपमन्त्री—श्रीयुत ईश्वरदयाल जी, इंद्रेश्वर प्रसाद जी, बद्रीदत्त जी तथा हरिश्चन्द्र जी।

कोषाध्यक्ष—श्रीयुत नन्द किशोर जी खन्ना

पुस्तकाध्यक्ष—श्रीयुत कुँवर लाल जी

अन्तरंग सदस्य—श्रीयुत ब्रजराजसिंहजी, माणिकचन्द जी, शिवचरणदास जी भगवन, लखपतराय जी, ओमप्रकाश जी, ओंकारदत्त जी, ब्रजनन्दन प्रसादजी, श्री रामजी, धर्मवीर जी, योगेन्द्रनाथ जी, वासुदेव जी, तथा नरेन्द्रपति राय जी।

प्रतिष्ठित अंतरंग सभासद्—लाला हरिश्चन्द्र जी M. A B T, कुँवर चाँदकरण जी शारदा, भ्राताबीर देव जी, श्रीयुत महादेवशरण जी, पं० ज्ञानचन्द जी, श्रीयुत नन्दकिशोर जी गोविल, मास्टर तनसुखराय जो तथा पं० विद्याधर जी।

[२, आगामी वर्ष के बजट बनाने का अधिकार अ'तरंग सभा को दिया गया।

[३] बिजनौर सम्मेलन को बजाय २३ वें के २५ वाँ पास किया गया।

[४] स्वागत कारिणी सभा के अभी तक कोई नियम न होने के कारण इनके बनाने का अधिकार अंतरंग सभा को दिया गया।

[५] अगले सम्मेलन के लिए इसलामनगर 'बदायूँ', मुरादाबाद तथा भूड़, बरेली की कुमार सभाओं के निमंत्रण आए। लेकिन बहुसम्मति यह थी कि कई वर्षों से सम्मेलन आस पास हो होने के कारण परिषद् का प्रचार दूर २ नहीं हो पाता, इस लिए आगामी सम्मेलन इन स्थानों को छोड कर कहीं और हो।

अ तरग सभा को अधिकार दिया गया कि वह इन स्थानों के अतिरिक्त जहाँ सम्मेलन करना परिषद् के संगठन के लिए अधिकाधिक लाभदायक समझे, वहीं अगला सम्मेलन निश्चय करे।

५ बजे से सम्मेलन का खुला अधिवेशन हुआ जिसमें निम्न लिखित प्रस्ताव पास हुए:—

१—यह सम्मेलन नारायण गढ़ (इन्दौर राज्य) आर्य समाज के प्रधान श्री मेवराज जी की कायरतापूर्ण हत्या को घृणा की दृष्टि से देखता है और उनकी आत्मा के लिये सद्गति की प्रार्थना करते हुए उनके संबंधियोंसे सहानुभूति प्रगट करता है और आशा करता है कि उनके बलिदान से इन्दौर राज्य में विशेषतया हरिजन उद्धार के कार्य को प्रोत्साहन मिलेगा।

२—यह सम्मेलन निश्चय करता है कि भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की ओर से आर्य कुमारों के लिये किसी विशेष प्रकार का बैज (Badge) तैयार किया जाय जिसका उचित प्रबन्ध अंतरंग सभा शीघ्र करे।

३—यह सम्मेलन समस्त आर्य कुमारों को आदेश देता है कि विवाह में किसी प्रकार के दहेज का ठहराव करना अवैदिक है अतः इसे

अपने तथा अपने संबंधियों के विवाहों में सर्वथा त्याग दें। यदि आवश्यकता पड़े तो सत्याग्रह करने को उद्यत रहें।

७—यह सम्मेलन आर्य जगत के वर्त्तमान झगड़ों को अत्यन्त घृणा की दृष्टि से देखता है और यह समझता है कि ये झगडे आर्य समाज के अस्तित्व के ही लिए घातक सिद्ध हो रहे हैं। इसलिए यह सम्मेलन आर्य युवकों से अनुरोध करता है कि समाज क भविष्य को दृष्टि मे रखते हुए वे इन झगड़ों के विरूद्ध जिनका मूल कारण असत्य और हिंसा है, जोरदार आन्दोलन करें। विशेषतया पद लोलुपता को दूर करने के लिए तीन साल से अधिक पद पर रहने की प्रथा का विरोध करें।

८—इस सम्मेलन की सम्मति में आर्य समाज की वर्त्तमान अवस्था और बाहर से होने वाले हमलों का मुख्य कारण हमारी अपनी आन्तरिक, शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक कमज़ोरी तथा अपने मुख्य उद्देश्य से पथ भ्रष्ट हो जाना है इस लिए यह सम्मेलन जरूरी समझता है कि आर्य युवकों में शक्ति उत्पन्न करने के लिए उनके चरित्र निर्माणार्थ अन्तर्मुख आन्दोलन आरम्भ किया जावे।

९—यह सम्मेलन आगामी वर्ष के लिए निम्न लिखित कार्यक्रम निश्चित करता है और आर्य कुमारों तथा आर्य कुमार सभाओं से अनुरोध करता है कि वे इस कार्यक्रम को पूरा करने में इस वर्ष अपनी सारी शक्तियों को लगादें और परिषद् की अंतरंग सभा को अधिकार देता है कि इसका विस्तृत प्रोग्राम बना कर उसकी पूर्त्ति का पूर्ण प्रयत्न करे:—

१—परिषद् एक ऐसी पुस्तकों की सूची प्रकाशित करे जो प्रत्येक आर्य कुमार इस वर्ष पढ़ले।

२—परिषद् की ओर से एक योग्य संगठन मंत्री (Organising Secretary) की नियुक्ति की जावे जो अन्य कार्यो के अतिरिक्त कुमार सभाओं के संगठन के लिए दौरा लगावें।

३—परिषद् की ओर से एक शारीरिक व्यायाम का कार्यक्रम तैयार करके प्रकाशित किया जावे।

४—भिन्न २ स्थानों में परिषद् की ओर से योग्य विद्वानों के व्याख्यानों का प्रबन्ध किया जावे और लेख मालाँए (Pamphlets) प्रकाशित की जावें।

५—इस वर्ष दहेज प्रथा और तम्बाकू सिगरेट आदि के विरुद्ध खास तौर से उचित उपायों द्वारा आन्दोलन किया जावे।

६—इन सब कार्यों की पूर्त्ति के लिए पाँच पाँच रुपये वार्षिक देने वाले परिषद् के एक हजार प्रतिष्ठित सभा सद् भारत वर्ष भर में बनाए जावें।

१०—यह सम्मेलन सब प्रान्तीय सरकारों, विशेष कर कांग्रेस सरकारों से अनुरोध करता है कि वे युवकों को बन्दूक चलाना सिखाने के लिए राइफिल क्लब और हवाई शिक्षा देने के लिए उड़न खटोले व हवाई जहाजों की व्यवस्था करें ताकि इस देश के युवक बाहरी हमलों से

देश को बचा सकने में समर्थ हो सकें।

यह सम्मेलन पं० कृष्णकान्त मालवीय के उड़न खटोला संघ (Gliding Institute) स्थापित करने के प्रयत्न का स्वागत करता है और आर्य कुमारों से अनुरोध करता है कि वे हवा में उड़ना सीखें तथा सैनिक शिक्षा ग्रहण करें।

निम्न लिखित प्रस्ताव पर बहुत वाद विवाद हुआ और वह बहु सम्मति से गिर गया —

यह सम्मेलन निश्चय करता है कि आर्य कुमारों का आर्यकुमार सभाओं का सदस्य बनाते समय गुरुकुल परिपाटी के अनुसार प्रवेश संस्कार करना चाहिए।

उपरोक्त प्रस्तावों पर डाक्टर युद्धवीर सिंह जी, मास्टर तनसुखराय जी, श्रीयुत शिवचन्द जी, पं० गिरधारी लाल जी, श्रीयुत नन्दकिशोर जी खन्ना, श्रीराम जी, ईश्वर दयाल जी, परमेश्वर दयालजी, इत्यादि ने जोरदार भाषण दिए।

रात्रि को राजा ज्वाला प्रसाद जी, प्रो वाईस चान्सलर, काशी विश्व विद्यालय के सभापतित्व में मौक (Mock) पार्लियामेण्ट का अधिवेशन बड़े जोर शोर से हुआ।

—प्रीमियर का पद श्रीयुत रामनाथ जी कालिया ने लिया तथा विरोधी दल का नेतृत्व डाक्टर युद्धवीरसिंह जी ने किया। 'वन्देमातरम्' के पश्चात् अनेक मनोरञ्जक प्रश्नोत्तर हुए जिनमें रिक्रूटमेण्ट बिल, बन्नू में हिन्दुओं पर अत्याचार वर्धा स्कीम, हैदराबाद में आर्य समाजियों पर अत्याचार, दिल्ली का शिव मन्दिर इत्यादि पर प्रकाश डाला गया।

प्रीमियर कालिया जी ने "कोई आर्य समाजी चाहे वह किसी आर्यसमाज का सदस्य हो या न हो, किसी अन्य धार्मिक, साम्प्रदायिक या राजनैतिक संस्था जैसे कांग्रेस, हिन्दू सभा इत्यादि मे भाग न ले सके।" इस आशय का 'आर्य-प्रतिबन्धक बिल' पेश किया। जो बहुमत से पास हुआ।

विरोधी दल के नेता डा० युद्धवीरसिंह जी ने "किसी जमींदार को महाल या जमीन पर कोई मालिकाना अधिकार न हो सिवा उस जमीन के जिसे कि वह स्वयं जोतता हो और प्रत्येक किसान को उस भूमि पर जिसे वह स्वयं जोतता या बोता है उस जमीनपर मौरूसी अधिकार मिल जावें।' इस आशय का जमींदारी प्रथा नाशक बिल पेश किया। जो बहुमत से रद्द हो गया। इस बिल पर श्री रामनाथ जी कालिया, डा० युद्धवीरसिंह जी, चौ० विजयपालसिंह जी, एम० एल० ए०, नेमी शरण जी ऐडवोकेट, गोविन्द सहाय जी एम० एल० ए०, मास्टर तनसुखराय जी आदि ने जोरदार भाषण दिये।

पार्लियामेण्ट के पश्चात मेरठ निवासी कवि वर श्रीराम जी 'प्रेम' ने 'चित्रकार से' नाम की कविता से दर्शकों को मोह लिया। डा० युद्धवीर सिंह जी ने कवि जी को पुरस्कार स्वरूप एक रजत पदक प्रदान किया।

राजा ज्वालाप्रसाद जी ने निम्न प्रकार पारितोषिक वितरण किया।

डिबेट—आ० कु० सभा, दीवान भवन, दिल्ली—राजा ज्वालाप्रसाद कप। गुलाबराय (आ० कु० सभा, दीवान भवन, दिल्ली) प्रथम पुरस्कार-स्वर्ण

पत्रक। ईश्वरदयाल जी (बिजनौर) तथा इन्द्रेश्वर प्रसाद जी (मेरठ)—क्रमशः द्वितीय और तृतीय।

लेख—गोविन्दराय जी और राजनारायण जी (दोनों दीवान भवन, दिल्ली) क्रमश: प्रथम और द्वितीय।

मानसिक परीक्षा (बड़े कुमार) गोविन्दराय जी और राजनारायण जी (दोनों दीवान भवन, दिल्ली) क्रमशः प्रथम और द्वितीय।

(छोटे) विद्याभूषण जी (दीवान भवन, दिल्ली) तथा कुमारी गायत्री देवी जी (मुरादाबाद) क्रमशः प्रथम तथा द्वितीय ।

व्यायाम प्रदर्शन—ज्वालापुर महा विद्यालय सिलवर कप.।

वौलीबॉल टूर्नामेण्ट—आ० कु० सभा, पटौदी हाऊस, दिल्ली। सिलवर कप।

राजा ज्वालाप्रसाद जी ने पार्लियामेण्ट की प्रशंसा मे कहा कि यह लोगों मे पार्लियामेण्टरी मन्त्र का प्रचार करने का उत्तम साधन है। अन्त मे प्रतिनिधियों की ओर से डा० युद्धवीरसिंह जी ने स्वागत कारिणी को उनके प्रबन्ध के लिये धन्यवाद दिया। हम भी सम्मेलन की सफलता पर स्वागत कारिणी को बधाई देते हैं। आर्यकुमार सभा, दीवान भवन, दिल्ली के, जिसने पार्लियामेट का उत्तम आयोजन करके उत्सव की शोभा काफी बढ़ाई, हम कृतज्ञ हैं।

रजत जयन्ती के उपहार स्वरूप परिषद् ने 'उन्नति की ओर' पुस्तक प्रकाशित की है। इसका संपादन परिषद् के उपप्रधान डा० युद्धवीरसिंह जी ने किया है। पुस्तक मे अनेकों विद्वानों के उत्तम उत्तम लेख तथा कविताएँ हैं। प्रत्येक आर्यकुमार को यह पढनी चाहिये। पुस्तक का मूल्य ।।) है लेकिन आर्यकुमार सभाओं को तथा जहाँ आर्य-कुमार सभाएँ नही वहाँ आर्य समाजों को कुमारों मे बाँटने के लिये पुस्तक केवल ।-)। मे दी जावेगी।

मन्त्री, भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद्, दिल्ली

—o—

ग्राहकों से आवश्यक निवेदन

'सार्वदेशिक' के स्वदेश के निम्न ग्राहकों का चन्दा नवम्बर १६३६ में समाप्त होता है। प्रार्थना है कि ये ग्राहक महोदय अपना अपना चन्दा १५ नवम्बर १६३८ तक भेज देवें। इसके बाद जिन ग्राहकों का चन्दा प्राप्त न होगा या कोई सूचना न मिलेगी उनकी सेवामें 'पत्र' वी०पी० द्वारा भेज दिया जावेगा और आशा है वे उसे स्वीकार करेंगे। इसके साथ ही यह भी निवेदन है कि ग्राहक महोदय चन्दा भेजते समय मनीआर्डर की कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या व पूरा पता लिखने की कृपा करें। पूरा पता व ग्राहक संख्या कूपन पर न होने से यदि 'पत्र' ग्राहक पर न पहुँचेगा तो उसकी उत्तर-दायित्व कार्य्यालय पर न होगी। कृपया इसे नोट कर लेवें।

६८, २६३, ३०४, ४३७, ८३५, ८४०, ८४१, ८४२, ६०८, ६०६, ६१०, ६११, ६१२, ६१३, ६१४, ६१५, ६१६, ६१७, ६१८, ६१६.

* ओ३म् *

आर्य परिवार संघ की योजना

महर्षि दयानन्द ने अपने जगत प्रसिद्ध ग्रन्थ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के "वेदोक्त धर्म" विषय प्रकरण में सब से पहिले जो वेद मन्त्र लिखा है "संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि जानताम्" दूसरा मन्त्र लिखा है "समानो मन्त्र: समिति समानी समानं मन सह चित्तमेषाम्।" उक्त ग्रन्थ के आरम्भ में निम्न ऋषि वाक्य उद्धृत किया है "सहनाववतु सहनौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवा वहै। तेजस्वि नावधीतमस्तु माविद्विषा वहै।" आर्य समाज को स्थापित करने का यही उद्देश्य था जो उक्त वाक्यों के भाव हैं। खेद है कि आर्य समाज के नेता व अधिकारियों ने आर्यों के संगठन की ओर ध्यान नहीं दिया केवल मौखिक रूप से वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार किया बहुत कम व्यक्तियों ने क्रिया रूप से आदर्श जीवन को बनाया। यही कारण है कि आज आर्य समाज मे ६५ सैकडा व्यक्ति पौराणिक जाति पांति से चिपके हुए हैं। प्राय: ऐसे ही लोगों के हाथों मे आर्य समाज की बागडोर है। यही व्यवस्था रही तो आर्य समाज भी हिन्दुओं के और सम्प्रदायों की तरह सम्प्रदाय मात्र रह जावेगा।

ऋषि दयानन्द के अनुयायी सम्प्रदायी न बनें वैदिक सिद्धान्तों के अनुकूल क्रियात्मक जीवन बनाने के लिये अग्रसर हावें इसी उद्देश्य से "आर्य परिवार संघ" की योजना आपके सम्मुख रखता हूं।

महात्मा नारायण स्वामी ने थोड़े दिन हुए आर्य समाज का भविष्य कैसे उज्वल बन सकता है, लेख पत्रो म प्रकट कराया था उसमे और कई बातों के अलावा निम्न उपाय आर्य समाज के उज्वल भविष्य के लिये लिखे थे।

[१], आर्यों में पारस्परिक सहभोज और विवाह की प्रथा गुण कर्मानुसार जारी की जावे।

[२] परिवारों मे आर्य जीवन के लाने का पूरा पूरा प्रबन्ध किया जावे।

इन्हीं उद्देश्यों को लक्ष मे रख कर आर्य परिवार संघ की योजना आपके सामने रखता हूँ। इस समय केवल एक ही कार्यक्रम रहेगा वह यह कि प्रत्येक मास के अन्तिम रविवार को आर्य परिवार एक स्थान पर सम्मलित हो सहभोज व परस्पर परिचय प्राप्त करें आगे जा कर यह भी उद्देश्य होगा कि परस्पर सुख दु:ख मे आर्य परिवार सम्मलित हुआ करें।

आरम्भ मे चन्दा सिर्फ सहभोज खर्च के लिये पूरी उमर के लिये ।) व अल्पायु वालों से =) छोटे बच्चों से कुछ नहीं लिया जावेगा जो भाई आर्य परिवार संघ में सम्मिलत होना चाहे वे अपना नाम व पता को भर कर अपने अपने समाज के मन्त्री जो के द्वारा मेरे पास पहुँचा देवें।

भवदीय—गोविन्दराम हासानन्द

पता—वैदिक पुस्तकालय नई सड़क,

[मारवाड़ी कटरे के सामने] देहली।

आर्य समाजों के मन्त्री महोदयों से नम्र निवेदन है कि इस सूचना को अपने साप्ताहिक सत्सग में सुना देवें व जो भाई सम्मिलत होना चाहें उनसे फार्म भराकर मुझे भेज देवें बड़ी कृपा होगी।

आर्य-परिवार संघ

उद्देश्य

१. आर्य- परिवारों में आर्य-जीवन लाने का पूरा पूरा प्रयत्न करना और वैदिक संस्कार तथा वैदिक वर्णाश्रम मर्यादा को क्रियात्मक रूप देना।
२. आर्यों मे गुणकर्मानुसार विवाह की प्रथा को प्रचलित करना।
३. संघ के सदस्यों के सुख-दु ख में शामिल होना और प्रेम, सहानुभूति तथा मेल को बढ़ाना।

नियम

१. इस सघ का नाम "आर्य परिवार सग" होगा।
२. सघ के सदस्यो को प्रत्येक परिवार पीछे ।) मासिक चन्दा सदस्य फी का देना होगा।
३. जो सदस्य आर्य-समाज के उद्देश्यो के विरुद्ध आचरण करेगा वह सघ से पृथक कर दिया जायगा।
४. सघ की व्यस्था के लिए संयोजक सहित ६ सभासदों की एक कार्य कारिणि सभा होगी जिसमे ५ पुरुष व ४ स्त्रियाँ होंगी।
   (क) चुनाव प्रति वर्ष हुआ करेगा।
   (ख) प्रत्येक अधिवेशन मे सामयिक प्रधान चुना जाया करेगा।
   (ग) सयोजक का कर्त्तव्य होगा कि वह कार्य-कारिणी के निर्देशानुसार कार्य-संचालन करे, और वही उत्तर दाता होगा।
५. कार्यकारिणी का अधिवेशन प्रतिमास तथा आवश्यकता पडने पर हुआ करेगा।
६. प्रतिमास पारिवारिक सहभाज होगा, जिसका खर्च सहभाज मे सम्मलित सदस्य मिलकर पूरा करेंगे।
७. सघ के उद्देश्यों के प्रचारार्थ सामयिक पत्र की व्यवस्था करना।
८. सघ के सदस्यों का परिवार के विवरण सहित रजिस्टर रखना।
९. विवाह योग्य बालक व बालिकाओ का रजिस्टर रखना और उनके सम्बन्ध कराने मे सहयोग देना।
१०. परिवारों के सुख-दु ख की सूचना (संघ की ओर से) सदस्यो को देनी तथा, प्रत्येक सदस्य का एक दूसरे के सुख-दु ख मे सम्मलित होना कर्त्तव्य होगा।
११. "आर्य परिवार सहायक फड' स्थापित करना। जिसका धन निम्न अवसरों पर सघ के सदस्यो की सहायता मे खर्च करना।
   (क) सदस्य की मृत्यु होने पर उनकी विधवा स्त्री व शिक्षा के लिए आवश्यकता होने पर देना।
   (ख) पारिवारिक सकट व आवश्यकता के अवसर पर सहायता देना।
१२. नियम व उपनियम आवश्यकतानुसार समय-समय पर सशोधित, परिवर्तित तथा परिवर्धित हुआ करेंगे।

हैदराबाद और आर्यसमाज

[श्री प्रो० सुधाकरजी मन्त्री सार्व० सभा का वक्तव्य]

हैदराबाद राज्यमें आर्यों और हिंदुओंके कष्ट और असुविधाएँ प्रसिद्ध हैं। प्रेस और प्लेटफार्म द्वारा उनका पर्याप्त प्रचार हो चुका है। प्रत्यक्ष को और भी प्रत्यक्ष करने की हमें आवश्यकता नहीं है। केवल १ वर्ष में धर्म्मान्ध मुसल्मानों द्वारा ३ आर्य्यों की नृशस हत्या की गई है। राज्य के धर्म्म विभाग की आज्ञा के बिना आर्य्यसमाज मन्दिर के भीतर प्रार्थना-उपासना करने, सत्संग लगाने तथा हवनकुण्ड के प्रयोग की आर्य्यों को आज्ञा नहीं है और न ही वे अपने घरों और आर्य मन्दिरों पर ओ३म् का झडा लगा सकते हैं। बिना आज्ञा के धर्म्म-स्थानों के निर्माण और जीर्णोद्धार की भी आज्ञा नहीं है।

थोथे बहानों और निर्मूल अपराधों के आधार पर मातहत पुलिस कर्मचारी आर्य्यसमाज के कार्य्यकर्त्ताओं और प्रचारकों को तंग करते हैं। हमारे बहुत से आदरणीय प्रचारकों का राज्य में प्रवेश बन्द कर दिया गया है। आर्य्यसमाज को अपना प्रकाशन कार्य करने की आज्ञा नहीं है। बाहर के आर्य्यसमाजी तथा हिन्दुओं के समाचार पत्रों का भी राज्य मे प्रवेश बन्द कर दिया गया है। हैदराबाद की ताजी सूचना है कि हमारे उत्साही प्रचारक पं० नरेन्द्रजी को गिरफ्तार करके उन्हें अज्ञात स्थान पर भेज दिया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि 'आर्य्यों को रहने न दो' की नीति का निजाम सरकार बड़ी उग्रता के साथ अवलम्बन कर रही है। सब से ज्यादा आश्चर्य्य की बात यह है कि राज्यमें हिन्दुओं की बहुत बड़ी संख्या है फिर भी उनके साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया जाता जो सभ्य देशों के साधारण से साधारण अल्पसंख्यक लोगों के साथ किया जाता है। पुलिस का शासन मुख्यतया मुसल्मानों के हाथ में होने के कारण आर्य्यों और हिन्दुओं को नागरिक अधिकारों से बंचित किया जा रहा है।

पिछले ६ वर्षोंसे हम चिल्ला रहे हैं परन्तु हमारा चिल्लाना 'अरण्य रोदन' के सदृश हो रहा है। जब १९३४ मे सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा ने हिज एक्जाल्टेड हाईनैस की सेवा में आवेदन-पत्र प्रस्तुत करके उनसे निजू हस्तक्षेप की प्रार्थना की थी तो हम आशा थी कि हमारी धार्मिक बाधाओं को दूर करने और आपस मे सद्भाव उत्पन्न करने की दिशा मे कोई ठोस कार्य किया जायगा।

इलाहाबाद के लीडर ने इस आवेदन पत्र पर आलोचना करते हुए उस समय लिखा था "यह आवेदन पत्र बड़े ही युक्तियुक्त ढग में विषय का प्रतिपादन करता है। इसकी भाषा शुरू से लेकर अन्त तक निर्दोष है। हमारे लिये यह एक रहस्योद्घाटन है और अन्य बहुतोंको भी होगा कि आर्यसमाज जैसे समाज के वैध, शान्त और धार्मिक कार्य पर आज भी इस प्रकार के अनुचित प्रतिबन्ध लगाये जाते हैं।" हमे दुख है कि यह आवेदन-पत्र भी स्थिति की गम्भीरता के प्रति निजाम सरकार को सजग न कर सका और उस स्थिति के जारी रहने से अब राज्य के आर्य्यों और हिन्दुओं में यह भावना काम करती जा रही है कि उनका जान और माल खतरे में है।

सार्वदेशिक सभा और आर्य्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य प्रार्थना-पत्रों, डेपुटेशनों तथा

विरोध सूचक प्रस्तावों इत्यादि के द्वारा निज़ाम राज्य का इस अवस्था की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिये निरन्तर यत्न करती रही हैं। उनकी एक मात्र चिन्ता यह रही है कि राज्य के अधिकारियों के सुप्रभाव से जिनसे इस सभा के जिम्मेवार कार्यकर्ता मिलते रहे हैं सद्भावना स्थापित हो जायगी और भ्रमों का निवारण हो जायगा। परन्तु दुःख है दूसरी ओर से कभी इस प्रकार की चिन्ता प्रगट नहीं की गई। इस प्रकार निज़ाम सरकार के टस से मस न होने के रुख ने आर्यों और हिन्दुओं को निराश कर दिया है और अपनी नितान्त असहायावस्था मे इन्होंने अपनी जिम्मेवारी पर प्रारम्भिक उपाय के रूप मे व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिये इस सभा की आज्ञा चाही है।

अतएव, स्थिति ने भयङ्कर रूप धारण कर लिया है।

इस सभा तथा रक्षा समिति की सम्मिलित बैठक ने हैदराबाद की स्थिति का सामना करने के लिये श्री महात्मा नारायण स्वामी जी को पूर्ण अधिकार देने का निश्चय कर दिया है। उनका तात्कालिक कार्यक्रम २५, २६ और २७ दिसम्बर १९३८ को शोलापुर मे आर्य कांग्रेस का अधिवेशन बुलाने का होगा। उस अवसर पर भावी कार्यक्रम निश्चित करने तथा राज्य के पीड़ित लोगों की पीड़ा के निमित्त समस्त हिन्दू जगत् और देश के बुद्धिमान लोगों की सहायता और सहानुभूति प्राप्त करने का यत्न किया जायगा।

—o—

Professor Sudhakar, General Secretary of the International Aryan League has issued the following statement to the Press —

The sufferings and disabilities of Aryas and Hindus in the Hyderabad State are now well known. The Press and platforms have given them sufficient publicity We need not make an attempt to make the obvious still more obvious During one single year, three Aryas have been brutally murdered by fanatic Muslims The Aryas are not allowed free congregational prayers and the use of Havankund inside the Aryasamaj temples and also the hoisting of Om flags on houses and Aryasamaj temples, unless they are permitted and registered by the Ecclesiastical Department of the Nizam s Government No construction and repairs of any religious building is allowed without such permit Aryasamaj preachers and workers are harassed by subordinate police officials on flimsy pretexts and unjustifiable allegations Many of our respected missionaries are banned from entering into the State Aryasamaj publicity work is not allowed and Aryasamaj and Hindu papers from outside are banned The latest news from Hyderabad is that our energetic missionary Pandit Narendra has been arrested and deported to an unknown destination. It appears as if the policy of give no quarter to an Arya" is being ruthlessly pursued by the Nizam s Government The most amazing thing is that the Hindus though in over-whelming majority are not accorded a treatment meted out to even an insignificant minority in civilized countries The police control being chiefly vested in Muslim hands is responsible for the denial of civic rights to Aryas and Hindus

We have been crying for the last

six years, but our cry has been "a cry in the wilderness". When in 1934, the International Aryan League submitted a memorial to H E H. the Nizam of Hyderabad, enumerating the Aryasamaj and Hindu grievances and requesting His Exalted Highness personal intervention, we expected that something substantial would be done to remove our religious disabilities and to create good-will and mutual understanding The 'Leader' of Allahabad commenting upon this memorial then wrote, "It presents the case in a closely reasoned manner. the language of the document throughout is unexceptionable, It is a revealation to us as it would be to many others, that legitimate, peaceful and religious work of a sect of the standing of the Aryasamaj could even this day be subjected to such unreasonable restrictions" We are sorry to point out that even this memorial did not awaken the Nizam's Government to the seriousness of the situation, the continuity of which has now given rise to a growing feeling of unsecurity of life and property in the minds of Aryas and Hindus living in the State

The International Aryan League and the Arya Pratinidhi Sabha of the Nizam's State have not slackened their efforts to draw the attention of the Nizam's Government towards all this state of affairs by means of protests, petitions, representations and deputations 'Their one anxiety throughout has been that through the good offices of the State officials who were approached through the responsible workers of this League, mutual good-will and friendship be restored and misunderstandings be removed, but their anxiety has never been reciprocated by the other side Thus the intransigent attitude adopted by the Nizam's Government has now driven the Aryas and Hindus to desperation, and in their state of utter helplessness, they have sought the permission of this League to launch individual passive resistance as a preliminary measure on their own responsibility

The situation has therefore, assumed an alarming appearance This League has now resolved at its joint meeting with the Aryan Defence Committee to appoint Shree Mahatma Narayan Swami as Dictator with full powers to cope with the future Hyderabad situation in respect of the sufferings of the Aryas His immediate objective will be to make arrangements for holding the Session of an All-India Aryan Congress at Sholapur on 25th, 26th and 27th December, 1938 On that occasion efforts will be made to decide and formulate a future plan of action and also to enlist the sympathies of entire Hindu Community and other sanner elements in the country for the alleviation of the sufferings of the aggrieved in the State

HIGH THOUGHTS

(उच्च विचार)

ACTION (कर्म)

A really great man is known by three signs—generosity in the design, humanity in the execution and moderation in success.

वास्तविक बड़ा आदमी तीन चिन्हों से जाना जाता हैं अर्थात विचार की उदारता, क्रिया की धार्मिकता तथा सफलता के संयम से ।

The study of God's word, for the purpose of discovering God's will, is the secret discipline which has formed the greatest characters

परमात्मा की प्राप्ति का यत्न गुप्त तपश्चर्या होती है जो मनुष्यों को महान बनाती है ।

Greatness lies not in being strong, but in the right use of strength and strength is not used rightly when it serves only to carry a man above his fellows for his own solitary glory He is the greatest whose strength carries up the most hearts by the attraction of his own.

बलवान बनने में बड़प्पन नहीं होता है । बड़प्पन तो शक्ति के अच्छे प्रयोग में होता है । आत्म-संवर्द्धन के लिए शक्ति का प्रयोग करना सदुपयोग नहीं कहलाता है । वही आदमी सबसे बड़ा होता है जो अपनी शक्ति से अपने हृदय के आकर्षण से अनेकों हृदयों को अपनी ओर खींच लेता है ।

If any man seeks for greatness, let him forget greatness and ask for truth and he will find both.

यदि कोई आदमी कीर्ति प्राप्त करना चाहता है तो उसे कीर्ति को भुला कर सत्य का अनुसरण करना चाहिए इस प्रकार उसे दोनों वस्तुएं प्राप्त हो जायंगी ।

There never was any heart truly great and gracious that was not also tender and compassionate

ऐसा वास्तविक रूप में उदार और विशाल हृदय कभी नहीं हुआ जो विशाल और उदार होने के साथ साथ कोमल और दयालु न रहा हो ।

A nation's greatness resides not in her material resources, but in her will, faith, intelligence and morality

किसी देश का बड़ा पन उसका धन-दौलत नहीं होता वरन उसकी इच्छा, निष्ठा, बुद्धिमत्ता और धार्मिकता होती है ।

In life we shall find many men that are great and some men that are good, but very few men that are both great and good.

जीवन मे हमें बहुत से व्यक्ति मिलेंगे जो बड़े होंगे कुछ व्यक्ति ऐसे मिलेंगे जो अच्छे होंगे परन्तु बहुत कम ऐसे मिलेंगे जो अच्छे और बड़े दोनों होंगे ।

Internationalism

(By Raghunath Prasad Pathak)

The scholars and thinkers of the world to-day are stressing need of internationalism as a means to ward off world's present unrest. This is a very happy idea. The long series of the havocs and mischieves which "Religion" and "Nationality" have wrought lead them to the conclusion that these two are the most potent enemies of the "World Peace". They are right in remarking that they have separated man from man and have made him thirsty for the blood and exploitation of his fellow-beings.

Religion has overshadowed the "Real Dharma" with superstitions, narrow creeds and rituals, and 'Nationality' has made the members of the same great human race alien and antogonists to one another by cutting them off by artificial, geographical barriers. They have taught man to insult humanity and have shaken in and dispelled from the hearts of the people the feeling that they belong to a common decent and one family.

The barriers of "Religion" and "Nationality" are artificial. In support of this view we would rest content to quote from amongst various correborations, a few following lines from the paper read by Mr. Zean Herbert on the occasion of the Ram Krishna Centenary celebrations held at Calcutta last year:—

"Really substantially there is for man one natural group mankind. And there is only one natural unit individual man. All the classifications, divisions and sub-divisions between the unit and the whole, all churches, parties, nations, groups, of all sorts whether newly invented, like nations or sanctified by time like religions are artificial and correspond to nothing real. A man is a man and a member of mankind and nothing else."

From the beginning of the Creation down to this day, there has been only one Dharma of man and the same will remain for ever. Love for truth and fairplay, compassion and fellow feeling etc. which constitute "Real Dharma" are found inherent in all human beings, be they Hindus or Mussalmans, Christians or Jews, English or Germans, Savages of Africa or the Negroes of America. It is not a fact that the spirit of "Dharma" is found only amongst the Hindus and that Christians and Muslims are bereft of it. No human being lacks that spirit, though there may be a disparity of quantity. This Dharma is the "Dharma" of humanity as preached by the Sacred Vedas and Upanishadas and places before man a well-conceived conception of life. It transcends the limits of place and time and is, the same as was advocated by Rishi Dayananda Saraswati in modern times and for the propagation of which the Arya Samaj stands.

Different opinions have come to light with regard to the measures to be adopted to bring about real universal brotherhood. Some people say that this subject should be taught in schools and that suitable books be prepared for the purpose. Some people suggest that parties of selected scholars and thinkers of the world should visit different countries frequently and propagate Internationalism. Sir Oliver Lodge, the eminent scientist supports this suggestion with the addition that by the exchange of periodicals, by the propaganda of great societies and by the use of knowledge no matter where it is derived from people should be made to realize that they are the members of the same great human family. Rishi Dayanand opines that people should be made to realize that they are the children of the same Great Father and all should be content only with the advancement of all and they should regard woes and weals and ups and downs of others as their own. All this is possible when there is one common language, one Government and one Dharma as laid down in the Vedas. We do not want here to explain what the "Dharma" as preached by the Vedas is? What we want is to invite scholars and thinkers to make an impartial and exhaustive study of the same and to see when and in what form does the progressive thought-current of the world come round to that of Rishi Dayananda's just as it has come round with respect to 'Religion and 'Nationality and ushers an Era of Love and Peace, Happiness and Prosperity, Mutual Understanding and Affection in the whole universe.

—

आवश्यक सूचना

मई १९३७ के सार्वदेशिक, 'आर्य्य मित्र' तथा 'अर्जुन' आदि पत्रों में प० भास्करानन्द जी, श्री प० अयोध्या प्रसाद जी तथा आर्य्य दिवाकर सभा डच गयाना के सम्बन्ध मे इस सभा की तीन विज्ञप्तियाँ प्रकाशित हुई था। उनम से एक विज्ञपप्ति मे यह प्रकट किया गया था कि इस सभा ने विदेश से आई हुई शिकायतों तथा अन्य कई कारणों से प० भास्करानन्द को अपनी सेवाओं से पृथक करने के लिए डच गयाना इत्यादि की सभाओं को प्रेरणा कर दी है। हम इस विज्ञप्ति के द्वारा स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि नियन्त्रण सम्बन्धी शिकायतों के आधार पर ही सभा ने प० भास्करानन्द जी को पृथक किया था उनके सदाचार इत्यादि की सभा को कोई शिकायत न थी।

मन्त्री, सार्वदेशिक सभा, देहली।

आवश्यक सूचना

पतंजली योगदर्शन मे जो यम नियम हैं उनके आशय के वेदमन्त्र चाहिए जिस विद्वान को विदित हों वे कृपया श्री बाबू पूर्णचन्द्रजी वकील (माईथान) आगरा को पता देने का कष्ट करें।

न्यायदर्शन में इच्छा द्वेष और प्रयत्न इत्यादिक जो जीव के लक्षण हैं वे ही लक्षण जिस वेद मन्त्र मे हों उनका पता भी उपर्युक्त बाबू जी को विद्वान महानुभाव देने की कृपा करें।

स्वाध्याय योग्य उत्तम साहित्य

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी कृत

कतिपय ग्रन्थ

(१) मृत्यु और परलोक

शरीर, अन्त करण तथा जीव का स्वरूप और भेद, जीव और सृष्टि की उत्पत्ति का प्रकार, मृत्यु का स्वरूप तथा बाद की गति, मुक्ति और स्वर्ग, नर्क इत्यादि लोकों का स्वरूप, मुक्तिके साधन आदि आदि विषयों पर अद्भुत पुस्तक। मूल्य।)

(२) योग रहस्य

इस पुस्तक मे योग के अनेक रहस्यों को उद्-घाटित करते हुए उन विधियो को भी बतलाया गया है जिससे कोई आदमी जिसे रुचि हो—योग के अभ्यासों को कर सकता है। मूल्य ।-)

(३) विद्यार्थी जीवन रहस्य

विद्यार्थियों के लिए उनके मार्ग का सच्चा पथ प्रदर्शक उनके जीवन के प्रत्येक पहलू पर श्रृङ्खलाबद्ध प्रकाश डालने वाले उपदेश। द्वितीय संस्करण ≡)

(४) उपनिषद् रहस्य

ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य उपनिषदों की बहुत सुन्दर खोजपूर्ण और वैज्ञानिक व्याख्यायें मूल्य क्रमश: ≈), ≈)॥ ≈)॥, ≈)॥ ≈)॥, -)।

अन्य ग्रन्थ कर्त्ताओं का

स्वाध्याय योग्य बहुमूल्य साहित्य

(१) इज़हारे हक़ीकत ॥≈) सत्य-निर्णय १।)

(उर्दू) (हिन्दी)

श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य्य,

महात्मा गाधी ने आर्य्य समाज और ऋषि दयानन्द के मिशन और ग्रन्थों के सम्बन्ध में जो आक्षेप किए थे इस पुस्तक मे प्रामाणिक रीति से उनका खण्डन किया गया है। पुस्तक की अन्यान्य विशेषताओं में से एक विशेषता यह है कि लेखक ने आलोचना करते हुए उस मान और लोक-प्रियता का पूरा ध्यान रक्खा है जिसके महात्मा जी अधिकारी हैं। पुस्तक मे कोई भी स्थल ऐसा नहीं है जिससे महात्मा जी के प्रति अवज्ञा का आभास होता हो। पुस्तक स्थिर साहित्य में स्थान पाने योग्य है।

(२) धर्म और उसकी आवश्यकता ।-)

लेखक श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य

इस पुस्तक में धर्म का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। नई रोशनी के उन नव-युवक और नवयुवतियों के हाथमें रखे जाने योग्य

है जो धर्म और ईश्वर में न केवल विश्वास ही नहीं रखते बल्कि उनका मखौल भी उड़ाते हैं। मूल्य ।-)

(३) आर्य्य-पर्व्व पद्धति

आर्य्य जगत में एक से ही त्यौहार मनाने तथा त्यौहारों के सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करा देने के लिये इस पुस्तक की रचना की गई है। इस का प्रत्येक आर्य-परिवार में रखना आवश्यक है। संशोधित संस्करण ॥=)

(४) कर्त्तव्य दर्पण

आर्यों की नित्य कर्म विधि-इत्यादि की यह बहुत उत्तम पुस्तक है। आर्य्यसमाज सम्बन्धी आवश्यक ज्ञातव्य बातें भी इसमें दी गई है। मूल्य ≈)॥

(५) कथामाला

इस पुस्तक में स्वामी जी महाराज की विद्वत्ता-पूर्ण और अत्यन्त उपयोगी कथाओं का संग्रह किया गया है। आर्य्य नर नारी मात्रके स्वाध्याय के योग्य है। मूल्य ।≈)

(६) आर्य्य जीवन और गृहस्थधर्म

लेखक—पं० रघुनाथप्रसाद पाठक

आर्य्य जीवन किस प्रकार बनाया जाता है और गृहस्थ किस प्रकार श्रेष्ठ बनाए जा सकते हैं इन सब बातों का इस पुस्तक में वर्णन किया गया है। पुस्तक मुख्यतया श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के प्रवचनों और व्याख्यानों के आधार पर लिखी गई है। मूल्य ।≈)

(७) आर्य्यवर्त की वाणी

अनुवादक पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक

यह पुस्तक श्रीयुत साधु टी० एल० वास्वानी की वायस आफ आर्य्यवर्त का हिन्दी अनुवाद है। इसमें ऋषि दयानन्द का जीवन संक्षेप में बहुत ओजस्वनी भाषा में प्रस्तुत किया गया है। अन्य भी बहुत सी नवयुवकोपयोगी सामग्री इस पुस्तक में प्रस्तुत की गई है। मूल्य ≈)

(8) Ecclesia Divina

Well - Bound—By Bhumanand Saraswati M A, 5/-

(9) Fountain Head of Religion

By Pt Ganga Prasad M A,

Chief Judge

Well-bound	1 4/
Un-bound	-/12/-

(१०) अमृत वर्षा ॥।)

लेखक म० नारायण स्वामी जी

(११) गृहस्थ जीवन रहस्य

सजिल्द १।)

(१२) आत्म दर्शन १।)

(१३) वेद तत्व प्रकाश सजिल्द

सं० श्री सुखदेव विद्यावाचस्पति २)

मिलने का पता :—

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा, श्रद्धानन्द बाज़ार, देहली।

कमीशन रेट्स

पुस्तकालय सार्वदेशिक सभा।

अन्य ग्रन्थ कर्त्ताओं की पुस्तकों को छोड़ कर शेष सभा तथा सभा द्वारा प्रकाशित श्री महात्म नारायण स्वामी जी की पुस्तकों के घटे हुए मूल्य पर पुस्तक विक्रेताओं को निम्न प्रकार कमीशन दिया जायगा।

५) से २५) तक	१५) प्रति सैकड़ा
२६) से ५०) तक	२०) प्रति सैकड़ा
५१) से १००) तक	२५) प्रति सैकड़ा

नोट—(१) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश तथा (२) दयानन्द ग्रन्थ माला पर कुछ कमीशन नहीं दिया जायगा।

—※—

सार्वदेशिक में विज्ञापन छपाई

के

रेट्स

स्थान	१ मासका	३ मासका	६ मासका	१ वर्ष क
पूरा पृष्ठ	१०)	२५)	४०)	७५
एक कालम	६)	१५)	२५)	४०)
आधा ,,	३।।)	८)	१५)	२५)
चौथाई ,,	२)	४)	८)	१५

उजरत का धन नियमानुसार पेशगी आना चाहिए।

आर्य्य समाज के नियमोपनियम — १।) प्रति सैकड़ा,)। प्रति

मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली

हैदराबाद और आर्य्यसमाज

सार्वभौम प्रगति

आर्य्यसमाज एक सार्वभौम प्रगति (आन्दोलन) है। पिछले ६० वर्ष से अधिक से यह भारत में तथा भारत से बाहर ज़ोर शोर के साथ धार्मिक, सामाजिक और शिक्षा सम्बन्धी कार्य्यों को कर रहा है और निर्विवाद एवं असंदिग्ध रूप में इसकी सत्ता स्थापित हो गई है।

देशी रजवाड़े भी इसकी प्रगतियों से अछूते नहीं रहे हैं। आर्य्यसमाज का मिशन सार्वत्रिक और उदार है। आर्य्यसमाज के आदर्श के अनुसार समस्त प्राणी एक ही पिता परमात्मा के पुत्र हैं और सब आपस में भाई-भाई हैं। आर्य्यसमाज के कार्य्य कर्त्ताओं में यह आदर्श ओत-प्रोत है और उन्होंने इस आदर्श का अनुसरण करते हुए जाति रंग अथवा सम्प्रदाय के भेद भावों को तिलाञ्जलि दे दी है। एक आर्य्य के लिए मनुष्य प्राणी एक ही परिवार के सदस्य हैं और लोक-सेवा उसकी समस्त प्रगतियों का प्रेरक सिद्धान्त है।

वैदिक संस्कृति

आर्य्यसमाज सम्प्रदाय नहीं है। निर्जीव रूढ़ियों और बनावटी क्रिया-कलापों में उसका विश्वास नहीं है जो दूसरे मज़हबों की व्यापार की सामग्री हैं। इसका विश्वास जीवन, संस्कृति और शिक्षा सम्बन्धी विकाश मे है। इसके तरीके तर्क, आदेश-उपदेश, समझाना-बुझाना और शान्तिपूर्ण ढंग से लोगों के हृदयों में अपना प्रवेश करना है। वह इन हथियारों को कठोरता पूर्वक काम में लाता है और इसने लकीरपन्थी धर्मान्ध हिन्दुओं और मुसलमानों के क्षेत्रों में, जो प्रकाश से बचते और अन्धकार को प्यार करते हैं, खलबली मचा दी है।

जो व्यक्ति आर्य्यसमाज पर यह आरोप लगाते हैं कि यह हिन्दुओं का पक्षपाती है वे इस बात को अनुभव नहीं करते कि आर्य्यसमाज ने दूसरे मज़हबों की कमज़ोरियों

और बेवकूफ़ियों का पर्दा फ़ाश करने के लिए जितना कार्य्य किया है, ठीक उतना ही हिन्दू धर्म्म की त्रुटियों का परिमार्जन करने के लिए भी किया है।

निस्सन्देह यह बिलकुल स्पष्ट है कि जो व्यक्ति तर्क और युक्ति के प्रहारों को सहन नहीं कर सकते हैं वे ही आर्य्यसमाज के कार्य्य का घोर विरोध करते हैं। ठीक इसी आधार पर हम भारतवर्ष में इस्लाम को आर्य्यसमाज के विरुद्ध खड़ा हुआ और इसकी प्रगतियों को रोकने तथा इसके शान्त प्रचार में बाधा उपस्थित करने के लिए उग्र उपायों का अवलम्बन करते हुए देखते हैं। जो लोग तर्क की आवाज़ को नहीं सुन सकते हैं वे इसे शान्त करने का यत्न करते हैं। परन्तु ऐसा करते हुए वे अशान्ति और उत्पातों को जन्म देते हैं।

हैदराबाद में हमारी मुसीबत

हमसे पूछा जाता है कि हैदराबाद रियासत में हमारी वास्तविक मुसीबत क्या है? संक्षेप में यह ठीक वही मुसीबत है जो हम दूसरे स्थानों में पाते हैं अर्थात् तर्क और युक्ति के प्रकाश को रोकने से जो मुसीबत उत्पन्न होती है। हैदराबाद में हमारे काम को प्रारम्भ हुए लगभग ४० वर्ष होते हैं। प्रारम्भ में राज-कर्मचारियों के साथ हमारे सम्बन्ध उत्तम थे और पारस्परिक सद्भाव तथा समझौते पर आश्रित थे। उन दिनों प्रजा के कई राज-भक्त और सम्मानित व्यक्ति जो राज्य के कर्मचारी भी थे, आर्य्यसमाज के सदस्य थे। परन्तु धीरे-धीरे हैदराबाद रियासत ने एक मज़हबी प्रचारक का पद धारण कर लिया। वर्तमान प्रजा तन्त्रीय भावनाओं के अनुसार राज्य को धार्मिक पक्षपात से पृथक् रहना चाहिए और समस्त जातियों के प्रति उसका एक जैसा कर्तव्य होना चाहिए, जो न्याय और औचित्य के विशुद्ध भावों से परिपूर्ण हो। मज़हब की बिना पर किसी एक जाति का पक्ष लेना सम्प्रदायवाद का पोषण करना और उन उत्पातों की सृष्टि करना है, जो अनिवार्य्य रूप से इस बुराई से प्रवाहित होते हैं।

हैदराबाद में सम्प्रदायवाद

पाठकों को मालूम होगा कि धर्म्म की दृष्टि से हैदराबाद मुसलमानी रियासत है, परन्तु आबादी के लिहाज़ से इसमें हिन्दुओं की बहुसंख्या है। इसकी कुल आबादी में से ८५ प्रतिशत हिन्दू हैं और राज्य की आमदनी का मुख्य भाग हिन्दुओं की जेबों से प्राप्त होता है।

इस पर भी हिन्दुओं को धार्मिक, सामाजिक और शिक्षा सम्बन्धी अधिकारों से वंचित रक्खा जाता है और उन्हें अपना सांस्कृतिक विकाश करने की आज्ञा नहीं है। दूसरी तरफ़, राज्य के धर्म्म विभाग की स्वीकृति और देख-रेख में प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप में विविध उपायों से हिन्दुओं की सख्या घटाने का व्यवस्थित यत्न किया जाता है, परिणाम यह होता है कि हिन्दुओं को अपने पूर्वजों के धर्म्म में आस्था नहीं रहती है और वे आसानी से मुसल्मानी धर्म्म में जाने के लिये उत्साहित हो जाते हैं।

निज़ाम सरकार की ओर से समय २ पर कुछ सरक्यूलर ※ प्रकाशित हुए हैं। जो स्पष्ट रूप से हिन्दुओं के धार्मिक अधिकारों में काट-छाँट करते हैं। जब कभी मुहर्रम और दशहरा एक साथ आ पड़ते हैं, तो हिन्दुओं को बिना बाजे के अपना पर्व्व मनाना होता है और 'सीमोल्लघन' के लिये चुपचाप मातम-पुरसी की हालत में जाना होता है। त्यौहारों के सम्बन्ध में मुसलमानों को हिन्दुओं के मुक़ाबले में जो तरजीह दी जाती है, उसका यह एक ज्वलन्त उदाहरण है।

एक दूसरे सरक्यूलर के अनुसार कोई भी जलूस, चाहे वह धार्मिक अनुष्ठानों के सिलसिले में ही क्यों न बनाया गया हो, धर्म्म-विभाग की पूर्व्व स्वीकृति के बिना नहीं निकाला जा सकता। यह सरक्यूलर ब्रिटिश भारत के उच्च न्यायालयों और प्रीवी कौंसिल की स्थापनाओं का नितान्त खण्डन करता है, जिनमे स्पष्ट रूप से उचित ढग में राज-मार्ग पर धार्मिक जलूसों के निकाले जाने का अधिकार स्वीकार किया गया है।

ऐसे भी सरक्यूलर हैं, जिनके अनुसार मस्जिद के सामने अथवा मस्जिद से १०० क़दमो के भीतर २ बाजा बजाना निषिद्ध है। एक सरक्यूलर के द्वारा नये मन्दिरों के निर्माण और पुराने मन्दिरों के जीर्णोद्धार के अधिकार से हिन्दुओ को वचित किया गया है।

जब हम इस सरक्यूलर को मस्जिदों इत्यादि की राजकीय सहायता और संरक्षण सम्बन्धी सरक्यूलरों के साथ पढ़ते हैं तो इस सरक्यूलर का अनौचित्य हम पर भली-भाँति स्पष्ट हो जाता है। जब कि राज्य के कोष से जिसमें मुख्यतया हिन्दुओं से पैसा आता है, हैदराबाद में तथा उससे बाहर मस्जिदों का निर्माण, रक्षा और मरम्मत इत्यादि हो सकती

※ एल० बी० पाठक द्वारा प्रकाशित 'हैदराबाद रियासत में हिन्दुओं की धार्मिक बाधायें' नामक पुस्तक में इन सरक्यूलरों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है।

है तब हिन्दुओं को इस सिद्धान्त से क्यों वंचित रक्खा जाता है? यह समझ में नहीं आता है।

ये तथा दूसरे सरक्यूलर हिन्दुओं पर जो पाबन्दियाँ लगाते हैं वे ही पाबन्दियाँ राज्य में आर्य्यों पर भी लगी हुई हैं।

एक दूसरी बात जो स्मरण रखने की है वह यह है कि हिन्दुओं को अपने शिक्षा तथा संस्कृति सम्बन्धी हितों की देख-रेख करने की आज्ञा नहीं है। स्कूलों और अखाड़ों* को खोलने तथा उनका प्रबन्ध करने की प्राइवेट रूप में किसी को आज्ञा नहीं है। राज्य अपनी प्रजा की समस्त शिक्षा का प्रबन्ध करता है और मुसलमानों के हितों के मुक़ाबले में हिन्दुओं के सांस्कृतिक हितों की अवहेलना करता है। मुसलमानों के इन हितों की बड़े ध्यान और धार्मिक उत्साह के साथ रक्षा की जाती है।

आर्य्यसमाज और हिन्दू सोसाइटी

आर्य्यसमाज जिसका सांस्कृतिक और धार्मिक जोश असंदिग्ध है इन पाबन्दियों को सहन नहीं कर सका। उसने देखा कि उसका कार्य्य रोका जा रहा है और उसका प्रोग्राम कुण्ठित किया जा रहा है। राज्यके अधिकारियों को आर्य्यसमाज की बेचैनी का पता लगने में देर न लगी। भारतीय भारत (रियासतों) और ब्रिटिश भारत में हिन्दुओं में महान् व्यापक जाग्रति आर्य्यसमाज के ही कारण हुई है। इसने हिन्दुओं में एक प्रकार की आत्म-जाग्रति उत्पन्न की है।

वे यह अनुभव करने लगे हैं कि उनकी वर्तमान मुसीबतें मिथ्या, धार्मिक भावनाओं और अन्ध विश्वासों से पैदा हुई हैं। आर्य्यसमाज के प्रभाव से हिन्दू धर्म अपने को सामाजिक त्रुटियों से पवित्र करने लग गया है। बाहरी कूड़े करकट से साफ़ हुआ 'हिन्दू-धर्म्म वैदिक संस्कृति पर आश्रित धर्म्म है, जिसका पुनरुद्धार करना ऋषि दयानन्द का ध्येय था। इस प्रकार आर्य्य समाज हिन्दू धर्म्म का अग्रणी है। और हैदराबाद राज्य में हिन्दुओं के निरन्तर ह्रास की न वह अवहेलना कर सकता था और न उसे अवहेलना करनी चाहिये थी।

---

* हैदराबाद प्रजा शिक्षा परिषद् की स्पैशियल कमेटी द्वारा प्रकाशित "प्राइवेट स्कूलों, सार्वजनिक जल्सों और अखाड़ों सम्बन्धी नियम" नामक पुस्तक में पाठक विस्तृत सूचनाएँ प्राप्तकर सकते हैं।

निज़ाम सरकार को शीघ्र ही यह अनुभव हो गया कि हिन्दुओं की संख्या को कम करने में, उनके व्यवस्थित प्रयत्न में जो तबलीग इत्यादि को विविध प्राइवेट एजेन्सियों के द्वारा हो रहा था, आर्य्य समाज का कार्य्य बाधक है। इस प्रकार आर्य्य समाज के प्रति राज्य ने अपना रुख बदल दिया और उसके शान्त प्रचार में असंख्य बाधाएँ उपस्थित करने लग गया। ये बाधाएँ अब इतनी ज्यादा बढ़ गई हैं, और इस सीमा तक पहुँच गई हैं कि वहाँ आर्य्य समाज का साधारण कार्य्य भी असंभव हो गया है।

पिछले छ वर्षों में हमने राज्य के अधिकारियों से लिखा-पढ़ी और तर्क-वितर्क करके पूरा २ यत्न किया कि पुलीस हमारे काम में हस्ताक्षेप न करे और हमारे शान्त कार्य्य को होने दे। परन्तु हमारे सब तर्क-वितर्क, अनुनय-विनय, विरोध और आवेदन-पत्र धार्मिक उपासना और धार्मिक अनुष्ठानों के हमारे वैध अधिकारों को न दिला सके।

हमारे आन्दोलन का संक्षिप्त इतिहास

पाठक आगे के पृष्ठों में पढ़ेंगे कि राज्याधिकारियों के साथ अपने सम्बन्धों को किसी भी प्रकार की कटुता से शून्य, श्रेष्ठ बनाए रखने, अपनी माँगों तथा अपने विरुद्ध लगाये गये आरोपों के सम्बन्ध में अपनी स्थिति को स्पष्ट करने के लिये हमने क्या क्या उपाय किये हैं। हैदराबाद राज्य में हमारी कष्ट-कथा तब से प्रारम्भ होती है, जब राज्य ने हमारे प्रचारकों पर प्रतिबन्ध लगाए।

प० चन्द्रभानु जी

वर्तमान वर्षों में प० चन्द्रभानु जी सबसे प्रथम बलि बने। १७ सितम्बर १९३२ ई० को राज्य ने उन्हें निर्वासन का आर्डर दिया। इस आर्डर के दिए जाने के बाद तत्काल ही हमारे स्थानीय आर्य्य समाज के प्रभावशाली और प्रमुख व्यक्तियों का एक डेपुटेशन निज़ाम सरकार के पोलीटिकल सदस्य से मिला और उनसे मालूम किया कि आर्य्य समाज के एक निर्दोष और शान्त प्रचारक के विरुद्ध किन कारणों से निर्वासन की आज्ञा प्रचारित की गई है। पोलीटिकल सदस्य ने बतलाया कि निर्वासन की आज्ञा राज्य में आर्य्य समाज के प्रचारक की हैसियत में प० चन्द्रभानु जी के विरुद्ध किसी शिकायत पर आश्रित नहीं है, वरन् भारत सरकार से प्राप्त हुई रिपोर्टों पर आश्रित है, कि प० चन्द्रभानु का राजनैतिक लोगों और संस्थाओं से सम्बन्ध है। हमें यह भी बतलाया गया था कि राज्य की पुलिस को उनसे कोई शिकायत नहीं है।

फलतः २०-१०-३२ को हमने भारत-सरकार के पोलीटिकल मन्त्री को लिखा और निज़ाम-सरकार के पोलीटिकल सदस्य के उपर्युक्त उत्तर की ओर उनका ध्यान खींचा। हैदराबाद स्थित रेज़ीडेन्ट से यह जानकर हमें अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि पं० चन्द्रभानु के निज़ाम राज्य से निर्वासन का फ़ैसला स्वयं निज़ाम की सरकार ने उन कारणों के आधार पर किया था, जो उसे पर्याप्त प्रतीत हुए थे, और उनकी रेज़ीडेन्सी की किसी रिपोर्ट या सलाह के परिणाम स्वरूप ऐसा नहीं हुआ है। रेज़ीडेन्ट महोदय ने यह भी हमें सूचना दी कि यह मामला ऐसा है कि वे राज्याधिकारियों को कोई प्रेरणा करने के लिये तय्यार नहीं हैं।

हमारे सन्देह

इस बात से हमें सन्देह हो गया, क्योंकि इसमें हमें कूट-नीतिज्ञता की गन्ध आती थी। हमें अनुभव हुआ, निज़ाम की सरकार आर्य्य समाज पर भारी प्रहार करने पर तुली हुई है, परन्तु ज़िम्मेवारी अपने ऊपर लेने को तय्यार नहीं है। अतएव हमने पुन निज़ाम सरकार को लिखने का फ़ैसला किया और दोनों सरकारों द्वारा स्वीकार की हुई प्रचारक की निर्दोषता की ओर सङ्केत करते हुए निवेदन किया कि वे अब उसके साथ न्याय करें। हमें यह रूखा उत्तर दिया गया, 'क्योंकि मामले का अन्तिम निपटारा हो चुका है, इसलिये गवर्नमेन्ट इसे फिर हाथ में लेना नहीं चाहती है।'

निज़ाम सरकार के साथ विधिवत् रूप में, तभी से हमारा वैध युद्ध आरम्भ होता है। यह युद्ध एक ओर धैर्य्य और दूसरी ओर ज़ुल्म (अत्याचार) के बीच था। हम एक लम्बे पत्र-व्यवहार में दाखिल हुए, जिसमें प्रस्ताव, विरोध, मेमोरियल और अनुनय-विनय शामिल थे और इन सबने अन्त में हमें निराशा और असहायावस्था में छोड़ दिया।

आर्य्य समाज के उत्सव पर प्रतिबन्ध

२१ मई १९३३ को तालुक़ेदार द्वारा आर्य्य समाज हलीखेड़ का जलसा एक दम बन्द कर दिया गया और यह थोथा कारण बतलाया गया कि आर्य्यसमाज का काम धार्मिक नहीं है। इस अवसर पर स्थानीय पुलिस और धर्म्मान्ध मुसलमानों ने आर्य्य समाजियों पर हर प्रकार की ज़्यादतियाँ कीं। सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि-सभा की ओर से हमने अपना केस प्राइम-मिनिस्टर के सामने रखा और उन से प्रार्थना की कि वे आर्य्य समाज को उत्सव करने और नगर कीर्तन निकालने की आज्ञा दें क्योंकि नगर कीर्तन उत्सव का एक अङ्ग है और पिछले १२ वर्षों से उत्सव के साथ साथ यह निकलता रहा है। परन्तु

केवल उत्सव के लिए आज्ञा मिली नगर कीर्तन के लिए नहीं। दूसरे वर्ष नगर कीर्तन के बिना भी उत्सव की आज्ञा नहीं मिली, और तब से आज तक यह उत्सव बन्द पड़ा है।

पं० रामचन्द्र जी पर अभियोग

हमारे प्रचारक शिरोमणि श्रीयुत प० रामचन्द्र जी देहलवी पिछले कई वर्षों से हैदराबाद प्रचारार्थ आते रहे थे और अपने मधुर-तर्क और विचार-गांभीर्य्य से उन्हों ने हिन्दुओं और मुसलमानों में अपना प्रभाव जमा लिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि हैदराबाद स्टेट के तबलीगी आन्दोलन के पक्षपोषक पंडित जी के दृढ़, सुनिश्चित और क्रमश: प्रभाव को सहन नहीं कर सके जिनका शान्त प्रचार राज्य में स्थिरता प्राप्त करने लग गया था। उन्होंने राज्य के अधिकारियों पर दबाव डाला कि वे येनकेन प्रकारेण पंडित जी को गिरफ़्त में लाएँ और राज्य की हिन्दू और मुस्लिम प्रजा पर दिन प्रति दिन बढ़ते जाने वाले उनके प्रभाव को रोकें वा कम करें।

सद्दीक दीनदार

यह स्मरण रहे कि सद्दीक दीनदार नामक एक मुस्लिम प्रचारक जो हिन्दुओं और उनके देवी-देवताओं के प्रति कठोर और अश्लील भाषा का प्रयोग करने के लिए बदनाम था उत्पात मचा और अपनी बेलगाम तक़रीरों से हिन्दुओ और मुसलमानो के सम्बन्धों को बिगाड़ रहा था तब आर्य्यसमाज हैदराबाद के कार्य्यकर्ताओं ने प० जी को हैदराबाद बुलाया जिससे कि वे अपने मधुर, युक्तियुक्त और शान्त उपदेशों से इस शरारत का मुक़ाबला कर सकें। हैदराबाद आर्य्यसमाज के वार्षिकोत्सव के अवसर पर प० जी ने ३ भाषण दिए जिनका जनता पर उत्तम प्रभाव पड़ा। परन्तु तीसरे दिन जब रात के ६॥ बजे बीदर के सबजज के हस्ताक्षरों युक्त एक समन प० जी को दिया गया तो उनके विशाल श्रोता-समुदाय के आश्चर्य्य का ठिकाना न रहा। उस समन में प० जी को प्रेरणा की गई थी कि सितम्बर १९३३ में हल्लीखेड में अपने भाषण में उन्होंने इस्लाम की जो तौहीन (अपमान) की थी उस तौहीन के अपराध का वे उत्तर देवें।

प० रामचन्द्र जी के अभियोग की ख़बर से तमाम हिन्दुस्तान में सनसनी फैल गई क्योंकि प० जी धार्मिक क्षेत्रों में एक सम्मानित हस्ती हैं। हमारी सभा के प्रधान श्री०

नारायण स्वामी जी महाराज ने पंडित जी के अभियोग के सम्बन्ध में निज़ाम साहब को निम्न तार दिया।

तार

"इस खबर से हमें अत्यन्त आश्चर्य हुआ है कि बीदर की पुलिस ने श्री पं० रामचन्द्र जी पर इस्लाम की तथा कथित तौहीन (अपमान) का दोषारोपण किया है। पं० रामचन्द्र जी आर्यसमाज के पुराने अनुभवी और अत्यन्त सम्मानित प्रचारक हैं, और उन्होंने कभी भी अपने श्रोताओं की धार्मिक भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाई है। विपरीत इसके उनके उपदेश सदैव मधुर युक्तियों के लिये प्रसिद्ध रहे हैं और इस बात की उनके मुसलमान मित्र भी प्रशंसा करते हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्रीमानों से आदर पूर्वक निवेदन करती है कि कृपया पुलिस को आप आज्ञा देवें कि वह पण्डित जी के विरुद्ध आरोपित अभियोग को वापिस लेलें। यदि यह सम्भव न हो तो कृपया एक विशेष ट्रिब्यूनल के निर्माण की आज्ञा देवें, ताकि सम्बन्धित पुलिस का अभियोग पर प्रभाव न पड़े, और न्याय के उद्देश्यों की पूर्ति हो सके।"

हमारी सभा के मन्त्री श्री प्रो० सुधाकर जी M A ने एतद् विषयक निम्नांकित पत्र भारत सरकार के पोलिटिकल सेक्रेटरी को भी भेजा।

'महाशय!'

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से जो भारत तथा उसके बाहर के समस्त आर्य समाजों की प्रतिनिधि सभा है, मैं बड़े आदर के साथ निम्न वक्तव्य की ओर आपका ध्यान आकर्षित करता हूँ और आपके तात्कालिक हस्ताक्षेप की प्रार्थना करता हूँ :—

एक प्रसिद्ध प्रचारक श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी के अधिकारों पर निज़ाम राज्यान्तर्गत बीदर की पुलिस के अभी हाल के अनुचित हस्ताक्षेप से भारतवर्ष के हिन्दुओं तथा आर्यों में बहुत बेचैनी फैल गई है। अपने प्रकाण्ड पाण्डित्य और उच्च आचार-विचार के कारण उनका सर्वत्र सम्मान है। बहुत तुच्छ आधार पर बीदर की पुलिस द्वारा उन पर अभियोग चलाया जा रहा है, और यह ख्याल किया जाता है कि इस अभियोग की तह में हैदराबाद पुलिस की, जिसमें मुसलमानों का बोलबाला है, धर्मान्धता है। वे लोग आर्य समाज के प्रचार को एक आंख नहीं देख सकते हैं। पण्डित जी एक अनुभवी प्रचारक हैं,

हैदराबाद रियासत से निर्वासित हमारे प्रचारक

प्रचारक शिरोमणि



पं० रामचन्द्र देहलवी



पं० चन्द्रभानु सिद्धान्तालङ्कार

गुलबर्गा केस के अभियुक्त



त्रिपान्त जिसे ३ वर्ष की सख्त सजा मिली।



हनुमन्तराव जिस ७ वर्ष का कठोर कारावास मिला।

और उनकी मधुर भाषण-शैली के कारण बहुत से मुसलमान, ईसाई भी उनके प्रशंसक हैं।

एक उन्नत राज्य के राज्य में जो कई बार इस बात की घोषणा कर चुके हैं कि हमारी प्रजा धार्मिक स्वतन्त्रता के अधिकारों का उपभोग करती है, इस प्रकार की विशेषताओं से युक्त बृटिश भारत के एक नागरिक के प्रति इस दुर्व्यवहार से घोर असन्तोष और क्षोभ फैले बिना न रहेगा। समाचार पत्रों से विदित होता है कि निज़ाम साहिब की सेवा में सैकड़ों तार भेजे गये हैं, जिनमें इस दुर्व्यवहार की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया गया है। उनसे प्रार्थना की गई है कि वे या तो अभियोग को वापिस लेने की आज्ञा देवें या एक विशेष ट्रिब्यूनल के द्वारा इस अभियोग का निर्णय करावें ताकि उनके साथ न्याय हो सके।

ऐसा प्रतीत होता है कि निज़ाम राज्य के भीतर तथा बाहिर के असंख्य हिन्दुओं की इस उचित प्रार्थना पर कोई ध्यान नहीं दिया गया और इस बात से लोगों का असन्तोष और क्षोभ बहुत बढ़ गया है और मुझे भय है कि यह आन्दोलन भयंकर रूप धारण न कर लेवे। अतएव मैं बड़े विनम्र भाव में आपसे प्रार्थना करूँगा—कि आप निज़ाम सरकार पर प्रभाव डाल कर एक निष्पक्ष ट्रिब्यूनल के द्वारा न्याय प्राप्ति में पण्डित जी की सहायता करें। मेरी इस प्रार्थना का महत्त्व और भी बढ़ जाता है, जब हम यह देखते हैं कि हैदराबाद में ८५ प्रतिशत आबादी हिन्दुओं की है।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इस अवसर पर आपका हस्ताक्षेप समस्त हिन्दुओं तथा आर्यों के असन्तोष व क्षोभ को दूर करने में बहुत कुछ सहायक सिद्ध होगा।

मैं २२-५-३४ के तार की लिपि भी इस पत्र के साथ भेज रहा हूँ, जो हमारी सभा के प्रधान श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने निज़ाम साहब को भेजा था।

मन्त्री

पण्डित रामचन्द्र देहलवी के अभियोग के विरुद्ध हमारा आन्दोलन कुछ सफल हुआ था। निज़ाम-सरकार के पोलिटिकल सदस्य ने अपने २ अगस्त १९३४ के पत्र सं० ६०१५ में सभा के मन्त्री को सूचित किया कि पं० रामचन्द्र देहलवी के विरुद्ध हैदराबाद राज्य से निर्वासन की आज्ञाएं प्रचारित हो गई हैं, अतः उनके विरुद्ध पुलिस जो अभियोग चलाना चाहती थी, वह उठा लिया गया है। ओह! कैसा अजीब न्याय है, अभियोग वापिस कर लिया गया। क्यों? इसी लिए न, कि उसमें कमज़ोरी थी, और वह चल न सकता था। पंडित जी को निर्वासित कर दिया गया। क्यों? क्या इसका कारण यह नहीं था, कि

मुसलमान प्रचारक और मौलवी उनके तर्क का सामना नहीं कर सकते थे। एक दूसरी आनन्द की बात यह है कि निर्वासन की आज्ञा तब निकली जब प० जी हैदराबाद से बाहिर उत्तर भारत में प्रचारार्थ भ्रमण कर रहे थे।

मन्त्री सभा की हैदराबाद यात्रा

जून १९३४ के अन्तिम सप्ताह में सभा के मन्त्री श्री प्रो० सुधाकर जी M A हैदराबाद गये ताकि वे स्वय वहाँ जाकर राज्य के आर्य समाजियों की वास्तविक मुसीबतों का पता लगा सकें। उन्हें निज़ाम सरकार के पोलिटिकल तथा पुलिस सदस्यों व अन्य उच्च राज कर्मचारियों से मिलने और राज्य में आर्य समाजियों पर लगे हुए अपमानजनक प्रतिबन्धों के सम्बन्ध में विचार करने का अवसर मिला। पोलिटिकल मेम्बर ने स्वीकार किया कि इन प्रतिबन्धों के लिये मातहत कर्मचारियों का अत्यधिक धार्मिक जोश ज़िम्मेवार था, और ये सब प्रतिबन्ध शीघ्र ही उठा लिये जायेंगे। कुछ समय के लिये यह आश्वासन सन्तोष जनक था, और मन्त्री महोदय इस विश्वास के साथ लौटे कि भविष्य में आर्य समाज का कार्य भली प्रकार चलता रहेगा, जैसा कि कई वर्ष पूर्व चलता रहा था। परन्तु उनका यह विश्वास गलत साबित हुआ। कोई प्रतिबन्ध न उठाया गया, अपितु मातहत पुलिस कर्मचारियों और धर्मान्ध मुसलमानों की आर्यों के साथ छेड़खानियाँ अधिकाधिक बढ़ती, तथा असह्य होती गईं। अन्त में एक अन्तिम उपाय के रूप में हमारे प्रधान श्री नारायण स्वामी जी महाराज ने १-८-३४ को निम्न लिखित आवेदन पत्र निज़ाम साहिब की सेवा में भेजा और उनसे प्रार्थना की कि वे आर्य समाज की शिकायतों को दूर करने के लिये कृपा पूर्वक स्वय हस्तक्षेप करें।

आवेदन पत्र

श्रीमान् !

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा देहली की ओर से जो भारतवर्ष और विदेश के आर्य्यसमाजों की शिरोमणि सभा है और जिसके साथ दक्षिण हैदराबाद की प्रतिनिधि सभा को मिलाकर भारत की समस्त प्रांतिक सभाएं तथा विदेश की पूर्वीय अफ्रीका, दक्षिण अफ्रीका, फिजी, मौरिशस की सभाए सम्मिलित हैं, मैं आदर पूर्वक श्रीमानों की सेवा में निम्न निवेदन करता हूँ —

, आर्य्य समाज एक विशुद्ध धार्मिक संस्था है जिसकी महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने प्राचीन वैदिक धर्म्म और वैदिक संस्कृति के—उनके आदि शुद्ध और गौरवपूर्ण स्वरूप में—पुनरुद्धार के लिए एवं संसार के कोने-कोने में पवित्र वेद के सन्देश को पहुंचाने के लिए स्थापना की थी। आर्य्यसमाज एक विश्व-व्यापी समाज है और इसका सन्देश जाति, वर्ण या सम्प्रदाय के भेदभाव से शून्य सम्पूर्ण मानव-समाज के लिए है। ब्रिटिश भारत, भारतीय रियासतों और संसार के दूसरे भागों में आर्य्यसमाज का कार्य्य तीव्र गति से फैला और इस समय फैल रहा है और कतिपय अवस्थाओं में वह गति अनुपम है। संसार में लगभग २००० आर्य्य समाजें हैं और उन लाखों व्यक्तियों के अतिरिक्त जो वेद के झण्डे के नीचे आ चुके हैं लगभग १० लाख व्यक्ति आर्य्यसमाज के रजिस्टर्ड सदस्य हैं। आर्य्यसमाज एक संगठित समाज है। इसका संगठन प्रजासत्तात्मक है और इसका कार्य्य सुनियन्त्रित और सुव्यवस्थित रूप मे होता है।

श्रीमानों के राज्य मे बीसियों वर्षों से आर्य्यसमाज काम कर रहा है। श्रीमानो के अत्यन्त प्रिय, राजनिष्ठ, लब्ध प्रतिष्ठ प्रजाजनों और राज-कर्मचारियों में से कतिपय व्यक्ति आर्य्य समाजी रहे हैं। हैदराबाद हाई कोर्ट के दो प्रसिद्ध जज अपने पद-काल मे हैदराबाद आर्य्यसमाज के प्रधान और उसके रजिस्टर्ड मेम्बर रह चुके है। आर्य्यसमाज और श्रीमानो की सरकार के बीच साधारणतया अच्छे सम्बन्ध रहे है और वे सम्बन्ध एक ओर राजनिष्ठा और दूसरी ओर उदार संरक्षण के द्वारा प्रत्यक्ष रहे है। अभी हाल में श्रीमानो ने एक राज-कीय आज्ञा के द्वारा धार्मिक निष्पक्षता और धार्मिक प्रचार की स्वतन्त्रता की घोषणा की थी।

दुर्भाग्य से, कुछ समय से, मातहत पुलिस कर्मचारियो के अत्यधिक जोश के कारण श्रीमानों के आदेश निर्देशों और श्रीमानों की सरकार की उद्घोषित नीति के प्रतिकूल, एक मिशनरी धार्मिक समाज के रूप में आर्य्य समाज के कर्त्तव्य-पालन में अनुचित हस्तक्षेप किया गया और आर्य्यसमाज के प्रचारकों और कार्य्य-कर्त्ताओं को शान्तिपूर्ण रीति से लोकोपकार का कार्य्य करते हुए तंग किया गया। आर्य्यसमाज के प्रचारकों की सहिष्णुता और गम्भीरता का एक जीता-जागता सबूत यह है कि जबसे आर्य्यसमाज श्रीमानों के राज्य में काम कर रहा है तब से किसीभी प्रसिद्ध आर्य्य प्रचारक को किसी नियमित न्याय मन्दिर ने श्रीमानों की प्रजा के किसी भी भाग की धार्मिक भावनाओं पर आघात करने के दण्ड से

दण्डित नहीं किया है। श्री० पं० रामचन्द्र जी देहलवी आर्य्यसमाज के गम्भीर, मृदु भाषी, जिम्मेवार और विद्वान् प्रचारकों में से हैं और वे सरस साहित्यिक भाषा में आर्य्य धर्म्म की सुन्दर और विद्वत्तापूर्ण व्याख्या करने के लिए प्रसिद्ध हैं। श्रीमानों की राजधानी के हिन्दुस्तानी भाषा-भाषी हज़ारों शिक्षित हिन्दू और मुसलमान पं० जी का बड़ा सम्मान करते हैं। इस वर्ष इस्लाम की तौहीन के आश्चर्य्यजनक अपराध में उन पर मुकद्दमा चलाया गया था। इस अभियोग से आर्य्यसमाज में क्रोध की लहर दौड़ गई और इस लहर का प्रभाव उसके अन्तस्तल तक पहुँचा।

देश भर में सैकड़ों विरोध-सूचक सभायें हुईं और असन्तोष इस सीमा तक पहुँचा कि मेरी सभा को उस उठते हुए असन्तोष को दबाना दूभर होगया। इस आश्चर्य्यजनक घटना के बाद जनता को बहुत सी आश्चर्य्य जनक बातें भी मालूम हुईं, उनमें प्रतिष्ठित आर्य्य-प्रचारकों के निर्वासन की विचित्र आज्ञाएं और राज्य में आर्य्यसमाज के साधारण कार्य्य संचालन पर ऐसी अपमान जनक पाबन्दियां, जिनकी प्रामाणिकता मातहत राज-कर्मचारियों के निराधार और झूठे बयानों पर आश्रित हैं और जिनके सम्बन्ध में न किसी न्यायालय में मुकद्दमा चलाया गया और न राज्य की ओर से कोई तहकीकात की गई, सम्मिलित हैं। बड़े दुःख के साथ यह समाचार सुना गया है कि श्रीमानों की सरकार ने हैदराबाद राज्य में श्री० प० रामचन्द्र जी का प्रवेश बन्द कर दिया है।

हैदराबाद हाईकोर्ट के भूतपूर्व जज और श्रीमानों के राज्य मे आर्य्य सामाजिक आन्दोलन के एक प्रमुख कर्णधार स्वर्गीय प० केशवराव का मृत्युदिवस १७ टर १३४३ को मनाया गया था। उस महीने की १५ तारीख को नायब कोतवाल सी० आई० डी० ने आर्य्यसमाज सुलतान बाजार के मन्त्री श्री० म० चन्दूलालजी को एक विचित्र नोटिस दिया कि उस पवित्र अवसर पर केवल एक प्रस्ताव पास किया जाय और किसी किस्म की कोई तकरीर न की जाय। यह आर्डर प्रत्यक्षतः अनुचित है। सभा इसलिए की जाने वाली थी कि जिससे स्वर्गीय प० जी के मित्र और प्रशंसक उनके व्यक्तित्व और उनके उत्साहवर्द्धक कार्य्य के प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पण कर सकें। आर्य्यसमाज के आदरणीय नेता के सम्मान में किए जाने वाले भाषणों पर पाबन्दियां लगाकर मीटिंग के उद्देश्य को ही कुचल डाला गया था। जब कि यह मीटिंग धर्म्मान्ध की नहीं बल्कि एक प्रसिद्ध नागरिक, एक आदरणीय राज-कर्मचारी और एक सुयोग्य वकील और जज की मृत्यु पर शोक प्रकट करने के लिए की

गई थी तब इस बात की सम्भावना ही नहीं हो सकती थी कि इस प्रकार के पवित्र अवसर पर उत्तेजक भाषण होंगे। यह स्वाभाविक था कि इस प्रकार की आज्ञा क्रोध भड़कावे, असन्तोष बढ़ावे और हृदयों में अनावश्यक जलन पैदा करे।

इसी प्रकार की पाबन्दी उस मीटिंग पर भी लगाई गई थी जो भारत के प्रसिद्ध सपूत स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाने के लिए बुलाई गई थी। १२ अप्रैल १९३४ ई० को एक अनुचित आर्डर जारी किया गया कि ऐतिहासिक प्रवचनों और धार्मिक उपदेशों की उस वक्त तक इजाज़त नहीं दी जायगी, जब तक उनका सारांश अधिकारियों के सामने मजूरी के लिये पहले से पेश न कर दिया जायगा। इस आज्ञा का अनौचित्य और निष्क्रियता प्रत्यक्ष है। २३ जनवरी १९३४ तथा २१ अप्रैल १९३४ की आज्ञाएँ साप्ताहिक सत्सगों के धार्मिक उपदेशों पर पाबन्दियाँ लगाती हैं।

मुझे सूचना मिली है कि श्रीमानों के राज्य में आर्य्य समाज के अधिकारी यदि समाज मन्दिरों की मरम्मत कराने का काम शुरू करते हैं, तो इस बहाने पर कि बगैर इजाज़त के नई इमारतें बनवा रहे हैं, उन्हें तङ्ग किया जाता है, उन्हें सताया जाता है और उन पर मुकदमें चलाये जाते हैं।

इन बातों ने न सिर्फ श्रीमानों की कानून-प्रिय प्रजा को ही बेचैन कर रक्खा है, बल्कि भारतवर्ष तथा विदेश के उनके लाखों धर्म्मभाइयों के हृदयों को भी व्यथित कर दिया है।

हैदराबाद का राज-परिवार न केवल धार्मिक निष्पक्षता के लिए ही वरन् राज्य के सब धर्मों के उदार सरक्षण के लिए भी प्रसिद्ध है। मेरा विश्वास है कि श्रीमानों की सरकार राज-परिवार की इन मर्यादाओं की रक्षा करेगी और मातहत राज कर्म्मचारियों के जोश, धर्मान्धता अथवा अविवेक के द्वारा राज्य के सुन्दर नाम पर धब्बा नहीं लगवाने देगी। अभी हाल में जब मेरे मन्त्री जी को श्रीमानों के पोलिटिकल मिनिस्टर से भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था तो उन्होंने (पोलटिकल मिनिस्टर) विश्वास दिलाने की कृपा की थी कि इन आज्ञाओं के लिए मातहत कर्मचारियों का अत्यधिक जोश ही जिम्मेवार है और वे पाबन्दियां उठाली जायँगी।

मुझे यह देख कर सन्तोष है कि तब से पुलिस का व्यवहार कुछेक अवस्थाओं में अपेक्षाकृत दूरदर्शितापूर्ण रहा है, परन्तु नियमित रूप से वे आपत्तिजनक आज्ञाएं न वापिस

ही की गई हैं, और न रद ही की गई हैं, और इस बीच में जनता के असन्तोष में तेजी के साथ वृद्धि होरही हैं।

श्रीमानो के राज्य मे आर्य्यों की जो विनीत प्रार्थनाएँ हैं उनको मैं इस प्रकार संक्षेप में पेश करता हूँ।

हम बड़े आदर के साथ प्रार्थना करते हैं कि (१) स्पष्ट और सीधे सादे शब्दों में पुलिस को हिदायत करदी जाय कि आर्य्यों को भी निर्बाध रूप में अपने धार्मिक कार्य्यों के सम्पादन का वैसा ही अधिकार है जैसा मुसलमानों, ईसाइयों और अन्य धर्म्मावलम्बियों को है, जिससे कि मातहत कर्मचारी अज्ञानवश अथवा अन्य किसी कारणवश उन हिदायतों का ग़लत अर्थ न लगा सकें अथवा उनका दुरुपयोग न कर सकें।

(२) राज्य मे आर्य्य प्रचारको के स्वतन्त्र प्रवेश पर कोई पाबन्दी न लगाई जाय।

(३) आर्य्य समाज के धार्मिक जलूसो के निकालने की उन्हीं शर्तों पर इजाज़त दी जाय जिन पर अन्य धर्म्मावलम्बियों को जलूस निकालने की इजाज़त दी जाती है।

(४) धार्मिक और शास्त्रीय साहित्य बिना उचित तहक़ीक़ात के जब्त न किया जाय तथा न्याय के लिए अपील का अधिकार दिया जाय।

(५) सार्वजनिक सभाओ और सार्वजनिक शास्त्रार्थों का इजाज़त के मामले में आर्य्य समाज के प्रति विषम व्यवहार न किया जाय क्योकि स्वतन्त्र भाषण और प्रचार का अधिकार आर्य्यों को मिला कर राज्य के सब प्रजाजनों का जन्म सिद्ध अधिकार है।

(६) आर्य्य समाज के मन्दिर वैसे ही पवित्र समझे जायँ जैसे पवित्र मसजिद और गिरजे समझे जाते हैं और उन में हर समय स्वतन्त्र सत्सङ्ग का अधिकार पूर्णतया स्वीकार किया जाय।

(७) इस से पहिले जिन आर्य्य प्रचारकों के विरुद्ध निर्वासन की आज्ञाएँ प्रचारित की गई हैं उन पर एक प्रामाणिक न्यायालय विचार करे और भविष्य में इस प्रकार की आज्ञाएं इसी प्रकार के विचार के आधीन रहें।

मुझे विश्वास है कि श्रीमान् कृपापूर्वक आज्ञा देंगे कि श्रीमानों के प्रिय प्रजाजनों की एक उन्नत, राजनिष्ठ और कानून प्रिय श्रेणी की शिकायतें दूर कर दी जायँ। प० रामचन्द्र जी के हैदराबाद राज्य में प्रवेश पर बन्दिश को जो आज्ञा दी गई है वह वापिस ले ली जाय।

कहने की आवश्यकता नहीं कि इस प्रकार श्रीमानों की सरकार ससार भर के आर्य्यों को आभारी बनायगी।

लोकमत के दबाव और निरन्तर मांग के उत्तर स्वरूप मेरी सभा ने एक क्रिया-समिति (Council of Action) बनाई है और इस समिति को अधिकार दिया गया है कि वह सब उचित उपायों का अवलम्बन करके इन शिकायतों को दूर कराए।

मुझे विश्वास है कि यह मेमोरियल इच्छित फल लायगा और श्रीमानों का उदार हस्ताक्षेप घोर असन्तोष और क्षोभ को कृतज्ञता में परिणत करता हुआ एक अमोघ उपाय सिद्ध होगा।

अन्त में मैं बड़े सम्मान के साथ निवेदन करता हूँ कि अपनी सभा की आज्ञानुसार मैं श्रीमानों की सरकार की आज्ञाओं की १ मास तक प्रतीक्षा करूंगा और उस के बाद इस प्रकार के किसी उपाय का जो भी आवश्यक समझा जायगा अवलम्बन करने के लिए क्रिया-समिति की बैठक बुलाऊंगा। तो भी मुझे आशा है कि श्रीमानों को इस मेमोरियल पर कृपा-पूर्ण आज्ञाओं के बाद भविष्य में किसी अन्य कार्य्यवाही की आवश्यकता बाकी नहीं रहेगी।

इस आवेदन पत्र की समाचार पत्रों में आलोचना हुई और इसके भाव तथा उद्देश्य की बड़ी प्रशसा हुई। उदाहरणत —

हम इलाहाबाद के १३-८-३४ के "लीडर" की आलोचना को उद्धृत करते है, जिससे जनता को विदित हो जावे कि निष्पक्ष लोगो पर इसका क्या प्रभाव पड़ा था।

लीडर की आलोचना

हम 'लीडर' के इस अङ्क में किसी दूसरी जगह सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान जी द्वारा निज़ाम हैदराबाद की सेवा में भेजे गये मेमोरियल को प्रकाशित कर रहे हैं। यह मेमोरियल समस्या को अत्यन्त युक्ति सगत रूप में प्रस्तुत करता है, तो भी इसकी भाषा बहुत सुन्दर है। हमने इस आवेदन-पत्र को पढ़ा और उसमें वर्णित बातों को पढ़ कर हमें बड़ा आश्चर्य्य हुआ और अन्य पाठकों को भी आश्चर्य्य होगा कि आर्य्य समाज जैसी उन्नत समाज की वैध और शांति पूर्ण प्रगतियों पर आज इस बीसवीं शताब्दी में भी ब्रिटिश राज्य की छत्र-छाया में भारतवर्ष के सबसे बड़े देशी राज्य में प्रतिबन्ध लगाये जा सकते हैं,

जिसका कि वर्णन उक्त आवेदन-पत्र मे किया गया है। धार्मिक स्वतन्त्रता पर इस प्रकार के प्रतिबन्ध मध्य युग की बातें समझी जाती हैं, परन्तु आश्चर्य है कि वर्तमान युग में भी वे बातें पाई जाती हैं। उदाहरणार्थ इस आवेदन-पत्र से पता लगता है कि २१ जनवरी १९३४ और २१ अप्रैल १९३४ के आर्डर साप्ताहिक सत्सगों के आध्यात्मिक प्रवचनों पर भी प्रतिबन्ध लगाते हैं। १२ अप्रैल १९३४ को एक अर्वाञ्छनीय आज्ञा जारी की गई कि धार्मिक उपदेशों और ऐतिहासिक प्रवचनों की आर्य्य समाज मन्दिर मे उस वक्त तक आज्ञा नहीं दी जायगी, जब तक उनका सक्षिप्त पहले से राज-कर्मचारियों के समक्ष मजूरी के लिये पेश न कर दिया जायगा इत्यादि २।

हैदराबाद राज्य की प्रजा का एक बहुत बड़ा भाग हिन्दू प्रजा है और उस हिन्दू प्रजा का आर्य्य समाज एक उन्नत और प्रगतिशील अङ्ग है और हैदराबाद राज्य के शासन अथवा उसके मातहत राज-कर्मचारियों ने उसकी प्रगतियों पर जो पाबन्दियाँ लगाई हैं, उनका किसी उचित आधार पर औचित्य सिद्ध नहीं किया जा सकता। अवश्य ही उनके कारण समस्त हिन्दुओं में भले ही वे किसी सम्प्रदाय के क्यों न हों, घोर असन्तोष फैलेगा। इस प्रकार की बातों का होना, जहाँ राज्य पर कलङ्क है, वहाँ उन बातों का जारी रहना उससे ज्यादा गहरा कलङ्क है। अवश्य ही इनसे राज्य की बदनामी होगी। हमे आशा है कि अब जब कि हिज़ एक्ज़ाल्टेड हाईनेस निज़ाम साहब को स्थिति का पूर्ण परिचय करा दिया गया है, इस दु:खद प्रसङ्ग के अन्त के लिये तत्काल कार्य्यवाही की जायगी और आन्दोलन को जो उचित शिकायतों पर अवलम्बित है, शिकायतों के दूर न होने के कारण बढ़ने नहीं दिया जायगा।

भारत सरकार के पोलिटिकल मन्त्री को पत्र

इस आवेदन पत्र की एक प्रति भारत सरकार के पोलिटिकल मन्त्री की सेवा में भेजकर इसकी सूचना उन्हें दी गई साथ ही मन्त्री सभा ने निम्नलिखित पत्र भी उन्हें लिखा:—

महाशय !

१६ जून १९३४ को मैंने प० रामचन्द्र देहलवी के विरुद्ध निज़ाम की पुलिस के अभियोग के सम्बन्ध में सभा की ओर से एक आवेदन पत्र आपकी सेवा में भेजा था। अब



श्री० शिवचन्द्र गुप्ता
आर्य्य रक्षा समिति के उत्साही मन्त्री । जिन्हें हैदराबाद से अवाञ्छनीय कहकर निर्वासित कर दिया गया है ।



प० व्यासदेव शास्त्री एम ए, एल एल बी
ये हैदराबाद के लिए अवांछनीय और निर्वासित है । उनका केवल इतना ही दोष था कि उन्होने अपने भाइयो के दुखड़े को प्रेस और प्लेट के द्वारा जनता तक पहुँचाया ।



श्री० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

महात्मा नारायण स्वामी जी के सहकारी के रूप में शोलापुर आर्य कांग्रेस को सफल बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

हमारे नेता



महात्मा नारायण स्वामी जी

भारतीय आर्य समाज के एक मात्र नेता।

हैदराबाद के धर्म युद्ध के सर्व प्रथम डिक्टेटर।

यह ज्ञात हुआ है कि निज़ाम सरकार ने अभियोग वापिस लेलिया है परन्तु राज्य में उनका प्रवेश रोक दिया है।

हैदराबाद राज्य में आर्य्यसमाज के कार्य्य पर लगे हुए विविध प्रतिबन्धों के सम्बन्ध में सभा के पास विश्वस्त सूचनाएं हैं।

ऊपर जिस पत्र का उल्लेख किया गया है उसमें मैंने आपसे प्रार्थना की थी कि आप निज़ाम सरकार पर प्रभाव डालकर पण्डित जी को न्याय प्राप्ति में सहायता दें, और जिस प्रकार इस्लाम और ईसाइयत इत्यादि अन्य धार्मिक सोसाइटियों को प्रचार की स्वतन्त्रता प्राप्त है वही आर्य्यसमाज को भी दिलावें।

अब हमने निज़ाम साहब की सेवा में साथ का आवेदन पत्र भेजा है जिसमें हमारी वर्तमान शिकायतें अङ्कित हैं। कृपया आप इसे पढ़ें और अपने सामयिक हस्ताक्षेप से निज़ाम सरकार को आर्य्यसमाज के साथ न्याय करने की प्रेरणा करें, जिससे कि भारतवर्ष के आर्य्यों व हिन्दुओं का असन्तोष दूर हो।"

निज़ाम सरकार के पोलिटिकल मन्त्री को पत्र

सभाके मन्त्री ने निज़ाम सरकार के पोलिटिकल मन्त्री को १३।८।३४ को निम्न पत्र स० ३५८ भेजा —

आपके पत्र स० ६०१५ तिथि २।८।३४ के हवाले से निवेदन है कि पुलिस द्वारा चलाए गए अभियोग को वापस ले लेने के बाद पंडित रामचन्द्रजी के विरुद्ध हैदराबाद राज्य से निर्वासन की आज्ञा जारी कर देने से आर्य्य सामाजिक क्षेत्रों में सनसनी फैल गई है। इस आज्ञा ने लो-आग में ईंधन का काम किया है।

पिछले दिनों जब हैदराबाद में मेरी आप से भेंट हुई थी तब भेंट के दौरान में आपने मुझे यह विश्वास दिलाने की कृपा की थी कि आर्य्यसमाज के कार्य्य पर लगी हुई पाबन्दियां शीघ्र उठाली जायेंगी और पुलिस की अनावश्यक आज्ञाओं के कारण जो स्थिति उत्पन्न हो गई है वह ठीक कर दी जायगी।

आपके पत्र में इस प्रकार का कोई उल्लेख न देखकर, मुझे दुःख हुआ है। हमारी सभा के प्रधान जी ने श्रीमान् निज़ाम साहब की सेवा में अन्तिम उपाय के रूप मे एक मेमोरियल पेश किया है उसमें आर्य्यसमाज की शिकायतों की चर्चा की गई है और इस मामले में निज़ाम साहब के कृपापूर्ण हस्ताक्षेप की प्रार्थना की गई है।

मैंने मेमोरियल की एक प्रति इससे पूर्व आपकी सेवा में भेजी थी आशा है इस समय तक आपको प्राप्त होगई होगी। मैं आपसे प्रार्थना करूँगा कि धार्मिक उपासना और धर्म्म प्रचार की स्वतन्त्रता के वैध अधिकार की प्राप्ति में आप, जैसा कि आपने मुझे विश्वास दिलाया था, आर्य्यसमाज की सहायता करें और अपने उच्च अधिकार को काम में लाएँ।

आर्य्यसमाज किसी भी अवांछनीय प्रसङ्ग को उपस्थित न करने के लिए उत्सुक है और न्याय और सद्भावना के सुन्दर नाम पर निज़ाम सरकार के प्रत्येक शुभचिन्तक को सच्चा समझौता कराने में योग देना चाहिए।"

सभा के प्रधान ने निज़ाम साहिब की सेवा में जो आवेदन पत्र भेजा था उस पर कोई ध्यान न दिया गया। इस की प्राप्ति की स्वीकृति भी हमें न दी गई। निज़ाम महोदय के निज् हस्तक्षेप की तो फिर बात ही क्या? फिर भी चिर प्रतीक्षा के बाद निज़ाम सरकार के पोलिटिकल मन्त्री की ओर से ११-६-३४ का पत्र स० २१२ मिला, जिसका मन्त्री जी ने १६-६-३४ को उत्तर भेज दिया। वह पत्र मन्त्री जी के उत्तर सहित नीचे दिया जाता है —

पत्र

मुझे आपको यह सूचित करने की आज्ञा हुई है कि हैदराबाद राज्य में किसी धर्म्म या सम्प्रदाय के अनुयायियों के मार्ग में कोई पाबन्दी लगाने का प्रश्न नहीं है। निज़ाम की सरकार अपनी प्रजा के प्रति व्यवहार में निष्पक्ष है और सदैव रही है, चाहे वह प्रजा किसी भी धर्म्म या सम्प्रदाय से सम्बन्ध क्यों न रखती हो। परन्तु यदि कोई प्रकाश रूप में ऐसी बात कहता है या करता है जिस से भिन्न २ श्रेणियों में खिंचाव पैदा होने की सम्भावना हो, तो कानून और व्यवस्था की, रक्षा के लिए गवर्नमेन्ट का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह अपराधी के धर्म्म विशेष के भेद-भाव के बिना आवश्यक कार्य्यवाही करे।

अतः मैं यहां पर यह भी कहे देता हूँ कि ख़ास तौर पर आर्य्यसमाजियों को किन्हीं ख़ास पाबन्दियों के अधीन रखने का कभी विचार नहीं रहा है।

हमारा उत्तर

आपके ११-६-३४ के पत्रोत्तर में मैं, यह पत्र आप की सेवा में भेज रहा हूँ।

आपने मेरे १७-८-३४ के पत्र का उत्तर भेजने की कृपा की है इस से पूर्व एक

मेमोरियल निज़ाम साहब की सेवा में भी भेजा गया था। १७-८-३४ के पत्र में मुख्यतया उस मेमोरियल की व्याख्या की गई थी, इसलिए बड़ी सुगमता से अनुमान किया जा सकता है कि आपका पत्र उस मेमोरियल का एक प्रामाणिक उत्तर है।

ऐसी अवस्था में यह भी अनुमान किया जासकता है कि निज़ाम सरकार के इन शब्दों का कि "आर्य्य-समाजियों को किन्हीं ख़ास प्रतिबन्धों के अधीन रखने का विचार नहीं रहा है" ठीक वही अभिप्राय है जो मेरी सभा ग्रहण करती है जब कि वह आप से यह प्रार्थना करती है कि—

(१) स्पष्ट और सीधे सादे शब्दों में पुलिस को हिदायत करदी जाय कि आर्य्यों को भी निर्बाध रूप में अपने धार्मिक कार्य्यों के सम्पादन का वैसा ही अधिकार है जैसा मुसलमानों, ईसाइयों और अन्य धर्म्मावलम्बियों को है, जिस से कि मातहत कर्मचारी अज्ञानवश अथवा अन्य किसी कारणवश उन हिदायतों का ग़लत अर्थ न लगा सकें अथवा उनका दुरुपयोग न कर सकें।

(२) राज्य में आर्य्य प्रचारकों के स्वतन्त्र प्रवेश पर कोई पाबन्दी न लगाई जाय।

(३) आर्य्यसमाज के धार्मिक जलूसों के निकालने की उन्हीं शर्तों पर इजाज़त दी जाय जिन पर अन्य धर्म्मावलम्बियों को जलूस निकालने की इजाज़त दी जाती है।

(४) सार्वजनिक सभाओं और सार्वजनिक शास्त्रार्थों की इजाज़त के मामले में आर्य्यसमाज के प्रति विषम व्यवहार न किया जाय क्योंकि स्वतन्त्र भाषण और प्रचार का अधिकार आर्य्यों को मिलाकर राज्य के सब प्रजा जनों का जन्म सिद्ध अधिकार है।

(५) आर्य्यसमाज के मन्दिर वैसे ही पवित्र समझे जायँ जैसे पवित्र मसज़िद और गिरजे समझे जाते हैं और उन में हर समय स्वतन्त्र सत्सङ्ग का अधिकार पूर्णतया स्वीकार किया जाय।

हमारी यह भी प्रार्थना है कि धार्मिक साहित्य बिना उचित तहक़ीक़ात के ज़ब्त न किया जावे और इस मामले में न्याय के लिये अपील का अधिकार दिया जाय। जिन आर्य्योपदेशकों के लिये इस से पूर्व निर्वासन की आज्ञाएँ प्रचारित की गई हैं उन पर एक प्रामाणिक न्यायालय विचार करे और भविष्य में इस प्रकार की आज्ञाएँ इसी प्रकार के विचार के अधीन रहें। आर्य्यसमाजी भी उसी नाव में हैं जिस में निज़ाम साहब की अन्य राजभक्त प्रजा मुसलमान, ईसाई इत्यादि हैं। मुझे विश्वास है कि निज़ाम सरकार इन

प्रार्थनाओं पर सहानुभूति के साथ विचार करेगी। क्योंकि यह विषय हैदराबाद राज्य जैसे उन्नत राज्य की प्रजा के जन्मसिद्ध अधिकारों से सम्बन्धित है और उस के शासक को शासन के सूत्रधारों तथा राजकर्मचारियों के हर सम्भव अत्याचारों से उन अधिकारों की रक्षा करनी चाहिये।

यह समझते हुये कि आप के पत्र का जो आशय मेरी सभा ने ग्रहण किया है वह ठीक है और निज़ाम सरकार द्वारा प्रचारित उस आज्ञा की विद्यमानता में जिस में आपने निस्सन्देह उचित कारणों के आधार पर दावा किया है कि 'निज़ाम सरकार अपनी प्रजा के प्रति व्यवहार में निष्पक्ष है और सदैव रही है और वह प्रजा भले ही किसी धर्म, सम्प्रदाय या श्रेणी की क्यों न हो" कोई और आशय ग्रहण करना संभव भी नहीं है। इसलिए सभा श्रीमान् निज़ाम साहेब को धन्यवाद देती है कि उन्होंने कृपा करके हस्तक्षेप किया और अपनी प्रजा के एक उस भाग की शिकायतों को दूर किया जो अत्यन्त क़ानून प्रिय राजनिष्ठ और उन्नत है। निस्सदेह यह कहने की आवश्यकता नहीं कि वे समस्त आज्ञाएँ, जिनका हमारे मेमोरियल में उल्लेख है और जो मातहत कर्मचारियों के अत्यधिक जोश के कारण जारी हुई थीं और जो आप के इस पत्र की भाषा और भावों के विरुद्ध हैं वे सब अब तक रद्द कर दी गई होंगी और आर्यसमाज के साथ भविष्य में न कोई विषम व्यवहार किया जायगा और न इन सब से अन्तिम घोषणा के विरुद्ध किसी आज्ञा से कोई सार्वजनिक काग़ज़ कलङ्कित होने दिया जायगा। और यह वर्तमान घोषणा भी पिछली घोषणाओं और फर्मानों के समर्थन में ही की गई है।

मैं प्रेस में एक वक्तव्य प्रकाशित करा रहा हूँ जिस में आपका पत्र तथा मेरा उत्तर प्रकाशित हो जायगा जिस से कि सार्वजनिक बेचैनी और बृटिश भारत हैदराबाद एवं दूसरे राज्यों और विदेश के लाखों हिन्दुओं और आर्यसमाजियों की चिन्ता दूर हो जाय। यदि मुझे आप की ओर से कोई और पत्र प्राप्त न हुआ और मुझे निश्चय है कि आप के स्पष्ट भाषा में लिखे गए इस पत्र के बाद और घटनाओं के प्रवाह को जो मुझे निश्चय है मेरे इस अर्थ का समर्थन करता है, देखते हुए किसी अन्य पत्र व्यवहार की ज़रूरत भी नहीं रह जाती है और मैं सार्वदेशिक सभा के अधीनस्थ संसार भर में फैले हुये समस्त आर्यसमाजों को सरक्यूलर जारी कर दूंगा कि हैदराबाद की वह अवांछनीय स्थिति जो एक समय अत्यन्त भयंकर रूप धारण करने वाली थी, राज्य के कर्मचारियों की दूरदर्शितापूर्ण सामयिक

कार्यवाही के कारण ठीक हो गई है और आर्य्य प्रचारक तथा आर्य्य जनता निर्बाध रूप में स्वतन्त्रतापूर्वक धार्मिक उपासना और धर्म प्रचार का वैसा ही अधिकार रखते हैं जैसा कि इस्लाम धर्म के अनुयायी रखते हैं, जिस धर्म के कि स्वयं निज़ाम साहब भी मानने वाले हैं।

श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी

पण्डित रामचन्द्र जी के विरुद्ध प्रचारित की गई निर्वासन की आज्ञा के सम्बन्ध में, मैं निवेदन करूंगा कि निज़ाम की सरकार जिनने उनके विरुद्ध चलाए गए अभियोग को वापस ले लिया है कदाचित् इसलिए कि उनके भाषणों के सम्बन्ध में उत्पन्न हुआ भ्रम बिल्कुल दूर हो गया है, हैदराबाद और हैदराबाद से बाहर के आर्य्यों को उस आर्डर को रद्द करके आभारी बनायगी जिस को, जैसा कि आप मुझ से सहमत होंगे, आवश्यकता नहीं थी।

निज़ाम सरकार के पोलिटिकल मेम्बर तथा सार्वदेशिक सभा के मन्त्री जी के मध्य हुए उपर्युक्त पत्र-व्यवहार पर प्रेस में खूब आलोचना हुई।

हिन्दुस्तान टाइम्स की आलोचना

"हैदराबाद ने, जिस के शासक और सरकार राजनैतिक कुशलता और न्याय प्रियता के लिए प्रसिद्ध हैं समस्त धार्मिक मामलों में पूर्ण निष्पक्षता की घोषणा के द्वारा, अपनी मर्य्यादाओं के प्रति सच्चा रहने का सबूत दिया है। बहुसंख्यक हिन्दू आबादी वाला हैदराबाद स्थिर रूप से राज्य के या राज्य के बाहर के हिन्दुओं की सहानुभूति को नहीं खो सकता है। इस बात को अनुभव करते हुए, सरकार ने अपनी स्थिति को स्पष्ट कर दिया है। यदि हैदराबाद सरकार श्री० प्रो० सुधाकर जी मन्त्री सार्वदेशिक सभा के पत्रानुसार पं० रामचन्द्र जी के ऊपर हैदराबाद में प्रवेश के लिये लगी हुई पाबन्दी को उठाले और निश्चयात्मक रूप से इस बात का वचन दे कि राजकर्मचारी आर्य्यों के जलूसों पर कोई आपत्ति नहीं करेंगे तो अवश्य ही हैदराबाद सरकार अपने प्रेस्टिज को बढ़ायेगी। धार्मिक भावनाओं के सम्मान ने किसी भी सरकार को कभी हानि नहीं पहुँचाई है। हमें आशा है कि निज़ाम सरकार अपने सुन्दरकार्य्य को जारी रक्खेगी और दूसरे राज्य उसका अनुकरण करेंगे।"

वक्तव्य के अंश

इसके पश्चात् निज़ाम सरकार ने एक वक्तव्य प्रकाशित कराया जो कदाचित् पोलिटिकल मन्त्री के पत्र के अवशिष्ट भाग के रूप में था जिसका निम्न अवतरण महत्त्वपूर्ण है--

"निज़ाम सरकार इस बात को अब स्पष्ट कर देना चाहती है कि वह जहां अपनी प्रजा के किसी भाग की ख़ास शिकायतों के सम्बन्ध में यदि वे उचित सूत्रों के द्वारा प्रस्तुत की जायँ, जांच करने के विरुद्ध नहीं हैं वहां वह प० रामचन्द्र जी देहलवी के निज़ाम राज्य से निर्वासन सम्बन्धी आन्दोलन में लाए गये प्रचार के उपायों को जिनसे सत्य बातों पर पर्दा पड़ने के अतिरिक्त, निजाम सरकार की प्रजा के भिन्न २ वर्गों में साम्प्रदायिक और जातीय विद्वेष फैलने की आशंका है उचित रीति से कुत्सित समझती है।

इसलिए निजाम सरकार को अपनी वर्त्तमान स्थिति की रक्षा करते हुए इस बात का निश्चय है कि इस राज्य की प्रजा के बड़े भाग के वास्तविक हितों की वह रक्षा कर रही है और इस राज्य की सुव्यवस्थित उन्नति एक बड़े परिमाण मे भिन्न २ वर्गोंके सुन्दर सम्बन्धों की रक्षा पर ही आश्रित है।'

इस वक्तव्य के उत्तर रूप मे सभा के मन्त्री श्री० प्रो० सुधाकर जी m a. ने निम्न वक्तव्य प्रेस को दिया। सभा तथा निज़ाम सरकार के पोलिटिकल सेक्रेटरी के साथ जो पत्र व्यवहार हुआ था उसका इस वक्तव्य में ज़िक्र कर दिया गया था।

"हैदराबाद राज्य की घटनाओं से सम्बन्धित सब ही बातों से जनता पहले से ही परिचित है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी ने निज़ाम साहब की सेवा में एक मेमोरियल भेजा था जिसमें उन्होने हिज़ एक्ज़ाल्टेड निज़ाम साहब के कृपापूर्ण हस्ताक्षेप की प्रार्थना की थी और अपील की थी कि वे कृपा करके हैदराबाद में आर्य्यसमाज के कार्य्य पर लगी हुई पाबन्दियों कों हटा लेने के लिए आज्ञाएँ जारी कर देवें। १३—६—३४ को निज़ाम सरकार के पोलिटिकल मेम्बर की ओर से सभा को एक पत्र प्राप्त हुआ था जिसमें आर्य्यसमाजियों को विश्वास दिलाया गया था कि "ख़ासकर आर्य्यसमाजियों कों किन्हीं ख़ास पाबन्दियों के अधीन रखने का कभी भी विचार नहीं रहा है।"

सभा के मन्त्री ने इस पत्र के उत्तर में निज़ाम सरकार को इस विश्वास के लिए धन्यवाद दिया और प्रार्थना की कि प० रामचन्द्र जी के विरुद्ध प्रचारित की हुई निर्वासन की आज्ञा को भी वापस लेलिया जाय जिससे कि न्याय के उद्देश्य की पूर्ति होजाय और हैदराबाद राज्य में आर्य्यसमाज के सम्बन्ध में किसी प्रकार का भ्रम शेष न रह जाय।

अब निजाम सरकार ने अपने पोलीटिकल मेम्बर के पत्र में कुछ वृद्धि करने के लिए एक वक्तव्य प्रेस को दिया है जिसके निम्न शब्द उल्लेखनीय हैं —

"निज़ाम की सरकार प० रामचन्द्र जी देहलवी के निज़ाम राज्यके निर्वासन सम्बन्धी आन्दोलन में लाये गये प्रचार के उपायों को जिनसे सत्य बातों पर पर्दा पड़ने के अतिरिक्त निज़ाम सरकार की प्रजा के भिन्न २ वर्गों में साम्प्रदायिक और जातीय विद्वेष फैलनेकी आशंका है, उचित रीति से कुत्सित समझती है।"

इस उद्धरण की पेचीदगियाँ स्पष्ट हैं। तमाम बातें जनता पर स्पष्ट हैं और 'आर्य्य-समाजियों ने ऐसा रुख धारण किया है जो उचित रीति से इस प्रकार के आरोप के लिये जिम्मेवार है' इस बात का बलपूर्वक खण्डन करने में जनता मेरा साथ देगी। आर्य्यसमाज ने नितान्त वैध उपायों का अवलम्बन किया है और आन्दोलन के सब उपायों से अपने को बचाये रक्खा है। यदि मेमोरियल का प्रस्तुत करना और सीधे निज़ाम सरकार को अपना विरोध लिख भेजना वैध नहीं है तो वे कौनसे उपाय हैं जो वैध हो सकते हैं, यह हमारी समझ में नहीं आता। आर्य्यसमाज के आन्दोलन को कुत्सित प्रचार पर आश्रित बतलाना वस्तु-स्थिति पर पर्दा डालना है। हम एक बार फिर निज़ाम सरकार से समस्त भारत के आर्यों के भावों को समझने और उनकी तह तक पहुँचने की प्रार्थना करेंगे जो हैदराबाद में आर्य्य प्रचारकों के प्रति किये गये व्यवहार के कारण राज्य से अत्यन्त असन्तुष्ट हैं। मुझे दुःख इसी बात का है कि वक्तव्य का अन्तिम पैरा शेष वक्तव्य की सुन्दर भावना के अनुकूल नहीं है। मुझे निश्चय है कि इस पैरे की पेचीदगियां जान बूझ कर नहीं रक्खी गयीं हैं और निज़ाम सरकार का इसके बाद का व्यवहार उन्हें असत्य सिद्ध कर देगा।"

पण्डित रामचन्द्र जी का स्वयं अपना केस उपस्थित करना

जब प रामचन्द्र जी देहलवी के निर्वासन की आज्ञाओं से सम्बन्धित पत्र व्यवहार से कोई फल न निकला तब पण्डित जी ने निज़ाम सरकार के अधिकारियों से न्याय प्राप्ति के लिए स्वयं प्रयत्न किया। परन्तु उन्होंने अपने लिए न्याय के दरवाजे बन्द पाये और अपने युक्ति युक्त निवेदन के सम्बन्ध में उन्हें यह उत्तर मिला—

"जो आज्ञा पहिले दी जा चुकी है, उसमें कोई परिवर्त्तन नहीं हो सकता।'

ठीक है, कठोर शासन में तब तक परिवर्त्तन नहीं होता जब तक कि वह अनिवार्य्य नहीं होजाता। वह समय शीघ्र ही आने वाला है, जब हैदराबाद राज्य में अवस्थाओं को बदलना होगा। वर्त्तमान अवस्था में हिन्दुओं व आर्य्यों के लिये साधारण से साधारण धार्मिक कृत्यों का अनुष्ठान असम्भव हो गया है। भाषण और कार्य्य की स्वतन्त्रता, सांस्कृतिक विकास

के लिए शिक्षण संस्थाओं का खोला जाना, सभा सोसाइटियों का बनाया जाना इत्यादि सुविधाएँ हैदराबाद की जनता को प्राप्त नहीं हैं।

जब पं० जी राज्य के अधिकारियों को हिलाने में सफल न हुए, तब उन्होंने विरोध स्वरूप हैदराबाद जाने की सभा से आज्ञा चाही, ताकि वे वहां जाकर अपनी निर्दोषता प्रमाणित कर सकें। उन्होंने श्री म० नारायण स्वामी जी महाराज को पत्र लिखा जो श्री स्वामी जी के उत्तर के साथ नीचे दिया जाता है।

पूज्य स्वामी जी सादर नमस्ते!

कुछ समय पहले मैंने आपसे निवेदन किया था कि आप मुझे हैदराबाद जाने की आज्ञा प्रदान कर देवें जिससे कि मैं एक कानून तथा शान्ति-प्रिय नागरिक तथा आर्य्य-समाज के एक जिम्मेवार उपदेशक के रूप में जो ससार के अन्य धर्मों पर समन्वयात्मक रीति से प्रकाश डालता है अपनी पोज़ीशन की रक्षा कर सकूँ। निज़ाम गवर्नमेन्ट के जुडीशल, पोलीस और जनरल विभागों के मन्त्री को जो अन्तिम स्मरण पत्र मैंने भेजा था वह १९—१२—३४ का था। मेरे लगातार स्मरण पत्रोंका मुझे १—२—३९ को उत्तर मिला है निसन्देह वह उत्तर निराशा जनक है।

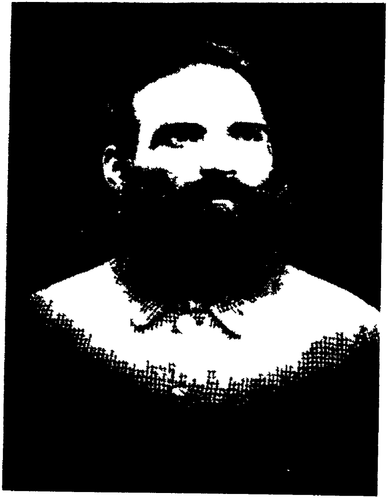
ऐसी परिस्थिति में, आपसे प्रार्थना है कि स्थिति की गम्भीरता और इसमें निहित भयङ्कर परिणामों के गम्भीर रूप पर विचार करते हुए मुझे वांछित आज्ञा प्रदान कर देवें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिज़ एक्ज़ाल्टेड हाईनेस के जजों के हाथों अथवा ज़रूरत पड़ी तो हिज़ एक्ज़ाल्टेड हाईनैस के हाथों से मुझे न्याय मिलेगा।

उत्तर

१—५—३९

प्रिय पं० जी नमस्ते!

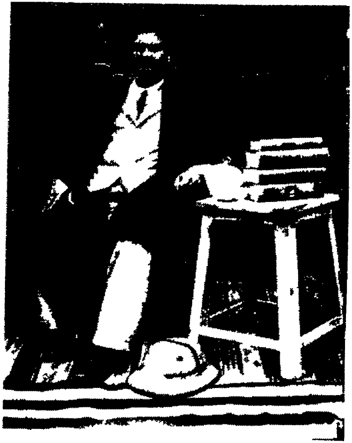
आपका २९—४—३९ का पत्र मुझे मिल गया है। उत्तर में निवेदन है कि आर्य्य-समाज के प्रचार कार्य्य की कीर्ति और उसके गौरवकी रक्षा के लिए आपकी चिन्ता तथा हमारे एक परम आदरणीय और उच्च कोटि के प्रचारक के रूप में उत्तरदायिता की आपकी अनुपम भावना सराहनीय हैं। तो भी आप देखेंगे कि सार्वदेशिक सभा की नीति सदैव मेल-मिलाप और समझौते की रही है। जब तक सम्मान तथा शान्तिपूर्ण समझौते की ज़रा-सी भी गुँजाइश है तब तक किसी ऐसी कार्य्यवाही की स्वीकृति देने की मेरी इच्छा नहीं है जो निज़ाम



प० वशीलाल जी वकील

हैद्राबाद राज्य म आर्य्य समाज की प्रगति क नेता ।

इन्होने अपने भाई प० श्यामलाल क साथ समाज सेवा क लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर रखा ह ।



मुल्तान निवासी ला० रामचन्द्र खन्ना बी ए एल एल बी

इन्हाने गुलबर्गा क आर्य्य अभियुक्तो की बडी योग्यता से परवी की ।



भीमराव पटेल का अवशिष्ट परिवार

भीमराव का उनके मित्र मानकराव जी तथा उनकी भाभी के साथ धर्मान्ध मुसलमानों ने वध कर दिया।



अवपट का हनुमान मन्दिर

जिसे हैद्राबाद के दंगों के अवसर पर मुसलमानों ने जला दिया था।

की सरकार को परेशानी में डालने वाली सिद्ध होवे। सभा अभी तक उपर्युक्त प्रकार के समझौते के मार्ग खोज रही है और मुझे आशा है कि परम पिता परमात्मा सम्बन्धित सभी पक्षों को इस प्रकार प्रेरित करेंगे जिससे कि इन सब बातचीतों के परिणाम हैदराबाद के कृपालु शासक और आर्य्यसमाज दोनों के गौरव में वृद्धि करने वाले हों।

मुझे विश्वास है आप इन बातों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे और मुझसे इस बात में सहमत होंगे कि न्यायालय के दरवाजे खटखटाने के बजाय वृथा मिश्रित न्याय प्राप्त करना अच्छा है, भले ही उसकी प्राप्ति में समय लग जाय।

यदि दुर्भाग्य से ये उपाय असफल रहे—मुझे विश्वास है कि विपत्ति नहीं आयगी। हमारे सामने सिवा उस मार्ग के अवलम्बन के कोई विकल्प नहीं रह जायगा। परन्तु, अन्तिम उपाय के रूप में ही वैसा होना चाहिए।

धैर्य अथवा भीरुता

धैर्य एक बड़ा गुण है। जब तक किसी सुधार के पक्षपातियों में आवश्यक मात्रा में धैर्य न हो तब तक वह सुधार किसी बुराई का अन्त नहीं कर सकता। आर्य्य-समाज ने इस पाठ को भली-भाँति ग्रहण किया और इस पर आचरण भी किया है। युद्ध के अनिवार्य हो जाने पर वह कभी भी अपने उद्देश्य से च्युत नहीं हुआ और जब यह संग्राम में आता है तो ज़ोर-शोर के साथ युद्ध करता है। यह स्मरण रहे कि आर्य्यसमाज का युद्ध सदैव अन्धकार के साथ रहता है और उसके हथियार प्रकाश तर्क और युक्ति होते हैं। जब हमारे पूज्य नेता श्री म० नारायण स्वामी जी महाराज ने वह रुख धारण किया जो उनके उपर्युक्त पत्र से ज्ञात होता है, तब कुछ मित्रों ने हमारे धैर्य को भीरुता बतलाया। उन्होंने पूछा कि हैदराबाद राज्य में हमारे सम्माननीय प्रचारक के प्रति जो अपमानजनक व्यवहार हुआ है उसे आप लोग कब तक बर्दाश्त करते रहेंगे। जब हमारी समस्त अनुनय विनय और समझौते की नीति असफल रही और हमें कतिपय मौखिक आश्वासनों के अतिरिक्त कुछ न मिला तो हमारे सामने प्रश्न उपस्थित हुआ कि अब हमें क्या करना चाहिए? आर्य्य समाज की कार्यप्रणाली धार्मिक स्वतन्त्रता के लिए त्याग और सेवा की रही है। हैदराबाद में भी वह इसी मार्ग का अनुसरण करेगा, जैसा कि वह पहिले से ही क्रमशः कर रहा है। अब पाठकों को धैर्य पूर्वक आगे के हमारे उपायों का परिचय प्राप्त करना चाहिए जो हमने

निज़ाम की टस से मस न होने वाली सरकार को हिलाने के लिए किए। साथ ही हमारे मार्ग में जो असफलताएँ आईं, उनको भी देखें।

आर्य्य नेताओं की हैदराबाद यात्रा

हमारी इस असहायावस्था में हमारे नेताओं ने स्वयं हैदराबाद जाकर साधारण-तथा हिंदुओं और मुख्यतया आर्य्यों की कुछ मुसीबतों का परिचय प्राप्त करने का निश्चय किया। म० नारायण स्वामी जी निज़ाम सरकार के वक्तव्य के प्रकाशित होने के तत्काल बाद अपने विश्वस्त सहयोगियों के साथ स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी व आचार्य्य रामदेव जी के साथ हैदराबाद गये। उन्होंने सोचा कि उनकी यात्रा से वक्तव्य की सत्यता की परीक्षा का उन्हें अवसर मिल जायेगा। वे कुछ दिन हैदराबाद में ठहरे और आर्य्यसमाज की सभाओं पर लगे प्रतिबन्धों की पर्वाह न करते हुए उन्होंने व्याख्यान तथा उपदेश दिए। सौभाग्य से कदाचित् उच्च अधिकारियों की आज्ञा के कारण पुलिस ने इन आर्य्य मिश्नरियों के प्रचार कार्य में कोई हस्तक्षेप न किया। आर्य्यसमाज के व्याख्यानों तथा उपदेशों को सुनने वालों के लिए, भले ही वे किसी भी धर्मके क्यों न हों, मानसिक भोजन प्राप्त होता है और यह ही कारण है कि आर्य्यसमाज के प्रचारकों के भाषणों में श्रोताओं 'की बहुत भारी उपस्थिति रहती है। प० रामचन्द्र जी देहलवी हैदराबाद में हिंदू और मुसलमानों में बहुत लोकप्रिय थे। इन पंक्तियों के लेखक को राज्य के मुस्लिम अधिकारियों के मुँह से प० जी की प्रशसा सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ था। निष्पक्ष मुसलमानों में प० जी की यह लोकप्रियता मुस्लिम धर्मांधता को जो निज़ाम सरकार के धर्म विभाग के द्वारा कार्य कर रही थी सह्य न हुई।

निज़ाम सरकार के लिए यही उत्तम मार्ग था कि वह आर्य्यसमाज के चोटी के नेताओं को आमन्त्रित करके स्थानीय पीड़ित आर्य्यसमाजियों को सांत्वना देने के लिए अपने पक्ष में करती और एक दम उन कारणों को दूर कर देती जो धीरे धीरे एकत्रित होकर राजा व प्रजा के पारस्परिक सम्बधों को दूषित कर रहे थे। परंतु चूँकि अधिकारियों को ग़लत सलाह दी जा रही थी, अत उन्होंने ऐसा न किया। वास्तविक बातों से बेख़बर रहने की पुरानी नीति बर्ती गई और आर्य्यसमाज को अपने पक्ष में करने का सुनहरा अवसर खो दिया गया। आश्चर्य यह है कि निज़ाम की सरकार यह दावा करती है कि उसकी सर्विस में उत्तम कोटि के व्यक्ति हैं।

आर्य्यसमाज के नेता हैदराबद से लौट आए और चूँकि हैदराबाद में उनके निवास

काल में पुलिस ने उनके कार्य में कोई बाधा उपस्थित न की थी, अत उन्होंने आर्य्य-जनता को प्रेस वक्तव्यों के द्वारा आश्वासन दिया कि भविष्य में पुलिस हस्ताक्षेप न करेगी और मातहत कर्मचारियों के अत्यधिक जोश का अन्त हो जावेगा और इसका कारण उन्होंने आर्य्यसमाज के कार्य के प्रति निज़ाम सरकार की नीति में परिवर्तन बतलाया जो कि ठीक न था। परन्तु बाद की घटनाओं ने शीघ्र ही इन पवित्र आशाओं को छिन्न-भिन्न कर दिया। फिर यह स्पष्ट हो गया कि हैदराबाद सरकार की वर्तमान नीति में परिवर्तन असम्भव है। उनका मौन क्षणिक था और उस समय तक के लिए ही था जब तक कि वे नेता राज्य में मौजूद थे। कठिनता से नेताओं को वापिस हुए कुछ सप्ताह ही हुए थे कि चिटगोपा और महाराजगञ्ज से पुलिस द्वारा उत्सवों के बद किए जाने के समाचार आने शुरू हो गए और सभा के मन्त्री जी को पुलिस की ज़्यादतियों की ओर निज़ाम सरकार का ध्यान खींचने के लिए बाधित होना पड़ा। हमारी सभा के मन्त्री और निज़ाम सरकार के पोलिटिकल मन्त्री के मध्य निम्न पत्र व्यवहार हुआ —

हमारा पत्र

महाशय !

आपके पत्र स० २१२ तिथि ११—९—३४ के हवाले से निवेदन है कि आपने अपने इस पत्र में जो म० नारायण स्वामी जी के आवेदन पत्र के उत्तर रूप मे था यह लिखने की कृपा की थी कि "ख़ास तौर पर आर्य्यसमाजियों को किन्हीं विशेष प्रतिबन्धों के भीतर रखने का कोई विचार नही है"। इसके बाद के आपके प्रेस वक्तव्य से भी इस बात की पुष्टि हुई थी। उस वक्तव्य में आपने आर्य्यसमाज के प्रति अपनी सरकार की निष्पक्ष धार्मिक नीति के पक्ष का पोषण किया था।

हमारी सभा के प्रधानकी हाल की हैदराबाद यात्रा से जो उन्होंने अपने सहयोगियों के साथ की थी और पुलिस के हस्ताक्षेप रहित उनके आर्य्य समाज के प्रचार से भी कुछ सीमा तक आपकी नीति की पुष्टि हुई थी।

हम सोच रहे थे कि वह समय शीघ्र आने वाला है जब हम प्रसन्नता से आर्य जगत् को यह सूचना देंगे, कि हैदराबाद राज्य में जो अवांछनीय स्थिति उत्पन्न होगई थी उसका अंत होगया, और आर्य्यसमाज तथा राज्य के सम्बध पुन अच्छे होगये हैं।

परंतु दुर्भाग्य से मुझे अभी ही यह सूचना मिली है कि चिटगोपा के आर्य्यसमाज मंदिर में पवित्र गायत्री मंत्र पर होने वाला उपदेश आपकी पुलिस द्वारा रोक दिया गया है। यह बात आपके उपर्युक्त पत्र तथा वक्तव्य के सर्वथा प्रतिकूल है।

अतएव मैं आपसे प्रार्थना करूँगा कि आप कृपया पुलिस को आज्ञा देवें कि वह आर्य्यसमाज मंदिरों में हमारे काम में बाधा न डाले। मुझे विश्वास है, कि आपकी सामयिक और तात्कालिक कार्य्यवाही अवांछनीय स्थिति को रोकने में सहायक होगी।

जो तार मैंने आपकी सेवामें पहिली तारीख को भेजा है उसकी लिपि इस प्रकार है।

"चिटगोपा आर्य्यसमाज मंदिर में पुलिस व्याख्यानों को रोक कर अवांछनीय स्थिति पैदा कर रही है कृपया पुलिस को ऐसा करने से रोकें। पत्र भेजता हूँ।"

दूसरा तार

"दु ख है कि हैदराबाद राज्य में आर्य्यसमाज के धार्मिक प्रचार में पुलिसके अनावश्यक हस्ताक्षेप और पक्षपातपूर्ण व्यवहार की शिकायतें अभी तक जारी है। १७ नवम्बर को पुलिस कमिश्नर ने महाराजगंज आर्य्यसमाज को जो आज्ञा दी है वह सबसे ताज़ी मिसाल है, सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा पुन धार्मिक निष्पक्षता से सम्बन्धित निज़ाम सरकार के पूर्व वक्तव्यों की ओर उसका ध्यान आकर्षित करती है।"

हवन कुण्ड का हव्वा

ऐसा प्रतीत होता था, कि जितनी ही अधिक निज़ाम सरकार से हमने प्रार्थना की उतनी ही आर्य्यसमाज की प्रगति के प्रति उसकी नीति कठोर होती गई। निलङ्गा में बीदर ज़िले के ताल्लुकेदार के हुक्म से हवन कुण्ड विध्वंस किया गया और आर्य्यसमाज की सम्पत्ति जब्त की गई केवल इस बहाने पर कि आर्य्यसमाज की प्रगतियां सरकार विरोधी तथा राजनैतिक हैं। पाठकों को निज़ाम पुलिस की मूर्खता को जानकर आश्चर्य होगा कि वह पिछले कुछ समय से हवन कुण्ड को मंदिर समझे हुए थी और हुक्म जारी करके उसने उन पर प्रतिबंध लगा दिए थे। परंतु जब उन्हें अपनी यह मूर्खता मालूम हुई तो उन्होंने अपनी स्थिति बदल दी, और जिन मकानों में हवन कुण्ड रहते थे उनपर बन्दिश लगादी। हमारी समझ मे नहीं आता कि हवन कुण्ड निज़ाम सरकार का क्या बिगाड़ता था? हवन कुण्ड एक साधारण पात्र होता है जिसमें आर्य्य लोग वायु शुद्धि के लिए सुगन्धित पदार्थ जलाते हैं। हैदराबाद राज्य में ऐसे निर्दोष धार्मिक कृत्य पर भी प्रतिबंध लगाया गया।

हवन कुण्ड के सम्बन्ध में उपर्युक्त कथन की पुष्टि में बालदा की खुफ़िया पुलिस के नायब कोतवाल द्वारा प्रचारित एक आज्ञा का सार नीचे दिया जाता है—

"हकीम गणपत राव और गडेराव साहिब को सूचित किया जाता है कि नगर्लचिता मुहल्ले में अगना नामक व्यक्ति से आर्य्यसमाज की सभाओं के लिए उन्होंने एक मकान किराए पर लिया है और उस में हवन कुण्ड की स्थापना की है। यह उन्हों ने एक नई बात की है और इस के लिए उन्हें राज्य के धर्म विभाग से आज्ञा लेनी चाहिए और तब तक उन्हें वहां हवन इत्यादि करने की आज्ञा नहीं दी जा सकती है।"

यह उन आज्ञाओं का एक नमूना है जो पुलिस की ओर से हैदराबाद राज्य में समय २ पर आर्यों तथा आर्यसमाजियों को मिलती रही है। इस प्रकार की आज्ञाओं का क्या अर्थ है, यह हमारी समझ में नहीं आया। हम आगे यथा स्थान इस प्रकार की बहुत सी आज्ञाओं का सार देंगे। सम्प्रति हम यह निवेदन करेंगे कि हवन-कुण्ड विध्वस का समाचार प्राप्त कर के सभा के मन्त्री श्री ला० देशबन्धु जी ने निज़ाम सरकार के पोलिटिकल मन्त्री को पत्र और तार के द्वारा निम्न विरोध लिख कर भेजा—

"महाशय!

आज मैंने निम्न तार आपकी सेवा में भेजा है"—

"आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद ने तार द्वारा बड़े चिन्ता जनक समाचार भेजे हैं। तहसीलदार ने निलाग में हवन-कुण्ड का विध्वस कर दिया है, और अवैध रीति से आर्यसमाज की सम्पत्ति ज़ब्त करली है। आर्यसमाजी बड़े व्याकुल हो रहे हैं। कृपया हस्तक्षेप और तत्काल जांच करें"।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिध सभा को पिछले कुछ दिनों से राज्य के दूसरे भागों से इस प्रकार की कई शिकायतें मिल रही हैं। आप मुझ से सहमत होंगे कि राज्य और आर्यसमाज के पारस्परिक अच्छे सम्बन्धों के लिए यह आवश्यक है कि इस प्रकार की शिकायतों की तत्काल जाँच की जावे, और ऐसा प्रयत्न किया जावे कि यह अवांछनीय घटनाएँ बन्द हो जावे। कहने को आवश्यकता नहीं कि इस प्रकार की घटनाएँ न केवल राज्य और आर्यसमाज के अच्छे सम्बन्धों को बिगाड़ती हैं, अपितु अविश्वास तथा असन्तोष का वातावरण पैदा करती हैं, जो हर दृष्टि से अवांछनीय है।

जिस समय आपको यह पत्र मिलेगा मुझे विश्वास है कि आप मामले को ठीक कर

चुके होंगे। अतएव मैं आप से निवेदन क गा कि कृपया परिणाम से शीघ्र से शीघ्र सूचित कीजिए, जिसकी हम बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं"।

इस पत्र और तार की प्रतिलिपि भारत सरकार के पोलिटिकल सेक्रेटरी तथा हैदराबाद के रेज़िडेन्ट को भी भेजी गई थीं।

इस पत्र के कुछ दिन बाद श्रीयुत ला० देशबन्धु जी ने इन ही अधिकारियों को एक दूसरा आवेदन-पत्र भेजा, जिस में राज्य कर्मचारियों के विरुद्ध उन भीषण शिकायतों का उल्लेख था, जो कि हैदराबाद के आर्य समाजियों ने उन के पास लिख कर भेजी थीं। यह आवेदन पत्र भी हम नीचे देते हैं, जिस से कि पाठकों को विदित हो जाय कि निज़ाम सरकार के उच्च अधिकारियों को मातहत कर्मचारियो के उत्पातों से परिचित रखने के लिए हमने क्या किया।

"महाशय!

इतने थोडे से समय मे आपको एक बार फिर पत्र लिख कर राज्य की आर्य समाजी प्रजा के विरुद्ध राज्य के कुछ कर्मचारियों की ज़्यादती को आप के नोटिस में लाने का मुझे खेद है। इस विषय पर आपको लिखने के बाद हैदराबाद से हमें ऐसे समाचार प्राप्त हुए हैं, जिन में राज्य के कुछ कर्मचारियो के विरुद्ध भीषण आरोप लगाए गये हैं।

वे समाचार इस प्रकार हैं—

१—खट गांव में कई मुसलमानों ने तीन आर्य्यसमाजियों के यज्ञोपवीतों को जबर्दस्ती तोड़ा और पारले में पुलिस के सब इन्सपेक्टर द्वारा दो आर्य्य समाजियों के जनेऊ खण्डित किये गये।

२—खरडेनी तालुक़ा के पटेल और उसके भाई ने अहमदपुर के आर्य्यसमाजियों को इसलिए पीटा कि उन्होने उद्गीर आर्य्यसमाज के उत्सव में भाग लिया था।

३—झूठे अपराधों पर आर्य्यसमाज के अधिकारियों तथा सदस्यों पर मुक़द्दमे चलाये जाते हैं।

४—राज कर्मचारी आर्य्य समाजियों को धमकाते हैं कि यदि वे आर्य्य समाज को न छोड़ेंगे, तो उन्हें तङ्ग किया जायगा, और उनके विरुद्ध मुक़द्दमे चलाए जायँगे।

५—आर्य्यसमाजी जो शिकायत करते हैं उन पर पुलिस तथा अन्य राज कर्मचारी ध्यान

नहीं देते विपरीत इसके शिकायत करने वालो को हर प्रकार से ज़लील (अपमानित) किया जाता है।

यह समाचार अपने में स्वय स्पष्ट है और यदि इसमे आरोपित तथा इससे पूर्व समय समय पर निवेदन किए हुए आक्षेप सत्य है जिनकी सत्यता मे हमें कोई सन्देह नही है तो कहना पड़ेगा कि आपके राजकर्मचारी ही स्वय आपके पिछले वक्तव्य की घोर अवहेलना कर रहे है जिसकी हमे कभी आशा भी न थी।

हैदराबाद राज्य की इन खेदजनक परिस्थितियो को सम्मुख रखते हुए सभा की अन्तरग सभा देहली मे शीघ्र ही होने वाली है। चूकि हम अपर्याप्त और मिथ्या समाचारो के आधार पर शीघ्रता में कोई फैसला करना नही चाहते हैं, अत मैं आपसे निवेदन करूँगा कि कृपया उपर्युक्त तथा उन शिकायतो की जो मैंने अपने ६ जुलाई १६३५ के पत्र मे लिख कर भेजी है, तत्काल जाच कराइए और मुझे उसके परिणाम से यथा सम्भव शीघ्र ही सूचित करें। यद्यपि जो कुछ कई बार कहा जा चुका है उसके दुहराने की आवश्यकता नहीं। फिर भी मैं यह निवेदन करूँगा, कि सार्वदेशिक सभा की नीति सदैव पारस्परिक समझौते की रही है, अत वह अपने उचित धार्मिक अधिकारो की रक्षा के लिए अन्य उपायो का अवलम्बन करने के लिए आर्य्यसमाजो को प्रेरित करने से पूर्व शात और सम्मान पूर्ण समझौता करने के लिए कोई उपाय उठा न रक्खेगी।

मुझे आशा है कि, सभा की इस भावना का आप आदर करेगे। और अपने राज्य के अन्य समाजियो की उचित शिकायतो को दूर करने का शीघ्र ही यत्न करेगे।,,

दूसरा तार

'मानक नगर (हुमनाबाद) आर्य्यसमाज के जलूसमें पुलिस की ज्यादतियों के समाचार अत्यन्त चिन्ताजनक है। मुख्य मुख्य आर्य्यसमाजियो को पीटा गया है। कृपया तत्काल जाच कीजिये। उत्तर को प्रतीक्षा है।"

अरण्य रोदन

पाठकों को यह ज्ञात होने पर कि इन विविध आवेदन पत्रो तारो तथा विरोधों का हमें एक भी उत्तर न मिला, हमारे धैर्य का ठीक ठीक अन्दाजा लग जावेगा। हमारी निष्ठा असभ्यता पूर्वक भग करदी गई और हम यह अनुभव करने लग गये कि हमारा रोना बन मे

रोने के सदृश है हम जानते थे कि भारतीय रियासतें तर्क और प्रकाश की शत्रु होती हैं परन्तु हमें यह खयाल भी न था कि वे मानवी भावों से इतने शून्य होंगे कि किसी आवेदन पत्र का उत्तर देने की साधारण शिष्टता भी न दिखलायेंगे। ओह ! ये गुलामों और चापलूसों के शहद के छत्ते हैं ? वे कब तक अपने को स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्र के प्रकाश से बचाए रख सकते हैं ?

जब हम निराशा और असहायावस्था से दुखी और चिन्तित थे तब ही सौभाग्य से निज़ाम सरकार के तत्कालीन प्रधान मन्त्री (प्राइम मिनिस्टर) श्री महाराजा सर कृष्णप्रसाद बहादुर का २०—३—३६ को नई देहली में शुभागमन हुआ। हमें सुझाया गया कि हम एक डेपुटेशन के साथ उनसे भेंट करें और एक बार अपनी तमाम शिकायतोंको उनके सम्मुख रक्खें। डेपुटेशन हिन्दुओ और आर्य्यसमाजियों के प्रमुख २ प्रभावशाली सज्जनों का था। डेपुटेशन में निम्नलिखित सज्जन उपस्थित थे।

(१) श्रीयुत ऐम० ऐस० अणे।

(२) श्रीयुत ए० सी० दत्त एम० एल ए० : उपप्रधान लेजिस्लेटिव असेम्बली।

(३) आनरेबल श्रीयुत बी० बी० कालीकर मेम्बर कौंसिल आफ़स्टेट।

(४) श्री डा० बी० एस मुञ्जे।

(५) ,, प० कृष्णकांत मालवीय एम० एल० ए०

(६) ,, बा० घनश्यामसिंह जी गुप्त एम० एल० ए०।

(७) ,, ला० देशबन्धु जी।

(८) ,, प्रो० सुधाकर, जी एम० ए०

(९) ,, चौ० मुख्तारसिंहजी।

(१०) ,, ला० नारायणदत्त जी सदस्य सार्वदेशिक आ० प्र० सभा।

(११) ,, ला० ज्ञानचन्द जी सदस्य सार्वदेशिक सभा।

अन्यान्य बातों के अतिरिक्त जो बातें विशेष रूप से प्रधान मन्त्री जी के सम्मुख रखी गई उनमें से कुछ इस प्रकार हैं—

(१) हैदराबाद राज्य में प०रामचन्द्र जी देहलवी के प्रवेश पर लगा हुआ प्रतिबंध।

(२) हिन्दुओं और मुख्यतया आर्य्यों की धर्म्म प्रचार की स्वतन्त्रता और नागरिक अधिकारों का उपभोग।



प विनायकराव वैरिस्टर
प्रधान आर्य्य प्रतिनिधि सभा, निजाम राज्य ।
इनके घर पर मुसलमानो ने आक्रमण किया था ।



श्री० दत्तात्रेय प्रसाद वकील

जिन्होने हैदराबाद रियासत मे आर्य्य समाज के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर रक्खा है ।

(३) धार्मिक और सामाजिक साहित्य की ज़ब्ती ।

(४) स्कूलों की पाठ्य पुस्तकों में हिन्दू संस्कृति विषयक पाठों का अभाव ।

संख्या (१) के सम्बन्ध में शिष्टमण्डल ने प्रगट किया कि इस प्रतिबन्ध को लगे हुए २ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं । भले ही उस समय परिस्थिति कुछ भी क्यों न रही हो, सम्भव नहीं कि हैदराबाद राज्य की वर्त्तमान साम्प्रदायिक अवस्था इस प्रतिबन्ध के हटाने में बाधक हो । यह भी प्रगट किया कि यह प्रतिबन्ध मुसलमानों की अवस्थाके साथ तुलना में हिन्दुओं को उनकी असहायावस्था का सदैव स्मरण कराने वाला है। मंडल ने इस प्रतिबन्ध को हटाने की बलपूर्वक प्रार्थना की ।

सं० (२) के सम्बन्ध में मंडल ने यह शिकायत पेश की कि निज़ाम सरकार द्वारा उद्घोषित धार्मिक निष्पक्षता की नीति का छोटे अधिकारियों के द्वारा दुरुपयोग होता है और वे दिन प्रति दिन के शासन में इस नीति के विरुद्ध व्यवहार करते हैं । यह भी प्रगट किया कि कारण भले ही कुछ हो राज्य की आबादी के ८५ प्रतिशत लोगों (हिन्दुओं) के हृदयों में इस प्रकार के भाव की मौजूदगी अवांछनीय है। मंडल ने लातूर की ताज़ी घटना पुलिस की ज्यादतियों और इस नीति के विरुद्ध आचरण के उदाहरण के रूप में पेश की ।

मंडल ने प्रार्थना की कि मातहत अधिकारियों को हिदायत कर दी जाय कि वे समस्त धर्मानुयायियों के प्रति समान स्वतन्त्रता की राज्य की उद्घोषित नीति का ठीक ठीक रीति से पालन करें और दूसरों से कराएँ और समस्त धर्म्म स्थान समानरूपसे पवित्र समझे जावें । मुसलमानों के धार्मिक जलूसों और सार्वजनिक वा प्राइवेट धार्मिक जल्सों की तरह ही हिन्दुओं के जल्से और जलूस बिना किसी रुकावट के करने तथा निकलने दिए जावें ।

सं० (३) यह बात भी प्रधान मन्त्री जी के नोटिस में लाई गई कि हिन्दुओं और आर्य्यसमाजियों का साहित्य ज़ब्त करलिया जाता है और वैसेही और उससेभी बुरे मुस्लिम साहित्य को खुली छुट्टी दे दी जाती है । मंडल ने इस प्रकार के मुस्लिम साहित्य के सम्बन्ध में 'रूहे-इस्लाम' इत्यादि पुस्तकों का हवाला दिया । यह भी प्रगट किया कि 'वैदिक आदर्श' नामक एक मात्र आर्य्य समाचार-पत्र का राज्य ने प्रकाशन बन्द कर दिया है ।

सं० (४) यह भी प्रधान मन्त्री जी को बतलाया गया कि स्कूलों में जो पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं उनमें हिन्दू सभ्यता और हिन्दू इतिहास पर कोई पाठ नहीं होता ।

गुण्डाशाही

जब सर्व-साधारण मुसलमान आर्य्य समाज की उचित शिकायतों के प्रति निज़ाम सरकार की बढ़ती हुई कठोरता से परिचित हो गए तब उन्हें विविध स्थानों पर आर्य्य समाजियों और हिन्दुओं को तङ्ग करने और सताने का साहस हो गया। अपनी लापरवाही और उपेक्षा वृत्ति से पुलिस के मातहत कर्मचारियों ने उन्हें मदद दी। मुसलमान धर्म्मान्धों के अत्याचारों के हृदय-द्रावक समाचार सभा के कार्य्यालय में आने शुरू हो गए। जन-साधारण को भड़काना सरल है परन्तु इस से फैली हुई आग को बुझाना कठिन है।

म० वेदप्रकाश की हत्या

इस के तत्काल बाद हमें म० वेदप्रकाश की हत्या का भयावह समाचार मिला। जिन परिस्थियों में यह हत्या हुई थी उन्होंने इस दुर्घटना को ऐसा उत्तेजनापूर्ण बनाया कि तमाम हिन्दुस्थान में क्रोध की लहर दौड़ गई। आर्य्य समाज की समस्त संस्थाओं ने विरोध-सूचक प्रस्तावों के द्वारा अपने क्षोभ और रोष की निज़ाम तथा भारत सरकार को सूचना दी। सार्वदेशिक सभा को प्रेरणा की गई कि वह म० वेदप्रकाश की हत्या के कारणों की घटना-स्थल पर पहुँच कर जाँच करे।

म० शिवचन्द्र का दौरा

सभा ने इस हत्या एवं मुसलमान गुण्डों द्वारा हिन्दुओं और आर्य्यों पर होने वाले अन्य अत्याचारों की जांच कराने के विशेष उद्देश्य से अपने उत्साही कार्य्यकर्त्ता आर्य्य रक्षा समिति के मन्त्री म० शिवचन्द्र को इस कार्य्य के निमित्त नियुक्त करके उन्हें आदेश दिया कि वे हैदराबाद में विस्तृत भ्रमण करके जांच करें। गत मार्च मास में वे अपने मिशन पर गए और हमारी हैदराबाद की प्रान्तिक सभा के मन्त्री म०बंशीलाल जी के साथ वे १६ स्थानों पर गए। उन्होंने पुलिस के डाइरेक्टर जनरल श्रीयुत ऐस० टी० हौलिन्स सी० आई० ई० ऐल० बी० ऐस० तथा राज्य के अन्य उच्च कर्मचारियों से भेंट की। वे पीड़ित व्यक्तियों और पार्टियों के लिखित बयान हमारे पास लाए। वे इतने कारुणिक हैं कि उनके पढ़ने पर निज़ाम सरकार के आर्य्य समाज के प्रति प्रतिशोध और निष्ठुरता पूर्ण व्यवहार पर क्रोध आए बिना नहीं रह सकता। उन को पढ़ने पर कोई भी व्यक्ति इस परिणाम पर पहुँच सकता है कि इस मामले में निज़ाम सरकार एक पार्टी है और इस सब उत्पात की जड़ में निज़ाम सरकार का धर्म्म-विभाग है।

गंजोटी में हुए म० वेदप्रकाश के वध की घटनाएँ हमें भारतवर्ष के पुराने मुसलमानी ज़माने की याद दिलाती है जब मुसलमान मौलवी हिन्दुओं के सामने यह विकल्प पेश किया करते थे कि "या तो इस्लाम को क़बूल करो या मरने को तैयार रहो"। यदि इस प्रकार की घटना २०वीं शताब्दि में घटित होती हैं तो निश्चय ही हमारे आश्चर्य की सीमा नहीं रहती। गंजोटी में आर्य समाज स्थापित किया जाता है मुस्लिम वर्गाई इस से ही असन्तुष्ट हो जाते हैं और आर्यों तथा आर्य मन्दिरों पर पत्थर फेंकते हैं। पुलिस में शिकायत की जाती है परन्तु कोई तात्कालिक कार्यवाही नहीं की जाती। लगभग २५० सशस्त्र मुसलमान जलूस की शकल में निकलते हैं, और अपने सरदार दाऊद खाँ के गले में माला डालते हैं और आर्यों हिन्दुओं को डराते धमकाते हुए शहर में गश्त करते हैं। वेदप्रकाश आर्य समाज मन्दिर से अपने घर को लौट रहा था। मुसलमानो की यह भीड़ उसे मार्ग में मिलती है और उस के साथ दुर्व्यवहार कर के उसे निर्दयता पूर्वक क़त्ल कर देती है। इस शहीद की लाश आर्य समाज के मंत्री के मकान में फेंक दी जाती है। जब म० शिवचन्द्र जी उस मकान में गये तो वहा उस समय भी उन्हें ख़ून के धब्बे मिले। यह भी कहा जाता है कि इस शहीद ने वीरता तथा प्रसन्नता पूर्वक मृत्यु का आलिंगन किया। यद्यपि अन्तिम क्षणों में उस से कहा गया था कि यदि तुम इस्लाम क़बूल करलो तो तुम्हारी जान बच सकती है।

वेदप्रकाश की नृशंस हत्या से हैदराबाद की भयंकर परिस्थितियाँ सभा के सामने आ गई और उस समय हमें यह दीख पड़ा कि हैदराबाद में आर्यों के जीवन सुरक्षित नहीं हैं। केवल एक यही घटना इस "उन्नत" राज्य का राग अलापने वालो के प्रलापों को निर्मूल सिद्ध करने के लिए पर्याप्त थी।

हुपला की हत्याएँ

उदगीर ज़िलान्तर्गत हुपला ग्राम में भी इसी प्रकार की हत्याएँ हुई थीं। मुसलमान लोग भीमराव पटेल के मित्र मानक राव की चचेरी बहिन को भगा ले जाना चाहते थे। उस कन्या की रक्षा के यत्न से आस पास के गांवों के मुसलमान भड़क गये। यही उन हत्याओं का तात्कालिक कारण था। यह कहा जाता है कि पुलिस को इस तमाम मामले का पहिले से पता था, परन्तु वह हिन्दुओं की रक्षा के लिए आगे न बढ़ी बल्कि उसने इन

पाशविक अत्याचारों के करने के लिये मुसलमानों को भड़काया और उन की सहायता भी की। दिन दहाड़े शाम की ३ बजे मुसलमान लोग शस्त्रों से सुसज्जित हो कर हुमला ग्राम में एकत्रित हुए, और भीमराव पटेल के घर को उन्हों ने घेर लिया। उस समय माणिक राव भी उस मकान में थे। मुसलमान लोग घर में घुसे और निर्दयता पूर्वक माणिकराव को क़त्ल कर दिया, तथा भीमराव व उसकी चाची को भी गोली से उड़ा दिया और उस ही मकान में उन तीनों की लाशों को जला दिया।

पुलिस पटेल की धृष्टता

अहमदनगर (बीदर) तहसील के "ताले" ग्राम निवासी रामराव का पुत्र बाबूराव जिसकी आयु २० वर्ष की थी आर्यसमाज का मेम्बर बना। सैय्यद अमीर नामक पुलिस पटेल उसके इस कार्य्य से अप्रसन्न होकर सबके सामने उसे गालियां देता है और उससे बदला लेने की प्रतिज्ञा करता है। एक दिन जब बाबूराव कुँए से लौट रहा था तो कहा जाता है कि सैय्यद अमीर ने अन्य मुसलमानों के साथ बाबूराव पर हमला किया और अपनी तलवार से उसे सदैव के लिए निकम्मा कर दिया। बाबूराव ने मामले की रिपोर्ट पुलिस में की और एक डाक्टर को अपना बयान भी दिया, परन्तु अपराधियों के विरुद्ध कोई कार्य-वाही न की गई।

एक अन्य आर्य्य की दुर्दशा

जिला उस्मानाबादान्तर्गत गोरकवादी ग्राम निवासी मारुति के पुत्र लिम्बा जी को जिसकी उम्र ३५ वर्ष की थी आर्य्यसमाजी होने तथा बनने के कारण बुरी तरह पीटा गया। कुछ मुसलमानों ने उसे सोते हुए आ पकड़ा और उसको एक लाठी मारी। तथा उसके हाथ पाँव बाधकर पास के एक गांव में ले जाकर उससे इस्लाम ग्रहण करने के लिए कहा गया। इन्कार करने पर उसे खूब मारा पीटा गया।

पुलिस का अमानुषिक व्यवहार

गत बकरा ईद के मौक़े पर निजामाबाद में कुछ मुसलमानों ने एक गाय की हत्या की जिसके कारण हिंदुओं ने वहाँ हड़ताल रक्खी। पुलिस को शक हुआ कि इसमें आर्य्यों की शरारत है। १३ मार्च १९३८ को पुलिस ने छल से ४ आर्य्यसमाजियों को इस तुच्छ आधार पर गिरफ़्तार किया कि उन्होंने हिंदुओं को शस्त्रों के धारण करने के लिए उकसाया। आश्चर्य यह है कि मजिस्ट्रेट के वारण्ट के बिना ही ये गिरफ़्तारियाँ हुईं और

उन्हें हवालात में रखा गया। कहा जाता है कि उन्हें वहाँ निर्दयता पूर्वक पीटा गया और बलात उनके यज्ञोपवीत तोड़े या उतारे गये। प्रात ३ बजे उन्हें बिलकुल नगा किया गया और उनके मुँह में पेशाब किया तथा माँस डाला गया। दूसरे दिन हथकड़ियाँ हाथ में डालकर उन्हें शहर में घुमाया गया।

पिछली होली के अवसर पर गुलबर्गा में जब लिंगायत लोग होली खेल रहे थे, तब हिंदू व मुसलमानों में कुछ झगड़ा हो गया था। कहा जाता है कि इसमें एक मुसलमान की मृत्यु हो गई थी। यद्यपि उस समय कोई भी आर्य्य होली नहीं खेल रहा था (यह प्रसिद्ध बात है कि आर्य्य लोग अन्य हिंदुओं की तरह होली नहीं खेलते) तो भी यह कहा गया कि आर्य्य लोगों ने इस झगड़े में भाग लिया और क़त्ल के अपराध में पुलिस ने ४ आर्य्यों को गिरफ़्तार करके‡ गुलबर्गा के सेशन कोर्ट मे उनपर मुकदमा चलाया और दो से १० वर्ष तक की कठोर सज़ा उन्हें दी गई।

ओ३म् के झण्डे का हटाया जाना

६-४-३८ को कल्याणी आर्य्यसमाज मदिर का झण्डा जबर्दस्ती इस आधार पर हटाया गया कि राज्य के धर्म-विभाग की आज्ञा से मदिर की पूर्व से रजिस्ट्री नहीं हुई थी। इस अत्याचार के विरोध में राज्य के अधिकारियों को तार भेजे गए। अब हमें विदित हुआ है कि श्रीयुत ऐस टी हौलिस डायरेक्टर जनरल पुलिस ने इस घटना की जाँच की है और उन्होंने कहा है कि ताल्लुकेदार द्वारा ओ३म् के झण्डे का उतारा जाना अन्याय युक्त था, परतु यह होते हुए भी अब तक ओ३म् के झण्डे को फिर से लगाने की आज्ञा नही मिली है।

पं० विनायक राव बैरिस्टर के मकान पर धावा

गत अप्रैल मास में हैदराबाद नगर में मुसलमानों ने हिंदुओं को मारा पीटा और बाद में यह झगड़ा हिंदू मुस्लिम दगे के रूप में बदल गया।

‡ यह ध्यान देने योग्य बात है कि गजोटी में म० वेदप्रकाश की हत्या के सिलसिले में मुसलमानों पर जो केस चलाया गया था उसके ४ माह बाद आर्य्यों पर गुलबर्गा केस चलाया गया था। गुलबर्गा केस का फ़ैसला तो शीघ्र ही कर दिया गया परन्तु गजोटी केस अभी तक अदालत में ही पड़ा हुआ है। न्याय की दृष्टि से इसका जो अर्थ है वह पाठक स्वय जान सकते हैं।

निज़ाम सरकार ने एक निराधार भ्रमपूर्ण वक्तव्य जारी करके आर्य्यसमाजियों को इस उत्पात का उत्तरदायी ठहराया। इस वक्तव्य ने आग में ईंधन का काम किया और मुसलमानों को भड़काया जिसके परिणाम स्वरूप लगभग १०००० मुसलमान आर्य्य प्रतिनिधि सभा निज़ाम राज्य के प्रधान श्री० प० विनायकराव जी बैरिस्टर के मकान पर चढ़ गये। यह ध्यान देने योग्य बात है कि प० जी का परिवार एक बड़ा उच्च और प्रतिष्ठित परिवार है जिसकी निज़ाम सरकार के प्रति निष्ठा वहां के सब लोगों में प्रसिद्ध है। उनके पिता रायसाहिब केशवराव जी हाइकोर्ट के सम्मानित जज थे। घटना का समाचार मिलते ही सभा ने राज्य के अधिकारियों को निम्न लिखित तार दिया —

तार

राज्य का वक्तव्य जिसमें दंगे के लिए आर्य्यसमाजियो को उत्तरदायी ठहराया गया है निराधार तथा भ्रामक है। वक्तव्य ने आग में ईंधन का कार्य किया और प० विनायक राव जी के मकान तथा अन्य आर्य्यसमाजियो के ऊपर आक्रमण करने में मुस्लिम भीड़ को प्रोत्साहित किया है। इस प्रकार के जान बूझ कर किए गये हमलों को आर्य्यसमाजी अत्यन्त अनुचित तथा निन्दनीय समझते हैं। सभा निज़ाम सरकार को चेतावनी देती है कि इस प्रकार के आक्रमणों का परिणाम बड़ा भयङ्कर होगा। तत्काल हस्तक्षेप और बैरिस्टर के परिवार की रक्षा करने के लिए माननीय श्रीयुत ग्राफ्टन को धन्यवाद।

प्याले का भरजाना

यह प्रत्यक्ष होगया कि राज्य के हिन्दू तथा आर्यो के दु:ख का प्याला भर गया है, और किसी क्षण भी इसमें उबाल आ सकता है। अतएव सभा ने सम्पूर्ण परिस्थिति पर सिंहावलोकन करने का निश्चय करके ३०—४—३८ को देहली में सभा की अन्तरंग सभा बुलाई। सभा में तमाम स्थिति पर पर्याप्त वाद विवाद तथा विचार के बाद सर्व सम्मति से निम्नलिखित निश्चय हुआ —

यह सभा हैदराबाद रियासतमें आर्य्यसमाज और आर्य्यसमाजियों पर जो अत्याचार हो रहे हैं, उनकी घोर निन्दा करती हुई उस रियासत के आर्य्य समाजियों के साथ हार्दिक सहानुभूति प्रकट करती है।

इस सभा को इस बात का विशेष दुःख है कि रियासत के उच्च अधिकारियों ने सभा के प्रतिनिधियों को बार बार आश्वासन दिए हैं कि रियासत में आर्य्यसमाज के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार किया जायगा। परन्तु उन आश्वासनों को तोड़ा गया है और स्थिति को अधिक से अधिक भयङ्कर होने दिया है। यह सभा समझती है कि अब दशा बहुत ही बिगड़ गई है और उसकी उपेक्षा करना असम्भव है।

सभा की हैदराबाद रियासत से माँग है कि—

(१) गश्ती निशान ५४ को मन्सूख़ कर दिया जावे।

(२) क़वायद तकरीबन मज़हबी मन्सूख कर दिये जायें।

(३) कानून अखाड़ा मन्सूख कर दिये जायँ।

(४) खानगी मदरसे की गश्ती मन्सूख कर दी जाय।

(५) फिर्के वारी दुर्गों के मुकद्दमे की तहकीकात निष्पक्ष कमीशन द्वारा कराई जाय।

(६) बाहर के उपदेशकों पर इज़ाजतकी पाबन्दी न लगाई जाय। कोई खिलाफ कानून काम करे तो मुकद्दमा चलाया जाय। जिसका दाख़िला बन्द है खोल दिया जाय।

(७) पुस्तकें बिना आंच ज़ब्त न किये जावें।

(८) समाचार पत्र के निकालने की आज्ञा दी जाय।

(९) मुसलमान हिन्दू और आर्य्य के त्यौहार एक साथ आने पर उनके मनाने की स्वतन्त्रता रहनी चाहिये।

(१०) आर्य्यसमाज, हवन कुण्ड के स्थापित करनेके लिए इज़ाजत की ज़रूरत न रखी जाए।

(११) जेल खाने में कैदियों को मुसलमान न बनाया जाय और हमको उनमें प्रचार की आज्ञा हो।

(१२) सरकारी नौकर जो आर्य्य हैं उन पर आर्य्य होने के कारण सख्ती न की जाय।

(१३) आर्य्यों को अपने घरों पर और आर्य्यसमाज पर झंडा लगाने की स्वतन्त्रता दीजाये।

(१४) गुलबर्गा निज़ामाबाद, हैदराबाद के मुकद्दमों की तहकीकात निष्पक्ष कमीशन द्वारा की जावे।

क्योंकि सभा को दिये गये आश्वासनों की रियासत के अधिकारियों ने कोई परवाह नहीं की, और सभा यह भी आवश्यक समझती है कि सम्पूर्ण आर्य्य जनता को इस आवश्यक प्रश्न के सम्बन्ध में साथ लेना आवश्यक है इसलिए सभा निश्चय करती है कि पांच

मास के अन्दर अन्दर मध्यप्रदेश में अथवा महाराष्ट्र में किसी ऐसे केन्द्र, में जो हैदराबाद रियासत के समीप हो, एक आर्य्य महा सम्मेलन (Aryan Congress) की जाय जिसमें विशेषतया हैद्राबाद की समस्या पर विचार हो।

सभा की सम्मति है कि यदि रियासत के अधिकारी शीघ्र ही अपनी नीति में परिवर्तन करने को तैयार नहीं, तो सम्पूर्ण आर्य्यसमाज को सब उचित उपायों से, जिनमें सत्याग्रह भी शामिल है, अपने अधिकारों के लिये लड़ने के लिए तय्यार हो जाना चाहिए।

यह सभा आर्य्य रक्षा समिति को आदेश देती है कि वह इस प्रस्ताव के अनुसार आर्य्य महा सम्मेलन के सगठन, तथा अन्य सब आवश्यक उपायों को काम में लाकर हैद्राबाद में आर्य्यसमाज के अधिकारों की रक्षा का प्रयत्न करे।

हमारे क़ानूनी सहायकों पर प्रतिबन्ध

महान् ग्लैडस्टोन के शब्दों में "न्याय में विलम्ब करना न्याय के अपहरण के बराबर है।" हैदराबाद में अपने केस के सम्बन्ध में हम इस कहावत की सचाई को खूब अनुभव कर रहे थे। परन्तु हमें जो कटु अनुभव हुआ, वह निर्दोष आर्य्य हिंदुओं के विरुद्ध फ़ौजदारी के सगीन मुक़दमों के सम्बन्ध में था। उन मुक़दमो में केवल विलम्ब ही नहीं अपितु हमारे योग्य क़ानूनी सलाहकारों के मार्ग में बाधाएँ उपस्थित करके हमें न्याय से वंचित किया गया। हैदराबाद का मुक़दमा जिसमें हिंदू और आर्य्यों पर क़त्ल का आरोप लगाया गया है, न्याय के अपहरण का स्पष्ट उदाहरण है। अभियुक्तों की पैरवी के लिए बम्बई के फ़ौजदारी के प्रसिद्ध वकील श्रीयुत के ऐफ नैरिमैन नियुक्त किए गए थे परन्तु उनके राजनैतिक विचारों के विचित्र आधार पर राज्य में उनका प्रवेश निषिद्ध कर दिया गया। न्यायालय में अपने मुवक्किलों की पैरवी करने के लिए जानेवाले वकील को यह कहना कि वह इस कार्य को हाथ में नहीं ले सकता क्योंकि वह विशेष प्रकार के राजनैतिक विचारोंवाला है। इसमें अपराधियों को न्याय से वंचित करने के अप्रत्यक्ष प्रयत्न के अतिरिक्त और क्या है? इससे अधिक बदले की भावना और क्या हो सकती है? सभा के मन्त्री ने इस सम्बन्ध में निज़ाम साहब, प्रधान मन्त्री सर अकबर हैदरी और रेज़ीडेण्ट को तार दिए—

तार

"क़त्ल के अभियुक्त हिंदुओं व आर्य्यों की पैरवी के लिए हैदराबाद आते हुए बैरिस्टर



भॅवरलाल आर्य्य
इन्हे गुलबर्गा केस मे २ वर्ष का कठोर कारावास मिला ।



उमरावसिंह आर्य्य
इन्हें हैदराबाद केस मे २० वर्ष के कारावास का दण्ड मिला ।



सोहनलाल आर्य्य



श्री० देवीसिंह जी

इन दोनो महाशयो को हैदराबाद कम्प मे २० २० वर्ष का दण्ड मिला है।

नैरीमैन जी के रोके जाने को यह सभा अनुचित समझती है । इनकी यह यात्रा विशुद्ध व्यवसायिक दृष्टिकोण से थी । नागरिक स्वतन्त्रता के प्रश्न के अलावा यह प्रतिबन्ध निर्दोष अभियुक्तों को आत्म रक्षा और उचित क़ानूनी सहायता के अधिकार से वंचित करता है । कृपया प्रतिबन्ध हटा दीजिए और हिंदू समाज को आश्वासन दिलाइए कि अभियुक्तों के साथ पूरा-पूरा न्याय किया जायगा ।"

परन्तु निज़ाम सरकार पत्थर बनी हुई थी । उसने अपने नागरिकों के इन मौलिक अधिकारों की क़तई पर्वाह न की । पाठकों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि श्रीयुत नरीमैन के प्रवेश को रोकने के बाद भारतवर्ष के एक उच्चकोटि के वकील श्री भूलाभाई देसाई की सेवाएँ प्राप्त की गईं, और उन्हें भी हैदराबाद से इसलिए निराश होकर लौटना पड़ा, कि वहां के नागरिकों को नागरिक स्वतन्त्रता के अधिकार से भी वंचित रक्खा जाता है । इसके बाद उनका स्थान देहली के श्रीयुत तबक्कली जी ने लिया, इस अभियोग का फैसला सुना दिया गया है । इस फैसले के सम्बन्ध में निज़ाम सरकार के रुख को देखते हुए हमारे जो अनुमान थे, वे सत्य ही सिद्ध हुए । अभियुक्तों को २०-२० वर्ष के कारावास का कठोर दण्ड मिला है । एक दूसरे गुलबर्गा के मुकद्दमे में जहां मुलतान के वकील श्रीयुत रामचन्द्र खन्ना ने बड़ी योग्यता के साथ अभियुक्तों की पैरवी करके मुकद्दमे की धज्जियां उड़ा दी थी, हम देखते हैं कि ग़रीब आर्यों को भारी भारी सजाएँ दी गई हैं ।

धर्मवीर धर्मप्रकाश का बलिदान

हम ऊपर वर्णन कर चुके हैं कि किस प्रकार धर्मान्ध मुसलमानों के द्वारा हमारे भाई वेदप्रकाश का बलिदान हुआ और किस वीरता तथा प्रसन्नता के साथ उसने स्वधर्म तथा स्वसंस्कृति के लिए अपने प्राणों की आहुति दी । वहाँ केवल एक इकही का बलिदान हुआ हो यह बात नहीं बल्कि उन के मार्ग को और भी अधिक चमकाने तथा गौरवान्वित करने के लिए अन्य आर्य भाइयों ने भी उन का अनुसरण किया । मृत्यु ही मनुष्य को शहीद नहीं बनाती, अपितु जिस काम के लिए वह बलिदान होता है वह ही उसे शहीद बनाता है । जिस उद्देश्य के लिए हमारे भाई हैदराबाद में अपने प्राण न्यौछावर कर रहे हैं वह उद्देश्य न्याय प्राप्ति है । संसार में न्याय मनुष्य की एक बड़ी प्रिय वस्तु है और वह ही सभ्य पुरुषों व जातियों को एक सूत्र में पिरोए रखती है । न्याय का तकाज़ा यह है कि जब तक हम दूसरे लोगों को अपने हक़ पर स्व हित साधन करने से नहीं रोकते तब तक ही हमें

अपना हित साधन करने का अधिकार होना चाहिए। ठीक इसी प्रकार के न्याय से हम हैदराबाद में वंचित किए गये हैं। हमें अपने मन्दिरों के बनाने, उन में सत्संग करने हवन-कुण्ड बनाने, संस्कार करने तथा धार्मिक व्याख्यान कराने आदि की पुलिस अथवा राज्य के धर्म विभाग की पूर्वस्वीकृति के बिना आज्ञा नहीं है।

अब म० धर्मप्रकाश जी के विषय की ओर आते हैं। वह कल्याणी आर्यसमाज के उत्साही कार्य कर्त्ता थे। वे नवयुवकों को व्यायाम सिखाया करते थे। मुस्लिम प्रचारकों को उनकी यह प्रगतियाँ पसन्द न आईं और उन्होंने उनकी जान लेने का षड्यन्त्र रचा। कल्याणी में ओ३म् का झण्डा उतारने का जब उत्पात हुआ, तब मुसलमान अधिक रुष्ट हो गये और आर्यसमाज मन्दिरों तथा आर्यसमाजियों के घरों पर कंकड़ पत्थर फेंक कर और समय समय पर बन्दूक चला कर आर्य्यों को तंग तथा भयभीत करने लग गए। जब डाइरेक्टर जनरल पुलिस श्री युत ऐस० टी० हालिन्स ने गोली चलाने के सम्बन्ध में जांच की तो मुसलमानों ने यह झूठा बहाना बनाया कि वे बन्दरों को डराने के लिए बन्दूक चलाते थे।

२७-६-३८ को म० धर्म्मप्रकाश जब आर्य्य समाज मन्दिर से घर को लौट रहे थे तो रास्ते में सशस्त्र मुसलिम भीड़ ने उन्हें घेर लिया। तलवारों और छुरियों से हमला करके उन्हें ज़ख़्मी कर दिया।

आह ग़रीब धर्म्मप्रकाश! तुम अकेले और निहत्था थे। तुम भीड़ की आग से न बच सके। तुम्हारा अपराध केवल यही था कि तुम उत्साही आर्य्य समाजी थे और मुसलमान आततायियों की मूर्खता, धर्म्मान्धता और द्वेष के सामने नहीं झुके थे।

माननीय घनश्यामसिंह गुप्त प्रधान सभा की हैदराबाद यात्रा

माननीय घनश्यामसिंह गुप्त के हैदराबाद आने के २ दिन पूर्व ही उपर्युक्त दुर्घटना हुई थी और उन के तथा राज्य के अधिकारियों के मध्य जो विचार हुआ था उस में एक यह भी विचारणीय विषय था। निज़ाम सरकार से न्याय प्राप्ति के लिए हमारा यह अन्तिम यत्न था और इस समय हमारा सदेश-हर मामूली व्यक्ति नहीं वरन् एक प्रान्तीय असेम्बली का अध्यक्ष था, और आर्य्य समाज के केस की शान्ति और विचार के साथ छान-बीन करने के लिए उपयुक्त था। यह ध्यान रहे कि गुप्त जी स्वभाव से ही काल्पनिक बातों की ओर ध्यान नहीं देते हैं। उन्होंने बड़ी छान बीन के साथ केस का अध्ययन किया। प्रधान मन्त्री

सर डाक्टर हैदरी, पुलिस मेम्बर श्रीयुत क्राफ़टन, श्रीयुत डाइरेक्टर जनरल पुलिस श्रीयुत हौलिन्स सिटी पुलिस कमिश्नर श्री नवाब रहमत यार जग से भेंट की और आर्य्य समाजियों तथा आर्य्य समाज के कष्टों और प्रतिबन्धों को उनके समक्ष देखा।

उन्होंने आर्य्यसमाजियों के विरुद्ध लगाए गए आरोपों का तीव्र खण्डन किया और अपने पक्ष की पुष्टि में घटनाएँ प्रस्तुत कीं।

उन्होंने अधिकारियों को साफ तौर पर कह दिया कि आर्य्यों का राज्य की पुलिस में कोई विश्वास नहीं रह गया है और राज्य के न्याय विभाग में भी उनका विश्वास धीरे धीरे कम हो रहा है, और यदि समय पर अवस्था न सुधरी और निज़ाम सरकार ने अपने शासन की साम्प्रदायिक नीति को न बदला तो इसके फल स्वरूप जो अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी उसकी उत्तरदायिता स्पष्ट रूप में उन लोगों पर होगी जो पीड़ित पक्ष की उचित शिकायतों को नहीं सुनेंगे। श्रीयुत गुप्त जी उसी पुराने आश्वासन के साथ लौटे कि जाँच की जायगी और उचित समय पर सब बातें ठीक कर दी जायेंगी। मामले के ठीक होने का समय अभी तक नहीं आया वरन् बाद की घटनाओं ने उसे और भी ख़राब कर दिया है। हैदराबाद का वर्तमान शासन प्रार्थनाएँ किए जाने का अधिकारी नहीं है और इसकी जनता की सम्मिलित इच्छा के अतिरिक्त उसकी नीति को कोई बदल नहीं सकता है। यदि अवस्था यही रही तो सम्भव है वह इच्छा शीघ्र उठ जाय और आर्य्यों और हिंदुओं की वर्तमान सकटापन्न अवस्था का अन्त हो जाय।

धर्म्मवीर महादेव का बलिदान

म० महादेव निज़ाम राज्य के अकोलगा ग्राम के निवासी थे। वे सत्यार्थप्रकाश तथा आर्य्यसमाज की पुस्तकें लोगों को पढ़कर सुनाया करते थे। एक बार स्थानीय मुसलमानों ने जो इस पर आपत्ति करते थे उनसे सत्यार्थप्रकाश छीन कर पुलिस को दे दी। आर्य्य प्रतिनिधि सभा निज़ाम राज्य के मन्त्री ने मामले की पुलिस को रिपोर्ट की परन्तु धर्म्मान्ध मुसलमानों ने महादेव को धमकी दी कि यदि वे अपने कार्य्य को बन्द नहीं करेंगे तो उन्हें ख़त्म कर दिया जायगा। अन्त में १७—७—३८ को मेहर अली नामक धर्म्मान्ध मुसलमान ने छुरे से म० महादेव को निर्दयतापूर्वक मार दिया। ऐसी बहुत सी घटनाएं हैं जिनका गिनाया जाना कठिन है जिनमें कई स्थानों पर आर्य्यों पर लाठियों से प्रहार किया गया और उनके फलस्वरूप उनकी हड्डियां टूटीं तथा पुलिसने न केवल जिनके सम्बन्धमें कोई जांच ही न की अपितु ग़रीब आर्य्यसमाजियों के रिपोर्ट लिखने की प्रार्थना करने पर भी वे न लिखी

गईं अब यह विदित हुआ है कि राज्य में मुस्लिम धर्म्मान्धता इतनी अधिक फैली हुई है कि शाम को अँधेरा होने पर आर्य्यसमाजी अपने घरों से मुश्किल से बाहर निकलते हैं। और इतना ही नहीं वरन् दिन में भी उन्हें अपनी रक्षा का ध्यान रखना पड़ता है।

सर अकबर हैदरी के नाम मन्त्री सभा का पत्र

श्रीमान्,

आपके राज्य में धर्म्मान्ध मुसलमानों द्वारा आर्य्यसमाजियों की हत्याओं के शोक-जनक समाचारों ने तमाम हिन्दू भारत में सनसनी पैदा करदी है। वेदप्रकाश की गुञोटी, धर्म्मप्रकाश की कल्याणी में और महादेव की अकोलगा गांव में हत्या की गई। इन धर्मवीरों ने प्रसन्नतापूर्वक आलिंगन किया और अपने उन विरोधियों के मन्सूबों को छिन्न भिन्न कर दिया जो यह दर्शाना चाहते थे कि जाहिलाना गुस्से और पागलपन से एक अच्छे कार्य्य का अन्त किया जा सकता है।

आपने अभी हाल में ढाका यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों को दीक्षान्त भाषण दिया था और उसमें आपने साम्प्रदायिकता के विरुद्ध उपदेश किया था। परन्तु मैं पूछता हूँ कि क्या इन हत्याओं की खबर आपके कानों तक नहीं पहुँची है, जो उस मुस्लिम साम्प्रदायिकता और धर्मान्धता का फल है जो आपके शासन में और आपके दरवाजे पर फल-फूल रही है। यदि आपने उसकी चर्चा सुनी है तो कृपया बतलाइयेकि सार्वजनिक शान्ति और जातीयता की एकता के लिए दिन पर दिन बढ़ते हुए इस खतरे को मिटाने के लिए आपने क्या किया है ? मैं यह कहने का साहस करूगा कि इन हत्याओं के प्रति आपकी गवर्नमेन्ट की उपेक्षा दोनों जातियों के बीच वह खाई पैदा करेगी, जिसको भरा जाना निकट भविष्य में असम्भव होगा।

आपके राज्य के आर्य्यसमाज के कार्य्यकर्त्ताओं को सख्त हिदायतें की हुई हैं कि वे स्वय कोई अवाछनीय कार्य न करें। इस सभा ने अनेक बार आपकी सरकार को लिखा और उनकी शिकायतों को दूर करने की प्रार्थना की। परन्तु मुझे यह कहते हुए बड़ा दुःख होता है कि हमारी प्रार्थनाओं, आवेदनपत्रों और डेपूटेशनों से आपके शासन की मैशनरी जरा भी टससे मस न हुई। सबसे अन्तिम ख़बर जो हमें हैदराबाद से मिली है वह यह है कि आर्य्य समाजियों को किसी न किसी स्थान पर प्रति दिन मुसलमान आततायियों की गीदड़-भभ-कियां सहन करनी पड़ती हैं। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि इस प्रकार की बातें देर

तक रह सकती हैं ? आप जैसे गम्भीर शासक ऐसी बातों को बर्दाश्त कर सकते हैं, यह आशा मुश्किल से ही की जा सकती है। इस प्रवाह को रोकने के लिए कृपया कार्य्यवाही कीजिए, जिससे फिर पछताना न पड़े। निर्दोष व्यक्तियों पर जुल्मों और अत्याचारों का केवल एक परिणाम होता है और वह यह कि शासन पर से उनका विश्वास उठ जाता है। और फिर उस विश्वास का उत्पन्न होना असाध्य होता है और साथ ही अत्याचार आन्दोलन को अवांछनीय स्रोतों में प्रवाहित कर देते हैं।

अतएव मैं आपसे विनम्र निवेदन करूंगा कि आप राज्यमें आर्य्यसमाजियों की समस्याओं पर तत्काल उचित ध्यान दीजिए और शीघ्र उनकी शिकायतों को दूर कीजिए। यह सभा अब भी आपके यत्नों में योग और अपने व्यापक नैतिक प्रभाव और शक्ति के द्वारा जो सहायता सम्भव होगी देने के लिए उद्यत है।

मुझे आशा है कि यह अपील पीड़ित आर्य्यसमाजियों के प्रति पूरा पूरा न्याय करने की आपको प्रेरणा करेगी उनके लम्बे कष्टों और परीक्षाओं की अब उपेक्षा नहीं की जा सकती है।

डा० सर गोकुलचन्द नारङ्ग का सन्देश

पिछले दिनों में हैदराबाद राज्य में मुसलमानो ने इतने अधिक अत्याचार किए हैं और इतनी अधिक हत्याएँ हुई हैं कि मुसलमानों के अपने पड़ोसी हिंदुओं के प्रति असहिष्णुता के व्यवहार की घटनाओं एव राजकर्मचारियों की उदासीनता का जनता तथा उच्च कर्मचारियो के नोटिस में लाया जाना नितान्त आवश्यक हो गया है।

ऐसा प्रतीत होता है कि हैदराबाद राज्य के हिंदुओं में जीवन नहीं है अन्यथा यह समझना कठिन है कि वे इतनी बड़ी सख्या में होते हुए किस प्रकार अन्याय और अत्याचारों को सहन कर लेते हैं। यदि वे उनके निराकरण का यत्न करना चाहें तो सबसे पहला कार्य्य यह होना चाहिए कि उन्हें उनकी दुख पूर्ण अवस्था तथा शक्ति से परिचित कराया जाय।

निर्वासन की आज्ञाएँ देहली में दी गई

अभी हाल में हमारे दो उत्साही कार्य्यकर्ताओं (आर्य्य रक्षा समिति के मन्त्री म० शिवचन्द्र जी तथा आर्य्ययुवक सघ के प्रधान प० व्यासदेव शास्त्री एम ए, एल-एल बी वकील) को निज़ाम राज्य के दण्ड विधान (पीनलकोट) को धारा स० १६४ के अधीन

देहली में राज्य से निर्वासन की आज्ञाएँ दी गईं। ये दोनों महानुभाव हैदराबाद गए थे और इन्होंने हैदराबाद की सरकार की मुस्लिम पक्षपातिनी नीति तथा आर्य्यसमाज के प्रति राज्य की कठोरताओं को जनता के समक्ष प्रस्तुत किया था। वस्तुतः हिंदुओं और आर्य्यों के कष्टों और मुसीबतों के लिए राज्य की उपर्युक्त नीति ही ज़िम्मेवार है।

पुलिस की नादिरशाही

आर्य्यसमाज के कार्य्यों और उसके कार्यकर्ताओं पर पुलिस की निगरानी हैदराबाद राज्य में प्रतिदिन की बात हो गई है। हमें प्रायः ख़बरें मिलती रहती हैं कि आर्य्यसमाज के कार्य्यकर्ताओं से बहुधा निम्न आशय के प्रश्न पूछे जाते हैं —

१—तुम आर्य्य क्यों बने हो ?

२—यहाँ आर्य्यसमाज किसने चलाया है ?

३—यहाँ कितने आर्य्य हैं ?

४—बिना इजाज़त तुमने आर्य्यसमाज क्यों स्थापित किया है ?

५—तुमने किसकी आज्ञा से ओ३म् का झण्डा लगाया है ?

निज़ाम की जेल में तबलीग़

एक दूसरी विचित्रबात जिससे पाठकों को आश्चर्य होगा वह यह है कि निज़ाम राज्य की जेलें भी तबलीग़के प्रचारसे मुक्त नहीं हैं। १८-८-३८को जो निज़ामसाहबका जन्म दिन है। एक हिंदू क़ैदी मुसलमान बनाया गया। गुलबर्गा केस के क़ैदी लालसिंह आर्य्य ने इस पर आपत्ति की। यह आपत्ति लगभग उसकी जान पर बन आई क्योंकि १७७७ नम्बर के एक दूसरे गुलज़ार खान नामक मुसलमान क़ैदी ने उसके शरीर पर घातक आक्रमण किया इसलिए कि जेल दारोग़ा की देख-रेख में जेल में होने वाले प्रचार पर लालसिंह ने आपत्ति की थी। गुलज़ार ख़ाँ रंगे हाथों पकड़ा गया और उसके पास से २ बड़े चाकू बरामद हुए। हमें यह देखना है कि अपराधी को क्या दण्ड मिलता है।

परन्तु सवाल यह होता है कि जेलों में तबलीग़ के प्रचार की आज्ञा क्यों दी जाती है ? क्या यह बात इस बात की सूचक नहीं है कि निज़ाम सरकार हिंदुओं की संख्या को घटाने और इसकी आबादी को मुसलमान बनाने पर बुरी तरह से तुली हुई है ? सरकार की दृष्टिमें चाहे उसका धर्म्म हिंदू हो या मुसलमान हो, सब प्रजा समान होनी चाहिए और उसे दूसरी जाति के हितों के मूल्यपर किसी एक जातिके हितों का पोषण नहीं करना चाहिए।

परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि निज़ाम सरकार इस भावना से कोसों दूर है। इसके धर्म्म-विभाग का इस पर अत्यधिक प्रभाव है। इसकी आँखें सदैव मुस्लिम हितों को दृष्टि मे रखती है। हमें विदित हुआ है कि यह विभाग तबलीग़ के प्रचार की योजना और उसका सरक्षण करता है और तबलीग़ के कार्य्यों से अपने को परिचित रखने के लिए विविध सूत्रों से नियमित रिपोर्टों और विवरणों का सकलन करता है। इस पुस्तक में प्रकाशित कुछ चित्रों से इस आरोप की स्पष्टतया पुष्टि होती है।

मुस्लिम अधिकारियों की तबलीग़ के प्रचार में कैसी दिलचस्पी है, यह बात २ अमरदाद् १३४६ फ़स्ली के निम्न धर्म्म परिवर्तन सर्टिफिकेट से स्पष्ट होगी जो जिला महबूब नगर के पार्गी तालुका के धर्म्म-विभाग के तहसीलदार और नाज़म ने दिया था।

सर्टिफिकेट (प्रमाण-पत्र

"प्रमाणित किया जाता है कि गजानन्द का पुत्र मुकुन्दराव, कौम ब्राह्मण, साकिन पूना (ब्रिटिश) उम्र २५ साल पार्गी के तालुका क़ाजी मुहम्मद युसुफ़ द्वारा मुस्लिम धर्म्म में दीक्षित किया गया है और उसका नाम•मुहम्मद अली रखा गया है।"

स्कूलों में तबलीग़

न केवल जेलें वरन् स्कूल भी तबलीग़ आन्दोलन के केन्द्र बने हुए हैं। करीम नगर ज़िला के शिक्षा-विभाग के सुपरिन्टेण्डेण्ट मुश्ताक अहमद बी ए ने पर्किल-सरकिल के अध्यापकों के नाज़र को ६-६-१३४६ फ़स्ली को पत्र स० १०३।२ लिखा और उसमें यह लिखा कि अछूत पाठशाला के आधे से अधिक विद्यार्थी मुसलमान बन गए हैं इसलिए आवश्यक है कि उन्हें मज़हबी तालीम (धार्मिक शिक्षा) दी जाय। उन्हें किसी मुसलमान अध्यापक का नाम बताया जाय जो इस कार्य्य के लिए चन्द्रय्या (हिंदू अध्यापक) के स्थान पर रक्खा जाय।"

शिक्षा विभाग के सुपरिएटेएडेएट के एक दूसरे पत्रकी लिपि

विषय—नव-दीक्षित मुस्लिम विद्यार्थियों की शिक्षा का विषय जो पहले अछूत थे।

आपके तारीख़ १ अर्दी बहश्त १३४६ फ़स्ली के पत्र स० २५१ के पत्रोत्तर में निवेदन है कि इन विद्यार्थियों की धार्मिक शिक्षा के सम्बन्ध में पहले भी आपको लिखा जा चुका है। अब जब कि इन विद्यार्थियों ने इस्लाम धर्म्म अङ्गीकार कर लिया है वे आपके स्कूल में दाखिल किए जा सकते हैं और इनसे फीस भी न ली जावे।"

निज़ाम सरकार किस रीति से तबलीग़ आन्दोलन की मदद कर रही है इसका एक दूसरा उदाहरण निम्न नोटिस सं० १२०।४२ तिथि २६ अबन १३४४ फ़स्ली से स्पष्ट है जो मुहम्मद् कुतुबउद्दीन काज़ी ने अहमद् नगर के वकैय्या को दिया था।

नोटिस

"तुम्हें (वकैय्या) सूचित किया जाता है कि तुम्हारी पत्नी गंवो ने १४ अबन फ़स्ली को इस्लाम ग्रहण कर लिया है और उसका मुसलमानी नाम 'रहीमाबी' रखा गया है। तुम्हें भी कई मर्तबा इस्लाम की दावत दी गई है परन्तु तुम चुप हो। इसलिए तुम्हें मालूम होना चाहिये कि यदि तुम खुद एक हफ्ते के अन्दर मेरे दफ़्तर में आ जावोगे और खुशी से इस्लाम ग्रहण कर लोगे तो तुम्हारी नई मुसलिम बी बी से बतौर ख़ाविन्द के तुम्हारे तअल्लुक़ात क़ायम रखे जा सकते हैं वरना तुम्हारा उस से सम्बन्ध टूट जायगा और वह किसी मुसलमान के साथ ब्याह दी जायगी और तुम्हारा कोई उज्र नहीं सुना जायगा"।

हमारा अन्तिम निश्चय

निज़ाम सरकार के धर्म्म विभाग द्वारा सञ्चालित तबलीग़ आन्दोलन को आर्य्य समाज सहन न कर सका और न वह सहन करही सकता था। अब पाठक हमारा दृष्टिकोण भली भांति समझ गए होंगे। हमारी कष्ट कथा बड़ी लम्बी है और उसका वर्णन करना कठिन है। सब से ताज़ी सूचना यह है कि हैदराबाद के दंगे के मुक़दमे में १४ हिन्दू फांसे गए थे और जिनकी पैरवी के लिए श्रीयुत नरीमैन और भूलाभाई देसाई जैसे व्यक्तियों की सेवाएँ प्राप्तकी गई थीं परन्तु उन के मार्ग में उपस्थित की गई कुछ बाधाओं के कारण वे अभियुक्तों की पैरवी नहीं कर सके थे। बस मुक़दमे का फ़ैसला सुना दिया गया है। तमाम अभियुक्तों को २० २० वर्ष के कारावास की कठोर सज़ाएँ दी गई हैं ज्यूरी में ६ मुसलमान और ३ हिन्दु थे। इन तीनों हिन्दुओं ने सर्व सम्मति से अभियुक्तों को 'निर्दोष' बतलाया। हमारे अख़बारों का मुँह बन्द कर दिया गया है, हमारे प्रचारकों को जेल में ठूंस दिया गया है। अथवा निर्वासित कर दिया गया है। उन के भाषणों पर रोक लगा दी गई है और 'अवांछनीय' कह कर उन्हें राज्य की सीमा में घुसने की मनाही करदी गई है। इसलिए हमने अपनी ६-१०-३८ की अन्तरङ्ग सभा में अपने लोगों को तय्यार होने और वीरता के साथ सभ्य जङ्गलीपन का मुक़ाबला करने के लिए जो हम हैदराबाद में देख रहे हैं फ़ैसला कर दिया है। महात्मा नारायण स्वामी जो पहिले डिक्टेटर (अग्रणी) नियत किए गए हैं



धर्म्मवीर वेदप्रकाश

धर्मान्ध मुसलमानों ने गन्जोटी में इनका वध किया।



धर्म्मवीर वेदप्रकाश की श्मशान यात्रा का जलूस।



इम बालक की चोटी मुसलमानो ने काट दी ।



एक गरीब तिलग स्त्री अपने दो छोटे बच्चो के साथ । यह इस्लाम ग्रहण करने के लिए मजबूर की गई और निषेध करने पर इसके साथ बडा निर्दयता पूर्ण व्यवहार किया गया ।

और उन की आज्ञा अन्तिम होगी। शोलापुर में सार्वदेशिक आर्य्य महा सम्मेलन की योजना का कार्य्य उन्हें सौंपा गया है इसके पश्चात अपनी शिकायतों के हल के लिए जिन के प्रति निज़ाम की सरकार आज तक कठोर और उदासीन रही है सामूहिक सत्याग्रह के लिए कार्य्यवाही की जायगी। वे धन्य हैं जो पीड़ित और दलित मनुष्यों की सहायता करते हैं और दोहन और शोषण तथा आततायियों के विरुद्ध खड़े होते हैं।

हैदराबाद में आर्य्यसमाज की मुसीबतें एक दृष्टि में

इस राज्य के कुछेक अदूरदर्शी और ठीक बातों से अनभिज्ञ राजकर्मचारियों ने समझ रक्खा है कि आर्य्यसमाज की संस्था, जो उनके यहां काम कर रही है, एक सचित्र-सी-रियासत के बाह्य जगत से असम्बन्धित संस्था है और सुगमता से कुचली जा सकती है। उन्होंने अपने इसी अज्ञान और क्षुद्र विचारों से वहां के आर्य्यों पर, तरह २ के अत्याचार कर रक्खे हैं। उनमें से कुछेक का विवरण इस प्रकार है—

(१) पांच नवयुवक और उत्साही आर्य्य मुसलमानों द्वारा वध किये जा चुके हैं।

(२) ४७० आर्य्य इस समय रियासत की जेलों में हैं।

(३) ७०० के लगभग आर्य्यों पर तरह २ के मुकदमात चल रहे हैं।

(४) आर्य्यसमाज का कोई पत्र रियासत में नहीं निकल सकता। जो एक निकलता था वह बन्द कर दिया गया।

(५) आर्य्यसमाज के मन्दिरों में कोई उपदेशक बिना आज्ञा प्राप्त किये उपदेश नहीं कर सकता और माँगने पर इजाजत प्राय नहीं मिलती।

(६) कोई आर्य्य अपने निजी मकान में भी, आर्य्यसमाज का काम नहीं कर सकता, यदि करे तो उस पर अभियोग चलाए जाते हैं।

(७) वहां [राज्य] की पुलिस की मनोवृत्ति समझने के लिए एक घटना का उल्लेख कर देना काफी है। एक बार हमने स्वयं अपने कानों से सुना कि पुलिस के सिपाहियों की एक पार्टी जो वर्दी में थी, खुले खजाने सड़कों पर यह गाती हुई जा रही थी कि वह दुनियां में इस्लाम का प्रचार करेगी—स्पष्ट है कि वहां की पुलिस जनता की सेवक नहीं, अपितु इस्लाम की प्रचारक है।

(८) जेलखानोंमें, रियासत के मुसलमान जेल कर्मचारी हिन्दू कैदियों को मुसलमान बनाया करते हैं।

इन उपर्युक्त पंक्तियों में, असंख्य अत्याचारों में से केवल कुछेक का, नमूने के तौर पर उल्लेख किया गया है। इनसे प्रगट है कि वहां आम तौर से हिन्दुओं और विशेष कर आर्य्यों की अवस्था दयनीय है। अब प्रश्न यह है कि रियासत से बाहर के आर्य्यसमाजों और आर्य्यों का इस सम्बन्ध में कर्त्तव्य क्या है? क्या यही कि देखते रहें और कुछ न करें अथवा इससे कुछ अधिक। यदि अधिक तो पूरा करने का समय कब आवेगा?

परिशिष्ट १

[अ]

न्यूज़ एजेन्सियां जो आर्य्यसमाज के विरुद्ध चलाए हुए निज़ाम सरकार के प्रोपेगेंडे को सहायता देती हैं।

(१) दक्षिण न्यूज़ सर्विस
(२) आज़म ,, ,,
(३) एसोशियेटेड प्रेस आफ़ इण्डिया लिमिटेड।

[ब]

मुस्लिम समाचार पत्र जो राज्य के हिंदुओं और मुसलमानों के खिलाफ़ ज़हर उगलते हैं।

(१) रहबरी दक्न	दैनिक
(२) सुबेह ,,	,,
(३) सहीफा	,,
(४) वक्त	,,
(५) रफ़ीक	साप्ताहिक
(६) वाज़ (धर्म विभाग का मुख पत्र)	मासिक

[स]

हिन्दुओं व आर्य्यों का साहित्य जो राज्य में ज़ब्त किया गया है।

(१) दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह
(२) कब्र के फरिश्ते प० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय कृत
(३) औरतों की लूट ,,
(४) हिन्दू धर्म का नाश

(५) इस्लाम से प्रश्न

(६) कुरान में तजल्लिए वेद   प० नरेन्द्रदेव कृत

(७) हुज्जतुल इस्लाम   प० लेखराम कृत

(८) जवाहर जवेद खुदा, रूह और मादा की कयामत   प० चमूपति कृत

(९) रंगीला गबरा   छबीलाल गौड़ कृत

(१०) नल दमयन्ती

(११) दुर्गादास

(१२) स्वामी श्रद्धानन्द

(१३) देश का दुखड़ा

(१४) हिन्दू जागो

(१५) महाराणा प्रताप

(१६) शिवाजी का पवारा

(१७) ग्रामोफोन रिकार्ड (सिंहगढ़ का पवारा)

[श]

मुस्लिम साहित्य जो हिन्दुओं और आर्यों के विरुद्ध जहर से परिपूर्ण है परन्तु जब्त नहीं किया गया है केवल थोड़े से नाम दिये जाते हे।

(१) खून के आंसू

(२) बुत शकीन

(३) कुफ्र तोड़

(४) मुरकी कासिम हसन निज़ामी कृत

(५) दाइए इस्लाम

(६) सरवरे आलम   सदीक दीनदार कृत

[य]

निज़ाम राज्य में हिन्दू संस्कृति का किस प्रकार विनाश किया जा रहा है।

निम्न स्थानो के हिन्दू नामों के स्थान में मुस्लिम नाम रक्खे गये हैं —

हिन्दू नाम	मुस्लिम नाम
(१) चितगुपा	मोहनाबाद

(२) मसेली	जहीराबाद
(३) तुबल गुन्डी	करीमाबाद
(४) बीदर	महमूदाबाद
(५) मुरग	कमाल नगर
(६) अम्बा गोगई	मोमिना बाद
(७) भालूर	फतेहाबाद
(८) धारशिव	उस्मानाबाद
(९) इन्दुर	निज़ामाबाद
(१०) उज्जेर	हिसम्बाबाद
(११) चरक पल्ली	चिरगपल्ली
(१२) खरका	मुकरमाबाद
(१३) गगवारम	विकराबाद
(१४) तन्जूर	बशीराबाद
(१५) वरौना	हिदायतनगर
(१६) माती गढ़ी	हिसामनगर
(१७) मोघबलक की वडी	मुशीराबाद

परिशिष्ट २

[अ]

निज़ाम राज्य से बाहर के निज़ाम सरकार के पञ्चवर्षीय दान

लन्दन कब्रिस्तान	पौंड	१००००
नजद रिलीफ	रु०	६००००
फिलस्तीन	,,	१००००
बलूचिस्तान क्वेटा	,,	१०००
लन्दन की मसजिद	,,	५००००
मदीना के लोगों को	,,	१२०
लन्दन हस्पताल	पौंड	१०००
मीना ,,	पौंड	३००
देहली तिब्बी हस्पताल	रु०	१००००
मुस्लिम विधवा फन्ड देहली	,,	५०००
देहली निज़ामुद्दीन दरगाह	,,	५०००
वेडोविस	,,	२५०
फिलस्तीन के मुसलमानों को	पौंड	५३०
,, की मस्जिद की मरम्मत के लिए	रु०	५०००
अजमेर शरीफ	,,	२०००
शफी अहमद	पौंड	५०
,, ,,	,,	१००
कुरान का अँग्रेजी अनुवाद	रु०	७८०४
औलिया दरगाह	,,	१५०००
हाजी अब्दुल रहीम	,,	५००
टर्की के भूतपूर्व सुलतान को	,,	५०००

हाजी शेख इस्माइल	,,	५००
विश्वभारती की अरबी की गद्दी के लिए	,,	१०००००

[ब]

स्थानीय संस्थाओं को पंच वर्षीय दान

	रु०
अब्दुल अली मुंसिफ पारगी	१३६२
सरदार असमतुल्ला	४८१२
,, ,,	११००
गुलबर्गा मुस्लिम अनाथालय	३६६३६
के लेखक को	६००
नवाब हैदरजंग	२०००
उस्मानिया यूनिवर्सिटी का समाचार पत्र	११३४
संपादक इस्लामिया कल्चर	२५०
सूबा दक्षिण अखबार	१४१०
सहीफा अखबार	२५००
दरगाह औरंगाबाद	१२००
शाहना मा इस्लाम की व्याख्या	४१०
धार्मिक पुस्तक दीनियत	१६२५
जरनल (अख़बार) मयरिसियां	२०००
प्रभानी की मस्जिद	६१००
शाहमिर्ज़ाबेग	३६००
दीनियत पुस्तकें	४३२
चुंगी विभाग के सिराजुल हुसैन को	४००
मस्जिदें	१५००

मुस्लिम अख़बारों और अन्य मुस्लिम संस्थाओं को सहायतार्थ बड़ी २ रकमें दी जाती हैं —

मुस्लिम आउटलुक लाहौर	५८३४	वार्षिक

पैसा अखबार	दान—	३३३५
अंजमन तारिके उर्दू		५००००
ख्वाजा कमालुद्दीन		२८००
मोइदुल इस्लाम		४००
इण्डियन न्यूज़ ऐंड स्टेटस		२८००

स्पष्ट है कि निजाम सरकार मुस्लिम पक्षपातिनी वृत्तियो से परिपूर्ण है और देश तथा विदेश की मुस्लिम सस्थाओ पर लाखो रुपये खर्च कर रही है। हिन्दू किसानो और कर दाताओ की गाढ़ी कमाई इस रीति से उडाई जा रही है।

(म)

निजाम राज्य द्वारा धर्म्म सस्थाओ की सहायता का योग

	योग	मुसलमानो को	हिंदुओ को	ईसाइयो को	पारसी
वार्षिक धार्मिक सहायताऐं	२०५८२२	१८६७४२	१८००	१४२८०	×
खास धार्मिक वार्षिक सहायताऐं	२०५०४६	२००६४२	१३४४	२४६०	६००
वार्षिक जनोपकारक सहायताऐं	५३७०	५३७०	×	×	×



आगर म होली क उसव पर मुसलमाना ने पुलिस का उपस्थिति म आर्यो पर आक्रमण किया शकर राव आर अरयाराम को जिन क चहर पर पट्टी बधा ह गहरा चोट लगा था



इस यक्ति पर भी मुसलमाना ने आक्रमण किया। इस क घाव इसकी पीठ और बाजुओ पर स्पष्ट पड रहे हैं।



प० श्यामलाल वकील

जिन्ह मानक नगर के मेले पर पुलिसका उपस्थिति मे मुसलमानो ने घायल किया



बाबूप्रसाद आर्य

यह महाशय प श्यामलाल जी को बचाते हुए स्वय मुसलमानो द्वारा घायल हुए ।

परिशिष्ट ३

(१)

राज्य के आर्य्यों को समय-समय पर प्राप्त हुए आर्डरों की लिपि

तारीख २१ अर्वो बहशत १३४६ फस्ली

पुलिस पटेल की ओर से

आर्य्यसमाज मेले गाव के मन्त्री को

'तुम आर्य्यसमाज का प्रचार करने के लिए काल मुगली आए हो, परन्तु १३५५ हिजरी की मुहर्रम मास की आज ११ तारीख को ज़ियारत होगी। अतएव हुक्म दिया जाता है कि तुम शहर में आज कोई लेक्चर मत देना।"

(२)

तारीख २४ अमूर १३४२ फस्ली

पुलिस सब इन्स्पैक्टर की ओर से

श्रीयुत रामचन्द्रराव आर्य, राजेश्वर को

आज दीवाली के त्यौहार पर हल्लीखेड़ से बन्शीलाल तुम्हारे पास आए हैं और मालूम हुआ है कि वे आपके घर पर भाषण देंगे। अत तुम्हें हुक्म दिया जाता है कि तुम उस व्याख्यान को रोक दो नहीं तो तुम्हारे विरुद्ध कार्यवाही की जायगी।

(३)

नौकरी से पृथक् करना

वारगल तालुका के मि० रज़ाअली खा तहसीलदार ग्राम कुगोल मुकद्दम पटवारी के नाम २२ आर्दी बहशत १३४६ फ़स्ली के पत्र स० १०० का एक अवतरण "मुझे एक पत्र स० २५ तिथि १२ आर्दी बहशत १३४६ फसली का मिला जिसमें लिखा है कि पुलिस ने नरसिंह रेडी के विरुद्ध शिकायत की है कि वह प० बलदेव जी आर्य को बुलाकर हिन्दू और मुसलमानों में वैमनस्य फैला रहा है। पुलिस की इस शिकायत के आधार पर वह(नरसिंह रेड्डी) नौकरी से बरखास्त कर दिया गया है।

(४)

प्राइवेट स्कूलों के खोलने की आज्ञा नहीं है

सब इन्सपैक्टर पुलिस हलीकेड़ के पत्र सं० ११२६ तिथि २१ अमरदाद १३४२ फसली की लिपि—

पं० बंसीलाल वकील हलीकेड़ की सेवा में —

"सदर कोतवाली के नाज़िर ने सूचना दी है कि तुम गुलबर्गा प्रान्त के स्कूलों के इन्सपैक्टर की आज्ञा के बिना प्राइवेट स्कूल नहीं खोल सकते। यदि तुम इस आज्ञा का उल्लंघन करोगे तो १६४ धारा के अनुसार तुम्हारे विरुद्ध कार्यवाही की जायगी। एक सप्ताह के भीतर भीतर आज्ञा प्राप्त करो, अथवा स्कूल बन्द करदो।"

(५)

परभानी ज़िले के हल्क़ा पाथिम के सब इन्सपैक्टर पुलिस के १४ फर्वरी १३४२ फ़सली के पत्र की लिपि—

मुहम्मद ख़ान नाकेदार नाका सोनी के नाम—

"मुझे अभी मालूम हुआ है कि कुछ आर्यसमाजी साखेगांव ग्राम में आये हैं अत तुम्हें हुक्म दिया जाता है कि तुम फौरन उस गांव में जाओ और पता लगा कर निम्न बातों की रिपोर्ट दो।

१—वे लोग किस दिन और किस समय वहाँ आये थे?

२—वे लोग किन २ से मिले?

३—उनके आने का क्या उद्देश्य था?

४—उनके नाम वगैरह क्या थे?

५—उनका नेता कौन था?

६—उन्हें किसने बुलाया था?

७—वह कितने दिन तक वहां ठहरेंगे?

८—क्या उनके पास कोई सरकारी आज्ञा पत्र है?

९—उनके आने की सूचना पुलिस पटेल ने मुझे क्यों न दी? उसे फौरन मेरे पास भेजो।

१०—यदि वे संख्या में बहुत हैं तो तुम्हें गांव में ठहर कर देखना चाहिये, कि कानून के

खिलाफ कोई बात न हो, और यदि किसी उत्पात की आशंका हो तो मुझे सूचित करना।"

(६)

दशहरा के जलूस की आज्ञा न दी गई

इस्लीलेह के म० माणिकराव तथा अन्य पुरुषों ने दशहरा के जलूस की आज्ञा के लिए प्रार्थना पत्र भेजा। परन्तु उनकी प्रार्थना केवल इस बहानेपर रद्द करदी गई, कि जलूस एक नई चीज था। इस्लीलेह के तहसीलदार सैयद इब्राहीम अहमद रिज़वी B A, LL.B, के बिना तारीख के उत्तर स० २३५१ की लिपि नीचे दी जाती है—

"उनके प्रार्थना पत्र ता० २३ अबन १३४२ फस्ली के उत्तर में उन्हें सूचित किया जाता है कि धारा स० ७०० के अनुसार आज्ञा मांगना अत्यन्त जरूरी है। परन्तु चूँकि यह एक नया धार्मिक जलूस है अत: तहसील से आज्ञा नहीं मिल सकती।"

(७)

हवन कुण्ड पर बन्दिश

हवन कुण्ड से सम्बन्धित निजाम सरकार का ता० २४ इस्फ़न्दार १३४० फ़सली का सर्क्यूलर—

१—धार्मिक स्थानों के सम्बन्ध में जो आज्ञाएँ प्रचलित हैं वे समस्त धर्मों और जातियों के सब धर्म स्थानों पर लागू हैं।

२—हवन कुण्ड धर्म स्थानों की परिभाषा में सम्मिलित हैं।

३—अभी सूचना मिली है कि उस्मानाबाद ज़िले के लातूर और तुलजापुर स्थानों में बिना आज्ञा के हवन कुण्ड प्रस्तुत हुए हैं। स्थानीय अधिकारियों को धर्म स्थानों की स्थापना सम्बन्धी नियमों के अनुसार अपनी रिपोर्ट स्थापित करने के लिये कहना चाहिए उन्हें यह भी सूचित करें कि वे यह लिखें कि दूसरे धर्म वालों के धर्म स्थान हवन कुण्डके पास है या नहीं यदि पास हों तो इससे किसी प्रकार की आशंका तो नहीं है।

(८)

साप्ताहिक सत्संगों में हस्तक्षेप

नायब कोतवाल सी०आई०डी० हैदराबाद के अर्द्ध सरकारी पत्र तिथि ११ खुर-

दाद १३४७ की लिपि

मन्त्री आर्य्यसमाज सुल्तान बाजार

आप अपने समाज में आज साप्ताहिक हवन और प्रार्थनाएँ करने वाले हैं। वर्तमान परिस्थितियों में यह उचित नहीं है कि बाहर वाले सभा में भाषण दें। प० देवेन्द्रनाथ एक बाहरी व्यक्ति हैं, उन्हें लैक्चर की आज्ञा न दी जाय। यदि आपने ऐसा न किया तो प० जी के कार्य्य के लिए आपको उत्तरदाता ठहराया जायगा।"

नोट—जब मन्त्री समाज को यह आर्डर दिया गया था तब साप्ताहिक सत्सगों में भाषण न देने की बाहर वालों के विरुद्ध कोई सरकारी आज्ञा न थी।

(६)

व्यायाम शाला पर बन्दिश

बीदर जिले के फर्स्ट ताल्लुकेदार की ओर से

बीदर के सुपरिन्टेन्डेन्ट के नाम

"तुम्हें सूचित किया जाता है कि कसर सिरसी में व्यायामशाला की स्थापना के लिए आर्य्यसमाज के मन्त्री भीमशङ्कर को जो आज्ञा दी गई है वह राज्य की आज्ञाओं से रद्द करदी गई है। पुलिस सब इन्सपैक्टरको हुक्म दिया जाता है कि यह निगरानी रक्खे।"

नोट—इसी प्रकार की आज्ञा मुचौख बुजुर्ग के मन्त्री आ० स० तथा नलगीरके म० गगाराम आर्य्य तथा भगवान राव आर्य्य को दी गई थीं।

(१०)

नगर कीर्तन की आज्ञा नहीं दी गई

सुल्तान बाजार हैदराबाद के मन्त्री ने आर्य्य समाज के उत्सव के अवसर पर नगर कीर्तन की आज्ञाके लिए हैदराबाद नगरके पुलिस कमिश्नर को लिखा परन्तु पुलिस कमिश्नर ने अपने २१ आर्दी बहेशत के पत्रसे, ४१३३में आज्ञा देने से इस बहाने पर निषेध कर दिया कि नगर कीर्तन एक नई चीज़ थी।"

(११)

हिन्दुओं को हिन्दू महा सभा के अधिवेशन में जाने की आज्ञा नहीं

कलक्टर का सब डिवीज़नल आफ़िसर के नाम गुप्त पत्र (२० ८ ३४) संख्या ७४, १४ मेहर फ़सली (१३४३)।

"निज़ाम साहब की प्रजा के कुछ लोगों ने हिन्दू महा सभा के अधिवेशन में भाग लिया है। राज्य की आज्ञाओं के अनुसार उन्हें सूचित किया जाना चाहिए कि यदि कोई व्यक्ति इस प्रकारकी राजनैतिक मीटिंगोंमें जायगा तो उसके साथ कड़ा सलूक किया जायगा। हल्लीखेड़ के श्यामलाल वकील तथा उदगीर के बशीलाल वकील ने जिन्होंने उपर्युक्त अधिवेशन में भाग लिया है आपकी तहसील के हैं और उनके साथ लग भग ४० मरहटे भी अधिवेशन में गए थे। उन्हें सर्कारी हुक्म की सूचना देकर उनके हस्ताक्षर प्राप्त किए जायँ।"

(१२)

विवाह पर बन्दिश

हुमनाबाद के सब इन्सपेक्टर पुलिस की ओर से मानक नगर के मन्त्री के नाम "मुझे मकेदर पुलिस पटेल से खबर मिली है कि आप के सर्किल में सरकारी आज्ञाओं और सरक्यूलरों के विरुद्ध इशा शरीफ (मुहर्रम) के महीने में एक विवाह हुआ है। यदि यह सत्य है तो आपने इसे क्यों नहीं रोका? उस का नाम और पता मालूम करो जिससे उसके विरुद्ध कार्य्यवाही की जा सके।"

(१३)

अखिल-भारतीय आर्य्य कांग्रेस का अधिवेशन रोका गया

आर्य्य प्रतिनिधि सभा निज़ाम राज्य के मन्त्री प० श्याम लाल वकील ने आर्य्य महा सम्मेलन के अधिवेशन की आज्ञा के लिए प्रार्थना की और हैदराबाद के पुलिस कमिश्नर को आश्वासन दिया कि उसमें किसी राजनैतिक विषय पर विचार न होगा अपितु उसके अधिवेशनों में विशुद्ध धार्मिक विषयों पर चर्चा होगी। परन्तु उत्तर निम्न प्रकार था —

"आपके २८ अबन १३४३ फ़स्ली के प्रार्थना पत्र के उत्तर में सूचित किया जाता है कि आर्य्य महा सम्मेलन करने की आज्ञा नहीं स्वीकार की जा सकती है और आप को लिखा जाता है कि आप सरकारी आज्ञाओं का पालन करें।"

इसके बाद निज़ाम राज्य के आर्य्यों की कांफ्रेन्स करने के लिए प्रार्थना की गई और निषेध का कारण बतलाए बिना उसके लिए भी निषेध कर दिया गया।

(१४)

वक्ताओं के नामों की मांग

आर्य्य समाज सुल्तान बाज़ार हैदराबाद के नाम सिटी पुलिस कमिश्नर नवाब रहमत यारजंग बहादुर के १८ अजर १३४८ फ़स्ली के पत्र से- १८७ की लिपि।

"इस पत्र के द्वारा आपको सूचित किया जाता है कि दयानन्द उत्सव मनाने के लिए पहले आपको वक्ताओं के नाम पेश करके उत्सव करने की आज्ञा प्राप्त करनी चाहिए।"

इस आज्ञा की प्रति सुल्तान बाज़ार के सदर अमीन साहब को भेजी गई कि वे देखें कि इन आज्ञाओं का पालन किया गया है।

(१५)

हवन कुण्ड पर बन्दिश

नगर सोगा के म० रघुनाथ प्रसाद तथा घनश्याम प्रसाद आर्य्य के नाम सब इन्स-पेक्टर पुलिस हल्क़ा औसा के १२ अमरदाद १३४६ फ़स्ली के आर्डर की लिपि—

'तुम्हें इस आर्डर के द्वारा सूचित किया जाता है कि तुम आर्य्य समाज की ओर से कानूनन हवन कुण्ड नहीं स्थापित कर सकते हो अगर तुम ऐसा करोगे तो तुम्हारे ख़िलाफ़ कानूनी कार्य्यवाही की जायगी।'

(१६)

हमारे कार्य्यकर्त्ताओं से व्यर्थ के प्रश्न किए गए।

प० श्यामलाल वकील ज़िला उदगीर से निलंगा ताल्लुका अन्तर्गत कासर सिरसी के सब इन्सपेक्टर पुलिस सय्यद मुहम्मद अहमद ने पांच आर्दी बेहश्त १३४२ फ़स्ली को निम्न प्रश्नों के उत्तर मांगे—

१— तुमने अपना उत्सव किस की आज्ञा से मनाया है?

२— क्या तुम्हारे पास कोई आज्ञा-पत्र है? यदि है तो उसकी लिपि भेजें।

३— तुम्हारे साथ वे दो लड़के कौन थे? उन के नाम और पूरे पते हमारे पास भेजो।

४— यदि उत्सव के लिए तुमने आज्ञा प्राप्त की थी तो लिखो किससे प्राप्त की थी।

बेकार और परेशान करने वाली तहकीकातें

मुहम्मद ख्वाजा मोइनउद्दीन सब इन्सपेक्टर पुलिस ने २५ फ़ारवर्दी फ़स्ली को आर्य्य समाज निज़ामा के मन्त्री श्रीयुत रामराव वकील से निम्न प्रश्नों के उत्तर मांगे—

१— तुम किस तारीख़ को आर्य्य समाज में प्रविष्ट हुए थे ?

२— तुमने सनातन धर्म कब छोड़ा ?

३— तुम्हें आर्यसमाज का मन्त्री किसने बनाया ?

४— तुम्हारे बतौर मन्त्री के क्या क्या कर्त्तव्य हैं ?

५— मन्त्री शब्द का क्या अर्थ है ? और तुम इसकी क्या परिभाषा करते हो ?

६— निज़ामा आर्यसमाज में जो तुम लैक्चर देते हो क्या उसके लिए तुमने आज्ञा प्राप्त की है ? यदि हां तो उसकी कापी भेजो, यदि नहीं तो क्यों नहीं ?

७— अब तक तुमने कितने और किस किस विषय पर व्याख्यान दिए हैं ? इन भाषणों को लिख कर दो और भविष्य में जब कभी लैक्चर दो तो उसकी कापी दफ़्तर में भेजो ।

परिशिष्ट ४

कतिपय अभियोग जिन में हैदराबाद अधिकारियों द्वारा निरपराध आर्यसमाजी फँसाये गये थे।

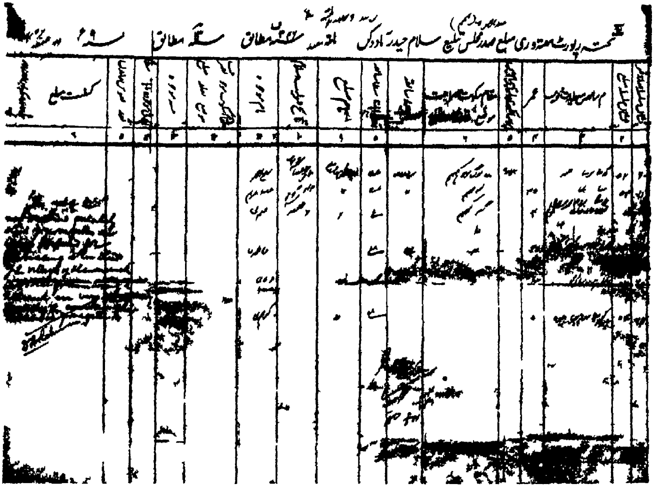
१ अम्बुलागा— ८-६-४७ को इसनख़ाँ नामक एक मुसलमान ने सत्यनप्पा को मारने के लिए तलवार से हमला किया, और म० सत्यनप्पा घायल हो कर मर गये। पीड़ितों को सान्त्वना देने के बजाय पुलिस ने धारा १०४ लगा कर २८ आदमियो का चालान किया। अभियोग लगभग १८ मास तक चलता रहा।

२ शिराधोन— श्रीयुत भगवन्त राव पटेल और गोविन्द राव पटवारी इस अपराध पर नौकरी से सस्पैण्ड किए गये कि उन्होंने आर्यसमाज क़लम के उत्सव में भाग लिया था।

३ कहोंली—दो मुसलमान वैदिक धर्म में दीक्षित हुए और उन का नाम राम और लक्ष्मण रक्खा गया था। पुलिस ने इस झूठे अपराध पर आर्य समाजियों पर अभियोग चलाया कि उन्होंने इन दोनों आदमियों को अपने अनुचित अधिकार में रक्खा था। फिर भी अदालत ने आर्य समाजियों को बरी कर दिया। पुलिस ने ख़बर देने वाले के विरुद्ध जिसने जान बूझ कर गलत सूचना दी थी कोई कार्यवाही नहीं की। विपरीत इस के राम और लक्ष्मण को गिरफ़्तार करके कल्याणी ले जाया गया, और उन्हें इस्लाम में फिर से वापिस करने के लिए बहुत मारा पीटा गया। फिर भी इन घृणित यत्नों में पुलिस बुरी तरह असफल रही। चूंकि दोनो वीर अपने धर्म पर दृढ थे।

४ कल्याणी—पुलिस ने आर्यसमाज के मन्त्री को पीटा। मन्त्री जी को कुछ मास तक अनावश्यक कष्ट देने के अनन्तर बिना कोई कारण बतलाए केस वापिस ले लिया गया।

५ अम्बुलगाः—२६४ दफ़ा मे ६ आर्यसमाजियों के विरुद्ध एक फौजदारी का मुकद्दमा चलाया गया है।



हैदराबाद राज्य में तबलीग का कार्य ।

इस प्रकार की साप्ताहिक रिपोर्ट तय्यार की जाती है और तबलीग के लिये राज्य की ओर से कई प्रकार के प्रलोभन दिए जाते हैं ।

तबलीग के पक्ष मे सदीक दीनदार का प्रोपैगैंडा



सारा भारतवर्ष शीघ्र ही मुसलमान होने जा रहा है ।

६. अम्बूरः—कुछ मुसलमानों ने आर्यसमाजियों को सताया और शिकायत करने पर उन में से १५ पीड़ित आर्यसमाजियों का १०४ धारा में चालान कर दिया।

७. कुर्होली:—पुलिस ने १५ व्यक्तियों पर केस चलाया, परन्तु सबूत न दे सकने के कारण केस वापिस ले लिया गया।

८ आर्य प्रचारक प० गणपतलाल जी पर १०४ धारा में एक झूठा केस चलाया गया। विद्वान् प० ने ऐसे स्थान पर जहाँ न्याय की कोई आशा न थी सफाई पेश करने के स्थान में ६ मास के लिए जेल में जाना पसन्द किया।

९. नन्दुर्गः—१०४ धारा में २० हिन्दू तथा आर्यों का चालान किया गया। इन में ७० साल के वृद्ध और १२ वर्ष के बालक भी सम्मिलित हैं।

१०. बेलारः—१०४ धारा में चिटगोपा की अदालत में ५५ आर्य और हिन्दुओं पर एक केस चलाया गया है।

११ औरद शाहजहांनीः—१०४ धारा में १६ आदमी गिरफ़्तार किए गये हैं, उन का केस चल रहा है।

१२ उजनी और नन्दुर्ग.—दफ़ा १४५ और १४६ में उजनी में १५ तथा नन्दुर्ग में ११ हिन्दुओं व आर्यों पर केस चल रहा है।

१३. तौसी— दफ़ा २३६ में ११ हिन्दुओं व आर्यों को गिरफ़्तार किया गया है।

१४ इस ही ग्राम में रामानामक हिन्दू की हत्या हुई थी, इस मुकद्दमे में भी ६ हिन्दू आर्यों को फांसा गया है और रामा के पुत्र पर क़त्ल का जुर्म लगाया गया है।

१५. अकोलगा— महादेव की हत्या हुई है और अभी तक हत्यारे को दण्ड देने की कोई कार्यवाही नहीं की गई है।

१६. वेदप्रकाश का क़त्ल हुआ। अपराधी साफ़ बच गया। परन्तु आर्य हिन्दुओं का महिनों तक रिमाण्ड ले २ कर तग किया जाता रहा।

१७. गुलबर्गा— ४ आर्य १०, ४ और २ वर्ष की क़ैद में पड़े हैं।

१८. नूलेगांव— नूलेगांव केस में ४ आर्य समाजियों को अपराधियों की सूची में सम्मिलित किया गया है।

१६. श्री बलदेव जी, शंकर रेड्डी और देवी लाला जी पर १०७ धारा में मुकदमा चलाया गया था, सफाई देने के बजाय उन्होंने जेल में जाना पसन्द किया।

२० मुखेड़— चौ० श्रीरामजी जेल भेज दिए गए-चूँकि उन्होंने हवन कुण्ड स्थापित करने का साहस किया था।

२१ उदगीर—बिना आज्ञा के दशहरा मनाने के अपराध में १६ आदमी जेल भेज दिये गये और ६० पर अभी केस चल रहा है। समस्त हिन्दू ससार में दशहरा मनाया जाता है।

२२ मूरम— बिना अपराध के या वारण्ट के १३ आर्य्य समाजी गिरफ़्तार किए गये और बिना किसी मुकदमें के उन्हें जेल भेज दिया गया। मुक़दमें में हाज़िर होने के पूर्व वे छोड़ भी दिए गये।

२३. औसे दफ़ा १२३ और २६३ में ८ आर्य्य समाजियों का चालान हुआ। अन्य कु आर्य्य समाजियों पर १०४ दफ़ा में मुकदमा चला।

२४ धारूर— इस जगह के कई आर्य्यसमाजी जेल में सड़ रहे हैं

२५ मान्दी— दफ़ा १०४ में ४७ आदमियों पर अभियोग चलाया गया है।

२६ तुलजापुर— दफ़ा १०४ में २४ आर्यों का चालान किया गया।

२७ साकोल— २० आर्य्यों पर इस अपराध में मुकदमा चलाया गया है कि उन्होंने मस्जिद के सामने बाजा बजाया था।

२८ जैनियों के किसी जलूस के सिलसिले में १२ आर्य्यों पर केस चलाया गया।

२९ लखनगाँव मे दफ़ा १०४ में ४ आर्य्य समाजियों पर अभियोग चलाया गया।

३०. गंजोटी— दफ़ा १०४ में २० आर्य्यों का और दफ़ा १२३ में ४ आर्य्यों का चालान किया गया है।

३१. निज़ामाबाद में ६ आर्य्यों पर केस चलाया गया।

३२ लातूर— दफ़ा १०४ में १६ आर्य्यों पर मुकदमा चलाया गया है और ४ बाजा बजाने के अपराध में जेल भेज दिए गए हैं।

३३ साकुर— कई निर्दोष आर्यों पर मुकदमा चला कर उन्हें जेल भेज दिया गया है।

३४ टाका— दफ़ा १०४ में ६ आर्य्यों का चालान किया गया है।

३५. तेर— दफ़ा १०४ में ११ आर्य्यों का चालान किया गया है।

३६ शबैल— १०४ दफ़ा में ११ आर्यों का चालान किया गया है।

३७ हैद्राबाद्—राजधानी में एक क़त्ल के मामले में लगभग १४ हिन्दुओं व आर्यों को फाँसा गया था और उन सबको ६ मुसलमानों व ३ हिन्दुओं की ज्यूरी ने प्रत्येक को २० २० वर्ष की सजा दी है। यद्यपि ज्यूरी के हिन्दू सदस्यों ने एक स्वर से अपराधियों को निर्दोष बतलाया था। और भी असंख्य उदाहरण इस प्रकार के हैं जिनमें इस स्वेच्छाचारी राज्य में धर्मान्धता अपने नग्न रूप में नाच रही है।

भाग्यनगर वा हैदराबाद

श्री० पं० नरदेव जी शास्त्री, वेदतीर्थ ।

हैदराबाद दक्षिण का दूसरा नाम संस्कृत में भाग्य नगर है । निज़ाम हैदराबाद के वर्त्तमान दीवान राजा किशन प्रसाद के पूर्वज चन्दूलाल बड़े दानी थे । वे भी ई.बाब थे । उनके दान की बड़ी प्रसिद्ध हो गई थी । कोई भी मगता उनसे बिना मुराद पूरी किये नहीं लौटना था । उन को इतनी प्रसिद्धि हो गई थी कि हैदराबाद का नाम ही पड़ गया था कि चन्दूलाल का हैदराबाद"

वर्त्तमान निज़ाम के पिता आला हज़रत नवाब महबूब अली भी बड़े दानी मानी और प्रजा वत्सल शासक थे । उनके शासन काल में हिन्दुओं को यह कभी भान नहीं होता था कि मुसलमानों का राज्य है ।

दक्षिण में निज़ाम राज्य को 'मोगलाई राज्य' कहा जाता है । वहा के पूर्व नवाब महबूब अली की दयालुता का परिचय लोगों को तब मिला था जब वहां मूला नदी की बाढ आई थी, और सारा हैदराबाद उस बाढ में डूब गया था । निःसहाय प्रजा के लिए निज़ाम साहेब ने अपने महल तक खाली कर दिये थे । अबद.ने वस्त्र की भी प्रजा को भारी सहायता पहुँचाई थी । उनके समय में बड़े ओहदों पर भी हिन्दू ही अधिकारी थे । हमारे एक सबन्धी श्री स्वामीराव जी किसी समय हैदराबाद राज्य के सूबे के सूबेदार थे । कई जिलों में ताल्लुकेदार (कलैक्टर) हिन्दू थे निज़ाम राज्य में हिन्दू मुसलमान सब भाई भाई के समान रहते थे ।

बहुत कम लोग यह जानते होंगे कि वर्त्तमान निज़ाम नवाब श्री उस्मान अली की अपने पिता भूतपूर्व निज़ाम से नहीं बनती थी, उस समय नवाब महबूब अली ने अपने पुत्र उस्मान अलि को नज़र बन्द करके रखा था ।

हैदराबाद में कट्टर मुसलमानी पन तब से शुरू हुई जब से अलीगढ़ कालेज से शिक्षित मुसलमानों ने हैदराबाद स्टेट में प्रवेश किया । ये शिक्षित लोग हैदराबाद में बड़े बड़े ओहदों पर तैनात किये गये । परन्तु ये सब बहुत ईमानदार थे इनके कारण हैदराबाद

में यह नीति वर्ती जाने लगी कि ओहदों पर जहां तक हो सके मुसलमानों को ही रखा जावे। इनकी कृपा का ही दूसरा फल यह हुआ कि दफ़्तरों और कचहरियों में भी उर्दू का ही चलन किया गया। सब काम उर्दू में ही होने लगा। पहले दफ़्तर के कागजात मराठी, करनाटकी, तैलगु, आदि भाषाओं में भी रखे जाते थे क्योंकि निज़ाम राज्य कई भाषाओं के बोलने वाली प्रजाओं से बसे इलाकों में बटा हुआ है।

अलीगढ़ सम्प्रदाय के अधिकारों का प्रबन्ध तो बहुत उत्तम था। उनमें राष्ट्रीय भावना की अधिकता थी। वे देश के सच्चे सेवक बनना चाहते थे प्रजा का हित राजा के हित के हित के साथ साथ उनके चित में काम करता था परन्तु ऊपर के इशारों से उनकी वहाँ अधिक पैठ न रही और एक एक करके सबको सटका दिया गया। वे लोग दक्षिण हैदराबाद में अगरेज़ों का आधिपत्य नहीं चाहते थे। इसी से इन विचारों के वहां पैर न जम सके। अस्तु। इनके स्थान पर यू० पी० से और मुसलमान शासक अधिकारी बन बन कर आ गये। अब इन्हीं शासकों का यह रंग है जो अब सारे निज़ाम राज्य में देखने को मिल रहा है। इन्हों ने राज्य मे हिन्दू मुसलिम प्रश्न को उठा कर निज़ाम राज्य में अशान्ति मचवाई है और शान्ति का नाश करा दिया है। बरार जो अंग्रेजी छत्र छाया में चला गया यह इन ही महानुभावों की कृपा का फल है।

आला हज़रत नवाब महबूब अली खां के पश्चात् जब वर्तमान निजाम श्री नवाब उस्मान अली साहेब सिंहासन पर जमे तब "भाग्य नगर" के भी भाग्य पलटे। प्रत्येक राज काज में मुसलमानी दृष्टि को तीव्र किया गया और धार्मिक स्वतन्त्रता का धीरे धीरे नाश होने लगा। हिन्दुओं का धर्म घर की चार दिवारी में खैर मनाने लगा बाहर प्रत्यक्ष रूप से सामूहिक कोई कार्य करना असम्भव हो गया,

वर्त्तमान निज़ाम ने सब से पहले राज्य भर में दौरा लगाया और प्रजा से भेंट के नाम पर लाखों बटोरे, कट्टरता से उत्पन्न होने वाले अत्याचार और फिज़ूल खर्च होने भी आरम्भ हो गये। जब तब बड़ा हो हल्लम होता रहा प्रत्येक विभाग में बड़े अंगरेज अफसर आ घुसे अब तो एक भी ऐसा विभाग नहीं है जहां ऊंचे पद पर अगरेज न दिखाई दे। फलतः हैदराबाद के कठपुतले के सब सूत्र में अब अंग्रेजों के हाथ में ही हैं। चाहे नवाब हिज एकज़ाल्टेड हाईनेस भले ही कहे जावें, परन्तु हैदराबाद का राज्य तन्त्र वस्तुतः—"सूत्र प्रोतादारुमयीव योषा" के समान हैं।

वर्तमान शासन चक्र किस प्रकार चल रहा है यह तो भविष्य में कभी दिखलाया जावेगा। परन्तु आर्यसमाज की दृष्टि से भाग्य नगर के भाग्य चक्र का दर्शन इस लेख में कराना चाहते हैं।

हैदराबाद राज्य के सब से पुराने तीन आर्य हैं। उनमें से दो का तो स्वर्गवास हो गया और एक जीवित है। एक तो थे स्व० श्री केशवरावजी जस्टिस हैदराबाद। हैदराबाद आर्यसमाज ने जो कुछ कार्य किया है इसका समस्त श्रेय आपको है। दूसरे थे स्व० श्री विठ्ठल राव जी (मेरे पिता जी) आपने सबसे पहले अर्थात् हैदराबाद समाज से भी पहले धारूर समाज की स्थापना की थी। उस्मानाबाद तहसील में जितना प्रचार है वह इनके ही परिश्रम का फल है। तीसरे हैं पातूर निवासी श्री ठाकुर गोविन्द सिंह जी मनसबदार जब आप हैदराबाद राज्य में मनसबदार थे तब आपने भी बहुत कार्य किया। अब आप पेन्शन ले कर ज़मींदारी पातूर (ज़िला अकोला बरार) में रहते हैं।

हैदराबाद राज्य में जितने आर्यसमाजी हैं प्रायः सब उत्तर भारत के प्रवासी हैं जो वहाँ जाकर बसे हैं।

दक्षिण के निवासी तो अब आर्यसमाज के सम्बन्ध मे कुछ-कुछ समझने लगे हैं। सब से पहले स्व० ला० लाजपतरायजी के देश निकाला होने पर आर्यसमाज का नाम दक्षिण में प्रसिद्ध हुआ। श्री लाजपतरायजी के नाम के साथ साथ समाज का नाम भी प्रसिद्ध हो गया। गुरुकुल के प्रारम्भिक डेपुटेशन में श्री स्वा० श्रद्धानन्द जी (उस काल में-श्री महात्मा मुन्शीरामजी) भी हैदराबाद गये थे तब भी अच्छी धूम आर्यसमाज की रही। बाद को सामाजिक उत्सवों में आर्यसमाज के प्रचारकों का आना होता ही रहा। उस समय आर्यों की संख्या बहुत कम थी। निज़ाम सरकार के राजकर्मचारियों का ध्यान भी आर्यसमाज की ओर कम गया था ज्यों-ज्यो आर्यसमाज का कार्यक्षेत्र बढ़ा इधर ध्यान भी अधिक आकृष्ट हुआ और इस लिये भी ध्यान विशेष गया कि यू० पी० के कट्टर मुसलमान वहाँ कर्मचारी और अधिकारी रूप में अधिक संख्या में पहुँच गये हैं।

आर्य्यसमाज के प्रसिद्ध सन्यासी स्व० श्री नित्यानन्द जी जब हैदराबाद में पचपची नामक सनातनियों से शास्त्रार्थ करने गये थे तब निजाम सरकार ने उनको हिरासत में ले लिया था। फिर होहल्ला मचने पर छोड़ दिया था। बम्बई के स्व० श्री प० बालकृष्ण जी शर्मा के कारण भी वहां अच्छी चहल-पहल रही थी। इनको भी हैदराबाद छोड़ जाने का

हुक्म हुआ था। स्व० नित्यानन्द जी और पं० बालकृष्ण जीके लिये जो प्रतिबन्ध था उसमें हिन्दुओं का विरोध कारण था। उस समय हिन्दू समझते नहीं थे कि "आर्य्यसमाज क्या है ?" परन्तु अब हिन्दुओं की ओर से आर्य्यसमाज का विरोध नहीं हो सकता। हां मुसलमान पूरा जोर लगावेंगे कि आर्य्यसमाज का प्रचार न हो।

लेख का लेखक १८६४ में उत्तर भारत में आया था तब से उत्तर भारत ही है। जब जब कभी हैदराबाद आने का अवसर हुआ तब तब बहुत भारी परिवर्त्तन देखने को मिला। न केवल हिन्दुओं के आचार विचार और व्यवहारों में ही भेद हुआ है परन्तु मुसलमानों के दृष्टिकोण में भी बहुत परिवर्त्तन हो गया है।

आजकल हैदराबाद की समस्या फिर आर्य्यसमाज के सामने बड़े जोर से आई है। सार्वदेशिक सभा ने अपनी बाह्यवृत्ति और आन्दोलन से बतला दिया है कि हैदराबाद राज्य में सत्याग्रह बड़ा बल पकड़ेगा। यह सत्याग्रह सग्राम भी इतिहास में लिखने की बात हो जायगी। यदि आर्य्यसमाज अपनी कीर्ति को स्वरक्षित रखना चाहता है तो किसी न किसी दिन और कहीं न कहीं सत्याग्रह पूरे बल से करना ही पड़ेगा।

मत समझिये कि आर्यों पर हैदराबाद राज्य में सख्ती हो रही हैं, अन्य भी बीसियों रियासतें है जहां किसी किसी अंश में निज़ाम राज्य से भी बढ़ कर क्लेश हैं। चाहे ब्रिटिश-राज्य हो, चाहे निज़ाम राज्य, चाहे और कोई जर्मन की हिटलरशाही हो, जहाँ भी अत्याचार हो, टक्कर लेनी ही चाहिये। वास्तविक आत्मिक जीवन इसी में है। ['पत्र पुष्प' से]

शोलापुर कैम्प के समाचार

पत्रिका संख्या १

कार्यालय सार्वदेशिक आर्य्य सम्मेलन (Arya Congress) शोलापुर

तिथि कार्तिक शुक्ला ११ संवत् १९९५

[२ नवम्बर १९३८ ई०]

(१)

सेवा में श्रीयुत मन्त्री जी आर्य्यसमाज,

महाशय ! नमस्ते,

आपको कदाचित विदित है कि आर्य्य जगत की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा ने अपनी अन्तरंग सभा की बैठक में, जो ता० ६ अक्तूबर १९३८ ई० को देहली में सगठित हुई थी, हैदराबाद दक्षिण में आम तौर से हिन्दुओं और खास तौर से आर्य्यों की धार्मिक स्वतन्त्रता का अपहरण होरहा है और इस सम्बन्ध में अन्य भी अनेक प्रकार के अत्याचार बराबर होते रहते हैं, इस पर विचार किया और विचार के पश्चात् प्रशंसित सभा ने यह काम मेरे आधीन किया कि मैं इस सम्बन्ध में जैसा उचित समझूं कार्य करूँ। मैं सभा के उपर्युक्त निश्चयानुसार स्वामी स्वतन्त्रतानन्दजी को साथ लेकर यहां शोलापुर में ३० अक्तूबर को आ गया आर्य्य कांग्रेस के सङ्गठित करने के सम्बन्ध में (जिसके २५-२६ तथा २७ दिसम्बर को सङ्गठित होने की सूचना समाचार पत्रों द्वारा दी जा चुकी है) आवश्यक कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है, भूमि-पिण्डाल प्रतिनिधियों और दर्शकों के निवास तथा बाजार आदि के लिए भूमि प्राप्त कर ली गई है। इस आर्य्य कांग्रेस में मुख्य रीति से हैदराबाद के ही विषय पर विचार होगा और सत्याग्रह करने की आवश्यकता पर भी विचार किया जावेगा। इस कार्य के लिए धन और जन दोनों की जरूरत होगी, इस ओर आर्य्यसमाज का क्या प्रचार है यह बात आपसे अविदित नहीं है इसलिए इस कार्य में सहायक होने का उत्तरदायित्व अधिकतर आप सब पर ही है इसलिए यथासंभव शीघ्र जितना अधिक से अ-



श्री० बलदेव आर्योपदेशक
आर्य्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य।
सफाई देने का निषेध करने पर आपको १ वर्ष का कठोर
कारावास मिला।



श्री० लालसिंह जी
गुलबर्गा आर्य्य समाज के उत्साही मन्त्री
आपको गुलबर्गा केस में १० साल का कठोर
कारावास दिया गया।

हमारे प्रचारक जिन्हें निर्वासित किया गया अथवा कारागार में डाला गया ।



श्री० शङ्करदेवी आर्योपदेशक
माफी मांगने से इन्कार करने पर इन्हें १ वर्ष का कठोर कारावास मिला ।



पं० नरेन्द्र जी
आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य के उत्साही प्रचारक इन्हें निर्वासित करके मनानोर (काला पानी) में रक्खा गया है ।

धिक धन भेज सकते हों भेज देवें तथा यह भी सूचना देवें कि सत्याग्रह प्रारम्भ होने पर आप कितने स्वयं सेवक इस कार्य के लिये दे सकेंगे। धन या तो यहां मेरे नाम भेजें अथवा कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा देहली के पते से भेजें। समय बहुत थोड़ा और कार्य बहुत अधिक करना है। इसलिए धन भेजने में शीघ्रता करनी चाहिये। सम्मेलन में शरीक होने का भी पूरा पूरा यत्न करना चाहिये।

शुभचिन्तक

नारायण स्वामी

पत्रिका संख्या २

कार्यालय सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन (आर्य कांग्रेस) शोलापुर

तिथि कार्तिक शुक्ला १२ सवत १९९५ वि०

[४ नवम्बर १९३८ ई०]

सेवामें श्रीयुत मन्त्री जी आर्य्यसमाज,

महाशय ! नमस्ते,

पत्रिका संख्या १ द्वारा आपसे प्रार्थना की गई है कि आप आर्य्य कांग्रेस के लिए यथा सम्भव शीघ्र धन भेजें यह धन अधिक आजाने पर सत्याग्रह निधि में जमा आवेगा।

(२) इस पत्रिका द्वारा आवश्यक नियमों की आपको सूचना दी जाती है जिनके द्वारा प्रतिनिधि आदि कांग्रेस में सम्मिलित हो सकते हैं—

स्वागतकारिणी सभा पिण्डाल सभा कैम्प आदि के बनाने और उनका आर्य्य कांग्रेस सम्बन्धी समस्त प्रबन्ध करने के लिए एक स्वागतकारिणी सभा बनादी गई है जिसमे ५) फ़ीस देने पर, कोई भी वैदिक धर्म्मी मेम्बर के तौर पर शामिल हो सकता है। जो सज्जन इस सभा का सदस्य बनना चाहे, शीघ्र ही ५) अपने पूरे पते के साथ यहां भेज देवें। स्वागतकारिणी सभा के सदस्य, मुख्य मण्डप [पिण्डाल] में मुख्य स्थानपर बैठेंगे। इस सभा के साथ प्रतिनिधि भी विषय निर्धारणी सभा में बैठ सकेंगे और प्रत्येक विषय के बाद वादानुवाद में भाग लेकर अपनी सम्मति दे सकेंगे।

प्रतिनिधि—प्रत्येक आर्य्यसमाज अपना कम से कम एक प्रतिनिधि आर्य्य कांग्रेस मे भाग लेने के लिए भेज सकेगा परन्तु जिस समाज के सदस्य १० से अधिक हों तो प्रति १०

सदस्य एक प्रतिनिधि भेज सकेगा। प्रतिनिधि फीस २) प्रति प्रतिनिधि होगी, जिसे प्रतिनिधिगण चाहे पहले यहां भेज देवें अथवा यहां आकर देदेवें। यदि पहले भेजें तो मनीआर्डर की रसीद उन्हें साथ लानी चाहिये, प्रतिनिधि [प्रवेश] टिकट २) प्राप्त होजाने पर ही दिये जावेंगे।

दर्शक—आर्य कांग्रेस में शरीक हो सकने का भी प्रबन्ध किया गया है दर्शकों की पहली श्रेणी के सफों में बैठने के लिए १) और द्वितीय श्रेणी सफ़ों में बैठने को ॥) फीस नियत है। दर्शकों के टिकट प्रवा मण्डप के बाहर मिलेंगे। पहिले से जो लेना चाहें वे नियमित फ़ीस अदा करके स्वागतकारिणी सभा के कार्यालय से प्राप्त कर सकेंगे। १९दिसम्बर से प्रत्येक प्रकार के टिकट जारी होने लगेंगे। ये १)और ॥)के टिकट आर्य्य कांग्रेस के समस्त अधिवेशनों में सम्मिलित होने के लिये टिकट लेना चाहेंगे तो ।) में ही प्राप्त कर सकेंगे।

आप कृपया अत्यन्त शीघ्र सूचना देवें कि आपके यहांसे कितने सज्जन आर्य्य कांग्रेस में शरीक होने के लिये आवेंगे जिससे उनके निवास आदि का प्रबन्ध किया जा सके।

शुभचिन्तक

नारायण स्वामी

(२)

सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन

हैदराबाद राज्य में जो अत्याचार साधारणत: वहां की हिन्दू तथा विशेषत आर्य जनता पर निज़ाम सरकार द्वारा कई वर्षों से हो रहे हैं, उनका विरोध करने तथा उन अत्याचारों को दूर कराने का प्रोग्राम निश्चित करने के लिए सोलापुर में ता० २५, २६ और २७ दिसम्बर १६३८ को जो आलइण्डिया आर्यन काँग्रेस होने वाली है उसकी तैयारियां बड़े ज़ोरों से हो रही हैं। सर्व श्री नारायण स्वामी जी महाराज, स्वामी स्वतंत्रानन्द जी महाराज उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, प० शिवचन्द्र जी मंत्री अखिल भारत वर्षीय आर्य रक्षा समिति, प० बन्सीलाल जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा निज़ाम राज्य पं० विश्वनाथ जी कनोल स्थानीय प्रसिद्ध आर्यसमाज प्रेमी राष्ट्रवादी तथा अन्य बहुत से स्थानीय सार्वजनिक कार्यकर्ता आर्यन काँग्रेस को सफल बनाने में संलग्न हैं। म्युनिसिपल बोर्ड भी जल, बिजली तथा सफ़ाई आदि की सुविधा प्रदान कर रही है। बाहर से कम से कम पचीस सहस्र मनुष्यों की आर्यन् काँग्रेस के अवसर पर आने की आशा है। सर्व श्री महामना प० मदनमोहन

मालवीय जी, बापूजी, अणे व सावरकर, जगद्गुरु शंकराचार्य, डा० दुर्तकोटी, डा० मुंजे, भाई परमानन्द, सर गोकुलचन्द नारंग आदि की आर्यन कॉंग्रेस में सम्मिलित होने की सम्भावना है।

सम्प्रति रियासत हैदराबाद में आर्यन् डिफेन्स लीग की ओर से सत्याग्रह जारी है। और अब तक छ जत्थे गिरफ्तार हो चुके हैं, परन्तु ऐसा मालूम हुआ है कि आर्यन कॉंग्रेस हो जाने के पश्चात् आर्यन् डिफेन्स लीग की ओर से सत्याग्रह बड़ा ही व्यापक रूप धारण कर के तीव्रगति के साथ चलेगा।

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज, श्री० प० रामचन्द्र जी देहलवी, श्री प० शिवचन्द्र जी को निज़ाम सरकार ने अवांछनीय गैरमुलकी घोषित कर दिया है। कुछ मास हुये श्री प० शिवचन्द्र जी ने हैदराबाद रियासत में कई बार भ्रमण कर निज़ाम सरकार के द्वारा हिन्दू तथा आर्य जनता पर होने वाले अत्याचारों की प्रामाणिक सामग्री एकत्रित की थी।

विश्वस्त सूत्र से ये भी मालूम हुआ है कि श्री प० श्यामलाल जी वकील हाईकोर्ट उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा निज़ाम राज्य, कई वर्षों से अस्वस्थ हैं, उन को बिना किसी कारण के उदगीर में गिरफ्तार करके जेल में डाला गया और उन को अंधेरी कोठरी में रखा गया है। उन को डाक्टर ने अन्न ग्रहण न करने की सलाह दी थी क्योंकि उनकी बीमारी ही वैसी है इसलिये कई वर्षों से केवल दूध और फलों पर रहते थे अब उनको थोड़ा ही दूध दिया जाता है, जिस के कारण उनका स्वास्थ दिन व दिन ख़राब होता जा रहा है।

श्री प० नरेन्द्रजी आर्य युवक हृदय सम्राट निज़ाम राज्य को बिना किसी कारण के गिरफ्तार कर मनामूर कालापानी भेज दिया गया है। हैदराबाद के पच्चीस सर्व प्रमुख तथा अग्र-गण्य प्रतिष्ठित सज्जनों ने जिन में वहां के बड़े बड़े बैरिस्टर वकील, डाक्टर, सेठ साहूकार तथा त्रिमजी नामक एक मुस्लिम सज्जन जो हाईकोर्ट के माने हुए वकील तथा कांग्रेस राष्ट्रवादी हैं, इन सब के हस्ताक्षरों से निज़ाम सरकार को एक आवेदन पत्र भेजा गया है कि श्री प० नरेन्द्रजी को बिना कारण बताए कालेपानी भेज देना बहुत ही अनुचित है और बाक़ायदा अदालत मे मुकद्दमा होना चाहिये।

यह भी मालूम हुआ है कि गुलबर्गा आर्य समाज के मन्त्री श्री० लालसिंह जी जिनको कुछ दिन हुए १६ बेत की सजा दी गई थी जिस के कारण वह बेहोश हो गये थे

उन को बहुत ही ख़राब भोजन जेल में दिया जा रहा है जिस के कारण उनका स्वास्थ्य बहुत खराब होता जा रहा है।

शिवचन्द्र मन्त्री।

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन सोलापुर के अवसर पर जो बाज़ार यात्रियों के लिये खोला जायगा उसमें मुख्यतया पुस्तकों और खाद्य वस्तुओं की दूकानें होंगी। खाद्य वस्तुओं में रोटी, पूरी, मिठाई, दूध, चाय, पान आदि सम्मिलित हैं। मांस, शराब, आदि अथवा तम्बाकू, सिगरेट और बीड़ी आदि की न दूकानें होंगी न कोई आर्य नगर में इन्हें बेच सकेगा। दूकान का किराया प्रति दूकान १०) होगा। दूकानदारों को दूकानें स्वयं बनानी होंगी। यदि वे तय्यार चाहेंगे तो उन्हें ५) और देने होंगे। घृत आदि सभी खाद्य सामग्री शुद्ध और असली प्रयोग में लाई जावेंगी। परचूनी आटा दाल की भी कतिपय दूकानें रखी जावेंगी। दूकान लगाने के इच्छुकों को अपने प्रार्थनापत्र २० नवम्बर तक भेज देने चाहियें। इस के बाद आये हुए प्रार्थना पत्रों पर बाज़ार में जगह ख़ाली रहने ही पर विचार किया जा सकेगा। प्रार्थना पत्र निम्न पते पर भेजने चाहियें।

शिवचन्द्र मन्त्री,
आर्य कांग्रेस कार्यकारिणी सभा,
सोलापुर।

आर्य-कांग्रेस की तैयारियां

जब से आर्य जगत् ने शोलापुर में आर्य कांग्रेस करने का निश्चय किया है तब से यह स्थान आर्यों का तीर्थ बन गया है। शोलापुर बम्बई से (रेलवे जी० आई० पी० लाइन) २८३ मील के फासले पर है। शहर व्यापार और उद्योग के लिए प्रसिद्ध है। यहां की आबादी और भाषा अधिकांश में मराठी है और यही कारण है कि जनता में हिन्दुत्व के लिए सहानुभूति है।

शोलापुर के मंगलवार पेठ में आर्य-कांग्रेस का आफिस है। आफ़िस का मकान आलीशान है और यह स्थानीय श्री विश्वनाथ कनाळे जी ने उदारता पूर्वक कांग्रेस के अर्पण किया हुआ है। श्री कनाळे जी यहां के प्रतिष्ठित व धनी मानी युवक हैं और उन्हें आर्य समाज व हिन्दू संस्कृति से अत्यन्त प्रेम है।

उपरोक्त आफ़िस में श्री पूज्य नारायण स्वामी जी महाराज, श्री पूज्य स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज, श्री सदानन्द जी महाराज परिव्राजक, श्री बन्सीलाल जी वकील हैद्राबाद वाले, श्री शिवचन्द्र जी, मन्त्री आर्य रक्षा समिति, देहली तथा अन्य अनेक नेता ठहरे हुए हैं। इनके अतिरिक्त ३०-४० स्वय सेवक भी यहां हैं जो सब प्रकार का सेवा-कार्य अत्यन्त लगन से कर रहे हैं।

शहर से २ फर्लांग की दूरी पर नहर के किनारे लग-भग २५-३० एकड़ भूमि आर्य कांग्रेस-कमेटी ने पण्डाल आदि बनाने के लिए ली है।

यह ज़मीन दो ज़मींदारों—श्री महालिंगप्पा पाटील और श्री गणपति सिद्धरामप्पा पाटीनेल बिना किसी किराये के आर्य कांग्रेस कमेटी को दी है।.कांग्रेस का पण्डाल बनना शुरू हो गया है। प्रतिनिधियों के कैम्पों की जगह पर निशान पड़ गये हैं। बाज़ार व दुकानों की प्लैन भी तैयार है।

यहां की म्यूनिसिपैलिटी ने भी आर्य कांग्रेस के साथ पूरे सहयोग का निश्चय किया है। आर्य-नगर में पानी, बिजली, सफ़ाई आदि का सारा काम म्युनिसिपेलटी अपने खर्चे पर करेगी। शहर से आर्य कांग्रस पण्डाल तक सड़क भी म्यूनिसिपैलिटी ने बनाने का निश्चय किया है। इन सब कामों के लिए २०००) का बजट पास हुआ है। इससे कहीं अधिक की आशा है।

आर्य-कांग्रेस की स्वागत समिति की भी ज़ोर-शोर से तैयारियां हो रही हैं। ५) फीस नियत हुई है। १००० सभासद् (स्वागत-समिति) के बनाने की आयोजना है। स्वागताध्यक्ष के लिये हैद्राबाद और बम्बई के प्रमुख व्यक्तियों से बात चीतच-ल रही है। कांग्रेस के प्रधान के लिए लोकनायक श्री एम० एस० अणे, मैम्बर, असैम्बली, देहली से प्रार्थना की गई है। आशा है वे स्वीकार कर लेंगे।

इस प्रकार आर्य-कांग्रेस का कार्य पूरे उत्साह से हो रहा है। और इधर सत्याग्रह की तैयारी भी शुरू है। वालंटियर और धन एकत्र करने की सूचना स्थान स्थानसे पहुँच रही है। अकेले राजपूताना (अजमेर) ने ३२०० सत्याग्रही और १०००) मासिक सहायता का वचन दिया है। हैद्राबाद से १००० स्वय सेवकों के नाम आ गये हैं और लड़ाई छिड़ने पर ५००० की आशा है। देहली ने १०,००० रु० इकट्ठा करके शीघ्र भेजनेका निश्चय किया है। इसी प्रकार अन्य प्रान्त भी प्रयत्नशील है। जिन समाजों ने अभी कार्य प्रारम्भ नहीं किया उन्हें भी चाहिये कि प्रतिनिधि-फार्म और रसीदबुकें मंगाकर फौरन शुरू कर दें।

केशवदेव शास्त्री

हैद्राबाद के वास्तविक समाचार

हैदराबाद रियासत में आर्यन डिफेन्स लीग की ओर से सत्याग्रह में जो व्यक्ति गिरफ़्तार हो रहे हैं उनको पृथक २ जेल की कोठरियों में बन्द रक्खा जा रहा है। उनको लालच धमकी और नाना प्रकार के कष्ट देकर उनसे कोरे कागज़ों पर ज़बरदस्ती हस्ताक्षर कराकर अथवा अँगूठे का निशान लेकर निज़ाम सरकार की ओर से उन कागज़ों पर मन माना लिखकर प्रकाशित किया जा रहा है। आर्यन डिफेन्स लीग की ओर से सत्याग्रह में गिरफ़्तार हुए कुछेक व्यक्तियों द्वारा मांफी मांगने के समाचार किन्हीं समाचार पत्रों में प्रकाशित हो रहे हैं। मालूम हुआ है कि इस प्रकार के व्यक्ति दो प्रकार के हैं। एक तो वे जिनका उल्लेख ऊपर हो चुका है अर्थात् जिनसे कोरे काग़ज़ों पर जबर्दस्ती हस्ताक्षर और अँगूठे के निशान करा लिये जाते हैं और बाद को रियासत के कर्मचारियों द्वारा क्षमा याचना की भाषा लिख दी जाती है। दूसरे वे लोग हैं जो भीड़ में से गिरफ़्तार कर लि॰ जाते हैं, जिनका सत्याग्रह से कोई सम्बन्ध ही नहीं होता बल्कि उनमें से कई पुलिस की ओर से इरादतन भेजे हुए व्यक्ति होते हैं ताकि वे क्षमा मांगकर चले आवें जिससे दूसरे पक्ष की बदनामी हो। इस प्रकार से समझदार जनता को विचलित नहीं होना चाहिये चूँकि शत्रु लोग इस प्रकार की चालें ऐसे अवसरों पर चला ही करते हैं। कुछ समाचार पत्रों में यह भी प्रकाशित हुआ है कि आर्यन डिफेन्स लीग की ओर से सत्याग्रह स्थगित कर दिया गया है। परन्तु यह बिलकुल निराधार है और शत्रुओं की चालबाजी का बनावटी प्रॉपेगेन्डा है। आर्यन डिफेन्स लीग की ओर से सत्याग्रह निरन्तर जारी है।

मौजा निरगुदी में दिवाली के अवसर पर आर्य्यों ने ओ३म् के झण्डे के साथ जलूस निकाला था। केवल इसी बात पर पुलिस ने अब २८ आर्यों को गिरफ़्तार कर लिया है।

जेलों में आर्य्य सत्याग्रहियों के यज्ञोपवीत जबर्दस्ती तोड़े जा रहे हैं। आरमूर के तहसीलदार ने अपने सामने अपने चपरासियों से ग्राम चटपल्ली निवासी रामचन्द्र आर्य्य पटेल तथा ग्राम कमरपल्ली निवासी गंगारेड्डी पटवारी के यज्ञोपवीत जबर्दस्ती तुड़वा दिये।

तहसीलदार ने अन्य उन पटेल तथा पटवारियों को भी जो आर्य्य हैं धमकाया कि यदि वे अपने शरीरों से यज्ञोपवीत नहीं उतार फेंकेंगे तो उन्हें नौकरी से पृथक कर दिया जायगा और जेल भेज दिया जायगा।

हमें यह भी सूचना मिली है कि लातूर के व्यापारियों ने अपनी दुकान आदि की रक्षा के लिये कुछेक सिक्खों को नौकर रख लिया था। इस पर वहां के ताल्लुकेदार ने इन व्यापारियों को धमकाया कि वे सिक्खों को नौकरी से निकाल दें। ताल्लुकेदार ने उन सिक्खों को अपनी कचहरी में बुलाया और पुलिस के द्वारा उनकी कृपाणों को जबर्दस्ती उनके शरीर से उतरवा दिया।

निजाम सरकार ने अब तक श्री पंडित रामचन्द्र देहलवी, श्रीयुत पंडित शिवचन्द्रजी जी मन्त्री आर्य्य रक्षा समिति तथा श्री पंडित व्यासदेव शास्त्री को ही अवांछनीय इतर देशीय (Undesirable out sider) घोषित किया हुआ था अब तो श्रीपूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज जैसे सन्यासी को भी अवांछनीय इतरदेशीय घोषित कर दिया है।

शोलापुर में होने वाली आर्यन कांग्रेस की तैयारियां बड़े जोरों से होरही हैं।

शिवचन्द्र

श्रद्धाञ्जलि

(लेखक—श्री० प्रो० सुधाकर एम० ए०)

महात्मा हंसराज जी का जीवन आर्य्य समाज के साथ इतना अधिक ग्रथित रहा है कि इस समय उनके वियोग से आर्य्य समाज मानो अनाथ हो गया है। बचपन से जब से उन्होंने होश सम्हाला, जीवन के अन्तिम पल तक आर्य्य समाज ही उनकी एक मात्र-प्रिय वस्तु रही है। आर्य्य समाज के कल्याण और उन्नति में ही वे धर्म्म, कर्म्म, देश और जाति का कल्याण मानते थे। आर्य्य समाज के क्षेत्र के बाहर उन्होंने कहीं क़दम नहीं रक्खा था। यह एक विचित्र उदाहरण है।

आज जब कि समाज-सेवा और स्वदेश-सेवा करने वाले प्रेस और प्लेट फ़ार्म का सहारा लिये बिना कोई काम नहीं करते, वहाँ महात्मा हंसराज जी को इन दोनों साधनों से कोई अनुराग न था। वे सचमुच चुपचाप और ठोस काम करने वालों के लिये एक ऊँचा आदर्श उपस्थित कर गये हैं।

मुझे अपने जीवन में कभी यह सौभाग्य प्राप्त न हुआ कि मैं महात्मा जी के निकट रहकर उनके अनुपम जीवन से लाभ उठाता, परन्तु मेरे लिये उनका जीवन सदैव एक प्रकाश स्तम्भ रहा है और मैंने कई बार जीवन के ववडरों के अवसर पर उस प्रकाश-स्तम्भ से अपना मार्ग ढूंढा है। तथा मेरी नाईं मेरे असंख्य भाइयों ने उस प्रकाशपुञ्ज से प्रकाश ग्रहण करके अपने आपको आर्य्य समाज की थोड़ी-बहुत सेवा के योग्य बनाया है।

संसार में लोग आते और जाते हैं। खा-पीकर व वन काटकर चल देते हैं। उनके चले जाने के बाद उनका ज़रा-सा असर भी हम दुनियाँ में नहीं देखते। उनके आने और जाने में कोई अन्तर नहीं होता। स्वप्न के चित्र की नाईं उनका कोई मूल्य नहीं होता, परन्तु महात्मा हंसराज एक दूसरे प्रकार के व्यक्ति थे। अपने जीवन-काल में उन्होंने जो छाप अपने प्रान्त के जीवन में लगाई है, वह छाप शताब्दियों तक मिटने वाली नहीं। डी० ए० वी० कालेज लाहौर ही जो एक शानदार और अनुपम शिक्षा-केन्द्र है, उन्हें सदैव जीवित रखने वाला है। परन्तु इसके अतिरिक्त सैकड़ों सुधार और आर्य्य समाज के अन्य कार्य्य सदैव उनका स्मरण कराते रहेंगे।

महात्मा जी की अभी आर्य्य समाज को बहुत आवश्यकता थी। श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी के पीछे महात्माजी की हस्ती आर्य्य समाज के कार्य्य-कर्त्ताओं के लिये सुख का स्रोत थी। परन्तु ईश्वर को जो मंजूर था, वही होना था। आज वे हम से पृथक् हो गये हैं, हमें उस अग्नि को बुझने न देना चाहिए, जिस में उन्होंने अपने जीवन की आहुति दी है। उस अग्नि को बुझाने के लिये असंख्य शत्रु उद्यत हैं। इसकी ताज़ा मिसाल हैदराबाद राज्य में उपस्थित है। मैं आर्य्य भाइयों से निवेदन करूँगा कि वे महात्मा जी के जीवनादर्श को सामने रखते हुए हैदराबाद-आर्य्य समाज रूपी अग्नि को बुझने न देवें और इसके लिये जिस त्याग और तपस्या की आवश्यकता है, इसके दर्शाने के लिये तय्यार हो जावें।

कुछ अपने सम्बन्ध में

पाठकों की सेवा में सार्वदेशिक का यह अङ्क हैद्राबाद (दक्षिण) विशेषांक के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। अभी कुछ दिन हुए हमने "The Case of Arya Samaj in Hyderabad State" नामक एक अंग्रेजी पुस्तक तय्यार करके प्रकाशित की है उसमें घटनाओं और अङ्कों के आधार पर हैद्राबाद राज्य में आर्य्यों और हिन्दुओं की धार्मिक बाधाओं और कष्टों का आद्योपान्त विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है तथा सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा ने उन कष्टों के निवारणार्थ इस समय तक जो यत्न किए हैं उसकी भी उसमें चर्चा की गई है।

इस अंग्रेजी पुस्तक के प्रकाशन के साथ साथ सार्वदेशिक के पाठकों तथा हिन्दी भाषा-भाषी जनता के लाभार्थ उसका हिन्दी अनुवाद सार्वदेशिक के द्वारा प्रस्तुत करने का भी हमारा विचार था परन्तु सार्वदेशिक के प्रकाशन की अन्तिम अवधि में बहुत कम समय होने के कारण हमें भय था कि इतना बड़ा विवरण समय पर हिन्दी में तय्यार होकर प्रकाशित न हो सकेगा। हम इसी विचार और असमन्जस में पड़े थे कि अंग्रेजी पुस्तक को पढ़ने वाले प्रेमी भाइयों तथा अन्य कई आर्य्य भाइयों ने हमें प्रेरणा की कि इसका हिन्दी अनुवाद शीघ्र से शीघ्र प्रकाशित करके जनता के हाथों में रक्खा जाय। इस आग्रह और प्रेरणा के फल स्वरूप हमारे अपने विचारकी उपयोगिता और उसे अवलम्ब क्रिया में परिणत करने की आवश्यकता विशेष रूप में हमारे सामने आई। तदनुसार प्रिय रघुनाथप्रसाद पाठक ने ४-५ दिन के अल्प समय में उद्योग करके अनुवाद को तय्यार कर दिया और देहली के सुप्रसिद्ध चन्द्रप्रिन्टिङ्ग प्रेस ने अपना पूर्ण सहयोग देकर इस संकल्प को पूरा करने में हमे समर्थ बना दिया। इस सहयोग के बिना सचमुच हम इस अङ्क को समय पर नहीं निकाल सकते थे।

यद्यपि हैद्राबाद की घटनाओं में से जो उपर्युक्त विवरण में प्रस्तुत की गई बहुत सी घटनायें सार्वदेशिक के पाठक इन स्तम्भों में पढ़ चुके हैं फिर भी इसमें

बहुत सी सामग्री ऐसी है जो उनके सामने अभी तक नहीं आई थी। इस सबको शृंखला बद्ध रूप में एक स्थान पर पढ़ने पर हैद्राबाद केस को भली भांति समझने और दूसरों को समझाने में उन्हें पूरी २ मदद मिलेगी। आशा है सार्वदेशिक के प्रेमी पाठक हैद्राबाद की अपनी करुण-कथा को स्वयं पढ़ेंगे और अधिक से अधिक जितना सम्भव हो दूसरे महानुभावों को पढ़ाने का यत्न करेंगे।

इस कष्ट कथा को जनता के समक्ष रखने में हमें खुशी नहीं है। हैदराबाद में आर्य्यसमाज और हमारे हिन्दू और आर्य्य भाई जिस दयनीय अवस्था में से गुज़र रहे हैं तथा सार्वदेशिक सभा ने अपने पूज्य नेता महात्मा नारायण स्वामी के द्वारा उस अवस्था को बदलने के लिए जो अन्तिम यत्न आरम्भ किया है हैद्राबाद से बाहर के आर्य्यों और हिन्दुओं का उसके प्रति क्या कर्त्तव्य है इस सबका दिग्दर्शन कराने के उद्देश्य से ही हम इस विवरण के प्रस्तुत करने के एक अप्रिय कर्त्तव्य का पालन कर रहे हैं। परमात्मा हमें इस यत्न में सफल बनाए।

—सुधाकर

धन जन संग्रह का कार्य्य

प्रसन्नता है हैदराबाद के पीड़ित हिन्दू और आर्य्य भाइयों की सहायतार्थश्री पूज्य नारायण स्वामी जी की धन जन की अपील का आर्य्यसमाज की आन और शान के अनुरूप उत्तर दिये जाने का देश के एक छोर से दूसरे छोर तक यत्न आरम्भ होगया है। इस समय हैद्राबाद के पीड़ित भाइयों तथा सार्वदेशिक आर्य्य महासम्मेलन के लिये जैसा कि समाचार पत्रों में प्रकाशित हो चुका है १ लाख रुपये की अत्यन्त आवश्यकता है। हमें यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ है कि प्रत्येक प्रान्त श्री महात्मा नारायण स्वामी जी के हाथों में अपना धनका सबसे बड़ा भाग रखने के लिए उत्सुक हो रहा है और आशा है बात की बात में १ लाख की उनकी मांग पूरी हो जायगी। श्री महात्मा नारायण स्वामी जी तथा श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी पिछले दिनों बम्बई गये थे वहांके हिन्दू और आर्य्य भाइयोंने प्रथम भेंटके रूप में २५०००) रुपया तथा १०००० सत्याग्रही देने का संकल्प कर के कार्य्य आरम्भ कर दिया है इसी प्रकार पंजाब प्रान्त ने जैसा कि लाहौर बच्छों वाली के उत्सव पर हुए आर्य्य सम्मेलन की कार्य्यवाही से विदित है हजारों के परिमाण में अपनी भेंट स्वामी जी महाराज के हाथों में रखने का निर्णय किया है। देहली प्रान्त में भी पहली किश्त

१००००) देने का संकल्प करके धन सग्रह का कार्य्य आरम्भ किया गया है। इसी भाँति यू० पी०, सी० पी०, विहार, बंगाल इत्यादि प्रान्त यत्न कर रहे हैं। युद्ध की आवश्यकताओं का एक सुनिश्चित अदाजा लगाना कठिन होता है फिर भी हैदराबाद के युद्ध की समस्त आवश्यकताएं मुख्यतया हिन्दुओं और आर्य्यों को ही पूरी करनी है। और वे बहुत बड़ी जरूरतें होंगी यह बात ध्यान में रख कर ही हमारा यत्न होना चाहिए। अब तो हमारा एक मात्र सर्वोपरि विचार और यत्न हैदराबाद का कार्य और उसकी सफलता होनी चाहिए क्यों कि यह आर्य्य समाज के लिए जीवन मरण की समस्या है। इन पंक्तियों को लिखते लिखते हमें आर्य्यसमाज बम्बई के प्रधान श्री पं० विजयशंकर मूलशङ्कर जी की एक विज्ञप्ति प्राप्त हुई है जिसमें उन्होंने लिखा है कि ब्रह्मानन्द नामक कोई व्यक्ति विट्ठल भाई पटेल रोड (बम्बई) केनाम से हैद्राबाद के सत्याग्रह के लिए धन संग्रह करने की धूर्तता कर रहा है क्योंकि उक्त समाज से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। ऐसे व्यक्तियों से आर्य्य जनता को सावधान रहना चाहिये।

स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी

महात्मा हंसराज की मृत्यु मुख्यतया पंजाब और आर्यसमाज एवं साधारण तया समस्त देश के लिए एक बड़ी हानि है। महात्मा जी आर्यसमाज के उन तीन बड़े नेताओं में से एक थे जिनके कारण प्रारम्भिक काल में आर्यसमाज की उन्नति हुई थी। उन्होंने बड़ी निष्ठा के साथ अपने उद्योगशील जीवन को आर्य-समाज और डी० ए० वी० कालेज के कार्य्य में लगाया। डी० ए० वी० कालेज की ख्याति उन्नति और प्रभाव में सबसे बड़ा भाग श्रद्धेय महात्मा जी का था। महान् आत्म-त्याग और तपस्या ने उनके जीवन को प्रकाशमान कर रक्खा था। वे भारतवर्ष के एक बड़े शिक्षा विशेषज्ञ होने के साथ साथ एक बड़े सुधारक भी थे। वे उचित रीति से पंजाब के एक निर्माता कहे जाते हैं।

मनोरन्जन और बौद्ध भिक्षु

मांडले के नवयुवक बौद्ध भिक्षु संघ ने एक प्रस्ताव के द्वारा सिनेमा, नाच इत्यादि मनोरन्जनों में बौद्ध भिक्षुओं का भाग लेना निषिद्ध ठहराया है।

इस आज्ञा के उल्लघन पर अपराधी को प्रधान भिक्षु की व्यवस्थानुसार

कुए वा सरोवर से २५ घड़े पानी भरने या मन्दिर अथवा मठ के धोने का दण्ड मिलेगा।

इस निश्चय के द्वारा समस्त भिक्षुओं को फुटबाल मैच और नाच को देखने का भी निषेध कर दिया गया है। सिनेमा और विवाह में जाने पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया गया है।

उपर्युक्त व्यवस्था से स्पष्ट है कि बौद्ध संघों में भी जो आध्यात्मिकता के केन्द्र होते हैं वही विलासिता घर किये हुए है जो साधारण गृहस्थों में पाई जाती है।

कमाल अतातुर्क

कमाल अतातुर्क की मृत्यु में इस शताब्दी का ससार का एक सैनिक, राज नीतिज्ञ उठ गया जो अपने देश को स्वतन्त्र और परिमार्जित करने वाला था। सन् १९१४के महा समर में टर्की को इस वीर का नेतृत्व प्राप्त न हुआ होता तो बहुत संभव था टर्की किसी युरोपियन शक्ति के अत्या चारों का शिकार अथवा स्वतन्त्र देश के रूप में युरोप के मान चित्र (नक़्शा) में से लोप हो गया होता। कमाल ने इस विपत्ति से अपने देश की रक्षा की और युरोप के बीमार आदमी के नाम से सम्बोधित किए जाने वाले अपने देश को हृष्टपुष्ट और स्वस्थ्य बना दिया।

वह टर्की का सुल्तान भी बन सकता था। परन्तु वह अपने देश को प्रजातन्त्र शासन देकर स्वय उसका पहला अध्यक्ष बना। इसमें सन्देह नहीं वह डिक्टेटर था परन्तु मुसोलिनी, हिटलर और स्टैलिन जैसे डिक्टेटरों से सर्वथा भिन्न प्रकार का डिक्टेटर था। उसके आधीन ही टर्की में इस्लाम राज धर्म्म न रहा। वही अपने देश को अन्य उन्नत सभ्य राष्ट्रों की कोटि में लाया। सुल्तानों के काल में देश का कानून कुरान पर आश्रित था। उसने इस कानून का अन्त करके फ्रांस और स्विटजरलैंड जैसे दीवानी और फौजदारी के विधान प्रचलित किए। मुल्ले और मौलवियों का प्रजा तथा शासन पर कोई प्रभाव नहीं रह गया था।

उसने ख़िलाफ़त का अन्त किया। यदि उसमें कोई राज-लिप्सा होती तो उसकी पूर्ति के लिये जिस प्रकार वह सुल्तान बन सकता था उसी प्रकार अपनी निजी मज़हबी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए वह ख़लीफ़ा भी बन सकता था। परन्तु उसका उद्देश्य विभिन्न प्रकार का था। वह अपने देश को उन्नत, प्रगतिशील और समृद्धिवान बनाना चाहता था। इसी लिये उसने अपने को मज़हबी नामे और अपने देश को अकर्मण्यवाद से मुक्त रखने का निर्णय किया। यही ख़िलाफ़त के अन्त करने का कारण था।

उसके शिक्षा सम्बन्धी सुधारों का भी यही उद्देश्य था। भारत के प्रचलित मकतबों और मदरसों की तरह टर्की में भी ये संस्थाएँ जहालत और मज़हबी पागलपन के

गए थे। अतएव उसने इनका भी अन्त किया और इनके स्थानों में उन्नत शिक्षा-केन्द्र स्थापित किए।

कहा जा सकता है कि 'फैज़' टोपी का पहना जाना दण्डनीय ठहराकर और उसके स्थान में हैट का पहनना प्रचलित करके उसने अपने लोगों को राष्ट्रीय संस्कृति से विमुख किया था परन्तु बात यह न थी। वह पक्का स्वदेश भक्त था। वह चाहता था कि टर्की के लोग योरोप के अन्य देशों के निवासियों के समान अपने को उन्नत और प्रगतिशील समझें और बाहर के लोग भी टर्की को ऐसा ही समझें और टर्की के लोगों को मनुष्यों के अजीब नमूने समझना और कहना छोड़ देवें।

उसने टर्की भाषा को अरबी के शब्दों से परिमार्जित करके उसे पुन जीवित किया और जो शब्द अप्रचलित हो गये थे उन्हें पुन प्रचलित किया था नये शब्दो की रचना कराई। अरबी की वर्णमाला, चूंकि अवैज्ञानिक और त्रुटिपूर्ण थी और उसमे बात का ठीक ठीक पढ़ा और समझा जाना अत्यन्त कठिन था, इसलिये उसने इस लिपि के स्थान मे रोमन लिपिको प्रचलित किया। इस प्रकार साक्षरता प्रचारका कार्य्य सरल और उसकी सफलता का मार्ग साफ़ हो गया। यही कमाल का स्वदेश-प्रेम था।

कमाल का देश-प्रेम एक दूसरे रूप मे भी प्रकाश में आया। कुरान की भाषा अरबी मुस्लिम प्रार्थनाओं के प्रयोग में आती है। क़ुरान में आए हुए मूल अरबी के वाक्यों के स्थान में, कमाल ने उनका टर्की अनुवाद रक्खा था।

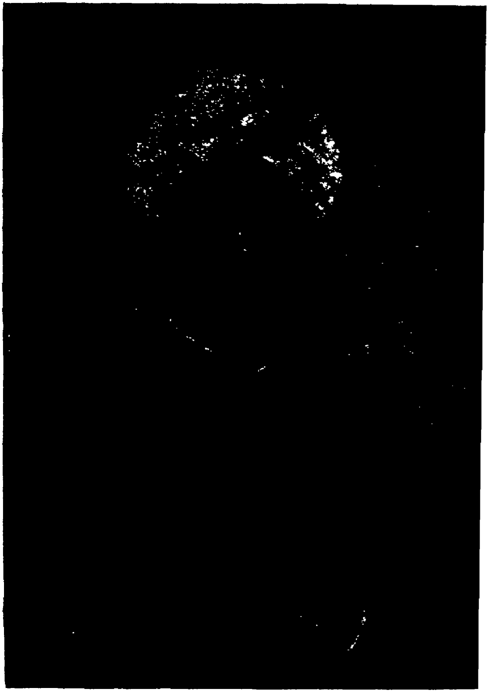
मस्जिदों में उपासकों के बैठने के लिए ईसाई गिर्जों की तरह फर्नीचर और कुर्सियो की व्यवस्था भी कराई।

कमाल ने जो सामाजिक सुधार किए हैं वे भी बड़े मौलिक हैं। उसने पर्दे बुर्के और जनानखानों (हरमों) का अन्त किया और टर्की की स्त्रियों को उनसे मुक्त किया। बहु पत्नीवाद की प्रथा का भी उसने अन्त कर दिया।

उसने व्यवसायिक तथा सैनिक दृष्टि से भी देश को समृद्ध और सुदृढ बनाया।

आशा है कमाल के उत्तराधिकारियों के समय में प्रतिगामी शक्तियो का प्रभुत्व न होने दिया जायगा तथा देश की उन्नति न केवल स्थिर रक्खी जायगी अपितु उसमे सर्वतो-मुखी वृद्धि की जायगी।

आज भारतवर्ष के मुसलमान स्व० कमाल का मातम मना रहे हैं तथा उसका गुणानुवाद कर रहे हैं। उनमें से कुछ ऐसे भी हैं जो भारत के कुछ हिस्सों में उन मकतबों और मदरसों की संख्या वृद्धि का यत्न कर रहे हैं जो शिक्षा की दृष्टि से शिक्षा शास्त्रियों द्वारा तिरस्कृत हो चुके हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो खिलाफत के प्रेमी हैं तथा उसकी पुनर्स्थापना का स्वप्न देखते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो फैज के लिए मरने मारने को तैयार हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो बहु पत्नीवाद की विनाशक प्रथा से चिपटे हुए हैं और जब इस प्रथा के अन्त के लिए धारा सभा में कोई बिल आता है तो चिल्लाते हैं कि मुसलमानों को उससे मुक्त किया जाय। कुछ ऐसे भी हैं जो अपनी स्त्रियो को पर्दे और बुर्के की कैद में रखते और उसके पक्षपाती है कुछ ऐसे भी हैं जो धर्म परिवर्तन सम्बन्धी विविध कानूनी उपायों के द्वारा अपनी स्त्रियों पर एक तन्त्र सत्ता बनाए रखना चाहते हैं और धार्मिक कायदे कानूनों से उन्हें जो थोडी बहुत स्वतन्त्रता मिली हुई है उसका भी अपहरण करना चाहते हैं। ऐसे मुसलमान कमाल का गुणानुवाद केवल इस आधार पर करते प्रतीत होते हैं कि वह एक मुसलमान था। अन्यथा ऐसा करने का उन्हे अधिकार नही है।



स्वर्गीय श्री केशवराव जी जज,
हाईकोर्ट हैदराबाद दक्षिण ।

ग्राहकों से आवश्यक निवेदन

'सार्वदेशिक' के स्वदेश के निम्न ग्राहकों का चन्दा दिसम्बर १६३८ में समाप्त होता है। प्रार्थना है कि ये ग्राहक महोदय अपना अपना चन्दा १५ जनवरी १६३६ तक भेज देवें। इसके बाद जन ग्राहकों का चन्दा प्राप्त न होगा या कोई सूचना न मिलेगी उनकी सेवा में 'पत्र' वी०पी० द्वारा भेज दिया जावेगा और आशा है वे उसे स्वीकार करेंगे। इसके साथ ही यह भी निवेदन है कि ग्राहक महोदय चन्दा भेजते समय मनी आर्डर की कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या व पूरा पता लिखने की कृपा करें। पूरा पता व ग्राहक संख्या कूपन पर न होने से यदि 'पत्र' ग्राहक पर न पहुंचेगा तो उसकी उत्तर-दायित्व कार्यालय पर न होगी। कृपया इसे नोट कर लेवें।

१०४, १०७, ११४, ११६, ११८, २०८, ३२१, ३२३, ३३०, ३३३, ३३८, ३४५ ३४८, ३५२, ३५७, ३५६, ३६६, ३७६, ५०४ ५२६, ५३३, ६७०, ६७८, ६७६, ६८३, ६८७, ६६७, ७०२, ७०३, ७६०, ८००, ८४४, ८४७, ८४८, ६२१, ६२२, ६२४, ६२५, ६४६